"× × × बलदेव बाबू को एक तीसरे रूप में भी देखने का अवसर मिला। इस समय भी वे गाँव-गाँव घूम रहे थे। इस बार वे लड़नेवालों के दल में नहीं थे। वे लड़नेवालों का इतिहास लिख रहे थे। इतिहास किसी कीर्त्ति-कथा का नाम नहीं है। इतिहास-लेखक महाकाल की गति का हिसाब रखता है। मनुष्य ने अपनी विजय-यात्रा के लिए कौन-सा मार्ग चुना है, उसपर वह कितना अग्रसर हुआ है और कितना पीछे हटा है, इसकी जाँच करना है। व्यक्ति और घटनाएँ उसी महाकाल की गति के पदचिह्न हैं। इसीलिए इतिहास-लेखक को निर्मम होना पड़ता है, निरपेक्ष होना पड़ता है। यह समझना ठीक नहीं है कि वह केवल ब्योरा पेश करने का ही काम करता है। इतिहास-लेखक उससे बड़ा काम करता है। वह भविष्य की दिशा बताता है। महाकाल की गति को ठीक समझे बिना भविष्य की ओर संकेत नहीं किया जा सकता। यदि इतिहास-लेखक मनुष्य को उसकी महिमा की ओर उद्‌बुद्ध नहीं करता तो वह अपना कर्त्तव्य ठीक ठीक नहीं निभाता। बलदेव बाबू में भीतर प्रवेश करने की शक्ति है और मनुष्य के महान भविष्य पर विश्वास है। इसीलिए उनका यह रूप मुझे बहुत प्रीतिकर मालूम हुआ।

बलदेव बाबू को अपने मित्र के रूप में पाना सौभाग्य की बात है।"

पुस्तक-जगत्‌का प्रथम पुष्प—

अगस्त-क्रान्ति

(सम्पूर्ण भारतवर्षकी पृष्ठभूमिमें बिहारकी अगस्त-क्रान्तिका विस्तृत और प्रमाणिक इतिहास)

लेखक

प्रोफेसर बलदेव नारायण, बिहार विद्यापीठ

भूमिका लेखक

डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद

मार्च १९४७
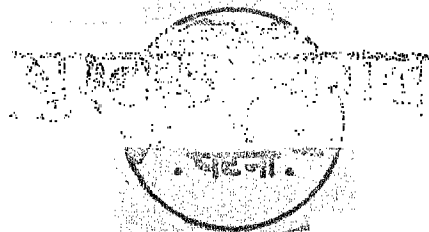
लेखक परिचय

बलदेव बाबूको मैंने पहली बार तरवारामें देखा था।

तरवारा दरभंगा जिलेका एक गांव है। लहेरियासरायसे लगभग २० मील दूर। वहां बिहार विद्यापीठकी शाखा है। शायद 'थी' कहना अधिक ठीक होगा। इस गांवके आसपास गरीब किसानों और पिछड़ी हुई जातियोंकी बस्ती है। जमीन बहुत उपजाऊ है परन्तु जितनी उपजकी उससे आशाकी जा सकती है उतनी उपज होती नहीं। हमलोगोंने रास्तेमें जली ऊखके खेत देखे थे जो किसानोंकी परवशताके 'ज्वलन्त' उदाहरण थे। तरवाराके आसपास मुसहर नामक पिछड़ी हुई जातियोंकी बस्ती है। इनलोगोंकी दारुण दीनता कहकर नहीं समझाई जा सकती। इसी गरीबीके गढ़में बलदेव बाबूक दर्शन हुए। विज्ञापनकी दुनियासे इस गांवका दूरका भी संबंध नहीं है। इस दुःख दरिद्रताके वातावरणमें बलदेव बाबूकी सौम्य-मनोहर मूर्ति दिखी। ऐसा जान पड़ा कि इस निराशा और पस्त हिम्मतीके खंडहरके दरारोंको भेदकर एक मनोहर पुष्प खिला है जो अपनी सौम्य कान्तिसे घोषणा कर रहा है कि जीवनीशक्ति अब भी बाकी है। आशाका कण खो नहीं गया है।

इतना विनयी स्वभाव और इतनी तीक्ष्ण दृष्टिशक्ति एक ही स्थानपर कम देखनेको मिलती है। बलदेव बाबू गरीबोंका सामयिक उपचार करनेवाले जन-सेवक नहीं हैं। उन्होंने मनुष्यको उसके समूची ऐतिहासिक विकास परम्पराके भीतरसे देखनेकी दृष्टि पाई है। मुसहरोंका उन्होंने गहरा अध्ययन किया है। वे जानते हैं कि मनुष्यके पीछे जो हजारों वर्षका इतिहास है वह 'व्यक्ति' के औद्धत्यका प्रतिवाद है और साथ ही निर्विशेष 'मनुष्य' की दुर्दम विजय-यात्राका प्रमाण है। इसीलिये उनके स्वभावमें विनय है, हृदयमें आशा है और सामयिक दुःखसे अभिभूत न होनेकी शक्ति है। मैं उन्हें जितना ही अधिक देखता और पहचानता गया हूँ उतना ही अधिक प्रभावित होता गया हूँ। चरित्रबलकी उत्तम कसौटी भी शायद यही है।

दूसरी बार जब बलदेवबाबूको देखनेका मौका मिला उस समय बिहार

विद्यापीठकी वह शाखा उजाड़ बना दी गई थी, निर्मम तपस्वीका वह आश्रम नष्टकर दिया गया था, परिश्रमपूर्वक लगाए हुए वृक्ष-लता-गुल्म भी प्रतिशोधकी बलि चढ़ा दिये गए थे, वे 'परिव्राजक' हो गए थे। उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था, फिर भी वे इस गांवसे उस गांव घूम रहे थे और न जाने किस अपूर्व शक्तिके बलपर काम करते जा रहे थे। उनमें न कहीं निराशा थी, न थकान थी, न उतराकर बहनेवाली गर्वभावना थी। वे जैसे पहले थे वैसे ही तब भी थे। उतने ही शान्त, उतने ही सौम्य, उतने ही तीक्ष्णदृक्! मैं सोचकर समझ नहीं पा रहा था कि वह कौन सा उत्साहका अक्षयस्रोत है जहांसे शान्ति अपना रस खींचती है। मेरे मनमें बराबर यह प्रश्न उठता रहा कि तरबाराके सेवक और विदेशी सत्ताको उलट देनेका प्रयत्न करनेवाले इन दो पुरुषोंमें सामंजस्य कहां है? परन्तु सामंजस्य है। बलदेवबाबू मूलतः जनसेवक हैं। परन्तु वे सेवा-मार्गके अन्तरायोंको समझते हैं। वे फूँकसे बिजली बत्ताके बुझानेकी बालिशताको समझते हैं। वे दुःख-दारिद्र्यकी गहराईमें पैठ सकते हैं। वे जानते हैं कि सेवामार्गके अनेक विघ्न इस विदेशी शासनके आधारपर ही टिके हैं। उस मजबूत आधारको ही अगर नहीं हटा दिया जाता तो वे किसी न किसी रूपमें सिर उठाते ही रहेंगे।

जिस समय चारों ओर पराजयका भूत आतंक फैलाए हुए था, बलदेवबाबू पूर्ण शान्त और विश्वासी बने हुए थे। तूफानमें जो न हिले उसीकी जड़ मजबूत समझी जानी चाहिए।

बलदेवबाबूको एक तीसरे रूपमें भी देखनेका अवसर मिला। इस समय भी वे गांव-गांव घूम रहे थे। इसबार वे लड़नेवालोंके दलमें नहीं थे। वे लड़नेवालोंका इतिहास लिख रहे थे। इतिहास किसी कीर्ति-कथाका नाम नहीं है। इतिहास-लेखक महाकालकी गतिका हिसाब रखता है। मनुष्यने अपनी विजय-यात्राके लिये कौन-सा मार्ग चुना है, उसपर वह कितना अग्रसर हुआ है और कितना पीछे हटा है, इसकी जांच करता है। व्यक्ति और घटनायें उसी महाकालकी गतिके पदचिह्न हैं। इसीलिये इतिहास-लेखकको निर्मम होना पड़ता है, निरपेक्ष होना पड़ता है। यह समझना ठीक नहीं है कि वह केवल ब्योरा पेश करनेका ही काम करता है। इतिहास लेखक उससे बड़ा काम करता है। वह भविष्यकी दिशा बताता है। महाकालकी गतिको ठीक समझे बिना भविष्यकी ओर संकेत नहीं किया जा सकता। यदि इतिहास-लेखक मनुष्यको उसकी महिमाकी ओर उद्बुद्ध नहीं करता तो वह अपना कर्तव्य ठीक-ठीक नहीं निभाता। बलदेवबाबूमें भीतर प्रवेश करनेकी शक्ति है और मनुष्यके महान् भविष्यपर विश्वास है। इसी लिये उनका यह रूप मुझे बहुत प्रीतिकर मालूम हुआ।

बलदेवबाबूको अपने मित्रके रूपमें पाना सौभाग्यकी बात है।

हिन्दी भवन, शान्तिनिकेतन। हजारी प्रसाद द्विवेदी
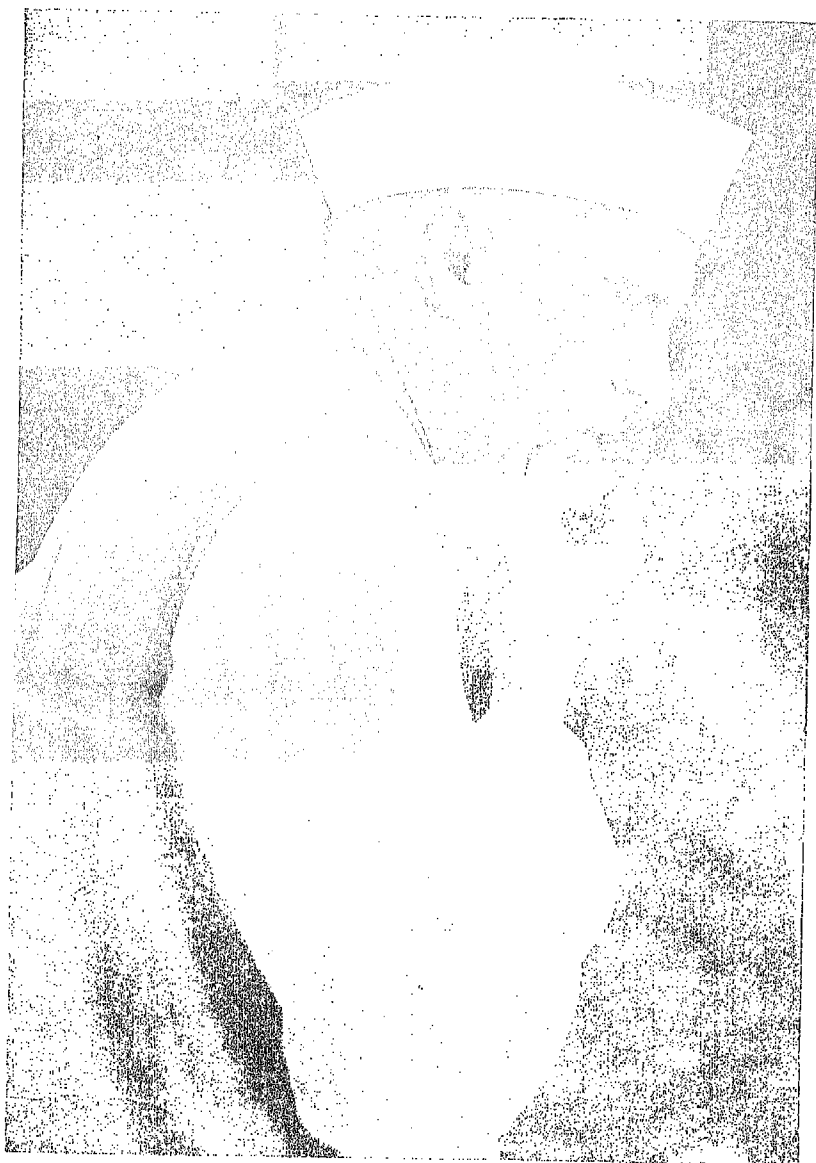
'भारत-छोड़ो' के प्रस्तावक

लेखक

भूमिका

इस पुस्तकके लिखनेमें श्रीबलदेव नारायणने बहुत परिश्रम किया है। जिस समय वह इसके लिए मसाला जमा कर रहे थे मुझसे जब तब बातें किया करते थे। घटनाओंके सम्बन्धमें जिनका जिक्र पुस्तकमें आया है उन्होंने काफी सावधानी और छान बीनसे काम लिया है। यद्यपि मैं यह नहीं कह सकता कि मैंने सारी पुस्तक इस दृष्टिसे पढ़ी है कि इसमें लिखित घटनायें और विचार कहाँ तक सर्व मान्य होंगी तो भी मैं इतना जो जानता हूँ कि इसे एक ऐसे व्यक्तिने लिखी है जो स्वयं बहुत कुछ जानकारी रखता है और उससे भी ज्यादा ऐसे लोगोंसे उसका सम्पर्क रहा है जो बहुत कुछ जानते हैं। इसलिए पुस्तकका महत्व और बहुत हदतक प्रमाणिकता मानी जा सकती है।

सदाकत आश्रम, पटना
३-३-४७

राजेन्द्र प्रसाद

प्रकाशकके दो शब्द

अगस्त-क्रान्तिको लेकर पाठकोंके समक्ष आज उपस्थित होते हुए हमें अतीव प्रसन्नता हो रही है। पुस्तक-जगत्‌का यह प्रथम पुष्प है। हमने इसको बनाने और सजानेकी पूरी चेष्टा की है, परन्तु फिर भी पूर्ण रूपेण यह हमारी कल्पनाका आदर्श नहीं बन सका। क्या करें हम सब अभाव और कठिनाईके युगमें पल रहे हैं।

इसके निकालनेमें काफी देरी हुई, इसके लिये भी क्षमा मांग लें। सबसे बड़ी दिक्कत जो हमें महसूस हुई, वह थी प्रेसकी। दूसरी कि पुस्तक अनुमानसे डेढ़ गुनी निकली। हमने सूचित किया था कि पुस्तक लगभग ४०० पृष्ठोंमें आ जायेगी, परन्तु पुस्तक पूरी हुई सवा पांच सौ पृष्ठोंमें। तदनुसार मजबूरन इसका मूल्य भी ८) रु० से १०) रु० बढ़ाना पड़ा। अतः पाठक क्षमा करेंगे।

जिन साथियोंने इसके प्रकाशनमें बेहद सहायता पहुँचायी है, उन्हें बिना धन्यवाद दिये यह 'दो शब्द' अधूरा ही रहेगा। सबसे प्रथम मा० अनुग्रहबाबूके प्रति हम कृतज्ञता ज्ञापन करते हैं जिन्होंने शीघ्र ही सरकारी आज्ञा और कागजका प्रबन्धकर दिया। हमें पूरी आशा है कि उनकी स्नेह-छाया सर्वदा हमें मिलती रहेगी। इसके बाद धन्यवादके पात्र हैं साथी शिल्पी उपेन्द्र महारथी, जिन्होंने चित्रोंकी छपाईमें बड़ी मदद पहुँचायी है। साथ ही भाई दिनेश बख्शीके भी हम हृदयसे आभारी हैं जिन्होंने बड़ी दिलचस्पी और परिश्रमसे पुस्तकका मुख्य पृष्ठ और बिहारका मानचित्र तैयार किया है।

अपने भविष्यके प्रकाशनके सम्बन्धमें भी दो बात कह लें। हमारा इरादा है कि हिन्दी साहित्यमें जीवन निर्माणकारी और कल्याणकारी साहित्य दें। अतः हम इस महान् कार्यमें पाठकोंका सहयोग और उत्साह चाहते हैं।

पटना
रंगभरी एकादशी

भोलानाथ 'विमल'
शुकदेव नारायण

अपनी ओरसे

बिहारकी अगस्त-क्रान्ति आखिर प्रकाशित हो गयी। बड़ी देर लगी। फिर भी इस किताबके पन्ने-पन्नेमें जल्दबाजीके धब्बे लगे हैं। देर और जल्दबाजीका गठबन्धन कैसे हो गया—कौन बताय? प्रसंग अरुचिकर है और निरुपयोगी भी। अच्छा है चुपचाप आलोचनाकी आँचको बरदाश्त किया जाय।

मैंने अगस्त-क्रान्तिको सजीवसा माना है। चेतनाके प्रवाहमें जीव आता है और उस प्रवाहसे विकसित होता हुआ और उसको विकसित करता हुआ चल देता है। अगस्त-क्रान्ति भी उसी तरह आयी, विकसित हुई और हमारी क्रान्ति धारापर अपनी अमिट छाप छोड़ कर चली गयी। अपने इसी दृष्टिकोणको स्पष्ट करनेकी चेष्टामें मैंने स्थान और तिथिको गौण मान घटना और विचारको प्रधानता दी है।

मैं सचाई जाननेकी कोशिश करता रहा हूँ। मैंने कठिनाइयोंका सामना किया है पर उस कोशिशमें ढिलाई नहीं आने दी है। इस किताबको मैं उसकी एक बानगी मानता हूँ। फिर भी अगर इस किताबमें कोई गलत बात आ गयी है तो वह अनजाने आ गयी है। अपने हाथमें कोशिश करना है; फलाफल तो परिस्थितिकी चीज है।

फौज और पुलिसके खिलाफ बहुतसी बातें लिखी गयी हैं। उन बातोंके सम्बन्धमें पुलिस और फौजवाले खुद क्या कहते हैं और उनके संगी साथी क्या कहते हैं—जानना आवश्यक था। उनके सम्पर्कमें मेरा आना तो असंभव था। इसलिये बड़े चावसे मैं उस मौकेकी ताकमें रहा जबकि वे सब अपनी सरकारकी अदालतमें अपनी सफाई पेश करते! जनताके प्रतिनिधियोंने चाहा कि उनको सफाई देनेका मौका मिले पर सरकारने उन्हें वैसी सुविधा नहीं दी। जबतक सरकारका ऐसा रुख रहेगा उसके नमकहलाल नौकरोंकी कलंक कहानियाँ जनता सच्चे मनसे सुनती सुनाती रहेगी जिनके बीचसे सचाई छान निकालना आसान न होगा। आज तक अगस्त-क्रान्तिपर जितनी भी किताबें निकली हैं उनको जिनने पढ़ देखा है और जो कार्यकर्त्ताओंकी शिकायतोंसे वाकिफ हैं उनको मालूम हो

जायगा कि मैंने फौज और पुलिसके प्रति न्याय करनेकी कितनी कोशिश की है। इस प्रसंगमें मुझे एक सुधार करना है। पृष्ठ न० १५२ में कुर्था थानापर जो हमला हुआ उसका जिक्र करते हुये लिखा गया है—"इसी बीच श्यामबिहारी लालपर गड़ासेका कई घातक वार जमादार गुलाम हैदरखांने किया। श्यामबिहारीजी बेहोश गिर गये। फिर वे अस्पताल पहुँचाये गये जहां शहीद बन गये। पर गुलाम हैदरखांने श्यामबिहारी बाबू पर गड़ासेका वार नहीं किया। उनने श्यामबाबूको गोली मारी जिससे घायल होकर वे गिर पड़े। फिर खां साहबके देखते-देखते ही एक चौकीदारने उनपर गड़ासेका ऐसा हाथ जमाया कि उनका पेट कट गया और आँतें निकल आईं। उनके साथी उनको अस्पताल ले चले जहां पहुँचते-पहुँचते वे शहीद हो गये।

छापेकी गलतियां काफी हैं। मैं केवल कुछकी ओर ध्यान खींच सकूंगा। पृष्ठ १७२ में माननीय श्रीजगलाल चौधरीका वक्तव्य समाप्त करके मढ़ौरा प्रकरण शुरूकर दिया गया है। मा० चौधरीजीका वक्तव्य वहां समाप्त नहीं होता। उसका शेषांश पृष्ठ १७४ की चौथी पंक्तिके अन्तिम दो शब्दसे शुरू होता है और यथा स्थान समाप्त होता है। पृष्ठ ४१४ केदूसरे पाराकी तीसरी पंक्तिमें छपा है—"२० मईकी रात सबोंने काटी एक जगह।" बात गलत है। वहां सब जने कुछ ही देर रखे गये। ता० २१ मई थी। उसी दिन सभी हनुमाननगरको रवाना किये गये। पृष्ठ ४१५ की छठी पंक्तिमें छपा है—"एक टांगपर खड़े होकर बोले।" बात गलत है। जो बोले सो बैठे बैठे ही। पृष्ठ ५४७ में लिखा गया है—"आन्दोलन छेड़नेकी" पर होना चाहिये—"आन्दोलन न छेड़नेकी।"

क्रान्तिकालमें बिहारके जेलोंमें जीवन छलकता रहा है। सींकचोंके भीतर इतनी तरहकी घटनायें हुई हैं और इतनी महत्वपूर्ण कि उन्हें अलग ही स्वतंत्र स्थान देना उचित समझा गया है। इसलिये इस पुस्तकमें जेलकी घटनाओंका उल्लेख नहीं है।

इस पुस्तकके लिखनेमें मुझे अनगिनत साथियोंकी मदद मिली है। किन-किनका नाम गिनाऊँ? हां! मुझे सारनके श्रीलक्ष्मी नारायण सिंह, और मुजफ्फरपुरके श्रीअक्षयकुमार सिंह और पटनेके श्रीरामबरण सिंह सारथिका उल्लेख करना ही है जिनने अपने पाण्डुलेखोंका पूरा-पूरा उपयोग करने दिया। मैं श्रीतेजनारायण लाल शास्त्रीको भी नहीं भूल सकता जो मेरे सदा सहायक रहे।

दम मारनेकी फुरसत न रहते हुये भी राजेन्द्र बाबूने मेरी किताबकी भूमिका लिख दी। इसपर मैं क्या कहूँ? राष्ट्रके मेरे जैसे सामान्य सेवकका भी इतना खयाल रखना उनका सहज स्वभाव है जो सभी कार्यकर्त्ताओंको अनुप्राणित करता रहता है।

सदाकत आश्रम
६-३-४७

बलदेव नारायण

विषय सूची

चित्र-सूची

अगस्त-क्रान्तिकी आगमें जो होम होगये और

जो उस आगको जिलाते हुये जी रहे हैं

उन

शहीदों और साधकोंको—

"Ye shall know the truth, the truth shall make ye free."

—Jesus.

"तू सचाईको जान ले, सचाई तुझे आज़ादी देगी।"

—ईशु

'भारत छोड़ो' का मंत्रदाता,
क्रान्ति-यज्ञ का पुरोहित

हिन्दुस्तानकी माँग पूरी करो

पोलेण्डको बचानेके लिये १ सितम्बर १६३६ को इङ्गलैण्ड जब प्रजातन्त्रकी दुहाई देता हुआ, जर्मनीसे भिड़ गया तब प्रजातन्त्रवादियोंको बड़ी आशा हुई। जब इङ्गलैण्ड जैसा राष्ट्र प्रजातन्त्रकी दुहाई देता हुआ लड़ाईमें कूदता है, दुर्बल राष्ट्रोंकी रक्षाके लिये, तब उसे अनायास संसारके समस्त दुर्बल राष्ट्रोंका ही नहीं, बल्कि सभी प्रजातन्त्रवादियोंका अपरिमित सहयोग-बल मिलता है। उसके सामने लड़ाके टिक नहीं सकते और संसार भरमें प्रजातन्त्रकी स्थापना करनेमें उसके मददगार बन जाते हैं। फिर न कोई राष्ट्र विजयी दीखता है न कोई विजित। सभी स्वतन्त्र सुखी और समान नजर आते हैं। कुछ इसी ढंगकी विचारधारामें निमग्न गान्धीजी बड़े लाट साहबसे तुरत मिले, इङ्गलैण्ड और फ्रांससे हमदर्दी दिखलायी और बोले कि मैं तत्काल भारतकी आजादीकी चिन्ता नहीं कर रहा हूँ। वह तो आजाद होकर ही रहेगा; पर वह आजादी किस कामकी होगी जब कि इङ्गलैण्ड और फ्रांसका सर्वनाश हो गया रहेगा, या वे विजेताके रूपमें दीख पड़ेंगे, जर्मनीको अपमानित और नेस्तनाबूद करके।

सचमुच ऐसी घटनायें उस नयी व्यवस्थाकी क्या सृष्टि करतीं जिसकी कल्पना गान्धीजी करते थे। इन घटनाओंसे तो वैसी ही परिस्थिति उत्पन्न होती जैसी पिछली लड़ाईके परिणाम-स्वरूप हुई थी। इसलिये गान्धीजीने अपने अनोखे ढंगसे बड़े लाटके मार्फत इंगलैण्डसे अपील की कि वह नई व्यवस्था कायम करनेकी ओर कदम उठाय, जिसका सहज परिणाम होता भारतकी आजादी।

पर इंगलैण्डके तो हाथ सुमरनी जेब कतरनी रहती आयी है। वह दुहाई तो देती थी प्रजातन्त्रकी पर पुष्ट करती रही अपनी साम्राज्य लिप्सा। अखिल भारतीय काँग्रेसकी कार्य-समितिने उसके रुखका विरोध किया जिसका प्रदर्शन करनेके लिये उसने केन्द्रीय एसेम्बलीके काँग्रेसी सदस्योंको तत्कालीन अधिवेशनमें शामिल होनेसे रोक दिया।

पर ब्रिटिश सरकारके कानोंपर जूँ न रेंगी। वह अपनी चाल चलती गयी। उसने भारतको युद्धलिप्त राष्ट्र घोषित किया, कितने ही फर्मान जारी किये, भारत शासनविधानमें संशोधन किया और दूर तक असर करनेवाली दूसरी दूसरी

कार्रवाइयां कीं जिनका हिन्दुस्तानियोंके जीवनसे गहरा संबंध है, और जिनके कारण प्रान्तीय सरकारोंकी शक्ति तथा कार्यकी सीमा संकुचित हो गयी और अधिकार कम हो गये।

अखिल भारतीय कांग्रेसकी कार्य समितिने अपनी वर्धाकी बैठकमें ता० १४ सितम्बर १९३९ को एक प्रस्ताव पास करके सरकारकी इन हरकतोंका घोर विरोध किया। उसने कहा कि सरकारको अपनी नीतिकी स्पष्ट घोषणा कर देनी चाहिये। वह लड़ाई प्रजातन्त्रकी रक्षा तथा विस्तारके लिये लड़ रही है या अपना साम्राज्य बरकरार रखनेके लिये। अगर उसकी लड़ाई साम्राज्य रक्षाके लिये है तो भारत उसका साथ नहीं देगा। भारत साम्राज्यवादी लड़ाई लड़ना नहीं चाहता। वह तो साम्राज्यका जुआ उतार फेंकनेके लिये प्राणपणसे कोशिश कर रहा है। फिर ऐसी लड़ाईमें शामिल होना उसके लिये अपने पैरों आप कुल्हाड़ी मारना है। हाँ, अगर सरकार प्रजातन्त्रके हितके लिये लड़ रही है, तो इस लड़ाईसे भारतको दिलचस्पी है। भारत प्रजातन्त्रकी विजय चाहता है, क्योंकि मानता है कि संसार के सभी प्रजातन्त्रात्मक देशोंके हित एक जैसे ही हैं, वे परस्पर सहयोग करके ऐसी व्यवस्था स्थापित कर सकते हैं जिसमें सभी राष्ट्र सुखी रहें, समान दीखें और स्वतन्त्र होवें। वह फासिस्टवाद और नाजीवादकी जीत हरगिज नहीं चाहता क्योंकि साम्राज्यवादकी तरह ये संसारमें विषमता और कलह उत्पन्न करते रहेंगे।

यदि सचमुच ब्रिटेन प्रजातन्त्रका पक्षपाती है तो उसे अधिकृत देशोंको अपने साम्राज्यवादी शिकंजेसे मुक्त कर देना होगा और भारतमें प्रजातन्त्रकी स्थापना करनी होगी। भारतीयोंको स्वभाग्य निर्णयका अधिकार देना होगा, यानी विधान परिषद् द्वारा उसके प्रतिनिधियोंको अपना शासन विधान, बिना बाहरी हस्तक्षेप के, आप तैयार कर लेनेका अधिकार देना होगा और अपने देशकी नीतिको अपना हिताहित सोचकर ठीक कर लेनेके उनके हक्को मान लेना होगा।

कार्यसमितिने विश्वास दिलाया कि तब स्वतन्त्र और प्रजातन्त्र भोगी भारत सहर्ष अन्य स्वतन्त्र देशोंसे मिलकर अत्याचारका निवारण करेगा और आर्थिक सहयोग भी। तब भारत इसकी चेष्टा करेगा कि स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्रके आधारपर विश्वमें वास्तविक सुव्यवस्था स्थापित हो और विश्वके ज्ञान और साधनोंका उपयोग मानव समाजके हितके लिये हो।

कार्य समितिने देशी नरेशोंको भी चेताया जो यूरोपमें प्रजातन्त्रकी रक्षा करनेके लिये अपना धन जन ब्रिटेनको दे रहे थे। उसने कहा कि यदि नरेशोंको प्रजातन्त्रसे प्रेम है तो उसका एक ही प्रमाण है कि वे अपने रियासतोंकी विशुद्ध निरंकुशताको खत्म कर दें। ब्रिटेनको मदद देना निरंकुशताको मजबूत करना है, क्योंकि इसके लिये वह नरेशोंसे भी ज्यादा जिम्मेदार रही है। हाँ ब्रिटेनने अभीष्ट घोषणा कर दी तब बात दूसरी है।

पर घोषणा कर देना ही अलम न होगा, इसके पीछे सचाई है इसका सबूत देना होगा। तभी जनता विश्वास करेगी, अन्यथा समझेगी कि पिछली लड़ाईके मौकेपर जिस तरह लम्बी चौड़ी बातें करके जनताको धोखेमें रखा गया अब भी उसकी पुनरावृत्ति है। इसलिये निहायत जरूरी है प्रजातन्त्रकी घोषणा को ज्यादासे ज्यादा जितना सम्भव हो तत्काल अमलमें लाया जाय। कार्यसमिति ने कहा कि किसी घोषणाकी कसौटी तो उसे अभी लागू कर देनेमें है, क्योंकि अभी आजकी कार्रवाईपर छाप डालती है और भविष्यको भी अपने सांचेमें ढालती है। अन्तमें कार्य समितिने जर्मनों और जापानियोंको समझाया। भारतीयोंको उनसे बैर नहीं है। उनका बद्धमूल विरोध है हिंसा तथा आक्रमण मूलक पद्धतियोंसे जो स्वतन्त्रताकी द्रोही हैं। उसने कहा कि भारतीय ऐसी जीत नहीं चाहते जिसका मतलब किसी राष्ट्रकी हार हो, न ऐसी सुलहके पक्षमें हैं जो किसीपर जबर्दस्ती लाद दी गयी हो। वे संसारकी सभी जातियोंके लिये प्रजातन्त्रकी विजय चाहते हैं जिससे सभी ऐसी दुनिया देखें जहाँ न हिंसाकी आशंका हो न साम्राज्यवादके उत्पीड़नकी।

कांग्रेस कार्य समितिके इस प्रस्तावके उत्तरमें अक्तूबरमें ही सम्राटकी सरकारने अपना वक्तव्य दिया। घोषणा की कि भारतको औपनिवेशिक स्वराज्य मिलेगा। कहा कि लाट साहबकी कार्यकारिणीका विस्तार करनेके लिये हम तैयार हैं ताकि राजनीतिक दलोंके प्रतिनिधियोंका सहयोग लाट साहबको मिले। हम सलाहकार सभा भी संगठित करनेके लिये तैयार हैं। पर मेल मिलापसे काम लेनेके लिये जरूरी है कि कांग्रेस, लीग और अन्यान्य पार्टियोंमें एका होवे, वे सब प्रान्तका कार्य संभालें और केन्द्रकी इन संस्थाओंका उपयोग करें। पर मेल तो होता नहीं, फिर क्या किया जा सकता है।

बड़े लाटके मार्फत ब्रिटिश सरकारके इस रवैयाको मालूम करके कांग्रेसको

बड़ी निराशा हुई। कांग्रेसने कभी अपने ही लिये कुछ नहीं मांगा। वह उन सभी सम्प्रदायोंके लिये, जो राष्ट्रके बनानेमें लगे हैं, अधिकारका दावा करती रही है। अल्प संख्यकोंकी हित रक्षाके लिये काफी गारन्टी देनेको तैयार रहती आयी है। उसे बड़े लाटके वाग्जालसे रोष हुआ और २२ अक्तूबर १९३९ को अपनी कार्य समितिकी तीसरी बैठकमें वर्धासे एक प्रस्ताव पास करके उसने कांग्रेसी मंत्री-मण्डलोंको इस्तीफा देनेका आदेश दिया। फलतः सभी प्रान्तोंसे कांग्रेसी सरकार हट गयी; शासन विधानका अन्त हो गया और ब्रिटिश नौकर शाहीकी तानाशाही सब जगह मनमानी करने लगी।

कांग्रेसने सरकारसे संबंध विच्छेद तो कर लिया पर उसी प्रस्ताव द्वारा कार्यसमितिने कांग्रेस जनोंको सावधान कर दिया कि सविनय अवज्ञा, राजनीतिक हड़ताल आदिके रूपमें उतावलीका कोई काम वे न करें। उसने कहा—हिन्दुस्तान में ब्रिटिश सरकारकी कार्रवाईयोंपर नजर रखूँगी और जब जरूरत पड़ेगी तब और कदम बढ़ानेके लिये देशको राह दिखानेसे नहीं हिचकूँगी।

१९४० के मार्चमें रामगढ़ कांग्रेसने फिर भारतकी मांगको दुहराया। उसने घोषणा की कि ब्रिटिश साम्राज्यसे उसका कोई ताल्लुक नहीं रह सकता। भारतकी आजादी साम्राज्यवादकी परिधिके भीतर सार्थक हो ही नहीं सकती। इसलिये औपनिवेशिक स्वराज्य या इस ढंगके किसी राज्यको जो साम्राज्यवादी ढांचेसे मेल खाये भारतपर लादा नहीं जा सकता। उसे पूर्ण स्वतन्त्रता चाहिये, प्रजातन्त्रकी, राष्ट्रीय एकतासे सम्पन्न। मत मतान्तरका झगड़ा उठाना फजूल है, क्योंकि इसका स्थायी निपटेरा विधान परिषद् समिति ही कर सकती है, जहाँ सभी दलवाले समझौता करके अपने हकोंकी रक्षा कर लेंगे और जहां आपसमें समझौता नहीं कर सके वहां किसी पंचायतका फैसला मान लेंगे।

रामगढ़ कांग्रेसने एलान किया कि वह देशी नरेशोंको आजादीकी राहमें रोड़े अटकाने न देगी। भारतीय जनताके हाथमें ही, चाहे वह प्रान्तमें रहती हो या देशी रियासतोंमें, शासन सत्ता रहेगी और उसका हित ही सर्वोपरि रहेगा।

कांग्रेसने यह भी साफ कर दिया कि विदेशियोंके स्वार्थकी रक्षा की जायगी बशर्ते वह जन हितका घातक नहीं सिद्ध हुआ तो।

कांग्रेसकी ऐसी गतिविधिकी खबर ब्रिटिश सरकार रखती थी पर वह बेपरवा थी। भूखी जनतामें रंगरूटोंकी कमी न थी और लोभी पूंजीपति

लड़ाईकी सामग्री संग्रह करनेका ठेका लेनेके लिये मुंह बाये रहते थे। फिर ब्रिटिश सरकारको फिक्र किस बातकी थी? वह उपेक्षाकी फूंकमें कांग्रेसको बिलकुल उड़ा देना चाहती थी।

इसी बीच बेल्जियम जर्मनीका शरणागत हुआ और फ्रान्सने 'हरदी' बोल दिया। फिर हिटलरका हुंकार सारे यूरोपको कंपाने लगा। नाजीवादको नंगा नाचते देख कांग्रेसका प्रजातन्त्र विह्वल हृदय अधीर हो उठा। उसने गान्धीजी को कहा—अब आप विश्राम लीजिये; मैंने युद्ध तटस्थताकी नीति छोड़ी। मैं अब अमुक परिस्थितिमें नाजीवादसे लड़नेके लिये ब्रिटेनकी पूरी मदद करूँगा।

कांग्रेसके इस नीति परिवर्त्तनने पूना प्रस्तावका रूप धारण किया।

पूना प्रस्तावके द्वारा ब्रिटेनको कहा गया कि भारतके पूर्ण स्वतन्त्रताके अधिकारको मान लो और केन्द्रमें काम चलाऊ राष्ट्रीय सरकारकी स्थापना कर दो तब देश रक्षाकी तैयारीको मजबूत करनेमें कांग्रेस अपनी सारी ताकत लगा देगी।

पूना प्रस्तावका उत्तर बड़े लाट साहबने अगस्त घोषणाके रूपमें दिया। आपने कहा—भारतमें औपनिवेशिक स्वराज्यकी स्थापना तो होगी ही। तत्कालके लिये हमें सम्राटकी सरकारका आदेश मिला है कि हम अपनी कार्य-कारिणीमें प्रतिनिधि माने जानेवाले हिन्दुस्तानियोंको शामिल कर लें; युद्ध मंत्रणा परिषद्का संगठन कर लें जो नियमित रूपसे समय-समयपर बैठा करेगा जिसमें देशी रियासत और हिन्दुस्तानके प्रतिनिधि रहेंगे।

इससे अब और ज्यादा नहीं मिलेगा। देशकी सुख-शान्तिकी जवाबदेही तो ब्रिटिश सरकारके सर है। वह कांग्रेसको नहीं सौंपी जा सकती, क्योंकि देशके बड़े-बड़े और मजबूत दल उसकी हुकूमत माननेसे साफ इनकार कर देंगे।

हाँ, बड़े लाटने कहा कि विधान परिषद्के प्रस्तावसे ब्रिटिश सरकारको हमदर्दी है। लड़ाईके बाद सरकार उसे बुलायगी और हिन्दुस्तानके प्रतिनिधि उसमें बैठ ब्रिटिश उपनिवेश संघके भीतर अपने देशको रख कर उसका विधान बनावेंगे। ब्रिटिश सरकार उनपर एक ही रोक रखेगी। लम्बे अरसेसे हिन्दुस्तान में रहकर उसके कुछ कर्त्तव्य हो गये हैं। उसे देखना होगा, विधान ऐसा बने कि उसके इन कर्त्तव्योंके पालनमें बाधा न हो।

कांग्रेसने मांगा था थोड़ा चावल मिला धानका भूसा। उसने लाट साहब के प्रस्तावको सीधे नामंजूर कर दिया। सरकारने भी चुप्पी साध ली। पर जब तक सांस तब तक आस ! श्री राजगोपालाचारी आगे बढ़े और उन्होंने खुले दिल से सरकारके सामने अपना प्रस्ताव रखा। प्रस्ताव क्या था ? सरकारकी सचाई को चुनौती थी। उनने कहा—तुम कांग्रेसको अधिकार सौंपनेके लिये तैयार नहीं हो तो लीगका ही विश्वास करो। लीग प्रधान मंत्री चुने और प्रधान मंत्री जैसा सर्वोत्तम समझे राष्ट्रीय सरकारका संगठन कर ले। मैं कांग्रेसको मना लेने का भार गछता हूँ। 'मनमें आन बगलमें ईंट' रखनेवाली सरकार इसका क्या जवाब देती। मौन साधे रही।

देशका क्षोभ बढ़ा। और इस क्षोभको मूर्त्तरूप देना ही था। कांग्रेसके लिये सिवा इसके और कोई चारा न रह गया कि वह गांधी गोहार करे और कांग्रेसका संचालन सूत्र फिर गांधीजीके हाथ पकड़ा दे। गांधीजीने समझाने बुझानेका ब्रिटेनपर कोई असर पड़ता न देख एक कदम आगे लिया। १९४० के अक्तूबर से उनने व्यक्तिगत सत्याग्रहका आन्दोलन छेड़ दिया। आन्दोलनका रूप पूर्णतः प्रचारात्मक था। गांधी जी द्वारा चुने चुनाये सत्याग्रही सरे बाजार नारा लगाते कि ब्रिटिश सरकार साम्राज्यवादी लड़ाई लड़ रही है जिसमें शामिल होना हराम है; इसलिये उसे 'न देंगे एक पाई न देंगे एक भाई'। आन्दोलनमें शान्ति थी, शिष्टता थी और विरोध भी था पर मिठास भरा। एक साल आन्दोलन चला। २५ हजारके लगभग सत्याग्रही जेल यात्री बने। १९४१ के अन्तमें परिस्थितिसे लाचार होकर सरकारने अधिकांश सत्याग्रहियोंको जेल मुक्त कर दिया।

१९४१ की परिस्थिति सरकारके लिये और नाजुक थी। आरंभमें ही नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस सरकारकी सी० आई० डी० और पुलिसके घेरेको तोड़ विदेश निकल गये थे। और जर्मनोंका सहयोग पाकर हिन्दुस्तानकी आजादी के पक्षमें प्रचार कर रहे थे। उनके प्रचारके प्रभावमें आ पड़ना हिन्दुस्तानियोंके लिये आसान था। फिर हिटलरकी ताकत और बढ़ गयी थी। इसलिये सरकार कांग्रेसको मना लेना चाहती थी।

और कांग्रेस सरकारका साथ देनेके लिये कमर कसे थी पर चाहती थी साथ देना गुलाम बने रह कर नहीं, आजाद होकर। उसकी कार्य समिति बारदोलीमें बैठी। सत्याग्रहको स्थगित कर दिया और फिर एकबार गांधीजीको नेतृत्वके

दायित्वसे मुक्त करके सरकारसे बातचीत करनेका प्रस्ताव किया। उसकी मांग पुरानी थी, शर्तें भी वही १९३९ के १४ सितम्बरकी।

ब्रिटिश सरकार फिर कानमें तेल डाल लेती पर १९४२ परिस्थितिमें नवीन गुरुता लेकर आया जिसकी भीषणता उत्तरोत्तर अधिक होने लगी। १९४१ के दिसम्बरमें ही जापानसे ठन गयी ब्रिटेनकी और अमरीकाकी। धुरी राष्ट्रोंके खिलाफ अब दोनों एक साथ लड़ने लगे। दोनोंका सुख दुःख एक जैसा हो गया।

पर जापान लोहेका चना साबित हुआ। उसको सर करनेके लिये ब्रिटेनने अपना एक भीमकाय रणपोत भेजा जिसे एक सहयोगी भी दिया। रणपोत अकड़ते हुए चले मानों जपानको देखते ही निगल जायंगे। लोगोंने भी यही समझा और जहां जहां उन्हें देखा सलामी दी। पर वे जापानी मोरचेपर पहुँचने भी न पाये थे कि उनपर जापानियोंका गाज गिरा और दोनों डूब कर रसातल चले गये। फिर तो जापान बाजकी तरह झपट्टा मारने लगा। अंगरेजोंका अभिमान जो सिंगापुर का नौ किला था—उसे उसने तोड़ डाला और मलाया वगैरह जीतता हुआ वह बर्मा आया और उसे हड़प बैठा। अब उसकी धमक हिन्दुस्तानको कंपाने लगी। और हिन्दुस्तानकी हालत! उसे भीषण असंतोष। और उस असंतोषको नेताजी श्री सुभाषका प्रचार उग्र रूप दे रहा था। नेताजीकी हैसियत अब साधारण सी नहीं थी। प्रवासी भारतीयोंसे मिल कर उनने आजाद भारत सरकारकी स्थापना की थी जिसे धुरी राष्ट्रोंने आजाद कौमकी आजाद सरकार मान लिया था।

युद्धग्रस्त चीन और युद्धलिप्त अमरीका निश्चिन्त कैसे रह सकते थे? हिन्दुस्तान कमजोर पड़ा तब तो चीन बिलकुल गया ही था। यों भी उसकी बुरी हालत थी। और अमरीकाके धन-जनकी भी अपरिमित हानि थी। इस लिये दोनोंका आग्रह था कि ब्रिटेन कॉंग्रेसको संतुष्ट करे जिससे देशके साधन बलको लेकर वह धुरी राष्ट्रोंके विरोधमें हमारे कंधेसे कंधा भिड़ाकर खड़ा होवे। १९४२ के आरंभमें जनरल च्यांगकाई शेक स्वयमेव अपनी पत्नी सहित भारत आये सरकारके मेहमान होकर। वे गान्धीजी, पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा अन्यान्य नेताओंसे मिले। उनने बड़ी कोशिशकी कॉंग्रेस और सरकारको मिलाने की। और जब खुद कामयाब नहीं हुए तब अमरीकाके राष्ट्रपति रूजवेल्टको उनने बारबार कहा कि चर्चिलपर दबाव डालो ताकि वह अपनी भारत विरोधी नीतिसे बाज आये

और कांग्रेसको संतुष्ट करके मित्र राष्ट्रोंके पक्षमें कर ले। अपने स्वार्थ और जनरल च्यांगके आग्रह दोनोंसे प्रेरित होकर राष्ट्रपति रूजवेल्टने चर्चिलको लिखा कि हिन्दुस्तानके मामलेको निबटाओ ही।

रूस भी निश्चिन्त न था। हिटलर उस पर भी चढ़ बैठा था और उसे तबाह कर रहा था। रूसी बड़ी धीरतासे सब कष्ट सह रहे थे और बड़ी वीरतासे जर्मनोंके आक्रमणोंका जवाब दे रहे थे। यूरोपको रौंद कर एक ओर तो हिटलर यूरोपीय रूसको हैरान कर रहा था और उसे अपने एशियाई भागकी सुविधापर भरोसा करनेके लिये विवश कर रहा था फिर दूसरी ओर एशियापर भी अपना सिक्का जमानेकी कोशिश कर रहा था। रूसको इसकी चिन्ता थी। वह जानता था कि संतुष्ट भारत हिटलरकी दाल उधर गलने न देगा। इसलिये चाहता था कि चर्चिल कांग्रेससे मेल करे और उसने चीन और अमरीकाके आग्रहका समर्थन किया।

और रूस तथा अमरीकाके स्वार्थसे कहीं ज्यादा खतरा खुद ब्रिटेनके स्वार्थ को था। उसके साम्राज्यके बायें अंगको जिसने काट लिया था शेषांगकी घातमें बैठा वह जीभ लपलपा रहा था। उसके साम्राज्यकी पच्छिमी सीमा भी सुरक्षित न थी। मिश्रकी राजधानी काहिरा तक को जर्मनोंकी गोलाबारी कंपा रही थी। इरान जर्मन गुप्तचरोंका अड्डा बन रहा था। इधरकी उसकी कूटनीति जैसी रही है उसको याद रख कर कहना कठिन था कि अरब और अफगानिस्तान कौन सी नीति बरतेगा? परिस्थिति जैसी थी उसमें सत्साहसी घबड़ा जाता और जिस जिस से मददकी उम्मीद होती, उस उससे मेल करके संकट दूर करनेका उपाय करता। पर दुस्साहसी ब्रिटिश साम्राज्यवादी घबड़ाये नहीं। वे तो ऐसी परिस्थितिके स्रष्टा और भोक्ता दोनों रह चुके हैं। उनकी नीति रही, कांग्रेसी असंतोषका सांप भी मरे और हिन्दुस्तानके साम्राज्यकी लाठी भी न टूटे। चीन, अमरीका और रूस के आग्रहने और अपने स्वार्थके तकाजेने उन साम्राज्यवादियोंको मजबूर किया कि वे तत्काल अपनी उक्त नीतिको काममें लावें।

फलस्वरूप ब्रिटेनके प्रधान मंत्री चर्चिलकी पार्लिमेण्टमें घोषणा हुई कि युद्ध परिषद समाजवादी नेता सर स्टैफोर्ड क्रिप्सको खास काम लेकर तत्काल भारत भेज रहा है।

—:o:—

क्रिप्सका मायाजाल

क्रिप्स साहब मार्च २३ को दिल्ली पहुँचे। कांग्रेसी नेता उनके आगमनपर फूले न समाये और उनने जो प्रस्ताव रक्खा उन्होंने उसके शब्द शब्दपर गौर किया।

क्रिप्स साहब कांग्रेस, मुस्लिम लीग, हिन्दू-महासभा, नरेन्द्रमण्डल, और दूसरे दूसरे अनेक राजनीतिक तथा अन्यान्य संस्थाओंके प्रतिनिधियोंसे मिले। उनके आगे ब्रिटिश सरकारकी ओरसे एक योजना रक्खी, वर्तमान और भविष्य दोनोंके सम्बन्धमें।

भविष्यके सम्बन्धमें उनने कहा कि भारतमें संघ शासन होगा। उसकी मर्यादा स्वतंत्र उपनिवेश जैसी रहेगी। ब्रिटेनकी राजसत्ता ही उपनिवेश और ब्रिटिश सरकारसे उसे संबद्ध रक्खेगी।

तुरत लड़ाईके बाद प्रतिनिधि सभा बैठेगी जो उस संघ शासनका विधान तैयार करेगी। उस विधानको ब्रिटेन मान लेगा। पर उस विधानमें किसी भी प्रान्तको इतना अधिकार देना पड़ेगा कि वह संघमें शामिल न होकर जैसा है वैसा ही रहना पसन्द करे। ऐसा प्रान्त अपना अलग विधान बना सकेगा और अपने जैसे अन्य प्रान्तोंसे मिलकर संघबद्ध हो सकेगा। तब फिर इस संघको ठीक वैसी ही मर्यादा मिलेगी जो भारत संघको मिली होगी।

ब्रिटेन विधान बनानेवाली सभासे सन्धि कर लेगा जिसकी शर्तोंके मुताबिक भारत संघको अल्प संख्यक जातियों तथा धार्मिक दलोंकी रक्षा करनी पड़ेगी। हाँ, ब्रिटिश उपनिवेश संघके किसी सदस्यसे भविष्यमें जैसा चाहे वैसा व्यवहार भारत संघ करे।

लड़ाई खत्म होते ही चुनाव होगा और प्रान्तकी नयी साधारण व्यवस्थापिका सभाको विधान बनानेवाली सभामें प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार होगा। आनु-पातिक-प्रतिनिधित्वके नियमानुसार प्रतिनिधियोंकी संख्या व्यवस्थापिका सभाके सदस्योंकी संख्याका दसवाँ हिस्सा रहेगी।

जन संख्याके इसी अनुपातसे देशी रियासतें भी विधान बनानेवाली सभामें

अपना प्रतिनिधि भेजेंगी। उन प्रतिनिधियोंको वहांकी हुकूमत बहाल करके भेजेगी पर उनकी मर्यादा होगी भारतके चुनाए हुए प्रतिनिधि जैसी ही।

हां, प्रतिनिधित्वको इस तजवीजको चाहें तो भारतके मुख्य मुख्य फिरकोंके प्रतिनिधि एक मत होकर बदल सकते हैं।

वर्त्तमानके सम्बन्धमें उनने कहा कि लड़ाई भरका समय बड़ा नाजुक है। अबसे जब तक हिन्दुस्तान अपना विधान तैयार नहीं कर लेता, देशकी रक्षाकी जवाबदेही व्यवस्था और मोरचाबन्दी सब ब्रिटिश सरकारके हाथमें रहेगी जो विश्व व्यापी युद्धमें संलग्न है और हिन्दुस्तानकी रक्षाके प्रश्नको अपने सारे प्रयत्नका एक हिस्सा ही मानती है। पर हाँ, देशका हौसला बढ़ाना, लड़ाईके साधनका संग्रह करना और रंगरूट भरती करना भारत सरकारका काम होगा जिसे वह हिन्दुस्तानके कौमोंके सहयोगसे संभालेगी। मुख्य मुख्य दलोंके प्रतिनिधि आवें और अपने देश, उपनिवेश संघ और मित्र राष्ट्रको सलाह मशविरा देना शुरू करें तुरत और जोरदार तरीकोंसे।

क्रिप्सकी योजना क्या थी, भानमतीका पेटारा थी। इसमें नकली स्वराज्य था पर असली साम्राज्यवाद, नामके लिये हिन्दुस्तान था पर दरअसल पाकिस्तान; प्रजातंत्र मौजूद था पर उसके सरपर एकतंत्र सवार—जो भी था सो आगेके लिये, लड़ाईके बाद, अभीके लिये कुछ नहीं, सिर्फ बड़े लाटकी हाँजी करना। गांधीजीने तो इस योजनाको इतना नापसंद किया कि क्रिप्स साहबसे बोले तुमने ऐसे खरीतेको लानेकी नाहक तकलीफ उठायी और अपना अपमान किया। उलटे पांव वापस जावो।

डा० राजेन्द्र प्रसादजीने इस योजनाके खोखलापनको गांधीजीकी तरह समझा। कहते हैं, "क्रिप्स योजनाको देखिये। उसमें देशी नरेशोंको तानाशाह मान लिया गया है। हम उनके रियासती मामलेमें दखल नहीं दे सकेंगे पर उन्हें हिन्दुस्तानके मामलेमें बोलनेका हक होगा। और शासन विधानको अंगरेज तभी मंजूर करेंगे जब उसपर कांग्रेस, मुस्लिम-लीग, हिन्दु महासभा, सिक्ख दल, दलित वर्गदल और प्रवासी अंगरेज दल वगैरह मिलकर अपनी स्वीकृतिकी मुहर लगायंगे। मतलब न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेंगी। इतना ही नहीं शासन विधान तैयार करते समय तक भी जितनी पार्टियां भारतके राजनीतिक जीवनको प्रभावान्वित करती देखी जायंगी, सभी विधान निर्माणमें

दो ब्रिटिश कूटनीतिज्ञ

सर स्टैफर्ड क्रिप्स

सर आर्चीबाल्ड वेवेल

(तत्कालीन जंगीलाट)

दो जालीम !
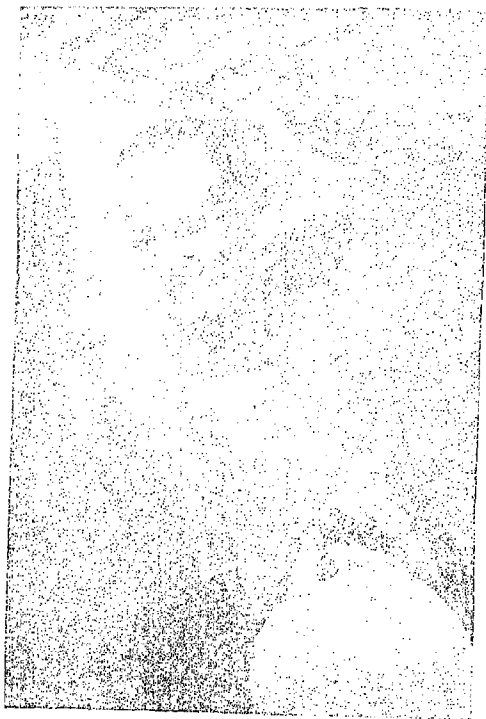
लॉर्ड लिनलिथगो

(तत्कालीन वायसराय)
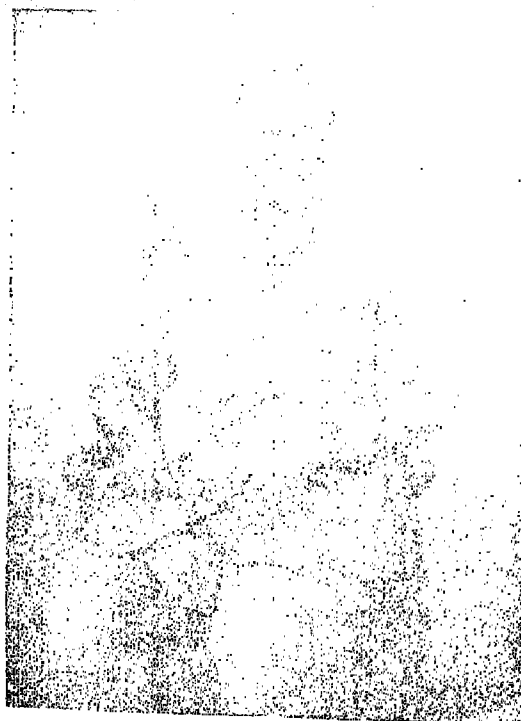
सर रथरफोर्ड

(बिहारका तत्कालीन गवर्नर)

हाथ बटायेंगी। फिर जिन्ना साहब हिन्दुस्तानसे एक पाकिस्तान काट लेना चाहते हैं, पर क्रिप्स योजनामें एक नहीं अनेक पाकिस्तानकी गुञ्जायश करा दी गयी है। किसी भी प्रान्तको हक दिया गया है कि वह भारत शासनसंघमें शामिल होवे या न होवे। देखिये, हमें टुकड़े टुकड़े करनेकी कैसी गर्हित चाल है।

जब मैंने कहा, क्रिप्स साहब यह तो फरमाते हैं कि देश रक्षाकी जिम्मेदारी नहीं देंगे, पर क्या देंगे सो भी तो नहीं बतलाते, फिर हम किस आधारपर बात चीत करें, तब मेरी बातपर कार्य समितिके मेम्बर लोग हँस पड़े। लेकिन जब उनकी मुलाकात बड़े लाट लिनलिथगो साहबसे हुई तब मेरा क्या मतलब था सो उन्हें मालूम हुआ। बड़े लाट साहबने संयुक्त राष्ट्रीय सरकार बनानेसे कतई इनकार किया। उनके अधिकारपर व्यवस्थापिका सभा किसी तरहकी कैद लगावे ऐसा सोचना भी उनके लिये असंभव था। हां, कार्यकारिणी कौंसिलकी काया ड्योढ़ी दुगुनी कर देनेकी बात बड़े लाटने उठायी। पर कहा कि हमारे कौंसिलर तो अपने अपने विभागके हेड है, बस। मंत्री तो वे हैं नहीं। उन्हें जब चाहा बुलाया और रिपोर्ट सुन ली, हो गया। यही उनका हक है, ऐसी ही उनकी हस्ती है।"

किसी बड़े लाटने कौंसिलरोंको ऐसा हलका नहीं समझा जैसा लिनलिथगो साहबने। और लिनलिथगो साहबकी क्या बात? उनके मुंहसे तो अंगरेजी सरकार बोला करती थी। उनकी बोली सुनकर क्रिप्स साहबके आनेके बहुत पहले ही गांधीजी ताड़ गये थे कि हिन्दुस्तानियोंको अंगरेजी सरकार सिर्फ फोड़ना चाहती है। लिनलिथगो साहबने गांधीजीसे कहा था अल्पमतोंकी रजामन्दीके बिना हिन्दुस्तानके शासन विधानमें कोई फेर फार करना असम्भव है, आप जानते हैं अल्पमतकी समस्याने ही यूरोपको लड़ाईमें झोंक दिया है, फिर इसी समस्याको यहाँ कैसे टरकाया जा सकता है? गांधीजी बोले कि किसी भी अल्पमतको किसी तरहकी तकलीफ न होवे इसके लिये शासन विधानमें धारायें रखवाऊँगा पर उभाड़ उभाड़ कर प्रतिक्रियावादी अल्पमतका संगठन कर देने की सरकारी कोशिशको बर्दाश्त न कर सकूंगा।

इन नेताओंकी सम्मतिके बावजूद कांग्रेसकी कार्य समितिने क्रिप्स साहबके प्रस्तावको कई तरहसे परखा। उनसे बार बार मिली। बड़े लाट साहबसे मिली और उस समयके प्रधान सेनापति लार्ड वेवेलसे मिली अनेक बार। जानना चाहा कि व्यवहारमें प्रस्ताव कैसा रंग लायगा? अन्तमें खूब समझ बूझ कर कार्य समितिने इसे नामंजूर ही कर दिया।

किसी और संस्थाने भी इसे मंजूर नहीं किया। फिर तो अपना प्रस्ताव वापस लेकर क्रिप्स साहब १२ अप्रैलको इंगलैंड वापस लौट गये।

ब्रिटिश साम्राज्यवादकी इस चालबाजीसे कांग्रेस क्षुब्ध हुई जरूर तौभी प्रजातंत्रके रक्षार्थ लड़ाईमें मित्रराष्ट्रोंके साथ रहनेकी इसकी लालसा मिटी नहीं। इसके एक नेता श्रीराजगोपालाचारीने तो चाहा कि पाकिस्तानकी मांगको कांग्रेससे मनवाकर मुस्लिम लीगको पक्षमें करलें; फिर सरकारके सामने संयुक्त मांग रक्खें। उन्हें उमीद थी कि ऐसा करनेसे एक रास्ता ऐसा निकलेगा ही जो देशकी रक्षामें हाथ बटानेका मौका हमें देगा। आखिर अप्रैलमें जो ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटी इलाहाबा में बैठी उसमें उनने अपना उक्त आशयका प्रस्ताव भी पेश किया पर अत्यधिक बहुमतसे वे हार गये और कांग्रेससे अलग हो गये।

इधर गान्धीजी भारतके भविष्यकी कुछ और कल्पना कर रहे थे। ब्रिटिश सरकारकी कूटनीति देख देख उनका संकल्प कठोर होता जा रहा था। देशपर आफत आयी देख कांग्रेसने सरकारकी पूरी मदद करनी चाही। कार्यसमितिके अहिंसावादी सदस्योंने कहा—हम सरकारका नैतिक समर्थन करेंगे। हथियार लेने लिवानेका काम छोड़ और सब काम करेंगे।

दूसरे सदस्य बोले हम सब तरहसे मदद करेंगे। राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आजादने तो कहा—"मैं मुल्ककी खातिर तलवार उठाऊँगा और दुश्मनोंसे भिड़ जाऊँगा।" कांग्रेसकी इतनी ही मांग थी कि सरकार हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई वगैरह सबोंके प्रतिनिधियोंकी संयुक्त राष्ट्रीय सरकार बनावे जो केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभाके प्रति जवाबदेह हो, जो केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभाकी रायसे देशके आमद-खर्चका सिलसिला ठीक करे और देशकी समुचित व्यवस्था करे। स्वभावतः प्रान्तीय शासन व्यवस्थामें भी कांग्रेस अनुकूल सुधार चाहती थी।

कांग्रेसका कहना था कि जनताका मन जीत लेनेके लिये आवश्यक है कि केन्द्र तथा प्रान्तमें सुधार किया जाय नहीं तो उसका विश्वास सरकारपर जम न सकेगा और वह न सरकारकी ललकारपर जी जानसे लड़ सकेगी। पर सरकारने कांग्रेसकी एक न सुनी। उसे हमारे जनमतकी इतनी भी परवाह नहीं थी कि देशको लड़ाईमें शामिल करते वक्त वह व्यवस्थापिका सभासे पूछ भर लेती। कांग्रेसने इसे असत्य, अपमान समझा। उसने शासनसे अपना हाथ खींच लिया। फिर उसने व्यक्तिगत सत्याग्रह छेड़ा पर बराबर उसने ख्याल रखा कि सरकारके युद्धोद्योगमें बाधा न

पहुंचे। फिर क्रिप्स आये। गान्धीजीने उनकी योजना देखी। वह विषकी पेटारी थी। उसे गान्धीजीने अंगरेजोंका भीषण षड़यंत्र समझा। उद्देश्य था हिन्दुस्तानकी फूटको बढ़ाकर स्थायी बना देना। अंगरेज इतना नीचे कभी न उतरे थे। इंगलैंडके सर आफत है। वह हिन्दुस्तानकी मदद चाहता है और मददकी कीमत देने आया है। तब ऐसी परिस्थितिमें कीमत देनेके बहाने हिन्दुस्तानको जहर पिलानेकी कोशिश करेगा—इसकी कल्पना भी गान्धीजीको न थी। उनका दृढ़ विश्वास हो गया कि अंगरेजी शासन और फूट एक चीज हैं। दोनों साथ रहेंगे। दोनों साथ जायंगे। इसलिये ही उनने नारा लगाया, "अंग्रेजों! भारत छोड़ दो", जो क्रिप्स योजनाका माकूल जवाब है। उनने हरिजनमें लिखा—अभी तक हमारे शासक कहते आये हैं हमलोग खुशीसे बिदा हो जायं अगर जान जायं किसको शासनका भार सौंपना है। उनको अब मेरा कहना है—भारतको भगवानपर छोड़ दो। अगर ऐसा करना अखरता हो तो उसे अराजक अवस्थामें ही छोड़ जावो।

मईके मध्यमें उनने एक मुलाकातीसे कहा—'मैं कहा करता था कि ग्रेट ब्रिटेनको मेरा नैतिक समर्थन प्राप्त है। पर कहते बड़ा खेद होता है कि आज उसे नैतिक समर्थन देनेसे मेरा दिल इनकार करता है। एका लानेकी सारी कोशिशें बेकार गयीं तब सहज हो मुझे यह तर्क मिला कि जब तक इस देशमें अंगरेजी हुकूमत रहेगी तब तक सच्चा एका नहीं होगा, क्योंकि सभी दलवाले विदेशी हुकूमतका मुंह जोहा करेंगे। आगे चलकर वह कहते हैं -"मैं समझ गया हूँ, आजकल हमारा रहना व्यवस्थित अराजक परिस्थितिमें हो रहा है। ऐसे शासनको जैसा आज हिन्दुस्तानमें है देशहितके अनुकूल मान लेना शासनके नामको बदनाम करना है। इसलिये ऐसी व्यवस्थित और कायदे कानूनकी पाबन्द अराजकताको मिट ही जाना चाहिये। यदि इसके परिणाम स्वरूप हिन्दुस्तानमें बिलकुल उछृंखलता फैली तो भी मैं इस खतरेको उठाऊँगा, क्योंकि मेरा विश्वास है, बाईस सालसे जनताको जो अहिंसाकी शिक्षा मिल रही है वह बेकार नहीं गयी होगी और उस विशृंखलतासे ही जनता लोकतंत्र विकसित कर लेगी।"

ब्रिटिश साम्राज्यवाद गांधीजीको इतना असह्य हो रहा था तो भी जापानी व्यवस्थासे जो इसका विरोध था वह तनिक भी धीमा न पड़ा था। उनने हरिजनमें लिखा—जापानियोंको दूर रखनेमें अंगरेजोंसे ज्यादा मेरा स्वार्थ है। अगर वे यहाँ हार खा गये तो उनके हाथसे सिर्फ हिन्दुस्तान निकल जायगा, पर हिन्दुस्ता-

नियोंका तो जापानी जीतसे सर्वनाश हो जायगा।

अपनी उक्तिकी उत्तमताके इतने कायल गांधीजी हो रहे थे कि अंगरेज उनको सुन लेंगे—ऐसी उमीद उनको थी ही। हरिजनमें उनने लिखा—ब्रिटिश शासकोंके ईमानदारीके साथ हमेशाके लिये बिलकुल चले जानेके बाद हिन्दुस्तानके अनुभवी नेता अपनी जवाबदेही समझेंगे और उस मौकेपर अपने मतभेदोंको भूल कर उन साधनोंके सहारे जिन्हें ब्रिटिश छोड़ गये रहेंगे काम चलाऊ सरकारका संगठन कर लेंगे। यदि वह सरकार मेरी आशाके अनुकूल हुई तब सबसे पहला काम उसका होगा रक्षाकी व्यवस्था करनेके लिये संयुक्त राष्ट्रोंसे संधि कर लेना। यदि उस सरकारकी रीति नीति ठीक करनेमें मेरा हाथ रहा तब तो वह सरकार संयुक्त राष्ट्रोंको इतनी ही मदद देगी कि उन्हें स्पष्ट शर्तोंके मुताबिक भारत भूमिपर अपना काम करने दे। हाँ, व्यक्तिगत हैसियतसे कोई हिन्दुस्तानी चाहे रंगरूट बने चाहे उन्हें धन देवे।

गांधीजीकी वाणी और लेखनीने जनतामें नई जान डाल दी। 'अंगरेजो ! भारत छोड़ दो' असंख्य कण्ठोंका नारा बन गया। ऐसी परिस्थितिमें कांग्रेसकी कार्य समिति १४ जुलाईको वर्धामें बैठी और उसने अपना सुप्रसिद्ध प्रस्ताव पास किया। कार्य समितिने कहा कि गुलामी बुरी है-इसलिये ही भारत आजादी नहीं चाहता है। उसकी आजादी तो दुनियांको हिफाजतके लिये नाजीवाद, फासिस्टवाद, युद्धवाद और साम्राज्यवादके अन्यान्य विभिन्न रूपोंको नष्ट करनेके लिये आवश्यक है।

जबसे लड़ाई शुरू हुई कांग्रेस फूंक-फूंक कर पैर धरती रही ताकि ब्रिटेनके युद्धोद्योगमें खलल न पहुंचे। आशा थी कि वह कांग्रेसकी सद्भावनाको समझेगा और हिंदुस्तानको आजाद कर देगा पर उसकी आशापर पानी फिर गया है।

'आज देशमें ब्रिटेनके प्रति विद्वेष है। जापानकी सफलतापर खुशी है। कांग्रेसको इस लिये बड़ी चिन्ता है। वह भारतको मलाया, सिंगापुर और बर्माकी राह चलते नहीं देखा चाहती। वह उसमें ऐसी मजबूती लाना चाहती है कि वह विदेशियोंके आक्रमणका मुंहतोड़ जवाब दे सके। ऐसा तभी संभव है जब उसे आजादी मिल जाय।

'विदेशी हुकूमतके हटनेपर ही यहाँ राष्ट्रीय एकता होगी। राजा, जमीन्दार

और जागीरदार अपनी शोषण वृत्तिको समझेंगे और कल कारखाने तथा खेतोंके श्रमिक अपना महत्व पहचानेंगे। और शक्ति तथा सत्ताका सूत्र उनके हाथ आवेगा। फिर स्वतंत्र भारत और ब्रिटेनके प्रतिनिधि साथ बैठकर अपने भविष्य संबंधका रूप तय कर लेंगे।

कांग्रेस इसके लिये राजी है कि मित्र शक्तियाँ अपनी फौज यहाँ आक्रमणोंके प्रतिकारके लिये रक्खें। भारत छोड़ दोका मतलब यह नहीं है कि सभी अंग्रेज यहाँसे चले जायं। मतलब है कि विदेशी हुकुमत उठ जाय और जो अपनेको विदेशी समझते हैं चले जायं। जो यहाँ वालोंके जैसे हो गये हैं, इस देशको जिनने घर बना लिया है उन्हें तो रहना है ही।

कांग्रेस उतावला नहीं बनना चाहती। वह ब्रिटिश सरकारसे अपील करती है कि भारतकी मांगको मंजूर कर ले।

अगर उसकी अपील नहीं सुनी गयी तब अपने हकपर पहुँचनेके लिये कांग्रेस अपनी सारी शक्तियोंका उपयोग करेगी। जिनका १९२० से अहिंसात्मक नीतिका अवलम्बन करके उसने संचय किया है।

पर यह प्रस्ताव इतना महत्वपूर्ण है कि औल इण्डिया कांग्रेस कमिटीकी राय पर इसे छोड़ देना जरूरी है। और औल इण्डिया कांग्रेस कमिटी बम्बईमें ७ अगस्त १९४२ को बैठेगी।

इस प्रस्तावको पढ़ कर भारतका दृष्टिकोण समझनेके बजाय इंगलैंडके राजनीतिज्ञोंने कांग्रेसको धमकाना शुरू किया और धमकी देनेवालोंमें क्रिप्स साहब भी शामिल हो गये।

९ अगस्त

इङ्गलैण्डकी देखा देखी अमेरिकाने भी गांधीजी और कांग्रेसके संबंधमें भ्रम फैलाना शुरू किया। पर जैसे जैसे कांग्रेसके खिलाफ विदेशियोंका प्रचार बढ़ता जाता वैसे वैसे कांग्रेस जनोंका आपसी मतभेद मिटता जाता। अगस्त आते आते तो ऐसी परिस्थिति हो गयी कि सभी एक स्वरसे ब्रिटिश साम्राज्यवादके विरुद्ध आन्दोलन छेड़ देनेकी आवश्यकतापर जोर देने लगे। सबोंका विश्वास हो गया कि अंगरेजी सरकार अपने पंजेसे राजी खुशी हिन्दुस्तानको निकलने न देगी; वह मिट जायगी पर अपने साम्राज्यवादी शिकंजेको ढीला न करेगी, अपनी भेद नीति न छोड़ेगी, हम हिन्दुस्तानियोंको एक न होने देगी, ताकि हम आजाद हो सकें। यदि सरकार जीत गयी तो हम जैसे पामाल हो रहे हैं, होते रहेंगे। यदि हार गयी तो विजेता आयेगा, वह हमारी फूटका फायदा उठा—हमें पामाल करना शुरू कर देगा।

इसलिये आवश्यकता है कि हम तुरत अंगरेजी सरकारको हटायें, एक बनें, अभीकी और आगेकी बला टालें।

ऐसी विचारधारासे ओतप्रोत अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी ता० ७ अगस्तको बम्बईमें बैठी जहाँ पण्डित जवाहरलाल नेहरूने अपना सुप्रसिद्ध अगस्त प्रस्ताव पेश किया। कार्य समिति तो वहाँ ४ अगस्तसे ही बैठी थी और प्रस्तावके शब्द शब्दपर गौर करके नेहरूजीके हाथ उसे सौंपा था। अगस्त प्रस्ताव क्या है कांग्रेसकी विचार धाराका निचोड़ है। प्रस्तावमें कहा है कि—

(१) हिन्दुस्तानकी भलाई और सयुंक्तराष्ट्रोंकी जीत इसीमें है कि तुरत यहाँ ब्रिटिश हुकूमतका खात्मा हो।

(२) चीन और रूस वगैरहपर जो संकट आया है उसका कारण है संयुक्त राष्ट्रोंकी साम्राज्यवादी नीति। उनकी साम्राज्यवादी नीतिको देख दुनियाकी पीड़ित जनता उनकी पीठपर नहीं है। यदि वे उक्त नीतिको त्याग दें तो संसारके अगुआ बन जायं और संसारमें सच्चा प्रजातंत्र स्थापित हो जाय।

(३) हिन्दुस्तानको आजादीका हक मिल जाय तो वह सब दलोंकी अस्थाई सरकार बनाय, अपनी और संयुक्त राष्ट्रोंकी रक्षाकी पूरी चेष्टा करें, फिर

विधान परिषद् बुलाकर वह सर्व सम्मत विधान तैयार करावे, विधान संघ शासनके अनुकूल, किसान और मजदूरके हाथमें ताकतकी कुंजी देता हुआ। फिर आजाद हिन्दुस्तान और मित्र राष्ट्रोंका भविष्य संबंध कैसा होवे इसे ये सभी एक दूसरेके लाभको देखते हुए तय कर लेंगे।

(४) हिन्दुस्तानकी आजादीको सभी पराधीन देशोंकी आजादीका लक्षण मानना चाहिये। इससे साम्राज्यवादकी समाप्तिका श्रीगणेश हो।

(५) यों तो इस संकट कालमें अखिल भारतीय कांग्रेस-कमिटीका लक्ष्य हिन्दुस्तानकी हिफाजत और आजादी है पर इसका पक्का विचार है कि विश्वकी शान्ति, सुरक्षा, सदुन्नति विश्वसंघकी स्थापनापर ही निर्भर करती है। यह विश्वसंघ शोषण और पराधीनताकी समाप्तिका प्रतीक हो, तभी निरस्त्रीकरण हो सकेगा और केवल एक विश्वसंघ सेना दल संसारकी लड़ाई भिड़ाईको रोक अमन कायम रख सकेगा। हिन्दुस्तान ऐसे विश्वसंघमें सहर्ष शामिल होगा और अन्यान्य देशोंके काँधेसे काँधा भिड़ा बहिर्राष्ट्रीय समस्यायोंको हल किया करेगा।

(६) पर ऐसे विचारको किसीको अपनाते न देख कमिटी दुःखी है। चीन, रूस और अपनी दुर्दशा जो हो रही है उससे त्राण पानेके लिये इंग्लैंडके लिये आवश्यक है कि वह तत्काल हिन्दुस्तानको आजाद करे, पर वह साम्राज्यवादी घमण्डमें चूर है जो सहा नहीं जाता फिर भी उससे और संयुक्त राष्ट्रोंसे कमिटीकी आखिरी अपील है संभल जानेकी और हिन्दुस्तानको आजाद करके अपना और हिन्दुस्तानका गला बचानेकी।

(७) पर अपील करके ही चुप नहीं रहा जा सकता। हकपर पहुँचनेके लिये जैसी तैयारी हिन्दुस्तान कर रहा है उसे रोका नहीं जा सकता। इसलिये कमिटी निश्चय करती है कि अपने जन्म सिद्ध अधिकार स्वराज्यकी प्राप्तिके लिये हिन्दुस्तान बड़ेसे बड़े पैमानेपर अहिंसात्मक ढंगसे जन आन्दोलन शुरू करे। बाईस वर्षोंके शान्तिपूर्ण संघर्षसे जिन शक्तियोंका संचय किया है उन सबका उपयोग करे। ऐसा आन्दोलन अनिवार्यतः गांधीजीके नेतृत्वमें ही हो सकता है। इसलिये गांधीजीसे प्रार्थना है कि देशका नेतृत्व करें और जो जो कदम लेना है सो हिन्दुस्तानको सुझावें।

(८) कमिटीने जनतासे अपील की है कि वह साहस तथा सहिष्णुताका परिचय

दे, खतरों और कठिनाइयोंका सामना करे, याद रक्खे कि इस आन्दोलनका आधार अहिंसा ही है। कमिटीने कहा कि जब कांग्रेसका संगठन छिन्न भिन्न हो जाय और ऊपरसे आदेश पानेकी संभावना न रहे, तब क्या स्त्री क्या पुरुष सभी मोटा मोटी जो आदेश मिल गया उसके आधारपर अपना कार्यक्रम आप ठीक करें और काम करते जायं जब तक भारत आजाद नहीं हो जाता

(६) अन्तमें समितिने साफ कर दिया है कि जो जन आन्दोलन होगा उसका लक्ष्य यह नहीं है कि कांग्रेसके हाथ हुकूमत आ जाय। जब हुकूमत मिलेगी हिन्दुस्तानकी सारी जनताको मिलेगी।

प्रस्ताव सुन कमिटीके प्रायः सभी सदस्य अपूर्व उत्साहमें आ गये। मालूम होता था मानों वहाँका वातावरण ही प्रस्तावका समर्थन कर रहा हो। ब्रिटिश साम्राज्यवादसे सभी ऊबे दीखते थे और आन्दोलन छेड़नेके लिये उतावलेसे नजर आते थे। पर नेताओंको अब भी उमीद थी कि अंगरेज सुलह करके रास्तेपर आजायेंगे। कमिटीकी कार्रवायी शुरू करते हुए ही मौलाना आजाद साहबने कहा था कि आजाद होते ही हिन्दुस्तान जापानका दोस्त बन जायगा इसका डर बेबुनियाद है; अब बात करनेका मौका नहीं है, काम करनेका है, इसलिये हम और ब्रिटिश सरकार एक साथ काम करें; यानी ब्रिटिश सरकार हिन्दुस्तानको आजाद घोषित करे और हम संयुक्त राष्ट्रके साथ मैदानमें दुश्मनोंसे लड़ने उतरें। सभापतिजीके बाद गांधीजी उठे थे और उनने कहा था कि मैं संकट में देख उनका सबसे बड़ा दोस्त बन गया हूँ; वे सब हारेंगे नहीं ऐसा मेरा विश्वास रहा है। पर सदस्योंकी भाव भंगिमा इन नेताओंकी प्रचंड आशावादिताका समर्थन नहीं कर रही थी। सदस्योंने संशोधनोंको नामंजूर करते हुए नारे और जय जयकारके बीच, अगस्त प्रस्तावको पास किया। लग भग २४० सदस्योंमेंसे १३ सदस्योंने विरोधमें हाथ उठाये।

प्रस्ताव पास हो जानेके बाद गांधीजी उठे। अढ़ाई घंटे उनका भाषण हुआ—हिन्दी में और अंग्रेजीमें। गांधीजीने कहा कि—हुकूमत मुसलमानोंके हाथ आयी तो मुझे आपत्ति नहीं होगी। उनकी जो सरकार कायम होगी उसकी मातहती मुसलमान ही नहीं, हिन्दू और दूसरे दूसरे फिरके भी स्वीकार कर लेंगे।

फिर उनने कहा कि प्रस्तावकी सूचना मैं बड़ेलाट साहबको दूंगा जिनका जवाब मिलते ज्यादा देर न होगी। पर मैं चाहता हूँ कि आजसे ही सदस्य ही नहीं बल्कि सारे

हिन्दुस्तानी समझ लें कि हमने गुलामोकी जंजीर तोड़ डालो और हम स्त्री पुरुष सभी आजाद हैं।

अंग्रेजीमें बोलते हुए उनने कहा कि देश और विदेशमें मेरे कितने ही मित्र है। जिनमें कुछको मेरी दानाईमें ही नहीं मेरी ईमानदारीमें भो शक है। मेरी दानाईको वैसी कोई कीमत नहीं, लेकिन अपनी ईमानदारीको मै बड़ी कीमती समझता हूँ। मे अपनेको लार्ड लिनलिथगो साहबका दोस्त मानता हूँ। अंगरेज और संयुक्त राष्ट्रवाले अपना दिल टटोलें और बतलावें कि आजादीकी मांग करके कांग्रेस कमिटीने कौनसा कुसूर किया है? मुझको विश्वास है संयुक्तराष्ट्र अमेरिकाके सभापति कांग्रेसका अविश्वास नहीं करेंगे। अंग्रेजों और संयुक्तराष्ट्रोंको मौका मिला है ऐसा जो दुबारा नहीं मिलता कि हिन्दुस्तानको आजाद करके अपने सदुद्देश्योंको प्रमाणित कर दें। फिर गांधीजीने हिन्दुस्तानके लिये दुनियाँको सभी जातियोंका आशीर्वाद चाहा पर संयुक्त राष्ट्रोंसे तो पूरी मदद मांगी।

भाषणको समाप्त करते ही गांधीजीने कहा—अहिंसाको मानते हुए हर आदमी जो चाहे करनेके लिये आजाद है। वह हर तरफ जिच पैदा करे, हड़ताल करावे और अन्यान्य अहिंसात्मक साधनोंसे काम लेवे। सत्याग्रहियोंको कार्यक्षेत्रमें पिल पड़ना चाहिये जीनेके लिये नहीं, मरनेके लिये। जभी लोग निकल पड़ते हैं ढूँढ़कर मौतका सामना करनेके लिये तभी उनकी कौम मौतसे बची रहती है। बस, हमलोग अब करेंगे या मरेंगे।

आज अगस्तकी आठ तारीख थी, अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटीकी बैठकका दूसरा दिन। रातके करीब ग्यारह बजे थे। सदस्योंको सूचना मिली कि कल उन्हें फिर मिलना है जब कि झण्डा उत्थानके बाद गांधीजी आन्दोलनकी गतिविधिके संबंधमें उन्हें आदेश देंगे। उमंग और आशा भरी उत्सुकतासे सभी ९ अगस्तकी प्रतीक्षामें सोये।

उधर बिड़ला हाउसमें जैसा कि डाक्टर सुशीला नायर लिखती हैं, सुबह चार बजेकी प्रार्थनाके समय महादेव भाईने बापूजीसे कहा कि रात एक बजे तक टेलीफोन आते रहे कि बापूजीको पकड़ने आ रहे हैं वगैरा। बापू कहने लगे, "मुझे कोई नहीं पकड़ेगा, सरकार इतनी मूर्ख नहीं कि मेरे जैसे मित्रको पकड़े, और आजके मेरे भाषणके बाद तो पकड़ ही कैसे सकती है?"

"बापूजीका यह आत्मविश्वास बापूके दलके सभी लोगोंपर असर डाल रहा था। ......लेकिन यह आत्मविश्वास झूठा साबित हुआ। नौ अगस्तको सुबह ५॥ बजे महादेवभाई दौड़ते हुए आये और बोले, "बापू! पकड़ने आये हैं।" बापू झट तैयार

हुए। पुलिस अफसरने तयारीके लिये आध घंटा दिया था। सबने मिलकर प्रार्थना की। ६ बजे बापू, महादेव भाई और मीरा बहनको लेकर पुलिस चली गयी। बा और भाई भी चाहते, तो साथ जा सकते थे, मगर बापूजीने समझाया, "तू न रह सके तो चले चल, लेकिन मैं चाहता तो यह हूँ कि तू मेरे साथ आनेके बदले मेरा काम कर।"

लगभग इसी समय कांग्रेस कार्य समितिके सभी सदस्य भारत रक्षा कानूनके मुताबिक गिरफ्तार करके कहीं भेज दिये गये। गिरफ्तारी इतनी झटपट हुई कि किसीसे कुछ सन्देश देते न बन पड़ा। हां! गांधीजी अपने सहायक श्रीप्यारेलालसे कहते गये कि आजादीका हर सिपाही 'करेंगे या मरेंगे' का बिल्ला अपने कपड़ोंपर सीले जिससे कि सत्याग्रह करता हुआ यदि वह मारा गया तब वह अपने बिल्लेकी सहायतासे उन लोगोंके बीचमें भी पहचाना जा सके जिन लोगोंका विश्वास अहिंसापर नहीं है।

भिन्न-भिन्न स्थानोंमें टिके हुए प्रतिनिधियोंको घटनाचक्रकी कोई खबर न थी। वे ९ अगस्तकी सुबहमें उठे और शिवाजी पार्कमें जहाँ झण्डा उत्थान होता, एक साथ पहुँचनेके लिये अपने अपने साथियोंको फोन करने लगे तो देखा फोनका संबंध तोड़ दिया गया है। उनका माथा ठनका। वे इर्द गिर्दकी हवा सूंघने लगे। तुरत सड़क पर नेताओंकी गिरफ्तारीकी घोषणा होने लगी और तरह तरहकी अफवाहें सुनायी देने लगीं।

बिहारके प्रतिनिधि दम साधे सारा तमाशा देख रहे थे। एक साथी, गयाके श्री मदन मोहन सिंह शिवाजी पार्ककी ओर बढ़े। वहाँ थोड़ी जनता और देश सेविकायें इकट्ठी हो गयी थीं। पुलिसने उन्हें तितर बितर करनेके लिये अश्रुगैसका प्रयोग किया। कुछ देश सेविकाओंकी आँखोंपर उसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। उन्हें भींगे रूमालकी मदद करते हुए श्रीमदन मोहन सिंह वापस कांग्रेस भवन लौटे। देखा उसपर पुलिसका कब्जा हो रहा है। तत्काल स्वयंसेवक और देश सेविकाएं कांग्रेस भवनमें घुस पड़े। फिर क्या था? पुलिसने कस कर लाठी चार्ज किया। कितनोंका सर लहू-लुहान हो गया। श्रीमदन मोहनने देश सेविकाओंसे कहा—पुलिस अब खूंखार बन गयी, आप सब घर जायं।

सचमुच पुलिस सारे दिन लाठी चलाती रही और बन्दूक छोड़ती रही। वह स्थानीय नेताओंको गिरफ्तार भी करती रही। क्षुब्ध जनताने ट्राम जलाया और ट्रक वगैरह। फिर सड़कें काटी और उन्हें अच्छी तरह जाम कर दिया। पुलिसका दमन ज्यों ज्यों कठोर होता जाता जनताकी तोड़फोड़की प्रवृत्ति त्यों त्यों जोर पकड़ती जाती।

भागो आलइण्डिया कांग्रेस कमिटी की
मंत्रिणी
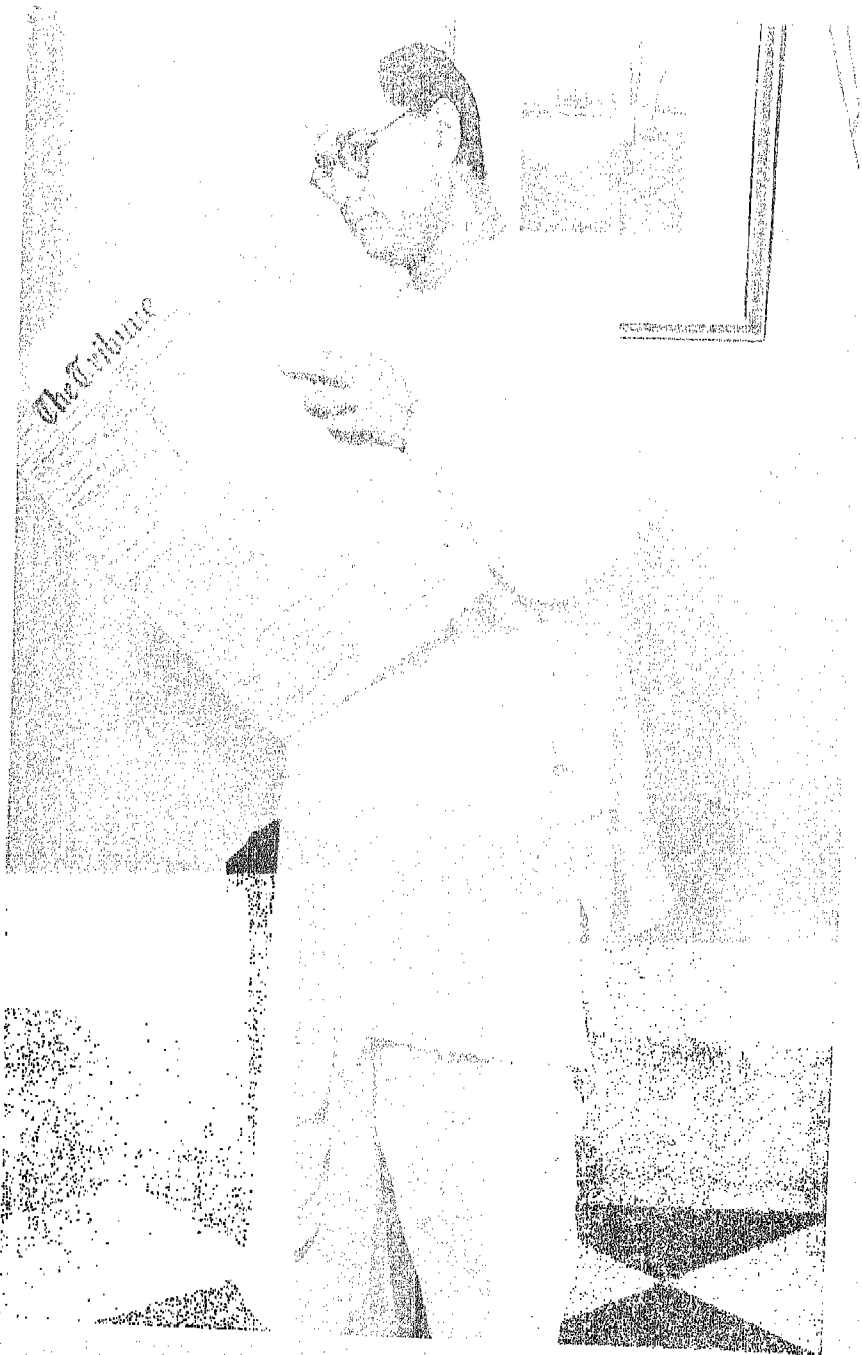
सशस्त्र क्रान्ति का साधक

पर अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटीके कुछ सदस्योंकी दूसरी चिन्ता सता रही थी। वे जानते थे, देशव्यापी आन्दोलन होगा। इसलिये वे चाहते थे कि विभिन्न प्रान्तोंके जो सदस्य आये हुए हैं उन्हें एक जगह बैठा कर एक देशव्यापी कार्यक्रम तैयार कर लिया जाय। बैठनेकी जगह बिड़ला भवनमें ही हो सकती थी क्योंकि गांधीजीने सबोंको वहीं बुलाया था और प्रतिनिधिगण वहां इकट्ठा हो भी रहे थे। इधर उधरके दृश्योंको देखती हुई श्रीमती सुचेता कृपलानी, श्रीखुरशैद बेन, श्रीमृदुला साराभाई भी वहाँ आ पहुँचीं, अपने साथ अनेक प्रतिनिधियोंको वे सब बटोरती आयीं। श्रीसादिक अली भी ऐन मौके पर आ मौजूद हुए।

श्रीमती सुचेता कृपलानी कहती हैं कि आते ही हमलोगोंने श्रीप्यारेलालसे पूछा कि महात्माजी हमारे लिये कुछ कह गये या नहीं? श्रीप्यारेलालने तब सबोंको महात्माजी-का करेंगे या मरेंगे वाला प्रोग्राम पढ़ सुनाया। अब और आवश्यक हो गया कि हम सब बैठ कर सलाह मशविरा करें और उस सन्देशके अनुकूल देशके लिये एक प्रोग्राम बना लेवें। हमने बिड़ला भवनमें जाना चाहा, मगर श्रीप्यारेलालने कहा कि हम वहाँ नहीं जा सकते। क्योंकि बिड़लाजीकी इच्छा नहीं है कि वहाँ कोई मीटिङ्ग होवे। हमने तब भवनके बाहर हातेमें ही बैठ जाना चाहा क्योंकि डर था वहाँसे हटते ही लोग तितर बितर हो जायंगे और देशव्यापी प्रोग्राम न बन सकेगा। पर प्यारेलालजी बोले कि हम उनके मकानके हातेमें भी नहीं बैठें। लाचार हमें उस स्थानसे हटना पड़ा। मगर हम कुछ संतोषके साथ हटे क्योंकि खुरशैद बेनके पूछनेपर कि करेंगे या मरेंगेके सन्देशके अलावा और भी कुछ हमारे लिये है, प्यारेलालजीने उन्हें एक परचा दिया जिसमें बारह आदेश थे।

"बिड़लाजीके यहाँसे बाहर होते ही हम छिटपुट हो गये। भिन्न भिन्न गिरोहमें कई जगह मिले पर किसी नतीजेपर पहुँच नहीं सके। सबोंका नाम मुझको याद नहीं है, पर वहाँ निश्चय ही श्रीअच्युत पटवर्धन, डाक्टर राममनोहर लोहिया, श्रीमृदुला साराभाई और श्रीमोहनलाल सकसेना थे। सबोंने तय किया कि ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीका आफिस चलानेकी जवाबदेही श्रीसुचेता कृपलानीको सौंपी जाय। मैंने उसकी जवाबदेही लेली और डाक्टर राममनोहर लोहियाको सहायक रूपमें मांगा। श्रीलोहियाकी सहायता मुझको मिल गयी। फिर मैं श्रीसादिकअली और गिरिधारी कृपलानीके सहयोगसे ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटी आफिसका संचालन करनेमें तभीसे दत्तचित्त हो गयी।

"श्री प्यारेलालका दिया हुआ परचा श्री खुरशैद बेनसे लेकर मैंने श्री सादिक अलीको

दिया; और मेरे आदेशानुसार उनने उसे सरकुलरका रूप देकर टाईप कर दिया जिसकी एक एक प्रति १० अगस्तको ही मैंने प्रत्येक प्रान्तके मुख्य मुख्य कार्यकर्त्ताको दिया। बिहारका कोई कार्यकर्त्ता मुझको न मिला। इसलिये वहाँ उस परचेको मैंने एक खास आदमीके मार्फत भेजा।"

परचेके सारांशका हिन्दी रूपान्तर यों है :—

अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटीका बारह आदेशोंवाला कार्यक्रम :—

आदेश न० (१) देश भरमें शान्तिपूर्ण हड़ताल हो, नेताओंकी गिरफ्तारीका विरोध करनेके लिये और जबतक हम आजाद नहीं हो जायं तबतक हम आन्दोलन करते रहेंगे—ऐसा निश्चय जतलानेके लिये—

शामको सभा हो, जहाँ जनताको अंग्रेजों भारत छोड़ दोका नारा समझाया जाय। सभामें शामिल होनेकी मनाही हो तो न माना जाय।

(२) नमक बनाया जाय। नमक कानून तोड़ा जाय।

(३) गांवोंके तमाम लोग असहयोग करें, सरकारको माल देना बन्द करें। जहां जमींदारी है वहाँका जमींदार अगर जनताका साथ दे रहा है और सरकारसे असहयोग कर रहा है तब लोग उसको लगानमें उसका हिस्सा जो हो सो दें।

(४) १६ सालसे ज्यादा उम्रवाले विद्यार्थी कालेज और विश्वविद्यालयका त्याग करें और इस अहिंसात्मक आन्दोलनको सफल बनावें। हमारे नेता गिरफ्तार कर लिए गये। जो चन्द बच रहे हैं जल्द जेलमें ठूँस दिये जायंगे। विद्यार्थी उनकी जगह ले सकते हैं।

(५) अपने देशके जीवन मरनकी लड़ाईमें सरकारके अमलोंको उचित है कि सरकारका साथ न देकर देशका साथ दें। वे सब सरकारी नौकरी छोड़ दें। अगर सरकारी नौकरी छोड़ देनेकी ताकत उनमें नहीं है तब इतनी हिम्मत तो होनी ही चाहिये कि जब सरकार हुक्म दे कि जनताको दबाओ और कुचल दो तब वे साफ ना कर दें। वे बरखास्त कर दिये जायं तो भी परवाह न करें।

(६) फौजका हरेक सिपाही अपनेको कांग्रेस जन समझे। अफसरोंके हुक्मको जो विवेक विरुद्ध हो न माने। अहिंसात्मक समूहों तथा शान्त सभा और जलूसोंको लाठी वा गोलीका शिकार न बनाये और न उनपर अश्रुगैस छोड़े।

(७) देशी राज्यके शासक आजादीकी लड़ाईमें हमारा हाथ बटावें और वहाँकी प्रजा भी इस आन्दोलनमें शामिल होवे। उनको लड़ना तो अंग्रेजी सरकारसे है, पर

अगर रजवाड़ोंने सरकारका साथ दिया तब तो दोनोंके सम्मिलित गुटसे सभी प्रजाको लड़ना पड़ेगा।

(८) महिलागण आन्दोलनमें शामिल हों और अपने अहिंसापूर्ण त्याग तथा कष्ट सहिष्णुतासे हिन्दुस्तानियोंमें जान डाल कर क्रान्तिको तेज और तुरत सफल होने वाली बनावें।

(९) हरेक स्त्री और पुरुष करेंगे या मरेंगेका बिल्ला धारण करे जिससे मालूम हो कि उसका दृढ़ निश्चय है कि आजादी हासिल करूंगा या इसी कोशिशमें मर मिटूँगा।

(१०) यह ऐसा आन्दोलन है जिसमें हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, पारसी और ईसाइयोंको शामिल होना है। आजादी सबकी चीज है। सम्प्रदाय या धर्म्मसे इसका कोई मतलब नहीं।

(११) गान्धीजी जेल गये। आज उनकी जगहपर हिन्दुस्तानका हरेक स्त्री पुरुष है। उसे आजाद जैसा रहना है, आजाद जैसा मरना है। यह हमारी आखिरी लड़ाई है। अगर सब अपना फर्ज अदा करें तब दो महीनेमें हमारी लड़ाई खत्म हो जाय।

विदेशी हुकुमतका खात्मा करना हमारा लक्ष्य है। इस लक्ष्य तक पहुँचनेके लिये अहिंसाकी लक्ष्मण रेखाके भीतर जो जो काम हो सकते हैं सभी करने हैं, सभी जायज हैं। सरकारकी कमर तोड़ देनेवाले सभी अहिंसात्मक साधनोंको हरेक प्रान्तवाले सोच निकालें और अमलमें लावें। हरेक आदमी आप ही अपना नेता है, आप ही अपनी राह दिखानेवाला है। हरेक प्रान्तको आन्दोलनके संचालनकी पूरी आजादी है।

(१२) हमलोग कताई न छोड़ें। अगर लाखों कातने लगें तो आन्दोलनको बड़ा बल मिल जाय।

बिहारको इन कार्रवाइयोंकी खबर बंबईमें न लग सकी। बाबू जगतनारायण लाल शहरमें घूमते रहे। उनने वहांका लंकाकांड देखा। एक सभामें भाग भी लिया पर फिर उनका सम्पर्क श्रीमृदुला बेन, श्रीसुचेता कृपलानीसे न रहा।

बिहारके प्रतिनिधियोंको प्रान्त लौटनेकी जल्दी थी। उनका प्रोग्राम तैयार था जिसे तत्काल काममें लानेकी धुन थी। पूर्णियाके श्रीवैद्यनाथ चौधरीके शब्दोंमें कहा जाय तो यह कि वे प्रोग्रामको बंबई भी इसलिये ले गये थे कि मौलाना आजाद, सरदार पटेल और गान्धीजीसे उसे स्वीकृत करा लिया जाय। इसका सुअवसर उन्हें न मिला, जिसके

लिये उन्हें खेद था। किन्तु उत्साहमें सरसों बराबर भी कमी नहीं हुई क्योंकि अपना प्रोग्राम ज्योंका त्यों बना रहा।

बिहारके सभी प्रतिनिधि कृत संकल्प बंबईसे रवाना हुए। उनने देखा, खास खास जगहोंमें रेलगाड़ी रोक कर स्थान स्थानकी पुलिस अपने यहांके कांग्रेस नेताओंको गिरफ्तार कर रही है। वे चौकन्ने हुए। कितनोंने सोचा अपने स्थानमें उतर कर गिरफ्तारीकी सुविधाका लाभ उठाकर जेलमें सकुशल दाखिल हो जाना परिस्थितिकी सचाईका तकाजा नहीं है, हमें तो गांधीजीके शब्दोंमें मौतको ढूँढ़ निकाल उसका सामना करना है, गांवोंमें रहनेवालोंको 'करेंगे या मरेंगे' का सन्देश देना है, उनके बीच अपने प्रोग्रामका प्रचार करना है; हिंसा और सरकारको दबानेके लिये संगठन करना है जिसके लिये ठेठ जनताके बीच खुले आम मिलकर काम करना है। इस विचारधारामें बहकर श्री मदनमोहन सिंहने नैनी स्टेशन पार करके रेलको छोड़ दिया और गयाकी जनतामें शामिल हो गए। श्री जगतनारायण लालने नेउराके पाससे पटनेमें प्रवेश किया और वैद्यनाथ चौधरीने कुरसेला होकर पूर्णियांमें। इनके जैसे विचार रखनेवाले इसी ढंगसे कार्यक्षेत्रमें उतरे और खुलेआम खतरेको चुनौती देते हुए आन्दोलनकी आग जगाने लगे।

और सरकार भी दमन चक्र चलानेमें क्रूरता दिखाने लगी। उसने अगस्त प्रस्तावके जवाबमें साफ-साफ कह दिया कि कांग्रेसकी बात माननेके लिये वह बिलकुल तैयार नहीं है। उसको मालूम है कि कांग्रेस कुछ दिनोंसे हिंसात्मक कार्रवाई करनेकी खतरनाक तैयारी कर रही है; वह हड़ताल करायगी; तोड़ फोड़के काम करेगी; राज भक्तोंको भड़काना, देशरक्षामें विघ्न डालना वगैरह उसका काम होगा अगर उसकी बात न मानी गयी तो।

पर उसकी बात माननेका मतलब है देशमें उपद्रव करवाना, अराजकता फैलाना जो उन चेष्टाओंको विफल कर देगा जिन्हें मनुष्यमात्रको आजाद करनेके लिये सब लोग कर रहें हैं।

फिर कांग्रेसकी मांग तो भारतकी मांग नहीं है। बड़े बड़े फिरके, बड़े बड़े नेता उसके खिलाफ हैं। बहुत काफी लोग लड़ाईमें सरकारका साथ दे रहे हैं। क्या कांग्रेसके कहनेसे सरकार उसके इन विरोधियोंको कुचल दे ?

देशकी अनेक पार्टियोंमें कांग्रेस भी एक पार्टी है। पर यह पार्टी देशोन्नतिकी राहमें बराबर रोड़े अटकाती रही और आजतक देशमें इसने स्वशासन स्थापित नहीं होने दिया।

उसका कहना कि हिन्दुस्तानकी जनतामें ब्रिटिश सरकारकी नीतिको लेकर असंतोष है
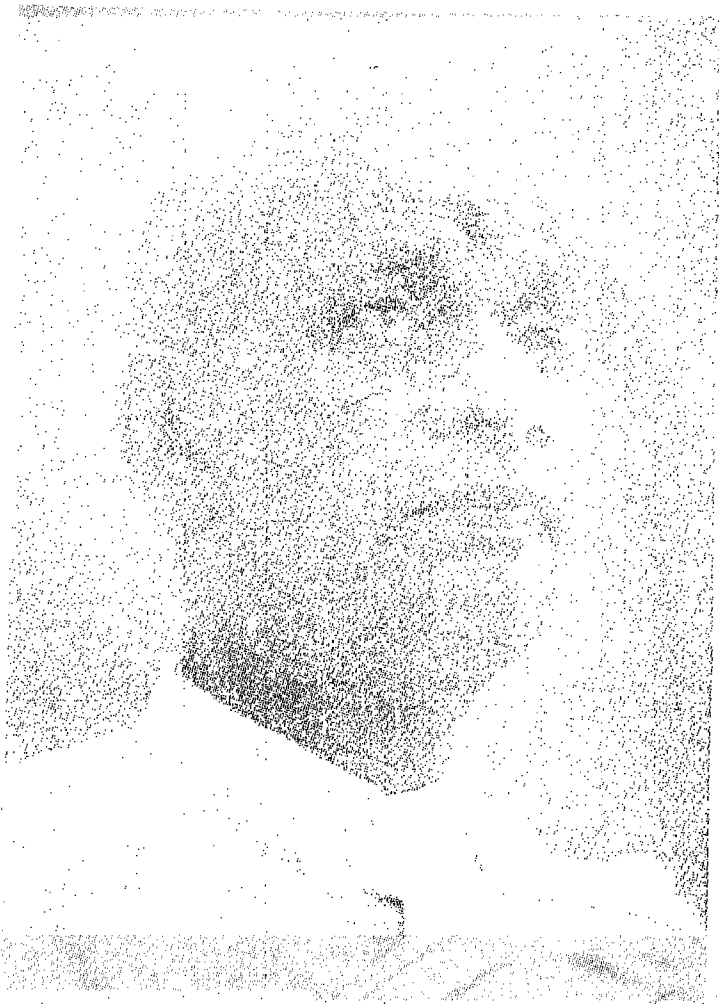
'भारत-छोड़ो' प्रस्ताव के समर्थक
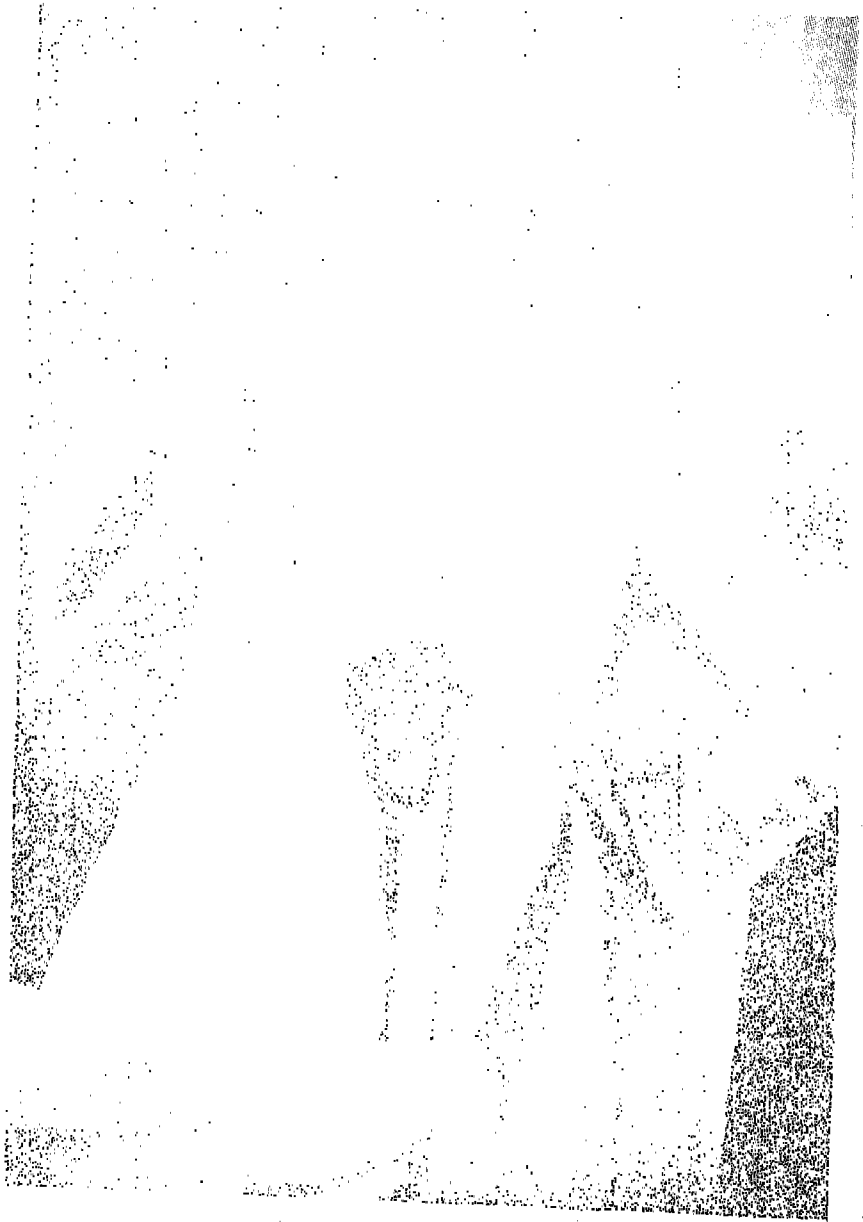
तत्कालीन राष्ट्रपति

और उसके प्रति अविश्वास फैल रहा है—सच नहीं है। ब्रिटिश सरकारने हिन्दुस्तानको स्वशासनकी गारण्टी दी है। कहा है कि लड़ाईके बाद सभी दलवाले मिलकर विधान परिषद द्वारा अपने देशकालके अनुकूल विधान तैयार कर लेवें। सरकारकी इस घोषणासे हिदुस्तान तो खुश है प्रसन्न है।

कांग्रेस पार्टीका दावा कि अंगरेजी सरकारके हटते ही हिन्दुस्तानके सब दल मिल कर टिकाऊ अनस्थायी सरकारका सगंठन कर लेंगे, बिलकुल गलत है। हिन्दुस्तानमें तो ऐसी फूट है कि कुछ पूछो नहीं, इस फूटको दूर करनेकी कोशिश तो आज तक अंगरेजी सरकार करती आयी है तो भी हालत ऐसी है कि वह हटी कि अमन और आजादीके दुश्मन हिन्दुस्तानपर चढ़ बैठे। फिर अनस्थायी सरकारका संगठन कैसे होगा ?

इसलिये कांग्रेस पार्टीकी बात मान लेना मित्र राष्ट्रोंको धोखा देना है, रूस और चीनको धोखा देना है ही, और उन आदर्शोंपर हरताल फेरना है जिनका समर्थन हिन्दुस्ताननने दिल दिमागसे किया और कर रहा है, फिर ऐसा करना हिन्दुस्तानके लड़ाकोंको धोखा देना है जिनका इतना यश है और उन सभी सहयोगियोंको धोखा देना है जो कांग्रेसका समर्थन नहीं करते, पर जिनने ब्रिटिश सरकार और देशी रियासतोंमें युद्धोद्योगके बड़े बड़े काम किये हैं।

आज हिन्दुस्तानमें जो सरकार है उसमें हिन्दुस्तानियोंका हाथ ज्यादा है, वह पहले से मजबूत है, और हिन्दुस्तानियोंका अधिक प्रतिनिधित्व करती है। ऐसी सरकार को ऐसे नाजुक मौकेपर चुनौती दी गयी है। कितने दुखकी बात है।

पर सरकारका कर्तव्य स्पष्ट है। वह कांग्रेस पार्टीके विद्रोहको दबाएगी। वह कड़ी कार्रवाई करेगी और लोगोंको सजा देनेके ख्यालसे नहीं बल्कि युद्धोद्योगकी बाधाओंको दूर करनेके लिये और उन खतरोंसे बचनेके लिये जिनका उल्लेख किया गया है। और इसे अच्छी तरह समझते हुए कि हिन्दुस्तानके प्रति इसकी जवाब देही है और इसे मित्र राष्ट्रों तथा सभ्यताके हितको देखते रहना है।

इस लिये सभी हिन्दुस्तानी भेद भाव भूलकर सरकारकी मदद करें ताकि कांग्रेस पार्टीका विद्रोह कुचल दिया जाय, देशकी रक्षा हो और लड़ाईमें जीत हो, जिससे हिन्दुस्तानका ही भविष्य नहीं बनेगा बल्कि संसारकी सभी स्वतंत्रता प्रेमी जातियोंका भाग्य चमकेगा।

इस प्रस्तावको पास करके अंगरेजी सरकार सिर्फ विदेशियोंकी आँखोंमें धूल

झोंक सकी। उसने मुस्लिम लीग, अम्बेदकर दल, और कम्यूनिष्ट पार्टी जैसी अन्यान्य पार्टियोंको भी अपनी कमर सीधी करनेका मौका दिया। पर कांग्रेस जनोंको उसका प्रस्ताव हतोत्साह न कर सका, उसने इसके खुले विद्रोहकी आगमें घीका ही काम किया।

—०※०—

बिहारमें ज्वालामुखी फूटी

बिहारके प्रतिनिधियोंके पहुँचनेके पहले ही नौ अगस्त बिहारमें अपनी करामात दिखाने लगा। कार्यसमितिके अन्यान्य सदस्योंकी गिरफ्तारीकी खबर सदाकत आश्रममें सुबहको ही पहुंच गयी और लोग समझ गये कि अब जल्दी ही डाक्टर राजेन्द्र प्रसादकी बारी आ रही है। यहाँ लोगोंमें उत्साह था, काममें पिल पड़नेकी व्यग्रता थी। चिंता थी केवल राजेन्द्रबाबूके स्वास्थ्यकी जो दम्मेसे बेदम और ज्वरसे जर्जरित हफ्तोंसे शय्याशायी हो रहे थे। उन्हें भी पकड़कर किसी अज्ञात स्थानमें ले जायेंगे क्या! यह एक ऐसा सवाल था जिसे एक दूसरेसे पूछता और जवाब नहीं पाता। पर शीघ्र जवाब देनेके लिये सरकारके अधिकारी पहुँचे और आपसमें सलाह मशविरा करनेके बाद उनने राजेन्द्रबाबूको दोपहड़ चढ़ते चढ़ते जिला जेलके अस्पतालमें पहुँचाकर सुला दिया।

राजेन्द्रबाबू बिहारके प्रति अपना फर्ज अदा करके विश्राम मन्दिर पहुँचे थे, मन प्रान्तको खुली बगावत सिखानेके लिये उछल रहा था, और तन शिथिल तथा क्लान्त हो रहा था। पर मन तनपर विजय पा रहा था। जब वाणीको शक्ति रहती तब वाणीसे और जब रोग उग्र बनकर उस शक्तिको भी क्षीणफर देता तब इशारेसे राजेन्द्रबाबू जुलाईके उत्तरार्द्ध से ही आन्दोलनकी गतिविधि प्रान्तके कार्यकर्ताओंको बतलाते रहे।

३१ जुलाईकी प्रान्तीय कांग्रेस कमिटीकी आखिरी बैठकमें बोलते हुए आपने कहा, "इसबार महज जेल जाना नहीं है। अबकिका आन्दोलन भीषण है। सरकार घोरसे घोर दमन करेगी, गोली मारेगी, बम फेंकेगी, सम्पत्ति जब्त करेगी। अबकी सब संभव है। इसलिये आन्दोलनमें शामिल होनेवाले कांग्रेस जन समझलें उनपर सब तरहके खतरे हैं।" कुछ दम लेकर राजेन्द्रबाबूने अन्तमें कहा—"आइये, हमलोग मिल लेवें, कौन जाने फिर कौन किससे मिल सकेगा।" जिन जिनने भाषण

सुना समझ लिया कितना भीषण आन्दोलन आनेवाला है। गान्धीजी जेलके बाहर रहेंगे ऐसा शायद ही कोई विश्वास करता था। बहुतोंके मुखसे तो यही निकलता था कि अगस्त प्रस्ताव पास होते न होते गान्धीजी ही नहीं बल्कि सभी नेता जेलमें ठूँस दिये जायेंगे। सर्वश्री जगलाल चौधरी, दीपनारायण सिंह, मथुराप्रसाद, बैद्यनाथ चौधरीको भी कुछ ऐसी ही आशंका थी। इसलिये उनने आवश्यक समझा कि राजेन्द्रबाबूसे आन्दोलनका प्रोग्राम ले लिया जाये। हो सकता है फिर किसीको प्रोग्राम देनेका मौका न मिले। पर राजेन्द्रबाबू और कमजोर हो गये थे बोल भी नहीं सकते थे। हां, सर हिला सकते थे। इन लोगोंके लिये इतना काफी था। कागज लेकर राजेन्द्रबाबूके पास गये और बोले आन्दोलनमें जो जो करना पड़ सकता है एक एक करके सभी हम कहते जायेंगे और सिर्फ सर हिलाकर आप हां ना करते जाइयेगा। हम हांवाले कामोंको लिखते जायेंगे और इस तरह आपका दिया अगस्त आन्दोलनका प्रोग्राम तैयार हो जायगा। राजेन्द्रबाबू बड़े खुश हुए और उपर्युक्त विधिसे प्रोग्राम बना दिया। बागी बिहारको यही पूंजी हुई। इस पूंजीकी ताकतको पाकर पटना उत्साह पूर्वक उन्हें जेल पहुँचा आया।

राजेन्द्रबाबूके जेल पहुँचे थोड़ी देर ही हुई होगी कि श्रीफूलनप्रसाद वर्मा भी वहाँ पहुँचा दिये गये। उनकी गिरफ्तारीके एक डेढ़ घण्टा पहले कुछ विद्यार्थी उनके पास पहुँचे थे और प्रोग्राम मांगा था। सर्चलाइट अखबार सामने था जिसमें एमरी साहब, तत्कालीन भारतमंत्रीका वक्तव्य छपा था। एमरी साहबने तोड़फोड़ और ऐसे ही दूसरे दूसरे खतरनाक कामोंके प्रोग्रामको नेताओंकी गिरफ्तारीका कारण बतलाया था। फूलन प्रसादजीने विद्यार्थियोंको अखबार दे दिया और कहा "लीजिये यही प्रोग्राम है।"

एमरी साहबके वक्तव्यने अफवाहोंको आधार दे दिया। बतकहीको प्रोग्रामके रूपमें पेश किया। रेडियोने उनके वक्तव्यको प्रान्त भरमें प्रचार कर दिया। जिनने न अफवाह सुनी थी और न बतकहीकी खबर रखते थे उनने इस वक्तव्यसे ही जाना कि कांग्रेस क्या करना चाहती थी और उसे क्या करना चाहिये। पर आन्दोलनको जान मिली डाक्टर राजेन्द्रप्रसादके ही प्रोग्रामसे। श्री सिद्धेश्वर प्रसादके शब्दोंमें "९ अगस्तको पटनेके कार्यकर्ता नेशनल हालमें इकट्ठे हुए थे—उद्देश्य था आन्दोलनकी रूप रेखा समझ लेना—सभापति थे बाबू अनुग्रहनारायण सिंह। उनने कहा कुछ ऐसा काम करना पड़ेगा जिससे सरकार पंगु हो जाय। प्रश्न हुआ, रेल तार खतम किये जा सकते

हैं ? जवाब मिला......परचा छप रहा है तैयार होते ही मिल जायगा। उसी परचेके मुताबिक सब काम करना है।

एक रातको सर्वश्री जगजीवन राम, बी० पी० सिंहा, ज्ञान साहा और पटना जिला कांग्रेसके सभापति और मंत्री मेरे डेरेपर इकट्ठे हुए और आन्दोलनकी तैयारीकी चर्चा की।

ता० ६ को राजेन्द्रबाबूकी गिरफ्तारीकी खबर मिली। डेरेपर विद्यार्थी पहुँचने लगे और प्रोग्रामका तकाजा करने लगे। परचे तैयार हो चुके थे। मैंने उन्हें परचे दिये जिनको शहरमें बांटना शुरू कर दिया गया। एक सुपरिचित वकीलने कहा इस परचेको किसने तैयार किया है ? इसपर नाम क्यों नहीं हैं ? यह किसके हुक्मसे बांटा जा रहा है ?"

पर कर्मठोंको इस मौकेपर इस तरहकी छानबीन नहीं करनी थी। उनमेंसे कितने तो खबर पाते ही कि राजेन्द्रबाबूको गिरफ्तार करने पुलिस सदाकत आश्रम पहुँच गयी है, राजेन्द्रबाबूके दर्शनको दौड़ पड़े थे।

नेताओंकी गिरफ्तारीके विरोधमें शामको शहरने हड़ताल मनायी। पर दिनके तीन बजे ही एक बड़ा जलूस निकला। छात्र संघके प्रयत्नसे लग भग चार हजार विद्यार्थी उसमें शामिल थे। जलूस शहरके खास खास हिस्सोंमें अगस्त क्रान्तिके नारे लगाता हुआ बाँकीपुर जिला जेल पहुँचा और बुलन्द आवाजमें अपने बन्दी नेताको वचन दिया—'करेंगे या मरेंगे'। वहाँसे जलूस लाट साहबकी कोठीपर पहुँचा और बिहारके रोब तथा संकल्पका प्रदर्शन करता रहा। लाट साहबकी सुख निद्रा भंग हो गयी।

दस अगस्तको सदाकत आश्रम जब्त हुआ और नेशनल हाल भी। शहरके छात्रोंके बीच बड़ी चहल पहल रही। वे अपनी अपनी संस्थाओंपर धरना देने लगे जिससे कम ही अध्यापक और छात्र घुस पाये। फलस्वरूप स्कूल और कालेज खालीसे नजर आने लगे और इनकी इमारतोंपर राष्ट्रीय झण्डा फहराने लगा। छात्रावास भी अपने सरसे झण्डा उड़ा रहा था।

बाँकीपुर कन्या हाई स्कूलपर छात्रोंने धरना दे रक्खा था। उन्हें हटानेके लिये लौरी भर कर पुलिस आयी और विद्यार्थियोंको हिरासतमें ले लिया। इससे विद्यार्थी समाजमें बड़ी उत्तेजना फैली और लगभग ५०० विद्यार्थी वहाँ जमा हो गये। संस्था बन्द हो गयी और पर्याप्त संख्यामें लड़कियोंने प्रदर्शनमें भाग लिया।

सिटीके विद्यार्थियोंमें भी वैसी ही चहल पहल थी। प्रदर्शन और धरना समान रंग ला रहे थे।

आजकी हड़ताल तो पूरीकी पूरी रही। पटना और पटनासीटी दुकानें बन्दकर अंगरेजी सरकारको कोस रहे थे।

दोपहड़को देश सेविकाएँ निकलीं श्रीभगवती देवीके नायकत्वमें। साथ विद्यार्थियों और अन्य कार्यकर्त्ताओंकी अच्छी तादाद थी। जलूस पटनाकी अदालतमें पहुँचा। बेशुमार भीड़ पीछे लग गयी। 'अंग्रेजो ! भारत छोड़दोका' नारा अधिकारियोंको बदह्वास करने लगा। अदालत बन्द हो गयी और पुलिसने वहाँ दस प्रदर्शन कारियोंको गिरफ्तार कर लिया।

शामको बाँकीपुर मैदानमें सभा हुई। दस हजारकी उपस्थिति थी। निश्चय हुआ कि स्कूल कालेजोंका धरना मजबूत किया जाय, और कचहरियों, सरकारी इमारतों और सेक्रेटेरियटपर राष्ट्रीय झण्डा फहराया जाय। सिटीके आन्दोलनकारियोंने भी मंगल तालाबपर सभा करके ऐसा ही निश्चय किया।

जिलेके भीतर भी ऐसी ही परिस्थिति रही। बिहार शरीफमें १० अगस्तको जलूस निकला और श्रीअयोध्या प्रसाद अपने कुछ साथियों सहित गिरफ्तार कर लिये गये। वहाँ किसानोंका भी जत्था आया। उसने शहरमें प्रदर्शन किया और कचहरीपर झण्डा फहराते हुए गिरफ्तार होकर जेलकी राह ली।

बख्तियारपुरमें हड़ताल हुई दुकानदारोंको और विद्यार्थियोंकी, और कई कांग्रेस कार्यकर्त्ता पकड़े गये। इन दिनोंकी परिस्थितिका बड़ा सुन्दर चित्र श्री जगलाल चौधरीने (आजके आनरेबुल मिनिस्टर, आबकारी विभाग) अपने वक्तव्यमें खींचा है। वे लिखते हैं—

"७ अगस्त १९४२ को अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटीकी बैठक बम्बईमें होनेवाली थी जिसमें पूज्य महात्माजीके 'भारत छोड़ो' प्रस्तावपर विचार होनेवाला था। पूज्य देशरत्नजी उन दिनों बीमार थे, अतः बम्बई न जा सके थे, वे सदाकत आश्रममें ही पड़े थे।

उक्त तिथिके ८ दिन पहले बिहार प्रान्तीय कांग्रेस कमिटीकी बैठक सदाकत आश्रममें बुलायी गयी थी, जिसमें सभी जिलाओंके लगभग सभी नेतागण आये थे। पूज्य देशरत्नजी उस बैठकमें भाग न ले सके पर उनने कह रक्खा था कि सदाकत आश्रमसे वापस जानेके पहले प्रत्येक जिलाके दो एक प्रमुख कार्यकर्त्ता उनसे अवश्य मिल लें।

प्रा० का० कमिटीके तीन मंत्रियोंमेंसे एक, श्री सत्यनारायण सिंह, प्रधान मंत्री, अनुपस्थित थे और अन्य दो श्री दीपनारायण सिंह और मैं उपस्थित थे। हम दोनोंके

मनमें कभी कभी ऐसी बात उठ रही थी कि बम्बईमें 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव स्वीकृत होते ही नेतागण पकड़ लिये जायेंगे और जेलमें रख दिये जायेंगे और हमलोगोंको राह दिखानेवाला कोई रह न जायेगा। पर कभी कभी ऐसा भी मनमें आता था कि केवल प्रस्ताव ही स्वीकृत होनेपर सरकार गिरफ्तारी न आरंभ करेगी, वरन देखेगी कि प्रस्तावको किस प्रकार कार्यान्वित किया जाता है। महात्माजी भी प्रस्ताव स्वीकृत होते ही उसे कार्यान्वित न करेंगे वरन वाइसरायको पत्र लिखेंगे, उन्हें अपना प्रोग्राम बतलावेंगे और कोई तिथि निश्चित करेंगे जिस दिन तक प्रतीक्षा करेंगे कि सरकार हमारे देशकी मांग स्वीकार करती है या नहीं; उक्त तिथि तक मांग स्वीकृत न होनेपर वे अपने प्रोग्रामको चालू करेंगे। अभी तक महात्माजीने अपना कोई भी प्रोग्राम देशको न दिया था; हां दो एकबार उनने ऐसा अवश्य लिखा था, अबतक सत्याग्रहके लिये जितने कार्यक्रम समय समयपर काममें लाये जा चुके हैं वे सभी इसबार काममें लाये जायेंगे और कुल काम थोड़े समयमें बड़ी द्रुतगतिसे किये जायंगे।"

मेरा प्रोग्राम गया, डालटेनगंज और गुमला जानेका था। वहाँसे वापस आ छपरे जाना और वहाँ कई दिन ठहरना था। ७ अगस्तको सदाकत आश्रममें वापस आना और ६ अगस्तको बाढ़, मोकामा तथा मुंगेर जाना था, ११ अगस्तको भागलपुर और वहाँसे चाइबासा जाना था। इसके अनुसार मैं गया आश्रममें पहुँचा, जिला कांग्रेस कमिटीका कुछ हिसाब आदि देखा। डालटेनगंज स्टेशनपर ही मुझे पता लगा कि मेरा पत्र वहाँके कांग्रेस आफिसमें अभी पहुँचा था और इसके पहले ही वहाँके कार्यकर्त्तागण किसी देहातमें चले गये थे। अतः मैं डालटेनगंज उतरा नहीं और वहाँसे गुमला होकर पटने वापस आ छपरे गया। छपरेमें ७ अगस्तको मित्रोंसे बातें करते करते मुझे पता लगा कि महात्माजीके सूत्र वचनोंकी व्याख्या जो हमने पटनेमें की थी उसकी चर्चा कहीं भी किसी प्रमुख कार्यकर्त्तासे न की, और अब समय न रहा। छपरेमें एक जिम्मेदार मित्रको मैंने सारी बातें कहीं और वहाँसे पटनेकी राह ली।

उसी दिन यानी ७ अगस्तको सन्ध्या समय सदाकत आश्रममें मैं आ पहुँचा। अखबारवालोंसे पता लगा कि उस दिन 'भारत छोड़ो' प्रस्तावपर फैसला न हुआ। ८ अगस्तको सन्ध्या समय टेलीफोनपर खबर मिली कि वह प्रस्ताव स्वीकृत हो गया, केवल १३ कम्युनिस्ट मेम्बरानने विरोधमें वोट दिया।

६ अगस्तको सुबहकी गाड़ीसे मैं बाढ़के लिये चल पड़ा। अपना संदेशा देकर दूसरी गाड़ीसे मोकामा चला। वहाँ भी संदेशा देकर मैं मुंगेरकी ओर बढ़ा। ११ बजे

रातको तिलक भवन मुंगेरमें पहुँच कर फाटकपर आवाज दी। अन्दरसे उत्तर मिला, "यहाँ कांग्रेसवाले नहीं हैं, आश्रम पुलिसकी दखलमें है।"

कह चुका हूँ कि हम दोनों मंत्रियोंके मनमें दुविधा थी अर्थात् दो प्रकारकी भावनाएँ मनमें उठती थीं। हम दोनों बहुत चिंतित थे कि यदि नेतागण एकाएक पकड़ लिये गये तो हमलोग पथ प्रदर्शन किससे पायेंगे। महात्माजीने तो कोई निश्चित प्रोग्राम दिया नहीं, उनका सूत्र वन्दन 'आज तकके सत्याग्रहके सभी प्रोग्राम कार्यान्वित होंगे' सबका पथ प्रदर्शन न कर सकेगा। हम लोगोंने तय किया कि पूज्य देशरत्नजीसे इस सूत्रकी व्याख्या करा कर लोगोंको समझा दिया जाय। हम लोग उनके यहाँ पहुँचे। श्रीमथुराप्रसादजी भी वहीं थे। पू० बाबू तो बैठ भी नहीं सकते थे, बोल चालकी मनाही थी। यह बात तय पायी कि व्याख्या हम दोनों करें, पू० बाबू जिसे उचित समझें उसपर 'हाँ' और जिसे अनुचित समझें उस पर 'ना' कर दें।

इस तरीकेसे उनकी अनुमति लेकर एक लम्बा प्रोग्राम तैयार किया गया और वह प्रोग्राम श्रीसखिचन्द जायसवालके हवाले किया गया कि वे उसे छपवा लें, पर उसे तब तक गुप्त रखा जाय जबतक उसे प्रकाशित वा प्रचार करनेकी आज्ञा पूज्य बाबू वा उनके द्वारा मनोनीत किसी नेताकी ओरसे न हो अथवा एकाएक नेतागण पकड़ न लिये जायं। गुप्त रखनेका अभिप्राय तो यह था कि जबतक अ० भा० कां० कमिटी द्वारा 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव स्वीकृत नहीं होता और जबतक इसे कार्यान्वित करनेकी घोषणा कांग्रेसकी ओरसे न हो जाती तब तक प्रोग्रामका प्रचार करना सत्याग्रहीके सिद्धान्तके अनुकूल नहीं होता; और बात ऐसी भी हो सकती थी कि इस बीच महात्माजी कोई निश्चित प्रोग्राम दे भी देते। पूज्य बाबूने हमें यह भी कह दिया कि सभी जिलाओंके दो एक प्रमुख नेताओंको हमारी व्याख्या मालूम हो जानी चाहिये और उन्हें यह भी जान लेना चाहिये कि इस व्याख्याका प्रचार कब होना चाहिये और कबतक इसे गुप्त रखना चाहिये। मेरे मनमें ऐसी बात भी आयी कि पूज्य बाबूने सभी जिलाओंके प्रमुख नेताओं को अपने यहाँ आवाहन किया है उसका अभिप्राय यही हो सकता है कि उन्हें इस व्याख्याका कुछ आभास दिया जायगा। यहाँ इस व्याख्याका पूरा चित्र खींचनेकी आवश्यकता जान पड़ती है पर मैं केवल महत्वपूर्ण बातें दे देना चाहता हूँ:—

(१) हमारे कुल कार्य अहिंसाके सिद्धान्तके अनुकूल ही होने चाहियें। सत्य परायणता और अभय सबसे आगे रहने चाहियें। प्राण देनेकी आवश्यकता आन पड़े तो हिचकना न चाहिये पर किसी भी हालतमें दूसरोंकी हानि तिल भर भी न करनी चाहिये।

(२) सरकारसे पूर्ण असहयोग कर डालना चाहिये। उसके सभी कार्य बन्द हो जाने चाहियें। जितने उसके नोकरान है सबोंसे अपील करनी चाहिये कि वे नौकरी छोड़ दे। आम जनतासे अपील करनी चाहिये कि किसी भी प्रकारकी सरकारको सहायता न दी जाय। स्कूल, कालिज, कचहरी, डाकघर, तारघर, रेलवे, जहाज आदि सब बंद हो जाना चाहिये। सरकारकी राजव्यवस्था बिलकुल रुक जानी चाहिये।

(३) जब पुलिस और कचहरीके कार्य रुक जायेंगे तब चोर डाकू आदिके लोगोंकी रक्षा करना भी हमारा ही कर्तव्य हो जायगा। इसीमें हमारी सेवाकी परीक्षा होगी। चोरोंको भी साधु बना डालना होगा।

(४) रचनात्मक कार्यमें पिल पड़ना होगा। कोई भी आदमी बेकार न रहने पावे। अराजकता न फैलने पावे।

(५) पूरा असहयोग हो जानेपर भी कुछ लोग जो हमारे विचारोंसे सहमत नहीं हैं अथवा विदेशी लोग सरकारी व्यवस्था चलाते रहनेका उद्योग करेंगे ही। राष्ट्रीय सेवकोंके दमनके लिये विदेशी फौज तथा यन्त्र आदि लाये जायंगे। उनके प्रतिकारके लिये :—

(क) रेलोंकी पटरियां उखाड़कर लोगोंका आना जाना बन्द कर दे सकते है पर ध्यान रखना होगा कि इस वजहसे एक भी आदमीको जरा भी चोट न आने पावे। जिस जगहपर रेलकी पटरी तोड़ी जाय उसके दोनों ओरके स्टेशन मास्टरोंको सूचना मिलनी चाहिये ताकि वे गाड़ियां अपने स्टेशनोंसे आगे न बढ़ने दें। पटरी तोड़नेकी जगहपर लाल झण्डा खड़ा कर दिया जाय (रातके समय लाल रोशनी रहे)। और एक समझदार स्वयंसेवक उस जगह मौजूद रहे जिसमें भूलसे आनेवाली कोई ट्रेन उलट न जाने पावे।

(ख) तारोंको काट कर समाचारका आना जाना रोक दे सकते हैं।

(ग) सड़कोंको काट कर और उनके ऊपरके पुलोंको तोड़ कर मोटर आदिका आना जाना रोक दे सकते है।

(घ) किसीके हाथमें हिंसाके साधन अर्थात् बन्दूक आदि हों तो उन्हें छीनकर तोड़ ताड़कर वापस कर देना जरूरी होगा।

अन्य छोटी मोटी बातें जो उस समय तय पायीं उन्हें मैं अधिक महत्व नहीं देता। आ० का० कमिटीकी बैठक समाप्त हुई, सभी सदस्यगण अपने घर वापस गये। प्रत्येक जिलाके कुछ प्रमुख कार्यकर्त्ता भी पूज्य बापूसे मिले और वापस गये। मैं भी अपने पूर्व निश्चित प्रोग्रामके अनुसार भ्रमणमें निकला।
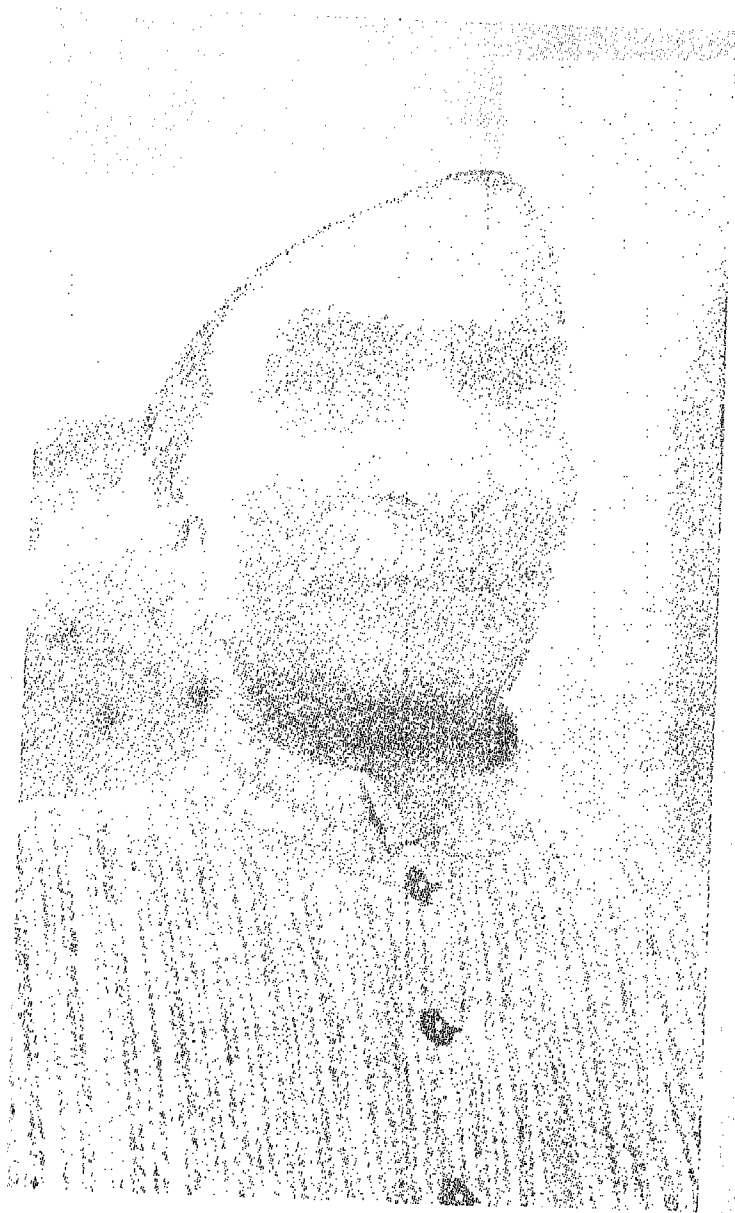
विद्रोही विहार का मंत्रदाता
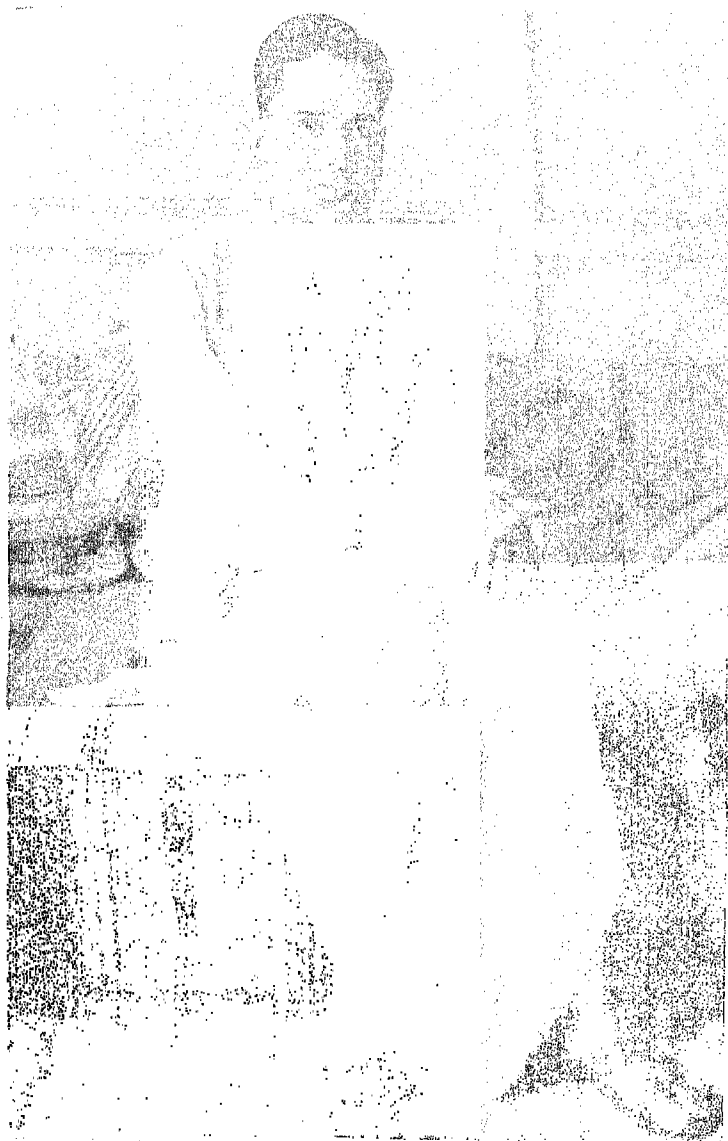
'आजाद-दस्ता' का संस्थापक

अब तो सारी बातें हमारी नजरोंके सामने आ गयीं। मैंने समझ लिया कि अब तक सभी नेता जेलके अन्दर बन्द हो गये होंगे। मैं तुरत मुंगेर खादी भण्डारकी ओर चल पड़ा। उसका दरवाजा बन्द था, पर रोशनी हो रही थी। मैंने आवाज दी। मेरी बोली पहचान ली गयी और दरवाजा तुरत खुला। मैनेजर श्री रामविलास शर्मासे पता चला कि बम्बईमें कार्य समितिके सभी सदस्य गिरफ्त हो गये, वहाँपर ऑल इंडिया कांग्रेस कमिटीके जो भी सदस्य मौजूद पाये गये वे सब तथा प्रान्तीय कांग्रेस कमिटी तथा अन्य कां० कमिटियोंके सदस्य भी पकड़ लिये गये; पटनेमें पू० श्री देशरत्नजी, श्री मथुरा बाबू, तथा अन्य जो भी प्रमुख कार्यकर्ता पाये गये सो भी गिरफ्त हो गये, मुंगेरके केवल दो ही कार्यकर्ता अब तक गिरफ्त हो सके थे। मैं तो १० अगस्तका दिन मुंगेरमें ही बितानेका निश्चय कर गया था पर मित्रोंने मुझे सलाह दी कि यदि मुझे अपना संदेश अधिक लोगोंको देना हो तो कहीं भी देर तक न ठहरना चाहिये। उनने कहा कि अब तो मुंगेरके लोगोंको संदेश मिल ही जायगा, अब मुझे जल्दीसे जल्दी आगे बढ़ना चाहिये। अतः मैं सुबहकी ही गाड़ीसे भागलपुरकी ओर चला।

भागलपुर पहुँचनेपर देखा कि शहरमें हड़ताल है। भारी जलूस राष्ट्रीय नारा लगाता हुआ शहरमें गस्त लगा रहा है। मैं सीधे खादी भण्डारमें गया। वहाँ पता लगा कि भागलपुरमें गिरफ्तारी नहीं हो रही है। पुलिसवाले केवल कांग्रेस आफिस जब्त कर उसमें ताला लगा देना चाहते थे पर एक कार्यकर्ता वहाँ बैठा था और हटनेपर राजी न होता था। उसका कहना था कि पुलिस चाहे तो उसे गिरफ्तार कर जबरदस्ती घसीट कर या मार कर ही घरसे बाहर करे पर वह अपनी मरजीसे घर न छोड़ेगा। कुछ देरके बाद पता चला कि उसे गिरफ्तार कर घरमें ताला लगा दिया गया।

वहाँ दिन भर कुछ बड़ी घटना या दुर्घटना नहीं हुई। संध्या समय एक बड़ी फुलवारीमें एक सभा हुई जिसमें हर तरहके लोग तथा कांग्रेसी, अकांग्रेसी, हिन्दू, मुसलमान, शहरके कुछ रईस, व्यापारी और विद्यार्थी सभी थे। मैंने अपने संदेश सुनाये और अच्छी तरह उन्हें समझाया। क्या करना चाहिये सो तो बतलाया ही क्या नहीं करना चाहिये सो बतलानेमें अधिक समय लगाया। रचनात्मक कार्य और अहिंसापर काफी जोर देते हुए विध्वंसात्मक कार्यमें पूरी सतर्कताकी ओर उनका ध्यान आकर्षित किया। सरकारसे पूरा असहयोग करनेकी सलाह मैंने दी।

सरकारी कर्मचारियोंसे अपील की कि वे नौकरी छोड़कर देशका साथ दें। सभाके कई मिनट पहले मुझे एक छपा परचा मिला था जिसपर हस्ताक्षर किसीका न था। और उसमें लोगोंके करने लायक काम बतलाये गये थे। पढ़नेसे मालूम हुआ कि उसमें लग भग वे ही आदेश थे जो मैंने अपने साथी श्री दीपबाबू और नेता श्री देशरत्न जीके साथ मिल कर तैयार किये थे, हाँ! इस परचेमें कुल आदेश नहीं थे, यह भी अधूरा था और एक बात कुछ भूल लिखी थी। वह भूल यह थी—"अस्त्र-शस्त्र किसीके हाथमें पावें तो उन्हें छीन कर सुरक्षित स्थानमें रख दें", हमलोगोंने तय किया था, "अस्त्र-शस्त्र किसीके हाथमें पावें तो उन्हें छीन कर तोड़ कर उन्हें ही वापस कर दें।" रेलकी पटरी उखाड़ने वा तार काटनेके संबंधमें कोई आदेश इस परचेमें न था।

उसी दिन यानी १० अगस्तको सांझकी गाड़ीसे बेतियाके लिये प्रस्थान किया और ११ अगस्तके अपरान्हमें बेतिया पहुँचा। राहमें मुजफ्फरपुरमें मुझे पता चला कि श्री एमरी महोदयने एक विज्ञप्ति द्वारा घोषणा की है कि कांग्रेसका अभिप्राय यातायातके साधनोंको तोड़ फोड़ करनेका है। यह तो १० अगस्तके ही अखबारोंमें निकल चुका था पर मुझे पता देरसे चला क्यों कि मैं अखबार उस दिन न पा सका था।

बेतियामें दो एक परिचित कांग्रेस कार्यकर्ता मिले, वहाँ अशान्तिके कुछ भी लक्षण न नजर आये पर कार्यकर्ताओंको आश्चर्य हुआ कि मैं अब तक जेलसे बाहर कैसे रह गया। उनने मुझे बतलाया कि पं० प्रजापति मिश्रजी ९ तारीखको ही आधी रातके समय घरपर ही गिरफ्तार हो चुके थे।

पर मुझे तो कोई पुलिसवाले पूछते न थे। स्टेशनसे जब मेरा टमटम चला तो राहमें कई सिपाहियोंने मुझे सलामी दागी, एक सब इन्सपेक्टरने भी प्रणाम किया पर किसीने गिरफ्तारीकी कोशिश तो न की।"

आरा शहरमें भी ९ अगस्तको ही नेताओंकी गिरफ्तारीकी खबर पहुँची। पर छात्रसंघके उद्योगसे शहरमें सफल हड़ताल रही ता० १० को। उस दिन ही जलूस निकले। शहरके मानो कोने कोनेसे नारा लगाती हुई टोलियां निकलीं और मस्जिद चौकपर सभी मिल कर विराट बन गयीं। पं० प्रद्युम्न मिश्रके नेतृत्वमें जलूस तमाम शहरमें घूमा और वहाँसे कचहरी पहुँचा। जलूसके विद्यार्थियोंकी अपील-पर वकील मुख्तार कचहरीसे बाहर हो गये और बादको मजिस्टर सब भी। पर जिला जजके इजलासमें विद्यार्थियोंको कामयाबी नहीं मिली। उन्हें पुलिसके धक्के भी

शाहाबाद

खाने पड़े। फिर तो वे उत्तेजित हो गये। एक नामी वकील बहस कर रहे थे। उनके मुँहपर उनने कालिख पोत दी। जज साहब घबड़ा कर बाहर निकल गये। इजलास बन्द हो गया, पर विद्यार्थी शान्त न हुए। उनने फर्नीचर तोड़ डाले, शीशे फोड़ डाले और सम्राटके ढंगे चित्रको फाड़ डाला।

तीसरे पहर नागरी प्रचारिणी सभावाले मैदानमें सभा हुई। पुलिसको लेकर ए० एस० पी० साहब आ धमके। उन्हें देख कर उत्तेजना फैली और भीड़मेंसे एकने एक सरकारी अफसरपर डंडा चला भी दिया। इसपर प्रद्युम्न मिश्र काफी नाराज हुए, ऐसे कामोंकी कड़ी आलोचना की और उस सरकारी अफसरको खुद कलक्टरके यहाँ पहुँचा आये।

शामको आराके कार्यकर्ताओंकी मुलाकात स्टेशनपर बाबू अनुग्रह नारायण सिंहसे हुई जो शायद रायबरेलीसे आ रहे थे और उसी ट्रेनसे पटने जा रहे थे। आराकी घटना उन्हें सुनायी गयी। वे बोले—सरकारने देशके नेताओंपर वार किया है। जनताको रोकना मुश्किल है। उन्हें हतोत्साहित करना मुनासिब नहीं।

भागलपुरने भी ता० ९ अगस्तको सुना—कांग्रेसके नेता गिरफ्तार कर लिये गये और कांग्रेस कमिटियां गैर-कानूनी घोषित कर दी गयीं। कार्यकर्ता सरकारसे

भागलपुर

मोरचा लेनेको तैयार थे। हाँ, कांग्रेसके आदेशकी प्रतीक्षा थी। ऐसे अवसरपर वहाँ श्री जगलाल चौधरीका शुभागमन हुआ। सरदार जमैयत सिंहके यहाँ वे कार्यकर्ताओंसे मिले और बोले—गान्धीजीका आन्दोलन अहिंसात्मक आन्दोलन है। रेलकी पटरी उखाड़नेका यह अर्थ नहीं है कि बगैर सूचना दिये सैकड़ों सहस्रोंकी जान खतरेमें डाल दें। पटरी उखाड़नेके पहले स्टेशन मास्टर को समय और तिथिकी सूचना दे दी जाय, पुलिससे शस्त्र अपहरण कर उसका उपयोग नहीं करना है। सरकारी कोषपर हमारा आधिपत्य भी हो जाय तो उसे सुरक्षित रखनेकी आवश्यकता है। एक पाई भी अपने काममें नहीं लाना इत्यादि। १० अगस्तको लाजपत पार्कमें बहुत बड़ी सभा हुई। डेढ़ दो लाख लोग होंगे। जब कांग्रेस कमिटी आफिस जब्त हुआ तब वहां श्री शिवचन्द्रिका प्रसाद आसन जमाये बैठे थे। पुलिसने जबरदस्ती उन्हें हटा बाहर किया। सभामें छात्रोंने पुलिसको चुनौती दी कि कांग्रेस मैदानसे नहीं हटेगी तब कलसे छात्र सत्याग्रह करेंगे और भवनपर अधिकार करके ही दम लेंगे।

शहरने पूरी हड़ताल मनायी। विद्यार्थियोंका पूर्ण सहयोग रहा।

मुंगेरमें ८ अगस्त गिरफ्तारी और जब्तीका दिवस रहा। कांग्रेस भवन जब्त हुआ। श्री नन्दकुमार सिंह और श्री सुरेश्वर मिश्र गिरफ्तार हुए। वहां

मुंगेर

पहुँचे श्री जगलाल चौधरी ठीक रातको और कांग्रेसका सन्देश देनेके लिये कांग्रेस भवनमें पड़ी हुई पुलिसको पुकार पुकार कर जगाने लगे। पुलिस खीज उठी। बोली कांग्रेस भवन जब्त है। हम सरकारके आदमी हैं। हमसे आपका क्या वास्ता ? तब तो चौधरीजी उल्टे पांव पीछे हटे और चर्खासंघके साथियोंसे जा मिले। यथा समय कांग्रेस कर्मियोंसे उनकी भेंट हुई, जिन्हें अगस्त आन्दोलनका प्रोग्राम दिया।

१० अगस्तको शहरमें हड़ताल रही। मुख्तार खाना, पुस्तकालय सभी बन्द। किलेके दरवाजेपर जबरदस्त धरना बैठा। किला मीरकासिमका बनाया हुआ है। सरकारके कब्जेमें है। अदालत, कचहरी, जिलाबोर्ड, म्युनिसिपैलिटी, अफसरों और खास खास रईसोंके डेरे इसके अन्दर हैं। इसलिये इसके दरवाजे परका धरना सरकारी कामको चौपट करने लगा। पुलिसने लाठी चार्ज करके धरना देनेवालोंको तितर बितर करना चाहा। फलस्वरूप भीड़ इकट्ठी हो गयी। दो तरफी मार पीट भी हुई। कई आदमी घायल हुए। पुलिसको भी चोट आयी।

लड़कियोंका जलूस यहाँ आया। लड़कियाँ कलक्टरी और जजी कचहरियोंमें घुस गयीं हाकिमोंको अपना काम छोड़नेको कहा। कुछ लड़कियां ऊपर चढ़ गयीं और मकानपर कांग्रेसी झण्डा फहरा दिया। जनतामें सनसनी फैल गयी। हाकिम आसन छोड़ हट गये। पुलिस आयी और लड़कियोंको किलासे बाहर करने लगी। उसके दुर्व्यवहारका विरोध श्री निरापद मुखर्जीने किया जिस पर पुलिसने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। उस दिन श्री श्यामाप्रसाद सिंह गिरफ्तार हुए।

९ अगस्तको ही मुजफ्फरपुर तिलक मैदान जब्त हुआ और कई गिरफ्तारियां हुईं जिसमें उल्लेखनीय है श्री सरयू प्रसाद और डाक्टर रामाशीष ठाकुरकी गिरफ्तारी।

मुजफ्फरपुर

१० अगस्तको शहरने हड़ताल मनायी। हड़ताल छात्रों तथा कार्यकर्त्ताओंके सम्मिलित उद्योगका फल था। दुकानें बन्द! स्कूल और कालिज भी प्रायः बन्द।

शहरमें कई जलूस निकले और सभी कचहरी आकर इकट्ठे हो गये। उद्देश्य था कचहरी बन्द करवाना। पर मुजफ्फरपुर अंग्रेजी सरकारकी ताकतका अड्डा है—फौज रहती है। इसलिये जब जब भीड़ने इजलासमें घुसनेकी कोशिशकी, घुड़सवारोंने

उन्हें पीछे हटा दिया । पुलिस सतर्क थी और सचेष्ट भी । जनतामेंसे कितनोंको चोट आयी, पर प्रदर्शन होता रहा । नारे लगते रहे ।

दरभंगेमें ६ अगस्त सनसनीका दिन रहा । दोपहर होते होते श्री कुलानन्द वैदिकके नेतृत्वमें रिक्से और तांगेवालोंका जलूस निकला । मिथिला कालिजके दरभंगा छात्रोंका जलूस भी निकला जो काफी रात बीत जाने तक नारे लगा लगा दरभंगा निवासियोंको अगस्त-आन्दोलनमें कूद पड़नेके लिये उन्हें पुकारता रहा ।

१० अगस्तको सब जगह हड़ताल रही । मिथिला कॉलेज और मेडिकल स्कूलके छात्रोंने हड़तालमें खूब भाग लिया । मेडिकल छात्रोंने भी अपनी लाज रख ली जिनमें उल्लेखनीयां थीं श्री विद्योत्तमा देवी और श्री चारुमति शाण्डा ।

विद्यार्थियोंका एक बहुत बड़ा जलूस दरभंगा शहरसे लहेरियासराय आया । वह कचहरीमें प्रदर्शन करता हुआ कांग्रेस भवन पहुँचा जो पुलिसके कब्जे था । उस पर फिर अपना राष्ट्रीय झण्डा फहरा कर वह किंग्स पार्क आया और सभाके रूपमें बदल गया ।

पर प्रोग्रामकी जानकारी किसीको न थी । विद्यार्थी कमिटीवाले कहने लगे 'चूंकि हमें कोई खास प्रोग्राम मालूम नहीं है, हम लोग जहाँतक हो सके रचनात्मक कार्य ही करें परन्तु हम लोग हड़ताल जारी रक्खें ।' और इन्हें मेडिकल स्कूलका समर्थन मिलता । पर मिथिला कॉलिजवाले इसका विरोध करते ।

ऐन मौकेपर सभामें ही श्री कन्हैयाप्रसाद वर्माको एक परचा दिया गया । कहा गया यही प्रोग्राम है, आप पढ़ कर सुना दीजिये ।

कन्हैयाजी परचा पढ़ने लगे—

सर्कुलर न० १

जरूरी हिदायतें

बिहार प्रान्तीय कांग्रेस कमिटी (पटना)

.........इस लिये भारत कांग्रेस कमिटीने निश्चय किया है कि केवल भारतके हितके लिये ही नहीं, सारे संसारके हितके लिये भी और खास करके सारे संसारमें स्वतंत्रता और प्रजातंत्रकी स्थापनाके लिये यह जरूरी हो गया है कि भारत स्वतंत्र हो जाय । इसी उद्देश्यसे जिसमें संसारकी स्वतंत्रता और प्रजातंत्र और मित्र राष्ट्रोंका हित भी निहित है कांग्रेसने महात्मा गांधीके नेतृत्वमें निश्चय किया है कि वह अहिंसात्मक असहयोग और सत्याग्रह संग्राम ब्रिटिश गवर्नमेण्टके साथ तुरन्त छेड़ दे ।

हो सकता है कि ब्रिटिश सरकार कांग्रेसको यह मौका न दे कि वह इस अहिंसात्मक असहयोग और सत्याग्रहको संगठित रूपसे चला सके। इस लिये कुछ संकेत ऐसे यहाँ दिये जाते हैं कि यदि कांग्रेसके नेता गिरफ्तार हो जायँ तो लोग उनके अनुसार इस आन्दोलनको चलावें।

यह महात्मा गान्धीके जीवनकी आखिरी लड़ाई है और स्वराज्यके लिये भी आखरी लड़ाई है। यह किसी छोटे मोटे उद्देश्यके लिये नहीं छेड़ी जा रही है। इसमें हिन्दुस्तानकी आजादीके साथ सारे संसारका हित शामिल है और इस भयंकर युद्धको भी खतम करनेकी बात है। इस लिये आशा की जाती है कि सभी हिन्दुस्तानी जिनके दिलमें देशके लिये प्रेम है और जो इसकी आजादी चाहते हैं निः संकोच शरीक होंगे। बिना त्यागके किसी देशको आजादी नहीं मिली है। हमेशा त्यागके लिये तैयार होकर इसमें शरीक होना है। जो देश इस लड़ाईमें शरीक हैं; अपने खूनको पानीकी तरह बहा रहे हैं, और अपने धनको समुद्र वा आगके हवाले कर रहे हैं। हमको एक ऐसे ही देशसे आजादी लेनी है। वह त्यागसे ही मिल सकेगी। यह हमेशा याद रखना चाहिये कि गांधीजीके इस असहयोग और सत्याग्रहका मूलमंत्र अहिंसा है। इसलिये हम जो भी करें उसमें अहिंसाको न छोड़ें और न कोई ऐसा काम करें जो नीति विरुद्ध अथवा सत्यके विरुद्ध हो। आशा की जाती है कि सभी प्रकारके हिन्दुस्तानी इस यज्ञमें अपनी अपनी आहुति अर्पित करेंगे और इसे सुसम्पन्नताके साथ समाप्त करेंगे। गांधीजी अथवा कांग्रेसकी ओरसे जब तक आदेश निकलता रहे तब तक उसीके अनुसार काम होना चाहिये। यदि कोई आदेश निकालना अथवा पाना असंभव हो जाय तो नीचे लिखे मुताबिक काम करना चाहिये।

आजादीकी लड़ाईको सफल बनानेके तरीके—

१ नेताओंकी गिरफ्तारी हो जानेके बाद एक दिनकी पूर्ण हड़ताल होनी चाहिये।.........दिन भर हड़तालके बाद सन्ध्या समय सभायें होनी चाहियें। जिनमें वही प्रस्ताव पास हो जिसको वर्किंग कमिटीने ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीके सामने पेश करनेके लिये ता० ५-८-४२ को स्वीकार किया है और जो सब समाचार पत्रोंमें छपा है।

२ कार्यकर्ताओं को चाहिये कि घूम घूम कर महात्मा गान्धी और कांग्रेसके सन्देश लोगोंको बतावें......... ।

३ गांवों और शहरोंमें तमाम सभायें की जायं और जलूस निकाले जायं... अगर ब्रिटिश सरकार द्वारा सभा अथवा जलूसपर रोक लगा दी जाय तो उसका लेहाज नहीं करना चाहिये।

४ वकीलों और मुख्तारोंको वकालत और मोख्तारी छोड़ देनी चाहिये और सत्याग्रह प्रोग्रामको पूरा करनेमें उन्हें लग जाना चाहिये।

५ सभी विद्यार्थियोंको स्कूलों और कालिजोंसे अलग हो जाना चाहिये और आजादीकी लड़ाईके प्रोग्रामको पूरा करनेमें लग जाना चाहिये। इस लड़ाईमें विद्यार्थियोंसे बड़ी आशा की जा रही है और उमीद है कि वे लोगोंकी आशाको पूरा करेंगे।

६ पुलिस भाइयोंसे अपील है कि वे देशवासियोंके ऊपर जो आजादीकी लड़ाईमें लगे हों लाठी या गोली नहीं चलावें।

७ कार्यकर्ताओंको चाहिये कि यदि उनके ऊपर लाठी चले या गोली भी चले तो उसे वे बहादुरीसे बर्दाश्त करेंगे। पीछे वे कदम. हर्गिज न उठावेंगे और अहिंसाको कभी न छोड़ेंगे।

८ लोगोंको चाहिये कि चौकीदारी या युनियनका टैक्स देना बन्द कर दें। चौकीदार और दफादार भाइयोंसे अपील है कि वे सरकारी नौकरी छोड़कर देशका साथ दें।

९ पुलिस भाइयों और जेल वार्डरोंसे अपील है कि वे शीघ्र अँग्रेजी सरकारकी नौकरी छोड़ दें। इनके मार्फत सरकार वह कुकर्म करावेगी कि जिससे देशका बड़ा नुकसान होगा। कांग्रेस कार्य कर्ताओंके ऊपर लाठी या गोली चलानेके लिये ये लोग मजबूर किये जायंगे। इस पापसे बचनेके लिये सरकारी नौकरी तुरन्त छोड़ देनी जरूरी है। यदि हमारे सभी पुलिस भाई सरकारी नौकरी छोड़ दें तो अंग्रेजी राज्यका बहुत बड़ा पाया टूट जायगा।

१० सभी सरकारी कर्मचारियों, स्टीमरपर काम करनेवालों, डाकघरमें काम करनेवालों, कोयलेके खान और दूसरे खानके मजदूरोंसे जहां सरकारके काम होते हैं, काम बन्द कर देनेके लिये प्रार्थना है।

११ जो अपनी नौकरी कांग्रेसकी पुकारपर छोड़ देंगे उनको फिर नौकरी पूरे तलबके साथ मिल जायगी, जब अपनी सरकार हो जायगी। ऐसे लोगोंको जिनकी जमीनों और मकानोंको सरकार नीलाम कुर्क कर ले उनके सत्याग्रहमें भाग

लेनेकी वजहसे तब उनको स्वराज्य सरकार वह सब जमीन और मकान वापस करायेगी।

१३ स्वराज्य संग्राममें सहायता देनेके लिये, काफी गल्ला पैदा करानेके लिये तथा लोगोंके जान मालकी रक्षाके लिये ग्राम पंचायतका संगठन होना चाहिये।

१४ स्वराज्यकी लड़ाईकी खबरें बराबर मिलती रहें इसका भी प्रबन्ध करना चाहिये। हर इलाकेके कार्यकर्ता मोकर्रर वक्तपर और मोकर्रर जगहपर किसी न किसी तरह खबर पहुँचा दिया करेंगे।

१५ सरकारी मकानोंपर राष्ट्रीय झण्डा फहराना चाहिये। और कर्मचारियोंको आजादीकी लड़ाईमें शामिल होनेके लिये कहना चाहिये। पुलिसके हथियारोंको लेकर किसी सुरक्षित स्थानमें रख देना चाहिये। सरकारी दफ्तरोंको बन्द कर देना चाहिये और ऐलान कर देना चाहिये कि सरकारी कर्मचारी फिर स्वराज्य मिल जाने के बाद बुला लिये जायंगे।

१६ सत्याग्रहके युद्धमें छिप कर किसीको कोई काम नहीं करना चाहिये। छिपनेसे युद्ध और कमजोर हो जाता है। इसलिये सभी कामोंको पहलेसे ऐलान करके करना चाहिये।

प्रोग्राम जानकर लोगोंमें नई जान आगयी। सभीने निश्चय किया हड़तालको और व्यापक बनानेका और कल ११ अगस्तको सरकारी मकानोंपर झण्डा फहरानेका। जनताने करेंगे या मरेंगेका भैरवनाद करके उस निश्चयका समर्थन किया।

रांची

रांचीमें ९ अगस्तको हलकी हड़ताल रही। शामको जिला कांग्रेस कमिटीका दफ्तर जब्त हुआ। फिर नगर निवासियोंकी सभा हुई जिसमें विद्यार्थियोंकी भरमार थी। सामने कोई प्रोग्राम न था। इसलिये प्रतीक्षाकी नीति अपनानेपर जोर दिया जा रहा था। किन्तु तय हुआ कि जबतक ऊपरसे प्रोग्राम नहीं मिलता है तबतक स्थानीय नेता ही काम बतलावें और आन्दोलन चलावें।

शहरके डाक्टर यदुगोपाल मुखर्जी जो पुराने क्रान्तिकारी रह चुके हैं पकड़ लिये गये और सर्वश्री रामरक्षा उपाध्याय, नारायणजी, नन्दकिशोर भगतकी गिरफ्तारीकी खबर भी पहुँची। १० अगस्तको श्री नारायणचन्द्र लाहिड़ी पकड़े गये। श्री अतुलचन्द्र मित्रको गिरफ्तार करने पुलिस कलकत्ते पहुँची। अतुल बाबू वहाँ अपना इलाज करवा रहे थे। पुलिसकी आंखोंमें धूल झोंक १० अगस्तकी रातको वह रांची पहुँचे, कार्यकर्ताओंसे मिले और उन्हें अगस्त आन्दोलनका प्रोग्राम बतलाया।

नेताओंकी गिरफ्तारीकी खबर सुनते ही ६ अगस्तको जमशेदपुरके एक तिहाई मजदूरोंने हड़ताल मनायी। दूसरे दिनकी हड़ताल तो कमालकी रही।
सिंहभूमि मुसलमान दूकानदारोंने भी साथ दिया। हरिजनोंमेंसे तो एक भी अपनी जगहपर नहीं गया और अस्पतालके अधिकारियोंको ताता मजदूर संघकी मदद मंगानी पड़ी। छात्रों तथा छात्राओंका उत्साह अपूर्व था। वे सब तो तीन दिनों तक हड़ताल मनाते रहे।

इसके पहले जमशेदपुरने न कभी राजनैतिक हड़ताल देखी थी और न इस तरहका प्रदर्शन ही देखा था।

६ अगस्तकी रातको पुलिसने तीन कार्यकर्ताओंको गिरफ्तार किया और १० अगस्तको कांग्रेसका दफ्तर जब्त। मजदूर संघकी मोटर बसको भी उसने अपने कब्जेमें ले लिया।

पुलिसमें भी काफी चहल पहल रही। श्री रामानन्द तिवारीका पुलिस संगठन जोर पकड़ने लगा। १० अगस्तको ५५० पुलिसने गिरफ्तारीके विरोधमें उपवास भी किया।

१० अगस्तको शिल्पाश्रम, पुरुलियाको पुलिसने जब्त किया और विभूतिभूषण दास गुप्त तथा वीर राघव आचारियरको गिरफ्तार किया। शिल्पाश्रम
मानभूमि कार्यकर्ताओं और उनके परिवारका निवासस्थान रहा है। उनको आश्रम खाली कर देनेका हुक्म मिला जिसे माननेसे सबोंने इनकार कर दिया। परिणाम स्वरूप श्रीमती लावण्यप्रभा घोष, कुमारी कमला घोष, तथा अन्यान्य कार्यकर्ता गिरफ्तार किये गये।

बादको तुरत जिला कांग्रेसका दफ्तर और उसका मुक्तिप्रेस और निवारण पल्ली संघ भी जब्त हो गया। उसी दिन अनेक थानाओंके भी दफ्तरपर पुलिसका कब्जा हो गया।

उस दिन झरियामें हड़ताल हुई, जिसमें विद्यार्थी और कोयलाके खानोंके मजदूर भी शामिल थे। वहां एक जबरदस्त जलूस निकला जिसे लाठियोंकी मारसे पुलिसने तितर बितर कर दिया। धनबाद सब डिविजनल कांग्रेस कमिटीके नेता और कार्यकर्ता पकड़े गये।

हजारीबागमें पुलिस ता० ९ से ही कर्मठ हो गयी और नेताओंको गिरफ्तार
हजारीबाग करना शुरू कर दिया। दो तीन दिनोंके भीतर वहांके गण्य मान्य नेता जेलवासी हुए और पुलिसने समझा कि उसने जन क्रान्तिको दबा दिया।

स्वराजी रेलगाड़ी

अगस्त-क्रान्तिकी चिनगारी बिहारके कोने कोनेमें उड़ने लगी और सहायक बने बिहारके विद्यार्थी। अपनी शिक्षण संस्थाओंको छोड़ वे मैदानमें उतरे ठीक पहाड़ी नदीकी तरह, घहराते, उछलते और कूदते हुए। इधर कई सालसे उनके बीच संगठन और संघर्षकी जोरदार हवा बह रही थी। उनमें जीवन छलकता दीखता था जो इस वक्त काम आया। नेताओंकी गिरफ्तारी उन्हें कर्तव्य विमूढ़ न कर सकी। उनमें जोश आ गया और वे जहां कहीं थे, छोटे या बड़े, सभी गांव शहरमें 'करेंगे वा मरेंगे' नारा बुलन्द करने लगे।

अफवाहें सुनी थीं पर प्रोग्राम मालूम न था। तो भी इतना तो सभी जानते थे कि हमारी क्रान्तिको तेज चलना है, इस लिये इसके संदेश जल्दसे जल्द देश वासियोंको देने हैं, इस विचारने विद्यार्थियोंको रेलवे स्टेशनपर पहुँचाया। जहाँ उनने देखा रेलगाड़ीको जो प्रचारका अच्छा साधन बन सकती है। स्वराजी रेलगाड़ीकी यह जन्म कथा है जिसे विद्यार्थियोंकी प्रचार बुद्धिका एक आविष्कार मानना चाहिये।

विद्यार्थियोंकी टोलियां गयीं और जहां रेलगाड़ी मिली उसपर कब्जा किया। पहले तो इस कब्जेका सिर्फ मतलब था एक जगहसे दूसरी जगह जाना, साथी विद्यार्थियोंको खबर देनेके लिये कि हड़ताल करनी है, सभा करनी है, अमुक प्रस्ताव दुहराना हैं और अमुक स्थानपर प्रदर्शनके लिये इकट्ठा होना है। सफर छोटी मनचाही जगहपर खत्म होनेवाली और बिना टिकट। स्वराजी गाड़ियोंसे इतनी सुविधा मिली, वे संदेश वाहिका बनीं।

पर सम्बन्ध स्नेह पैदा कर ही देता है। विद्यार्थियोंने इञ्जनको राष्ट्रीय झंडेसे सजा दिया। फिर अगलेसे पिछले ब्रेक (Brake-van) तक, समूची गाड़ीमें, बाहर भीतर, अपने नारे अंकितकर दिये। तब कई ड्राइवर और गार्डके पास बैठ गये। बोले—यह स्वराजी गाड़ी है हमारे कहनेसे चलेगी, हमारे कहनेसे रुकेगी। आप कांग्रेसी सरकारके मुलाजिम हैं। हम जैसा कहें कीजिये। फिर कौमी नारोंके बीच शोर करती हुई स्वराजी रेलगाड़ी दौड़ने लगी। जहां भीड़ दीख पड़ती गाड़ी रुक जाती, विद्यार्थी धड़ाधड़ उतर पड़ते और जनतासे

कहते अंग्रेजी राज उठ गया; हिन्दुस्तान आजाद है; अंग्रेजी सरकारने हमारे नेताओंको कैद कर लिया है; सोचा है—न नेता रहेगा न आन्दोलन चलेगा। इसलिये हर एक आदमी एक-एक नेता बन जाओ और अंग्रेजोंको निकाल बाहर करो। महात्मा गांधीने कहा है कि अहिंसाके भीतर हम अंग्रेजी सरकारको हटानेके लिये जो कर सकें कर सकते हैं।

फिर वे नारे लगाते—इन्कलाब जिन्दाबाद ! हिन्दुस्तान आजाद ! अंगरेजो ! भारत छोड़ दो ! करेंगे या मरेंगे ! चालीस कोटि नहीं डरेंगे ! ये नारे प्रान्त प्रसिद्ध थे। पर अलग-अलग जिलावालोंके कुछ अलग-अलग भी नारे थे। सहस्रों कंठोंसे जनता इन नारोंको दुहराती।

फिर गाड़ी बढ़ती। पर जहां जवानोंकी जुटान देखती रुक जाती। विद्यार्थी जितनोंको चढ़ा पाते चढ़ा लेते और गाड़ी बढ़ाते। अन्तमें गाड़ीका रूप ऐसा होगया मानो वह प्रचार करनेके लिये सजीव हो गयी हो। अपने शत सहस्र कण्ठोंसे नारे लगा रही हो, गीत गा रही हो, जोश भर रही हो, आग उगल रही हो ! इसके अगल-बगल भीड़ दौड़ने लगी, तुतलाती बोली उसे बुलाने लगी, खखारती आवाज उसे ठहराने लगी। अब वह पूरी स्वराजी गाड़ी बन गयी।

पर स्वराजका अर्थ समता ही हो सकता है। इसलिये स्वराजी रेलगाड़ीमें विषमताका स्थान कहां ? विद्यार्थियोंने ऐसा सोचा, समझा और फर्स्ट, सेकण्ड, और थर्ड क्लासकी विषमता मिटानेकी ठानी। पहले तो उनने ऊपरके क्लासोंमें निपट दिहातियोंको बिठाया। जगहकी कमी देखी तो गोरोंको ही नहीं हरेक हैट पैंटवालोंको जगह छोड़नेके लिये विवश किया ताकि दिहाती उनकी जगहोंपर बैठ सकें। बादको उनने मुसाफिरोंकी वेश भूषाकी विषमताको भी दूर करना जरूरी समझा। फिर तो वे हैट पैंट उतरवाने लगे, धोती कुरता पहनाने लगे। वे विद्यार्थी थे, समझदार थे, जानते थे कि 'अंग्रेजो ! भारत छोड़ दो' का मतलब यह नहीं है कि अंग्रेजोंको हम हिन्दुस्तानसे निकाल दें। इसका मतलब तो है कि उनकी हुकूमतको हम हवा कर दें। हां, जो अंगरेज हिन्दुस्तानमें हिन्दुस्तानी बनकर रह सकता है वह शौकसे रहे। इसलिये जिन अंग्रेजोंको उन पकड़ा उनको हिन्दुस्तानी लिबास पहनाकर ही वे सन्तुष्ट न हो सके उ । हिन्दुस्तानी खाना खिलाकर पूरा हिन्दुस्तानी बना लेनेके लिये व्यग्र हो उ कहीं उनको सत्तू दिया, कहीं चूड़ा दही, कहीं चना चबेना ही। और बड़ी

हंसी खुशीके बीच उन्हें खिलाया ही। जहाजपर लादकर विलायत रवाना कर देनेकी हमारी ताकत नहीं है पर पूरा हिन्दुस्तानी बना छोड़नेका बल बूता तो है—ऐसी विद्यार्थियों और उनके हमजोलियोंकी धारणा थी। और उनके तदनुसार उन अंग्रेजोंको झंडे दिये। उनसे क्रान्तिकारी नारे बुलवाये और उन्हें अपने जलूसमें शामिल किया। उपद्रवियोंके कोपका खतरा उठाकर भी उन्होंने अंग्रेजोंकी रक्षा की। जो सरकारी अफसर थे और दूसरे दूसरे जेन्टलमेन उनको भी इन सब सुविधा असुविधाको भोगना पड़ा।

ऐसी रही भारतीय करणकी स्वराजी पद्धति, जिसका श्रीगणेश १० अगस्तसे ही शुरू हो गया था। स्वराजी रेलगाड़ी क्रान्ति-सन्देश-वाहिकासे प्रचारिका बन गयी थी भारतीयताकी।

बादको तुरत उसके जीवनमें नयी उफान आयी। पटनेसे विद्यार्थी आने लगे, शहीदोंकी चिताकी आग लेकर। उनका विषमता विरोध उग्रताकी सीमाको छू रहा था। उनके लिये मुसाफिरोंमें ही समानता लानेकी जरूरत न थी बल्कि रेल-गाड़ीके तमाम डब्बोंपर समताकी छायाको दाग देना था। इस मतलबसे विद्यार्थी फर्स्ट, सेकेण्ड क्लासमें घुस पड़े। उनके शीशे तोड़ डाले, आइने फोड़ डाले और गद्दियाँ उठा फेंकी। पंखे तो कहां उड़े पता नहीं।

अब स्वराजी गाड़ी सर्वहारा बन गयी। क्रान्तिकारियोंके आदेशानुसार चली संहार करने। इसपर चढ़कर जनता और विद्यार्थी दूर दूर पहुँचते, स्टेशन जलाने पुल तोड़ने और सड़क काटने। तोड़ फोड़के प्रोग्रामको जानदार बनानेमें स्वराजी गाड़ीका बड़ा हाथ था। पर जिस तोड़ फोड़ और फूँक फांकका यह साधन बनी शीघ्र ही उसका शिकार भी उसे होना पड़ा। विद्यार्थी, जितना काम इससे लेना होता ले चुकते तब इसको पङ्गु बनाकर छोड़ देते। ब्रेक तोड़ देते, इञ्जनके कल पुरजे बिगाड़ देते, कहीं कहीं जहाँ तहाँ आग लगा देते जिससे ब्रेक वान जल जाता और कुछ डब्बे भी जल उठते और कहीं कहीं तो समूचीकी समूची गाड़ी प्रचण्ड अग्निमें झोंक दी जाती।

११ अगस्तको स्वराजी गाड़ी चलायी बखरी थानाके विद्यार्थियोंने मुङ्गेर जिला में। इनकी एक टोलीने सलौना स्टेशनपर आयी हुई गाड़ीको रोक लिया। सबके मुङ्गेर सब उसमें सवार हो गये और खगड़ियाकी ओर चले। राहमें इमली, ओलापुर आदि स्टेशन आये। हर जगह वे उतरते गये जनताको नेताओंकी

गिरफ्तारीकी खबर देने और अपनी ताकतसे उन्हें छुड़ा लेनेका उपाय बताने। लोगोंमें रूह फूँकते वे खगड़िया आये जिसे उनने देखा अपनी मामूली चालसे चलते। उनने वहाँ क्रान्तिके नारे लगाये और अगस्त आन्दोलनका जोश भरा। बस, वहाँके जीवनमें ज्वार आ गया। काफी युवकोंने टोलीका साथ दिया। फिर सब मिलकर आगे बढ़े और खगड़ियाके सभी सरकारी दफ्तरोंमें ताला लगाया तथा तिरंगा झंडा फहराया। शाम हो गयी और टोलीको सलौना वापस आना था किन्तु खगड़ियाके स्टेशन मास्टरने लौटते समय गाड़ी खोलने नहीं दी। छात्रोंकी टोली इससे न घबड़ाई न रुकी रही। नारा लगाते, झंडा फहराते, गाते बजाते उनने १६ मीलका रास्ता रातों-रात तय कर लिया। ठहरे एक जगह गंगौरस्थानमें जहाँ श्री महंथ गोपाल दासने उनके भोजनादिका प्रबन्ध किया।

शाहाबाद

शाहाबाद जिलेमें बक्सरने भी स्वराजी गाड़ी देखी ११ अगस्तको। गाड़ीके प्रत्येक डब्बे क्रान्तिकी आग उगल रहे थे, जिसकी गर्मी कौमी नारोंकी आवाजके साथ साथ चारों ओर फैल रही थी। गाड़ी एक तरहसे विद्यार्थियोंके दखलमें थी और उनके प्रचारका साधन बन रही थी। शाहाबादकी जनताने अपने विद्यार्थियोंसे ही स्वराजी रेलगाड़ी चलानी सीखी।

मुजफ्फरपुर

मुजफ्फरपुरमें सीतामढ़ीने स्वराजी रेल चलायी १२ अगस्तको। हर गाड़ी पर, जो सीतामढ़ीसे गुजरती, लड़कोंके झुण्ड चढ़ जाते और बाजारोंमें जाकर हड़ताल करवाते और स्कूलोंमें जाकर विद्यार्थी दलको क्रान्तिकी दीक्षा देते।

दरभंगा

दरभंगा जिलेमें कई जगह स्वराजी गाड़ियां दौड़ीं। मधुबनी, समस्तीपुर, और रोसड़ाके विद्यार्थियोंने १० अगस्तसे ही बिना टिकट चढ़ना, जहाँ चाहे उतरना शुरूकर दिया था। स्वराजी रेलगाड़ीका यह मुख्य लक्षण था। और प्रान्त भरमें कहीं भी इसने अपने इस धर्मको नहीं छोड़ा।

संथालपरगना

१४ अगस्तको स्वराजी गाड़ी चली सन्थाल परगनाके मधुपुरमें। छात्रोंने रेलगाड़ीपर अपना अधिकार कर लिया और मनमाने ढंगसे उससे काम लेने लगे। समझिये वैद्यनाथधामसे जशीडीह और जशीडीहसे मधुपुर स्वराजी रेलगाड़ीकी ही धूम रही।

सारन

१३ अगस्तको आजाद-ट्रेन चली सोनपुरसे छपरेकी ओर। पटनेके विद्यार्थी पटना छोड़ मुफस्सिल जा रहे थे, प्रतिहिंसाकी आगको बगलमें दाबे

हुए। आज़ाद-ट्रेन चलाया इनने ही, और यह ट्रेन तोड़फोड़का सन्देश देती हुई, तोड़ फोड़का काम करती हुई छपरे पहुंची खुद जीर्ण शीर्ण।

१५ अगस्तको सोनपुर थानेके डिक्टेटर साहबने सोनपुर स्टेशनपर पधारते ही हुक्म दिया कि ट्रेन फ्री जायगी। उस स्वराजी गाड़ीपर टिकट लेकर चढ़नेकी मनाही थी। जिनने टिकट खरीद रखा था उन्हें लौटाना पड़ा और जो नहीं लौटा सके उनसे टिकट इकट्ठा करके स्वराजी टिकट कलक्टरोंने टिकटोंको फाड़ डाला। फिर वह स्वराजी गाड़ी सरपर राष्ट्रीय झंडाको चढ़ाये हुए, डिक्टेटरकी हुक्म पाकर छपरे गयी। वह डिक्टेटरकी आज्ञानुसार ही रुकती चलती। उसके ऊँचे क्लास तो ग्रामीणोंके लिये ही रिजर्व थे।

पर सोनपुरके डिक्टेटरसे मैरवाके छात्र फुर्तीले निकले। उनने ता० १४ को ही स्वराजी गाड़ी चलायी। मैरवासे तिरंगा झंडा फहराती हुई एक मालगाड़ी भांटा पोखरकी ओर बढ़ी पर रास्तेमें ही वह ठहरा ली गयी और बहुमतसे कुछ डब्बे खोल उनके भीतरके सामानको जनताके घर जाने दिया गया। एक पसिञ्जर ट्रेन छपरे गयी, खूब सजधजकर। उसपर दो अंग्रेज बैठे थे, उनसे गांधीजीकी जय बुलवायी गयी। पर उन साहबोंका रंग ढंग भी कुछ ऐसा था कि उन्हें स्वराजी गाड़ीसे ले चलना मुनासिब नहीं समझा गया। जिस डब्बेमें वे थे उसे काट दिया गया, तब कहीं गाड़ी बढ़ायी गयी। दोनों अंग्रेज पहले स्थिर रहे, पर जब गाड़ी कुछ दूर निकल गयी तब डब्बेके बाहर हुए और कहीं निकल गये।

चम्पारन चम्पारनके घोड़ासाहनसे बेतिया तक आजाद-ट्रेन दौड़ी। उसके संचालक थे एक उच्च शिक्षा प्राप्त कानूनदां, और छात्रसंघके पदाधिकारी। समूची ट्रेन झंडेसे सजी थी। कौमी नारोंसे गूँजती थी। गार्ड और ड्राइवर साहब भी 'वन्देमातरम्' का जयघोष करते थे।

और आजाद-हिन्द-मेलकी तो लम्बी दौड़ थी। वह अगस्त क्रान्तिका प्रचार करती हुई दलसिंगसराय, खगड़िया, मानसी होती हुई कटिहार चली गयी।

फिर जमालपुरसे क्यूल तक स्वराजी गाड़ी चलायी शहीद लक्ष्मी चौधरीने।

भागलपुर भागलपुरमें सदल बल ट्रेनपर कब्जा किया श्रीमती अमृत कौरने। आप ट्रेन सत्याग्रह करने चली थीं, सोचा था गिरफ्तारीका एक अच्छा रास्ता निकल आयगा। भागलपुर स्टेशनपर गया, जानेवाली ट्रेनमें जा बैठीं। सहस्रोंकी भीड़ साथ थी। आप नाथनगर तक गयीं, पर अपनी गिरफ्तारीकी संभावना

न देख फिर वापस आगयीं। आगेका मोरचा ठीक करनेका उनको समय ही न मिला। क्योंकि अगले दिन ही वह गिरफ्तार कर ली गयीं।

सच पूछिये तो शायद ही कोई जिला ऐसा होगा जहां स्वराजी रेलगाड़ी नहीं गयी और जहांकी गाड़ीपर सवार विद्यार्थी बुलन्द आवाजमें अंगरेजी हुकूमतके खिलाफ खुली बगावतके नारे नहीं लगाये।

पर सबसे कमाल किया पटना जिलाने, जिसकी आजाद सरकारने चार दिन पटना तक बिहार-बख्तियारपुर रेलवेका सञ्चालन किया।

पर स्वराजी रेलगाड़ीकी पूर्णाहुति की पूर्णिया जिलाने। पूर्णियासे जोगबनी पूर्णिया जो गाड़ी जाती है उसका अन्तमें संहारका मंत्र सिखलाया अगस्त क्रान्तिके साधकोंने। पूर्णिया और जोगबनीके बीचके हर स्टेशनपर जनताने देखा, टिकट घरकी खिड़कीपर लिखा है—टिकट खरीदना मना है।

पूर्णिया जोगबनी लाइनकी गाड़ियां पहले तो स्वराजी मैदानमें आयीं प्रचार करने। स्वराजी इञ्जनपर गाड़ी हंकवाते हुए, स्वराजी ब्रेकमें गाड़ीपर नजर रखते हुये, और स्वराजी डब्बोंमें टिकट चेक करते हुये। जिसको टिकट देखते उतार देते। जो गिड़गिड़ाता, आरजू मिन्नत करता, आश्वासन देता कि आइंदा कभी टिकट लेकर गाड़ीपर न चढ़ेगा वा दिलजमई करा देता कि वह अमुक नेताका रिस्तेदार है,इसलिये रियायतका हकदार है, तो उसका टिकट फाड़कर उसे फिर चढ़ा लेते। गाड़ीको आगे बढ़ाते, पीछे हटाते, खड़ा करते वा चलाते, प्रचारकी सुविधा देख करके।

आखिरी बार स्वराजी उस गाड़ीमें सवार हुए अपने साज सामग्री सहित। हर स्टेशनपर वे मनमाना गाड़ी रोकते गये। किरासन तेलका कनस्तर उड़ेला और स्टेशनको जला दिया। हाँ! स्टेशनमें जो रुपये पैसे पाये उसे स्टेशन मास्टरके पास अमानतके रूपमें रख दिया और उनकी व्यक्तिगत चीजोंको भी जलनेसे बचाया। कसबासे जोगबनी तकका तो कोई स्टेशन अछूता नहीं बचा। उस गाड़ीसे सरकारी खजाना भी जा रहा था; हिफाजतमें बन्दूकधारी पुलिस। स्वराजियोंने खजानेकी ओर ताका भी नहीं। हां! बन्दूकें छीन ली शायद सोचा जहां स्वराज है वहां खजानेकी हिफाजत बन्दूकसे क्यों?

आज भी गार्ड और ड्राइवर बड़ी दिलचस्पीसे स्वराजी गाड़ीकी चर्चा करते हैं। पर जहां वे उन गाड़ियोंके सञ्चालकोंकी जिन्दादिलीपर खुशी जाहिर करते हैं वहां वे उनकी जिदपर क्षोभ प्रकट करते हैं। कहते हैं कि हम पहले बिलकुल उनके हमदर्द थे पर बादमें उनकी हरकतोंसे हैरान हो गये और पनाह मांगने लगे।

बिहारकी पहली आहुति

११ अगस्त मानो आन्दोलनकी सारी गर्मी समेटकर आया। शिक्षण संस्थाओं पर कसकर धरना पड़ने लगा और छात्रसंघके कार्यकर्त्ता घूम घूमकर विद्यार्थियोंका संगटन करने लगे। गान्धीजीने कहा था इस आन्दोलनमें जेल जानेके लिये आगे बढ़ना नहीं है। जेल जाना तो खेल हो गया है। मेरा तो इरादा है जितनी फुर्तीसे हो सके, जितना कम समय लग सके उतनेमें आन्दोलन जीत लेने का। गान्धीजीकी उक्ति आन्दोलन कारियोंमें गजबकी फुर्ती ला रही थी। क्या पटना सिटी, क्या गुलजारबाग, क्या बांकीपुर—सभी जगह सरकारी हलकोंमें वे हलचल मचा रहे थे।

स्कूल और कालिजके अनेक प्रोफेसर और टीचर सुबहके छः बजेसे ही अपनी अपनी संस्थाको से रहे थे। साइन्स कालिजके दो प्रोफेसरोंको तीस तीस विद्यार्थियोंको छातीपर पैर देकर भीतर जाना पड़ा था और कईको दीवार लांघकर। इसलिये उनका वर्ग बड़ा सतर्क होरहा था। पर उनकी सतर्कता विद्यार्थियोंके आकर्षणकी वस्तु न थी। विद्यार्थी तो सभी संस्थाओंपर जबरदस्ती धरना बैठाकर उनका काम असंभवकर देनेके लिये सचेष्ट थे।

इसी समय उन्हें मालूम हुआ कि पुलिसने बाबू अनुग्रहनारायण सिंहको उनके डेरेपरसे गिरफ्तारकर लिया है। फिर ता बाबू श्रीकृष्ण सिंहका सन्देश पानेके लिये वे व्यग्र हो गये। तुरत एक गाड़ी ली जिसपर बैठाकर उन्हें वे बी० एन० कालिजके हातेमें ले आये। विद्यार्थियोंकी बड़ी तादाद इकट्ठी हो गयी थी। श्री कृष्ण बाबूने धधकती आवाजमें कहा कि महात्मा गांधी, राजेन्द्र बाबू और बड़ेबड़े नेताओंको गिरफ्तार करके मदान्ध अंग्रेजी सरकारने देशको जो चुनौती दी है उसका मुंहतोड़ जवाब देना ही पड़ेगा। देशकी आंख विद्यार्थियोंपर लगी हुई है, विश्वास है उसकी जंजीर तोड़नेमें वे समर्थ हो सकेंगे। वे सरकारका, उसकी फौजका, उसकी पुलिसका डर छोड़ दें। हां! अहिंसा कभी न छोड़ें। हम तो न्याय मांगते हैं। हमारी जीत होगी ही। भाषण देकर आप लौटे ही थे कि पुलिसने आपको भी गिरफ्तारकर लिया।

पर विद्यार्थी हतोत्साह नहीं हुए। यह क्रान्ति नेताओंकी नहीं रह गयी थी,

यह तो जनताकी हो गयी थी—छात्रोंकी और साधारण कार्यकर्त्ताओंकी। विद्यार्थी दूने उत्साहसे धरना देने लगे।

गुलजारबागकी बादशाह रिजवी कन्या पाठशालापर जबर्दस्त धरना देखकर अध्यापिकाने गाड़ीवालोंसे कहा कि लड़कियोंको वापस घर पहुंचा आओ। पर कितनी लड़कियां धरना देनेवालोंके साथ नारा लगाने लगीं। फिर तो संस्थाको अनिश्चित कालके लिये बन्दकर देना पड़ा।

बांकीपुर कन्या हाई स्कूलके धरनेको तोड़नेके लिये तो घुड़सवार पहुँचे। वे बेंत और डंडे अन्धाधुन्ध चलाने लगे। उसी समय श्री भगवती देवी वहां पहुंची, अनेक देश सेविकाओंके साथ। देश सेविकाओंको देख लड़कियोंमें काफी जोश पैदा हुआ और नारे लगाती हुई वे संस्थाके बाहर हो गयीं।

आज सक्रेटेरियटपर झंडा फहराना था। इस प्रोग्रामका आकर्षण भिन्न भिन्न स्थानोंमें विद्यार्थियोंकी टोलियोंको संगठितकर रहा था।

पटना सिटीसे विद्यार्थियोंका जलूस निकला जिसकी एक टोली सेक्रेटेरियटकी ओर बढ़ी, दूसरी बांकीपुर लौनको रवाना हुई, तीसरी निकली सिटी कोर्टको अपने राष्ट्रीय झंडेसे सुशोभित करने।

कोर्टकी हिफाजतमें पुलिस थी लट्ठधर और हथियारबंद, और गोरखे भी थे। पर यह निहत्थी टोली बढ़ती ही गयी। हरिचरण वानप्रस्थी नारा बुलन्द करते फौजके देखते देखते साथियोंको लेकर कचहरीपर पहुंच गये। उनकी टोलीने झंडा फहरा दिया। फिर तो उत्साहका समुद्र उमड़ पड़ा। लोग सेक्रेटेरियटकी ओर बढ़े। उनके कई साथी गिरफ्तारकर लिये गये थे। पर गिरफ्तारीकी किसे परवाह थी।

दिनके लगभग तीन बजेसे सभी टोलियोंको पटना सेक्रेटेरियट अपनी ओर खींचने लगा। जो टोली जहां थी वहींसे चल पड़ी। जिस टोलीमें जितने छोटे विद्यार्थी वह टोली उतनी ही तेज। उधर रास्तोंकी नाकेबन्दी हो रही थी—लट्ठधर, संगीनधारी और घुड़सवार सभी पैंतरेमें। अनेक जगह अनेकों टोलियोंसे मुठभेड़ हुई। पर जबरदस्त मुठभेड़ हुई गोलघरके पास, जहांसे सेक्रेटेरियटका रास्ता सीधा और नजदीक पड़ता है। वहां लट्ठधर गोरखे और बलूची घुड़सवार अपनी नमक हलालीकी बेरहमी दिखला रहे थे। अनेक टोलियोंके कितनोंको उन्होंने बुरी तरह पीटा, बहुत घायल हुए और कुछ तो लदकर अस्पताल पहुँचे। पास ही पुलिस

भी मौजूद थी, जो चुस्त चालाकको चुन चुनकर हिरासतमें ले रही थी। पर टोलीपर टोली उमड़ती आ रही थी। पत्थरोंसे पानी नहीं रुकता। फिर भला इन घुड़सवारोंसे आदमी क्या रुकते! घुड़सवारोंसे दबते पिचते अगलसे बगलसे कितने आदमी निकल गये, आगे चलकर टोलियां बनायीं और चल पड़े सेक्रेटेरियटकी ओर।

लोगोंने धारासभा-भवन (Council and Assembly Chambers) के सामने मोर्चा बांधा। भवनके प्रवेश द्वारपर पुलिसकी चौकसी थी। सामने, सड़कके अगल बगलके बगीचोंमें लोग इकट्ठे हो रहे थे।

पहली टोली पहुँची स्कूलके विद्यार्थियोंकी। जनता भी शामिल थी। आते ही विद्यार्थियोंने प्रवेशद्वारके पायेपर झंडा फहरा दिया और बगलसे झाड़ फांद हातेमें घुस गये और भवनकी ओर दौड़े। भवनके पहरेदार कड़े थे। उन्होंने अन्धा धुन्ध हन्टर चला चलाकर विद्यार्थियोंको बाहरकर दिया। तब तक पुलिसने पायेपरके झंडेको उतारकर अपने पास रख लिया था। कई छात्रोंको गिरफ्तार भी कर लिया था।

तत्काल दूसरी टोली पहुँची कॉलिजके छात्रोंकी। बालेश्वर सिंह, विद्यार्थी साइन्स कालिजको शब्दोंमें उसने देखा—"सभी गेट बन्द और सबोंपर लाठीबन्द पुलिस और गोरा सर्जेन्ट मुस्तैद। फिर चारों ओर बालछड़ीका काँटा। भीतर कैसे जाया जाय। इसी बीच आवाज़ आयी कि पीछेसे तीन-चार सौ विद्यार्थी झंडाके साथ भीतर पैठ चुके हैं। फिर तो हमलोग जोशमें आ गये। बायीं ओरसे काँटोंको तोड़ मड़ोर डेढ़ सौकी तादादमें भीतर घुस गये। कुछ विद्यार्थी झंडेके साथ सीढ़ीपर चढ़े ही थे कि सर्जेन्टने हन्टर चलाना आरम्भकर दिया। देखादेखी पुलिसकी लाठी चलने लगी। लोग मुड़े और आगे बढ़े। इसी बीच एक लम्बी लाठी हम तीनोंपर आ पड़ी। इन्द्रदेव (श्रीजगलाल चौधरीके सुपुत्र जो पीछे शहीद हो गये) के सरमें चोट आयी। वह घायल होकर गिर गया। उस लाठीसे मेरे हाथमें और भवानन्दकी पीठपर चोट आयी। इन्द्रदेवको झटसे हमलोगोंने बाहर किया, उसे उठाकर अस्पताल ले गये। हमलोगोंका बाहर निकलना था कि घुड़सवारोंका एक दल वहीं आ पहुँचा। वे बेतहाशा भीड़में घोड़ा दौड़ाने लगे। फिर भी उमड़ती भीड़ पीछे न हटी।"

तब तक सरकारकी पूरी ताकत वहाँ पहुँच गयी। लट्ठधर पुलिस, पंजाबी घुड़सवार, फौजी गोरखे और उनके सरपर एस० पी०, डी० आई० जी० और कलक्टर। तो भी जो टोली आती सीधे प्रवेश द्वारपर जाती और घुड़सवारोंकी पंक्ति चीरकर भीतर

जानेकी कोशिश करती। फिर घुड़सवार बढ़ते और उसके बीच घोड़े दौड़ा-दौड़ा कर लोगोंको तितर-बितरकर देते। घुड़सवार थक गये, पर विद्यार्थियोंका धावा जोर पकड़ता गया। इसी बीच एक घुड़सवारकी पगड़ी गिर गयी। विद्यार्थियोंने उसे उठा लिया, उसका प्रदर्शन किया और जला दिया। लोगोंका उत्साह दुगुना हो गया। उनकी संख्या २५, ३० हजार तक पहुँच गयी। विद्यार्थी फाटकपर डट गये और सभा-भवनपर जाकर झंडा फहरानेकी आवाज लगाने लगे।

मिस्टर आर्चर, कलक्टर आगे बढ़े। विद्यार्थियोंको समझाने लगे। लाट साहबका हुक्म नहीं है, कैसे झंडा फहराइयेगा। पर इधर समझना तो था नहीं। था तो झंडा फहराना। फिर आर्चरने कहा—लाट साहबको फोन करूँ, जो वह कहें हम सब मान लें। विद्यार्थी चिल्ला उठे—No compromise—समझौता हर्गिज नहीं। तब जोशीले-जोशीलेको चुन-चुनकर आर्चर साहबने गिरफ्तार करना शुरू कर दिया। पर विद्यार्थियोंको तो गिरफ्तार होना नहीं था। उसने धारासभा-भवनके हातेमें घुस पड़नेकी फिर सरतोड़ कोशिश की। उन्हें रोकने घुड़सवार दौड़े। इस बार एक सवार घोड़ेसे गिर पड़ा और कुछ घायल हो गया। तब उनका पारा चढ़ने लगा। पर विद्यार्थी जैसेके तैसे रहे। घुड़सवार जब फाटकपर सिमटे, वे सामने जा डटे।

इस समय भीड़की बहुत बड़ी तादाद थक सी गयी थी। सड़कके अगल बगलके बगीचोंमें बैठी, लेटी, दिल बहला रही थी। अत्यधिक विद्यार्थी भी लेटे, पड़े, बैठे दीखते थे। कोई व्याख्यान दे रहा था। कोई आर्चरकी नकलकर रहा था, कोई भुने भुट्टे खा रहा था। हाँ! फाटककी ओरसे जब जरा जोरका नारा आता, सब उधरको देखते और कसकर नारेको दुहरा तिहरा देते।

एका एक उनमें खलबली मची। सत्याग्रहियोंको तितर बितर करते घुड़सवार बगीचोंमें आये और लगे सरपट घोड़े दौड़ाने। लोग गिरते पड़ते, साथियोंका धक्का खाते, पेड़ोंसे टकराते, इधर उधर भागकर अपनेको बचाने लगे। कितनोंको चोट लगी, कितनोंकी कलम टूटी, घड़ी फूटी, पर घुड़सवारोंके वापस होते ही अधिकांश हंसते, आह ऊह करते जहां तहां बैठ गये और कितने शहरकी ओर लौट पड़े। और पहलेसे कहीं अधिक विद्यार्थी फाटककी ओर बढ़े। आर्चर साहब सामने खड़े थे। विद्यार्थियोंकी टोलीके पीछेसे उनपर ढेले चलने लगे। आर्चर मुर्दाबाद। सन सत्तावन याद करोका शोर तो हो ही रहा था। ढेले हलके थे पर नारे तीर जैसे चुभ रहे

थे। मि० आर्चर ढेलेकी बेंतसे रोकते हुए फाटकके भीतर आये, गोरखोंको सामने किया और जब बिलकुल निहत्थे थके मांदे विद्यार्थियोंकी टोली दस बारह कदमके फासलेपर पहुँची, कुछ बोले। धड़ामकी आवाज हुई। पीछेके लोग भागने लगे। अगली कतारने ललकारा—झूठा फायर है; बढ़े चलो। पर उनकी ललकार लोगों तक पहुँच भी न पाई थी कि दूसरी आवाज हुई।

स्तम्भित आँखोंने देखा, बच्चोंकी लाशें तड़प रही हैं। हाँ! प्रायः सभीके सभी बच्चे, हाईस्कूलके छात्र, जिनके होठोंको जवानी रंग भी न सकी थी! घायल 'पानी' 'पानी' चिल्लाने लगे। लोग जहाँ तहाँ ठिठके। पर आर्चर साहब दौड़ दौड़ कर वहाँ गोरखे ले गये जिनने राइफल दिखा दिखा लोगोंको भगा दिया। आर्चर साहब हताहतोंकी क्यों फिक्र करते? अगस्त आन्दोलनका बिहारकी राजधानीमें यह पहला प्रदर्शन था जिसको सरकारकी कूवतका नृशंस प्रदर्शन करके वे इस तरह कुचल देना चाहते थे जिससे सारा बिहार थर्रा उठे। किन्तु उनकी और उनके गोरखोंकी सारी पैंतरेबाजी छात्रोंको वहाँसे भगा न सकी। वे अपने हताहत साथियोंको जैसे तैसे अस्पताल ले आये।

इस गोलीकांडकी खबर वनकी आग जैसी शहर भरमें फैल गयी। शहीदोंका खून सबके हृदयमें जोर मारने लगा। कदमकुँआकी ओरसे देश-सेविकाओंका जो जलूस सेक्रेटेरियटकी ओर बढ़ रहा था अपने हताहत बच्चोंकी सुध लेने अस्पतालकी ओर मुड़ा परन्तु सायन्स कालिजके विद्यार्थी आर्चर साहबकी रक्त पिपासाको बिलकुल शान्तकर देना चाहते थे। उन्हें मालूम हुआ था कि उनके तीन छोटे-छोटे साथी घटनास्थलपर ही शहीद हो गये हैं और कितनोंको सांघातिक गोली लगी है तो भी सेक्रेटेरियटपर आर्चरने झंडा फहराने नहीं दिया है। वे लगभग दो सौका जलूस लेकर चल पड़े, प्रण करके कि झंडा फहराकर ही रहेंगे न तो एक-एक करके मर मिटेंगे। जलूस गोविन्दमित्र रोडपर पहुँचा था कि जिला कांग्रेसके पदाधिकारी सामने आये, विद्यार्थियोंको समझाया कि घायलोंकी तीमारदारी उन्हें अस्पताल बुला रही है, उन्हें सेक्रेटेरियटकी ओर न बढ़कर अस्पताल पहुँचना चाहिये और जल्द-से-जल्द। उस समय उन्हें यह भी मालूम हुआ कि एक विद्यार्थी धारासभा-भवनके मुंडेरेपर चढ़ गया था। उसने वहाँ अपने कुरतेको फाड़ डाला था और आलपीनके सहारे एक छोटे राष्ट्रीय झंडेको उसमें साट उसे एक बड़े राष्ट्रीय झण्डेका रूप देकर

पटना सक्रेटेरियट-गोलीकांडके छः शहीद विद्यार्थी
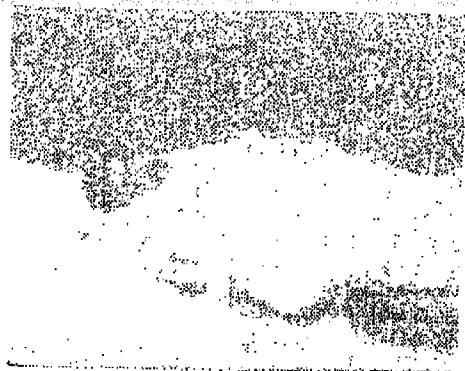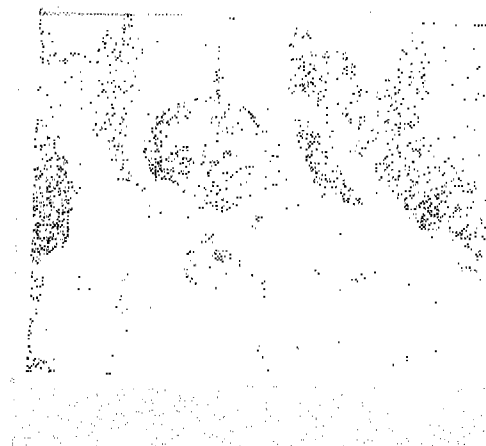
पटना सेक्रेटेरियट-गोलीकाण्डके
छः शहीद विद्यार्थी
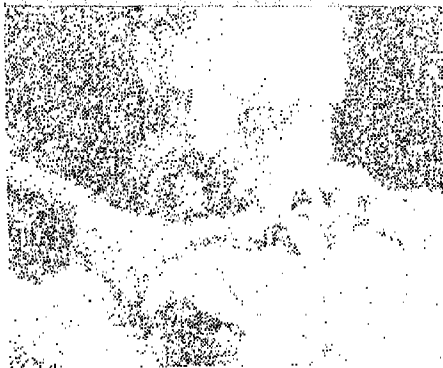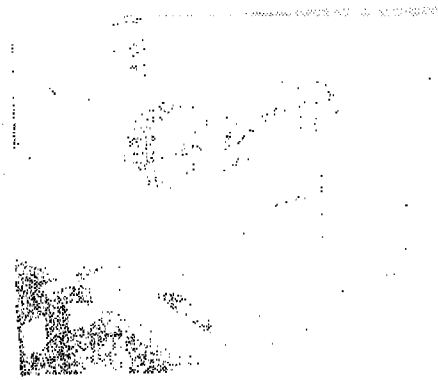
उड़ाया था। जब झण्डे उड़ाता हुआ वह कौमी नारे लगा रहा था, सर्जेन्टकी आँख उधर गयी और वह गिरफ्तारकर लिया गया। इस खबरको पाकर जलूसने अस्पतालकी ओर मुड़ना ही मुनासिब समझा।

उस दिन दानापुरमें भी काफी हलचल थी। खबर आयी थी कि गोली चलनेवाली है। इसलिये बाबू सिंहेश्वर प्रसाद वहां जा पहुँचे थे। जब लौटे तब गोलीकाण्डकी खबर उन्हें मिली। तुरत साथियोंको लेकर सेक्रेटेरियटको चल पड़े। जब पटना जंकशन पहुँचे तो देखा—स्टेशनको भीड़ने घेर रखा है। भीड़ अत्यन्त उत्तेजित है। वे भीड़को चीरते चले। मालूम हुआ कि लोगोंने एक अङ्गरेज दम्पतिको घेर रखा है। उसपर आक्रमण भी हुआ है। अब वह जान बचानेकी गरजसे स्टेशनकी एक कोठरीमें जा छिपे हैं। सिंहेश्वर बाबू तुरत उस कोठरीमें पहुँचे और दम्पतिको सकुशल दानापुर पहुँचानेका इन्तजाम कर दिया। लोगोंके सरपर खून सवार था। पर वे कांग्रेसके नेताओंको न भूले थे जिनके कड़े रुखको देखते ही उनकी जाग्रत हिंसा हवा हो जाती थी।

जब सिंहेश्वर बाबू स्टेशनसे बाहर हुए तब देखा सभी अस्पतालको दौड़े जा रहे हैं। अस्पतालपर हथियारबन्द पुलिसका पहरा था पर लोग टूट पड़ते थे घायलोंको अपना खून पिलानेके लिये। डाक्टर साहब एकको बुलाते तो दस आते। जिनका खून नहीं लिया जाता उनमेंसे कितने सिसक पड़ते।

जब खबर मिलीकी चार और शहीद हो गये तब भीड़ने अपने सातों शहीदोंका जनाजा जरा धूमधामसे निकालना चाहा। पर अधिकारियोंने लाश देनेसे इनकार कर दिया। अब तो लोगोंका पारा चढ़ा। सिंहेश्वर बाबू और 'सर्चलाइट' के सम्पादक बाबू मुरलीमनोहर प्रसाद बीचमें पड़कर आर्चर साहबसे शहीदोंकी लाशें नहीं दिलवा देते तो कहना कठिन है अस्पतालमें कैसा काण्ड उपस्थित हो जाता।

बुलन्द कौमी नारों और जयघोषके बीच सजधजकर, धूमधामसे, सात शहीदोंका जनाजा निकला। ग्यारह अगस्तकी आधी रात थी। मालूम होता था सप्तर्षि उतरकर पटनेकी सड़क-सड़कको अपनी ज्योतिसे जगमगा रहे हैं और समस्त जनताको क्रान्ति-ध्रुवकी ओर खींचे ले जा रहे हैं।

सुबह होते-होते दीघा श्मशानघाटपर शहीदोंकी चितायें धधक उठीं, अगस्त आन्दोलनकी ज्वालामुखी फूट पड़ी जिसके तापसे पटना ही नहीं सारा बिहार उत्तप्त हो गया।

अबतक जनताकी ओरसे जितनी कार्रवाइयां हुई उनमें साम्राज्य विरोधिनी भावनाका पर्य्याप्त प्रदर्शन था, प्रतिहिंसाका पुट न था। दानापुरमें जलूस निकला था। उसपर सैनिकोंने लाठीका प्रहार भी किया था पर जनता शान्त रही थी। खगौलके गान्धी विद्यालयके प्रधान शिक्षकने किसानों और मजदूरों और विद्यार्थियोंका विराट प्रदर्शन किया था और सबोंके देखते देखते पुलिस उन्हें गिरफ्तारकर ले गयी। पर जनता आपेसे बाहर न हुई। हां, नौबतपुरके कुछ प्रदर्शनकारियोंने नहर आफिसकी सामाग्रियोंमें आग लगायी और मनेर थानेके विद्यार्थियोंने रेलोंकी पटरियोंको भी उखाड़ा। पर पटनाकी जनताके लिये ग्यारह अगस्त तकके दिन हड़ताल और जलूसके ही दिन रहे और उनका रास्ता सत्याग्रहका रास्ता रहा। विक्रमने ११ अगस्तको हड़ताल मनायी। स्कूल, रजिस्ट्री और नहर आफिसपर झंडा फहराया। इस दिन थाना कांग्रेसके सभापति एक कार्यकर्त्ता सहित गिरफ्तार हुए, और थाना आफिस जब्त हुई।

और और जगहोंमें भी ११ अगस्तकी हवा वैसी ही थी।

मुंगेर जिलेके खड्गपुरमें ग्यारह अगस्तने उभाड़ा एक मांको। वहाँका राष्ट्रीय विद्यालय और राष्ट्रीय विद्यालयमें जो खादी भण्डार था सो, ताः १० को

मुंगेर

जब्त हो चुका था। खड्गपुरके नेता नन्दकुमार बाबूकी गिरफ्तारीकी खबर, जो मुंगेर जिला कांग्रेस आफिसके फाटकपर हुई थी, वहां पहुँच चुकी थी। नन्दकुमार बाबूकी मां क्षुब्ध थीं। जनता जोशमें थी। जब्ती और गिरफ्तारीकी सरकारी कार्रवाईका जवाब दिया उसने एक विराट प्रदर्शन करके। मांको आगे करके जनता चली नारे लगाती हुई, झंडे उड़ाती हुई।

जलूस थाना पहुँचा, वहाँसे रजिस्ट्री आफिस गया और वहाँसे पोस्ट आफिस। सबोंकी इमारतोंपर उसने झंडे फहराए। उसकी सुव्यवस्थित दृढ़ता देख किसीको आगे आनेका साहस नहीं हुआ।

जुलूसमें विद्यार्थियोंकी काफी तादाद थी। इसलिए जब वह ली हाई स्कूलपर झंडा फहरा रही थी तब विद्यार्थी उसके नामके शुरूका शब्द जो 'ली' है उसे विलीनकर रहे थे। ली साहबने १९३२ के आन्दोलनमें तारापुरके सत्याग्रहियोंको गोलीका शिकार बनाया था। उस आततायीका नाम मिटा देना विद्यार्थियोंने अपना फर्ज समझा था।

भागलपुरमें ११ अगस्त सत्याग्रहकी दुन्दुभि बजाता आया। कांग्रेस भवनकी

भागलपुर

दखल करके सरकारने पुलिसका जो पहरा बैठा दिया था उसे जनताके रोष-रोशकी कोई परवाह नहीं थी। सत्याग्रह करनेकी जो चुनौती विद्यार्थियोंने दी थी उसकी पुलिसको क्या चिन्ता हो सकती थी? उसकी लाठीकी पितलिया मूँठ विद्यार्थियोंकी खोपड़ीको कड़कड़ा देनेकी काफी ताकत रखती थी।

पर आजादी तो सौ सौ जानोंको भी सस्ती है। आजादीके दीवाने विद्यार्थी एक एक करके बढ़ने लगे और उनने चारो तरफसे अपने कांग्रेस भवनपर धावा किया। धावेमें १३ सालके बच्चे तक शामिल थे। धावा करनेवाले सत्याग्रहियोंपर कठोर प्रहार होने लगा। छोटे बच्चे बूटकी ठोकरोंकी मारसे बेदम होने लगे। औरोंपर लाठीका मजबूत हाथ पड़ने लगा। विद्यार्थी खूनसे तर होने लगे। पर, उनका उत्साह कम न हुआ। आहतोंकी मरहम पट्टीकी व्यवस्था जनताने अपने हाथ में ले ली थी। इसलिये जो घायल होता उसे जनता मैदानसे हटा लेती, पर एकके हटते दस मैदानमें कूद पड़ते। फिर तो पुलिस थक गयी। उसने सत्याग्रहियोंको लौरीपर जबरदस्ती बिठाकर सबौर छोड़ आनेका निश्चय किया। पर सबौरमें कोई उतरता तब न! पुलिस सबौर पहुँचकर सत्याग्रहियोंको लौरीसे खींच बाहर फेंकनेकी कोशिश करती, पर वे इस तरह चिपक जाते मानों निर्जीव लौरीके ही एक सजीव अंग हों। हार मान पुलिसने अपना प्रोग्राम बदला और सत्याग्रहियोंको तिलका मांझा नामक स्थानमें छोड़ आने लगी। शहरमें हड़ताल जारी था।

दरभंगा

११ अगस्त दरभंगाके लिये भी अनोखा निकला। हिंसा और अहिंसाकी प्रतिक्रियाओंमें जो विषमता होती है उसे जनताने साफ साफ देखा। सरकार किस ढंगसे हिंसाको उभाड़ती है सो भी मालूम हुआ।

सुबहसे ही दरभंगा और लहेरियासरायके स्कूलों और कालेजोंके विद्यार्थी सारे शहरमें अगस्त क्रान्तिके नारे लगा रहे थे। दिन चढ़े सभी किंग्स पार्कमें जमा हुए और कतार बांध लहेरियासराय कलक्टरीके सामने प्रदर्शन करनेका निश्चय किया। अभी उस स्थानसे हिले डुले भी न थे कि पुलिस पहुँची, लाठी चार्ज हुआ, बहुतोंको चोट आयी। कितनोंकी इतनी सख्त कि वे आगे न बढ़ सके। पर मारसे कहीं आजादीकी भावना मरी है? लड़के बढ़ते गये और कचहरी चौक आ धमके। वहां पुलिसकी मोर्चेबन्दी थी, बड़ी जबरदस्त। जिन्दादिल विद्यार्थी आगे बढ़े और पुलिसकी कतारोंमें पिल गये। लाठी चलने लगी। पुलिस हमारा भाई है का नारा

लगने लगा। दर्शकोंकी बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी। लाठीकी ताकतसे 'पुलिस हमारा भाई है' का नारा लगाती हुई छात्र मण्डलीको पुलिस हटा देती पर तुरत 'अंग्रेजों भारत छोड़ दो' की आवाज बुलन्द करती हुई मण्डली आगे बढ़ पुलिसका मोरचा तोड़नेकी कोशिश करती। ऐसा बार बार होता रहा। पुलिसवाले लाठी चलाते चलाते कुछ ढीले पड़ने लगे। पर विद्यार्थी मार खा खा कर जोशीले बनते गये। एकाएक वे पुलिसकी लाठियोंकी बौछारके बीच बैठ गये और पुलिस हमारा भाई हैका नारा लगाते हुए आगे घुसने लगे। बस, पुलिसकी लाठी बन्द। डी० एस० पी० ने कड़ककर कहा—लाठी चलाओ—पर वहां तो पुलिस नहीं छात्रोंके भाई खड़े थे। डी० एस० पी० की कौन सुनता। बीस मिनट तक ऐसा दृश्य रहा और लगातार 'अंग्रेजों भारत छोड़ दो, इन्कलाब जिन्दाबाद, पुलिस हमारा भाई है' के नारे बुलन्द होते रहे।

ठीक इसी समय जयनगरके श्री अयोध्याप्रसादने देखा—गंगासिंह, सी० आई० डी० जनताकी भीड़में ढेला फेंक रहा है। वह हां, हां, चिल्लाते ही रहे कि जनताकी ओरसे जवाबी ढेले आने लगे। फिर तो ढेलोंकी झड़ी सी लग गयी। पुलिसको चोट आयी, अफसरोंको चोट आयी, और वहांका समा ही बदल गया। आगे बढ़ते हुए विद्यार्थीयोंपर लाठी बजरने लगी, इस तरह कि कुछ पूछिये नहीं। कितनोंके सर फूटे, कितनोंकी अंगुलियां टूटीं और ९ सत्याग्रही वहीं बेहोश होकर गिर गये। लोग भाग खड़े हुए। फिर पुलिस हट गयी।

तीमारदारोंकी कमी न थी। घायलोंकी सेवा शुश्रूषा हुई और ९ सत्याग्रही अस्पताल पहुंचा दिये गये।

विद्यार्थियोंकी छाती तो गज भरकी हो गयी, और वे दूर दूरके मनसूबे बांधने लगे। उन्हें क्या पता था कि पटनेका गङ्गातट किसी और आगको धधका रहा है जिसकी लू लपट समस्त प्रान्तको आकुल कर देगी।

मुजफ्फरपुर जिलेके लालगंज थानेने भी ११ अगस्तकी कहानी अपने दो दो जवानोंके खूनसे लिखी है। उस दिन झुंडके झुंड लोग इकट्ठे हुए, जिनको लेकर मुजफ्फरपुर विद्यार्थियोंका एक बड़ा समूह थानेपर कांग्रेसका झंडा गाड़ देनेको निकला। श्री बासुदेव खलीफा नेतृत्व कर रहे थे। इस बेशुमार भीड़को देख पुलिस घबड़ा गयी। उसने निश्चय कर लिया कि किसीको थानेके पास फटकने न देगी और अगर किसीने ऐसी कोशिशकी तो गोली खिला उसे सुला देगी। थानेपर

जो हथियार बन्द थे, राइफल ले पैंतरेमें आगये, किन्तु भीड़ आगे बढ़ती ही चली। एकको, जो बढ़ बढ़कर नारे लगा रहा था और लोगोंमें जोश भर रहा था, पुलिसने गिरफ्तार कर लिया। पर लोग तो ९ अगस्तसे ही आजाद थे। उन्हें पुलिस और अंग्रेजी राज जो उठ गया था कैसे गिरफ्तार कर सकता था। लोग बिगड़े और थानेपर टूट पड़नेकी तैयारी करने लगे। उनका रुख देख पुलिसने गिरफ्तारशुदा सज्जनको छोड़ दिया। पर लोगोंको धक्का दे देकर हटाना शुरू किया जिसपर लोग ईंट और रोड़े चलाने लगे। तुरत पुलिसने गोली छोड़ी जिससे श्री विभीषण महाराज और श्री सिंहेश्वर ठाकुर शहीद हुए। यह घटना हुई दिनमें दोपहरको।

शहीदोंके खूँका असर

१२ अगस्तका सूरज स्यापा मनाता हुआ पटनेमें निकला। अस्पतालमें एक औरकी मृत्यु हो जानेसे शहीदोंकी संख्या आठ तक पहुँच गयी और आठ बच्चोंका खून क्या हिन्दू क्या मुसलमान सबोंको आठ आठ आंसू रुला रहा था। आजकी हड़तालमें मुसलमान भी शामिल थे। जनताकी ताकत बढ़ गयी थी और उसका क्षोभ तो कई गुना बढ़ गया था।

क्षोभ बढ़नेका कारण था। जनताका विश्वास था कि आर्चर जरा और धीरजसे काम लेता तो गोली चलानेकी जरूरत न पड़ती। थके मांदे लड़के घंटे दो घंटे प्रदर्शन करके लौट आते। वे बेकाबू न हो रहे थे। गिरफ्तारी मान रहे थे। किसी गिरफ्तार शुदाने भागनेकी कोशिश नहीं की और न उसको भगानेका प्रयत्न हुआ इसलिये जानताकी धारणा थी कि लड़के मारे गये चूंकि वे हिन्दुस्तानी थे। अंगरेजी हुकूमतसे अपने हकके लिये लड़ रहे थे। और अंगरेजोंको हक देना नहीं था। उन्हें तो गोलीसे भून भूनकर हक मांगनेकी हिन्दुस्तानियोंकी आदत छुड़ा देनी थी।

जनताके क्षोभमें अभिमानका भी यथेष्ट पुट था। गोली चलते देख लड़के चौंक उठे थे जरूर पर उनने गोली खायी बहादुरोंकी तरह। श्रीबालेश्वर सिंह लिखते हैं—एक १४ वर्षीय बालकके घुटनेमें चोट आयी। वह आगे बढ़ बोल उठा—"कायर ठेहुनेमें क्यों, छातीमें मार। मैं उस लड़केके निकट ही था। भयभीत हो

एक पेड़की ओटमें थरथर काँप रहा था। मैं उस बच्चेकी वीरतापर मुग्ध होगया।

एक विद्यार्थी कार्यकर्त्ता शुकदेव नारायण कहते हैं—"सुबहको सात बजेके लगभग मेडिकल कालिजके छात्रोंके साथ साथ मैंने देखा कि अस्पतालके सामने आमके पेड़के नीचे बैठा एक बूढ़ा रो रहा है। मालूम हुआ कि अभी अभी सवेरे उसका लड़का गोलीके घावसे मर गया है। हमलोग उसके पास गये और विनम्र हो बोले—आपका पुत्र देशके काम आया है। आपको इसका गौरव होना चाहिये। बूढ़ेने कहा, "मैं इसलिये नहीं रोता हूं कि मेरा पुत्र मारा गया। मैं बूढ़ा हुआ, देहमें ताकत नहीं, अब कौन है जिसका सहारा लेकर मैं देशका कुछ भी काम कर सकूंगा। मेरे रोनेका यही कारण है।"

हमलोग फिर उसे कुछ कह न सके। सचमुच उस बूढ़े जैसी भावना औरोंकी भी हो सकती थी। उस गोलीकाण्डमें जितने मरे थे प्रायः सभी गांवके थे और स्कूलके ही पढ़नेवाले। रामानन्द सिंह, रामगोविन्द सिंह, राजेन्द्र प्रसाद, सतीशचन्द्र झा और उमाकान्तजी सबके सब मैट्रिकके छात्र थे। जगत्पतिजी कालिजके दूसरे वर्षमें पढ़ते थे।

विद्यार्थियोंने स्कूलों और कालिजोंको वीरान बना देनेकी ठान ली। ऐसी जबरदस्त पिकेटिङ्ग हुई कि किसीका अन्दर जाना मुश्किल हो गया। हां, सायन्स कालिजके सिनियर प्रोफेसरका राजभक्त हृदय उछला और वे दीवार लांघ दफ्तरमें घुसनेकी कोशिश करते हुए धरना देनेवालोंसे घेर लिये गये। उनका कपड़ा फट गया था, बदन जहां तहां छिल गया था। वे सबोंसे अनुरोध करने लगे कि मुझको एक बार, आखिरी बार दफ्तर जाने दो। एक दूसरे प्रोफेसरको तो मानो अंगरेजी सल्तनतकी पूरी ताकत मिल गयी। वह बड़े जोशसे धरना देनेवालोंके शरीरपर अपने पैर जमाता हुआ सायन्स कालिजमें दाखिल हुआ।

उधर कुछ विद्यार्थी अपने साथियों और शिक्षकोंसे निबट रहे थे, इधर कुछ भिन्न भिन्न टोलियां बना सरकारके सभी अमलोंसे सरकारी नौकरीको लात मार देनेकी अपील कर रहे थे। उनका इरादा था सरकारके सभी दफ्तरोंको वीरान कर देनेका।

सरकारी अमलोंको भी चैन न था। उनकी आंखोंमें आठ मासूमोंकी लाशें तड़प रही थीं। उनकी राजभक्ति हलकी साबित हो रही थी और बड़े बड़े इस्तीफा

देनेकी सोच रहे थे। सेक्रेटेरियटका एक किरानी तो नौकरी छोड़ आन्दोलनकारियोंमें शामिल भी हो गया था।

एक बड़ा जलूस हाईकोर्ट पहुंचा। जजों और उनके साथियोंसे सरकारी पक्ष छोड़ अपनी कौमका साथ देनेकी अपील करने लगा। बैरिस्टर श्रीमती धर्मशीलादेवी भी अपील करनेवालोंमें थीं।

पटनेका भाग्य कि आज ही बम्बईकी ओरसे जंकशनपर पहुंचे श्रीसत्य-नारायण सिंह, प्रधान मंत्री बिहार प्रान्तीय कांग्रेस कमिटी। आप स्टेशनपर ही पुलिसकी हिरासतमें ले लिये गये। पर प्रान्तके कार्यकर्त्ता श्री सखीचन्द जायसवाल, बाबू चन्द्रशेखरप्रसाद सिंह आदिसे दिल खोलकर बातें करनेका मौका उन्हें मिल गया। उनने बम्बईमें अगस्त तक तोड़ फोड़के जैसे जैसे दृश्य देखे थे उनका वर्णन किया। वे साथ कई पर्चे भी लाये थे जिन्हें इन कार्यकर्त्ताओंको सौंपा। देशव्यापी आन्दोलनको सिलसिलेसे चलानेके लिये बम्बईमें आल इन्डिया कांग्रेस कमिटीका गुप्त संगठन हो गया था और इन पर्चोंको उसी संगठनने निकाला था। पर सत्यनारायण बाबूके पहुंचनेके पहले ही यहां बम्बई और बनारसकी जान कर देनेवाली खबरें, आर्चरकी गोलियोंसे पैदा हो गयी थी। धारासभा-भवनके सामनेसे जो जनता लौटी थी उसमेंसे कईने लेटर-बक्स और तारपर हाथ साफ करना शुरूकर दिया था। आज उनका व्यापक संगठन शुरू हुआ।

इस संगठनमें पटना और पटना सिटीके मजदूर, रिक्शावाले, टमटमवाले, खोंचावाले और महल्लेके होटलों और कुछ परिवारोंके नौकर चाकर भी शामिल थे। विद्यार्थियोंने और कांग्रेस कर्मियोंने इस संगठनका साथ दिया और इससे पूरा काम लिया। इनका एक गिरोह गवर्नमेन्ट प्रेस और गुलजारबाग एक्सचेंज ऑफिसपर ठेंड फहराता और मजदूरोंसे हड़ताल करवाता शहरमें घूमता रहा। दूसरा विद्यार्थियोंके नेतृत्वमें जेलपर धावा बोलने चल पड़ा।

बांकीपुर जेल क्रान्तिका बिजली घर बन रहा था। राजेन्द्रबाबू, श्रीकृष्णबाबू, अनुग्रहबाबू और अब तो सत्यनारायणबाबू सबके सब वहाँ मौजूद थे। सबोंमें उत्साह था और क्रान्तिकी एक एक खबर उनके उत्साहको दुगुना चौगुना कर रही थी। कल तक पचाससे ऊपर विद्यार्थी और कार्यकर्त्ता गिरफ्तार हो चुके थे। जो ८ अगस्तकी आधी रातसे ही अपनेको बिलकुल आजाद मान रहे थे।

जेल उनकी भावनाको उभाड़ ही रहा था। किला जैसा घर जहाँ खाने सोनेका अच्छा इन्तजाम। बस, नारे लगाना जेलके मकानकी छतोंपर फांद जनताको भिन्न भिन्न नेताओंके नामसे सन्देश देना, भीतरकी खबर बाहर और बाहरकी खबर भीतर पहुँचाना उनका प्रोग्राम था। जेलके अधिकारी उनपर अंकुश रख न पाते थे और जेलको पुलिसके हाथोंमें रखकर अपनी भद्द उड़ाना उन्हें पसन्द नहीं था। इसलिये उनने इन सबोंको पटना कैम्पजेल भेज बला टालनी चाही और उनको लेनेके लिये पुलिसकी लौरियां भी पहुँच गयी थीं, जिनपर ये सवार हो रहे थे।

उसी समय जेलका फाटक तोड़ दो—नेताओंको छीन लोकी आवाजसे जेलका हाता गूंज उठा। धावा बोलनेवालोंने एक लौरीको तोड़ दिया और बन्दियोंको छीन लिया। पुलिसका ठाट खड़ा ही रह गया। बाहर तो यह काण्ड हुआ और भीतर जेलमें इन कैदियोंने तोड़ फोड़का काम शुरू कर दिया।

तोड़ फोड़की छूत शहरको भी लगी और फैलती गयी। लेटरबक्स और लालटेनके खंभे तोड़े जाने लगे, तार काटे जाने लगे, उनके खंभे गिराये जाने लगे। रातको शहीदोंकी शिनाख्त करनेमें कठिनाई हुई थी। इसलिये कितने अपना अपना पता ठिकाना नोट किये घूम रहे थे।

शामको शहीदोंकी स्मृतिमें सभा हुई, कांग्रेस मैदानमें। स्त्री पुरुषोंकी बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी थी। सभाके प्रधान वक्ता थे श्री जगतनारायण लाल। आपने कहा कि हमें सभी अहिंसात्मक उपायसे सरकारको लोथ बना देना है और जनतासे आग्रह किया कि वे जो कर रहे हैं तेजीसे करें। सभामें और भी कितने बोले और बच्चोंके खूनकी याद दिलाई। जनतामें उफान आ गया। सभाके खत्म हो जानेपर वह जिधर जिधर गयी तोड़ फोड़की आँधी उठाती गयी। डाकघर भी नष्ट किये जाने लगे और उनके कागजातमें आग लगाई जाने लगी। लोग नोटका बण्डल पाते और उसे आगमें दे देते मानो वह कूड़ा हो। जो संयोगसे सड़कपर आ गिरता उसे लतमर्दन धूलमें मिला देता। लोग सरकारकी शक्तियोंका संहार करने निकले थे उसकी सामग्रियोंका संग्रह करने नहीं। अब सड़कें काटी जाने लगीं; रेलकी पटरियाँ उखाड़ी जाने लगीं; पुल तोड़े जाने लगे; पेड़ सड़कोंपर काट गिराये जाने लगे और जिनसे कुछ न हो सका वे कूड़ाखानाको ही दनमनाकर सड़कपर रखने लगे ताकि वह जाम हो जाय। सारी

रात तोड़ फोड़की आँधीमें जनता उड़ती रही; उसकी आँखोंसे नींद भाग गयी थी।

तेरह अगस्त आया सरकारी संस्थाओंपर ताला लगाता हुआ। स्कूल बन्द; कॉलिज बन्द अनिश्चित कालके लिये और अदालत बन्द, फौजदारी बन्द और हाई-कोर्ट बन्द दस दिनके लिये। फिर १४४ दफ़ाकी घोषणा हुई और घर भीतर रहो Curfew order का एलान कर दिया गया। पर आज जनता आजाद थी। अंगरेजी सरकारका हुक्म सुन हँस पड़ी। बेखौफ तोड़फोड़के काममें लगी रही।

पढ़े लिखे क्रान्तिका आवाहन करते हैं, क्रान्तिके दूत बनते हैं। पर क्रान्तिके सिपाही बनते हैं गली कूचेके लोग ही। सो तोड़ फोड़में क्या आगे क्या पीछे सभी जगह देखे गये पटनाके रिक्शावाले, टमटमवाले, कुली मजूरे और उनके भाई बिरादर। और उनके इर्द गिर्द त्यागका निराला वातावरण। खोंचेवाले आते हैं क्या स्त्री क्या पुरुष और काम करनेवालोंके लिये अपना खोंचा खाली कर डालते हैं, पैसे लेनेसे इनकार करते हैं। कहते हैं—एक दिनका उपवास कौन ज्यादा है? स्वराज हुआ तब खूब पैसे ले लेंगे। अंगरेजी राजका नामोनिशान मिटते देख उन्हें सुख तथा संतोष हो रहा था। सचमुच उस दिन कुछ ऐसी हवा पटनेमें बह रही थी कि अंगरेजी राज और अंगरेज ही नहीं अंगरेजी वेशभूषा भी लोगोंकी आँखका कांटा हो रहा था। क्या मजाल कि कोई हैट पहनकर उनके बीचसे निकल जाय। तो भी उनमें निर्दयता नहीं आयी थी। हाँ! प्रचण्ड घृणासे वे अवश्य ओतप्रोत हो रहे थे। इसलिये ही उनने किसीका हैट तोड़ा, टाई फाड़ी पर एक पसिञ्जर गाड़ीसे जो रेलकी पटरियोंके हट जानेसे रुक रही थी, चार अंगरेज और तीन हिन्दुस्तानी सिपाहियोंको उतारकर सुरक्षित यथा स्थान पहुँचा दिया।

आर० एस० एन० और आई० जी० एन० कम्पनी [कार कम्पनी] और बाटाके कारखानोंके मजदूरोंने हड़ताल कर दी थी और दीघाघाटसे दानापुर तक वे तोड़ फोड़की धूम मचा रहे थे। कम्पनीके जहाजोंको काठ मार गया था। बहुतोंका प्रस्ताव हुआ कि कम्पनीके कोयलोंकी ढेरमें आग लगा दी जाय ताकि न कोयला अंगरेजोंको मिले और न वे जहाज चला सकें। किसी किसीने तो चाहा कि जहाजकी मशीनरी ही बरबाद कर दें और जैसे तैसे जहाजको गंगामें डुबा दें। पर हिन्दुस्तानी विचारते हैं ज्यादा, करते हैं कम और विचारकोंके अनेक रास्ते होते हैं, एक रास्ता नहीं होता। इसलिये दीघावाले न कोयला जला सके, न जहाज डुबा सके। तोड़ फोड़वाले बेतरह चूक गये जो उनके लिये जानमारू साबित हुआ।

बच्चोंका खून तो पटना शहरमें १३ अगस्तको आग उगलने लगी। लोगोंने म्यूनिसिपल भवनमें आग लगा दी जो धू धू करके स्वाहा हो गया। फिर उनने सिटी स्टेशनपर आक्रमण किया। वे पार्सल घर और माल गोदाम सभी जगह घुस पड़े और सब जगह आग लगा दी। काठ, कपड़े, अन्न, तेल सभी जलने लगे। आँच तेजीसे बढ़ी और दूर दूर तक शोले फेंकने लगी। कुछ सामानपर भुक्खड़ टूट पड़े। नोट देखा उन्हें आगमें फेंका और खाने पीनेकी जो चीज उठा सके उठा ले गये।

ता: १३ अगस्तके दिन ढलते गोरी फौज पटने आने लगी; भिन्न भिन्न टुकड़ी भिन्न भिन्न दिशाओंसे सिटी, कदमकुंआं और मुरादपुरमें घुसने लगी।

जो टुकड़ी अगमकुंआं रोडसे गुलजारबाग आ रही थी उसने कुम्हड़ारके पास कुछ गाड़ीवानोंको देखा और उन्हें रुकनेके लिये कहा, गाड़ीवान नहीं रुके जिसपर गोरोंने उनपर गोलियाँ छोड़ीं, कईको घायल किया और रामअधीन गोप, बैरिया कनपुराकी जान लेली। लोग अब क्रोधान्ध हो गये। प्रचण्ड घृणा प्रतिहिंसामें बदलने लगी।

इधर रात भर फौज धमाचौकड़ी करती रही। स्कूल और कॉलिज और उसके छात्रावास तथा अन्यान्य सुविधेके स्थान उसके अड्डे बन गये। फिर राइफलकी गोली और संगीनकी नोकसे पटनाकी जनताका सामना करनेके लिये वह सुबहकी प्रतीक्षा करने लगी।

उधर बच्चोंका खून जिलेमें और प्रान्तमें अपना रंग ला रहा था।

१२ अगस्तको बख्तियारपुर थानेपर जनताने झंडा फहरानेका निश्चय किया। चारों ओर बरसातका पानी लगा था जिसे सत्याग्रहियोंने नावसे व तैरकर पार किया। थानेवाले भी आर्चर साहबकी तरह दृढ़ प्रतिज्ञ थे कि झंडा नहीं फहराने देंगे। उन्हें सत्याग्रहियोंने अपने अपने प्रोग्रामकी सूचना दे दी थी। इसलिये अनवारुलहक दारोगा पिस्तौल लिये चौकसीकर रहे थे और अपनी पीठपर उनने हथियारबन्द और लट्ठधर पुलिसको और चौकीदारोंको भी जुटा रखा था। पर रामबरणसिंह 'सारथि' धड़धड़ाते हुए थानेमें घुस गये और झंडा फहरानेकी चेष्टामें गिरफ्तार हो करके हवालातमें बन्दकर दिये गये। जनता बिगड़ उठी और हवालातसे उन्हें छुड़ा लेना चाहा। किन्तु पुलिसका इन्तजाम काफी था। जबतक पुलिसमें भगदड़ न मचती तबतक थानेमें जनताका घुसना सहज न था।

इसलिये जनताने थानेपर ढेले बरसाना शुरू किया। श्री नाथूप्रसाद यादव जनताको ढेले फेंकनेसे रोक रहे थे और साथ ही थानेमें घुसे जा रहे थे। अनवारूलहक़ने थानेमें दाखिल होनेसे उन्हें मना किया और उनकी ओर पिस्तौल सीधी की। पर नाथूप्रसादजी बेपरवाह बढ़ते गये और छातीमें दारोगाकी गोली लेकर शहीद हो गये।

उनकी शहादतने बख्तियारपुरमें खलबली मचा दी। जनता आवेशमें आ गयी और इतनी तादादमें थानेपर इकट्ठी हो गयी कि पुलिससे कुछ करते धरते न बना और सारथिजी हवालातसे छुड़ा लिये गये।

पुनपुनमें जब सेक्रेटेरियट गोली काण्डकी खबर पहुँची तो लोग आवेशमें आ गये। विध्वंसकी आग भड़क उठी। क्या बूढ़े, क्या बच्चे क्या जवान सभी दिन दहाड़े रेलकी पटरियां उखाड़ फेंकने लगे; पुलोंको तोड़कर गमनागमनका मार्ग बन्द करने लगे। जहां तहां तारके खंभे उखाड़ दिये गये; तार काट दिये गये। थाना डाकघर और स्टेशनमें आग लगा दी गयी। धू-धू करके जब आगकी लपटें निकलीं तब जनताकी बड़ी भीड़ लग गयी। लोग अगस्त क्रान्तिके नारे बुलन्द करने लगे और चिल्ला चिल्लाकर कहने लगे कि ब्रिटिश साम्राज्यकी चिता जल रही है। पुलिस पासही खड़ी व्यर्थ दांत पीस रही थी।

विक्रममें पटनेकी शहादतकी खबर पहुँची १२ अगस्तको। लोग अत्यन्त उत्तेजित हो गये। कुल्हाड़ी, और गंड़ासी और जिसको जो मिला सो लेकर दौड़ आये और लगे सड़क खोदने पेड़ोंको काट काट सड़क जाम करने। इनने नहर रोड खोद डाला। ताड़के खंभे उखाड़ फेंके। आस पासके चौकीदारोंने भी जनताका भरपूर साथ दिया। फिर सबोंने एक साथ आठ दस मील दूर जाकर रेल उखाड़े।

बिहटाने भी खबर सुन १२ अगस्तको और वह तुरत तोड़ फोड़में लग पड़ा। १३ अगस्तको उसने विराट प्रदर्शन किया। विद्यार्थी आगे थे। प्रदर्शनकारी बिहटा स्टेशन पहुँचे जहां गोरे चहल कदमी कर रहे थे। पुलिसका भी ठट्ठ था। पुलिसने प्रदर्शनकारियोंको स्टेशनसे निकल जानेके लिये कहा। प्रदर्शकारी अड़ गये और स्टेशनके कमरोंमें घुसने लगे। पुलिसने गोरोंकी शरण ली और प्रदर्शन-कारियोंको डरा भगानेके लिये आवाज करनेके लिये कहा। आवाजका जवाब ईंट, रोड़ोंसे मिला। फिर तो गोरे खुलकर गोली दागने लगे और सात आदमियोंको

भून डाला, जिनमें एक थे सिमरीके उमैर अली उम्र २० साल, और दूसरे गोपाल साहु उम्र १५ साल।

गोली खाकर जनता क्रोधान्ध हो उठी। उसे मरने मारनेपर उतारू देख पुलिस और गोरे हट गये। फिर तो इतने तरहके इतने लोग स्टेशनके हातेमें घुस पड़े कि शुमार व शिनाख्त करना बूतेके बाहर हो गया। लोगोंने मालगाड़ीमें आग लगा दी। कितने तो उस आगमें सामान झोंकने लगे, और कितने लूटने लगे। ८५ डब्बे लूटे गये, ४० सरकारके और ४५ पब्लिकके और सभी तरहके सामान, गेहूं, दलहन तेल, चीनी, दियासलाई, बिलायती दूध, तेलफुलेल, शराब, तबला हारमोनियम वगैरह। इस लूटको देखनेका मौका मिला था बाबू श्यामनन्दन सिंह एम० एल० ए० और अबुलहयात चांदको, जो बम्बईसे वापस लौट रहे थे। लूटके बाद बिहटाका धन भारी हो गया। लड़नेकी जगह माल पचानेकी फिक्र सरपर सवार हो गयी। जिसका बोझा इतना भारी साबित हुआ कि बादको वह कराहने लगा।

मोकामाकी उत्तेजनाने भी बिहटाका रास्ता अख्तियार किया। १३ अगस्तको मोकामा घाटके रेलवे मैदानमें काफी लोग इकट्ठे हुए। विद्यार्थी और रेलवे कर्मचारी जमात बांध कर पहुँचे। लोगोंने तय किया कि रेलवे कर्मचारी इस्तीफा दे दें, मजदूर हड़ताल कर दें और यातायात रोक दिया जाय। झुंडके झुंड विद्यार्थी स्टेशनमें घुस आये और अपने नारेसे प्लेटफार्म और रेलवे दफ्तरोंको गुंजा दिया। वे कर्मचारियोंसे बारबार कहते कि नौकरी छोड़िये पर कर्मचारी टससे मस होते न दीखते। हां कुली और मजदूरोंने उनकी बातें सुनी पर कहा कि नौकरी छोड़ देंगे तो खायंगे क्या ? हुक्म दीजिये। हम घाटके मालसे पेट भर लें फिर नौकरी छोड़ ही देंगे।

विद्यार्थियोंको यह सुझाव बड़ा पसन्द आया। मसनदियोंका माल मेहनतकश ले लें तो क्या बेजा है ? यही तो न्याय है। बस तुरत उनने कुली मजदूरोंसे कहा—तुम लोग अपने खानेपीनेकी चीज ले लो और आप सबके सब तोड़ फोड़ करने एक ओर निकल गये।

मोकामा घाटमें मजदूरों और विद्यार्थियोंके काम समानान्तर रेखामें चले और इस गतिसे और इतनी दूर कि लोग भौचक रह गये।

पर मजदूरोंकी बाढ़में हर तरहके लोग शामिल हो गये। कंगले फकीर ही नहीं बल्कि डाकू, उठाईगीर, चोर उचक्के और आस पासके सभी ठग बदमाश और

उनके दलाल मोकामाघाटके सामानपर टूट पड़े। नोचा-चोथी होने लगी। इधर उधर दरका दर अनार, नारंगी, अंगूर बिखर गये। सिगरेट और चायकी पेटियोंसे सड़क जाम हो गयी। मोकामा घाटकी पश्चिमी और पूर्वी सड़कें चीनीसे पट गयी थीं। इस तरह एक हफ्ता तक मोकामाघाट हजारों आदमियोंकी लूट खसोटका अखाड़ा बना रहा।

विद्यार्थी एकाग्र रहे। स्टेशनकी चीजोंको बरबाद करके वे टालघाट पहुंचे। वहां टेलीफोनके तार काट डाले, पेट खोल दिये और फिर स्टेशनके दफ्तरोंमें घुसकर मिसिलों और फर्नीचरको जलाना शुरूकर दिया। उनने गाड़ियोंके डब्बोंको तोड़ा और उनमें आग लगा दी, फिर इंजनके कल पुरजे बर्बाद करने लगे। इनकी हरकतोंने रेलवे कर्मचारियोंको भयभीत कर दिया और सबके सब स्टेशन छोड़ भागे। तब विद्यार्थियोंने जरा दम लिया और लूटपाटका नजारा देखा जो इन्हें नहीं रुचा। इसलिये जैसे ही व्यापारियोंने कहा कि मोकामा जंक्शनको लूटसे बचाइये, इनने बड़ी मुस्तैदीसे वहां लूट रुकवा दी। हां कांग्रेसके खर्चेके लिये २००) रु० के सामान जब्त किये। बाकी सामानको, टौमियोंके आनेपर पुलिसने अपने हिफाजतमें ले लिया।

मोकामा घाटसे तोड़ फोड़का दल टाल तो बरहपुरमें मिला और तय किया कि तुरत पूरब और पश्चिमके रेल पथको नष्ट कर देना चाहिये। फिर उसी रोज यानी १३ अगस्तको मोरका पुल तोड़ दिया गया और पुलके दोनों ओर खतरेका पटाखा (*Fog Signal*) *लगा दिया गया, जिससे पञ्जाब मेलकी इञ्जन रुकते रुकते* पुलमें गिर गयी पर कोई नुकसान नहीं हुआ।

१२ अगस्तको विद्यार्थियों तथा जनताका संयुक्त मोरचा डाकघर और रेलवे शाहाबाद स्टेशनपर धावा करने चला। श्री प्रद्युम्न मिश्र ११ अगस्तको ही गिरफ्तार हो चुके थे और शहरमें कोई दूसरा प्रभावशाली कार्यकर्त्ता न रह गया था इसलिये धावेका रूप कुछ लूटपाट जैसा हो गया। गांगीके पुलके पासकी सड़कको गोरे साफ कर रहे थे। तमाशबीनोंकी भीड़ लग गयी। बेतरह नारे लगने लगे। गोरे पाजामेसे बाहर हो गये। गोली चला दी। एक बूढ़ा मरा और एक बुढ़ियाकी भी जान गयी।

१३ अगस्तको बिहियामें दिन दोपहरको रेलगाड़ी रोक दी गयी। सड़क तार तोड़ दो, रेलकी पटरी उखाड़ दोके नारे लगने लगे। बाजारवालोंकी भीड़ जुट

गयी। गाड़ीमें गोरे जा रहे थे। उनने राइफिल दिखा दिखाकर जनताको धमकाना शुरू किया। फिर तो उनपर ढेले बरसने लगे। जवाबमें उनने गोली बरसायी जिससे तीन जानें गयीं और कई घायल हुए।

१२ अगस्तसे बक्सरने भी तोड़ फोड़ शुरू किया। लोगोंने डाकघरके कागज जलाये और स्टेशन तथा थानोंपर हमला करना और उनकी मिसिलें जलाना उनका प्रोग्राम बन गया।

बक्सर

फिर जनताकी भीड़ कचहरी थाने तथा अन्य सरकारी इमारतोंकी तरफ चली। संख्या थी उसकी लगभग चार हजार, झंडे फहरानेके बाद जनताने कचहरीसे मजिस्ट्रेट और डिप्टी मजिस्ट्रेटको निकाल बाहर किया, उनको अपने साथ ले लिया और जहां-जहां गयी उनसे कांग्रेसी नारे लगवाती गयी। १२ अगस्तको ही ब्रह्मपुर थानेपर कांग्रेसी झंडा फहराया गया। थानेके कागजात जलाये गये। भीड़की पुलिससे मुठभेड़ भी हुई। दो-तीन सौकी भीड़ने जब तीन-तीन बार हमले किये, तब थानेमें घुस पायी। वह पुलिसको पीटकर थाना जला देनेके लिए तैयार थी लेकिन श्री ईश्वरलाल सिंहके मना करनेपर रुक गयी।

गया

गयामें फौजोंकी छावनी सुरसा जैसी बढ़ रही थी। कितने गांव इसके पेटमें हजम हो गये थे। इस की सड़कोंपर गोरे काले फौजियोंकी आवारा-गरदी हुड़दंग मचा रही थी। ऐसी परिस्थितिमें सरकारके खिलाफ गया शहरका सर उठाना लोहेका चना चबाना था। पर पटनाके गोली काण्डने जनताको इतना बेचैन कर दिया कि वह चुप और बैठी न रह सकी। १३ अगस्तको गया कॉटन मिल्सके पास उसकी एक बहुत बड़ी जमात इकट्ठी हुई और विशाल जलूसके रूपमें शहरकी ओर बढ़ी। अंगरेजी सरकार जनताके ऐसे रंग रवैयाको भला कैसे बरदाश्त कर सकती थी। उसकी कोतवालीमें बन्दूकचियोंका जमघट लग गया। जहां तहां संगीनें ३ बजेकी धूपमें चमकने लगीं। लट्ठबाज पुलिसने रास्ता रोक रखा।

जलूसमें मजदूरोंकी भरमार थी। मशीन जैसी बोली, मशीन जैसी चाल। वे धड़धड़ाते हुए शहरमें आ धमके। उनके कपड़े और चेहरेको शोषणने बदरंग कर रखा था पर उनकी अकड़ और आवाजमें क्रान्तिकी बुलन्दी थी। तमाशाइयोंकी भीड़ लग गयी। शहरकी दुकानें बन्द हो गयीं। जब जलूस धामी टोला पहुंचा तब पुलिसने रोका और जलूसके न रुकनेपर लोगोंको बेरहमीसे लठियाना शुरू किया। लोग मार सहते रहे नारे लगाते रहे पर तमाशाई पुलिसकी बढ़ती

बेरहगी देख न सके। उनने ढलेसे लाठीका जवाब दिया। फिर क्या था। अंधा चाहे दो आंख। मजिस्टर, सुपरिन्टेन्डेन्ट, सर्जेन्ट सभी गोली दागने लगे। श्री जगन्नाथमिश्र तो तत्काल शहीद हो गये। धामी टोलाके श्री कैलाशराम तथा नयी गोदामके श्री भुंईरामको शहादत मिली अस्पताल पहुंच कर।

घायल हुए नौ जो सेन्ट्रल जेल पहुंचाये गये, उनमें एक था तारकेश्वर प्रसाद ग्यारह सालका।

श्रीजगन्नाथ मिश्रकी अर्थी धूम धामसे निकली और क्रान्तिकारी नारोंके बीच उनका अग्नि संस्कार हुआ। अधिकारियोंको महसूस हुआ कि उनका गोली चलाना खूने नाहक हो गया। अतः जब श्री कैलाशराम और श्री भुंईरामकी लाशोंको अस्पतालसे लोगोंने लेना चाहा तब कलक्टर साहबने देनेसे इनकार कर दिया, इसपर शहरके कई प्रतिष्ठित सज्जन तथा कांग्रेसके प्रमुख कार्यकर्ता जिला मजिस्ट्रेटसे मिले और समझाया कि लाश नहीं देनेसे भयकंर प्रतिक्रिया होगी। अंतमें जिलाधीश इस शर्त्तपर जनताको लाश सौंपनेको तैयार हुआ कि लाशें फौजी लारियोंपर गोरी पलटनोंके बीच ले जायी जायंगी और साथमें मृत्तकके रिश्तेदार भी जाने पावेंगे। ऐसा ही हुआ। हाँ, गोरोंकी ही लौरियोंपर अग्नि संस्कारका इन्तजाम करनेके लिये श्री मथुरानाथ तिवारी और गया खादी भंडारके श्री रामेश्वर प्रसादको जाने दिया गया। गोरोंसे ठसाठस भरी चार लारियां आगे और चार पीछे और बीचमें गोरोंकी ही दो लौरियोंपर दोनों लाशें। और गोरी पलटनके प्रदर्शनके बावजूद जनता की उमड़ती हुई अपार भीड़ वीर शहीदोंकी जयजयकार करती हुई और "इन्कलाब जिन्दाबाद, अंग्रेज भारत छोड़ दो" के नारे बुलंद करती हुई! अभूतपूर्व दृश्य था।

इस गोलीकाण्डने गयावालोंको अत्यन्त उत्तेजित कर दिया और उनने अपनी सारी कूवत तोड़ फोड़में लगा दी।

सदर सबडिविजनमें भी तोड़ फोड़ने जोर पकड़ा १२ अगस्तसे ही।

गोगरीने १२ अगस्तको महेशखूंट स्टेशन तहस नहस कर दिया। रेल तार

मुङ्गेर तोड़ ताड़ दिया। १३ अगस्तको लोग जुलूस लेकर थानेपर चढ़ आये और झंडा फहराया। जलूसके बल तथा व्यवस्थाको पुलिससे कुछ करते न बना। उसने तीन स्वंयसेवकोंको गिरफ्तार करके सन्तोष किया पर उन्हें भी मानसी स्टेशनपर जनताने उनके हाथसे छीन लिया।

खगड़ियाने १२ अगस्तको सभी सरकारी संस्थाओंपर धावा किया। स्टेशनको लूटा और उसके कागजात जलाये। फिर माल गोदाम और डाकघरको लूटकर जला दिया। दूसरे दिन यानी १३ अगस्तको सैकड़ों हथियारबन्द सिपाहीके साथ एस० पी०, एस० डी० ओ० और सर्जेन्ट मेजर आगये और कड़ा रुख दिखलाने लगे।

आन्दोलनकी कार्यवाईमें लूटपाटके शामिल हो जाने और सरकारके हथियार-बन्दोंका पैंतरा देख जनताके आतंकित हो जानेने स्वर्गीय बाबू नेमधारी सिंह जैसे कांग्रेसवादियोंको चिन्तित कर दिया। उनके निवास स्थानपर सभी कार्यकर्ता मिले और तय किया कि अभी गांवोंमें प्रचार किया जाय और तब जनताको अनु-शासनमें रखते हुए आन्दोलनका प्रोग्राम अमलमें लाया जाय।

ऐसे समय आगे बढ़े भादर निवासी प्रभुनारायण सिंह, काशी विद्यापीठके छात्र जो उसी दिन बनारससे खगड़िया पहुंचे थे। वे छात्र थे इसलिये छात्रोंकी शहादतकी पुकार सुन रहे थे गंगा पारसे। वे संसारपुर गये और आस पासके टोले टप्परमें भी घूमे और घूम घूम कर स्वयंसेवकोंका एक जत्था तैयार किया, झंडा लिया और प्रोग्राम बनाया जलूस निकालनेका। छोटे बड़े बहुतोंने मना किया किन्तु मनाही इस कानसे घुसी और उस कानसे निकल गयी। हृदयमें बस न सकी, जहां शहीद साथियोंकी पुकार गूँज रही थी। उनने कहा—डर काहेका? जलूस शान्तिसे निकलेगा और थानाके पासकी सड़क होकर कांग्रेसके हाते तक जायगा, बस। जलूस जब थानाके निकट पहुँचा तब अफसरोंने रास्ता काटा। एस० पी० बोला तुमलोग डाकू हो; भाग जाओ, नहीं तो गोली खाओगे। प्रभुनारायण बोले कि हमलोग स्वयंसेवक हैं, सत्याग्रही हैं; शान्त रहेंगे; कांग्रेसभवन तक ही जायंगे। और वे आगे बढ़े। एस० पी० झपट उठा—पीछे हटो; नहीं हटे तो मार डालेंगे। प्रभुनारायणने कहा—हम चुपचाप रहेंगे, हमको जाने दीजिये। जब निकल पड़े हैं तो पीछे पैर न देंगे। उनने डेग उठाई। कई कंठ कड़क उठे—खबरदार! सुना और देखा राइफल तनी हुई, पिस्तौल सीधी हुई। प्रभुनारायणने झंडा ऊँचा किया और नारे लगाये—'इन्कलाब जिन्दाबाद', 'करेंगे या मरेंगे', और आगे डेग उठायी। फटाफटकी आवाज हुई और एक गोली प्रभुनारायणकी छातीमें और दूसरी नाभिमें। झंडा संभालते हुए प्रभुनारायण मादरे हिन्दकी गोदमें गिरे। एक पहलवानको भी गोली लगी जो अपना एक पैर गंवाए प्रभुनारायणकी आत्माहुतिकी कहानी कहनेके लिये बच रहा है।

खुटियाकी जनता भी १२ अगस्तसे तोड़-फोड़के काममें खूब जुट गयी। उनने मानसी स्टेशनको लूटकर जला दिया, डाकघरको फूँक दिया और रेल तार बरबाद करने लगे। दूसरे दिन यानी १३ अगस्तको खुटिया बाजार, मानसी स्टेशनमें, जलूस निकला। विद्यार्थी और किसानोंका यह जलूस नारे लगाता हुआ झंडे उड़ाता हुआ जब बाजारसे निकला तब बनिया बक्काल और उनके लड़के उसमें शामिल हो गये। उसका रूप काफी बड़ा हो गया। जो अगुआ थे जानते थे कि गोरे सिपाही आ रहे हैं जिनके पासके टॉर्टे निहत्थोंकी खोपड़ी चूर-चूर करनेके लिये उड़नेको तैयार रहते हैं। किन्तु वे शान्त थे, बिलकुल निरस्त्र थे और पटनेके शहीदोंको सम्मान देने चले थे। टॉर्टेसे डरना तो पाप था। बाजारको पार करते हुए जलूस स्टेशनकी ओर बढ़ा ही था कि टॉर्टेसे टक्कर लग गयी। माधवसिंह तत्काल शहीद हुआ, बारह-बरसका बच्चा अपर प्राइमरी स्कूलका और शहीद हुए धानाप्रसाद वर्मा खगड़िया अस्पताल आकर।

बेगूसरायने १२ अगस्तको तार काटे और रेलकी पटरियां उखाड़ीं। १३ अगस्तको कचहरी बन्द रही। वकीलोंने एक पखवाड़ा कचहरी नहीं जानेका निश्चय किया। फिर तीन ऑनरेरी मजिस्ट्रेटोंने अपने पदसे इस्तीफा दिया।

१२ अगस्तको क्रान्तिकी आग भड़की गोपालपुर थानेके नौगछियामें। छात्रों और कांग्रेस कार्यकर्ताओंकी संघटित भीड़ राजेन्द्र आश्रमकी, और बढ़ी, जिसे पुलिसने भागलपुर कब्जा कर लिया था। भीड़ने पुलिसका ताला तोड़ दिया और राजेन्द्र आश्रमको अपने कब्जेमें कर लिया। फिर उसने स्टेशनपर धावा किया। स्टेशनकी चीजें बरबाद कर दी गयीं, उसे जला दिया गया।

स्टेशनपर देशी फौजकी एक छोटी टुकड़ी थी। भीड़ने उसके हथियार ले लेना चाहा। पर सिपाही राइफल लेकर खड़े हो गये और भीड़पर निशाना साधने लगे। सिपाहियोंको आतंकित करनेके लिये भीड़ रोड़े चलाने लगी, जिसके जवाबमें सिपाहियोंने गोलीकी झड़ी लगा दी। श्री भुवनेश्वरप्रसाद मण्डल घायल हुए और मैट्रिकके एक छात्र मुंशीसाहूको गोलीका इतना सख्त घाव लगा कि भागलपुर सिटी अस्पताल लाना पड़ा। भीड़ तितर बितर हो गयी।

नौगछिया गोलीकाण्डने जनताको अत्यन्त उत्तेजित कर दिया। हजारोंकी संख्यामें लोग स्टेशन पहुँचे और पांच सिपाहियोंको घेर लिया। सिपाही डर गये और सहज ही उनसे पांच राइफलें लेली गयीं।

१३ अगस्तको सुप्रसिद्ध सियारामसिंह सदल बल निकले और सुलतानगंज थानामें प्रवेश किया। पुलिसने उनके सामने माथा टेक दिया। फिर क्या था। सुलतानगंज थानेपर कांग्रेसका कब्जा हो गया और उसपर कांग्रेसका झंडा फहराने लगा।

१३ अगस्तको ही इसी तरह कहलगांव थानेपर कांग्रेसजनोंका लम्बा जुलूस चढ़ गया और उसे कब्जेमें करके उसपर कांग्रेसका झंडा फहरा दिया। कहलगांवने तोड़ फोड़में अच्छा नाम पैदा किया था। रेलवे स्टेशन और तारघरके सामान नष्ट किये और म्यूनिसिपैलिटीके कागजात फूंक डाले। उसने अड़गड़ा (फाटक-Cattle pond) खोल दिया मवेशियोंको भगा दिया; शराब वगैरहकी दूकानें बरबाद कर दी और स्टेशनके पासकी रेलवे लाइन उखाड़ फेंकी।

सनौहला और घोघाकी कार्रवाई भी ऐसी ही रही।

मधेपुरामें कांग्रेस क्रान्तिकी लहर पहुँची ता० ११ को ही जो सारे सबडिविजनमें फैल गयी। इस लहरमें पड़कर उस सबडिविजन भरकी जनताने अगस्त क्रांन्तिका अपना अलग ही इतिहास तैयार किया। १३ अगस्तके मधेपुराके बनगांव थानाने जिस उग्रतासे आन्दोलन वहां चलनेवाला था, उसका प्रथम परिचय दिया। थानेमें बरियाही नामका स्थान है जहां एक मेम रहती थी। उसके रेडियोसे ही वहां थानेवालोंको बम्बईकी खबर मिली थी। मेमने स्वभावत: सरकारका साथ देना अपना फर्ज समझा। उसने दारोगाको उकसाया कि सैफाबाद कैम्पको जो बनगांवसे सटा हुआ ही है, जब्त कर लो। दारोगा उस दिन आया और कैम्पके सारे चरखा वगैरह सामानको लाद कर थाने ले गया। फिर वह सहरसा चला गया। कार्यकर्ताओंको सामानकी जब्ती अखरी। वे थानेपर चढ़ दौड़े। जमादारने कहा कि दारोगाजीके आने तक ठहरिये। कार्यकर्ता रुक गये पर जब देर तक दरोगा नहीं आया तब स्वंयसेवकोंने थानेको कांग्रेसके कब्जेमें कर लिया और जमादारको कांग्रेसकी सभी चीजें हाजिर करनेका हुक्म दिया। जमादार हाथ बांधे सारा हुकम बजाता रहा। पर जब स्वंयसेवक थानेके मकान और मैदानमें झंडे गाड़ अपने कैम्पको चले गये तब जमादार थानेके कुछ कागज वगैरह बरबाद कर मधेपुरा बिदा हुआ फरियाद करने कि कांग्रेसवालोंने थाना लूट लिया। ता० १३ अगस्तको मधेपुराकी जनताने हर सरकारी मकानपर राष्ट्रीय झंडे फहराये। थाना डाकघर और रजिस्ट्री ऑफिस ही नहीं बल्कि अदालत और फौजदारी भी राष्ट्रीय

निशानसे सजे नजर आये। एस० डी० ओ० और दूसरे दूसरे सरकारी अफसर मौजूद थे। उनने अपना विरोध प्रकट किया पर बाधा नहीं दे सके। उसी दिन किशनगंजने भी थानेपर झंडा फहराया और फिर तो सबडिविजन भरके थाने इनका अनुकरण करने लगे।

सुपौल सबडिविजनमें आगे बढ़ा सुपौल थाना। १२ अगस्तको पुलिसने कांग्रेस आफिसको जब्त किया। जब्तीके वक्त कुछ कार्यकर्त्ताओंने कहा कि हमें पुलिसको आफिससे निकाल बाहर करना चाहिये। पर प्रोग्राम मालूम न था। इसलिये मुखियोंने धीरजसे ही काम लेनेको कहा। आफिस जब्तकर पुलिस हातेमें आई और वहां सामने जो झंडा फहरा रहा था उसे उतारनेको आगे बढ़ी। तब कार्यकर्त्ताओंसे धीरज न धरा गया। शिवनारायण मिश्र और चन्द्रकिशोर पाठक झंडा चौकपर कूद चढ़े; हाथोंमें रस्सी थाम बोले—प्राण रहते हम झंडा नहीं छोड़ेंगे। पुलिस तनी पर स्वयंसेवक अडिग, लौह-स्तम्भ सरीखे खड़े रहे। अन्तमें पुलिस वहांसे चुपचाप रवाना हो गयी।

बांका सबडिविजनमें अमरपुर कांग्रेस जब्त हुआ १२ अगस्तको। पुलिसने अपना ताला लगाकर कांग्रेस आफिसको सीलकर दिया था। १३ अगस्तको कांग्रेस सैनिकोंकी एक टोली आई जिसने हथौड़ेकी चोटसे पुलिसका ताला तोड़ दिया और कांग्रेस आफिसको फिर अपने कब्जेमें लाकर उसपर अपना झंडा फहरा दिया। टोलीके नायक थे थाना कांग्रेस कमिटीके मंत्री।

बांका थाना कांग्रेसने १३ अगस्तको फौजदारी, दीवानी, रजिष्ट्री और पोस्ट आफिसपर झंडे फहराये जिस मौकेपर सर्वेश्वर सिंह और लक्ष्मीकान्त प्रसादकी सर्वप्रथम गिरफ्तारी हुई। इस तारीखको बेलहर थानेके विद्यार्थियोंने अमरपुरके विद्यार्थियोंकी मदद पाकर बेलहर थानामें अपना ताला लगा दिया।

१२ अगस्तको सुबहमें श्रीबैद्यनाथ चौधरी कुरसेला पहुंचे और जगह ब जगह सभा करने लगे। चौधरीजी ढिंढोरा पिटवाकर लोगोंको सभा निमंत्रण देते और

पूर्णियां

सभामें अपने प्रोग्रामका एलान कर दिया करते। १६ आदेशवाला सर्कूलर समझाते हुए वह जोरदार शब्दोंमें जनतासे अपील करते कि सरकारको हर तरहका टैक्स देना बन्द कर दो और रेलकी पटरी उखाड़कर फेंक दो।

ता० १३ से जिले भरमें तोड़ फोड़ होने लगा। और कटिहारके जीवनमें तो ज्वार आगया। स्कूलके लड़कोंने हड़ताल की और जूट मिलपर टूट पड़े। कुछ देर

लगी पर मजदूरोंसे हड़ताल करवानेमें वे कामयाब हो सके। फिर तो हड़तालियोंकी कोई गिनती नहीं रही। लम्बा जलूस बना जिसके नारोंकी बुलन्दी सुन सुन सरकारी अमलोंमें हृद्कम्प होने लगा। जलूसने रजिष्ट्री आफिस जलाया जिस मौकेपर पुलिसने कुछ लोगोंको गिरफ्तार कर लिया। भीड़ने उन्हें छुड़ाना चाहा पर पुलिस हट गयी और उन्हें थाना ले आई। भीड़ उनका पीछा करती हुई थाना पहुंची और इधर उन्हें छोड़ देनेके लिये नारा लगाने लगी, उधर कुछ लोग थानेमें झंडा फहरानेकी सरतोड़ कोशिश करने लगे। थानाके चारों ओर बांसका घेरा था जो जोशीली भीड़के दबावसे टूटने लगा और लोग थानेमें धंसने लगे। पुलिस उन्हें लाठीके सहारे पीछे धकेलने लगी। इस सिलसिलेमें बहुतोंको चोट लगी और वे उत्तेजित हो गये और थानेपर ढेला फेंकने लगे। थानेकी हिफाजतमें मुस्तैद जो सिपाही थे उनने खाली आवाज करके भीड़को भगाना चाहा और काफी लोग कचहरीकी ओर लपके। वहां भी झंडा फहराया जाता इसलिये भीड़ उधरको छुटी थी। परन्तु तुरत गोलियां चलने लगीं। भागती हुई जनताको भी हथियार बन्द पुलिस खदेड़ने लगी और तब तक गोली दागती रही जब तक एक भी सामने सड़कपर दीख पड़ा।

अनेक हताहत हुए जिनमें एक थे अतुल मिस्त्री और दूसरे श्री जगन्नाथ कुण्डु, तेरह बरसके बालक सुप्रसिद्ध ध्रुव, सुपुत्र श्री किशोरी लाल कुण्डु। मिस्त्रीजी तो तत्काल ही शहीद हो गये थे पर ध्रुवको जो थानेका हाता पार कर सड़कसे कचहरी दौड़ा जा रहा था, गोली लगी जांघमें। वह बुरी तरह घायल हो गया और पूर्णिया अस्पताल लाया गया।

दरभंगा जिलेके समस्तीपुर सबडिविजनमें तोड़ फोड़ शुरू हुआ। वहां चीनी गोदाम और रेलवे कारखानेसे कामके लायक कल पुरजे नहीं मिले बल्कि मजदूरों

दरभंगा

की भी मदद मिली जिससे तोड़ फोड़का खूब काम हुआ। १२ अगस्तको जनताने कचहरी घेर ली और सबोंसे उसे खाली कर देनेकी अपील करने लगी। पुलिसने उन्हें वहांसे हट जानेके लिये कहा पर हटते न देख लाठी चार्ज किया। कितने घायल हुए। १६ अगस्तको कचहरीपर विद्यार्थियोंका धावा हुआ। पुलिसका कड़ा पहरा था। तो भी विद्यार्थी श्री चन्द्रप्रकाश छतपर फांद गया और कचहरीपर झंडा फहराने लगा। क्रोधातुर पुलिसने दो सौसे ज्यादा विद्यार्थियोंको हिरासतमें ले लिया। पर कुछ घंटोंके बाद सबके सब छोड़ दिये गये।

मधुबनीने भी १२ अगस्तसे तोड़ फोड़के काममें हाथ डाला। बेनीपट्टी और खजौली उसके प्रधान अड्डे रहे। मकरमपुर निवासी श्री यमुना सिंहने सर्व प्रथम तार काटकर तोड़ फोड़का श्रीगणेश किया। खजौलीने इसका क्षेत्र बढ़ाया। ठाहरमें रेलवे पुल तोड़ा गया, रेलकी पटरी उखाड़ी गयी। बराढ़में डिस्ट्रिक्ट बोर्डका पुल तोड़ा गया। कलुआहीका पुल जब तोड़ा जा रहा था तब जयनगरसे लौटते हुए एस० डी० ओ० साहब वहाँ पहुँचे। लोगोंने उनकी मोटर तोड़ दी। पर एस० डी० ओ० के शरीरको आंच नहीं पहुंची। उनके ड्राइवरको तो लोगोंने यत्नसे खिलाया पिलाया। पर १३ अगस्तने अपनी गरमी दिखालायी जयनगरमें। यहां शुरूसे ही जनतामें उत्साह रहा जो दिन दूना रात चौगुना बढ़ता गया। १२ अगस्तको बाजारवालों और विद्यार्थियोंने शहर भरमें धूम धामसे प्रदर्शन किया। जब वे थानेके पास पहुंचे तब पुलिसवालोंने उनपर लाठी चार्ज किया। बड़ी सनसनी फैली। १३ अगस्तको पण्डौल, मधुबनी और राजनगरके विद्यार्थी वहां इकट्ठे हुए और बहुत बड़ा जलूस लेकर थाना पहुंचे। वे थानेपर झंडा फहराना चाहते थे पर पुलिस मानती न थी। इसलिये दोनों ओरसे कुछ धक्कम धक्का हुआ जिसे देख दारोगा डर गया और उसने पिस्तौल चलायी। गोली रामलखन यादवकी बांहको छेदती हुई नथुनी साह नामके लड़केकी छातीमें घुस गई जो तत्काल शहीद हो गया।

उसकी लाशको पुलिसवाले घसीट कर थानेमेंले गये और बार बार मांगनेपर भी जनताको नहीं दिया। इसे जनता बर्दाश्त न कर सकी। प्राणोंपर खेल थानेमें घुस पड़ी और लाशको पुलिससे छीन लिया। फिर तो बाजे गाजेके बीच शहीदकी अर्थी उठी। उसका दाह संस्कार हुआ और संस्कार भूमिपर तिरंगा झंडा गाड़ दिया गया, जो जब तक जनता राज रहा लहराता रहा।

हाजीपुर सब डिविजनमें चक सिकन्दर रेलवे स्टेशन है। उसके दोनों ओरकी रेलवे लाइनें हटा दी गयीं। बिदूपुरसे गाड़ी जब इस तरफ बढ़ने लगी तब लोगोंने ड्राइवरको **मुजफ्फरपुर** लाख समझाया कि आगे मत बढ़ो, लाइन नहीं है पर उसके दिमागमें कुछ धंसा नहीं। वह गाड़ी बढ़ाता ही आया, और नतीजा यह हुआ कि इंजन जमीनमें बेतरह गड़ गयी, डब्बोंको बेतरह धक्का लगा, एक आदमीकी जान गयी। १३ अगस्तसे तोड़ फोड़का बाजार गर्म हो गया। मुजफ्फरपुर जानेवाली लाइन उखाड़ी जाने लगी। पुल तोड़े जाने लगे और सड़कें काटी जाने लगीं, तार तो बात बातमें हवा हो गया। फिर तो हाजीपुरका यातायात बिलकुल बन्द हो गया।

सदरका भी ऐसा ही हाल था। सिलौत स्टेशनपर १३ अगस्तको हमला हुआ। स्टेशनके काफी सामान नुकसान हुए। एक भरी हुई माल गाड़ी रोक दी गयी, जिसके कई डब्बोंको नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया। कांटी और उसके आसपास भी १३ अगस्तसे तोड़ फोड़ शुरू हुआ। उस दिन लोग स्टेशनमें घुस गए, कागजात जलाये और कल पुर्जे बर्बाद किये। एक पसिञ्जर गाड़ी जो खड़ी थी बुरी तरह तोड़ फोड़के चपेटमें पड़ गयी। उसकी इञ्जिन बेकार बना दी गयी और उसका ब्रेक बरबाद कर दिया गया। फलतः गाड़ी अरसे तक वहां ठठरीके रूपमें पड़ी रही।

पारू थानेने १० अगस्तको ही विराट प्रदर्शनकी समाप्ति की तोड़ फोड़का श्रीगणेश करके। उसने स्थानीय पुल तोड़ा, तार काटे और पासकी रेलकी पटरियां भी उखाड़ फेंकीं। डाकघरपर झंडे फहराये और कितनी जगह डाकघरोंके कागज भी जला दिये।

सीतामढ़ी भी जिलेके साथ ही अपना पैर बढ़ा रहा था। १२ अगस्तको जबरदस्त पिकेटिङ्ग करके सीतामढ़ीके विद्यार्थियोंने सीतामढ़ी और सीतामढ़ी कोर्टके स्कूलोंको अनिश्चित कालके लिये बन्द करवा दिया। फिर रेलगाड़ीपर कब्जा कर लिया।

पुपरीने थानेपर झंडा फहराया।

१३ अगस्त तक चम्पारन भी उत्तेजित हो उठा था। घोड़ासाहनके विद्यार्थियोंने स्कूल बन्द किया और जनताके साथ मिलकर थाना बन्द किया। उनने स्थानीय ईसाई

चम्पारन

मिशनपर भी झंडा फहराया। कुछ लोग पादरीके मकानमें घुस गए। शीशे तोड़ डाले और फरनीचर भी। एक लड़केने ५००) की थैली भी उठा ली थी लेकिन उसपर आंख पड़ते ही लोगोंने थैली उससे ले ली और पादरी साहबको लौटा दी।

आदापुरने थानेपर शान्ति पूर्वक झंडा फहराया। फिर वहां डाकघर, आबकारी, रेलवे स्टेशन और राज कचहरीपर झंडे फहराये गये। रेलवे स्टेशनको नुकसानी भी पहुँचायी गयी। वहां डैनबी स्टेटके मैनेजरका सामान पड़ा था जिसमें आग लगा दी गयी। राज कचहरीके कागजात भी जला दिये गये।

तिहुत डिविजनमें सारन तोड़ फोड़में आगे दीख पड़ा। पर १३ अगस्त तक सारन मुख्यतः प्रदर्शन करता रहा। सदर सबडिविजनके सोनपुरने १३ अगस्तको रजिस्ट्री

सारन

ऑफिसपर झंडा फहराया और रजिस्ट्रारको तीन महीनेकी सवैतनिक छुट्टी देकर ऑफिसमें कांग्रेसी ताला लगा दिया। डाकघरपर भी उसने इसी तरह

कब्जा किया। पुलिसने तिरंगा झंडा उठा लिया और वह अगस्त क्रान्तिका हृदयसे स्वागत करती हुई जुलूसमें शामिल हुई।

लोग तब स्टेशन पहुँचे जहांके औफिस इञ्चार्जने सबोंके हाथमें अपनेको दे दिया। प्रदर्शनकारियोंने औफिसपर झंडा फहरा दिया।

दिघवाराने १२ अगस्तको शानदार जुलूस निकाला। अनेक स्त्रियां अगुवाई कर रही थीं। जुलूस थाना तक गया। थानेमें फौज मुस्तैद थी और एक डिप्टी मजिस्ट्रेट। भारतीय नारीका उत्साह देख पहले तो ये सभी कांपे पर शीघ्र भारतीयताका अभिमान इन्हें उकसाने लगा और ये सबके सब झंडे हाथमें लेकर जुलूसमें शामिल हो गये। जनता सौ सौ बांस कूदने लगी और अपूर्व समारोहके साथ थानेको जनताने अपने अधिकारमें कर लिया। १३ अगस्तको थानेके सभी सम्मान पूर्वक बिदा कर दिये गये और वहां स्वराजी ताला लगा।

फिर लोग तोड़ फोड़में लगे। रेलवे लाइन उखाड़ फेंके। तार काट डाले और स्टेशनको फूंक दिया। भीड़ उत्तेजित थी। एक एक स्टेशनके समानको चुन कर बरबाद कर रही थी, जला रही थी पर जैसे ही उसके हाथमें थली आयी उसने तुरत उसको स्टेशन मास्टरके हवाले कर दिया। स्टेशन मास्टर और दूसरे दूसरे कर्मचारीके साथ वह बड़ी सज्जनताके साथ पेश आई जिसे वे सब कभी भूल न सके। पर १३ अगस्तने सिवानमें खूनका फाग खेला। पिछले दिन यानी १२ अगस्तको विद्यार्थियोंने जलूस निकाला था, थानापर झंडा फहराया था और वहांसे चलकर दिवानी और फौजदारी कचहरियोंपर भी झंडे फहराये थे। फिर वे श्रद्धानन्द बाजारकी सभामें शामिल हुए थे जिसमें कांग्रेसका प्रोग्राम पढ़कर सुनाया गया और समझाया गया था। आज सुबहको मालूम हुआ कि कचहरीपरके झंडोंको उतार दिया गया है। सुनकर विद्यार्थी समाज क्षुब्ध हुआ और उसने फिर जुलूस निकाला। १३ अगस्तको बजारका दिन था। इसलिये जलूसके साथ एक बड़ी भीड़ लग गयी। शहरकी प्रमुख सड़कोंसे होते हुए सभी कचहरी पहुँचे। तादाद दस हजारकी होगी। फौजदारी कचहरीपर झंडा फहराता न देख नारा लगा—झंडा हमारा लौटा दो। एक अफसरने तुरत झंडा लौटा दिया तब विद्यार्थियोंने उसे फिर फौजदारी कचहरीपर फहराना चाहा। उसी समय एस० डी० ओ० सामने आये। विद्यार्थियोंने नारा लगाया एस० डी० ओ० हमारे नेता हैं। एस० डी० ओ० ने कहा अगर हम आपके नेता हैं तो हमारे साथ आइये। सभी एस० डी० ओ० के साथ फौजदारी कचहरीको छोड़कर दिवानी कचहरीके मैदानमें जा पहुँचे।

लोगोंने दिवानीपर फिरसे झंडा फहराया और प्रार्थनाके लिये अपनेको सजने लगे। एस० डी० ओ० ने कहा आप लोग हमारे साथ आइये और उस जगहसे प्रार्थना कीजिये। पर उस जगहसे झंडा दीख नहीं पड़ता था। इसलिये जनताने इसबार अपने नेताके पीछे चलनेसे इनकार कर दिया और वहीं झंडा प्रार्थना गाई।

पर एस० डी० ओ० धीर नेता थे। असंतुष्ट नहीं हुए बोले—आप लोग मैदानसे अब जाइये। इसी बीच हथियार बन्द सिपाही आगये। लोग भी तितर बितर हो गये किन्तु विद्यार्थी मैदानमें डटे रहे। इसपर नेता साहब बौखला उठे; लाठी चार्जका हुक्म दिया और खुद भी डंडा चलाने लगे। सात लड़कोंको उनने गिरफ्तार भी किया।

इस हन्टर बाजीके खिलाफ शामको सरायमें सभा हुई। एस० डी० मिश्र हथियार बन्दोंके साथ पहुंचे और लोगोंसे कहा,—सरायसे निकल जाओ। पर जनता टससे मस न हुई। तब उनने लाठी चार्जका हुक्म दिया। फिर क्या था? लोग लोहू-लुहान होने लगे। ऐसा कि सरायके बाहर जो जनता खड़ी थी उससे देखा नहीं गया। वह पुलिसपर रोड़े चलाने लगी। तत्काल श्री मिश्रने फायरिंगका आर्डर दिया। धुंआधार गोली चलने लगी। १५२ हताहत हुए। छट्ठू गिरजी, दाउदपुर और झगड़ू चमार, सिवान घटनास्थलपर ही शहीद हुए और श्री बच्चन प्रसाद, ७वीं श्रेणी डी० ए० बी० हाईस्कूल और बाबूराम पाण्डेय मादा, अस्पतालमें जाकर—डा० सरयूप्रसादको इतनी चोट लगी कि दस दिन तक खाटपर पड़े रहे।

गोपालगंज सबडिविजनका मीरगंज तोड़ फोड़में वहां आगे रहा। विद्यार्थियोंमें बड़ी हलचल रही। हथुआ हाईकोर्ट स्कूलपर कांग्रेसका झंडा लहरा रहा था और उसके लड़के क्रान्ति जगाते घूम रहे थे। १२ अगस्तको स्कूलके अधिकारियोंने झंडा उतार फेंका। खबर पाते ही लड़कोंमें बड़ी सनसनी फैली। १३ अगस्तको एक हजारके लगभग छात्रोंका धावा स्कूलपर हुआ। उद्देश्य था फिर झंडा फहराना। पर अधिकारियोंका रुख देख लड़के उत्तेजित हो उठे। स्कूलमें घुस गये। फोटो तोड़ फोड़ डाले और अन्यान्य सामानको भी नष्ट किया। मिडिल स्कूलको तो नुकसान पहुंचा चुके थे। सो अब सब डाकखानेकी ओर झुके। तार खंभे सबको नष्ट कर डाला और हथुआको दुनियासे अलग अपनी मुट्ठीमें कर लिया।

कटेया थाना गोपालगंजके छोरपर है। वहां भी १२ अगस्तको लोगोंने थानेको चुनौती दी। दारोगासे कहा कि नौकरी छोड़ दो और थानेकी कुञ्जी हवाले करो। दारोगाने समय मांगा जो मिला।

१३ अगस्तको थानेपर एक बड़ा मजमा पहुँचा जिसने वहाँ झंडा फहराया। फिर उसने डाकघरमें कांग्रेसका ताला लगा दिया, तार खंभे तोड़ डाले और रेलवे लाइनको उखाड़ फेंके। इसी समय अफवाह उड़ी कि पुलिस छः खासखास सत्याग्रहियोंको गिरफ्तार करना चाहती है। तुरत सभा हुई जिसमें उन छः सत्याग्रहियोंको माला पहनाया गयी और जब घंटों प्रतीक्षा करनेके बाद भी कोई पुलिस न दीख पड़ी तब जनता उन्हें खुद थाने दे आयी।

पटना गोलीकाण्डकी खबर जब राँची पहुँची तब विद्यार्थी अत्यन्त आवेशमें आ गये। रांची जिला स्कूलके छात्रोंने स्थानीय विद्यालयोंमें हड़ताल करवाई और शहर भरमें प्रदर्शन किया। उनका क्षोभ इतना उग्र हो रहा था कि पुलिसने उनके जुलूसको रोकना

राँची

निरापद नहीं समझा। विद्यार्थी कचहरीके हातेमें जमा हुए जहां पटना गोली काण्डकी घोर निन्दा की गया और वकीलों और दूसरे दूसरे लोगोंसे कचहरी छोड़ देनेकी अपील की गयी। वहांसे वे जिला कांग्रेस ऑफिस आये जिसमें पुलिसका ताला लगा हुआ था। उनने ताला तोड़ डाला और कांग्रेस आफिसको दखल करके घोषणा की कि आजसे जिला कांग्रेस आफिस अपना रोजका काम—नियमित रूपसे करने लगी। पुलिस सामने थी पर उसके हाथ उठ नहीं रहे थे। १३ अगस्तको लड़के यथा समय जिला आफिस पहुँचे और अपनी कार्रवाई दुहरा रहे थे कि पुलिसने गिरफ्तारी शुरू कर दी। एक दर्जन गिरफ्तारियाँ हुई पर विद्यार्थी दबे नहीं। टोलियां बाँध बाँध पहुँचते रहे और गिरफ्तार होते रहे।

जिला कांग्रेस कमिटीके सभापति श्री अतुलचन्द्र घोष जो आल इन्डिया कांग्रेस कमिटीकी बैठकमें शामिल होने बम्बई गये थे ता० १३ अगस्तको पुरुलिया पहुँचे

मानभूमि

और गिरफ्तार कर लिये गये। पर अपने यहाँके कार्यकर्त्ताओंको आदेश देते गये कि उन्हें सत्याग्रह सम्मत कार्यक्रमको ही अपनाना है। उनके आदेशानुसार वहाँके लोगोंने सरकारी संस्थाओंपर धरना देना और उपयुक्त स्थानोंमें शान्तिपूर्ण जुलूस निकालना शुरू किया।

१२ अगस्तसे जमशेदपुरमें पुलिसकी हलचल रंग जमाने लगी। ३०० कौन्सटेबिलोंने जुलूस निकाला, सुपरिन्टेन्डेन्टके बंगलेपर गये और अपनी मांग पेशकी। वहाँसे

सिंहभूमि

लौट जुलूस टाटाके कारखानेमें घुस गया और मजदूरोंसे हड़ताल करनेकी अपील करने लगा। मजदूरोंने कुछ समय मांगा। फिर जुलूस श्री रामानन्द तिवारीके नायकत्वमें अपने बैठकमें लौट आया।

तोड़ फोड़ और जनताशाही

१४ अगस्तसे पटना ब्रिटिश और अमरीकन फौजियोंका अड्डा हो गया। शहरको विद्यार्थियोंने खाली कर दिया था। न जलूस था न नारे, एक अजीब सी वीरानी थी जिसको फौजियोंका जोर जुल्म सनसनी खेज बना रहा था। स्कूल कॉलिज और यूनिवर्सिटीके मकानात उनके अड्डे हो रहे थे। उनके हाथसे वहांकी चीजोंकी बरबादी हो रही थी।

एक तरफ कार्यकर्त्ताओंकी गिरफ्तारीकी धूम थी और दूसरी तरफ सड़कोंकी सफाई जारी थी जिसका तरीका इनसानियतसे खाली था। गोरे वकीलों, डाक्टरों और प्रोफेसरोंको धक्का देकर, ठोकर और घूसे मारकर सड़कोंपर घसीट लाते और साफ करनेके लिये कहते। उनमेंसे कोई गोरोंके दौरात्मका विरोध नहीं कर सकता था। हां ! प्रोफेसरों तथा अन्यान्य अध्यापकोंने जिनके अड़ोस पड़ोसमें गोरोंके अड्डे थे अपने यहां चायपानी या सिगरेटका इन्तजाम कर रखा था ताकि गोरे देहलीपर पैर देते ही अपनी खातिर तवाजा देख समझ जायं कि ये बागी नहीं सरकार परस्त हैं।

पर पटना अपनी उपयोगिताको खो न सका। बिहारकी राजधानी और कांग्रेस संगठनका केन्द्र विहार प्रान्तमें इसका स्थान रहा है और रहा। यहांका जन आन्दोलन दब गया, विद्यार्थी यहांकी गरमी लेकर भिन्न भिन्न जिलेमें चले गये तोभी यहां कुछ पुराने और अनुभवी कार्यकर्ता रह गये जिनने प्रान्तके आन्दोलनको चलानेकी अपनी जवाबदेही समझी। उनने प्रान्तीय कांग्रेस कमिटीके नामसे जिला जिलामें कार्यक्रम भेजना शुरू कर दिया। सरकुलर नम्बर एक तो राजेन्द्र बाबूके गिरफ्तार होनेके बाद प्रान्त भरमें बंटा। उसकी भावनाके अनुकूल इस प्रान्तीय कांग्रेस कमिटीने कितने और सरकूलर निकाले और अपने खास खास संवादवाहकोंके द्वारा जिला जिलामें यथा समय उन्हें भेजा। इसके पास अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटीके आदेश पत्र भी प्रान्तमें वितरण करनेके लिये आने लगे।

गोरोंने पटनेकी कड़ी नाकेबन्दी कर रखी थी। शहर भरमें चार ही फाटक थे जिनसे होकर गुजरनेके लिये पास लेना पड़ता था। ठोक पीट कर देख लिया जाता

कि आदमी अगस्त क्रान्तिका बागी नहीं है तब उसे पास दिया जाता। फिर भी प्रान्तीय कांग्रेस कमिटी, पटना अपने सरकुलर नियमित रूपसे भेजती ही रही और किसी तरहकी नाकाबन्दी इसकी गतिविधिको रोक न सकी। यह पटनेकी आगको सुलगाती रही जिसे ले विद्यार्थी निकले और जिले जिलेमें आग लगाते फिरे। इसके संवाद वाहक जिले जिलेमें जाते रहे और कार्यकर्त्ताओंको ईंधन जुटाते रहे।

बाबू श्यामसुन्दर प्रसाद जिन्हें पटनेसे बिहार आन्दोलनको देखने और चलानेका सबसे ज्यादा मौका मिला, लिखते हैं—नेताओंकी गिरफ्तारीके बाद १० तारीखको सदाकत आश्रम भी जब्त हो गया। उसके बाद एक दो दिनों तक आसपासमें ही ठहर कर हमलोग शहरमें जहाँ तहाँ रहने लगे। इसी बीच सेक्रेटेरियटपर गोली काण्ड हुआ और उसके तीसरे दिन पटनेकी सड़कें पेड़ों और पत्थरोंसे पट गयीं, सड़कोंपर गाड़ीका चलना असंभव होगया। ता० १२ की सभामें भाषण सुननेके बाद ही लोगोंको ऐसा करनेका प्रोत्साहन मिला और वे इसे करनेके लिये तत्पर हो गये। अखबारोंमें बम्बईकी खबरें इसके पहिले भी छप चुकी थीं कि वहां लोगोंने तार काट डाले हैं और सड़कोंको आवागमनके मसरफके लिये बेकार बना डालनेकी कोशिश जहां तहां कर रहे हैं। एमरीका ब्राडकास्ट भी हो चुका था जिसमें इस तरहके कार्यक्रमका जिक्र किया गया था। अतः पटनेमें भी टेलिग्राफ और टेलीफोनके तार तो ता० १२ की दोपहरके बादसे ही कटने लगे थे। किन्तु शहरमें तोड़ फोड़का (dislocation) पूरा दृश्य तो १३ को सुबहमें ही देखनेको मिला। फिर टौमी शाही आयी, हर नुक्कड़पर टौमियोंका पहरा बैठा दिया गया। एक ओरसे दूसरी ओरका आना जाना पाससे कन्ट्रोल होने लगा। लौनके पूरब जो सड़क उत्तर दक्खिन गयी है, या एग्जिबीशन रोड या कलक्टरी रोड, इन सड़कोंके पश्चिम बिना पासके कोई नहीं जा सकता था। इस लाइनमें हर मोड़पर कांटेदार तार घेर डाले गये थे। हां! पश्चिमसे पूरबकी तरफ जानेवालोंपर इतनी कड़ाई न थी। इस दिशामें बिना पासके भी आ जाना संभव था। इसलिये स्टेशनसे उतरनेवाले बिना पासके भी पूरबकी ओर चले आते थे। किन्तु बिना पासके पूरबसे पश्चिमकी ओर जाना असंभव था। इसी तरह गंगाके किनारे किनारे भी हर जगह पहरा था जिससे किसी घाटपर उतर कर कोई बड़ी जमात शहरमें रेड न कर सके। ऐसा लगता है कि इस रोक थामके दो उद्देश्य रहे होंगे। एक तो लोगोंमें भय और

आतंक पैदा करना और दूसरा किसी बड़ी भीड़को लौनके पश्चिम चढ़ाई करनेका मौका न देना। सेक्रेटेरियटपर गोली चलनेके बाद लोगोंमें काफी क्षोभ पैदा हो गया था। अतः गवर्नमेन्टको यह खतरा मालूम पड़ा होगा कि कहीं कोई बड़ा दल अंगरेजोंपर हमला न कर बैठे। उनके मकान और दफ्तर अधिकतर लौनसे पश्चिमवाले हिस्सेमें पड़ते हैं। सितंबरके पहिले सप्ताहमें पासका प्रतिबन्ध तो हट गया; लेकिन टौमियोंका पहरा और कांटेदार घेरा तो मेरी गिरफ्तारीके वक्त तक (२४ सितंबर) भी थे ही, पता नहीं कब हटे।

अपनी गिरफ्तारीके पहले तक श्रीजगजीवन राम (वर्तमान श्रम सदस्य, अनस्थायी सरकार, दिल्ली) बाबू सिंहेश्वर प्रसाद और ज्ञानदा प्रसन्न साहा आन्दोलनके संचालकका काम करते रहे। बाबू जगत नरायण लाल दिहातोंमें दौरा कर रहे थे। अतः हमलोगोंके साथ पटना शहरमें राय मशविरा करनेमें शरीक नहीं हो पाते थे। उस समय काम भी यही हो रहा था कि नोटिसें छाप छापकर विभिन्न जिलाओंमें भेजी जा रही थीं। पटनेसे बाहर जानेवालोंको बिना पासके टिकट नहीं मिलती थी; सड़कोंपर भी चलनेमें रुकावट थी। किन्तु उस समय जोश इतना उमड़ा हुआ था कि बार बार नोटिस लेकर जिलाओंमें जाने वाले किसी न किसी तरहसे निकल ही जाते थे, पहरा और प्रतिबन्ध अपनी जगहपर ही मड़राते रहते थे। जिलाओंसे कोई खास रिपोर्ट नहीं आती थी सिर्फ यहींसे धड़ाधड़ नोटिसें जाया करती थीं। अफवाहके रूपमें जहां तहांसे कुछ खबरें मिलती थीं किन्तु बाहरसे निश्चित सम्पर्क न था। नोटिस लेकर जो जाते वे भी बहुत दिनोंपर लौटते थे और इतना ही समाचार देते कि अमुक जिलेमें नोटिस काफी फैल गयी। पहले डाकियेके लौटनेका इन्तजार किये बिना ही दूसरी और तीसरी बार नोटिसें यहांसे रवाना कर दी जाती थीं।

प्रदर्शनकी भावनाको जिस क्रूरतासे दबानेकी सरकारी कोशिश हुई उसका अमिट प्रभाव जनतापर पड़ा। वह कठोर हो गयी। पहले जैसी शान्ति और व्यवस्था न निभा सकी। अपने शहीदोंकी याद उसे उसका रही थी। करेंगे या मरेंगेकी वज्र भावना वज्रगतिसे उसकी क्रान्ति साधनाको मूर्त्तरूप दे रही थी। प्रान्तीय कांग्रेस कमिटीके एक संवादवाहक श्री नरसिंह दास लिखते हैं—मैं १४ अगस्तको पटनासे रवाना हुआ सरकुलर नं० २ लेकर, सभी जिलोंमें बाँटनेके लिये, मैं पटनेसे किसी तरह सोनपुर पहुँचा। वहां जो गाड़ी मिली किसी तरह हाजीपुर

क्रान्तिकी हुतात्मायें
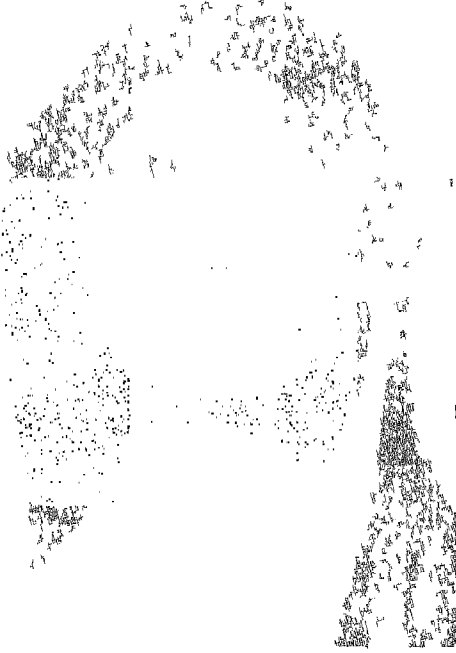
श्रीमती अरुणा आसफ अली

सरदार नित्यानन्द,
भागलपुर

क्रान्तिके दो संचालक

आचार्य बदरीनाथ वर्मा,
वर्तमान शिक्षा मंत्री (बिहार)

श्रीश्याम सुन्दर प्रसाद,
बिहार विद्यापीठ
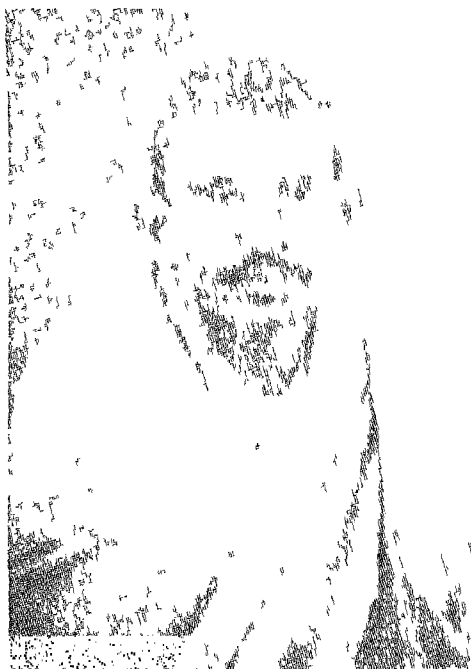
तक गयी। हाजीपुरसे मैं साइकिलपर रवाना हुआ। लेकिन उस सरकुलर नं० २ के पहुँचनेके पहले ही लोग सभी जगह उस कामको बड़ी तेजीसे कर चुके थे और कर रहे थे। तो भी मैं सरकुलर बांटता गया।

सचमुच जनताकी तेजीको संगठनके अभावमें कार्यकर्त्ता छू न पाते थे। सारे प्रान्तमें एक ही भावना लहरा रही थी पर संगठनकी व्यापकता एक जैसी न थी। प्रान्तीय कांग्रेस कमिटीके आदेश और भिन्न-भिन्न स्थानोंकी जनताकी कार्रवाईके तारतम्यमें सम्बन्ध देखा जा सकता था पर तिथिमें तो नहींके बराबर सम्बन्ध था। कहीं हड़ताल और प्रदर्शनकी अवधि कुछ रही कहीं कुछ। तोड़ फोड़ तथा अन्यान्य कार्यक्रमका प्रारंभ और समाप्ति भी सब जगह एक जैसी न रही। इसलिये अगस्त क्रान्तिकी गति विधिको समझनेके लिये जनताकी कार्रवाईके तारतम्यको ही देखना पड़ता है।

यों तो तोड़ फोड़के काम ता: १० अगस्तको भी कहीं कहीं हुए पर जोर पकड़ा इस प्रोग्रामने १२ अगस्तको और १४ अगस्तसे प्रान्त व्यापी हो गया। तोड़ फोड़को प्रान्त व्यापी बनानेमें सरकुलर नं० २ का बड़ा हाथ है जो यों हैं :—

कांग्रेसकी खास हिदायतें—सरकुलर नम्बर २

हमारी आजादीकी लड़ाई शुरू हो गयी। अब तो इसमें मर मिटना है और विजय प्राप्त करना है। इस समय हर हिन्दुस्तानीके मनमें और मुंहपर यही बात रहे—आजाद होंगे या मरेंगे। स्त्री-पुरुष, बूढ़े बच्चे सभीकी एक ही आवाज हो 'मृत्यु या विजय।' बस इसी बातका खयाल रख कर आगे बढ़ते जाना है। इसके पहले भी कुछ हिदायतें जा चुकी हैं। लेकिन याद रहे उनमें सारी बातें खत्म नहीं हो जातीं बम्बईसे कांग्रेसका ताजा आदेश आया है जो इस प्रकार है :—

(१) टेलीफोन और टेलीग्राफके तार सब जगह काटे जायें। हाँ इस बातका पूरा ध्यान रहे कि हमारी ओरसे कोई हिंसा नहीं होने पाये और सभी काम खुले आम हों।

(२) जहां तक हो सके 'आजाद होंगे या मरेंगे' के पोस्टर सब जगह साटे जायें और इसका नारा भी लगाया जाय।

(३) हर तरहके और हर तबकेके हिन्दुस्तानीकी सहानुभूति हासिल करनी चाहिये। इस बातके लिये पूरी कोशिश की जाय।

(४) इस विदेशी सरकारके लिये काम चलाना असम्भव हो जाय इसके लिये अहिंसाके रास्तेपर चलकर अपनी जगहकी परिस्थितिके मुताबिक जो भी काम करना चाहें करें।

(५) साथ ही अंग्रेजी हुकूमतकी ताकत जैसे जैसे खत्म करते जायं वैसे ही वैसे तत्काल उसकी जगह लेनेके लिये अपनी राष्ट्रीय पञ्चायत कायम करते जायं। इस पंचायतमें कांग्रेसके साथ मिलकर काम करनेवाले सभी लोगोंको लेना चाहिये। इसके साथ लोगोंकी जान मालकी रक्षा करनेके लिये स्वयंसेवकोंका दृढ़ संगठन हो।

(६) ब्रिटिश सरकारकी ओरसे आपसमें फूट और लड़ाई करानेका जो जाल बिछाया जा रहा है उसमें हरगिज न फँसे।

बिहार प्रान्तीय कांग्रेस कमिटी,
पटना।

पटना जिलाको इस सरकूलरकी खबर लग चुकी थी और उसे सरकूलरोंकी जरूरत भी नहीं रह गयी थी। पटनाको कब्जेमें रखकर गोरे जिलामें आग और गोली बरसा रहे थे और जनता अपनी अपनी जगहपर अपने अपने ढंगसे उनका सामना करती हुई 'अंगरेजों भारत छोड़दो' के नारे सार्थक बना रही थी।

थाना बिहार तोड़ फोड़के कामको आगे बढ़ा रहा था। रेलवे उसके कब्जेमें था, सड़कपर उसकी शनि दृष्टि थी। बिहार रांची रोडपर गिरियकके पास बकरा-चरसुआका पुल है उसे वहांकी जनता जब तोड़नेमें लगी थी तब उनके सरपर हवाई जहाज मड़रा रहा था। जहाजने बम भी बरसाये पर लोग बाल बाल बच गये। बिहार सब जेलमें लग भग २५० कैदी थे। वहांके कार्यकर्त्ताओंने वार्डरसे चाभी छीन ली, जेलका फाटक खोल दिया और कैदियोंको भगा दिया।

एकंगर सरायकी जनताने १४ अगस्तको जलूस निकाला और सभी सरकारी दफ्तरोंपर राष्ट्रीय झंडा फहराया। १५ अगस्तको यातायातके साधन नष्ट करनेके लिये उसने रेल गाड़ीकी पटरियां उलटनी शुरू कर दी जिसपर रेलवेके कर्मचारियोंसे नोक झोंक हुई। जनता और उत्तेजित हो गयी, उसने डाकघरके कागजातको बरबाद कर दिया। गांजा, शराब वैगरहकी दूकानोंको नष्ट कर दिया, कोशियामा और एकंगर सराय स्टेशनोंके सामान बरबाद कर दिये और कागजात फाड़ फेंके। जगह-जगह सड़कें काट दीं।

नाथूप्रसाद यादवकी शहादतसे बख्तियारपुरमें गजबकी ताकत आ गयी थी।

थानेके दारोगा गोली चलाकर इस तरह आतंकित हो गये थे कि उनके लिये हाथ बख्तियारपुर पांव भी हिलाना मुहाल हो रहा था। १५ अगस्तकी रातको धर्मशाले-में नगर निवासी आगेका प्रोग्राम तय करनेके लिये इकट्ठे हुए, कुछ ही देर हुई होगी कि उन्हें एक भीषण अत्याचारका सामना करना पड़ा। अखौरी नारायण-शेखरसिंहा जो वहां मौजूद थे, लिखते हैं, "लगभग आठ बजे मैं मतिराम, एक उरांव विद्यार्थीके साथ बख्तियारपुर पहुँचा। शहरमें आन्दोलनकारियोंका बोलबाला था। दो विद्यार्थी कंधेपर झंडा लिये इधर उधर मुस्तैदीसे घूम रहे थे। मैंने उनसे शहरकी हालत पूछी तो उन्होंने बड़ी उपेक्षासे कहा कि अभी सिर्फ स्वराजकी बातें कीजिये, हालत-चालतकी नहीं। पर जब मैंने नम्रता पूर्वक समझाया कि मैं भी स्वराज चाहनेवाला हूँ, हालत पूछनेका मतलब ही स्वराजकी बातें करना है, तो वे नम्रतासे पेश आये। बोले कि पुलिस तो थानेमें बन्द है और हमलोग शहरका काम बड़ी सुविधासे चला रहे हैं। मैंने उन्हें अपना परिचय दिया और जब विश्रामकी इच्छा प्रकट की तो उनने एक स्वयंसेवकके साथ कर दिया। वह स्वयंसेवक मुझे हलवाईकी दूकानपर ले गया। वहां उन्हीं लोगोंके नियंत्रणमें आठ आने सेर गरम गरम पूरी बिक रही थी। हमलोगोंने तृप्त होकर भोजन किया और फिर उस स्वयंसेवकके साथ विश्राम करनेके लिए धर्मशाले आये। धर्मशालेमें नागरिकोंकी सभा होनेवाली थी, वे दोनों विद्यार्थी मेरे पास पहुँचे और उस सभामें बोलनेके लिये निमंत्रित किया। चूंकि मैं बहुत थका हुआ था इसलिये मैंने कहा कि थोड़ा विश्राम करनेके बाद ही मैं सभामें सम्मिलित होऊँगा। इतना कह मैं लेट गया और मुझे झपकी आ गयी। अकस्मात् बड़े जोरसे हल्ला हुआ, मेरी नींद उचट गयी। मैंने बंदूककी आवाज सुनी और देखा कि बहुतसे हिन्दुस्तानी सिपाही गोरोंके साथ साथ अन्दर घुस रहे हैं और चिल्ला रहे हैं—मारो सालों को! मैंने देखा लोग लाठी और कुन्दोंसे अन्धाधुन्ध पीटे जा रहे हैं। आर्तनाद और भगदड़की आवाज कान फाड़ रही है। मैंने देखा मेरा उरांव साथी भी भाग गया है। मैं उसका नाम पुकारता जरा उसके पीछे दौड़ा पिछवाड़े पहुँच देखा कि चारो ओर चहार दीवारीसे घिरा एक छोटा सा आंगन है। ज्यादा लोग चहार दीवारी फांदकर भाग चुके हैं और कुछ लोग भागनेकी कोशिशमें हैं। मैं बड़ी दुविधामें पड़ा। चोरकी तरह वहां खड़ा रहना बुरा मालूम हुआ और लौट कर जानेमें सिवा लाठियों और बंदूकके कुन्दोंके शिकार बननेके अलावा और कोई चारा न था। मैं भी

चहार दीवारी तड़प गया और उसपार डेढ़ पोरसा नीचे दल-दल खेतमें जा गिरा। वहांसे संभल कर उठा तो एक छोटी सी गली होकर धर्मशालेके पासकी सड़कपर निकल आया। सड़कपर बिलकुल सन्नाटा था केवल एक लम्बे-चौड़े खद्दरधारी मज .न खूनसे लथपथ कराहते तथा डगमगाते हुए आगे बढ़ रहे थे। मैंने उन्हें जाकर सहारा दिया इतनेमें दो सिपाही वहां आ पहुंचे। उन्होंने आते ही आरजू करना शुरू किया। मैं उक्त सज्जनको छोड़ कर जल्दी कहीं भाग छिपूं, क्योंकि गोरे बिगड़े हुये थे और हर मिनट गोली चलानेकी आशंका थी। मैंने उत्तर दिया कि जब तक घायलके शुश्रूषाका प्रबंध नहीं हो जाता मैं वहांसे भाग नहीं सकता। सिर्फ इसपर सिपाहियोंको दया आई। एक सिपाही घायलको डिस्पेंसरी ले गया और दूसरेने मुझे एक हलवाईकी दूकानमें ठेल दिया।

इस काण्डमें मोगलसिंह मार डाले गये। उनके शरीरको कुन्दों और लाठियोंको मारसे टामियों और सिपाहियोंने भुरता बना दिया था। त्रिवेणी शर्मा भी बुरी तरह घायल हुये थे पर खूब अच्छी तरह दवा दारू करानेके बाद चंगे हो गये। बख्तियारपुरने इस अत्याचारको बहादुरीके साथ बरदाश्त किया और जोरोंसे अपने संगठनमें लग गया। जनताके जोश खरोशको देखकर अनवारुल हक थाना छोड़ भागे। पर जनताकी एक उत्तेजित भीड़ने उन्हें बख्तियारपुर रेलवे स्टेशनपर पकड़ लिया। वे शहर खींच लाये गये। स्टेशनपर भीड़को देखते ही उनने कांग्रेसकी जय जयकार शुरू कर दी थी। उसका झंडा उठा लिया था और गांधी टोपी और खादी पहन ली थी तब कहीं अपनेको जनताके क्रोधसे बचा सके। जनता धर्मशाला काण्डकी जड़में उनको ही समझती थी। इसलिये उनपर अत्यन्त कुपित थी। दारोगा साहबके भागनेमें रेल मददगार न बने इसलिये बख्तियारपुर स्टेशनको लोगोंने जला दिया और काफी दूर तक रेलवे लाइनको छिन्न भिन्न कर दिया।

हरनौत स्टेशनको जनताने जला दिया और जो गल्ला वहां मिला उसको लूट लिया। चेरी स्टेशनको सामान सहित जला दिया।

फतुहा थानेने भी स्टेशनका गोदाम लूटा और रेलकी पटरियां उखाड़ फेंकी। ता: १४ की घटना है। फतुहासे एक गाड़ी पटने जाना चाहती थी जिसपर दो कनाडियन अफसर सवार थे। एक कनाडियनने रिवाल्वरमें कंकरकी गोली भरकर एक पटरी उखाड़ने वालेको जो लाइनपर खड़ा था, मारा और जो हिन्दुस्तानी

उसके पास गये उनको शेखीसे घूरता रहा। जनता उमड़ उठी। बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी और ऊंची आवाजमें 'अंगरेजों भारत छोड़ दो' पुकारने लगी। परिस्थिति बिगड़ी देख गार्डने गाड़ी आगे बढ़ायी पर आगे तो लाइन थी ही नहीं। इसलिये जनताके आदेशानुसार उसे गाड़ीको पीछे लौटा लेना पड़ा। ज्योंही गाड़ी स्टेशन पर पहुँची लोग कनाडियनोंपर टूट पड़े और उन्हें मार डाला। फिर उनने उनकी लाशोंका प्रदर्शन किया और अन्तमें पुनपुनकी धाराके मुहानेपर उन्हें छोड़ दिया। फिर यूनियनबोर्ड, खुसरोपुर, दनिआवां और सिगरिआवां स्टेशन जलाये गये।

मनेरने यूनियन बोर्डके कागजात और फरनीचर जला दिये। मनेरके लड़कोंकी टोली लेकर ता० १४ अगस्तको कुछ लोग डाकबंगलेपर गये और मजिस्ट्रेट हुदासाहबको डाकबंगलेसे निकाल बाहर किया। फिर बन्दूक ले लो और उसे रामनगरके श्री ब्रजकिशोरके यहां भेज दिया। डाकबंगलेसे कतार कतारमें सज गीत गाते हुए सभी वापस हुए और स्कूलमें अपना ताला लगा दिया। नहर रोड भी इनने जाम कर दिया। तारके खंभे उखाड़ फेंके।

पालीगंजने आजाद जनताकी ताकतका एक नमूना पेश किया। १४ अगस्तकी शामको आठ दस हजार लोग इकट्ठे हुए और जलूस बांध कर चले सरकारी ताकतसे टक्कर लेने। आगे आगे श्री कन्हाईसिंहजी थे। लोगोंने नहर ऑफिसमें अपना ताला लगाया और डाकघरमें भी। वहांसे अस्पताल और स्कूलपर झंडा फहराते हुए सभी थाना आये। थानेमें पुलिस चौकस थी। पर जनबलके आगे क्या कर सकती थी? लोगोंने थानापर झंडा फहराया और ताला लगा दिया। बादको दारोगा साहब पहुँचे और कन्हाई बाबूको आगे देख गिरफ्तार करनेका हुक्म दिया। पर जनता बिगड़ी जिससे कन्हाई बाबू उस वक्त पकड़े न जा सके। जनता कन्हाई बाबूको लेकर चली गयी। फिर जब कन्हाई बाबू थानाके पास होकर बाजारसे लौट रहे थे तब दारोगाने एकाएक इन्हें पकड़ लिया और रात भर थानेमें रखा। दूसरे दिन यानी १५ अगस्तकी सुबहमें जमादार और दो कन्सटेबिल श्री कन्हाईसिंहजीको दानापुर जेल लिये जा रहे थे। जब वे उन्हें लेकर उलार पहुंचे तब भरतपुरा हाईस्कूलके छात्रोंने जनताकी सहायतासे कन्हाई बाबूको मुक्त कर लिया और पुलिस सहित जमादारको अपनी हिरासतमें ले लिया। तीनों २४ घंटेके लिये स्वराजी जेलमें रहे। छात्र इनके साथ बड़ी अच्छी तरह पेश आए क्योंकि उनके अगुआने कहा था कि इनके साथ अहिंसाकी नीति बरती जायगी।

थानेका दारोगा घबड़ाया। उसे मालूम हुआ कि 'कांग्रेसका झंडा थानेपरसे हटा दिये जानेसे ही कांग्रेस वाले बिगड़ उठे हैं। तुरत उसने झंडा कांधे लिया और वन्देमातरम्का जयघोष करते हुए लोगोंको जुटाया और विधिवत झंडा फहराया। दूसरे दिन थाना कांग्रेस कमिटीके सभापतिने जमादार और कन्सटेबिलको छुड़वा दिया क्योंकि उन्हें दारोगा साहबने खुद आकर खबर दी कि हमने थानापर कांग्रेसका झंडा फहरा दिया है अब प्रार्थना है हमारे आदमियोंको छोड़ दें। यहां भी एक चौकीदार और दो सरपंचोंने इस्तीफा दिया।

पटना मुफस्सिल थानेके फतहपुरमें उत्साह काफी था। श्री चन्द्रशेखरसिंह सुपरवाइजर रूरल डेवलपमेन्ट ऑफिसको जलाकर अपने स्टाफके सभी लोगोंसे इस्तीफा दिलाकर फतहपुर पहुंचे थे। रामबहाल सिंह बिहार पुलिस और रामाश्रय सिंह, बंगाल पुलिसने अपनी नौकरीको लात मार कर जनताका साथ देनेका निश्चय किया था। इन सबोंने मिलकर फतहपुर पटना रोडके एक बड़े पुलको तोड़ना चाहा पर बड़ी मिहनतके बाद उसका कुछ हिस्सा तोड़ सके। फिर सबके सब लौट गये। श्री जगतनारायण लाल वहां क्रान्तिका सन्देश लेकर पहुँचे और स्वयंसेवकोंका जो दल तैयार किया गया था उसका नया नामकरण किया शहीदी जत्था। इस जत्थेसे तोड़ फोड़का काम भी उतना ही चला जितना संगठनका।

बाढ़में तार काटे, रेलकी पटरियां हटायीं और बाढ़ रेलवे स्टेशनके कागजात और फर्नीचरको फूंक दिया। उसकी मशीनरीको बरबाद कर दिया। अथमल गोला स्टेशनको जला दिया। मोरमें तो स्टेशन भी जले और कर्मचारियोंके डेरे भी। ऐसी स्थिति देख पंडार स्टेशनपर परिवारके साथ रहनेवाले कर्मचारी बड़े घबड़ाये। गांववालोंने उन्हें सपरिवार अपने यहां बुला लिया और आरामसे रखा।

पुनपुनकी जनता पुनपुन नदीपर जो रेलवेका पुल है उसे तोड़नेमें असमर्थ हो वापस लौट रही थी कि कुछ अमरीकन फौजियोंसे आमना सामना हुआ। अमरीकनोंने संगीनके बलसे भीड़ हटानेकी कोशिश की किन्तु उनकी तादाद नगण्य और भीड़ बेशुमार और जोशसे भरी हुई। भला उनके हटाये क्या हटती। निराश हो अमरीकन पुनपुन स्टेशनकी ओर वापस हुये जहाँ उनकी पेट्रोलींग ट्रेन खड़ी थी। जनता भी तरह-तरहका नारा बुलन्द करती हुई साथ लग गयी। अमरीकन जब तब जनताको गोलीसे उड़ा देनेकी धमकी देते और जब-तब संगीनसे फाड़ देनेका डर दिखलाते। पर बेपरवाह जनता उनका पीछा नहीं छोड़ती

पुनपुन

और कभी कभी तो कुछ लोग उनकी पीठसे भिड़ जाते। जब पुनपुन स्टेशन नजदीक आया तब अमरीकनोंका जनतासे मुठभेड़ होगयी। रसीलचकके श्रीलाल प्रसाद यादवको संगीनके कई घाव लगे और साथियोंके देखते-देखते खूनसे लथ पथ उनका शरीर धराशायी हुआ। जनता उबल उठी। अमरीकनोंपर ईंट, पत्थर बरसाने लगी। अमरीकन बेतहाशा भागे और पट्रोलींग ट्रेनमें बंद होकर अपनी जान बचायी। खीजी हुई जनता उधरसे मुड़ी तो रेलवे लाइनकी ओर दौड़ गई और उसे उखाड़ने लगी। दो दिनोंतक तोड़-फोड़ वेगसे चलता रहा।

हिलसा

हिलसा थानेमें तोड़-फोड़ने जोर पकड़ा १४ अगस्तको। लोग तार काटने और रेल लाइन उखाड़नेमें लग पड़े थे। आज वे जुलूस बाँधकर निकले और रजिस्टरी ऑफिसपर टूट पड़े। उसके ताले तोड़ चीजें निकाल फेंकी और उन्हें बरबाद कर दिया। उनके आबकारीकी दूकानोंको भी बरबाद कर दिया। कराय-परसुरायके डाकघर और रेलवे स्टेशनकी चीजें भी नष्ट कर दी।

शाहाबाद सदर

सदर थानेमें फतहपुर मठिया मिडिल स्कूलके शिक्षक तथा छात्रोंने कांग्रेस कार्य-कर्त्ताओंका साथ देकर तोड़ फोड़के कामोंको आगे बढ़ाया। नहर ऑफिसके सामानको बरबाद कर दिया और उसमें आग लगा दी। वहांसे वे डाक-घर गये और उसकी चीजोंको भी जला दिया। फिर उनका धावा शराबकी दूकानपर हुआ जो बरबाद कर दी गयी, वही दल वहांसे बरूही गया जहांके नहर ऑफिसके बंगलेपर उसने धावा किया। कुछ जनता और ओवरसियर हाथ पकड़ने आये पर कामयाब न हो सके। बंगलेके कागजात जला डाले गये और सामान भी बर-बाद कर दिया गया।

बनबारी स्कूलके लड़कोंका एक दल खूटहां पहुंचा और डाकघरके कागज पत्रोंको जला दिया, फिर वह गांजा दारूकी दूकानोंको बरबाद करता हुआ चेनरीकी ओर बढ़ा। वहांके डाक बंगलाके सामानको उसने नष्ट कर दिया। फिर वह दल ओवर-सियर और नहर तहसीलदारके ऑफिस पहुँचा—ऑफिसके सारे कागजात जला डाले और नहर ऑफिसके तार वगैरहको काट दिया। लसाढ़ी और वहांके आस पास रहनेवालोंका एक दल आगे अगियांव आया वहांके डाकघरके कागज पत्रोंको उसने जला दिया। खजाना लूट लिया खजानेमें जो नोट थे वे जला दिये गये। वहांसे वह नहर ऑफिस आया। वहांके कागज-पत्रोंको भी उसने जला दिया। फिर गमनागमनको रोक देनेके खयालसे लसाढ़ी, बगौटी, बेरथ, खड़ाऊँ

पेउर, हरपुर आदि दस-पंद्रह स्थानोंपर नहर रोडको काट डाला। उसके किनारेके बहुतसे पेड़ काट दिये गये और नहर रोडपर बिछा दिये गये। लाइनपरके तारको उजाड़ फेंका गया। थानेकी सभी आबकारी महालकी दूकानें बन्द हो गयीं और कोई डाकघर अछूता न रहा। पीरो थानामें कालिजके लड़कोंका एक जत्था आया। स्थानीय कार्य-कर्त्ताओंकी हिम्मत बहुत बढ़ गयी। सबोंने मिलकर स्टेशनपर चढ़ाईकी जिसके सामानको तोड़-फोड़ दिया और स्टेशनमें आग लगा दी। डाकघरकी चीजें नष्ट करके डाकघरको जला दिया। नहरके तहसीलदारके आफिसको जला डाला। गढ़हनीसे हसन बाजार तककी आरा, ससाराम लाइट रेलवेकी लाइन कई जगह इन सबोंने उखाड़ फेंकी। जगह-जगह तार काट डाले। थानाके अन्दरके अधिक तर डाकघरको कागजको जला दिये गये, कई पुल भी तोड़ दिये गये, नहर सड़क आदि रास्ते काट दिये गये और किनारेके वृक्ष सड़कपर काट गिराकर सड़कको जाम कर दिया गया जिसपर आती जाती डाकको कई बार लूटा गया।

जगदीशपुर थाना

जगदीशपुर थानेमें स्कूलके लड़के और थानेके कांग्रेस कार्यकर्त्ता एक साथ तोड़ फोड़के कामोंमें लग गये। उनने सब रजिस्टरी औफिसके सामने पुलिस सब-इन्सपेक्टरसे उसकी पिस्तौल छीन ली।

हरदियांकी एक महिला श्री फूलकुमारीके नेतृत्वमें आस-पासके लोगोंका दल तोड़-फोड़ करने निकला। उसने बिहियाकी पुलिन चौकीको बरबाद कर दिया, वहां जो बन्दूक मिली उसे ले लिया। बिहिया स्टेशन और डाकघरके कागजात जला डाले। फिर उसने 'कारीसाथ' से बिहिया तककी लाइनकी पटरियोंको कई जगह उखाड़ दिया और तार काट दिया और कई जगहके डाकघरके कागज-पत्र जलाये गये। सब जगह श्रीमती फूलकुमारी अपनी कार्य पटुता और संगठन-शक्तिका परिचय देती रहीं।

बादको गांवोंमें काम करती हुईं वे गोरों द्वारा पकड़ी गईं, सजा पाकर जेल गईं और जेलसे आकर एस० डी० ओ० को चूड़ी पिहनाने गयीं क्योंकि वह सरकारी नौकरी छोड़ देशका साथ नहीं दे रहा था—फलस्वरूप फिर जेल गईं, और वहांसे लौटते ही बीमार पड़ीं और शहीद हो गईं।

साहपुर

साहपुरके कार्यकर्त्ताओंने भी डाकघर, रजिस्टरी औफिसके कागज-पत्रोंको जलाया। बिहियासे रघुनाथपुर तककी रेलवे लाइनको कई जगह छिन्न-भिन्न कर दिया। तार भी काट दिये।

बड़हरा थानेके आरासे कोइलवर तकके तार काट फेंके गये। रेलवे लाइन भी जगह ब-जगह उखाड़ दी गयी। डाकघरके कागज पत्र जला दिये गये। १४ अगस्तकी घटना है, चार बजे शामको कोइलवर स्टेशनके पच्छिम छोटी पुलके निकट कुछ लोग लाइन उखाड़ रहे थे, उसी समय पट्रौलींग ट्रेन आती दीख पड़ी। लोग भाग गये पर कपिलदेवराम पैरमें कांटा लग जानेकी वजहसे भाग नहीं सके। पैरका कांटा निकालनेके लिए झुके ही थे कि उन्हें पट्रौलींग ट्रेन परसे एक गोरेने अपनी राइफलका निशाना बनाया। गोली पेटमें लगी। उनकी चाल धीमी पड़ी, बस गोरोंने दौड़कर उनको पकड़ लिया और गोलीके छोटे घावको संगीन घुसेड़कर इतना बड़ा बना दिया कि उनकी आंत बाहर निकल आयी। वे अस्पताल लाये गये पर डॉक्टरके पहुँचनेके पहले ही शहीद हो गये।

बड़हराथाना

संदेशके कार्यकर्त्ताओंने डाकघर जलाये। कलाली जलायी और सड़कोंपर जगह ब जगह गड्ढे खोद उन्हें दुर्गम बना दिया।

संदेश

बक्सर सबडिविजनमें रेलवेपर तोड़ फोड़ वालोंकी खास नजर रही। उनने ब्रह्मपुर थानेके रघुनाथपुर स्टेशनको बहुत नुकसान पहुँचाया। दो-तीन रोज तक उस स्टेशनपर हमला होता रहा। उसके टिकट जलाये गये, किवाड़ें तथा खिड़कियाँ निकाल ली गयीं और सामान बरबाद कर दिये गये। मालगुदामकी बहुत सी चीजें लूट ली गयीं। काँग्रेसके कार्यकर्त्ताओंने लूटको रोका, व्यापारियोंकी बहुत सी चीजें वापस दिला दीं। बाजारमें उनके प्रयत्नोंसे ही शान्ति रही। हाँ! पन्द्रह दिनों तक लाइन उखाड़ने और तार काटनेका काम होता रहा।

बक्सर

बक्सर थानेके बरूना और चौसा आदि स्टेशनोंके कुछ सामान और कागजात जला दिये गये। मजिस्ट्रेट साहब खड़े थे और बक्सर स्टेशनका मालगुदाम लूट लिया गया। बक्सर डाकघरके कुछ रुपये भी लूटे गये। थानेके अन्दरके और डाकघरोंके कागजात जला दिये। इसी तरह आबकारी महालकी दूकानें भी बरबाद कर दी गयीं जिनमें इटाढ़ी, नाट, चौसा, और बक्सरकी दूकानें उल्लेखनीय है। अन्दौर गाँवके डाक बंगला और सेक्सनल बंगलेके कागजात, किवाड़के शीशे और कुर्सियाँ आदि तोड़ फोड़ दी गईं। थानेके नहर विभागके तहसीली बंगलेके कागजात भिन्न भिन्न जगहोंमें भीड़ द्वारा जलाये गये।

नावानगर थानेमें केसठकी शराबकी दूकान, तहसीलदारका बंगला, खरबलियाँका ओवरसियरी बंगला, केसठके डाकघरका सामान जला दिया गया।

रामपुर नहर विभागका बंगला और सिकरौल नहर विभागके कागजात जलाये गये। बासदेवा तथा आथरकी पुलें तोड़ी गयीं। राजपुर थानेमें मनोहरपुर नहर विभागके कागजात जलाये गये और फर्नीचर तोड़ डाले गये। डुमराँव स्टेशनके कागजात और टिकटघरको जला दिया गया। उसी रोज नवपुलियाकी रेलवे लाइन उखाड़ दी गयी। १४ अगस्तके लगभग डुमरी, सहियार, सेमरी, नया भोजपुरकी आबकारीकी दूकानोंके सामान नष्ट हुये। डुमरी और मिश्राजीपुरके कागजात जलाये गये। डुमराँव डाकघरके कागजात जलाये गये और कुछ रुपये भी लूटे गये। कुरानसरैयाँकी शराबकी टंकी गिराकर पचास हजारकी बरबादी की गयी। वहाँकी गांजे और ताड़ीकी दूकानोंको भी नष्ट कर दिया गया। चौगाँई और मुरार पोस्ट आफिसोंके कागजात जलाये गये। सिमरीके चौकीदारोंकी वर्दी-पेटी जलायी गयी। १६ अगस्तको कावके पुलका एक हिस्सा तोड़ा जा रहा था। उस वक्त एक हवाई जहाज सरके ऊपर मड़राने लगा। उसने झपट्टा मार भीड़को तितर-बितर कर दिया। कितने स्कूलके लड़के जमीनमें गिर पड़े।

नावानगर

१६ अगस्तको बक्सर सेन्ट्रल जेल तोड़नेकी कोशिश हुई। पहले हजारों आदमियोंकी भीड़ने फाटकपर राष्ट्रीय झंडा फहराया। फिर सभी फाटकपर प्रहार करने लगे। जो वार्डर रोकने आये एक तरफ ठेल दिये गये। फिर लाठी-चार्ज हुआ। मजिष्ट्रेट साहब मौकेपर मौजूद थे। लाठीसे सैकड़ोंको चोट लगी और सबसे अधिक घायल हुये अहिरौलीके स्वामी मनोज्ञानन्द। वे जेलमें दाखिल कर लिये गये जहाँ सात रोज तक बेहोश रहे। पड़रीके नर्मदेश्वरसिंह भी काफी घायल हुये। दस व्यक्ति जेल तोड़नेके अपराधमें गिरफ्तार हुए।

सासाराम

१४ अगस्तको एक बड़ी भीड़ सासाराम स्टेशनपर इकट्ठी हुई, उसने स्टेशन जला दिया। फिर वह झंडे फहराती हुई कचहरी पहुँची और क्रांतिकारी नारोंके बीच उसने कचहरीपर झंडा फहरा दिया। कचहरीके शीशे वगैरह तोड़ डाले। बादको वह लौट पड़ी ग्रैंड ट्रंक रोडसे जिसपर मशीनगन लगाकर गोरे डट रहे थे। जब भीड़ एस० डी० ओ० के बंगलेके सामने आयी तब उसने अपने नारे बुलन्द की और वहां जम गई। एस० डी० ओ० के आदमियोंने तितर-बितर करना चाहा पर भीड़ हटी नहीं। एस० डी० ओ० की ओर ढेले फेंकने लगी। बस गोरे गोली चलाने लगे। कौपके रहनेवाले जैरामसिंह यादवने एक गोरेपर लट्ठ चलाई; गोरा घायल हो गिर गाया। फिर वह दूसरेपर आक्रमण करना ही

चाहता था कि उसे गोली लगी और वह तत्काल शहीद होगया। बचरी ग्राम निवासी जगदीश प्रसाद हाई स्कूलके एक छात्र थे वे अपने बोर्डिंग हाउसके बरामदेपर खड़े खड़े सब कुछ देख रहे थे। मार्टीन साहबकी पिस्तौलकी गोलीके वे शिकार हो गये। आप अस्पतालमें २० सितम्बरको स्वर्ग सिधारे। तत्काल शहीद होनेवालेमें और हैं महंगू पासी, आलम गंज और जगन्नाथ राय पनेरी, सासाराम।

नासरीगंज

१५ अगस्तको थाना कांग्रेस कमिटीके मंत्रीके नेतृत्वमें आन्दोलन कारियोंका एक जत्था सबडिविजनल नहर औफिस पहुँचा। एस० डी० ओ० गायब थे। हेड किरानीने आन्दोलन कारियोंको औफिसकी कुंजी दे दी। औफिसके कागजात निकाल लिये गये जिनमें आग लगा दी गयी। कागजके ढेरके जलनेसे जो लपटें निकलीं उनसे मकानमें आग लग गई। सारा मकान जलकर खाक होगया। वहाँसे भीड़ डाकघर पहुँची जहाँके पोस्ट मास्टरने जो कुछ कागजात थे सुपुर्द कर दिया, जो जला डाला गया। डाकघरपर राष्ट्रीय झंडा फहराया गया। औफिसमें ताला लगा दिया गया। सड़कको बरबाद कर देनेकी भी कोशिश हुई। नहरवाली सड़क काट दी गयी और बिक्रमसे नासरीगंज आनेवाली सड़कपर भी जगह-जगह बड़े-बड़े गढ़े खोद दिये गये। आबकारी महालकी दूकानोंको भी बरबाद कर दिया गया। कछवामें ऐसी एक दूकानको बंद कर दी गयी और डाक-घरपर कब्जा किया गया।

डीहरीथाना

डीहरी रेलवे स्टेशनकी बहुतसी चीजोंमें आन्दोलन कारियोंने आग लगादी। फरनीचरको तोड़-फोड़ दिया, तारको काट दिया, मालगुदामको लूट लिया। पुलिस और रेलवे कर्मचारियोंने लूटमें खूब हाथ बटाया। डाकघरपर भी लोगोंका धावा हुआ। कागजात जला दिये गये। टेलीफोनका कनक्शन काट दिया गया। डाकघरके खजानेके कुछ रुपये भी लूटे गये। नहर औफिसका मकान जला दिया गया। थानेके अन्दर साठ सत्तर जगहोंपर तार और टेलीफोनका सम्बन्ध छिन्न भिन्न कर दिया गया। बाँक और करबंदियाके पुल नष्ट कर दिये गये। पलेजाके पासकी रेलवे लाइन लग भग एक हजार आदमियों द्वारा उखाड़ दी गयी। वहाँ बाबू कैलास सिंहने भीड़पर गोली भी चलाई। अकोढ़ी, आयर कोंठा और गोलें, शराबकी दूकानें बंद कर दी गयीं।

नोखाके कार्यकर्त्ताओंने बाबू रामजन्म राय एक हरिजन शिक्षकके नेतृत्वमें आरा सासाराम डि० बोर्डके मोकर तथा जखनीके पुलको तोड़ फोड़ कर गिरा डाला।

नोखा फिर जनताने रेलवे लाइनके तार तथा खंभोंको खात्मा किया और रेलवेपर कब्जा जमाया। खाराडीह और सासाराम स्टेशनोंको बरबाद किया। उसी दिन बिन्ध्येश्वरी लालजीके छात्रोंका दूसरा दल किसनापुर नहर बंगला और तहसील ऑफिसके कागजोंको जला आया। मकानपर कांग्रेसका झंडा भी फहराने लगा। सासाराम थानेके मड़नपुर नहरके सैफन पुलको बरबाद कर दिया गया।

दिनारा दिनारामें जमरोढ़ नहर ऑफिसके कागजात जलाये गये और नहरके डाक बंगलाका कुछ सामान तोड़-फोड़ डाला गया।

१४ अगस्तको कुदरा थानाके कार्यकर्त्ता जुलूसके साथ डाकघर आये जिसके सामानको उनने तोड़-फोड़ दिया और फिर डाकघरको जला दिया। कुदरा स्टेशन

कुदरा की भी ऐसी ही दुर्गति की। कुदरा स्टेशनपर १७ गाठें कपड़ेकी थीं और घीके भी कुछ टीन थे। सब लूट लिये गये। फिर वे रेलवे लाइन उखाड़नेमें जुट गये—वहाँ उनकी तादाद और बढ़ गयी। जब वे रेलवे लाइन उखाड़ रहे थे तब फौजी सिपाहियोंकी एक पाइलट ट्रेन वहां पहुँची। उस परसे सिपाहियोंने भीड़पर गोली छोड़ी, जिसके फलस्वरूप शकरो गाँवके एक अहीर जिनका नाम रामजन्म राय था तत्काल शहीद हो गए।

जहानाबादमें कई जगह टेलीफोनके तार काटे गये। १६ अगस्तको पुसौली स्टेशनपर लोग रेलवे लाइन उखाड़ने और पानी कलको बरबाद करनेमें लगे हुए थे कि फौजी सिपाही आ पहुँचे और भीड़को भागते न देख उनने गोलियाँ चलाईं। जिसके फलस्वरूप चार तत्काल शहीद हो गए—बीरकलांके बांका नोनियां, नसेजके रघुबीर मुसहर और औरैयाँके दो जवान जिनमें एकका नाम था केशो कांदू।

१६ तारीखको दुर्गावती थानाके कार्यकर्त्ताओंने डाकघरको जला दिया और शराबखानेको भी। वहाँसे स्टेशन एक मील दूर है, चार हजार जनता वहाँ जा

दुर्गावती थाना पहुँची और सुबहसे शाम तक स्टेशनके मकानात जलाती रही। स्टेशनसे ही उसे दो सौ टीन मिट्टीका तेल मिल गया और पचास टीन अलकतरा, तीन टीन मोम, इन चीजोंसे मकानातको सराबोर करके जनताने आग धधकायी। ऐसी भयंकर लपट निकली कि स्टेशन हातेके मकान सहित सभी चीजें नष्ट हो गयीं। कार्यकर्त्ता मुस्तैद रहे, ताकि कोई धेलेकी चीज भी घर न ले जाये। इसलिए लूट हुई ही नहीं। फिर लोग रेलवे लाइनको उखाड़नेमें लगे, उसी बीच मोगल सरायसे गोरे आये, भीड़ भागी, गोरोंने खदेड़ा। दुर्गावती नाला आड़े आया, लोग तो नाला

पार कर दरौली गांवमें जा छिपे, पर गोरे पार करते समय बेतरह फँस गये। कमांडर तो डूब गया और बाकी ११ गोरोंको दारोगाने बचा लिया।

गोली काण्डने गयाकी विद्रोह-भावनाको खूब उत्तेजित किया। दूकानें बन्द और तमाम हड़ताल। कॉटन और जूट मिल्सने जो हड़ताल की सो एक महीनासे ऊपर

गया

रही। धर-पकड़ने भी जोर पकड़ा। तब कार्यकर्त्ताओंने शहर छोड़ देहात जानेका निश्चय किया ताकि गया जिलेका गांव-गांव ब्रिटिश हुकूमतके खिलाफ उठ खड़ा हो। गया शहर फौजियोंका अखाड़ा बन रहा था। तोड़ फोड़के लिये वहां गुञ्जायश नहीं थी। तौभी शहरमें जहां-तहां टेलिग्राफ और टेलिफोनके संबन्ध छिन्न-भिन्न किये गये।

एक दिन श्री कुमार वीरेन्द्र बहादुर सिंहके यहां प्रमुख कर्मियोंकी एक बैठक हुई जिसमें श्री विश्वेश्वर मिश्र तथा श्री मिथिलेश्वरप्रसाद सिंहको जहानाबाद सब-डिविजन, श्री तारकेश्वर प्रसाद तथा श्री ब्रजकिशोर प्रसाद सिंहको नवादा सब-डिविजन, श्री मथुरानाथ तिवारीको औरंगाबाद सब-डिविजन और श्री शत्रुघ्न-शरण सिंह, श्री लालजी सहाय और डा० केशव प्रसाद सिन्हाको सदर सब-डिविजनका भार दिया गया। श्री 'खलिश' जी तथा अन्य लोगोंको भी गया रहकर और कभी अन्य स्थानोंमें भी जाकर आन्दोलनको प्रगति देनेका काम सौंपा गया। पर इसी बीच शहरमें जो ८१ गिरफ्तारियां हुईं उसके चपेटमें इनमेंसे भी कई कार्यकर्त्ता आ गये। चित्रगुप्त प्रेस और बम्बई प्रिंटिङ्ग प्रेस भी जब्त कर लिये गये।

शेरघाटीमें छात्रोंने तोड़ फोड़ शुरू किया। टेलिग्राफके तार काटनेमें उनने

सदर सबडिविजन

काफी दिलचस्पी दिखलाई।

इमामगंज, डुमरिया, गुरुआ और बाराचट्टीमें आबकारी महालकी दूकानें बन्द की गयीं। टेकारी, बेला और वजीरगंजमें तार काटे गये। पटना गया लाइनका चाकन्द रेलवे स्टेशन सामान सहित जला दिया गया। कई जगह रेलकी पटरियाँ उखाड़ी गयीं। बेला स्टेशन भी तोड़ फोड़का शिकार बना। रफीगंज और वारसली-गंज भी अछूते न रहे। फल यह हुआ कि गयासे पटना, गयासे मोगलसराय और गयासे नवादाकी रेलवे लाइन लगभग एक महीना बन्द रही।

सड़कोंका भी खूब तोड़ फोड़ हुआ। आगे-आगे सरकार खाई खन्दकोंको भरती जाती और पीछेसे जनता उन्हें जरा और चौड़ी और गहरी खोदती आती। अन्तमें थक कर सरकारने नवादासे रजौली, गयासे नवादा, गयासे शेरघाटी और गयासे

डोभीकी सड़कोंपर सात बजे शामसे पाँच बजे भोर तक जन साधारणका चलना फिरना बन्द कर दिया गया।

औरंगाबाद

औरंगाबादमें तोड़ फोड़का संगठन अन्यान्य कार्यकर्त्ताओंके सहयोगसे श्री मथुरानाथ तिवारीने किया। तिवारीजीको पहले यह शंका थी कि तोड़ फोड़का प्रोग्राम गांधोजी अथवा कार्य समितिसे अनुमोदित है वा नहीं, किन्तु काका कालेलकरका लेख पढ़कर उनकी शंकाका समाधान हो गया और वे मुस्तैदीसे तोड़ फोड़में लग गये।

सर्व प्रथम हाई स्कूलके छात्रोंने औररंगाबाद शहरमें एक जबरदस्त जलूस निकाला और कचहरीकी प्रधान इमारतपर राष्ट्रीय तिरंगा झंडा फहराया। जलूसके नायक श्री रामू पासी तुरत गिरफ्तार कर लिये गये। वहाँसे छात्रों और नागरिकोंका सम्मिलित जलूस डाकखाना पहुँचा। डाकखानाके सामान वगैरह जलाना शुरू ही किया था कि वहांके एस० डी० ओ० ने ग्रैन्डट्रङ्क रोडसे गुजरती हुई मिलिटरीको रोकवाया और उसकी सहायतासे भीड़को तितर बितर कर दिया।

दाऊदनगरके डाकखानेपर भी धावा हुआ और शराबकी भट्ठीमें आग लगाई गयी। इस अगलगीमें कई आदमी बुरी तरह जलकर घायल हो गये।

नबीनगर डाकखानेका सामान तोड़ फोड़ दिया गया और शराब-खाना बरबाद कर दिया गया।

रफीगंज थानेमें रेलकी पटरियाँ कई जगह उखाड़ी गई। टेलिग्राफके तार भी काटे गये।

जहानाबाद सबडिविजन

घोसी थानामें डाकखानेका फरनीचर तोड़ फोड़ दिया गया और कागजात जला दिये गये। वहाँकी कलाली भी नष्ट कर दी गयी। घोसी हाई स्कूलके हेड मास्टर स्कूल छोड़कर स्वतंत्रता संग्राममें शरीक हो गये और बादको गिरफ्तार कर जेल भेज दिये गये।

साढ़ो बीघा डाकघरका ताला तोड़ कर उसके कागज निकाले गये और फिर जला दिये गये। फरनीचर तोड़ फोड़ दिया गया। वहाँकी कलाली भी नष्ट कर दी गयी। हुलासगंज डाकखानेकी भी ऐसी ही दुर्गति हुई।

जहानाबादमें काफी तार काटे गये। मखदुमपुर थानेके शेरथुआ गाँवके लोगोंने टेलिग्राफका तार काटा। टेहटा स्टेशनसे लगायत करगाँव तक रेलकी पटरियाँ उखाड़ दी गयीं तथा तार और खंभोंपर हाथ साफ किये गये।

नवादा लाइनकी रेलकी पटरियाँ उखाड़ी गयीं; तार काटे गये और १४

नवादा सबडिविजन अगस्तसे ही रेलवे लाइन बन्द हो गयी।

बारसलीगंज रेलवे स्टेशनपर हमला हुआ और स्टेशनके कुछ सामान तोड़ फोड़ दिये गये।

श्रीजगलाल चौधरी लिखते हैं, "१४ अगस्तको छपरा कचहरी स्टेशनपर पहुँचा। पर वहां टिकट घरपर पिकेटिंग हो रही थी कि टिकट न बिकने देंगे। बहुत समझाने

सारनजिला पर भी पिकेटर लोगोंने राह न दी। मैंने सोचा कि गार्डसे कहकर गाड़ीपर बैठ लूंगा। पर गाड़ी आनेके पहले स्टेशनके सिगनलका लाल और हरा काँच लड़कोंने तोड़ डाला, तारके खंभोंपर चढ़ सभी 'इन्सूलेटर' फोड़ने लगे, पुलिसका जत्था आ पहुंचा, पर लड़के डरे नहीं और अपना काम करते ही गये। पुलिसवालोंने भी अधिक जोर न लगायी। ट्रेन भी बहुत लेट थी, मुझे पता लगा कि छपरा स्टेशनपर गाड़ियाँ रुकी हुई हैं, क्योंकि वहां लोग गाड़ियोंको बढ़ने नहीं देते हैं। मैंने समझा कि अब तो रेलकी यात्रा न हो सकेगी। कुछ देर बाद भीड़ हटी, लड़के भी हटने लगे। पुलिसवाले भी हटे और सिगनल आदि मरम्मत होने लगे।" श्रीजगलाल चौधरीजीके वहांसे हट जानेके बाद तोड़-फोड़ खूब जोरसे होने लगा।

छपराकचहरी रेलकी पटरियाँ उखाड़ी जाने लगी। छपरा और छपरा कचहरी स्टेशनकी रेलवे लाइन उखाड़ दी गयी। सिगनल नष्ट भ्रष्ट कर दिये गये। 'लोकोसेड घर' छपरा कचहरी और छपरा स्टेशन जला दिया गया। पर छपरा स्टेशनका मकान पक्का था इसलिये बच गया। हां, उसके सामान जल गये। छपरा और सिवानके बीच और आगे मांझी तकके स्टेशनोंको लोगोंने जला दिया। मांझीका रेलवे डाकबंगला भी जल गया। स्कूलों और कालिजको बंद कर अधिकारियोंने आशा की थी कि छात्रगण अपने घर चले जायेंगे। पर अधिकारियोंकी आशापर पानी फिर गया। दो तीन दिनके भीतर ही जिले भरके अधिकांश पोस्ट ऑफिस, सरकारी इमारतें और डि० बोर्ड आदि कई मकान जलाये गये। रेलके अभावमें लोगोंको चलने फिरनेके लिए डि० बोर्डकी सड़कोंका आसरा था, सोभी जाता रहा। क्योंकि—सड़कोंको जगहजगह काट डाला गया। किसीको पता न लगा था कि वहां क्या हो रहा है। छपरेके वकीलों और मुख्तारोंने यह तय कर लिया था कि वे कचहरी न जायेंगे जब तक देशकी परिस्थितिमें सुधार न हो जाये। कचहरी उजाड़ हो गयी। चारों ओर भयावना मालूम होने लगा। सरकारी कर्मचारी लोग चुप चाप कचहरी जाते थे

और आप ही मुकद्माकी तारीख दे आते थे। साधन रहते हुए भी अधिकारी गण अशक्त हो रहे थे। मालूम होता था मानों सरकारको लकवा मार गया हो।

१५ अगस्तको श्री महेश्वरसिंहके नेतृत्वमें हजारों आदमी तोड़ फोड़का प्रोग्राम पूरा करनेके लिये निकले। इस जन समूहमें ऐसे लोगोंकी कमी न थी जो इस सोनपुर लूट पाटको अच्छा समझ रहे थे। सबसे पहले रजिस्टरी औफिसमें स्वराजी ताला लगाया गया। उसके सामान जलाये गये और वहांकी तिजोरीको बाहर फेंक दिया गया। वहाँसे भीड़ रेलवे क्वार्टरोंकी ओर बढ़ी। जितने अर्ध गोरे थे भयसे भाग गये और मैगजीनमें जाकर छिप रहे। उनके घरको सूना पा चोर उचक्केकी मनोवृत्ति वाले उनमें जा घुसे और उन घरोंसे तिनका तिनका उठा ले गये। बरतन बासन, कपड़े लत्ते, अन्न पानी, पलंग-कुर्सी कुछ भी नहीं छोड़ा। उधर तो इस तरहकी चोरी छिपारी चल रही थी, इधर भीड़ रेलवे 'सेड'के सामान तोड़-फोड़ रही थी, हजारोंकी भीड़ इकट्ठी हो गयी थी। कितने रेलवे मिस्त्री श्री महेश्वरसिंहके सलाह कार ही नहीं बल्कि मददगार बन रहे थे। 'सेड' घरके ताले तोड़क इंजन मरम्मत करनेका सारा सामान उठा लिया गया और उन्हीं औजारोंसे रेलकी लाइन उखाड़ दी गयी। नयी बनी हुई मोगल चैनल लाइन भी उखाड़ दी गयी और उसीमें इंजिन चला दी गयी, एक नहीं चार चार। एकके बाद दूसरी सिटी देती हुई आगे बढ़ी और धड़ाम धड़ाम गिरती गयी। वहांसे भीड़ मालगोदाम आयी। पुलिस वहाँ मौजूद और काफी तादादमें। पर वह चुपचाप सब कुछ देखती रही। मालगुदामसे लोग चावल, मकई, चना आदि उठाने लगे। चार डिब्बोंमें आग लगा दी गयी जिसमें सारे कागज्जात और रजिस्टर वैगरह स्वाहा होने लगे। अब पुलिस घबड़ायी, उसने अपनी बंदूकें संभाली। लोग भागने लगे, पुलिसका साहस बढ़ा। वह निशाना लेने लगी कि श्रीमहेश्वर सिंहने भीड़को ललकारा, सबोंको डटे रहनेका आदेश दिया। हाँ, लुटेरापनकी निंदा की। लोग जम गये और पुलिसका साहस टूट गया। फिर लोगोंने पहाड़ी चकके नजदीकके पुल और लाइनको बरबाद कर दिया। दोपहर हो रही थी। लोग भूखे हो रहे थे इसलिए सबके सब घरको विदा हुये। कुछ तो बाजार होकर चलने लगे कुछ नीचे रेलवे लाइन होकर और कुछ प्लैटफार्म होकर। प्लैटफार्मपर चलने वाले लोग जब पानीके टंकीके पास पहुँचे तब पीछेसे एकाएक उनपर गोली छोड़ी जाने लगी। श्री महेश्वरसिंह रुक गये और घूम करके देखने लगे कि किधरसे गोली आ रही है। उनने हाथ उठाकर भागते हुये लोगोंको कहा—

शहीद महेश्वर सिंह,
सोनपुर

शहीदों का स्मारक,
सीतामढ़ी
(मुजफ्फरपुर)

सोनपुर प्लैटफार्म के तीन शहीद

शहीद सजम्मुल हुसैन,
सोनपुर
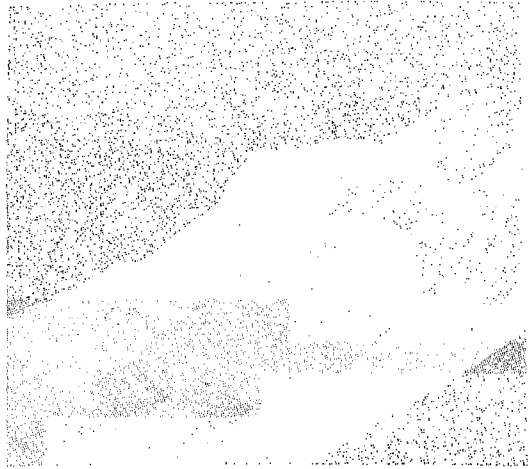
शहीद द्वारिका सिंह,
सोनपुर
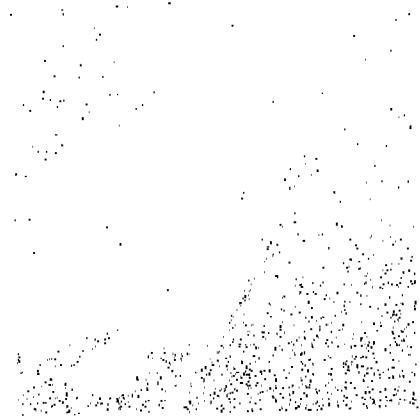
कोई न भागे हरेक आदमी डट जाय। उसी समय उन्हें गोली लगी, वे इन्कलाब जिन्दाबादका नारा बुलंद करने लगे। फिर एक एक करके दो गोलियाँ और लगीं जिससे वे तत्काल शहीद हो गये। साथ साथ जा रहे थे मौलवी तजम्मुल हुसेन। गोलीकी आवाज सुन प्लैटफार्मसे रेलवे लाइनपर वे आये थे ही कि उनके मर्मस्थानमें गोली धंसी और वे फौरन शहीद हो गये। श्री द्वारिकासिंहको सख्त चोट आयी थी; पर थे वे जिन्दे थे इसलिये लोग उन्हें दवा दारूके लिये नावसे पटना ला रहे थे कि गंगाकी गोदमें उनका स्वर्गवास हो गया। लोग उन्हें वापस सोनपुर ले आये जहां तीनों शहीदोंकी आर्थियां साथ साथ निकली। अपूर्व दृश्य था। हिन्दू मुसलमानोंके जलूस साथ साथ चल रहे थे और हिन्दू-मुसलमानके जनाजे भी साथ साथ ले जाये जा रहे थे। एक ही जगह तीनोंके संस्कार हुये अपने अपने ढंग से; पर एक ही भावनासे प्रेरित होकर। इस गोलीकांडने लोगोंको अजीब ढंगसे उत्तेजित कर दिया। कुछ नासमझ लोग ईसाइयोंकी कब्रगाहमें घुस गये। मकबरेको तोड़ने लगे और गड़ी लाशोंको उखाड़ फेंकनेकी कोशिश करने लगे।

लोगोंने पलेजाघाट और बनवारचकमें चीनी वैगरह जो माल मिला सो लूट लिया। जेटियां डुबा दीं। शीतलपुर स्टेशनको जनताने जला दिया। अगल-बगलकी रेलवे लाइन उखाड़ फेंकी। दिघवारामें तार काट फेंका गया और रेलवे लाइन छिन्न-भिन्न कर दी गयी।

बनियापुरमें १५ अगस्तको बाबू शीतलसिंह, फुलेना त्रिपाठी, श्री गोपाल त्रिपाठी के नेतृत्वमें एक जलूस डाकखाने पहुँचा, लोगोंने वहाँके तार काट डाले और सारे फरनीचर और कागजात इमारत सहित जला दिये। वहाँ रामपुर कोठी है हथुआ राजकी। उसका प्रबन्ध सरकारके हाथमें है। वहाँ काफी अन्न था जिसे लोगोंने सरकारी माल समझकर लूट लिया। लहलादपुर, दयालपुर और सहाजीतपुरके डाकघर जला दिये।

एकमाके कार्यकर्त्ताओंने रेलकी पटरियां उखाड़ दीं, परिणाम स्वरूप जब पलटनकी गाड़ियां वहां पहुँचीं तो आगे बढ़ न सकीं और रातभर उन्हें एकमा एकमा स्टेशनपर रुकना पड़ा। उन्हें भोजनकी जरूरत हुई। पुलिसके लाख सर पटकनेपर भी एकमा बाजारसे कोई चीज पलटनोंके लिये नहीं मिल सकी, दूसरे दिन लाइन मरम्मत करती हुई वह गाड़ी आगे बढ़ गयी। दूसरी गाड़ी आयी, उसे भी रुकना पड़ा क्योंकि फिर लाइन तोड़ दी गयी थी।

उसे भी रात भर एकमा ठहरना पड़ा, जहां बाजारने उसे कुछ नहीं मिला।

डिस्ट्रिक्ट बोर्डकी सड़कें भी तोड़ दी गईं। छपरासे और सिवानसे आनेवाली सड़कोंपर जो प्रमुख पुल थे तोड़ दिये गये। बादको एकमा और चैनपुर स्टेशन जला दिये गये।

दाउदनगर स्टेशनसे गोरोंकी एक गाड़ी जा रही थी। एक जगह भीड़ देख उसने गोली चलाई और फागूगीर तथा कामतागीरको मार डाला। फिर तो लोग

मांझी

उबल पड़े। और मांझीके कार्यकर्ताओंने तोड़-फोड़को उग्र रूप दे दिया। एक ही दिन वे रेलवे स्टेशन डाकबंगला, डाकखाना आदि स्थानोंमें गये और कमरेमें घुस-घुसकर उनके कागजात उनने निकाले, फरनीचरका ढेर लगाया और सबमें आग लगादी। उनने मकानोंको भी जला दिया, मुस्तैद रहे, ताकि इन संस्थाओंकी चीजें जलनेसे बची न रहें। सरकारी अमले खड़े-खड़े तमाशा देखते रहे, उनमेंसे किसीको चूं करनेकी भी हिम्मत नहीं हुई। वहांकी रेलवे लाइन भी हटा दी गयी थी, तार भी काट दिये गये थे, इसलिये रेलका आना-जाना एकदम बंद हो गया था।

गरखा थानेके आन्दोलनका नेतृत्व श्रीजगलाल चौधरीके हाथ था। वहाँ संगठित रूपसे तोड़-फोड़का काम हुआ। छपरे और मढ़ौरेसे आनेवाली सड़कें

गारखा

जगह-जगह काट दी गयीं और डाकखाना बंदकर दिया गया। हां, डाकखानेमें जितनी चिट्ठियां थीं और मनिआर्डर थे, सभी पानेवालोंके घर पहुँचा दिये गये।

१५ अगस्तको मढ़ौरा स्कूलके छात्रों और आस-पासकी जनताने पोस्टऑफिसके कागजात जला डाले और फरनीचरको तोड़-फोड़ दिया, तार काटकर तार-

मढ़ौरा

घरको बरबाद कर दिया। फिर वे मालगोदाम रेलवे स्टेशन आये जहाँकी बहुतसी चीजोंको जला दिया। मढ़ौरामें सारन इन्जीनियरिंग वर्क्स है जहाँ लड़ाईके बहुतसे सामान बनते थे और लड़ाईके लिये कारीगरोंको शिक्षा भी दी जाती थी, इस कारखानेपर चढ़ाई करके आन्दोलनकारी चाहते थे कि उसको नेस्तनाबूद करदें। अधिकारी वर्गको इसका अन्दाज लग गया था, इसलिए उसने कारखानेकी हिफाजतके लिए १५ हथियारबंद सिपाही मंगा रखे थे, साथमें थे एक डिप्टी मजिस्ट्रेट। इसलिए आन्दोलन कारियोंने पहले थानापर कब्जा करके कारखानेपर चढ़ाई करनेकी योजना बनाई।

परसा

१५ अगस्तको थानेपर झंडा फहराकर परसाके कार्यकर्त्ताओंने डाकखानापर कब्जा किया। बादको डि० बोर्डकी सड़कोंके प्रधान-प्रधान पुल तोड़ डाले गये। टेलिग्राफके तार और खंभे बेकार कर दिये गये। १८ अगस्तको पता लगा कि रेवा घाट होकर मुजफ्फरपुरसे मिलिटरी आ रही है। खबर पाते ही झुंड-के-झुंड लोग भाला, गंड़ासा और गुलेल वगैरह लेकर नारे लगाते हुए रेवा घाट पहुँच गये। वहाँ मालूम हुआ कि घाटपर जो सामान उतरा है, उसे एस० पी० ने परसाके दारोगाके वास्ते भेजा है। तुरत सामानकी तालाशी ली गयी, एक बक्साके अन्दरसे राइफलकी एक हजार गोलियां और कितने ही छर्रे निकले, लोग भड़क उठे और सभी सामानको गंडक नदीमें बहा दिया।

मशरक

मशरक थानेमें गाजापट्टीसे लेकर मढ़ौरा तक जगह-ब-जगह रेलकी पटरियां उखाड़ फेंकी गयीं और तार काट डाले गये। बादको मशरक थाना और डाकघरमें ताला लगा दिया गया। फिर काफी संख्यामें लोगोंने रेलवे स्टेशनपर धावा किया। कल-पुर्जे और कागजातको बरबाद कर दिया, फिर स्टेशनमें आग लगा दी।

सिवान सबडिविजन

१४ अगस्तको ११ बजे दिनमें शहीद छट्ठू गीर और शहीद झगड़ू रविदासकी लाश अस्पतालसे मिली। शहरके सब सड़कोंसे लगभग दो हजार लोगोंने सजधज कर उनका जलूस निकाला। श्मशानसे लौटकर डी० ए० वी० कालिज ग्राउन्डमें शोक सभा मनायी गयी। उसी दिन संध्या समय बाहरसे कुछ कार्यकर्त्ता आगये। दूसरे दिन हाई स्कूल होस्टलके पुराने हातेमें सभा हुई। दस बजे एक जलूस निकला जो सिवान स्टेशन आया, वहाँ तार काट डाले और स्टेशनके कमरोंमें ताले लगा दिये और मकानपर झंडे फहरा दिये। वहाँसे लोग पोस्ट ओफिस आये और उसपर झंडा फहराकर जब उसका ताला तोड़ने लगे तब एस० डी० ओ० हथियार बंद पुलिस लेकर वहाँ आ धमके और तुरत लाठी चार्जका हुक्म दिया। लोगोंको काफी चोट लगी। जिनमें बाबू नन्दकिशोर नारायणजीका नाम उल्लेखनीय है।

बसतपुर

बसतपुरकी जनताने निश्चय किया कि योगापुर कोठीके साहबको हटा दिया जाय। उस निश्चयके अनुसार काफी संख्यामें लोग वहाँ गये। बीच-बीचमें जो गांव मिलता वहाँ सभा करते और कुछ लोगोंको शामिल कर लेते। कोठीके कर्मचारियोंने लोगोंको रोका पर लोग कोठीपर चढ़ गये और वहाँ झंडा

फहरा दिया। फिर उनने साहबसे कहा कि आप भारतसे चले जाइये। पहले तो साहब तने रहे पर जब अपार जनताका रुख देखा तब घबड़ा गये, फिर गांधीकी जयजयकार करते हुए उनने जनतासे कोठी खाली करनेके लिए एक सप्ताहकी मोहलत मांगी। जनता विदा हो गयी पर जाती-जाती कोठीकी काफी चीजें बरबाद करती गयी। बादको कुछ लड़कोंने मशरक और सिधौलिया जाकर रेलवे लाइनको उखाड़ा, तार और टेलीफोनको खराब कर दिया।

१५ अगस्तको रजिस्टरी ऑफिसमें ताला लगा दिया। बादको गोरोंका आगमन रोकनेके ख्यालसे डि० बोर्डकी सड़कें काट डालीं।

दरौली

१८ अगस्तको दरौली आश्रमपर लोग इकट्ठे हुये जिनमेंसे कुछ लोग एक दल बनाकर मैरवा चले गये और कुछ लोग वहीं रह गये, जिनमें छात्रोंकी काफी तादाद थी। ये सभी रजिस्टरी ऑफिस आये और वहाँके कागजात इकट्ठे करके जला दिया। मकानमें भी आग लगा दी पर पक्काका मकान था इसलिये नुकसान न हुआ। बादको उनने डाकखानेपर चढ़ाईकी और उसके कागज-पत्रको जला दिया। फिर उनने जहाज घाटके स्टेशनको जला दिया। वहाँसे चलकर उनने डि० बोर्डके ओवरसियरके ऑफिसको जला दिया।

मैरवा

मैरवाके कार्यकर्त्ताओंने रेलवे लाइन हटायीं, तार काटे, फिर मैरवा स्टेशनका सारा सामान तोड़-फोड़ डाला। बादको भाटा पोखर स्टेशन जला दिया गया। सिगनलकी पँखियां नोच डाली गयीं। झरही नदीमें रेलवेका जो पुल है, सो जला दिया गया। मैरवा स्टेशनका रेलवे गोदाम लूट लिया गया। जब लोग स्टेशन लूट रहे थे उस समय पुलिसने कोई चारा न देख गोली चलायी, जिससे रामदेनी मारे गये। ठेपहाँ ग्रामके सामने सोनामें जो पुल है उसमें आग लगा दी गयी और डि० बोर्डके सड़कोंको कई जगह काट दिया गया। जंगल पांडेयने कुछ कार्यकर्त्ताओंकी मददसे एक माल गाड़ीपर कब्जा किया जिसके सहारे भाटा पोखर तथा मैरवाके बीचकी रेलवे लाइन छिन्न-भिन्न कर दी गयी।

सिसवन

श्री जगलाल चौधरी लिखते हैं:—"सिसवनके निकट लगभग पाँच बजे संध्याको पहुँचा तो देखा कि कुछ लड़के तारके टुकड़े लिये आ रहे हैं। वे मुझे पहचानते न थे। मैंने उनसे पूछा कि वे कौन हैं, तार कहाँ पाये और कहाँ ले जायेंगे। मालूम हुआ कि वे सिसवन स्कूलके लड़के हैं, उन्होंने तार इसलिए काट डाले कि कहीं खबर न जाने पावे। सब तार अपने घर ले

जाकर घरके कामोंमें लायेंगे। मैंने उन्हें समझाया कि समाचार रोकनेके लिए तार काट डालना तो ठीक है। पर उन्हें अपने घर ले जाना और अपने काममें लाना चोरी है। अतः उन्हें उचित था कि सब तार नष्ट कर डालते ताकि वे समाचार भेजनेमें फिर काम न लाये जा सकें। लड़के मेरी बात समझ गये और निकटके नदीमें सारे तार फेंक दिये। इसके बाद उनने मेरा नाम और पता पूछा—नाम जानकर मेरी जयजयकार करते हुए घर चले गये। सिसवन पहुँच कर मैंने देखा कि लोग डाक बंगला दखल किये बैठे हैं। उन्होंने मेरा अच्छा स्वागत किया और कहा कि वे थानोंको दखल करना और जला देना चाहते हैं। मैंने उन्हें समझाया कि दखल तो करना चाहिये, पर उसे दखल करने वे ही जायं जो प्राण दे सकें, क्योंकि सरकार आसानीसे अपना थाना दखल करने नहीं देगी और हमलोगोंको अस्त्र-शस्त्रका प्रयोग करना नहीं है। हमारी लड़ाई तो अहिंसक है। अब रही जलानेकी बात। थानेको जला देना भी मैं अनुचित नहीं समझता, पर यह खतरनाक इसलिए भी हो कि गांव भी जल जा सकते हैं। कमसे कम थानेके कर्मचारियोंकी सम्पत्ति तो जरूर जल जायगी और वे कर्मचारी भी कहां रहेंगे। इससे अच्छा यह होगा कि कर्मचारियोंका वासस्थान छोड़ बाकी मकान और उसमेंके सामान तोड़-फोड़ दिये जायं। लोगोंने मेरी बात मान ली। मैं थानेवालोंसे कुछ बातें करना चाहता था पर वे आये नहीं। मैं तो उनसे नौकरी छोड़नेकी अपील करता, पर वे डर रहे थे, अतः मुझे निराश होना पड़ा।"

बादको सिसवन थाना बरबाद कर दिया गया और डाकघरपर भी कब्जा कर लिया गया।

रघुनाथपुर १६ अगस्तको थानेके अन्दरके टेलीग्राफके खंभे और तारको वहांकी जनताने तोड़-फोड़ फेंका था। लोग डाकघरको पहले ही बन्द कर चुके थे। हां, पत्र वा मनिऑर्डरकी डेलिवरीका इन्तजाम कर रखा था।

महराजगंज महराजगंजके कार्यकर्त्ताओंने तोड़-फोड़के कामोंको आगे बढ़ानेके लिए एक अलग ध्वंसात्मक कमिटी बना रखी थी। १६ अगस्तकी घटना है। इस कमिटीकी ओरसे एक बड़ा जुलूस निकला जो थाने आया और उसपर झंडा फहरा कर उसे दखलमें लानेकी कोशिश करने लगा। थानावालोंने जन समूहसे दो घंटेका समय मांगा; कहा कि तब आप लोगोंकी जो आज्ञा होगी हमलोग करेंगे। जुलूस घूमा और निकटके डाकखानापर पहुँचा। लोगोंने डाकखानेपर राष्ट्रीय झंडा

फहराया और जो कागजात मिले सबको अलग हटाकर जला दिया। डाकखानेके और सामान भी जला दिये गये। वहांके तार भी तोड़ दिये गये। वहांसे लोग रेलवे स्टेशन पहुंचे जहां उनकी संख्या काफी बढ़ गयी। लोगोंने वहाँ झंडा फहराया और फिर स्टेशनके मकानमें आग लगा दी। वहाँके सारे सामान जल गये। स्टेशनपर इंजिन खड़ी थी जिसे लोगोंने बुरी तरह बरबाद कर दिया। वहाँसे सभी रजिस्टरी ऑफिस आये। उसपर भी झंडा फहराया गया और अपना ताला लगा दिया गया। बादको डि० बोर्डका मकान दखलमें लाया गया और उसपर कांग्रेसका झंडा फहरा दिया गया। फिर जुलूस थानेकी ओर मुड़ा।

गोपालगंज सबडिविजन

१६ अगस्तको कुचायकोटके कार्यकर्त्ताओंने सासामुसा और जलालपुरके रेलके तारोंको काट दिया और कुछ खंभोंको बरबाद कर दिया। फिर १८ अगस्तको बहुतसे लोग सासामुसा स्टेशनपर इकट्ठे हुए और स्टेशनको जला दिया। बहुत दूर तक रेलवे लाइनको छिन्न भिन्न कर दिया। टेलीफोन और तारके लाइनोंको खराब कर दिया। फिर दाहा नदीपर जो रेलवेका पुल है उसे तोड़नेकी पूरी कोशिश की। मगर नाम लेने भरको ही कामयाबी मिली।

मीरगंज

मीरगंज थानेमें श्रीरामनगीना रायने अगस्त क्रान्तिकी आग सुलगायी और फिर श्रीप्रभुनाथ तिवारीके साथ मिलकर आंदोलनकारियोंका संगठन करने गये। हथुआ हाई स्कूलपर राष्ट्रीय झंडा फहराया गया और विद्यार्थियोंने हड़ताल मनाई। स्कूलके अधिकारियोंने झंडा हटा दिया और फिर आज्ञा दी कि हथुआ राजके कर्मचारियोंके लड़के स्कूल आया ही करें। हथुआ राज छोटा है पर उसपर अंग्रेजी हुकूमतकी छाप खूब पड़ी है। उसके अमलोंकी हरकतसे छात्रोंमें जोश फैल गया वे स्कूलमें घुस गये। स्कूलके कीमती फोटोको नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और स्कूलमें काफी नुकसान पहुंचाया। फिर उनने डाकखानेके तार काट फेंके और खंभोंको उखाड़कर तोड़ दिया। अब हथुआ दुनियासे अलग होगया और वहाँसे लड़के तोड़-फोड़के काममें शरीक होनेको सिवान रवाना हुये।

बरौली

बरौली छोटा थाना है और सोया रहता है पर अगस्तकी क्रान्तिमें इसने भी करवट ली और कारण बना विद्यार्थियोंका प्रचार। इनका एक जलूस दक्षिणसे निकला और बरहीमा पोस्ट ऑफिसको दखल कर लिया। उसके कागजात नन्हकू दुबे और श्रीजमुना तिवारीके जिम्मे रहे। कुछ दूरपर पी० डब्लू० डी० का डाकबंगला था। उसको दखलमें लाकर कांग्रेसका दफ्तर बना दिया।

कटेया

कटेया थानामें डाकघर बंद्कर दिया गया और उसमें कांग्रेसका ताला लगा दिया गया। मकानपर झंडा फहरा दिया गया। लोगोंने करीब चार मील तक तारके खंभे उखाड़ दिये और तार काट डाले। लोगोंको आतंकित करनेके लिए पुलिसवालोंने हल्ला करा दी कि छः आदमीके नाम वारंट है। इस बातको सुनकर हजारों आदमी इकट्ठे होगये, जिनके सामने उनलोगोंको मालायें पिन्हायी गयीं और उनकी आरती उतारी गयी, जिनके नाम वारंट कट जानेका संदेह था। लोगोंने बहुत देर तक पुलिसकी प्रतीक्षा की पर जब वह न आयी तब खुद छः आदमियोंको थाना पहुँचा दिया, फिर लोगोंने हथुआ राजकी मालगुजारी और सरकारकी चौकीदारी बंद करनेका निश्चय किया।

बैकुंठपुर

१५ अगस्तसे १७ अगस्तके भीतर रेल और तारके लाइन और सड़क बरबाद की गयी, कई पुल भी तोड़ डाले गये, १८ अगस्तको राजापट्टी डाकखानेपर दो जत्थोंने एक साथ धावा किया, ऑफिसके कुछ कागजात जला डाले गये और ऑफिसमें ताला लगा दिया गया। जब भीड़ कुछ आगे बढ़ी तब बाबू राजेंद्रप्रसादके अमलोंने स्वयंसेवकोंको लाठियोंसे पीटा। उन्हें डरानेके लिए कोठीसे झूठी फायरिंग भी की गयी।

मुजफ्फरपुर

मुजफ्फरपुर शहरमें तोड़ फोड़का कोई खास काम नहीं हुआ। जहाँ-तहाँ टेली-फोनके तार काटे गये और जी० बी० बी० कालिजके भी कुछ कागजात बरबाद कर दिये गये। १४ अगस्तको शहरमें गुरखे, बलूची और गोरोंकी फौज पहुंच गयी। फलतः आन्दोलनका क्षेत्र शहर: छोड़ देहात बन गया।

मुफस्सिल

मुजफ्फरपुर मुफस्सिल थानेमें कांटी स्टेशनपर एक बार और तोड़ फोड़ हुआ। १५ अगस्तको जिस रेलवे लाइनको अधिकारियोंने मरम्मत करवा लिया था उसे आस पासके गांववालोंने फिर छिन्न भिन्नकर दिया। उन लोगोंने रेलोंको हटाकर इधर उधर फेंक दिया और पटरियोंको उखाड़ कर जला दिया। फिर उनने कांटी डाकघरको बन्द कर दिया। यद्यपि रतनपूरा, सेरना, ढेमहां, कूसी और कांटीके कितने ही यहांके तोड़ फोड़में शामिल हुए; लेकिन सबसे ज्यादा बहादुरी दिखलायी कांटीके चतुर्भुज प्रसादने, जिनने जोशके साथ काम किया और शानके साथ सब जगह कबूल किया।

पारू

पारू थानेमें मुजफ्फरपुरसे रेवा जानेवाली सड़कमें सरैयांका पुल तोड़-फोड़का शिकार बना। तिलविस्ता, पगाहिया, रेपुरा और

बसतपुरमें सड़कें काटी गयीं। टेलीग्राफके तार भी काट दिये गये।

सकरा थानामें तेपड़ी नामका एक गांव है। इस गांवके निवासियोंने तोड़-

सकरा फोड़के कामोंको खूब आगे बढ़ाया। पूसाके कार्यकर्त्ताओंके साथ मिलकर पूसा कृषि क्षेत्रके सामानादिको नष्ट किया और पूसा स्टेशनके पासकी रेलेवे लाइन उखाड़ी।

श्री चन्द्रेश्वर प्रसाद सिंह उर्फ कुवंरजीके नेतृत्वमें सकरा हाई स्कूलके विद्यार्थियों और जनताका एक जलूस निकला, जिसने सबसे पहले रजिस्टरी आफिसपर कब्जा किया; तार काटे, इनसूलेटर फोड़े और रेलवे लाइन उखाड़ हटायी। दूसरा जलूस जगदीशपुर पद्मनगरीके विद्यार्थियों और जनताका था, जिनने सिलौत स्टेशनपर धावा किया। स्टेशनके सारे सामान बरबाद कर दिये। लाइन उखाड़ी, तार काटे और रेपुरा गांवके पासके एक रेलवे पुलको तोड़ दिया। बखरी, रैती, ईंटहा, डबहा आदि ग्राम वासियोंका तीसरा जलूस ढोली कोठीपर चढ़ आया। कोठीके मालिक मि० डैनबीने आत्म समर्पण कर दिया। सोनबरसा स्कूलके विद्यार्थियों और जनताने सोनबरसाके जबरदस्त पुलको बरबाद कर दिया। एक जलूस पिलखी, बेभा, सकरा, सिमरा, पीअर आदि ग्राम वासियों तथा नरसिंहपुर खादी भंडारके कार्य कर्त्ताओंका निकला। जिसने पोस्ट आफिसके तार काटे और स्टेशनके पासकी रेलकी पटरियाँ उखाड़ीं। इस जलूसके लोगोंके सरपर बहुत देर तक हवाई जहाज मड़राता रहा। पर लोगोंका हाथ रुका नहीं; तोड़ता फाड़ता ही रहा।

मीनापुर थानेमें तोड़फोड़ आकर्षक रहा मुख्यतः विद्यार्थियोंके लिये। १५ अगस्तको उनने रामपुरहरिके डाकघरपर धावा बोल दिया। रुपये लूटे, कागज जलाये और

मीनापुर पोस्ट-मास्टरको अपने घर विदा कर दिया। उसी दिन शाम को एक बड़ी भीड़ डिस्ट्रिक्टबोर्डका पुल तोड़नेके लिये रामपुरहरिके स्कूलके पास इकट्ठी हुई। तोड़-फोड़ होने लगा। इसी समय लॉरीपर अमरीकन सैनिक वहां आ पहुंचे। उनने भीड़को हट जानेके लिये कहा। जवाबमें भीड़की ओरसे कुछ रोड़े चले। बस। उधरसे तुरत बन्दूकें गरज उठीं। श्री बिसुनदेव, पटवा रामपुरहरिके, रमण राय, छपराके, और किशोर शाही रामपुरके शहीद हुए।

थाने भरमें इस गोलीकाण्डकी खबर पहुंच गयी। १६ अगस्तको सभी कांग्रेस अधिकारी घटनास्थलपर पहुंचे और मामलेकी पूरी जांच करके उनने एक शोक-सभा बैठाई और शहीदोंको श्रद्धांजलि अर्पित की।

कटरा कटरा थानाके कार्यकर्त्ताओंने औराई-कटरा रोडको बरैठा और औराईमें काट दिया और सिहवारा-कटरा रोडका एक पुल बुधनारामें नष्ट कर दिया। मुजफ्फरपुर-दरभंगा सड़कको भी लोगोंने दुर्गम बना दिया।

शाहबगंज साहबगंजके कार्यकर्त्ताओंने साहबगंज-मोतीपुर सड़कका पुल जो राजेपुरके पास है तोड़ दिया। फिर देवलिया रोडको काट दिया। उनने नारायणी नदीके बांधपर पेड़ोंको काट गिरा दिया।

सीतामढ़ी सबडिविजन सीतामढ़ीमें कई जगह रेलकी पटरियाँ उखाड़ दी गयीं। तार तो काफी काटे गये। एक रुन्नीसैदपुर(?)... एक रुगौलीमें ही ५०० गज तार काटा गया। १४ अगस्तको जो गाड़ी सीता-मढ़ी आयी सो तब तक नहीं गयी जब तक एमरी साहबके शब्दोंमें भारतको फिरसे नहीं जीता गया। स्टेशनपर सीतामढ़ीके लोगोंकी खास नजर रही। पानीकी टंकी फोड़ दी गयी। इंजिनको बेकार कर दिया गया। सर-कारी डाक बंगलेको भी नुकसान पहुँचाया गया। केवासीके निवासियोंने डिस्ट्रिक्ट-बोर्डकी सड़कको एक जगह इंच इंच जमीनके बराबर कर दिया और उसपर पानी पटा पटाकर वहाँ दलदल बना दिया। पंथपाकरके ग्रामीणोंके लिये तार काटना सामुहिक खेल सा हो गया था। एक दिनमें बरियारपुरसे सीतामढ़ी स्टेशन तकके तार उनने काट गिराये। तारके खंभे भी उखाड़ गिराये। इन्सुलेटर फोड़ डाले।

मेजरगंज १७ अगस्तको लोगोंने यहाँ तोड़ फोड़का काम शुरू किया। तार काटे, रेलकी पटरियाँ उखाड़ीं, सड़कें काटीं और पुल तोड़े। १७ तारीखको ढेंग स्टेशनपर धावा हुआ और कुछ तोड़-फोड़ भी। थाना काँग्रेस कमिटीके मंत्री श्री रामपरीक्षण सिंहने एक जलूस लेकर रीगा फैक्टरीपर धावा किया। फैक्टरीकी कुछ चीजें भी लोगोंने लूटीं। मोकराहा कोठीपर भी गाँववालोंने चढ़ना चाहा पर कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंने वैसा करनेसे उन्हें रोक दिया।

एक दिन सीतामढ़ीके एस० डी० ओ० गोरी पलटनके साथ बैरगनियाँ जा रहे थे। रास्तेमें मेजरगंज पड़ता था वहाँ पहुँचते ही १० हजार आदमी लाठी सोंटा लेकर इनका मुकाबला करनेको तैयार हो गये। एस० डी० ओ० ने और स्थानीय कार्यकर्त्ताओंने उन्हें काफी समझाया बुझाया तब लोग उनकी राहसे हटे।

बेलसंड बेलसंड थानेमें यों तो १० तारीखसे ही तार काटना शुरू हो गया था, पर यातायात भंगका काम १६ अगस्तसे जोर पकड़ने लगा। बेलसंड-सीतामढ़ी, बेलसंड-परसौनी, मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी, बेलसंड, सईदपुर आदि

सड़कें कई जगह काट दी गयीं और कई जबरदस्त पुल भी बरबाद हुए।

वैरंगनियाँ

१५ अगस्तसे वैरंगनियाँमें रेल तारका उखाड़ना काटना शुरू हो गया। एक हफ्ता तक वैरंगनियाँ होकर रेलगाड़ी गुजर न सकी।

सुरसंड

सुरसंडके कार्यकर्त्ताओंने डिस्ट्रिक्ट बोर्डके कुछ पुल तोड़ दिये और उन सड़कोंसे सवारीका आना जाना असंभव-सा हो गया। लोग पोस्ट ऑफिस गये और तार काट आये। आबकारी विभागके कागजात जला दिये गये। भट्ठी खानेके पीपे तोड़ डाले गये और शराबकी बिक्री बन्द कर दी गयी। कांजी हाउस जिसे फाटक भी कहते हैं तोड़ दिया गया।

शिवहर

१४ अगस्तसे शिवहर थानेमें तोड़ फोड़ शुरू हुआ। सड़कें कटीं, पुल टूटे और शिवहरसे परसौनी तक तारका नामो निशान न रहा।

हाजीपुर सबडिविजन

हाजीपुर थानेमें १३ अगस्तको ही बिद्‌पुरके स्टेशन मास्टरको खबर दी गयी कि लाइन उखाड़ी जा रही है। ट्रेनको लाइन क्लियरकी (Line clear) सूचना न दें। मगर उसने ऐसा नहीं किया। और ट्रेन बिद्‌पुरके पास ही लाइनसे हट गयी। जमीनमें उसका पहिया धंस गया। खैरियत हुई कि कोई हताहत नहीं हुआ। उसके बाद तो ट्रेनका आना जाना बिलकुल रुक गया। और कई जगह लाइन उखाड़ दी गयी। तार काटना, तारके खंभे गिराना तो खेल सा हो गया।

इधर देहातमें घूम घूम डाक्टर गुलजार प्रसाद, प० जयनन्दन झा, श्री विन्ध्य-वासिनी प्रसाद सिंह और इस थानेके प्रमुख कार्यकर्ता श्री चन्द्रिका झा, अक्षयवट राय जनताको जगा रहे थे। फलस्वरूप १४ अगस्तको कई हजारका जत्था बिद्‌पुर रेलवे स्टेशनपर आ धमका। स्टेशन जला दिया गया। लाइन मरम्मत करनेवाले कुछ मिस्त्रीलोग आये जरूर। मगर तूफानमें उनका भी होस ठिकाने न रहा। लाइन तब मरम्मत करनेके बजाय उसे बरबाद करनेवाले सामान देकर ही वे चले गये। एक अधिकारीने ही टेलिफोनकी औटो मशीन स्वयंसेवकोंको देदी थी जो बादमें पुलिसके भयसे बरबाद कर दी गयी। बिद्‌पुर पोस्ट आफिसपर भी रेड किया गया। बिद्‌पुर स्टेशन जानेवाली सड़क जो ३२ फीट चौड़ी थी काटकर बन्द कर दी गयी।

हाजीपुर शहरमें छात्रोंमें काफी जोश था। हाई स्कूलके शिक्षक श्री अक्षयकुमार सिंह इस्तीफा देकर उनका नेतृत्व कर रहे थे। १४ अगस्तको छात्रोंका एक जलूस

हाजीपुर शहर स्कूल पहुँचा। इस जलूसमें पं० चन्द्रभूषन तिवारी और अक्षय बाबू भी शामिल थे। अक्षय बाबू चाहते थे कि स्कूलके कागजात बरबाद हों प शान्ति नष्ट न होने पाये। और हुआ भी ऐसा ही। स्कूलके सारे कागजात जला दिये गये और कोई दुर्घटना नहीं हुई। दूसरे दिन कुछ लोग हाजीपुर रेलवे स्टेशनपर टूट पड़े। स्टेशनपर खड़ी एक पैसेञ्जर ट्रेनकी इंजिनको लोगोंने तोड़ फोड़ कर बेकार कर दिया। एक फर्स्ट क्लास और एक थर्ड क्लासके डब्बोंको भी तोड़ ताड़ दिया। उनने टिकट आदि सामान लूट लिये और जला दिये। उसके बाद माल गाड़ियोंकी बारी आयी। कंटों डब्बोंको तोड़-तोड़ कर लोग हजारोंका सामान लूट-लूट कर घर भरते रहे। एक बार एक हवाई जहाज बहुत नीचेसे मड़राता हुआ आया। लोग भागने लगे मगर बिना कुछ किये जब वह लौट गया तो लोग फिर निर्भय होकर लूट पाटमें जुट पड़े। एस० डी० ओ० को खबर मिली तो वे भी मोटर लेकर आये पर दृश्य देख चुप-चाप लौट पड़े। वहाँका लूट पाट खत्म कर लोग दूसरे जलूसमें शामिल हो गये जो जेल तोड़ने आ रहा था।

जलूसके जेलके पास पहुंचते ही जेलके भीतर और बाहर 'इन्कलाब जिन्दाबाद' 'जेलको तोड़ दो' के नारोंसे आसमान फटने लगा। जेलके भीतरके वार्डरको मुरेठेसे बांध लिया गया। बाहरके वार्डरको फाटकपरसे हटा कर जलूसने उसी जगह एक खंभेसे बाँध दिया। फिर लक्ष्मी नारायणजी विद्यार्थी और अन्य जवान फाटकके तालेपर हथौड़ीकी चोट करने लगे। कुछ ही चोट खानेके बाद तालेने मुँह बा दिया। फिर पचासों आदमी जेलमें पिल गये। एक एक करके सारे कैदी निकाल लिये गये। एक औरत भूलसे छूट गयी और एक जरनैली कैदी निकलनेसे इनकार कर बैठा। निकलने वालोंमें प्रमुख थे डा० गुलजार प्रसाद, स्वामी जगन्नाथानन्द, श्री राजेश्वर पटेल, श्री जगन्नाथ प्रसाद साहु, श्री गणेश महतो और केदार सिंह आदि।

वहाँसे चलकर लोग पोस्ट औफिसपर जा चढ़े। थोड़ा बहुत तोड़-फोड़ हुआ। फिर गोली चलने लगी। लोग तितर-बितर हो गये। कोई मरा नहीं। हां, बुझावन दुसाधको काफी छर्रे लगे।

१६ अगस्तको हजारोंकी तादादमें दियारेके लोग हंसिया और बोरा लिये शहरमें टोलियां बांध-बांधकर आने लगे। अक्षयबाबू स्वयं-सेवकोंके साथ घूम-घामकर आगन्तुकोंको समझा-बुझाकर रवाना करने लगे मगर शहरको छोड़कर

लोग कोनहाराघाटपर लगी मालगाड़ियोंपर हाथ साफ करने लगे। स्वयं-सेवकोंकी रोकनेकी सारी कोशिशें बेकार गयीं। सारा माल जिसमें अनाजकी मात्रा अधिक थी लोग लूट-पाटकर ले गये।

गोरौलके कार्यकर्त्ता डाकघर और रेलवे स्टेशनपर एक साथ चढ़ आये। उनने वहाँकी खिड़कियाँ तोड़ दीं, शीशे फोड़ दिये, तार काट दिये, और कागज, टिकट

महुआ वगैरह बरबाद कर दिये। बिजली पाण्डेयकी प्रेरणासे भगवानपुरमें तोड़-फोड़ शुरू हुआ। भगवानपुर स्टेशनके दोनों ओरकी रेलकी पटरियां उखाड़ दी गयीं और रेल हटा दिये गये। मुजफ्फरपुरसे दो डब्बोंमें मिस्त्री लोग रेलवे लाइन बनाते आये। उनलोगोंने भी भगवानपुरके विद्यार्थियोंको चुपकेसे कहा कि हमलोग जब लाइन मरम्मत करके चले जायं तब आपलोग फिर तोड़ दीजियेगा। विद्यार्थियोंके आग्रह करनेपर उनने कुछ रिंच वगैरह भी दिये और उनका उपयोग भी सिखला दिया। फिर तो तोड़-फोड़के काममें लोगोंकी इतनी दिलचस्पी बढ़ी कि कुछ पूछिये नहीं। सैकड़ोंकी संख्यामें लाइन उखाड़ रहे थे और कुदालसे जमीन भी खोद खोदकर गड्ढे बनाते जा रहे थे। हवाई जहाज आया और सरपर मंडराने लगा। सबलोग निश्चित काममें लगे रहे। हवाई जहाज चला गया। पर फिर लौटा और फिर मंडराकर चला गया। इस तरह वह कई बार आता जाता रहा। एकबार कुछ सन जलाकर भी भीड़में फेंका, पर लोग निर्भीक हाथ पैर चलाते रहे और काम खतम करके ही वहाँसे हटे।

सराय स्टेशनकी भी बहुत अंशोंमें भगवानपुर स्टेशन जैसी दशा हुई।

महनारके विद्यार्थियोंके एक जलूसने महनार बाजारसे स्टेशन तक यानी चार मीलके तार तोड़ फेंके और महनार रोडकी रेलवे लाइन उखाड़ दी। श्रीविन्ध्य-

महनार वासिनी सिंह, श्री चन्द्रदीप वर्मा, श्री जगदीन पटेल और श्रीपरशुराम झाके नेतृत्वमें देशारी डाकघर और स्टेशनपर रेड हुये। तार काट फेंका गया और रेलकी पटरियां उखाड़ फेंकी गयीं। श्रीविन्ध्यवासिनीसिंह, श्रीसूर्यदेवसिंह और श्रीरामप्रसाद ठाकुरने अपने साथियोंके सहयोगसे स्टेशन जानेवाली सड़कके एक बड़े पुलको तोड़ दिया।

अपने शहीदोंके खूनकी गरमी लिये लालगंजने तोड़-फोड़में हाथ दिया। सराय और भगवानपुर रेलवे स्टेशनोंपर वहांके लोग आ चढ़े। कागज-पत्रोंको

लालगंज जलाया, टिकटको जलाया और बहुसी चीजें बरबाद कीं।

वहाँ रुपये पैसे जो मिले सो उनने ले लिये। लालगंजके टेलिफोनका तार काट डाला गया फिर मुजफ्फरपुरसे हाजीपुर जानेवाली सड़क काट दी गयी और पेड़ काट उसपर गिरा दिये जिससे वह जाम हो गया। रेलवे लाइन भी एक जगह तोड़ दी गई।

पातेपुर पातेपुर थानाने १३ अगस्तसे ही तोड़ फोड़ शुरू किया पर १४ अगस्तको इस काममें अपनी पूरी ताकत लगायी। यहां ढोली और पूसा रोडकी सड़क काट दी गयी और वाजिदपुर डाकघरपर भी हमला हुआ। वहांका लेटर बक्स फेंक दिया गया। वहुआरा कोठीके खिलाफ प्रदर्शन हुआ और उसे नुकसान पहुँचानेकी कोशिश की गयी।

अगस्त आन्दोलनमें चम्पारणने जो स्थान प्राप्त किया है, उसका श्रेय अधिकांशमें गोविन्दगंज थानाको मिलना चाहिये।

चम्पारण वहां तोड़ फोड़ शुरू किया अरेराज स्कूलके छात्रोंने। उनने स्कूलमें ताला लगा दिया और तार काटनेमें लग गये। फिर तो बेशुमार जनता इनमें शामिल हो गयी जिसका संचालन गोविन्दगंजके मंजे हुये कार्यकर्त्ता करने लगे जिनके अगुआ थे श्री रामर्षिदेव। काफी दूर तक तार कटे और तारके खंभे उखाड़ दिये गये। डाकखाना बन्द कर दिया गया और इतना प्रचार किया गया कि तहसील कचहरियोंमें सन्नाटा छा गया। फिर सुगौली गोविन्दगंज, बेतिया-मलाही और मोतिहारी-संग्रामपुरकी सड़कोंको जगह जगह काट दिया गया। कई पुल भी तोड़ डाले गये और सड़कपर कहीं कहीं पेड़ भी काट कर गिरा दिये गये जिससे रास्ते दुर्गम बन गये।

मधुबन थानेमें डिस्ट्रिक्टबोर्डकी सड़क जगह ब जगह काट दी गयी। मेहसी रेलवे स्टेशनके अगल बगलके तार काटे गये और तारके खंभे गिरा दिये गये। १८ अगस्तको स्टेशनपर लोगोंने धावा बोल दिया। बहुतसे सामान तोड़ फोड़ दिये गये और बहुतसे जला दिये गये। २३ अगस्तको लोगोंकी एक बड़ी तादाद रेलवे लाइन उखाड़नेमें लग पड़ी। लोग दिन दहाड़े रेलवे लाइन उखाड़ रहे थे और सर पर हवाई जहाज मडरा रहा था। जबतब हवाई जहाज गोता लगाता और लोग झुक जाते पर निर्भीक फिर रेलोंका अलग करनेमें जुट जाते।

सुगौली सुगौलीमें १३ अगस्तको इञ्जिन और रेलवेका सामान नुकसान किया गया। १५ अगस्तसे सुगौली सेमरा स्टेशनके बीच 'चारमहल पुल' परसे लाइन तोड़नेका काम आरम्भ हुआ। उसी दिनसे सड़कें भी कटने लगीं और तार भी

कटने लगे। और २४ अगस्त तक तोड़ने काटनेकी रफ्तार जारी रही। फलतः सुगौली और सेमराके बीच तीन माइल तककी रेलवे लाइन छिन्न भिन्न हो गई और लाइनका बांध तक ढाह दिया गया और जहां तहां गड्ढे खोद दिये गये। सुगौलीसे सेमरा तकके तार गायब हो गये। तीन पुल बरबाद कर दिये गये। डिस्ट्रिक्ट बोर्डकी सड़कके भी तीन बड़े बड़े पुल तोड़ डाले गये। मोतीहारी, बेतिया, छपरा, अमवा और रक्सौल गोविन्दगंजकी सड़कोंपर जगह जगह खाई खोद दी गयी।

सुगौली रमगढ़वा रेलवे लाइन भी कई जगह छिन्न भिन्न हुई और तार नष्ट।

आदापुर

आदापुर थानेके कार्यकर्त्ताओंने आबकारीकी दूकान बन्द करदी और डाकघर, राजकचहरी और रेलवे स्टेशनपर झंडे फहराये। फिर रजिस्टरी आफिसमें ताला लगा दिया। इसी बीच वहां ढाका और घोड़ासाहनके छात्र आये।

छौड़ादानो

वहां डैनबी इस्टेटके मैनेजरके सामानमें उनने आग लगा दी और राजकचहरीके कागजातको भी जला दिया। फिर वे रेलवे स्टेशनकी ओर मुड़े जहाँके सामानको उनने तोड़ फोड़ दिया।

उसी दिन कुछ लोगोंने आदापुरकी रेलवे लाइन उखाड़ हटाई और तार काट फेंका।

रक्सौल

रक्सौलमें १२ अगस्तसे तोड़-फोड़ आरम्भ हुआ। सुगौली-रक्सौलकी सड़कमें रमगढ़वाके पास जो नौकठवा पुल है उसे तोड़नेकी कोशिश की गयी; कई जगह सड़क भी काट दी गयी। रेलवे लाइन छिन्न-भिन्न कर दी गयी और तार काटे गये।

घोड़ासाहन

घोड़ासाहनमें छात्रोंने अपने स्कूलको बन्द करवाकर रेलवे स्टेशनपर हमला किया। उनने स्टेशनपर खड़ी एक रेल गाड़ीपर दखल जमायी। गार्ड साहबके हैटको हवामें उछाल उन्हें गांधी-टोपी पहनायी और वन्देमातरम् का नारा लगवाया; फिर उनने स्थानीय मिशनपर चढ़ाई की। मिशनके मकानके शीशे तोड़डाले, फरनीचर तोड़ फेंके। एक लड़केने ५००) की एक थैली उठाली पर उसे पादरी साहबको वापस करवा दिया गया, हां उनकी घड़ी और फाउन्टेनपेन हजम हो गयी।

ढाका

ढाका थानेमें फूँक-फाँकका जरा जोर रहा। १८ अगस्तको आबकारी महाल का दफ्तर फूँक दिया गया और नहर विभागके दफ्तरकी भी वही दशा हुई। दूसरे दिन डाकघर और रजिस्टरी ऑफिसपर आन्दोलनकारियोंके धावे हुये और दोनोंमें ताले लग गये।

सिकटा सिकटा स्टेशनके पासकी रेलवे लाइन उखाड़ दी गयी और थोड़ी दूर तक रेलवेका तार काट दिया गया।

मनाटांड़ मनाटांड़ थानेमें गोखुला सिकटा स्टेशनके बीच मरयदवा गांवके नजदीक रेलकी पटरियाँ उखाड़ फेंकी गयीं और तार काट दिये गये।

शिकारपुर गोखुला नरकटियागंज स्टेशनके बीच पण्डयी नदीके पुलपर भी लाइन उखाड़ दी गयी। ठोरी लाइनमें भी तरहरवा बेरियाके नजदीककी रेलवे लाइन उखाड़ दी गयी। शिकारपुर स्टेशनपर कुण्डियाकोठीके साहबका हैट उतरवाया गया। उसे बाध्य किया गया कि वह गांधी टोपी पहन झंडा हाथमें ले कांग्रेसकी जय-जयकार करे।

मझौलिया मझौलिया थानेमें बेतिया-मोतीहारी सड़क गयी है उसपर सेखवना पुल है जो तोड़ा गया। जगह-जगह सड़क भी काटी गयी। सुगौली और मझौलिया स्टेशनके बीच परसा गांवके नजदीक रेलवे लाइन उखाड़ दी गयी और

बगहा तार काटा गया। राज-पाटका पुल भी तोड़ा गया। बगहा डिस्ट्रिक्ट बोर्डकी सड़कको मझौआगांवके आसपास कई जगह तोड़ दिया गया।

केशरिया केशरिया और राजपुर तक टेलिग्राफके तार काट-फेंके गये। और केशरिया डाकघरका काम रोक दिया गया। वहांका लचका पुल तोड़ दिया गया और रजिस्टरी ऑफिसमें कांग्रेसका ताला लगा दिया गया।

बेतिया कुमारबागके नजदीक बेतिया-चनपटियाके बीचमें १३ अगस्तसे १७ अगस्त तक रेलकी पटरियां उखाड़ी जाती रहीं। चौथाई मील तकके तार साफ हो गये। कुमारबागके नजदीककी एक पुलकी पटरियां उखाड़कर जला दी गई। सेरणबनाके नजदीक डिस्ट्रिक्ट बोर्डकी सड़क काट दी गयी।

दरभंगा जिला १४ अगस्तसे लहेरियासराय (दरभंगा) में खुले आम रेल तार काटे जाने लगे। सड़कें भी काटी जाने लगीं। उनपर पेड़ काट काट कर गिराये जाने लगे। रेलवे कर्मचारियोंसे रेलकी पटरियां और तार काटनेमें बड़ी मदद मिली। स्टेशनके दोनो ओरकी रेलवे लाइन काफी दूर तक बरबाद कर दी गयी। जब तब पुल तोड़ते हुये लोगोंपर पुलिस और गोरे टूट पड़ते, गोलियां छोड़ते पर अगल बगलके मकईके खेतोंमें लोग दौड़ कर छिप जाते और मैदान साफ देख निकल पड़ते और फिरसे तोड़ने फोड़नेमें लग जाते। सड़कें भी कट कट कर दुर्गम हो गयी थीं और उनपर जनताका कठोर पहरा किसी गाड़ीको अछूता न जाने देता था।

समझिये, दरभंगेको कलक्टरी कैद हो गयी थी। पर उस गाढ़े अवसरपर डाक्टर यदुवीर सिंह सरकारी डाक लेकर आते जाते, गान्धी टोपी पहने हुये, कांग्रेसी झंडा अपनी मोटरपर फहराये हुये। कुलानन्द वैदिक और कर्पूरी ठाकुरके नेतृत्वमें सिंघवाड़ा की तरफ भी तोड़ फोड़के काफी काम हुये। डाकखाना जला दिया गया; यूनियन बोर्ड जला दिया गया। चौकीदारों और दफादरोंकी वरदी पेटी जलाई गयी।

महम्मदपुरकी ओर जो लाधाका पुल है उसको तेल छिड़क कर चतुर्भुज राय आदि कार्यकर्त्ताओंने जला दिया। काठका पुल धाँय धाँय दो दिनों तक जलता रहा। घाटकी नाव डुबा कर इन सबने उधरका रास्ता बन्द कर दिया। रहिका रोडके पुलपर भी लोग टूट पड़े। पुल चरमरा गिरा। बहुतसे लोग नीचे आ रहे; पर सख्त चोट किसीको न आयी। स्वामी पुरुषोत्तमानन्द वगैरहने तारसराय स्टेशनसे पच्छिम रेलवे और जिला बोर्डकी सड़कके पुलोंको बरबाद किया, पर उधर लूटकी प्रवृत्ति जगी देख आगे न बढ़ अपने आश्रम मकरमपुर लौट आये। सचमुच तार-सरायके कुछ लोग स्टेशनपर पड़े हुये चीनीके बोरोंके लूटनेमें लग गये। सागरपुर आश्रमके शिवनारायण मिश्र उन्हें रोकने दौड़े। मालूम हुआ जैसे लोगोंने उनकी सुन ली। पर रातको पूराका पूरा गोदाम लूट लिया गया, जहां दो हजार बोरे चीनीके थे। मिश्रजी लिखते हैं—"मुझे इस घटनासे बड़ी तकलीफ हुई। मैंने स्वामी पुरुषोत्तमानन्दसे कहा कि यदि लोग लूट पाटमें लग जायेंगे तो मकसदसे दूर चले जायेंगे। इसलिये इसे तो तुरत रोकना चाहिये। इसपर हम दोनोंने साइकिल उठाई और उन लोगोंकी ओर चल पड़े जहांके लोगोंने लूट पाट की थी। वहांके लोगोंसे बातचीत की। उनने महसूस किया कि हमने गलती की है। और बचन दिया कि आगे इस तरहकी घटना अब नहीं होगी। उसी दिन मालूम हुआ कि दस बारह बोरे चीनी सकरीमें लूट लिये गये हैं और आज सकरी मील लूट लेना चाहते है। मैं नरपत नगरसे लाइन पकड़ कर सकरी स्टेशनकी ओर चला। रास्तेमें कुछ लोगोंके हाथमें बोरा और डंडा आदि देखा। वे लोग संभवतः सकरीकी ओर चीनी लूटनेके खयालसे ही जा रहे थे। मैंने उन लोगोंको समझाया और डाँटा भी कि इस तरहकी हरकत नहीं होनी चाहिये। सकरीके लोगोंको समझाया कि आज जब देशके लोग स्वराज्यके लिये अपना खून दे रहे हैं उस समय सकरीके लोग लूटपाटमें लगे हों यह कितना घृणित काम है! लोगोंने इसे महसूस किया।"

ता: १५, १६ अगस्तसे कहीं कहीं पुलिसकी पैट्रोलिङ्ग शुरू हो गयी थी। ता: १९ को [illegible] ही पुलिसका एक जत्था सकरीमें एक डिपटी मजिस्ट्रेटके मातहत आया। स्वामीजीकी मददमे कुछ युवकोंने दो राइफल छीन ली। एक राइफलकी संगीनको श्री हातिम अली निकाल भागे और [illegible] खादी भण्डारमें छिपा रक्खा, जहां वह काम करते थे। ता: २० को दो मोटरपर सेलेसबरीकी अध्यक्षतामें कुछ टौमी बन्दूककी खोजमें सकरी खादी भण्डारके सामने आये। सशस्त्र फौजको देखकर भण्डारवाले डर गये और अन्दर घुसकर किवाड़ बन्द कर ली। टौमियोंने अन्दर जानेके लिये किवाड़को कई बार धक्का लगाया। उसके नहीं खुलनेपर उत्तर तरफसे जो आंगनमें जानेका रास्ता था उसकी किवाड़की जंजीरको गोलीसे तोड़कर वे सब अन्दर घुस गये। हातिमअली और कैलास बिहारी मिश्रने पच्छिम वाले घरकी किबाड़को भीतरसे दाब रखा था क्योंकि उसमें सिटकिनी नहीं थी। उस किवाड़पर सेलेसबरीने धक्का मारा और झोंकमें उन दोनोंके ऊपर जा गिरा। हातिम खांके हाथमें संगीन थी जिससे तुरत उनने सेलेसबरीपर वार किया। सेलेस-बरीको घाव लगा पर बहुत मामूली। उसने उसी संगीनको छीन कर हातिमखां पर प्रहार किया और उठकर उन दोनोंपर जो अभी भी पड़े हुये थे फायर करनेका आर्डर दिया। कई गोलियां चलीं। हातिमअली तो तत्काल चल बसे पर कैलास बाबू घायल होकर बेहोश थे। होश होनेपर उनने पानी मांगा किन्तु उन्हें पानी नहीं दिया गया। सारी खबर मुझे अपने आश्रममें मिली। मैं साइकिल ले सकरी पहुँचा। पहले जाकर डा० घोषसे मिला जिसने सेलेसबरीकी मरहम पट्टी की थी। उन्होंने सब समाचार बतलाया। उसी समय दरभंगाके पुलिस इन्सपेक्टर संयोगसे आ गये। मैंने लाश लेनेका जिक्र किया। उन्होंने कहा—लाश दरभंगा चलनेपर मिलेगी। बाहर होकर मैंने देखा लाश पेटीमें बन्द करके मोटरपर लादी जा रही है तब वहां लाश लेने की कोशिश छोड़ दी।......दूसरे दिन हमलोगोंने मातम मनाया और प्रभात फेरी की।

केउटी, भरतपुर, छोटाईपट्टी आदि गांवकी ओर भी तोड़ फोड़के काफी काम हुये। उधरके अगुआ थे श्री नारायण दासजी और रामबहादुर सिंह। इधरके ही लगभग ५० जवान गौसा रोडको बरबाद कर रहे थे कि पता चला एक डिपटी मजिस्ट्रेट सकरी बन्दूक केस और तारसराए चीनी लूट केसकी तहकीकातमें घूमता हुआ इधर आया है। तुरत कई जवान छूटे और रोड छोड़कर भागते हुये

मजिस्ट्रेट साहबको गिरफ्तार कर लिया। रातभर वे स्वराजी हिरासतमें रह बड़े आराम से। सुबहमें देश सेवाकी प्रतिज्ञा करवा कर उन्हें छोड़ दिया गया।

महम्मदपुर स्टेशनपर भी तोड़ फोड़ वालोंकी चढ़ाई हुई। उनने स्टेशनके सामान नष्ट कर दिये कागजोंको फाड़ डाला। तार काट फेंका और रेलवे उखाड़ कर हटादी। उनकी चपेटमें रेलवेके दारोगा साहब आगये। वे कैद कर लिये गये और उन्हें मार्च कराकर स्वराजी हाजत ले जाया गया। पर जब उनने सरकारी नौकरीसे इस्तीफा लिख दिया और कांग्रेसकी मातहती कबूल की तब छुटकारा मिला।

बहेड़ीके कार्यकर्त्ताओंने उमाकान्त चौधरीके नेतृत्वमें वहाँके डाक बंगलेपर कब्जा कर लिया। डाक बंगला उनका कैम्प हो गया। फिर उनने डाकघरको बन्द कर दिया। मधुरपुर डाकघरके सुकन दुसाध और भागवत गहलोतने नौकरीको लात मार दी। हायाघाटका डाकघर जला दिया गया।

फिर पुल तोड़े जाने लगे; सड़कें काटी जाने लगीं। पधारी दसौता और रमौली और आसपासके पुल तोड़ दिये गये। छतौरीमें मालसे भरी हुई डेंगी डुबा दी गयी।

खरारी तोड़ फोड़का जबरदस्त सेन्टर रहा। वहां पासमें हथौड़ी कोठी है जिसकी मेम मालकिनकी हिफाजतके लिये एक दर्जन सिपाही रख दिये गये थे। वहांके डाकघरपर जब स्वयंसेवक झंडा फहराने गये तब सिपाहियोंने तीन स्वयंसेवकोंको गिरफ्तार कर लिया। खरारीकी श्री जानकी देवी पहले अकेली वहां गयीं, सिपाहियोंमें जोश भरा तब साथियोंको बुलाकर बड़ी फुरतीसे डाकघरपर झंडा फहरा दिया और लगे हाथ बारहो सिपाहियोंके लाठी मुरेठे स्वयंसेवकोंसे छिनवाली आयीं। इन स्वयंसेवकोंमें तीन गिरफ्तार शुदा स्वयंसेवक भी थे। लहेरियासरायसे हथौड़ी जानेवाली सड़कको भी बरबाद कर दिया गया।

लहेड़ावालोंने डाकघरका काम बन्द कर दिया और सकरी तकके तारपर हाथ साफ किया। सड़क भी जहां तहां काटे और पुल तोड़े।

बिरौल थानेमें सुपौल और रसियारी तोड़ फोड़के केन्द्र रहे। रसियारी राज-झूपपर पण्डित लक्ष्मन झाने अपने साथियों सहित कब्जा जमाया। तहसीलदार खुद वहांका कुछ कागज पत्र जला कर भागा। झूप जो राज दरभंगाका था, जनताके कब्जेमें रहा जिसके अगुआ श्री कनकलाल झा थे। सुपौल वालोंने रुपये-पैसेके कागजको सुरक्षित छोड़कर बिरौल डाकघरके और सारे कागजात जला डाले। नवटोलके पुलको भी उनने तोड़ दिया।

कमतौल स्टेशनपर छात्रोंका प्रदर्शन हुआ। स्टेशनके अधिकारी शान्त रहे। इसलिये तोड़-फोड़ विशेष नहीं हुआ। फिर भी कमतौलके अगल-बगलके तार गायब

जाले

होगये। कुछ खंभे झुक गये और कुछ जमीनपर लेट गये। रेलकी पटरियां भी उखड़ीं। जब अधिकारियोंके पास खबर पहुंची तो उनने लहेरियासरायसे एक डिपटी मजिस्ट्रेटको हथियार बन्द पुलिस देकर भेजा। १४ अगस्तको मजिस्ट्रेट साहब कमतौल आये और रजिस्टरी आफिसमें डट गये जहाँ उनके साथके सिपाही हथियार चमकाने लगे। मगर हथियार देख कमतौलके छात्र हटे नहीं। छात्रोंको तो वह बड़ा खूबसूरत दीखता है। वे सिपाहियोंके पास आये और उनसे कामकी बात करने लगे। श्री अभयचन्द्र विद्यार्थीने तो देशके नाम उनसे ऐसी जोरदार अपील की कि सिपाही श्री रामबदन सिंहकी भारतीयता जाग पड़ी। उनने कहा—मैं अब देशकी सेवा करूंगा। इस हथियारसे क्रान्ति दबाऊँगा नहीं बल्कि क्रान्तिको जगाऊँगा। मगर अहिंसात्मक युद्धमें राइफलका क्या उपयोग होता? अभयचन्द्रजीने कहा कि हथियारकी बात छोड़िये अभी आप हमारा साथ दीजिये। तुरत रामबदनजी स्वयंसेवकोंमें मिल गये। पर अपनी देशभक्तिके कारण वह शीघ्र पकड़ लिये गये और एक सालके लिये जेलके मेहमान बने।

मधुबनी सबडिविजन

मधुबनीको अपना जोर अजमानेका मौका ता: १४ को ही मिल गया। आन्दोलनकारियोंने १६ हथियार बन्द पुलिसको ट्रेनसे जयनगर जाते देख लिया। फिर क्या था? उनने ट्रेनसे इञ्जनको अलग करके उसको रेलसे नीचे गिरा दिया। तार काट दिये और पटरियां भी हटा दीं।

बेनीपट्टी थाना वालोंने डाकघरके कागजपत्रोंको जला दिया, तार काट दिये और रजिस्टरी आफिस जला दी। चर्खासंघके श्री रामदेव ठाकुर और उनके साथियोंने जलानेमें पूरा हाथ बटाया।

१३ अगस्तको खजौली रजिस्टरी औफिस और पोस्ट औफिसपर झंडे फहराये गये जिस मौकेपर सीताराम सिंहको पुलिसने पकड़ लिया। १४ अगस्तको ठाहरका

खजौली

रेलवे पुल तोड़ दिया गया और कई रेलें भी उखाड़ दी गयीं। फिर तार काट दिये गये जिसमें पाँच-छ: सौ व्यक्ति लग पड़े थे। उस रातको नराढ़में डि० बोर्डका पुल तोड़ दिया गया। १५ अगस्तको कलुआहीसे उत्तर एक पक्का पुल तोड़ा जा रहा था उसी समय मधुबनीके एस० डि० ओ० की मोटर जयनगरसे वापस आरही थी। लोगोंने उस मोटरको बुरी तरह तोड़ दिया और ड्राइवरको साथ लेगये।

और खिला पिलाकर विदाकर दिया।

मधवापुरने ब्रह्मपुर, बिहारी वगैरहके पुल तोड़े। वासुकामें सड़क काटी। डाक घर और आबकारी दफ्तरमें ताला लगा दिया। मधेपुर हाई स्कूलके विद्यार्थियों और अन्य नवजवानोंने झंझारपुर स्टेशनके तार काटे और वहांकी रेलकी पटरियां हटा दीं। बलभद्रपुर, बेलौंचा, कछुवी और गंगापुरके पुलोंको तोड़ दिया। दीपबस्तीके पासका रेलवे पुल भी तहस नहस कर दिया। लौकही थानेमें आबकारी दफ्तरका सामान नष्टकर दिया गया। डाकघरकी चीजें लूट ली गयीं।

फुलपरासके नवयुवकोंने घोघरडीहा और पिरोजगढ़के बीचका तार काट दिया। ब्रह्मपुरके पश्चिम एक पुलको तहसनहस कर दिया गया। और रजिस्टरी ऑफिसपर तिरंगा झंडा फहरा गया।

समस्तीपुर अंगरेजी सरकारके अड्डोंपर और जूट मिलपर झंडे फहराता समस्तीपुर सबडिविजन रहा। ता: १४ को उसने उन अड्डोंका काम बन्दकर देनेकी कोशिशमें बिताया। ता: १५ को वहाँ एक लोमहर्षक घटना होगई जिससे सारा प्रान्त क्रुद्ध हो उठा। बरौनीकी ओरसे गोरोंकी स्पेशल ट्रेन आयी जो समस्तीपुर जंकशनपर रुकी रही। स्टेशनपर लोगोंने उनके डब्बेको घेर लिया और 'अंगरेजों! भारत छोड़ दो' का नारा लगाना शुरू किया। गोरे शान्त रहे। किन्तु स्टेशनके अंगरेज अधिकारी बिगड़कर गोरोंको कुछ समझाते रहे। उनकी गाड़ी जब स्टेशनपर खड़ी थी तब दो तीन गोरे आगे बढ़कर रेलवे गुमतीपर आगये थे और दोनों ओरके फाटकोंको बन्दकर रखा था। फाटक होकर जानेवाला रास्ता बड़ा चालू रास्ता है। इसलिये गुमतीके दोनों ओर लोगोंकी काफी भीड़ इकट्ठी होगई थी। भीड़के कुछ लोग फाटकको बन्द रखनेवाले गोरोंको देखते और तरह तरह के नारे लगाते। गोरे उन्हें खदेड़ते और जिस तिसपर कोड़े भी फटकारते। कुतूहलका वातावरण था; क्रोधका नहीं। इसी बीच स्टेशनपरसे वह स्पेशल गाड़ी छुटी और गुमतीपर पहुँची। गोरोंने फाटक खोल दिया और अपनी गाड़ीपर फांद चढ़े। भीड़ खूब नारे लगाने लगी और गाड़ीके नजदीक आ गई। इतनेमें एक सोडावाटरका बोतल उसके पास गिरा और उसके बीचसे एक सज्जनने उन गोरोंकी गाड़ीपर ढेला फेंका। समस्तीपुरके एक कम्यूनिष्ट कार्यकर्त्ता जो उस सज्जनको बगलमें खड़े थे, कहते हैं कि वह गेरुआ पहने था और ढेला फेंक फौरन चंपत हो गया। उस ढेलेके बाद कई ढेले फटा फट ट्रेनको लगे। ट्रेन फौरन चली पर

गोरोंके कमाण्डरने तत्काल सीटी बजाई और उस चौराहेकी भीड़पर और उन रास्तोंपर जिनसे साढ़े बारह बजे दिनको मजदूर और विद्यार्थी और बेशुमार अन-जान गुजर रहे थे दौड़ती हुई गाड़ीसे बड़ी बड़ी गोलियां दगने लगीं।

गोलियां पेड़ोंकी डाल फाड़ खाने लगीं। एक पक्की दीवार छेदती गयी और दोयम मुन्सिफके रसोइयाकी जान ले बैठी, दूसरीने उनकी मांको घायल कर दिया और तीसरीने उनकी गायका बध किया। एकने घटनास्थलसे काफी दूर जाकर कचहरीमें खड़े हुए एक मामलतीका सफाया कर दिया। और एक एक ग्यारह बरसके लड़के अब्दुल सकूरकी जानले उड़ी और एकने रामलखन सिंह नामके एक छोटे विद्यार्थीका काम तमाम किया। फिर कितने तो मकई और राहरके खेतोंमें हताहत हुये। कमसे कम इक्कीस मरे और सख्त घायल हुये लगभग पचास। लोगोंका कहना है कि ड्राइवर ट्रेनकी रफ्तार तेज न कर देता तो उन गोरोंकी गोलियां और गजब ढातीं।

इस गोलीकाण्डने शहरको गरमा दिया। वकील संघके सभापति श्री शिवेश्वर प्रसादने संघकी ओरसे अधिकारियोंके यहां इस गोलीकाण्डका तीव्र प्रतिवाद लिख भेजा और १५ दिन तक अदालत न जानेकी सूचना दी। शामको शहीदोंका एक शानदार जलूस निकला। साथमें गायकी लाश भी थी। सात बजे मिडिल स्कूलके मैदानमें विराट सभा हुई जिसमें सर्चलाइटके सम्पादक मुरली मनोहर प्रसादका भाषण हुआ। इस गोलीकाण्डने समस्तीपुर इलाकेमें तोड़ फोड़के कार्यक्रमको काफी ताकत पहुँचाई। चारों ओरके लोग शहीद हुये थे; यथा लोकनाथपुरके बासु-देव झा, पुनासके पूना महतो, रानीपुरके नौबतलाल झा, जितवारपुरके बदन राम, दुधपुराके बचन भेड़िहर और शिवनन्दन पाल, दौलतपुरके देवनारायण उर्फ सूर्य्य देव प्रसाद, रानीटोलाके सूबालाल झा, भमरूपुरके धूरन चौधरी, पोखरैराका मीर अब्दुल्ला, किसनपुरके बैजनाथ राउत, मूसापुरके शिवशंकर लाल, माहेसरके रामदेव झा, काशीपुरके राम सेवक राउत और रानीटोलाके बुटाई महतो आदि। इसलिये चारों ओरसे लोग सरकारके खिलाफ उठ खड़े हुये।

"१५ अगस्तको", डाक्टर मुक्तेश्वर प्रसाद सिंह एल० एम० पी० लिखते हैं, "ताजपुर हाई स्कूलके हालमें सभा हुई, मैं सभापति था। सर्व श्री छितनू सिंह,

ताजपुर रामेश्वर सिंह, अब्दुल जलील और भोला प्रसाद मौजूद थे। तय हुआ कि हम जो करेंगे, खुले आम करेंगे। थानाको जब्त करके अपने कब्जेमें रखना, रेलकी पटरियां और पुल तोड़ना, तार काटना वगैरह वगैरह हमारा कार्यक्रम है।

कांग्रेसके जो परचे मिले उसीके आधारपर यह कार्यक्रम बना। बैठक खत्म होते ही भीड़ थानाकी ओर बढ़ी और थानापर झंडा फहराना चाहा। पुलिस जमादारने भाला फेंक कर एक स्वयंसेवकको घायल करदिया। फिर तो जनता क्रोधान्ध हो उठी; किसी तरह थानापर झंडा फहरा कर उसे शान्त रखा गया। तब तक घायल स्वयं सेवक होशमें आगये और उनका जलूस ताजपुर बाजारमें घुमाया गया। पुलिसके अत्याचारके विरोधमें जनताने हड़ताल मनायी। कृष्ण मुरारी प्रसाद, नवल किशोर प्रसाद और सुखदेव साह थानेपर ही गिरफ्तार कर लिये गये।

"१६ अगस्तको जनताने अधारपुर पुल तोड़ा और उसके बाद कोआरी रेलवे पुलको काटा। इस पुलको काटते समय अंगरेजी फौजने गोली चलायी। गोरोंके राइफल सीधी करनेके पहले ही अब्दुल जलील, खुदी राम और भोला प्रसाद साथियों सहित मकईके खेतमें जा छिपे थे जिससे सभी बेदाग बचे।"

तजापुर थानामें किसान, मजदूर और छात्र—सभी कन्धेसे कन्धा भिड़ाकर तोड़-फोड़में लग पड़े थे। सईदपुरके पास पूसा रोडसे दरभंगा जाने वाले रोडको सबोंने काट डाला। पूसासे मुजफ्फरपुर जाने वाली सड़क भी काट दी गई। पूसासे बेनीपट्टी जाने वाली सड़क भी लोगोंने काटी और किनारे खड़े पेड़ोंको काट काट उसे पाट सा दिया। फिर उनने तारके खंभे गिराये और पूसा फार्मके कारीगरोंकी मददसे रेलकी पटरियाँ उखाड़ फेंकी। डाकघरमें कांग्रेसका ताला लगा कर उसपर तिरंगा झंडा फहरा दिया। दिघराका डाकघर तोड़ दिया।

फिर लगभग दस हजारकी भीड़ने पूसा फार्मपर हमला किया। पानीके प्रबन्धको नष्ट करके उनने फ्लैक्स गोदाममें आग लगा दी। भीषण अग्नि प्रज्वलित हुई और चार दिनों तक रही। वहाँके डाकघरके कागजात जला दिये और टेक्निकल स्टोर रूमका ताला तोड़ उसका सामान नष्ट कर दिया गया और लूट भी लिया गया।

फिर जनताने ढोली कोठीपर चढ़ाई की। पर कोठिवाल साहबने राष्ट्रीय वरदी पहन ली और अपनी कोठीपर राष्ट्रीय झंडा फहराया। श्रीयमुना कार्यी, श्रीलक्ष्मीनारायण सिंह तथा श्रीरामप्रकाश शर्मासे अपने भारत-प्रेमी होनेकी पैरवी करायी। तब भीड़को टाल सके। वारिसनगरके कार्यकर्त्ताओंने धनहरका पुल तोड़ा; किसनपुर और हायाघाटके बीचकी रेल लाइनको छिन्न भिन्न कर दिया; जिस काममें २०० स्वयंसेवक रात दिन मशगूल रहे। ता० १६ को बागमतीपरके

जटमलपुर पुलको उनने तोड़ दिया जिससे समस्तीपुरसे दरभंगा जानेवाली सड़क खंडित होगई। फिर झिरकुलिया और अकबरपुरके पुलको तोड़ा। तार तो किसनपुरसे हायाघाट तक सफाचट हो गये। मोहिउद्दीन नगरने रेलकी पटरियां हटाईं और तार काटे। एकबार मिलिटरीको जयनगरके वास्ते जाते देख किसान मजदूर रेल उखाड़ फेंकने दौड़े और उधरसे गाड़ी चलना बन्द कर दिया।

दलसिंगसराय थानेके पश्चिम और पूरब तरफकी रेलवे लाइन उखाड़ फेंकी गयी। तार तो बहुत दूर तक काट गिराये गये। चकसेखूका पुल नष्ट कर दिया गया। और १५ अगस्तकी शामको रेलवे स्टेशनमें घुसकर आन्दोलनकारियोंने बहुतसे सामान जला दिये और लूट लिये।

सिंगियामें फुलहाराके नजदीकका कोल्हुआ पुल तोड़ा गया। रोसड़ावालोंने स्टेशन, डाकघर और रजिस्टरी आफिसपर झंडा फहरा दिया। लगभग एक हजारकी भीड़ने सिंगियापुलको तोड़ दिया। फिर रेलकी पटरियां हटाईं और तार तोड़ फेंके।

बालेश्वर सिंह लिखते हैं—"१३ अगस्तको स्टेशनसे जलूस निकाला गया। कुछ लड़कोंने स्टेशनके कागजात फाड़ डाले। इसपर मालबाबू निकले और तारकी बैटरीको बाहर लाकर खुद पटक दिया। बैटरी चूर-चूर हो गयी। मैं सबोंको शांत करके स्टेशनसे बाहर ले चला। सर्व प्रथम रजिस्टरी और फिर पोस्ट ऑफिसमें ताले भरे गये और उनपर झंडा फहराया गया। रजिस्ट्रार और पोस्ट मास्टर साहबसे 'इन्कलाब जिन्दाबाद और वन्देमातरम्' बोलवाया गया। हसनपुरमें बखरीके बाबू शिवनन्दन नारायण सिंहके नेतृत्वमें खगड़िया तथा बखरीका जत्था आया जिसने डाकघरमें ताला लगा दिया—इसके बाद हसनपुर स्टेशनमें भी ताला लगा दिया गया, रेलकी पटरियाँ उखाड़ी गईं। जिस काममें सगरपुरा मि० स्कूलके अध्यापक तथा छात्रोंने पूरा सहयोग दिया। १४ तारीखको हसनपुर मिलके कर्मचारियोंकी सहायतासे स्टेशनपर तोड़-फोड़का काम शुरू हुआ। स्टेशन अपनी सारी चीजोंके साथ जला दिया गया।

मंगलगढ़ डाकखानेपर दो बार झंडा फहराया गया। बलीपुर डाकघरमें ताला लगा दिया गया और उसपर झंडा फहरा दिया गया। गोदार घाटकी नाव डुबा दी गयी। यह घाट समस्तीपुर और हथौड़ीके बीच पड़ती है।

सिंगियाके कार्यकर्त्ता तोड़-फोड़के उद्देश्यसे नयानगर स्टेशन पहुंचे और वहाँ

रेलको पटरियाँ उखाड़ने लगे और तार काटने लगे। इस बीच समस्तीपुरके डिपटी मजिस्ट्रेट हसनपुरसे लौटते वह... थे। उनने तोड़नेवालोंको समझाया कि रेल तार तोड़नेसे फायदा नहीं है, नुकसान ही नुकसान है। उनकी बातें सुन लोग जोशमें आगये और खूब तेजीसे तोड़-फोड़में लग गये। माहेके विश्वनाथ सिंहका कहना है—१६ अगस्तको श्रीविन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह, विद्यालंकारने जगन्नाथपुर हाटपर लोगोंको तोड़-फोड़ और थाना रेडका प्रोग्राम दिया। वहाँसे जब हमलोग लौट रहे थे तो फुलहाराके पूरब एक डि० बोर्डके पुलको तोड़नेमें लग गये। महेन्द्र साहके द्वारा मालूम हुआ कि अभी सिंगिया थानाके लिये दरभंगासे एक सिपाही बन्दूककी गोली ला रहा है। हमलोग सतर्क होकर सिपाहीकी राह देखने लगे। इतनेमें अमानत मिआँ गोलीका बक्सा लेकर साइकिलसे आता हुआ दीख पड़ा। हमलोगोंने उसे पकड़ लिया। उससे गोली और साइकिल छीन ली और उसको मोरवाराके बाबू रामबहादुर सिंहके सुपुर्द कर दिया और ताकीद कर दी कि कल शाम तक इसे न छोड़ें, ताकि सिंगिया थाना आसानीसे कब्जेमें आसके।

सिंगिया

मुंगेर टाउनमें पिकेटिंगने जोर पकड़ा। कचहरीको बन्द करनेके लिये किलेके दरवाजेपर दूर-दूरसे धरना देनेके लिए स्वयंसेवक आने लगे और पुलिस मार-पीटके अलावा उनपर तरह-तरहके अत्याचार करने लगी। गंगामें फेंक देना तो उनके लिये दिलचस्प खेल जैसा हो गया था। एकबार उनने सिकंदराके राजेश्वरी सिंह, बरबिगहाके श्याम सिंह और उनके कई साथियोंको पकड़कर नंगाकर दिया। फिर उनके सारे शरीरको रंगीन पोटीनसे पोत डाला। और फिर उनको गंगटा जंगलमें ले जाकर छोड़ दिया। आधी रात और हिंस्र जन्तुओंसे भरा हुआ पहाड़ी जंगल! घायल और भूखे-प्यासे स्वयंसेवकोंको जो भोगना पड़ा सो कल्पनातीत है!

मुंगेर

बाढ़की वजहसे स्टीमर गोगरी, खगड़िया और चौथम आदि इलाकोंमें आसानीसे आ-जा सकती थी और गोरोंको ला-लेजा सकती थी। इसलिए गोगरी थानाके कार्यकर्त्ताओंने गोगरी स्टीमर घाटको नष्टकर देनेका निश्चय किया। १४ अगस्तको आन्दोलनकारियोंका एक जलूस वहाँ पहुँचा और घाट तोड़नेमें लग गया। दो घंटे भी न बीते होंगे कि पूरे फोर्सके साथ एस० डी० ओ० साहब घाटपर पहुँचे और भीड़पर गोली चलवाने लगे। एक गोली श्रीरामकृष्ण यादवके मर्मस्थानमें लगी और वे तत्काल शहीद हो गये। अनेक घायल हुये, जिनमें

गोगरी थाना

स्थानीय गोगरी राष्ट्रीय विद्यालयके अध्यापक श्रीमुरलीधरजी प्रमुख हैं, जिनको सख्त घाव लगा था। वहांसे आन्दोलनकारियोंको खदेड़ता हुआ एस० डी० ओ० सदल-बल जमालपुर थाना पहुंचा। श्रीभगवान दास लहेरी, रामचंद्र चौधरी तथा श्रीनवलकिशोर मंडलके घर लुटवा दिये और राष्ट्रीय विद्यालयके सभी सामानको लुटवाकर उसके रसोई घरमें आग लगवा दी।

पसराहा, महेशखूंट और नारायणपुरके प्रायः अधिकांश रेलवे पटरियां उखाड़ फेंकी गयीं पर आसाम फ्रौंट जानेकी सीधी रेलवे लाइन उधर ही से है, इसलिए लाइनकी मरम्मत जल्दसे जल्द हो गयी। जिसकी हिफाजतके लिये हवाई जहाज मड़राने लगे। २३ अगस्तको एक हवाई जहाज लाइनकी सीधमें उड़ता हुआ भीषण घटना-चक्रका शिकार बन गया। श्रीतपस्वी चौधरी अपनी आंखों देखी घटनाका यों वर्णन करते हैं :—मैंने देखा कि एक जहाज सिर्फ सात-आठ हाथकी ऊंचाईपर लाइनकी सीधमें उड़ा जा रहा है, पेड़की डालोंको नोचता तोड़ता हुआ। जब मैं पसराहा स्टेशन पहुँचा तब मालूम हुआ कि स्टेशनसे दस-बारह रस्सीपर हवाई जहाज गिर गया है। उस समय कोसीका पानी खेतोंसे बह रहा था। इसलिये जहाजके चारों ओर पानी लहरें मारने लगा। मैंने देखा १५-२० नावें जहाजकी ओर तेजीसे बढ़ रही हैं। वहां पहुंचकर उनने जो किया उसकी जानकारी मुझको बादमें हो गयी।

जहाजके गिरते ही एक गोरा मर गया। शेष दो डाक्टरकी पुकार करने लगे। नाववालोंने रिवाल्वरकी ओर इशारा किया। गोरोंने रिवाल्वर उन्हें दे दी और अपने पासकी और भी चीजें दीं ताकि नाववाले उनसे डरें नहीं और उनको यथा स्थान पहुँचा आवें। दोनों गोरे नावपर ले लिये गये। उनके नावपर आते ही बड़ा हल्ला हुआ। कुछ लोगोंने दोनोंको नावसे गिरानेकी कोशिश की। दोनोंने नावकी लकड़ी पकड़ ली। तब तो उनपर लाठियां बरसने लगीं। लकड़ी छोड़ दोनों नावसे पानीमें कूद पड़े। पानीमें कूदना था कि चारों ओरसे उनपर वार होने लगा। चोट खाकर वे पानीमें डूब जाते और ज्योंही सांस लेनेके लिये सर निकालते कि लाठी पड़ती। कुछ ही देरके बाद दोनों मरकर पानीमें उपलाने लगे। उनकी सारी चीजें लेकर गांववाले जहां-तहां चले गये।

इस कांडके बाद लोगोंका सहज अनुमान हुआ कि साथियोंकी खोजमें गोरे दल बाँध बाँध कर आवेंगे और जनताको सतावेंगे। इसलिये उनने रेलवे लाइनको

अच्छी तरह छिन्न भिन्न करना शुरू कर दिया। एक जगह उन्होंने जो लाइन काटी वह गंगाकी बाढ़के जोरसे इतनी भयंकर हो गयी कि उधरसे छः महीने तक गाड़ी न जा सकी और अब भी वह कटान भरी नहीं जा सकी है; और पसराहा कटानके नामसे विख्यात है। एक बार २१ अगस्तको इसी लाइनपर पसराहा स्टेशनके पास लोग बाँध सहित रेलवे लाइन काट रहे थे कि मिलटरी और पुलिस पहुँची और अन्धा धुन्ध गोली चलाने लगी। ऊपर हवाई जहाज मड़रा रहा था, वह मशीन गन छोड़ने लगा। परिणाम स्वरूप कहा जता है कि चालीस आदमी गोलीके शिकार बने। जिनमें उल्लेखनीय हैं तेघायके चंचल मिस्त्री, तेघायके भोला मंडल और चमक लाल पासवान, कोलवाराके लुरी मंडल और द्वारिका मंडल, तेलिया बथानके मुकुन्द मंडल और शहर बन्नाके भुजंगी मंडल।

१५ अगस्तकी शामको पटनाके विद्यार्थी बड़हिया पहुँचे और नवजवानोंको अगस्त क्राँतिका संदेश दिया। इतने तरहके लोग वहाँ इकट्ठे हो गये कि जब बड़हिया विद्यार्थियोंने स्टेशनको जला देनेकी सलाह दी तब एक ओरसे स्टेशनको कुछ लोग जलाने लगे और दूसरी ओरसे कुछ लोग लूटने। स्टेशन स्टाफ सब कुछ जलते लूटते देख आतंकित हो उठे, पर कांग्रेसके कार्यकर्त्ताओंने उन्हें ढाढ़स दिया और उनकी हिफाजतका सारा इन्तजाम कर दिया।

१४ अगस्तको लक्खीसरायके कार्यकर्त्ताओंने एक बड़ी तादादमें तोड़-फोड़ शुरू किया। पोस्ट औफिस और आबकारी विभागकी दूकानको बरबाद करते हुए वे रजिस्टरी औफिस पहुँचे। जिसे उनने बंद कर दिया। वहाँसे वे स्टेशन आये। स्टेशनपर लड़ाईके समानसे भरी एक मालगाड़ी खड़ी थी जिसमें कार्यकर्त्ताओंने आग लगा दी, आग दावानलकी तरह भड़की। गाड़ीके डिब्बे भारी आवाज **लक्खीसराय थाना** करते हुए फटने लगे और उसके भीतरके गोले गोलियाँ इधर उधर फूट-फूटकर उड़ने लगे। उसी समय एक हवाई जहाज आया और ऊपर मड़राने लगा। साधारण जनता घबड़ा उठी। पर स्टेशनके ही कर्मचारी और लगुए भगुए स्टेशन लूटने लगे। उनकी लूट लगातार चौबीस घंटे जारी रही। इस लूटमें पुलिसवालोंने कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंको भी चालान किया था, पर एक भी कार्यकर्त्ता लूटका अपराधी नहीं माना गया और चार जो इस लूट केसमें फँसे स्टेशनके ही आदमी थे।

कार्यकर्त्ताओंने मननपुर स्टेशनको भी तोड़-फोड़का शिकार बनाया, उनने

उसके सारे सामान नष्ट कर दिये और कागजातको जला दिया।

सूर्यगढ़ाके कार्यकर्त्ताओंने रेलवे लाइनको छिन्न-भिन्न करनेमें अपनी पूरी ताकत लगायी। कजरा स्टेशन जलाया। किउल और लक्खीसराय स्टेशनके जलानेमें सूर्यगढ़ा खूब हाथ बँटाया। कजरा और पीरीके बीचकी लाइनें कई बार हटायीं और पटरियाँ उखाड़ीं। कजरा और किउलके बीच भी वे लाइनको छिन्न-भिन्न करते रहे। इन सब जगहोंके तारको उनने तोड़ फेंके।

तारापुरके कार्यकर्त्ताओंने तोड़-फोड़का काम शुरू किया असरगंज पोस्ट ऑफिसको जला करके। फिर उनने संग्रामपुर वढ़ोनियां और तारापुरके डाकघर बंद कर दिये। तारापुर सुलतानगंज और असरगंजके बीचकी पक्की सड़कका पुल तोड़ दिया और सड़कपर पेड़ काट काट कर गिरा दिया। तारापुर जमींदार किसान संघर्षका एक केन्द्र रहा है और उधरके जमींदार हैं बनैलीके राजा; जिनके अमले अपनी ज्यादतीके लिए काफी बदनाम रहे हैं। जनताने सोचा यह अमलोंसे बदला लेनेका अच्छा मौका है। इसलिए उनने बनैली राज्यकी कचहरियां जलानी शुरू कर दीं।

सिकंदराके कार्यकर्त्ताओंने डि० बोर्डके सड़कोंके पुल तोड़े और जमींदारीकी जमुई सबडिविजन कचहरियाँ जलाईं। बहुतसे कचहरियोंको उनने लूट भी लिया।

जमुईमें गिरिडीहसे गिरफ्तार होकर कुछ राजबंदी आये, जिनने स्टेशनपर लोगोंको तोड़ फोड़का प्रोग्राम दिया। लोग जमुई स्टेशनमें घुस गये और कल-जमुई पुर्जोंको बिगाड़ दिया। वहाँसे वे 'सिगनल केबिन' में गये। और उसे भी बरबाद कर दिया। जगदीश मिस्त्रीने इन सब कामोंमें प्रमुख भाग लिया। फिर लोगोंने रेल-तारको छिन्न-भिन्न कर दिया। जमुई कचहरीपर जबरदस्त पिकेटिंग भी हुई। पुलिस पिकेटरोंको बेतरह पिटती और तरह-तरहसे सताती। उपेन्द्र पाल, शिवेंद्र शरण सिंह और विन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंहको मार-पीट कर पुलिसने एस० डी० ओ० के सामने हाजिर किया। और एस० डी० ओ० ने उन्हें टामियोंके हवाले कर दिया जो जमुई स्टेशनपर अपना पड़ाव डाले हुये थे। टामियोंने इनको इतना मार मारा कि इनके नाकसे और मुँहसे खून गिरने लगा। होंठ और आँखें स्याह पड़ गयीं और पैर क्षत-विक्षत हो गये। अपनी चोटकी पीड़ासे वे हफ्तों छट पटाते रहे। मलयपुरके रमाबल्लभचतुर्वेदी भी उस समय इन्हीं

टामियोंके शिकंजेमें यंत्रणा पा रहे थे। एस० डी० ओ० ने ही इनको भी टामियोंके हवाले कर दिया था। इनका अपराध इतना ही था कि वे शान्ति स्थापनाकी चेष्टा कर रहे थे और एस० डी० ओ० को लिख भेजा था कि वे इस उद्देश्यकी सिद्धिके लिए एस० डी० ओ० की मदद करनेको तैयार हैं।

टामियोंने रमावल्लभजीके गलेको खींचनेकी कोशिश की। उनके मुँहपर थूक दिया। उनसे कागजों और चिथड़ोंमें लगे मल-मूत्र साफ करवाये।

झाझा थानेमें रेलवे लाइन जगह-जगह उखाड़ी गयी, इसके एक कार्यकर्त्ता कुमार जमुना सिंह अपने थानेमें तोड़ फोड़ करते हुए जमुई पहुँचे, जहां वे पकड़ लिये गये और उन्हें बूटसे कुचला गया और उनका सारा शरीर सिगरेटसे दाग दिया गया।

झाझा

१२ अगस्तको एक दलने पुलिस थाना, पोस्ट ऑफिस, आबकारी थाना, आबकारी दूकान और लखमनिया स्टेशनपर कब्जा कर लिया। दूसरे दलने आबकारी महालकी दूकानोंको बंद करके साहपुर कमाल स्टेशन और मुंगेर घाट स्टेशनपर कब्जाकर लिया। तीसरे दलने परिहारीकी आबकारीकी दूकानको बंद करके इमली स्टेशनपर कब्जा किया। इस तरह सम्पूर्ण थानेपर जनताका प्रभुत्व स्थापित हो गया। १३ अगस्तसे रेलवे लाइन उखाड़ना शुरू हुआ और दो दिनोंके अन्दर थाने भरमें रेलगाड़ीका चलना असंभव हो गया। थाने भरके सभी चौकीदार और दफादारोंके बरदी मुरेठे जला दिये गये। फिर तो इस थानेमें जलानेकी प्रवृत्ति जगी, आबकारीकी दूकानें और डाकघर लोगोंने जलाया। साहबपुर कमाल स्टेशनको लूटकर लोगोंने जला दिया।

बेगूसराय सबडिविजन

बलिया थाना

१८ अगस्तको श्रीअखिलेश्वर प्रसाद काफी लोगोंको बखरी थाना ले आये जहां उनने तिरंगा झंडा फहराया। पर दूसरे दिन थानावालोंने झंडेको उतारकर फेंक दिया। उसपर युवकोंकी उत्तेजित भीड़ टूट पड़ी। पर बाबू शिवदत्त नारायण सिंहके समझाने बुझानेपर शांत हो गयी। विधि पूर्वक उसने तिरंगा झंडा फहराया और फिर तोड़-फोड़के लिये रेलवे लाइनकी ओर निकल गयी। १४ अगस्तको श्रीसरयुग प्रसाद सिंहजी बखरी आये और जिस समय आप दुर्गास्थानकी विराट सभामें भाषण दे रहे थे उस समय सलौना स्टेशन जल रहा था और असिस्टेंट स्टेशन मास्टरके ही कुचक्रसे। उस असिस्टेंट स्टेशन मास्टरपर गबनका अभियोग चल रहा था। उसने कुछ युवकोंको बहकाकर स्टेशनको जलवाया।

बखरी

जहां उसके मुकदमेंके सम्बन्धके सारे कागजात थे। अभियोगसे बरी होनेका उसे यह अच्छा संयोग मिला। सरयुग बाबूने भरी सभामें उस घटनाका उल्लेख किया और असिस्टेंट स्टेशन मास्टर और उसके साथियोंके हथकंडेकी निन्दा की।

बरियारपुर थाना

२१ अगस्तको मेघौलके कार्यकर्त्ताओंके साथ एक जबरदस्त जत्था बरियारपुर थानेमें आ घुसा। दारोगा साहब और उनके सहायक उस जन शक्तिका मुकाबिला नहीं कर सके। थाना कार्यकर्त्ताओंके कब्जेमें आ गया। उनने थानाको बन्द कर दिया और थानेवालोंको सपरिवार हिफाजतसे बेगूसराय भिजवा दिया।

तेघड़ा थाना

तेघड़ा थानाके कार्यकर्त्ताओंने १२ अगस्तको थाना ऑफिसपर चढ़ाई की। थानेपर झंडा फहराया और थानेके ऑफिसरोंसे थानेका चार्ज ले लिया। उनने थानेमें अपने ताले लगा दिये और वहां अपना पहरा बैठा दिया। थानेवालोंको हुक्म किया—थाना छोड़ देनेका और उन सबोंने थाना खाली कर दिया। डाकघर, रजिस्टरी और कचहरीपर भी झंडे फहराये गये और ताले लगा दिये गये। स्टेशनपर भी झंडा फहराया गया और उसको कांग्रेसके कब्जेमें कर लिया गया। तेघड़ा थानेकी जनता अनेक टोलियोंमें बंटकर अनेक गलियोंसे आगे बढ़ी और बरौनी जंकशन, तेघड़ा स्टेशन, तिलरथ, रूप नगर, सेमरिया घाट और बरौनी फ्लैग बात-की-बातमें पहुँच गयीं। सभी स्टेशनपर कांग्रेसके झंडे फहरा दिये गये और स्टेशन स्टाफने कांग्रेसकी अधीनता कबूल कर ली।

बरौनी जंकशनको कार्यकर्त्ताओंने तोड़-फोड़का शिकार बनाया। उनकी टोलियां अपार जन-समूहको लेकर यहां इकट्ठी हो गईं। और रेलवे लाइन, तार, टेलिफोन, नष्ट करनेमें जुट गयीं। 'जिन, बिजली घर, पम्प कल और जितने कल पुरजे मिले, बरबाद हो गये। कागजात और ऐसी-ऐसी चीजें जो जल सकतीं थी—जला दी गयीं, सभी जगहोंमें 'कांग्रेसका राज्य' अंकित लेबुल चिपका दिया गया। बरौनी जंकशनके लुकस साहब इंजिनियर और फोरमैनने स्टेशन छोड़ अपने-अपने डेरेकी राह पकड़ी। मि॰ लुकसको गरीब कर्मचारियोंने घेर लिया और उनसे अपना वेतन मांगने लगे। लुकस साहबने कहा—'हम वेतन कहांसे देंगे। तुम लोग स्टेशनके कर्मचारी हो स्टेशनसे वेतन लो। कर्मचारियोंने पूछा कि स्टेशनसे वेतन कैसे वसूला जाय। लुकस साहब बोले कि स्टेशन तो मालसे भरा है। बस, उनका इशारा और गरीब कर्मचारियोंकी जरूरत, जिन्हें भुक्खड़ोंका सहयोग प्राप्त। तत्काल माल-

गाड़ियोंके सील तोड़े जाने लगे। सोलह सौ डब्बे वहां थे जो दिन भरमें खाली हो गये। जंक्शन उजाड़ दिखने लगा। स्टेशनकी किवाड़ियां तक लोग छुड़ा कर ढो ले गये। चीनी, चाय, पेट्रोल, कपड़े, तेल तथा अन्य चीजोंसे आस पासके गांव पट गये। सेकड़ों मनचले 'गैस मास्क', पहने इधर उधर स्वांग करते घूमने लगे। मांसके टुकड़ोंसे भरे हुए डब्बे हजारोंकी संख्यामें इधर-उधर लुढ़कते दिखाई देने लगे। जनतामें खूब उत्साह था और चारों ओर महात्मा गांधीकी जय जवाहर लालकी जयका शोर हो रहा था।

रूपनगर स्टेशन और सेमरिया घाटकी भी ऐसी दशा हुई। सेमरिया घाटके कर्मचारी डरके मारे स्टीमर बीच गंगामें ले गये और वहीं जैसे तैसे समय काटने लगे। रूपनगरमें मिलिटरीके ठहरनेके लिए जो घर बना था उसको लोगोंने जला दिया। उनके लिए होटलका इन्तजाम था उसको नेस्तनाबूद कर दिया।

बछवाड़ाके समीपका पुल तोड़ दिया गया। वहांका स्टेशन सामान सहित जला दिया गया। रेलवे लाइनमें सोलह भंभड़े वाला पुल था जिसे तोड़ दिया और मालगाड़ीके कई डब्बोंको उसमें गिरा दिया। जिसका नतीजा यह हुआ कि लाइन बननेके बाद भी गाड़ीका पास होना काफी दिनतक असंभव रहा।

थाने भरके पोस्ट औफिस बन्द कर दिये गये। और उनका काम देखनेके लिये। स्वयंसेवक नियुक्त कर दिये गये।

भागलपुर शहर

शहरका वातावरण १२ अगस्तके बादसे बड़ा अशान्त हो गया। नगरमें लगातार कई दिनोंसे हड़ताल थी, भुक्खड़ोंकी संख्याको बेकारी बढ़ा रही थी। उनके खाने पीनेका कोई इन्तजाम नहीं हो रहा था जिससे उत्तेजना फैल रही थी। परिणाम यह हुआ कि बी० एन० डब्लू० रेलवे स्टेशनपर भुक्खड़ समाज टूट पड़ा। स्टेशनमें आग लगा दी गयी। फिर लोगोंने माल गोदामपर धावा बोल दिया। सामने मिलिटरी लौरी थी, जिसमें आग लगा दी गयी। फिर निश्चिंत माल गोदाम लूटा जाने लगा। पुलिस खड़ी-खड़ी तमाशा देखती रही। वह जब-तब दूकानदारोंको देख कहती—अब कहां है तुम्हारी कांग्रेसी सरकार! बुलाओ तुम्हारे जान मालकी रक्षा करे। कुछ देरके ही बाद देखा गया कि पुलिस लुटेरोंका साझेदार बन गयी है। वह लूटसे उन्हें रोकती नहीं है हां, जब-तब भीड़को डरा दिया करती है और जब किसी ऐसेको पकड़ती है जो लूटका माल लिये जाता है तो उससे पूरा हिस्सा ले लेती है। भीड़ और पुलिसका रवैया एक जैसा ही रहा। हां, जब भीड़

पेट्रौलकी टंकीमें आग लगाने चली; तब पुलिसका रुख बदला। सार्जेन्ट आ धमका। फिर गोली चली। दो निरपराध राहगीर मारे गये एक हिन्दू और एक मुसलमान।

शहरमें १४४ की घोषणा कर दी गयी। कर्फ्यू आर्डर भी जारी हो गया। पर लूट बंद नहीं हुई। चर्खा-संघके भिखारी रामजी लिखते हैं :—मेरे सामने ठाकुर भागवत सिंहने श्रीशुभकरण चूड़ीवालसे कहा—चलकर अभी लूट बंद करना चाहिये। चौदह अगस्तकी उस अंधेरी रातमें किसीने लूट खसोट रोकनेका प्रयास नहीं किया। लूटका माल पुलिसके घर पहुँचने लगा। नोकर शाहीके कमजोर पायेको मजबूत करनेवाले सेठ-साहूकारोंको भी लूटका माल खूब हाथ लगा। लुटेरे पानीके दाममें लूटका माल बेचते और ये सेठ-साहूकार खरीदते। सारा काम खुलकर हो रहा था। सवेरा हुआ। अब बंद मालगाड़ीका माल जो बाहरसे आया था और बाहर जानेको था डब्बा तोड़कर लूटा जाने लगा। मुझे इसकी सूचना मिली। ठाकुर भागवतप्रसाद सिंह और श्री हरेकृष्ण प्रसादके साथ स्वयं-सेवकोंकी टोली लेकर मैं स्टेशन मालगुदाम पहुँचा। तिरंगा झंडा देखते ही लुटेरे भागने लगे। उन्हें मालूम हुआ कि लूटना कांग्रेसका हुक्म नहीं है। फिर लूट छोड़ वे सभी भाग गये। तिरंगे झंडेने लुटेरोंसे ५० हजारका माल बचाया। चोरी और लूटका बहुत माल रेलवे कर्मचारियोंने अपने क्वार्टरमें छिपा रक्खा था, हमलोगोंने उसे बरामद किया। फिर हमारी कोशिश रही कि मालको मालिकोंके सुपुर्द किया जाय। इसमें हमको बहुत सफलता मिली। हमने श्री चंद्रिकासिंह, श्री राधाकृष्ण प्राणसुख, और श्री सूरजनारायण मिश्रको प्रचार करनेके लिये भेजा कि कांग्रेसकी आज्ञा लूट खसोट करनेकी नहीं है। लूटको बंद करो पर पुलिसने तीनोंको गिरफ्तार कर लिया शहरमें भी गिरफ्तारी शुरू हो गयी। इस गिरफ्तारीको देख विद्यार्थी समाजने शहर छोड़ गांवकी राह ली।

शाहकुंड थानेके कार्यकर्त्ता एक हाथमें पलीता और दूसरे हाथमें किरासन तेलका टीन लेकर तोड़-फोड़के लिये निकले। थाना आये, उसे जलाया। वहाँसे

शाहकुंड थाना

कचहरी आये और वहाँ जलाने लायक जो पाया उसे जला दिया। फिर डाकघर पहुँचे, जिसे सामान सहित फूंक दिया। फिर कलाली पहुँचे, जिसे तोड़-फोड़कर बरबाद किया ; बादको जला दिया। इस अग्नि-कांडमें अगुआ थे श्रीप्रभाचंद्र ठाकुर और रमानाथ ठाकुर।

कहलगांव टाउनमें स्थानीय डाक बंगला भस्मीभूत हो गया। पोस्ट औफिसके टेलिफोन और टेलिग्राफके सभी यंत्रोंको तोड़-फोड़ दिया गया और उसके सभी कागजात जला दिये गये। रेलवे स्टेशनके सामानको भी तोड़-फोड़ दिया गया और जो कागजात मिले उन्हें जला दिया गया। म्यूनिसिपैलिटीके कागजोंमें भी आग लगा दी गयी। 'अड़गड़ा' खोल दिया गया जिसके मवेशी भगा दिये गये। नंदलालपुर, नबादा और कहणदासपुरमें शराब और गांजेकी दूकानोंके शराब और गांजा बरबाद कर दिये गये। नंदलालपुर और नबादाकी दूकानें तो जला भी दी गयीं। कहलगांव स्टेशनके आस-पास रामपुरके नजदीक, रामजानीपुरके समीप और शैलन्द्रा गुंगटीके निकट रेलवे लाइन उखाड़ी गयीं और तार काट डाले गये।

घोघामें भी पोस्ट औफिस और रेलवे स्टेशनके टेलिग्राफ और टेलिफोनके सभी मशीनोंको नष्टकर दिया गया और उनके कागजात जला दिये गये। आबकारी महालकी दूकानोंके सामान नष्ट कर दिये गये। डाक बँगला जला दिया गया और 'अड़गड़ा' खोल दिया गया। स्टेशनके दोनों ओर बहुत दूर तक जगह-जगह रेलवे लाइन उखाड़े गये और तार काटे गये। सनौहलाका डाक बंगला भी जला दिया गया।

सुलतानगंज थानेमें अकबर नगर, जहांगीरा और सुलतानगंजकी रेलकी पटरियां उखाड़ दी गयीं और सभी बड़े-बड़े पुलको बेकार कर दिया गया। पेड़ोंको **सुलतानगंज** काट-काटकर सड़कोंपर ढेर कर दिया गया। रेलगाड़ीको रोककर लोगोंने श्रीसरस्वती देवी भूतपूर्व एम० एल० ए० और राजेश्वरी देवीको पुलिसके हाथोंसे छुड़ा लिया। दोनों देवियां कैदीकी हालतमें पटने भेजी जा रहीं थीं। सुलतानगंजके पोस्ट औफिसको भी बरबाद कर दिया गया। फिर लोगोंने रेलवे स्टेशनपर धावा किया। स्टेशनके कल-पुरजोंको बिगाड़ कागजोंको जला दिया। जब लोग भवनाथपुरके पास रेलकी पटरियां उखाड़ रहे थे तब गोलियाँ चलीं पर न कोई घायल हुआ और न पटरियोंका उखाड़ना रुक सका। जहांगीरामें सड़क काटते समय तो लोगोंपर हवाई जहाजका आक्रमण हुआ। स्टीमरपरसे भी गोली चली। पर विद्रोही बाल-बाल बच गये। हाँ, तितर-बितर हो गये। हवाई जहाजके झपटेके झोंकेसे एक व्यक्ति पुलके अन्दर गिर पड़ा, पर उसे खास चोट नहीं लगी।

अकबर नगर स्टेशन भी लूटा गया और जलाया गया। स्टेशनपर जो गाड़ी खड़ी थी—उसमें लगे हुए डाकके डब्बेको लूट लिया गया। सुलतानगंज स्टेशनपर भीड़ने एक अंग्रेजको पकड़ लिया, उसे सत्तू खिलाया, उससे अपने नारे बोलवाये और फिर छोड़ दिया।

१७ अगस्तकी घटना है, सुलतानगंज रेलवे स्टेशनपर एक मालगाड़ी खड़ी थी, कार्यकर्त्ताओंको लगा कि उसमें लड़ाईके अस्त्र-शस्त्र हैं। बस लूट लेनेकी इच्छा हुई। वहाँ सदल-बल बाबू सियाराम सिंह मौजूद थे। बाबू रासबिहारी लाल और श्री ठाकुर प्रसाद उर्फ मंडलजी भी उपस्थित थे। इन सबोंमें विवाद छिड़ा कि मालगाड़ीकी लूट दिनमें हो या रातको। थाना पास ही था, जो इस लूटके प्रोग्रामसे बिलकुल उदासीन मालूम पड़ता था। कुछ लोग कहते कि दिनकी लूटको थाना नापसन्द भी कर सकता है। पर रातकी लूट उसे अखरेगी नहीं। इसलिये सियाराम बाबू वगैरहकी राय हुई कि मालगाड़ी रात ही को लूटी जाय। इसपर रासबिहारी लाल स्टेशन छोड़ थाने आ गये और घर जानेकी तैयारी करने लगे। इधर अन्धेरा होते ही लूट शुरू हुई पर ऐन मौकेपर अंग्रेज सार्जेन्ट हथियार बन्द सिपाहियोंको लेकर पहुँचा और गोली दागनी शुरू कर दी। सियाराम बाबू तो दीवार फांद निकल भागे। पर सात आदमी गोलीके शिकार हो गये। राका, थाना गोगरीके परमेश्वर मिश्र, मिरजा गांव, थाना सुलतानगंजके मेघूतांती, नारायणपुरके भोला मंडल, मुसहरीके फागू मांझी और बदन मांझी और जहाँगीराके सितेश्वर साह।

बिहपुर थाना युद्ध समितिके संचालक श्रीराजेन्द्र झा स्वतंत्रने एक बैठक बुलाकर तय किया कि थाना पोस्ट आफिस, रजिस्टरी ऑफिस डाक बंगला और स्टेशन

बिहपुर

वैगरहपर कब्जा किये जायें। दूसरे दिन इलाके भरके बेशुमार लोग जमा हुये जिनके सहयोगसे कुछ चुने हुये आन्दोलनकारी आगे बढ़े और थाना रेलवे स्टेशन आदि सभी सरकारी इमारतों तथा ऑफिसोंमें आग लगा दी। स्टेशनकी रक्षाके लिए हथियार बंद सिपाही पहरा दे रहे थे। पर मालूम होता है कि इतनी बड़ी भीड़ और इतना ज्यादा जोश देख उन्हें काठ मार गया। स्टेशन मास्टर पोस्ट मास्टर सबोंने आगकी फैलती हुई लपट देखकर अपने-अपने घरकी राह ली। कुछ ही देरमें सरकारका सारा सरंजाम जल गया। जो चहल-पहलकी जगह थी श्मशान बन गया। काफी लोग लूट पाटमें लग गये। सरकारी

गोदाम और लड़ाईका सामान लूटना शुरू कर दिया। गल्ला, कपड़े, तेल, फुलेल आदि लाखोंका माल लूटा गया।

नारायणपुर स्टेशनको तोड़-फोड़ कर फूंक डाला गया। पोस्ट ऑफिसके कागजात जला दिये गये। नारायणपुरसे नौगछिया तक और बिहपुरसे महादेवपुर तकके तार काट फेंके गये और बहुत बड़ी तादादमें रेलकी पटरियां उखाड़ फेंकी गयीं। महादेवपुर घाटसे जो रेल गाड़ी आ रही थी उसको कांग्रेस सरकारकी ओरसे जब्त कर लिया गया। मुसाफिरोंको उतर जानेका आदेश दिया गया। गार्ड और ड्राइवरको गिरफ्तार कर लिया गया। बादको पेट्रोल छिड़क कर समूची गाड़ीमें आग लगा दी गयी। गाड़ी धुआं और लपटें फेंकती हुई काफी देर तक जलकर राख हो गयी। उसकी लोहेकी बेंचें ही ब्रिटिश-साम्राज्यकी किस्मतपर रोनेके लिए बची रहीं।

आन्दोलनकारियोंने थाने भरमें आबकारीकी दूकानोंको बंदकर दिया और पोस्ट ऑफिसके कागजात जला दिये।

लत्तीपुर स्टेशनपर भी हमला हुआ। और उसके बहुतसे सामान नष्ट कर दिये गये और वहांकी रेलवे लाइन छिन्न-भिन्न कर दी गयी। इन्हीं दिनों यहां एक घटना हुई। एक गोरा सार्जेन्ट लगभग एक दर्जन हथियार बंद सिपाहियोंको लेकर रेलवे लाइन पकड़े-पकड़े भागलपुर जा रहा था। लत्तीपुरके लोगोंने इसे देखा। बस बंदूक छीन लेना चाहा। लगभग चालीसकी तादादमें वे उसका पीछा करने लगे। पहले तो इन्हें पीछे लगा देख सार्जेन्टने बंदूक दिखा इन्हें भगाना चाहा, पर भागनेके बजाय इनलोगोंने समझा कि उस टोलीके पास गोली नहीं है। बस, जरूरत है कि ढेले मार-मार इसे परेशान कर दिया जाय और फिर इसकी सारी बंदूकें छीन ली जायँ। पहले इन्होंने कुछ ढेले फेंके जिसके जवाबमें सिपाहियोंने भी बंदूकमें पत्थरकी गोलियाँ भर-भर कर छोड़ना शुरू किया। सतरूप महतोने अपने लड़के दशरथ महतोसे कहा कि न सार्जेंटको गोली है और न सिपाहियोंको। देखो न हमारे ढेलोंके जवाबमें ये भी ढेले ही फेंक रहे हैं। यही मौका है बढ़ो बेटा! सार्जेन्टको एक ढेला खींच मारो फिर बंदूकें छीन लो। दशरथ महतो आगे बढ़े, सार्जेन्टको पत्थर फेंक मारा। बस, अबकी गोली चली और तबतक चलती रही जबतक लोग गिर न पड़े और भाग न गये। गिर पड़नेवालोंमें एक थे वही दशरथ महतो—उम्र २१ साल; जो तत्काल शहीद हो गये।

मधेपुरा और सुपौल सबडिविजनोंमें हुकूमतकी बागडोर कांग्रेसके हाथ आगयी और इस सिलसिलेमें जो काम हुए उनमें तोड़ फोड़का स्थान साधारण सा है। इस लिये उसका वर्णन अगले परिच्छेदकी घटनाओंके साथ हुआ है।

बांका सबडिविजनका इतिहास बहुत कुछ तोड़ फोड़का ही इतिहास है। वहांकी परिस्थितिमें ऐसी विचित्रता है जिसका स्पष्टीकरण अगले परिच्छेदमें किया गया है।

पूर्णिया, बरारी थाना

कुरसेलामें हाइ-स्कूलके छात्रोंने कुरसेला रेलवे स्टेशनपर धावा किया, फरनीचर और शाशेके सामानको तोड़-फेंका। कागजातमें आग लगा दी और रेलवे लाइनको काफी छिन्न-भिन्नकर दिया। उन्होंने पोस्ट औफिसपर दखल जमाया और वहाँसे जलूस बाँधकर टीकापट्टी पहुंचे।

वहाँ पोस्ट मास्टरके लड़के श्रीअवधकिशोर झाके सुझानेपर टीकापट्टी पोस्ट औफिसको तोड़-फोड़का शिकार बनाया। पोस्ट मास्टरने माँगनेके पहले ही पोस्ट औफिस तथा यूनियन बोर्डकी ताली दे दी। फिर सभी कमरेके कागजातको बाहर फेंक फेंककर कागजों और रजिस्टरोंका ढेर लगा दिया, जो ताला जल्दी नहीं खुला उसे छेनी हथौड़ासे तोड़ डाला गया। लेटर बक्स और साइन बोर्ड थकुच डाला गया। फिर कागजोंके ढेरमें आग लगा दी गयी। पोस्ट औफिसका कुल स्टाम्प और कार्ड लिफाफा ले लिया गया। चौदह रुपये नकद पाये गये। जो ले लिये। हाँ, कर्मचारियोंकी व्यक्तिगत सम्पत्ति अछूती रही। बादको जत्था रुपौली थानेकी ओर चला गया।

रुपौली

रुपौली थानेकी ओर बढ़ते हुये कुरसेला और टीकापट्टी आश्रमके जत्थोंने राहमें तिनटंगाके असेसर पंचके औफिसके कागजात जलाये और रातको बिरौली बाजारमें पड़ाव डाला। १५ अगस्तको बिरौली बाजारकी आबकारीकी दूकानके सामान नष्ट कर दिये। फिर रुपौली थानापर झंडा फहराया गया। उसके कागजात जलाये गये और उसके औफिसमें ताला लगा दिया गया। १६ अगस्तको रुपौली हाइ स्कूलके विद्यार्थियोंने जनताके सहयोगसे कलाली, यूनियन बोर्ड और डाकघर जला दिये।

बनमनखी

बनमनखी रेलवे स्टेशनमें तोड़-फोड़ सबसे ज्यादा हुआ। बनमनखीमें सेवादल कैम्प था, जहाँ कार्यकर्त्ता ट्रेनिंग पा रहे थे। इस कैम्पमें पूर्णियासे तोड़-फोड़का आदेश लेकर डाक्टर कलानन्द ठाकुर आये। सबने मिलकर तय

किया कि रातको तार काटनेका काम शुरू हो। फिर लगभग पांच-सौ छात्र और चालीस कार्यकर्त्ता जुट गये और रात भरमें बनमनखीके दोनों ओरके तार काफी दूर तक काट फेंके। रेलवेके मिस्त्रियोंने इनकी बड़ी मदद की। फलस्वरूप दूसरे दिन पांच मील तककी रेलवे लाइनको, इन सबने छिन्न-भिन्नकर दिया और सरसीका पुल भी जला दिया। शाम होनेको थी और लोग थक गये थे। इसलिये तोड़-फोड़के अगुआ अनूपलाल मेहता और कलानन्द ठाकुरने लोगोंको विश्रामका आदेश दिया। और खुद केशवप्रसाद साहा, गणेश झा और दशरथ यादव आदि साथियोंको लेकर स्टेशनपर खड़ी रेल गाड़ीके सेकंड क्लासके डब्बेमें जाकर बैठ गये। वे जानते थे कि उनने अपने कामसे पूर्णियाके अधिकारियोंको तिलमिला दिया है। और वे अब-तबमें वहाँ पहुँचने वाले ही हैं। उनने अपने साथियोंको कहा कि पकड़े जानेपर आप धीरज न खोइयेगा। अधूरे कामको पूरा करनेमें लगे रहियेगा। जो सामने आवे, उसे बरदाश्त करना तो हमें है ही। सात बजे शामको जिला मजिस्टर और पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट दो दर्जन मिलिटरी लेकर पहुँच गये और इन सबोंको गिरफ्तार कर लिया।

इनके कामकी गुरुताका अनुमान इसीसे किया जा सकता है कि इस अपराधके लिये अनूपलाल मेहता और कलानंद ठाकुरको फांसीकी सजा मिली और केशवप्रसाद साहाको १५ हजार जुर्माना हुआ। हाईकोर्टने सबोंको रिहा कर दिया।

१४ अगस्तको आन्दोलनकारियोंने कटिहार स्टेशनपर आक्रमण किया और **कटिहार** उसे काफी नुकसानी पहुँचायी। वहाँकी रेलवे लाइन छिन्न-भिन्न कर दी। रौतारा और सोनाली स्टेशनके सामानको किरासन तेल देकर जला दिया।

१५ अगस्तको पूर्णिया कचहरीपर धावा करना था। जहाँ-तहाँसे लोग हजारोंकी तादादमें वहाँ इकट्ठे हो चुके थे। इसी समय खबर लगी कि श्रीजगन्नाथ कुंडु यानी **पूर्णिया शहर** ध्रुवजी पूर्णिया अस्पतालमें शहीद हो गये। बालक ध्रुवकी शहादतकी खबर शहरमें बिजलीकी तरह फैल गयी। सभी इसकी झांकी लेनेको उमर पड़े। शहीदका जलूस जिधरसे निकल रहा था उधर श्रीजीवत्स शर्मा 'हिमांशु' अपने जलूसको लेकर बढ़े। जब दोनों जलूस शामिल हो गये, तब लोगोंकी संख्या कमसे-कम तीस हजारकी हो गयी। जिला मजिस्ट्रेट और एस० पी०

ने हैट उतारकर शहीदके प्रति अपना सम्मान प्रकट किया और जलूसको बेरोक टोक अपनी राह जाने दिया। सभी लोग अर्थी लेके कोसी नदीके किनारे पहुँचे, जहाँ ध्रुवका दाह संस्कार हुआ। ध्रुवके कर्मवीर पिता किशोरीलाल कुंडुका उस अवसरपर एक ओजपूर्ण भाषण हुआ। और गंभीर शब्दमें उनने कहा कि आज मेरा लड़का आजादीके लिये शहीद हुआ है; मेरे सौभाग्यकी आज सीमा नहीं है। श्रीजीवत्स शर्मा 'हिमांशु' तथा नरसिंह नारायण सिंहने भी शहीदको अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। दाह-संस्कार करके जब लोग लौट रहे थे तब 'हिमांशु' जी गिरफ्तार कर लिये गये। डाक्टर किशोरीलाल कुंडु दूसरे दिन रौतारा स्टेशनपर गिरफ्तार कर लिये गये। उन्हें अपने पुत्रका श्राद्ध भी नहीं करने दिया गया।

अररिया सबडिविजनमें बाबू बसन्तसिंहने अगस्त आन्दोलनकी आवाजको थाना थाना पहुँचा दिया। उनने छात्रोंको उत्साहित किया और कार्यकर्त्ताओंकी हिम्मत बढ़ायी। फारबिसगंज और अररियाको मैदानमें उतार वे कुआरी थाना आये जहाँकी कांग्रेस कमिटीके यह सभापति थे। इनके वहाँ पहुँचनेपर जनता जोशमें आ गयी। कुआरी हाटमें सभा हुई जहाँका दृश्य देखकर पुलिस सहम गयी और उसने एस० डी० ओ० से बसन्त बाबूपर गालिब आनेके लिये मदद मांगी, बसन्त बाबू सबडिविजन भरके थानाओंपर अधिकार करलेनेका आयोजन कर रहे थे। उस समय एस० डी० ओ० का सन्देश लेकर श्री पुण्यानन्दझा इनके पास आये और कहा कि आप थानापर चढ़ाई करनेका इरादा छोड़ दें। पर आपने नहीं माना। वे कुरसाकांटा, डभरा और पटेगनामें सभा करते हुये वहांके चौकीदारोंसे इस्तीफे दिला रहे थे कि अररियाके पुलिस दलने इन्हें १८ अगस्तको गिरफ्तार कर लिया। इनकी गिरफ्तारीने कार्यकर्त्ताओंको भड़का दिया। वे इकट्ठे होने लगे। और पुलिसके हाथसे इन्हें छीन लेना चाहा। पर इनने उन्हें समझा बुझाकर शान्त किया क्योंकि गोली चलना अनिवार्य था और गोली उस परिस्थितिमें आन्दोलनकी गति रोक देती।

श्री नगेन्द्रझाने अररियाके पूरबी इलाकेकी कलालियोंके बन्द कर दिया। चौकीदारोंसे इस्तीफे दिलाये। रघुनन्दन भगतने फारबिसगंज और गढ़ बनेलीके

अररिया छात्रोंके सम्मिलित उद्योगसे अररिया कचहरीपर झंडा फहराया। उनने बहुत जगहोंके कलालियोंको नष्ट भ्रष्ट कर दिया फिर अररिया स्टेशनके शीशे और फरनीचरको तोड़ने फोड़ने छात्रोंका दल फारबिसगंज पहुँचा।

फारबिसगंज क्रान्तिका अवाहन कर रहा था सुबह शाम जलूस निकाल कर। बाबू छेदीलाल दासकी प्रेरणासे १४ अगस्तको एक बहुत बड़ा जलूस निकला जिसका नेतृत्व कर रहे थे बाबू रामदेनी तिवारी। इस जलूसने छात्रों और बाजारकी

फारबिसगंज जनतामें आग लगा दी। उनकी बड़ी तादाद ट्रेनसे ढोलबज्जा आयी जहां उन्हें गांववालोंका पूरा सहयोग मिला। वहां उनने तार काटे, काफी दूर तक रेलवे लाइन उखाड़ दी और स्टेशनमें आग लगादी। वे आपसके चौकीदारोंसे भी मिले जिनसे इस्तीफे दिलवाये।

फिर भागलपुरसे सूर्यानन्द साह आये। स्कूलको बन्द कराया, यूनियन बोर्ड आफिसको जलाया। डाकघर और अड़गड़ाको भी नुकसान पहुचाया।

घूरना थानामें कार्यकर्त्ताओंने जिसके मुखिया थे श्री शिवराजसिंह, चौकीदारोंसे इस्तीफा दिलवाने और उनकी वरदी पेटी जलानेमें बड़ी दिलचस्पी ली। मदुरा

घूरना साहबगंज और अस्कनके चौकीदारोंकी वरदी लेकर धरहा बाजार में जलायी गयी। नाथपुरके चौकीदारोंसे इस्तीफे दिलाये गये। धनहा डाकघर और कलालीको बंद कर दिया गया। अड़गड़ा तोड़कर पशुओंको बाहर कर दिया गया।

१८ अगस्तको सरसी मिड्ल स्कूलमें श्रीवैद्यनाथ चौधरीजीकी अध्यक्षतामें कार्यकर्त्ताओंकी एक बैठक हुई जिनमें जिले भरके कामोंपर समालोचनात्मक

सरसी-बैठक दृष्टिसे विचार किया गया। सभी कार्यकर्त्ताओंने अपने-अपने इलाकेकी अवस्थाका वर्णन किया। अन्तमें निम्नलिखित प्रस्ताव पास हुए:—

(१) २३ अगस्तको सब जगह खुलेआम नोटिस देकर तोड़-फोड़ किया जाय।

(२) २५ अगस्तको जिले भरके सभी थानोंपर धावा बोला जाय और राष्ट्रीय झन्डा फहराकर थानेकी चीजें सुरक्षित स्थानमें रख दी जायें। सुरक्षित स्थानमें रखकर भी इस बातका खयाल जरूर रखा जाय कि चीजें खराब नहीं होने पावें।

(३) २७ अगस्तको पूर्णिया कलक्टरीपर राष्ट्रीय झंडा फहराया जाय। कचहरी अपने कब्जेमें लाया जाये।

धावेकी खबर थानेदार एवं जिला मैजिस्ट्रेटको अहिंसाके सिद्धान्तके अनुसार दे दी जाये।

यह भी तय पाया कि पूर्णियामें जत्थाका नेतृत्व सर्व प्रथम श्रीलक्ष्मीनारायण

सिंह सुधांशु करें। यदि वे पहले ही गिरफ्तारकर लिये गये तो श्रीवैद्यनाथ चौधरी जत्थाका नेतृत्व करें, और यदि इनकी गिरफ्तारी भी हो गयी तो नेतृत्वका भार श्रीवासुदेव प्रसाद सिंहपर रहे।

सरसी-प्रस्तावने पूर्णिया जिलामें तोड़-फोड़की आंधी दोबारा उठाई।

२३ अगस्तको जिले भरमें रेलवे स्टेशन, रेलवे लाइन, डाकघर और कलाली वगैरहपर हमले हुए। कहीं कहीं तो २३ अगस्तसे २५ अगस्त तक होते रहे। कुरसेला, रौताग, मनसाही और सोनाली स्टेशनोंमें आग लगा दी गयी जिससे इन स्टेशनोंको विशेष हानि पहुँची। सोनापुर, फौआ, सालमारी बनमनखी, रानीपतरा, मनिहारी, लाभ और कुरैठा स्टेशनके कागज-पत्र मिट्टीका तेल डाल भीड़ने जला दिये।

कुरसेलासे कटिहार, कटिहारसे बारसोई, कटिहारसे मनिहारी और बड़हरासे मुरलीगंज जानेवाली रेलवे लाईन काफी तौरसे तोड़े और उखाड़ फेंके गये।

इस तोड़-फोड़के सिलसिलेमें दुर्घटनायें भी हुईं बरारी और आजमनगर थानेमें।

पोठिया, समेली, डुमरिया, कुरसेला, महरापुर, नवाबगंज बलकी आदि गांवोंके लोग बड़ी तादादमें इकट्ठे हुये और रेलवे लाइनकी सीधमें रवाना हुये।

बरारी कुरसेला स्टेशनपर मिलिटरीका अड्डा था। इस मिलिटरीके विविध उपद्रवोंसे पासके बाजारवाले ही नहीं बल्कि आसपासके इन गांवोंके लोग भी तंग आ गये थे। मौका आया और वे उसके खिलाफ उठ खड़े हुये। जब वे देवीपुर कोठीके पास पहुंचे तो देखा कुछ मिलिटरीके जवान मशीनगनके साथ लाइनपर गश्ती लगा रहे हैं। वे तो उनसे भिड़ने ही आये थे, उनकी ओर बढ़े। बारबार चेतावनी मिली पर पीछे नहीं हटे, फिर तो इनपर मशीनगन गोलियां उगलने लगीं। कितने घायल हुये और चारकी जान तो उसी दम चली गयी।

फौआ स्टेशनपर भीड़ तोड़ फोड़ खत्म कर रही थी कि वहाँ मिलिटरी पेट्रोलिंग ट्रेन आकर रुक गयी। भीड़ भागने लगी पर मिलिटरीने गोली चलाई ही और

आजम नगर काफी। अरिहना मानिकपुरके झबरू केवट दो गोलियां खाकर बेहोश गिर पड़े। लोग उन्हें उठा मानिकपुर रवाना हुये। पर राहमें ही झबरूका प्राण पखेरू उड़ गया। उनकी अन्त्येष्टि धूमधामसे हुई।

पूर्णियासे धमदाहा जानेवाली सड़क ज्यादा खराबकर दी गयी। धमदाहा घाटपर जितनी नावें थीं डुबा दी गयीं।

अयोध्यागंज बाजार, सोनाली रौतारा, महादेवपुर, मनिहारी, मनिसाही, होमकुण्ड, अहमदाबाद, दिल्ली दिवानगंज, मदारीचक, पोढ़िया बरेटा, दुर्गागंज, जोतराम राय, बनौली. कोठा, भवानीपुर, राजधाम, मेरीगंज, कुँआरी, कुरसा काँटा डाकघरके कागजात जलाये गये।

कदवा, भवानीपुर, सोभापुर, बैरिया, रानीगंज, बिशुनपुर, मनिहारी, किशुनपुर, अहमदाबाद, मनसाली, पोठिया, फुलकाहाट, गोड़ाबाड़ी, कोनारा, कोलाशीकी कलालियाँ विशेष रूपसे तोड़-फोड़की शिकार हुयीं।

संथालपरगनामें तोड़ फोड़ शुरू किया देवघरके विद्यार्थियोंने जिनके नेता और प्रेरक थे पं० पंचानन मिश्र। ता० १४ अगस्तको जो छात्रोंका जत्था मधुपुर गया सो

संथाल परगना

लौटता हुआ जशीडीहमें अटक गया। बहुतसे लड़के स्टेशनमें घुस गये और सामान नष्ट करने लगे। कितने तार काटने लगे। फलस्वरूप कितने गिरफ्तार भी हुये जिनमें कुछ वहांके लोग भी शामिल थे।

देवघर क्रान्तिकी आगको जिला भरमें फैलाना चाहता था। जिस परचेको पं० पंचाननजी पटनेसे लाये थे उसकी कापियां की गयीं और श्री रामचरित्र सिंहजी उन्हें ले जिला भरमें वितरण करने निकल गये। पण्डितजी लिखते हैं—इसके पश्चात् तो चारों ओरसे तूफानका इतना जबरदस्त वेग उठा कि किसीको संभालनेका अवसर ही नहीं मिला। दोनों ओरसे अपनी शक्ति आजमाइशकी तय्यारियां हो रहीं थीं। आन्दोलनको सचमुच इन्कलाबका रूप बना देनेके लिये शहरके मान्य नेता तथा कार्यकर्त्ता उत्सुक थे। उन घड़ियोंमें देवघरके अमीर श्री रामबाबूका रूप दर्शनीय था। वे आज हमारे बीच नहीं हैं। जेलकी यंत्रनाको उनका कोमल स्वास्थ्य सहन न कर सका। अस्थिचर्म शेष रह कर वे जेलकी चहार दीवारीसे निकले और शहीद हो गये। परन्तु उस समय उन्होंने उस ज्वालामें प्रर्याप्त घी डाला। आन्दोलनके सारे व्ययकी जिम्मेवारी अपने सर ले रखी थी। देहातोंमें किसीसे चन्दा मांगना भी उन्होंने रुकवा दिया था।

१५ अगस्तको खबर फैली कि जेलमें लोगोंको भोजन नहीं मिल रहा है। इसने एक बवेला खड़ा कर दिया। बाजार बन्द हो गया और छोटी छोटी दूकानोंके ही सहारे जीने वाली बूढ़ियोंसे यह कहते सुना गया—"जेलमें लरिकनके मारे छे हमरीनी जीके कि करभों।" सारा शहर जेलकी ओर उमर चला। जेल सुपरिन्टेन्डेन्टने समझदारी दिखलायी, श्री रामराजजीको भीतर जाकर जेल दिखला दिया और

राजबंदियोंको पूरी सुविधा देनेकी प्रतिज्ञा की। फिर लोग वापस चले आये।

इसी समय श्री पारसनाथजी केशाके प्रभावसे तोड़-फोड़ फूंक फांक दल संगठित हुये। तोड़-फोड़ दल रेल और सड़कको नष्ट करता और फूंक फांक दल डाकघरों, अबकारीकी दूकानों तथा और और सरकारी अड्डोंको जलाता, बरबाद करता। पहला दल देहातके लोगोंकी सहायतासे मधुपुरसे सेमुल तलाके बीचकी रेलकी पटरियोंके उखाड़नेमें लग गया। दूसरे दलने देवघर और आसपासके डाकघर और गांजे शराबकी दूकानोंपर धावा बोलना शुरू किया। शहरके सभी डाकघर नष्ट कर दिये गये। बिलासी कुण्डा और गुरुकुलके डाकघरोंकी भी यही दशा हुई। डाकघरोंके रुपये पैसे लौटा दिये जाते और उनके बाकी सामान जला दिये जाते, नष्ट कर दिये जाते। देवघरके बड़े डाकघरमें भी आग लगायी गयी। इस अपराधमें एक लड़का पकड़ा गया जिसको जेलके अलावा बेंतकी सजा भी दी गयी। इस फूँक-फाँक दलमें संस्कृत विद्यालय गुरुकुल और गोवर्धन-साहित्य-विद्यालयके विद्यार्थी शामिल थे। देवघर जेलमें रोज हल्ला होनेसे अधिकारियोंने कुछ राजबन्दियोंको दुमका रवाना किया। बन्दियोंको लेकर लॉरी जब कौसागढ़ीके पास आयी तब रास्ता जाम देख रुक गयी। उसके रुकते ही केशादल और तमाशबीन एक साथ उसपर टूट पड़े। कैदी छुड़ा लिये गये और लॉरी नष्ट कर दी गयी। बेचारे सिपाही बन्दूक सहित थाने लौट आये। इस दलने शहरकी शराब गांजेकी दूकानें तोड़-फोड़ दीं और जला दीं।

इसी बीच सरकारने गढ़वाली फौजको मंगा लिया जिसका शहरमें प्रदर्शन होने लगा। पर फौज तुरत चली गयी।

सरंथा थानाके कार्यकर्त्ता श्रीशंभुनाथ बलियासेने एक वारण्ट लिखकर श्रीनगदीरायको दिया जिसके मुताबिक स्थानीय थानाके जमादारको गिरफ्तार करना था। श्रीनगदीरायने जमादारको गिरफ्तार कर लिया और १२ घंटे हाजतमें रक्खा। हाजतसे छूटते ही वह देवघर आया और अधिकारियोंको उसने आप बीती सुनाई।

देवघरमें गोरी फौज आचुकी थी और हाई स्कूलमें डेरा डाले थी। एस० पी० साहब उसका उपयोग करनेके लिये आतुर हो गये थे। मौका मिला वे घर जाने देवघर हुये मजिस्ट्रेटके साथ लौट आये और २६ अगस्तको फौजकी एक टुकड़ी ले श्रीरामबाबूकी दूकानपर नगदीरायजीको गिरफ्तार करने पहुँचे।

वारण्ट तो था नहीं, इसलिये नगदीरायजी थाना जानेसे इनकार करते थे। लोगोंकी भीड़ जमा हो गयी पर कुछ कर नहीं रही थी। मगर जब श्रीनगदीराय घसीटे जाने लगे तब भीड़ने रोड़े उठाये। पं० पंचाननजी लिखते हैं कि छतोंसे पत्थरके दो-चार ढेले आये और एक कपड़ेका जलता हुआ गेंद भी मिलिटरी लौरीके पास आ गिरा। बस, गोलियां चलने लगीं। सेना पीछे हटती जाती और गोली छोड़ती जाती। पत्थर फेंकते समय श्री अशर्फीलालजीकी छातीमें गोली लगी और वे तत्क्षण चल बसे। गोयनका धर्मशालासे उत्सुकता वश ज्योंही श्री त्रिगुणानन्द खवाड़े बाहर निकले कि एक गोली लगी और एक गोली लगी गलीसे जाते हुये छात्र श्री पूर्णेन्दु बोसको, दोनों अस्पताल भेजे गये। त्रिगुणानन्दजी तो वहां स्वर्ग सिधारे और पूर्णेन्दुजी एक हाथ कटवाकर चंगे हो गये। दूसरे दिन शहीद अशर्फीकी अर्थी निकली। अर्थीको शानदार जलूसने सारे शहरमें घुमाया। वह जिधर जिधर होकर गुजरी उसपर फूलोंकी बरसा होती रही। अंतमें शहीदका स्थानीय शहीद आश्रममें दाह-संस्कार हुआ।

इस अरसेमें देवघर थानेके भीतर कई जगह तोड़-फोड़ और फूंक फांक हुए। शहरमें तो ये दोनों काम अलग अलग दलके हाथमें थे। पर देहातमें क्रान्तिकारियोंका जो दल निकलता उसे परिस्थितिकी सुविधा असुविधा देख सभी कामोंमें हाथ डालना पड़ता।

रोहिणीमें भगवान दत्तजीने स्थानीय कार्यकर्त्ताओंके सहयोगसे हाटकी टिकट वसूली बन्द करवा दी। १४ अगस्तसे ही तार काटना और रेल हटाना शुरू हो गया। वहांके ग्रेन बैंकमें जो धान था उसको प्रधान मैनेजरने बेच देनेका निश्चय किया और धान ढोनेके लिये ५० बैलगाड़ियां भेजीं। रोहिणीवालोंने गाड़ियोंको लौटा दिया और बैंकका धान लूट लिया। घोरमारामें बालगोविन्द दासने साथियोंको बटोर हरिहरपुर डाकघरमें ताला लगाया। फिर सहरा हाटकी भट्ठी बन्द करवायी। दुमकाकी राहमें यहांका पुल जबरदस्त समझा जाता है। सबोंने इसको तोड़ देनेका निश्चय किया। देवघरसे घोरमारा आनेकी राहको इनने काट दिया और उसपर पेड़ भी काट गिराये। फिर पुल तोड़ने आये।

२८ अगस्तको सैकड़ों आदमी घोरमाराका पुल तोड़ रहे थे। देवघरसे मिलिटरी लौरियां जा रही थीं। घोरमारा पुल जब आधमील रह गया तब लौरियां

घोरमारा रुक गईं क्योंकि रास्ता जाम था। सैनिक पैदल आगे बढ़े और

पुलपर भीड़ देख अन्धा धुन्ध गोलियां छोड़ने लगे। घातक गोली लगी सिर्फ एक स्त्रीको नाम था विराजी मिरधाईन। और घायल हुआ एक कोल जो चुपचाप घर भाग गया और जड़ी बूटीसे ही चंगा हो गया। फिर आगे बढ़कर गोरोंने एक छत्रधारी मंडलको पकड़ लिया। वह अपने दलके आदमियोंको नाम ले लेकर पुकारने लगा। रीतलाल मंडल बाहर निकल आया। दो गोरोंने उसे पकड़ लिया। रीतलाल तुरत सतर्क हो गया और दोनों गोरोंको दे मारा। तब तीसरेने गोली चलाई जो उसका जंघा छेद कर निकल गयी। छत्रधारीके साथ साथ रीतलाल भी दुमका गया। रीतलाल चंगा हो गया और आगे चलकर छत्रधारीके साथ साथ उसे रिहाई भी मिल गयी।

अब देवघरमें कई दल संगठित हो गये जो तोड़-फोड़के कामको बढ़ाते रहे।

एक दल था श्री आनन्दी सिंह और श्री नरसिंह रायका जिनको चाननके कार्यकर्त्ताओंका भी सहयोग प्राप्त था। चाननके कार्यकर्त्ताओंके अगुआ थे नवाड़ीके श्री गिरीश्वर प्रसाद।

एक दलके प्रधान थे 'कैप्टेन' परमानन्द। इनको कांग्रेसके जत्थेका सहयोग प्राप्त था।

कांग्रेस जत्थाके अगुआ शुरू शुरूमें थे श्री मंगलानन्द मिश्र। इनका कार्यक्षेत्र था शहरका पच्छमी हिस्सा—मोहनपुरका इलाका। पर मोहनपुरमें श्रीकृष्णप्रसाद साहु और अनूपलाल झाका भी एक संगठन था जो मंगलानन्द मिश्रके डाकू बन जानेपर तीर पहाड़के आसपास जाग्रति फैलाता रहा।

पहले दलने जिसके अगुआ श्री आनन्दी सिंह और श्री नरसिंहराय वगैरह थे, तोड़ फोड़का इतना काम किया कि दांतों अंगुली काटनी पड़ती है। एक जगह है बिशनपुर और केंदुबन काठीके बीच, जिसको तांबेकी खानका जंगल कहते हैं। वहांसे ही होकर रेलवे लाइन गयी है। उस जगहपर आध मील तककी दोनों ओरकी लाइनोंको उखाड़ कर कार्यकर्त्ताओंने तांबेकी खानमें डाल दिया। तारके खम्भे उखाड़ कर जंगलमें फेंक दिया। कितने स्लीपर जलावन बने और कितने लोहेके प्लेट (फिश प्लेट्स) औजार बननेके काम आये जिसका कोई हिसाब नहीं। वहांसे तारका तो नामोनिशान मिट गया। उन लोगोंने मधुरापुरके पासकी रेलवे लाइन भी उखाड़ फेंकी और गुमतीपर जितने औजार मिले सब ले लिये। वहांसे चलकर सब शंकरपुर पहुँचे और वहांके केबिनको तोड़ दिया। झंडे वगैरह जला दिये। एक दिन अंग्रेजी

पुलको तोड़ते समय मिलिटरीकी पहरा गाड़ी आ पहुँची। सभी वहांसे भागे। मिलिटरीने पीछा किया पर कोई हाथ न आया।

इन कार्यकर्त्ताओंको जमींदारोंसे भी भिड़ना पड़ा। कोइरीडीह कचहरीके तहसीलदारने वहां नंगी तलवार लटका रखी थी और पहलवानोंको वहां जुटा रखा था। कहा करता, जब तोड़ फोड़वाले यहां आवेंगे तो हम इस तलवारसे उनका स्वागत करेंगे। एक दिन शामको ये सभी उनके यहां पहुँचे। पहलवानोंको हठात् पकड़ लिया और तहसीलदार साहबको घेर लिया। फिर उनने कचहरीके सारे कागजात जला दिये। और मकानमें आग लगा दी। उसी बीच कचहरीके जो सिपाही और पहलवान बाजार गये थे, लौटे और इन लोगोंपर रोड़े फेंकने लगे। जिससे कुछ साथिओंको चोट भी लगी। फिर तो वे सब क्रुद्ध हो उठे और जिन जिनको पकड़ रखा था उनको कूटने लगे। तहसीलदार साहबपर काफी मार पड़ी। वहांसे कार्यकर्त्ता डाक बंगले आये जिसको बरबाद करके उनने जला दिया। इतनेमें तीन चार सौ आदमी इनकी राह रोकने आ पहुँचे। भिड़न्त हुई। लोग भगे और कार्यकर्त्ताओंने खदेड़ खदेड़कर सबोंको घर घुसा दिया और जब बार-बार ललकारने-पर कोई नहीं निकला तब सब मिलकर पुनहांसी चल पड़े। वहांका ग्रेन गोला लूट लिया गया और डाक बंगला जला दिया गया। इसी तरह इस दलने बूढ़ेई पथरौड़ा, चितरा, पालो जोड़ी, और चन्दनाकी कलालियोंको जला दिया। चन्दना कलालीपर चौथी बार हमला हुआ था। इस बार कलालको खूब पीटा गया और उसके सारे सामानको चार दिनों तक जला जला कर राख कर दिया गया। सबसे अन्तमें सहाराकी कलाली जहाँ पन्द्रह संथाल तीर धनुष लेकर पहरा देते थे और कलाल कहता था कि कोई कार्यकर्त्ता पास फटका तो बिंध जायगा। पर कार्यकर्त्ताओंने उसे और उसके संथालियोंको पलक मारते बांध लिया। कलालीको सामान सहित अच्छी तरह जला दिया। उनके द्वारा कटहराका हवाई अड्डा भी जलाया गया।

इन लोगोंने मिलिटरी रोड बनानेमें भी बाधा दी। ओवरसियर और चौकीदारके सामान छीने। एक चौकीदार कार्यकर्त्ताओंको पकड़वानेमें मुस्तैदी दिखलाता, नाम था केलामुधा। उसका कान काट कर उसे देशद्रोहका दण्ड दिया गया।

'कैप्टेन' परमानन्दके दलमें यादवचन्द्र मिश्र, सुरेश मिश्र, और गिरजानन्द सिंह शामिल थे। १७ अगस्तको इसका संगठन हुआ और सरावा थानासे इसने

अपने फूंक फांकके कामको शुरू किया। थानाके कागजात जलाये, थाना सट्टी जलायी, मेनगोला लूटा और उसके कागज-पत्र जला डाले। बादको यह दल सारठ थानेमें घुसा जहांके कार्यकर्त्ताओंका इसने पुनर्संगठन किया।

इसी बीच श्रीगौरीशंकर डालमिया और श्रीराम बाबू पकड़े गये और अर्थाभावके कारण जत्थाके लोग छिटफुट हो गये।

पर फिर 'कैप्टेन" परमानन्दने देवघर, सरावां और सारठके कार्यकर्त्ताओंके सहयोगसे एक जत्था संगठित किया। मंगलानन्द मिश्रजीका इस जत्थेके संगठनमें बड़ा हाथ था। पंडा थे, सब जगह पहुँच थी। इसलिये अर्थ-संग्रहका भार इनने लिया था। पीछे अर्थ-संग्रहके बहाने यह डकैती करने लगे। पर शुरू शुरूमें इनने और इनके साथियोंने तोड़ फोड़ और फूंक फांकमें खूब हाथ बटाया था। 'कैप्टेन" परमानन्द और श्रीमंगलानन्द मिश्रके सहयोगसे यह जत्था चमका। इनने देवघर सबडिविजन भरके १० कलालियोंको जला दिया। नकटी, लोहरडीह, कपसापड़ जोरी, गोविन्दपुर और घोरमारामें इस जत्थेने अड्डे कायम किये और आसपासमें इसके कार्यकर्त्ता फूंक फांक करते रहे।

मोहनपुरकी कलाली जलाई गयी और वहां लक्ष्मीपुर इस्टेटकी कचहरी थी सो भी जलादी गयी। देवीपुरकी कचहरी भी जलायी गयी।

१५ अगस्तको पंडित दशरथ झाने जलूस निकाल स्कूलमें हड़ताल करवायी, फिर सबको लेकर जब्तशुदा कांग्रेस ऑफिस आये जिसपर सबोंने फिर तिरंगा झंडा

दुमका

फहराया। यहां श्रीआगर शर्मा भी जलूसमें शामिल थे। बादको जलूसने तारके खंभे उखाड़े। पुलिससे थोड़ी बकझक भी हो गयी। शहरमें पूरी हड़ताल रही और उसी दिन श्रीमोतीलाल केजड़ीवाल, दशरथझा, आगर शर्मा वगैरह गिरफ्तार हो गये। शामको धर्मस्थानमें सभा हुई और श्रीविश्वनाथ उपाध्याय वगैरह भी पकड़ लिये गये। फिर दुमकामें आन्दोलन दब गया। मगर देहातने तुरत अंग्रेजों भारत छोड़ दोके नारेको अपना लिया। श्री मन्मथ नाथ गोस्वामी, अजीत नाथ सरकार, कमलाकान्तजी वगैरह डाक बंगलों और कलालीको नष्ट करते करवाते रहे। जड़मुण्डी डाक बंगला जला दिया गया। फिर लाल कुरती वालोंके संगठित करनेमें लागु हेमरम और भूमि पांडेयजीने काफी मेहनत की। पांडेयजीका एक दल तैयार हो गया जो शिमरतलासे बुढ़ई स्टेट तक ध्वंसात्मक कार्यक्रमको पूरा करनेमें लगा रहा।

गोड्डाके कार्यकर्त्ताओंने पोरैयाहाट और यहगांवाकी कलालियां जलाईं।
गोड्डा वहांके डाक बंगले भी जले।

मोतिया मिडल स्कूलके हेड मास्टर केदारनाथ झाका यहगांवामें एक दल तयार हो गया। कहलगांवके तारणी मंडल और यहगांवाके सुधाकर मिश्रका भी इनको सहयोग मिला। फिर गोड्डामें तोड़ फोड़ फूंक फांक चलता रहा। बादको केदार नाथ जीने बघसरा कैम्प खोला और उनका काम बघसरा कैम्पसे होने लगा। फिर श्री महेन्द्र गोपके दलसे सम्पर्क हुआ जिसके फलस्वरूप तोड़ फोड़के शिकार वे भी होने लगे जो आन्दोलनके विरोधी समझे जाते।

मिहिजाममें हड़ताल करवा कर रेलवे स्टेशनपर अपना तिरंगा झंडा फहराते हुये श्री सत्यकाली भट्टाचार्य जामताड़ा पहुँचे। इन्हें नागरिकों और विद्यार्थियोंका
जामताड़ा पूरा सहयोग मिला। सबोंका एक बड़ा जलूस बन गया जो घूमता हुआ डाकघर पहुँचा और उसमें आग लगा दी। जलूस स्टेशन भी गया जहांके तार और केबिनको उसने नष्ट कर दिया। फिर पुलिस पहुँची और लाठी चार्ज हुआ। एस० डी० ओ० ने फायर भी किया। लोग तितर बितर हो गये।

श्री जगदीश प्रसाद सिंह और पृथ्वीनाथ सिंहने बाजार बन्द करवाया और फिर
करमाटांड जलूस लेकर दोनों स्टेशन पहुँचे जिसपर झंडा फहराया गया।

राजमहलके कार्यकर्त्ता श्री महेन्द्रप्रसाद दास और बाबू श्रीधर सिंहके साथ जलूस लेकर राजमहल रेलवे स्टेशन पहुँचे जिसपर उनने झंडा फहरा दिया।
राजमहल फिर उनने अगस्त क्रान्तिके कई नारे लगाये। स्थानीय जनता इतनी भयभीत हो गई थी कि थोड़ा भी सहयोग न दे सकी जिससे ये लोग सिर्फ नारा लगा कर वापस चले गये।

साहबगंजमें अगस्त आन्दोलनके अगुआ बने पं० द्वारिका प्रसाद मिश्र। इनने श्री गणेश प्रसाद अग्रवाल और मातादीन शर्माके सहयोगसे ई० आई० आर० हाइ-स्कूलमें हड़ताल करवाई। शिक्षकोंमें राष्ट्रीयताका अभाव था। उनने डरा धमका कर कुछ विद्यार्थियोंको हड़तालमें शामिल होनेसे रोक रखा था। पर विद्यार्थी विहारी लालने छुट्टीकी घंटी बजा दी। सभी विद्यार्थी निकल गये। फिर हाइ स्कूलको बन्द रखनेकी कोशिश हुई। एक दिन श्री भूपनारायण सिंह नामक मजदूरकी सहायतासे सभी आन्दोलनकारी स्कूलमें घुस गये और छात्रोंको बाहर निकालनेकी कोशिश की। पर वे कामयाब नहीं हुये। फिर उनने स्कूलपर

झंडा फहरा दिया और उसके सामान नष्ट करना शुरू किया। तुरत पुलिस पहुँची और लाठी चार्ज करके भीड़को तितर बितर कर दिया। उसने बादको पं० द्वारिका प्रसाद मिश्र, उनके साथी और कई छात्रोंको गिरफ्तार कर लिया।

परन्तु लोग हतोत्साह नहीं हुये। उनने ज्योंही सुना कि ब्रिटिश फौज आ रही है त्योंही वे तोड़ फोड़के लिये तैयार हो गये। लोग दल बांधकर निकले। पुराने साहबगंजकी जनता भी साथ थी। उन सबोंको विधा मिस्त्रीके यहांसे औजार मिल गये जो रेलवे लाइन उखाड़नेमें खूब काम आये। वहां तार भी काटा गया।

१५ अगस्तको एक भीड़ने तहसीलदार आफिसपर हमला किया। वहांके सारे कागजात जला दिये। और कुछ करना चाहती थी कि पुलिस पहुंची और मार मार कर सबोंको भगा दिया। वहांसे तो सब भागे पर फिर जलूसमें सजकर स्टेशनपर इकट्ठे हो गये। उनमेंसे कईने रेलवे कर्मचारियोंसे हड़ताल करनेके लिये कहा पर फटकारे गये। फटकार खाकर फिर वे खीझ उठे और साथियोंकी सहायतासे टेलिग्राफ औफिसमें घुसकर तोड़ फोड़ करने लगे। वहां भी पुलिस पहुँची, उन्हें पीटने लगी और उनके हाथसे झंडा छीनने लगी। शीतल प्रसादजीके हाथमें भी झंडा था। उनने कस कर उसे पकड़ रखा था। पुलिस छीनती रह गई पर जब तक बेहोश हो कर शीतल प्रसादजी गिर न गये उनने अपने हाथसे झंडा नहीं छोड़ा।

१४ और १५ अगस्तको रांची शहरमें विद्यार्थियोंका जलूस निकला और २२ गिरफ्तारियां हुईं।

१७ अगस्तका दिन बड़ा सनसनी खेज रहा। आगा खां पैलसेमें श्रीमहादेव देशाईकी मरनेकी खबर पाकर जनता उत्तेजित हो उठी। लोग कहते घूमने कि

रांची

सरकारने उन्हें जहर देकर मार डाला है। सारे शहरने हड़ताल मनाई। हिन्दू-मुसलमान दोनोंका लम्बा जलूस निकला जिसे तितर बितर होजानेका हुक्म एस० डी० ओ० ने दिया। पर जलूस अपनी राह चलता गया, अपने नारे बोलता गया। तब एस० डी० ओ० ने पुलिससे कहा—लाठी चलाओ। पुलिसने लाठी चलानेसे इन्कार कर दिया—एकबार नहीं तीन तीन बार। पुलिसका रुख देख जलूस जरा शान्त होगया और एस० डी० ओ० से बोला कि नगर रक्षा समिति तक ही जाना है आगे नहीं। लेकिन एस० डी० ओ० जलूसको एक डेग आगे बढ़ने नहीं देना चाहते थे। उन्हें जिला कांग्रेसके एक भूतपूर्व सभापति समझाते

रहे। उन्हें एस० डी० ओ० ने गिरफ्तार कर लिया पर जलूस नहीं रुका। अपने लक्ष्यपर पहुंचा ही।

उस दिन सभी प्रमुख कांग्रेसी पकड़े गये और रांची शहरमें आन्दोलनका अन्त हो गया।

पर मुफस्सिल अगस्त-क्रांतिको जगानेकी चेष्टा करता रहा।

१८ अगस्तको ६ कार्यकर्त्ता मनदार पहुँचे जहाँकी थाना कमिटी ऑफिसको पुलिसने जब्त कर रक्खा था। उनने पुलिसका ताला तोड़ कर ऑफिसको फिर अपने कब्जेमें कर लिया और विधि पूर्वक वहां राष्ट्रीय पताका फहरायी और बसेरा किया। दूसरे दिन हथियार बन्द कनस्टेबिल आये। आफिसको जब्त किया। एक कमरामें बुनाईका इन्तजाम था जिसे पुलिसने छोड़ रक्खा था। अबकी उसे भी जब्त कर लिया। फिर सबोंको गिरफ्तार कर लिया। कुछ स्वयं सेवकोंने गिरफ्तार होनेसे इनकार कर दिया जिन्हें उठा उठा कर पुलिस गाड़ीमें डाल दिया गया।

तोड़-फोड़के अन्यान्य काम भी हुये। बीसो जगह तार काटे गये। लोहरदा सिल्ली तमकुम आदि स्थान उल्लेखनीय हैं। अरगरा स्टेशन और एक जगह रेलकी पटरियां भी हटायी गयीं।

रांची जिला स्कूलके कालिज विभागके भूगोल क्लासको जलानेकी कोशिशकी गयी। कुछ सामान जलाये गये पर आग शीघ्र बुझा दी गयी।

कोडरमामें आन्दोलनकी विशेष गति रही। १६ अगस्तके तीन बजे शामको कोडरमा स्टेशन और झूमरी तिलैयाके डाकघरमें आग लगा दी गयी। उस दिन हजारीबाग पुलिसने तिलैया बस्तीके एक दर्जन नवजवानोंको पकड़ कर हाजतमें रातभर बन्द रक्खा और दूसरे दिन सुबहको पुलिस सुपरिंटेंडेन्ट रसेल साहब आये और एक एक नवजवानको हन्टरसे तबतक पीटते रहे जबतक वह बेहोश होकर गिर न पड़ा। बेहोशीकी हालतमें सभी लौरीपर मुरदे जैसा फेंक दिये गये और लौरी सबोंको हजारीबाग सेन्ट्रल जेल पहुँचा आयी।

डोमचांचने शहीद महादेवभाई देशाईकी निधन तिथि मनाई १७ अगस्तको। सुपरिंटेंडेन्ट और एस० डी० ओ० ने जलूसके अवधबिहारी दीक्षितको बुरी तरह पीटा और गिरफ्तार कर लिया। जनता उत्तेजित हो गई और पुलिस दलको घेर लिया। तब पुलिसने दीक्षितजीको तो छोड़ दिया पर लगभग दो दर्जन नवजवान और बच्चोंको कोडरमा थाना पकड़ ले गये। वहां ६ बच्चोंको पीट कर छोड़ दिया और

बाकी सबोंको नंगा करके खूब पीटा और बेहोश करके जेल भेज दिया। बाबू गोवर्धनरामपर तो इतनी मार पड़ी कि चिर रोगी हो गये।

डोमचांचको जब अपने कार्यकर्त्ताओंकी दुर्गतिका हाल मालूम हुआ तब वह उबल उठा। उसने दूसरा जलूस निकाला जिसने कलालोंमें आग लगा दी। और पुलिसके लाख मना करनेपर भी वह बढ़ता ही गया। पुलिसने गोली चलाई जिसके फलस्वरूप श्री नुनमन धोबी तत्काल शहीद हो गये; श्री चिन्तामणि मोदी जेलके फाटकपर और श्री उदितनारायण महतो एक अरसेके बाद।

सिंहभूमि

१९ अगस्तको ताता कारखानेके ७०० मजदूर काम छोड़ बाहर निकल आये और दूसरे दिनसे उनने हड़तालकी घोषणा की। उन्हें जमशेदपुरकी पुलिसकी पूरी हमदर्दी मिली। कारखानेके फाटकोंपर कसकर धरना दिया जाने लगा और उसका काम रुकता गया। मजदूरोंने इतनी शान्ति दिखलायी कि विदेशी सैनिकोंको जिन्हें अंग्रेजी सरकारने वहां भेज रक्खा था अचंभा हुआ।

मानभूमि

मानभूमिमें २८ अगस्तसे क्रान्तिकी विध्वंसक लीला शुरू हुई। लोग जलूस बांध कर गये और खरी द्वाराके चौकीदारी तहसीलको जला दिया फिर मानबाजार थानाकी बड़ी कलालीको जला दिया। ३० अगस्तको तो दहन दिवस कहा जा सकता है। इस दिन बड़ा बाजार थानाका डाकघर जलाया गया;

मानबाजारथाना

चौकीदारी आफिसके कागजात जलाये गये फिर सिन्दरीकी कलाली और सोलजर घर (Observatory Camp.) फूंक दिये गये। बड़ाबाजारकी कलाली बरबाद कर दी गयी और नंगसाई नदीके पुलका एक हिस्सा तोड़ दिया गया। बड़ाबाजार थानाके सारे कागजात आगमें झोंक दिये गये।

बन्दवानथाना

बन्दवान थाना अपने सारे कागजात और सरंजामके साथ आगका शिकार बना। चौकीदारी आफिसके कागजात भी जले। धबनीका चौकसी कैम्प और धधकाकी भट्ठी भी जलादी गयीं।

पटमदा और अन्यान्य थाने

पटमदा, हूरा और पंचामें चौकसी कैम्प जले, कलाली जली और सड़कोंको भी नुकसान पहुँचा। पारा, बलरामपुर और अरशामें तार काटे गये। अन्दाज है कि इस विध्वंसक काममें लगभग तीन हजार लोगोंने भाग लिया।

उस जमानेमें पलामू जिला फौजियोंका अखाड़ा बना रहा। गांव गांवमें फौजी

पड़ाव और रोज रोजकी चांदमारीके कारण जिलेका वातावरण कुछ ऐसा क्षुब्ध था कि जनताके लिये क्रान्तिके मैदानमें आगे बढ़ना बड़ा कठिन था। तोभी पलामू कुछ किये बगैरह न रह सका। इसके प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री गौरी शंकर ओझा कबसे गिरफ्तार थे और प्रमुख नेता श्री यदुवंश सहाय ठीक ९ अगस्तको सुबहमें गिरफ्तार हुए। इसने रोज रोज जो जलूस निकाले उसमें काफी गिरफ्तारियाँ हुई और उसपर एक दिन तो थानेपर खूब लाठियां चली फिर भी पलामूने पीछे पैर नहीं दिया।

पलामू

डालटेनगंजमें एक बड़ी भीड़ने जेनरल पोस्ट ऑफिसपर चढ़ाई की। इस भीड़में सींकी और मेराल ग्रामकी देवियां प्रमुख भाग ले रही थीं। पोस्ट ऑफिसके पहरेदार तो भीड़को देखते ही हिरन हो गये। फिर लोगोंने ऑफिसके कागजात निकाले और उन्हें जला दिया। इसी बीच चार लौरियोंपर मिलिटरी पहुंची और लाठो चार्ज शुरू हुआ। करीब ४० आदमी घायल हुये और ३२ कैद कर लिये गये। इस घटनाकी खबर पाकर सारा जिला जाग उठा। सर्व श्री गणेश प्रसाद वर्मा, भागीरथी नाथ सिंह और हजारी लालजीने देहातोंमें तोड़-फोड़के लिये संगठन करना शुरू कर दिया। फिर तो एक हफ्ताके भीतर सोलह भट्ठियां दो डाकघर और आठ सैनिक घर जला दिये गये।

हैदरनगर स्टेशनके निकट रेलवे लाइन छिन्न भिन्न कर दी गयी जिससे रेलगाड़ीका आना बन्द हो गया। डालटेनगंजके उत्तरके हर लेटर बक्स म्यूनिसिपल लैम्पस और पुलिस चौकियोंका नामोनिशान मिटा दिया गया। डालटेनगंजसे गया जानेवाली सड़कको तीन तीन जगह काट दिया गया और कंडा ग्रामके निकट एक पुलको बरबाद कर दिया गया।

हुकूमतपर हमले

क्रान्तिके शुरूके उफानमें तोड़फोड़ होता ही है। अपने विहारमें भी हुआ और खूब हुआ। प्रान्तीय कांग्रेस कमिटी पटनाके शुरूके सरकूलरोंमें अनेक आदेश होते थे पर तोड़ फोड़ जैसा ठोस और देश कालके अनुकूल दूसरा आदेश नहीं मिलता था। इसलिये जनता स्वभावतः तोड़ फोड़की ओर ही झुकी। पर सरकारका प्रतिघात और पुनः जनताका प्रत्याक्रमण अनेक स्थानमें अनेक प्रकारकी घटनाओंकी सृष्टि करते। इन घटनाओंको तिथिवार देखा जाय तो तोड़ फोड़के बाद धावे हुये और धावेके बाद अमुक अमुक—नहीं कहा जा सकता। पर स्पष्ट है कि भिन्न भिन्न आदेशके पीछे भिन्न भिन्न विचारधारा काम करती रही है और एक विचारके बाद ही दूसरे विचार सब आये हैं। इन्हें समझनेके लिये घटनाओंको भिन्न भिन्न परिच्छेदमें रखना आवश्यक है। विचारोंके तारतम्यको हम तभी समझ सकेंगे। और प्रान्तके सरकूलरोंपर नजर डालिये। पहले तोड़ फोड़का सरकूलर आया और बादको धावेका फिर पंचायत और प्रचारका।

और क्रान्ति इन तीन सीढ़ियोंसे ही अपने चरम लक्ष्यपर पहुंचती है, यानी पहले दुश्मनोंकी गतिविधिके साधनोंको ध्वंस करना फिर उनकी ताकतकी गद्दियोंपर जमजाना और तब अपनी व्यवस्था तथा प्रचार करना।

जितने सरकूलर निकले सभोंमें बीसों आदेश हैं। पर कामके हैं १ ला और ५वां सरकूलर ही। और पांचवेंमें तो सभी सरकूलरोंके आदेशका निचोड़ दे दिया गया है। देखिये :—

सरकूलर नम्बर ५

करो या मरो

हिन्दुस्तानकी आजादीकी लड़ाई छिड़ गई है। आज हम अपनेको आजाद समझते हैं और ब्रिटिश सरकारकी सत्ताको नहीं मानते हैं। इसलिये ब्रिटिश सरकारके किसी कानून और हुक्मको नहीं मानना चाहिये। इसके अलावे नीचे लिखे प्रोग्रामको पूरा करके अपनी लड़ाईको सफल बनाना चाहिये।

आपको क्या करना चाहिये

१ शिक्षक और विद्यार्थी "स्कूल कालिज छोड़ दें।"

२ वकील मुख्तार "कचहरी जाना छोड़ दें।"

३ पुलिस पलटनवाले और सरकारी नौकर "सरकारी नौकरी छोड़ दें।"

४ कारखानोंके मजदूर खासकर रेलवे और जहां सरकारी चीजें तैयार होती हैं वहांके मजदूर काम करना छोड़ दें और हड़ताल कर दें।

५ रेलवे लाइन उखाड़ दिये जायं, बड़े बड़े पुल तोड़ दिये जायं, तार और टेलिफोनके तार काट दिये जायं, और सड़क काट दिये जायं।

६ कचहरी, अदालत, थाना और डाकघरपर कब्जा कर लिया जाय और उनपर तिरंगा झंडा फहराया जाय।

७ चौकीदारी आदि टैक्स देना बन्दकर दिये जायं।

८ पुलिस और पलटनवालोंके हथियार शान्तिपूर्वक ले लिये जायं।

९ नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा जाय।

१० किसान भाई मालगुजारी देना बन्द कर दें लेकिन जो जमींदार लड़ाईमें हमारा साथ दें और सरकारको "रोल और रेवेन्यू" देना बन्दकर दें उन्हें थोड़ी माल-गुजारी दे देनी चाहिये।

११ पुलिस और पलटनवाले लाठी और गोली नहीं चलायें।

१२ "पुलिस हमारे भाई हैं"; "पलटन हमारे भाई हैं"; "हिन्दू-मुस्लिम भाई हैं"; "हिन्दुस्तान आजाद है"; "अहिन्सा हमारा अस्त्र है" के नारे लगाये जायं।

१३ अहिंसा पूर्वक वे सभी काम किये जायं जिससे अंगरेजी सरकारकी ताकत घटे और उसके कानूनकी अवहेलना हो।

१४ सदा अहिंसात्मक रहें।

१५ जनताकी सहानभूति अधिक प्राप्त की जाय।

क्या नहीं करना चाहिये

१ ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिये जिससे जनताकी सहानुभूति हम खो बैठें।

२ रोशनीवाली बिजली कल और पानी कल नहीं बन्द करना चाहिये।

३ भंगियोंकी हड़ताल नहीं करानी चाहिये।

४ हिंसाका कोई काम अर्थात् किसी व्यक्तिके शरीरको चोट पहुंचानेवाला काम नहीं होना चाहिये।

नोटः—रेलगाड़ीकी लाइन और तार जहां जहां काटे गये हैं वहां वहां हमारा दुश्मन, अंगरेजी सरकार, फिरसे उनको मरम्मत करनेकी कोशिश कर रहा है। इसलिये इन्हें फिर तोड़ कर गायब कर देना चाहिये ताकि फिरसे इनकी मरम्मत नहीं हो सके। जहांपर लाइन और तार नहीं काटे गये हैं वहां भी जल्दी काट डालना चाहिये।

गोरी फौजके पास सिर्फ ३२ फीट खाई पार करनेके सामान हैं। अगर इससे ज्यादा ४० फीट चौड़ी खाई खोद डालें तो इनके लिये पार होना असंभव हो जायगा।

आजाद हिन्दुस्तान जिन्दाबाद !

प्रान्तीय कांग्रेस कमिटी, पटना।

इस सरकूलरने तोड़ फोड़पर खूब जोर दिया है पर जबतक यह गांव गांव पहुंचा तबतक तोड़ फोड़की आंधी धीमी पड़ गयी थी। ध्वंसात्मक प्रवृति जितनी बढ़ चुकी थी तत्कालीन परिस्थितिमें उससे आगे बढ़ नहीं सकती थी। इसलिये स्वभावतः छठे आदेशकी ओर जनताकी क्रियाशीलता झुकी। इस झुकावने आन्दोलनकी दिशामें एक खूबी ला दिया। तोड़ फोड़के अखाड़े बने शहर और रेलवे स्टेशन। पर धावाका आन्दोलन तो गांव गांवमें घुस गया। इस तरह कि धावे हुये गांवके केन्द्र थानोंपर और धावा करनेवाले आये गांव गांवसे। इस कारण यह छठा आदेश ग्राम प्रधान रहा, तोड़ फोड़के आदेशकी तरह शहर प्रधान नहीं।

पटना जिला तो ११ अगस्तसे ही हुकूमतपर हमला कर रहा था। दो दिनमें उसने हर थानेकी नींवको हिला सा दिया। जो थाने बचे उनपर भी धावे शुरू हुये।

बख्तियारपुर थानापर १२ अगस्तको चढ़ाई हुई श्री रामवरण सिंह 'सारथी' को लेकर। झंडा फहरानेके समय पुलिसने उन्हें गिरफ्तार करके हाजतमें डाल दिया। पटना लोग बिगड़े और सारथीजीको हाजतसे निकाल लेना चाहा, पर पुलिसकी संख्या काफी थी। लोगोंने ढेले फेंकना शुरू किया ताकि पुलिस भाग जाय या इतना कमजोर पड़ जाय कि सारथीजीको हाजतसे निकालनेमें बाधा नहीं दे सके।

श्री नाथु प्रसाद यादव अगुआई कर रहे थे। दारोगा अनवर खांने उन्हें थानामें दाखिल होनेसे मना किया, उनने नहीं माना। जिसपर वे गोलीके शिकार बनाये गये। आप कांग्रेसके पुराने कार्यकर्त्ता थे और सार्वजनिक कामोंमें सदैव हिस्सा लिया करते थे।

हिल्सा थानापर ता० १५ अगस्तको धावा हुआ। जनता थाना जलाना चाहती थी और पुलिस घुसने नहीं देती थी; फलतः ढेले चले जवाबमें। गोलीसे कुल ४ आदमी मारे गये—फूलनराम (गजोपुर) भीमसेन महतो (इन्दौत) सिब्बूराम, मुखारा चौधरी और नरेश दुसाध (चनबारोपुर)। देश भक्तिकी भावनासे ओत प्रोत इन वीर पुंगवोंकी लाशें अन्तिम संस्कार हेतु भी नहीं दी गयीं और थानाके समीप ही जला दी गयीं।

ता० १७ अगस्तको लगभग दस हजारकी भीड़ विक्रममें पहुँची। दारोगा सत्यनारायण सिंहको इसकी सूचना पहलेसे ही मिल चुकी थी। उनकी ओरसे विद्रोहियोंको रोकनेके लिए आस पासके गावोंसे बन्दूकें पहले ही मंगा ली गयी थीं। कुछ लोग किरायेके बलपर थानाकी रक्षामें बुला लिये गये थे। भीड़ थानाके समीप पहुँची। भीड़को तितर-बितर करनेको भरपूर कोशिश की गयी। किंतु सारी कोशिशें बेकार साबित हुईं। फिर थानाके दारोगा श्री सत्यनारायण सिंहकी आज्ञासे दनादन पुलिस गोलियां चलाने लगी, जिसमें तीन शहीद हुये। विक्रम हाइ स्कूलके छठे क्लासका लड़का चौदह सालका रंगनाथ और त्रिवेणी शर्मा (काब) और बुटाई महरा (मोरमपुर)।

ता० १४ अगस्तको श्री जगतनारायण लाल नौबतपुर पहुँचे। जनतासे बोले—"निर्दयी सरकारने हमारे पूज्य नेताओंको जेलमें बन्द कर दिया है और अब हिन्दुस्तान आजाद हो गया है पर आप लोग एक छोटासा थानापर भी दखल नहीं कर पाये हैं। गांधीजीके द्वारा पूछे जानेपर आप किस मुंहसे क्या जवाब देंगे?

सुनते ही लोगोंमें जोशका तूफान आ गया। वे जुलूस ले थानापर चढ़ गये। पुलिसकी पीठपर महंथ संतदास भी बंदूक लेकर और अपने आदमियोंके हाथमें भाले और गड़ासे देकर थानाकी रक्षामें तत्पर थे। थानापर झंडा फहरानेकी ज्योंही कोशिश हुई कि लोगोंपर थानावालोंने लाठी और भालेसे आक्रमण किया। वे हटे और फिर दोनों ओरसे लगभग २७ मिनट तक ढेलेबाजी हुई। अब लोगोंने फिर जोर लगाया। सबके सब थानाके हातामें घुसे कि गोली चलने लगी। फलतः दो शहीद हुए—लक्ष्मी पासमान बारीचकके और............।

पालीगंजमें जबरदस्त संगठन रहनेके कारण थानाको झुकना पड़ा और १४ अगस्तको थानामें ताला लगा दिया गया। १५ अगस्तको दारोगाजीने स्वयं 'इन्कलाब जिन्दाबाद'

का नारा लगाते हुये झंडा फहराया। आजके ही दिन एक जत्था उलारसे अरवलकी ओर बढ़ा जा रहा था, उस जत्थापर पुलिसकी ओरसे अचानक गोली चलाई गयी, जिसमें रामकृत सिंह (कोहड़ा-रानीपुर) की बांहमें गोली लगी। वहांसे उन्हें घायलकी अवस्थामें पालीगंज अस्पतालमें लाया गया। जहां उनकी मृत्यु हो गयी। इस बहादुरको एक हजार व्यक्तियोंने गाजे बाजेके साथ महवलीपुर सोन नदीमें अन्तिम संस्कार किया।

पुनपुन थानाको जनताने जला दिया और थानापर झंडा फहराये गये। पुलिस बाधक नहीं हुई।

बाढ़में भी कांग्रेस कर्मियों द्वारा एस० डी० ओ० के कोर्टपर झंडा फहराया गया। फलतः जुलूसपर लाठी चार्ज हुआ। कई व्यक्ति घायल हुए। बाढ़ रेलवे स्टेशनके कागजात, फरनीचर मशीनरी इत्यादि सामान जला दिये गये।

फुलवारी थानाके चौराहेपरके तारको काट दिया और थानापर राष्ट्रीय झंडा फहराया। फुलवारी कॉटन मिलसके एवं साइकिल फैक्टरीके मजदूर बड़ी संख्यामें उत्साहसे सराबोर होकर आंदोलनमें शामिल हुए।

इस्लामपुरमें भी १६ अगस्तको झंडा फहरा दिया गया और अस्थामा थानामें भी पो० ऑफिस और थानापर झंडा फहराया गया। किसी तरहका उपद्रव नहीं हुआ।

चंडी थानापर ता० १६ अगस्तको कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं और आस पासके उत्साही जनताके द्वारा धावा हुआ। जब थानामें ताला लगाया जाने लगा तो दो तिहाई भीड़ डाकखानेको जलानेके लिये चली गयी। जो लोग थानाके समीप रह गये वे सोचने लगे कि कमसे कम थानाके कागजातको जला देना चाहिये। उन सबोंने अपनी इच्छा प्रकटकी तो पुलिसकी त्यौरी बदल गयी। जनता क्रोधके आवेशमें आकर थानाके भीतर घुसनेकी कोशिश करने लगी। जिसपर पुलिसकी ओरसे लाठी चार्ज किया गया। इसके बाद जनताकी ओरसे भी रोड़े चलने लगे। फिर हल्ला हुआ कि जामादार साहबकी स्त्रीको भी ढेला लगा। पुलिस बौखला उठी और गोली चलाने लगी। जिसमें गोरखपुर निवासी श्री विन्ध्येश्वरी शर्मा शहीद हुए। आपकी अवस्था करीब सत्तरह सालकी थी। कांग्रेसके पुराने कार्यकर्त्ता श्री जगन्नाथ सिंह भी बुरी तरहसे घायल हुये। आज भी आपका हाथ बेकार सा हो गया है। जब विन्ध्येश्वरी शर्मा गोली खाकर जमीनपर छटपटने लगे और पानी-पानी चिल्लाने लगे ; एक चौकीदार गड़सा लिये आ पहुँचा और प्यासे एवं घायल तड़फड़ाते युवकको गड़ासेका भरपूर हाथ जमाया। परिणाम-स्वरूप शर्माजीके प्राण पखेरू तत्काल उड़ गये।

गया सदरके शेर घाटीपर चढ़ाई करनेके लिये छात्रोंका जलूस आगे बढ़ा। जब वह छात्रावासके पास पहुँचा तब पुलिसने उसे लठियाना शुरू किया। बहुत लड़के गया सदर चोट खाकर इधर उधर भागे और फिर अपने पांच-सात-साथियों को गिरफ्तार देख संगठित होकर आगे बढ़नेकी हिम्मत न कर सके। पर दूसरे दिन बड़ी ताकत लेकर थानेपर हमला करनेका प्रोग्राम बनाया। पर मिलिटरी आगई और वे कुछ कर न सके। लेकिन उनने तार काटे।

इमामगंज थानाके कार्यकर्त्ताओंने आनन्द और उत्साहसे इमामगंज थानेपर कब्जा जमानेका प्रोग्राम बनाया। वे जलूस लेकर वहां पहुँचे। दारोगाने उनका स्वागत किया। कार्यकर्त्ताओंने थानेपर झंडा फहराया और सर्वसम्मतिसे उसे आजाद थाना घोषित किया। कुछ दिनके बाद थानेवालोंने थाना खाली कर दिया।

डुमरियाके कार्यकर्त्ताओंने एक सभा की जिसमें सभी वर्गके लोग मौजूद थे। सबोंने तय किया कि हमें थानापर कब्जा कर लेना चाहिये। उनकी इस प्रस्तावकी खबर थानेवालोंको लग गई और वे १६ अगस्तकी रातको थाना छोड़ भागे। नजदीक ही छकरबन्धा खास महाल है उसके अमलोंने भी पुलिसको भागती देख उतने ही जोशसे उसका अनुशरण किया।

जहाँनाबाद सबडिविजनके अरवल थानेपर १५ अगस्तको चढ़ाई हुई। अरवलके कार्यकर्त्ताओंको उस जत्थेसे बड़ी मदद मिली जो उलारसे निकला था और गांव गांवमें जहाँनाबाद क्रांतिके नारे लगाता हुआ अरवल पहुँचा था। अरवलके दारोगा रामाधार सिंह, कान्सटेबिल, चौकीदार और दफादारको लेकर थानेकी रक्षाकर रहे थे। इन्हें मंजूर नहीं था कि थानेके हातेमें अगस्त क्रांतिके नामसे किसी ढंगकी कोई कार्रवाई हो। बढ़ती हुई भीड़को तितर बितर हो जानेको कहा गया किंतु भीड़ झंडा फहराकर और थानेको अपने कब्जेमें करके ही वापस जाना चाहती थी। चौकीदार और दफादारकी लाठियाँ लोगोंको पीछे धकेलने लगीं। लोगोंने उनका सामना किया, जिसपर रामाधार बाबू गोली चलाने लगे और अपने मातहतोंको भीड़पर आक्रमण करनेके लिए कहा। बहुतोंको चोट लगी, बहुत घायल हुये और उलार जत्थाके राम-छत सिंहके मर्म स्थानमें गोली लगी। वे पालीगंजके अस्पतालमें लाये गये जहां दूसरे दिन शहीद हो गये। उनकी शहादत पालीगंजके कार्यकर्त्ताओंमें जान लायी। सैकड़ो इकट्ठे हुये और बाजे गाजेके साथ सोन नदीके तटपर शहीदकी अर्थी लेगये और दाह संस्कार किया।

कुर्थाथानाके कार्यकर्त्ताओंने श्रीश्यामबिहारी लालके नेतृत्वमें पुलिस थानेपर हमला किया। बाबू श्यामबिहारी लाल कुर्था थानाके मंत्री थे। जब कार्यकर्त्ताओंका जुलूस थानेके पास पहुंचा तब लोगोंकी एक भीड़ आकर शामिल हो गई और क्रान्तिकारी नारे लगाती हुई थानेमें घुसने लगी। थाने वालोंने उन्हें रोका। वे भाले, गड़ासे लिये लोगोंका सामना करनेके लिये तैयार थे। श्यामबिहारी बाबूने उनसे कहा कि हम मार पीट करने नहीं आये हैं। हमारा उद्देश्य है थानेपर कांग्रेसका झंडा फहरा करके अंगरेजोंको कह देना कि वे हिन्दुस्तानसे चले जायं; हमलोग आजसे आजाद हैं; पुलिस हमारे भाई हैं; हम सब मिल करके अपना काम आप सम्भाल लेंगे। उनकी बातोंका थानावालोंपर कोई असर नहीं हुआ। जमादार गुलाम हैदर खाँने घुड़क कर उन्हें थानासे निकल जानेको कहा। लोग तैशमें आगये और थानेमें घुसने लगे; थानेवाले उन्हें धकेलने लगे; फिर लाठीयां चलाई और रोड़े खाये। इसी बीच श्यामबिहारी लालपर गड़ासेका कई घातक वार जमादार गुलाम हैदर खाँने किया। श्यामबिहारीजी बेहोश गिर गये। फिर वे अस्पताल पहुँचाये गये जहां शहीद बन गये।

कुर्थाथाना

घोसी थानापर केदारनाथ वर्माके नेतृत्वमें छात्रोंका एक जलूस निकला। जलूस थाना आया जहां दारोगाने उसकी राह रोक ली। कहा, थानेमें हम सरकारके खिलाफ कुछ करने नहीं देंगे। छात्रोंने दारोगाकी बात नहीं मानी। वे धड़धड़ाते हुए थानेमें घुसे, मकानपर फांद गये और झंडा फहरा दिया। फिर उनने थानेके कागजात इकट्ठे किये जिनमें आग लगा दी। फिर थानेका फरनीचर उनने निकाल फेंका और तोड़-फोड़ दिया।

मखदुमपुर

मखदुमपुर थानापर प्रयाग नारायण सिंह, ब्रह्मदेव नारायण सिंह और रामकिशोर प्रसादने बहुतसे संगी-साथियोंको लेकर हमला किया। थानेपर झंडा फहराया, उसके कागजात जलाये और सामानादिको इतस्ततः कर दिया।

नवीनगरमें दल बाँधकर जब जनता थानेपर झंडा फहराने गई तो वहाँके दारोगा रघुनाथ सिंहने उसपर फायर किया, जवाबमें जनता उनपर टूट पड़ी, दारोगा साहबका फायर ठंढा पड़ गया। लोगोंने उन्हें पकड़ लिया और घूंसे-लातसे खूब मरम्मत की। संयोगसे वहांके मेडिकल औफिसर डा० रामेश्वर तिवारी उधर आ निकले। उनने लोगोंको शांत किया। घायलोंकी

औरंगाबाद सबडिविजन

मरहम-पट्टी की और दारोगा साहबका भी इलाज किया। पर दूसरे दिन जब गोरी पलटन आयी तो दारोगाजीने उसके अफसरसे कहा कि डाक्टर साहबके इशारेसे ही उनपर हमला हुआ था। डाक्टर साहबने काफी सफाई दी तो भी उनकी बन्दूक जब्त कर ली गई। थानाको बरबाद करनेपर जनता तुल गयी; उसने दूसरी बार थानेपर हमला किया और उसे बरबाद कर दिया। थाना नबीनगरसे उठ गया और वहाँका डाकखाना भी बंद हो गया।

नबीनगर थाना

कुटुम्बा

कुटुम्बा थानेपर जब जनताका धावा हुआ तब पुलिस एक ओर हट गयी। जनताने थानेपर झंडा फहराया, उसे अपने कब्जेकर लिया। पुलिसवाले वहाँसे चले गये। वहाँका डाकखाना भी जन आक्रमणके सामने टिक न सका।

गोह

गोहके थानेपर भी जनताने हमला किया। थाना और डाकखाना दोनों गोहसे हटा लिये गये।

आवेरा

आवेराके कार्यकर्त्ताओंने पहले डाकखानेको दखल किया, वहांसे वे थाना गये जिसपर उनने झंडा फहराया और उसपर अपना दखल भी जमाया।

रफीगंज

रफीगंज थानेमें छात्रोंका अच्छा संगठन था। उनका जलूस थाने आया और पुलिसकी आंखके सामने थानेपर तिरंगा झंडा फहरा दिया। वहांसे वे रेलवे लाइनकी ओर बढ़े, रेलकी पटरियां उखाड़नी शुरू कर दीं, टेलिग्राफके तार भी उनने तोड़ फेंके।

शाहाबाद सदर सबडिविजन

साहार थानाके कार्यकर्त्ताओंने जब थानापर हमला करनेका निश्चय किया तब वहाँके विद्यार्थी बड़े उत्साहित हुए। सबोंने मिलकर थानेपर हमला किया, थाने वाले मौजूद थे पर डरसे चुपचाप एक ओर खड़े थे। कार्यकर्त्ताओंने थानेके कागज पत्रोंको समेटा और उनमें आग लगा दी। फिर थानेपर उनने अपना झंडा फहराया और एलान किया कि आजसे थाना कांग्रेसका होगया। और यहांसे सारे थानेकी व्यवस्था कार्यकर्त्ताओं द्वारा होगी। यद्यपि कार्यकर्त्ताओंने थानेवालोंको भगाया नहीं तथापि वे इतनी आजादीसे अपने आजाद थानेमें आते-जाते रहे और क्रांतिकारी प्रदर्शन करते रहे कि थानेवालोंके लिए वहां सांस लेना मुश्किल हो गया और वे थाना छोड़कर जो चले गये सो दो महीने तक झांकने नहीं आये।

पीरो

पीरोके कार्यकर्त्ताओंने कालिजके विद्यार्थियोंकी सहायतासे थानापर हमला किया और थानेके कागज-पत्रोंको जला दिया। उसके फरनीचरको बरबाद कर दिया। थानेमें डाकघरके १७६० रुपए रखे थे। उस रकमको ले लिया। फिर उनने थानापर अपना झंडा फहराया। थानेवालोंको सामने आनेका साहस नहीं हुआ।

जगदीशपुर थाना

जगदीशपुर थानाको कब्जामें लानेका विचार पहले पहल उठा हाइ-स्कूलके लड़कोंके मनमें। कार्यकर्त्ताओंने उनका साथ दिया। फिर एक बड़े जलूसके रूपमें थानेपर पहुँचे। थाना वालोंने कहा कि हमलोग किसी बागीको थानामें घुसने नहीं देंगे, न झंडा फहराने देंगे और न कोई काम करने देंगे। पर कार्यकर्त्ता आगे बढ़ते ही गये, उनने कहा कि गोली ही हमारी चाल धीमी कर सके तो कर सके। कार्यकर्त्ताओंने थानेमें घुस वहांके कागज-पत्रोंको जला दिया और थानापर अपना झंडा फहराया दिया।

साहपुर

साहपुरने भी सरकारी थानेपर हमला किया। थानेके कागजात जला दिये और उसपर तिरंगा झंडा फहरा दिया।

बड़हरा थाना

बड़हरा थानेके कागजातको कार्यकर्त्ताओंने जला दिया। फर्नीचर बरबाद कर दिये और थानेपर कब्जा कर लिया। थानावाले भाग गये, थानेपर कांग्रेसका झंडा फहराता रहा।

संदेश

सदेश थानापर चढ़ाई करनेके लिए कार्यकर्त्ताओंने काफी तैयारी की और एक बड़ा जलूस लेकर थाना पहुँचे। थानेवाले इन्हें रोकनेके लिये सचेष्ट थे। इसलिए जब भीड़ थानेमें घुसी तो चौकीदारों और कन्सटेबिलोंने उसे रोका। फिर तो हाथा-पाई शुरू हो गयी। भीड़ रुकी नहीं नारे बुलन्द करती हुई थानेमें धंस आई। उसने किरासन तेल कागज-पत्र, फरनीचर और मकानके ऊपर नीचे छिड़क दिया। फिर सभी जगह आग लगा दी, धू-धू करके थाना सामान सहित जल गया थानेवाले न आगको फैलनेसे रोक सके और न भीड़को बढ़नेसे।

डुमरांव

१६ अगस्तकी शामको डुमरांव नगर और दिहातोंकी जनता डुमरांव थानेपर उमड़ पड़ी। "पुलिस हमारा भाई है", "इन्कलाब जिन्दाबाद के" नारोंके साथ जब वह थानेके पास पहुँची, तब थानेदार देवनाथ सिंह अपने अन्य पुलिस साथियोंको लेकर थानेकी मोर्चाबन्दी करने लगे, उनने लोगोंको सावधान कर दिया कि वे आगे बढ़ेंगे तो गोलीके शिकार होंगे। पर लोग तो थानेको कांग्रेसके

कब्जेमें लानेके लिये आने आये थे और सब खतरोंको सोच समझ कर फिर पुलिसके कड़े रुखके बावजूद भी नवजवान आगे बढ़े थे। बस, रिवाल्वरसे गोलियां दनादन निकलने लगीं। चार व्यक्ति—श्री कपिल मुनि कमकर, श्री गोपाल कमकर, श्री रामदास बढ़ई और श्री रामदास सोनार घटनास्थलपर ही शहीद होगये। ११ व्यक्ति बुरी तरह घायल हुए। बहुतोंको तो कई कई छर्रे लगे। भीड़ भाग खड़ी हुई। १७ अगस्तको शहीदोंकी लाश लेकर एक बड़ा जुलूस निकला। बक्सरके सभी नगर निवासी अर्थीके साथ लग गये। रामरेखा घाटपर 'अमर शहीद जिन्दाबाद' के नारे लगाते हुए शहीदोंका अंतिम संस्कार किया गया। उसी रोज चार बजे शामको डुमरांव थानेपर जनताकी अपार भीड़ इकट्ठी होगई। थानेदार और कनस्टबिल थाना छोड़ भागे और पासके एक दूसरे मकानमें जा छिपे। क्षुब्ध जनताने थानेकी इमारत और कागजात मय सामान जला दिये। १८ अगस्तको डुमरांव स्टेशनका मालगोदाम लूट लिया गया।

नावानगर थानेपर छात्रोंका जुलूस गया और उसपर झंडा फहरा आया। थानेपर कब्जा करनेकी कोशिश की गई। पर कामयाबी नहीं मिली, गांवके ही नहीं बल्कि थानाके भी राजपूतोंकी एक अच्छी संख्या लाठी, भाले, गड़ासे लेकर थानेपर पहरा देने लगी। पुलिसका रुख अच्छा था, इसलिए गाँव वालोंको पहरा देनेमें मन लगता और कार्यकर्त्ताओंको आपसमें ही लड़ मरनेकी हिम्मत न होती।

नावानगर

राजपुर थानेपर पाँच हजार आदमियोंकी भीड़ २० अगस्तको चढ़ आई। थानेके इमारतपर उसने झंडा फहराया, वहां सभा हुई। जिस सभामें सब-इन्सपेक्टर और जमादारने झंडाभिवादन किया। सब-इन्सपेक्टरने सरकारी नौकरीसे अपना इस्तीफा लिख कर थाना कांग्रेस कमिटीके सभापतिके हाथमें दे दिया और कबूल किया कि मैं आजसे काँग्रेस सेवक बन गया और काँग्रेसके प्रोग्रामके मुताबिक ही काम करूंगा।

राजपुर

बक्सर थानेपर हमला हुआ १७ अगस्तको। थानेपर झंडा फहरा दिया गया और उसके कागजात जला दिये गये। थानेमें अपना ताला भी लगा दिया। सात दिनों तक थाना काँग्रेसवालोंके अधिकारमें रहा।

बक्सर

नासरीगंज थानापर १५ अगस्तको चढ़ाई हुई। चौकीदार, दफादार और थानेके अधिकारी थानेमें मौजूद थे। भाले, बर्छे, और दो नाल बंदूक लेकर सभी

सासाराम चारों तरफसे थानेकी हिफाजत कर रहे थे। लेकिन जनताकी बेशुमार, पर शान्त भीड़के आगे उन्हें झुकना पड़ा। थानेदार और जमादार भीड़के अगुआ श्रीरामाशीष सिंहसे मिले और सारी बातें जान-बूझ कर उनने आत्म-समर्पण किया, लेकिन कुल कागजातके देनेसे इनकार किया। आन्दोलनकारियोंने थानेपर झंडा फहराया जिसका अभिवादन गाँधी टोपी पहन कर दारोगाने किया। वह अपना टोप फेंक चुका था। और गाँधीजी, तथा आजाद भारतकी जयजयकार मना रहा था। भीड़ने थानेके कुछ कागजात जलाये और थाना ऑफिसमें काँग्रेसका ताला बन्द कर विदा हुयी।

चेनारीके कार्यकर्त्ताओंने बड़े साजबाजसे एक जलूस निकाला, जिसको लेकर वे थाने आये। वहाँ उनने विधि पूर्वक काँग्रेसका झंडा फहराया और उनके साथ-साथ चेनारीथाना थानेवालोंने भी झंडेका अभिवादन किया। फिर इनने कांग्रेसकी ओरसे थानापर दखल जमाया। थानावाले कुदरा चले गये। एक हफ्ता वह थाना काँग्रेसके कब्जेमें रहा। थानापर कब्जा करके कार्यकर्त्ता गांवोंमें घूमने लगे। पंचायतकी स्थापना करना और डाकुओंसे रक्षा करनेके लिए सेवा दलका संगठन करना उनका काम रहा।

नोखा थानाको कब्जेमें लानेके लिए उसपर बार-बार हमले हुए। पहली बार आन्दोलनकारी कुछ कागजोंको जला पाये। दूसरी बार उनको किसने हथियार नोखाथाना बन्दोंसे मुकाबिला हुआ कि डट न सके, तितर-बितर होगये। तीसरी बारके हमलेमें छात्रोंने खूब हाथ बटाया। इनका दल गया और थानेके कागजात जलाकर उसपर अपना झंडा फहरा दिया।

डीहरी थानाको लोगोंने चारों तरफसे घेर लिया। पर थानेवाले भी कमजोर न थे। बन्दूक और पिस्तौल और तरह-तरहके हरबे हथियार लेकर वे सामने डीहरीथाना आये। आन्दोलनकारियोंने उन्हें अगस्त क्रान्तिका संदेश दिया और उनसे देशका साथ देनेकी अपील की। दारोगा साहब मान गये, उनने झंडा फहराया और आन्दोलनकारियोंको थानेपर झंडा फहराने दिया। फिर गांधीजीकी जयजयकारके बीच लोग थानेसे विदा हुए।

दिनारा थानाके कार्यकर्त्ताओंने जनताकी एक सभा बुलाई और उनसे पूछ कर दिनाराथाना तय किया कि थानेपर हम लोगोंको कब्जा कर लेना चाहिये। जुलूस बाँध कर वे थानेपर गये। वहां झंडा फहरा दिया और थानेको कब्जेमें कर लिया।

१६ अगस्तको भभुआके कार्यकर्त्ताओंने थानापर हमला किया। उनने दारोगाको समझाया कि वह देशके नामपर थानाको कांग्रेसके लिए छोड़ देवें और उनके भभुआ उसपर झंडा फहरा कर कांग्रेसका कब्जा घोषित करने देवें पर दारोगा साहब टससे मस नहीं हुए और गोलीके सहारे उनने कार्यकर्त्ताओंको थानासे दूर ही रखना चाहा। पर जनता रुकनेवाली नहीं थी, वह थानामें 'इन्कलाब जिन्दाबाद'का नारा बुलन्द करती हुई बढ़ी। तुरत उनपर गोलियाँ दगने लगीं कितने घायल हुए और एक तो तत्काल शहीद हो गया, नाम अन्तुराम।

१४ अगस्तको कुदरा थानापर चढ़ाई हुई लोग वहाँ गये और थानाके मकानपर कांग्रेसका झंडा फहरा दिया।

१६ अगस्तको दस बजे दिनका वक्त था जब चार हजार जनता दुर्गावती थानेमें उमड़ आई और थानापर अपना झंडा फहरा दिया।

१८ अगस्तको जैतपुर, रघुनाथपुर, रुपोली आदि स्कूलोंके छात्रोंका एक दल मुजफ्फरपुर पारूथाना पहुँचा और वहाँ कांग्रेसका झंडा फहराया गया। लगे हाथ उस दलने रजिस्टरी आफिस, आबकारी आफिस और डाकखानेपर भी झंडे फहराये। लड़कोंने डाकखानेके कुछ कागजात भी फाड़ डाले।

२१ अगस्तको कांग्रेसके कार्यकर्त्ता एक बड़ा जलूस लेकर थाना आये। स्वयंसेवकोंको थाना घेरकर बैठ जानेका आदेश दे श्रीधरशर्माजी थानेदारकी ओर बढ़े। परिस्थिति पारूथाना समझ थानेदारने थानेका चार्ज उन्हें दे दिया। फिर उनने स्वयंसेवकोंको बुलाया और विधिपूर्वक थानेमें झंडा फहरानेका आदेश दिया। दारोगाको माला पहनाई गई और दारोगाने भी शर्माजी और अनान्य प्रमुखोंको मालाएँ पहनायीं। इधर "झंडा ऊँचा रहे हमारा" से थानेका वातावरण गूंज रहा था, उधर दारोगाजीका भेजा हुआ जमादार सुरेश झा मिलिटरीसे भरी हुई दो लारियोंको हड़हड़ाता हुआ थाने लेआ रहा था। मिलिटरीकी लॉरियाँ ठीक उस समय पहुँची जिस समय कांग्रेसके कार्यकर्त्ता थानेसे हँसी-खुशी विदा होरहे थे। मिलिटरीको देख लोग डरे, पर नेताओंने उन्हें ढाढ़स बन्धाया। सब जहाँके तहाँ खड़े होगये। कलक्टर एम० पी० को लेकर थानेके बरामदेमें आगये और भीड़को देख बोले—यह गैरकानूनी मजमा है, इसलिए सब भाग जाओ। एक तरफसे उन्होंने जनताको भाग जानेका हुक्म दिया और दूसरी तरफसे मिलिटरीको गोली छोड़नेकी इजाजत दी। श्रीधर शर्माजी सबके आगे थे। गोरोंको सुनानेके लिए वे चिल्ला उठे—We are not

going to do harm to you all; if you are determined to shoot us, shoot me first. I am guilty not all." यानी हमलोग आपको मारने पीटनेवाले नहीं हैं। तो भी अगर आपने हमें गोलीसे भून देनेका निश्चय कर लिया है तो पहले मुझको गोली मारिये। मै अपराधी हूँ सभी नहीं। उनकी आवाजको गोलियोंकी आवाजने दबा दिया। लोग घायल हो गिरने लगे पर गोलियोंके बीचसे शीतल खेले ओधर शर्मा आगे बढ़ने लगे। एस० पी० ने देखा, बोला पकड़ लो यह लीडर है। शर्माजी पकड़ लिए गये। पर जमीनपर लेट गये। फिर टांग कर लॉरीपर लाद दिये गये।

घायलोंकी सेवामें स्वयंसेवक जुट गये। दो तीन गिरफ्तार भी हुए, किन्तु घायलों को उठा उठा कर अस्पताल ले जाना उनने बन्द नहीं किया। लोग जमे रहे। मालूम हुआ वे और जोशमें आरहे हैं। फिर कलक्टरने थानेदार और रजिष्ट्रारको साथ लिया और फौज सहित चलते बने। इनके जाते ही क्षुब्ध जनता थानेपर टूट पड़ी और थानेकी चीजोंको बरबाद कर दिया।

घायलोंमें श्री अनुराग सिंह, श्री जोधा सिंह, श्री शिवगुलाम भगत तथा श्री सत्यनारायण चौबेकी हालत खराब थी। परन्तु और लोग बच गये, केवल श्री अनुराग सिंह और श्री जोधा सिंह दूसरे ही दिन सदर अस्पतालमें शहीद हो गये।

इस गोली काण्डने पारू थानाके कार्यकर्त्ताओंको बैठने न दिया। वे सभी सन्तप्त परिवारमें ढाढ़स बंधानेके लिए गये। फिर उनने जैंतपुर, पोखरेरा और मधौल डाकखानेपर झंडा फहराया और उनको बन्द कर दिया। ये सब एक महीना बन्द रहे।

१८ अगस्तको जब्तशुदा कांग्रेस औफिसके हातेमें ही सकराकी जनता बैठी और सकरा थानेपर कब्जा कर लेनेका निश्चय हुआ। लोग थानेपर गये। थानेदार सकरा सहानुभूति रखता था, इसलिये वहाँ शान्ति पूर्वक झंडा फहराया गया। लोग बड़े खुश हुए और खुशीमें जोर-शोरसे तरह-तरहके नारे लगाने लगे। थानेकी बगलमें ही एक दिन पहलेसे ही मिलिटरीका एक जत्था डेरा डाले था। शोर सुनकर वह थानेमें घुसा और भीड़को तितर-बितर करनेके ख्यालसे उसने लोगोंको बचाकर एक झोपड़ीकी ओर फायर किया। पर झोपड़ीमें पहलेसे ही बैठे थे एक पुराने कांग्रेस कार्यकर्त्ता, बाबू अमीर सिंह। गोली उन्हें लगी और वे फौरन शहीद हो गये।

१९ अगस्तको चार-पांच हजारकी भीड़ मीनापुर थानेपर कब्जा करनेके लिये

आयी। नेतृत्व कर रहे थे श्री भिखारी सिंह चौहान, श्री बिजुली सिंह और श्री जगन्नाथप्रसाद सिंह। भीड़को देख दारोगाने डपट कर कहा; भाग जाओ। किन्तु भागनेके बजाय भीड़ थानेके अहातेमें घुस पड़ी। थानेवालोंने लोगोंको पीछे धकेलना शुरू किया। फिर लोगोंकी ओरसे रोड़े चले। जिसका जवाब थानेवाले गोलीसे देने लगे। पर लोग भगे नहीं अड़कर दारोगाका सामना करने लगे। और जब गोली चुक गई तब लोग दारोगापर टूट पड़े। दारोगाकी बन्दूक और पिस्तौल छिन गई और उसपर मार पड़ने लगी। सिपाही, जमादार सब नौ दो ग्यारह हो गये। कुछ लोग थानेका सामान तोड़ने फोड़ने लगे, कुछ कागजात इकट्ठे कर फाड़ने लगे। फिर सभी चीजोंकी ढेर लगाकर उसमें आग लगा दी गयी। लोगोंका ध्यान इस धधकती हुई आगकी ओर गया।

सीनापुर

इसी बीच घायल दारोगा मकईके खेतमें सरक गया; पर तुरत लोग उसे खोजने लगे। उसकी गोलीसे बिन्देश्वरी और बांगुर सहनी मार डाले गये थे और कितने अभी तक छटपटा रहे थे। इसलिये थानेके गर्म वातावरणका जर्रा-जर्रा प्रतिहिंसाका नारा लगा रहा था। लोग मकईके खेतसे दारोगाको घसीट ले आये और उसकी कमरसे लगी पेटीके सहारे ही उसे बाँसमें टांगकर थानेके हातेमें धधकते हुये भीषण अग्नि-कुण्डमें डालने चले। दारोगाकी गिड़गिड़ाहट और उसका आर्तनाद क्रुद्ध जनताको और उभार रहा था। आगसे निकल भागनेकी उसकी सारी कोशिश बेकार गई। लोगोंने लम्बे बांसके सहारे ठेलठालकर उसे आगमें ही तड़पा तड़पाकर भून दिया।

फिर थानेकी लूट शुरू हुई। वहां कोई सिपाही मौजूद न था। हां! एक कोनेमें जमादारकी पत्नी दीख पड़ी। उसकी देहके सारे जेबर उतरवा लिये गये; पर हां उसे हिफाजतके साथ एक सम्बन्धीके घर पहुंचा दिया गया।

कटरा

१५ अगस्तको लगभग ४० हजार व्यक्तियोंका एक विशाल समुद्र थानेपर उमड़ पड़ा। पुलिसने जनताको थानामें घुसनेसे मना किया और दारोगाने जोरदार शब्दोंमें कहा कि जान रहते थानेमें सरकारके खिलाफ कोई काम न होने दूंगा। पर जब बेशुमार लोग थानेमें घुस गये और झंडा फहराने लगे तब दारोगा साहब चुपचाप कुर्सीपर बैठ गये। लोगोंने झण्डा फहराकर थानेमें ताला लगा दिया और दारोगासे कहा कि आप अपनी वरदी बदल दीजिये और अपनी बन्दूक हमारे हवाले कीजिये। दारोगा साहब तैशमें आ गये। कुर्सी छोड़ी और

टेबुलपर फांद रिवालवर चलाने लगे। जनता कुछ दूर हटी फिर डट गयी और रोड़े चलाने लगी। डट जानेका कारण एक वृद्धा बनी जिसकी उम्र थी करीब ७५ साल। वह झंडा लेकर जलूसके आगे आगे आयी थी। और उस वक्त भी आगे खड़ी थी। जो हटनेके लिये कहता जवाब देती कि मेरा एकलौता इस जलूसमें है। मैं यहांसे हट नहीं सकती। लोगोंको उसे समझानेका समय नहीं था। क्योंकि दारोगा और उसके साथी गोलियोंकी वर्षा कर रहे थे। धीरे धीरे गोलियोंकी वर्षा बन्द हो गयी। तब लोग भूखे बाघकी तरह थानेवालोंपर टूट पड़े और जिसे पाया बेरहमीसे पीटने लगे। दारोगा जब मरा सा होकर जमीनपर गिर पड़ा तब एक स्वयंसेवकने उसे खींचकर एक ओर रख दिया और साथियोंसे उसकी हिफाजत करनेको कहा। घायल जमादारको भी उसने छिपाकर बचा लिया। छः सात बुरी तरह घायल हुए पर एक कन्सटेबुल मारा गया। जनता फिर थानेपर टूटी। फरनीचर कागजात जला दिया और उसकी धधकती आगमें नोटोंका जो बण्डल मिला उसे फेंक दिया। चार बन्दूकें मिलीं जिन्हें ले लिया और बाकी सामान मकान सहित फूंक डाला।

थानेको जलाकर कटराकी जनताने छोड़ा नहीं। उसके स्वयंसेवक ४४ दिनों तक थानेके हातेमें परेड करते रहे और झंडा नेमटेमसे फहराते और उतारते रहे।

१४ अगस्तको साहबगंज थानामें कांग्रेसका झंडा गाड़ दिया गया। पर दूसरे दिन अफवाह उड़ी कि थानेदारने झंडेको उखाड़ ही नहीं फका है बल्कि पैरसे मसल डाला **साहबगंज** है। जनता क्रोधान्ध हो उठी और बड़ी तादादमें थानेपर पहुँची। ठीक उसी समय श्री जगधारी प्रसाद और ठाकुर यदुनन्दन सिंह वहां दौड़े आये और भीड़को समझा बुझाकर शान्त किया। वे सबोंको लेकर थाने गये जहाँ जमा-दारने उन्हें झंडा लाकर दिया और कहा कि हवाके झोंकेसे झंडा गिर गया था जिसे मैंने बड़ी हिफाजतसे रख रखा था। लोग उसकी बात मान गये। उनने अपना झंडा फिर फहरा दिया और थानामें ताला लगा दिया जिसकी कुंजी ठाकुर यदुनन्दन सिंहको सुपुर्द कर दी गयी।

सीतामढ़ीमें स्वर्गीय ठाकुर नवाब सिंहने सरकारी इमारतोंपर धावा करनेको प्रोत्साहन दिया। विद्यार्थी और कार्यकर्त्ता काफी तादादमें झंडे लेकर निकले और **सीतामढ़ी सबडिविजन** तमाम सरकारी इमारतोंपर उन्हें फहराया। अफसरोंने कहीं खुलकर उनका विरोध नहीं किया।

मेजरगंज थानेमें १५ अगस्तको पं० गणेश चौधरीके नेतृत्वमें शान्ति पूर्वक झंडा फहराया गया। पर कार्यकर्त्ताओंका मन न भरा। उनने १६ अगस्तको थानेपर दोबारा चढ़ाई की। वहां झंडा फहराया और कागज पत्रोंको समेट जला दिया।

मेजरगंज

१४ अगस्तको पं० श्रीनारायण ठाकुरकी प्रेरणासे लोगोंने सरकारी इमारतोंपर झंडे फहराए। श्रीनारायण ठाकुरजी, श्री सकलदेव कुअँर गौतम तथा श्रीराभरोस शर्माके साथ गिरफ्तार कर लिये गये। पर उनकी गिरफ्तारीसे जनता घबड़ायी नहीं। वह जब जब सुनती कि झंडे उतार दिये गये तब तब सरकारी मकानोंपर फिर झंडे फहरा आती। अन्तमें उसने सभी मुहकमोंपर बाजाप्ता अपना कब्जा जमा लेना चाहा। पर ऐसी नौबत न आयी। थानेदार थाना छोड़कर खुद भाग गये। और लोगोंने देखा कि थाना वीरान पड़ा है, जमादारके क्वार्टरमें राखका ढेर है। मालूम हुआ कि थानेदार साहबने थाना छोड़ते समय कुछ वरदी और मुरेठा जलाया था जिसकी राखका वह ढेर है। जनताने वहां अपना झंडा फहराया और ताला लगा दिया। रजिस्टरी, डाकघर, आदि महकमोंपर भी इसी ढंगसे कब्जा किया। जो सामान मिले उनकी रक्षाका भार कुछ लोगोंपर सौंप दिया। थानाके कांग्रेसके कब्जेमें आजानेसे देहातपर खूब असर पड़ा। बीट नं० ४ के चौकीदारी प्रेसीडेण्ट बाबू रामबुझावन ठाकुर और चौकीदार नेवातोने सर्व प्रथम इस्तीफा दिया। बादमें अधिकसे अधिक प्रेसिडेण्ट दफादार और चौकीदारोंने इस्तीफे दिये। यही नहीं कितनोंने अपनी वरदी उतार फेंकी और कांग्रेसके काममें लग पड़े।

पुपरी

बेलसंडकी तैयारी देख थानेदार साहबकी हिम्मत छूट गयी। वे २७ अगस्तको सीतामढ़ी जानेकी तैयारी करने लगे, पर उनके खोजे कोई सवारी मिलती नहीं थी। अन्तमें कार्य कर्त्ताओंसे मदद मांगी। कार्य कर्त्ताओंने बैलगाड़ीका प्रबंध कर थानेदारको माल असबाब सहित सीतामढ़ी रवाना कर दिया। राह भर तो थानेदार साहब भलेमानस बने रहे, पर सीतामढ़ी पहुँचते ही अपना उग्ररूप धारण किया। गाड़ीवानोंको फजीहत किया और थानेमें रिपोर्ट लिखायी कि बेलसण्डवाले मुझे नावपर चढ़ाकर नदीमें डुबा देना चाहते थे।

बेलसंड

बैरगनियांमें थाना, रजिस्टरी आदि सरकारी संस्थाओंपर स्वराजी सरकारका कब्जा होगया। कुछ कागज पत्र जलाये गये। और कोई अशान्ति नहीं हुई।

बैरगनियां

प्रवासकालके स्वर्गवासी

स्वः नबाब सिंह,
सीतामढ़ी (मुजफ्फरपुर)

स्वर्गीय गणेश सिंह,
लालगंज (मुजफ़्फ़रपुर)

जिन्हें गोलीका निशाना बनाया गया !

शहीद अमीर सिंह,
सकरा (मुजफ्फरपुर)

श्रीकुशेश्वर शाह,
समस्तीपुर (दरभंगा)

१६ अगस्तको भुतही रजिस्टरीके मकानपर तिरंगा झंडा फहराया गया और आफिसमें ताला लगा दिया गया। साथ साथ कई जगह सड़कें काटी गयीं और सोनबरसा पुल तोड़े गये। १६ अगस्तको थानेपर धावा हुआ और उसे कब्जेमें लाया गया। भुतही पोस्ट आफिसमें कागजात जलाये गये।

बेला थानामें विद्यार्थियोंने आन्दोलनमें भाग नहीं लिया। पर इससे आन्दोलनकी उग्रतामें कमी नहीं आयी। वहाँ तो ठेठ जनता उठी और कांग्रेस बेला कार्यकर्त्ताओंके लाख मना करनेपर भी वह थानेपर चढ़ आयी और उसके सामान जलाकर खाक कर दिया। वह डाकघर और आबकारी आफिस आयी जहाँके सारे सामान आगमें झोंक डाले गये। फिर रजिस्टरी आफिसमें ताला लगा दिया गया।

शिवहर थाना आन्दोलनमें जो आगे रहा सो स्वर्गीय ठाकुर नवाबसिंहके कारण। उनने कार्यकर्त्ताओंको संगठित किया और नवाबसिंह हाइ स्कूलके छात्रोंको शिवहर प्रेरणा दी। फलस्वरूप थानेपर एक संगठित जनसमूह चढ़ आया और बिना किसी रोक-टोकके उसपर अपना कब्जा जमा लिया और रजिस्टरी तथा पोस्ट आफिसपर झंडे फहराये। फिर यहाँके कार्यकर्त्ता सीतामढ़ी कोर्टपर भी धावा करने गये। अगुआ थे वही ठाकुर नवाबसिंह, जो गजबकी फुर्ती दिखा रहे थे। इस थानेमें कई गाँव ऐसे थे जिन्होंने कांग्रेसी थानेसे अपना नाता अन्त तक निबाहा। मोहनपुरमें सरकारने पं० गृहनाथ झाको अपना विश्वासपात्र समझकर हेडमैन बना दिया था। मगर वही क्या मोहनपुरका चौकीदार भी सरकारका न रहा। राष्ट्रके प्रति उनकी वफादारीका भेद जब सरकारको मालूम हुआ तब उसने सबोंको जेल ठूँस दिया। बराहीवालोंने तो घोर दमनके बावजूद अन्त तक लड़ने वाले राष्ट्रके सिपाहियोंकी मदद की। इस थानेके बहुतसे चौकीदारोंने एकबार जो नौकरीको लात मारी सो अबतक वे थानेमें झांकने नहीं गये हैं। पौनाके रामचरित्र राउत, बराहीके भोला हजरा, माधवपुरके मुंशी चौकीदार, अम्बाके सिलधारी राउत आदि चौकीदारोंके नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

१३ अगस्तको महुआ थानेपर लोगोंका जलूस आया। थानेदार थे श्री सूर्यनारायण सिंह। जनताको देख वे डर गये और भलेमानस बने रहनेमें ही सुविधा महुआ देखी। आपने कांग्रेसी सरकारकी मातहती कबूल कर ली। अपनी वरदी उतार फेंकी, झंडा लिया और जलूसमें शामिल हो वन्देमातरम्का नारा बुलंद

करते हुए निकले। थानेसे जनता खुशी खुशी रजिस्टरी आफिस आयी, जिसपर झंडा फहराया। कुछ कागज भी वहां जला दिये गये।

जनदाहा और सिंघाराके डाकघर और स्कूलको राष्ट्रीय झण्डेके नीचे लाया गया।

प० मदन झाकी प्रेरणासे १४ अगस्तको जनताका एक जलूस महनार थाना आया। दारोगाजीने आत्म-समर्पण कर दिया। थानेपर राष्ट्रीय झंडा फहराकर दारोगाजीने लोगोंके सामने भारत माताकी वन्दना की। मगर नवजवान इतने ही से संतुष्ट नहीं हुए। वे आजाद सरकार कायम करना चाहते थे मगर थानेके कुछ लोग जैसे श्री व्रजनन्दन सिंह और लक्ष्मी सिंह, झंडा फहरा कर ही समझते थे कि काम पूरा होगया। पर इनलोगोंकी एक न चली और नवज-वानोंने थानापर कब्जा जमा लेनेकी तैयारी शुरू कर दी। १८ अगस्तको प० मदन झाके नेतृत्वमें एक बहुत बड़ा जलूस फिर थाने आया जबकि थानेका सारा चार्ज दारोगासे ले लिया गया। श्री झाजीके सामने श्री गंगा प्रसाद गुप्त, श्री रामचन्द्र प्रसाद सिंह और हमीद साहबने भिन्नभिन्न पदोंकी जवाबदेहियां लेलीं। खजानेसे उन्हें सिर्फ ४॥) रु० मिला। थानेके दोनों दारोगा सपरिवार रहते थे। कार्य-कर्त्ताओंने बड़ा खयाल रखा कि उन्हें किसी तरहकी तकलीफ न हो। इनलोगोंने स्वेच्छासे महुआ जानेका विचार किया। पर जब लगातार कोशिश करनेपर भी इन्हें सवारियां न मिल सकीं तब इनने झाजीकी मदद चाही। झाजीने सवा-रियोंका इन्तजाम कर दिया और स्वयंसेवकोंको ताकीद कर दी ताकि ये लोग सकु-शल महुआ पहुंच जायं।

महनार

महनार थानापर तो ता० १८ से ही कांग्रेसका दखल हो गया। वहां उसके ताले लगते, उसकी बैठकें होतीं और वहांकी तमाम चीजें उसकी हिफाजतमें रहतीं रजिस्टरी और डाकघरपर भी उसका कब्जा हो गया।

राघोपुर थानापर लोगोंने झंडा फहरा दिया। और फिर वे शान्ति पूर्वक चले आये। पर दो दिनोंके बाद जब उन्हें मालूम हुआ कि थानेदारने झंडा उतार फेंका है तब वे बड़े उत्तेजित हुये फिर उनने बड़ी तैयारी करके थानेपर हमला किया और थानेके सारे सामान जलाकर खाक कर दिये। १७ अगस्तको मक्खू सिंह सिपाही डाक ला रहा था। उससे लोगोंने थैला छीन लिया और कहा अब जनताका राज होगया, सरकारी डाक क्या आती जाती ही रहेगी ?

राघोपुर

लालगंज

१५ अगस्तको देहातसे लोग जलूस बांधकर आये और थानापर झंडा फहरा दिया। वहांसे ये सब डाकघर पहुँचे जिसपर भी उनने झंडा फहराया। फिर वे रजीस्टरी आफिसकी ओर बढ़े और वहां भी झंडा फहरा कर शान्तिपूर्वक वापस चले गये।

पातेपुर

१४ अगस्तको पातेपुर थानापर शान्ति पूर्वक झंडा फहरा दिया गया। यद्यपि जनता और पुलिसमें कशमकश नहीं थी तथापि दो रोजके बाद पुलिस थाना खाली करके चली गयी।

चम्पारण

घोड़ासाहन

घोड़ासाहनमें छात्रों तथा कार्यकर्त्ताओंका जलूस १४ अगस्तको थानेपर पहुँचा और वहां शान्तिपूर्वक अपना तिरंगा झंडा फहरा आया। पर जब बाहरसे थाना जलानेकी खबर पहुँचने लगी तब वहांके कार्यकर्त्ताओंको भी अपनी कृति अपूर्ण जंचने लगी। फिर उनने थानाको बिलकुल कांग्रेसके कब्जेमें लानेके लिये प्रचार करना शुरू किया। फलतः २४ अगस्तको बेशुमार लोग थानेपर चढ़ दौड़े। थानेके सामानादिको इतस्ततः कर दिया और उसके सारे कागजात जला डाले। लोगोंका रुख देख पुलिसकी थानेमें रहनेकी हिम्मत टूट गई और वह दूसरे दिन वहांसे अपना बोरिया बंधना समेट मोतिहारीको चल पड़ी।

आदापुरथाना

ब्रजनन्दन शर्माजीने लगभग पांच सौ लोगोंको लेकर आदापुर थानेपर हमला किया। पर वहांकी पुलिस शान्त रही। फिर यह भी शान्त रहे और क्रान्तिके नारे लगाते हुये वहां झंडा फहरा आये।

ढाका

१८ अगस्तको ढाका थानेके कार्यकर्त्ताओंने ढाका थाना आफिसमें अपना ताला लगा दिया। उनका विश्वास था कि इससे थानेका काम बिलकुल रुक जायगा और थानेवाले कांग्रेसी सरकारको कायम होगया हुआ समझ कर ही राह लेंगे। पर अपनी आशाके विपरीत उनने पुलिसको कुछ न कुछ काम करते ही देखा। परिणाम स्वरूप वे २० अगस्तको थानेपर फिर चढ़ गये और उसके सभी कागजात बन्द करके उसपर अपनी सील मोहर लगादी।

गोविन्दगंज

२४ अगस्तको एक विराट जन समूह गोविन्दगंज थानाको दखल करने निकला। कार्यकर्त्ताओंका अनुमान है कि लोग बीस हजारके लगभग होंगे जो गोविन्दगंज बांधसे लेकर अरेराज तक फैले दीख पड़ते थे। ढोल और बिगुल बजाते हुये सबोंने थानाको चारो ओरसे घेर लिया। वे निश्चिन्त न थे। जानते थे कि गोरा फौज इस मौकेपर भी वहां पहुँच सकती है जैसे कि पहले वह एकबार

आ चुकी है। और जान बूझकर वे खतरेका सामना करने आये थे क्योंकि थानेको दखल करना कांग्रेसका प्रोग्राम था जिसे पूरा करना ही चाहिये था।

कुछ किसान पिचकारी, तेल और आग लगानेके अन्य सामान लेकर पहुंचे थे। वे चाहते थे कि थाना फूँक देना और सच पूछिये तो थानेके एक ओरमें आग लगाई भी गई पर श्री रामर्षिदेवकी आज्ञासे वह तुरत शान्त कर दी गई। थाने-वालोंकी कोई खास चीज नष्ट नहीं की गई। हां थानेको दो बन्दूकें जब्त करली गयीं और उसके कागजात जला दिये गये। फिर उसको पूरा पूरा अपने दखलमें कर लिया गया।

थाना दखलकर लेनेके बाद रामर्षिदलने डाकघरपर धावा किया। उसमें ताला लगा दिया गया और उसके स्टाम्प वगैरह जो जब्त किये गये उसकी बाजाब्ता रसीद रामर्षिदेवने पोस्ट मास्टरको दी। फिर आबकारी महालकी आफिस और राज आफिसपर दखल जमाकर उन्हें बन्दकर दिया गया। बादको यह दल देहातोंमें घुसा और कलालियोंको बरबाद करता और डाकघरोंको बन्द करता कांग्रेसी सरकारकी सत्ताका प्रचार करने लगा।

१६ अगस्तको थाना कांग्रेस कमिटीके सभापति और मंत्रीको सुगौलीमें पुलिस इन्सपेक्टरने गिरफ्तार कर लिया। खबर सुनकर गांववाले थानेपर चढ़ आये और

सुगौली

पुलिसके चंगुलसे दोनोंको छुड़ा लेना चाहा। किन्तु दोनोंने समझाया कि सच्ची रिहाई तो तभी मिल सकेगी जब सब लोग संगठित होकर अगस्त-क्रान्तिको सफल बना दें। यहां थानाकी पुलिसके हाथसे छुड़ा लेना किस कामका ? भीड़ समझ गई और थानापर झंडा फहराकर वापस चली गई।

२५ अगस्तको सुखम मिश्रने सुगौली थानेका घेरा डाला। उद्देश्य था सुगौली थानाको मोतिहारीके सम्पर्कमें न आने देना ताकि वहांसे थानेको कोई मदद न पहुंच सके। घेरा इतना जबरदस्त रहा कि २४ घंटे तक कोई सुगौलीसे मोतिहारी न जा सका। सड़कोंपर पहरा था। रेलवे-फाटक मजबूत तालोंसे बन्द थे। इधर मुसलमान दारोगाने अपनी हिफाजतके लिये काफी मुसलमान लड़कोंको जुटा रक्खा था। पर २६ अगस्तको थानेके सामने अठारह बीस हजारकी भीड़ देख दारोगा और उसके लड़के गाय जैसे बन गये और भीड़के प्रोग्राममें अड़चन डालनेकी हिम्मत नहीं हुई।

इस भीड़ने थानेके ऊपर राष्ट्रीय झंडा फहराया और उसके सभी कमरोंको

गोरोंके अग्निकाण्ड के नमूने!

लालगंज गांधी आश्रम

पद्धारी गांधी आश्रम

नवयुवक पुस्तकालय,
तेपरी (मुजफ्फरपुर)

गोरोंने जिन्हें पस्तकर दिया !

श्रीमौजे लाल ठाकुर
तेपरी (मुजफ्फरपुर) के
पक्के मकानका भग्नावशेष !
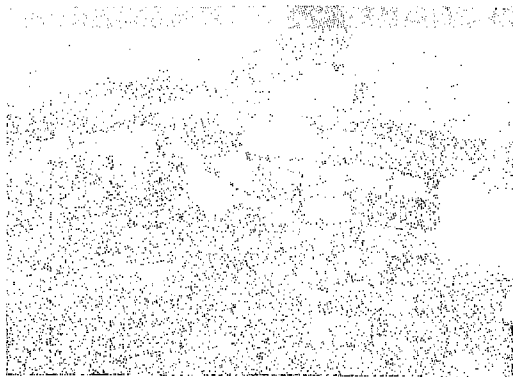
खादी भण्डार सीतामढ़ी
(मुजफ्फरपुर) को
सरजमी कर दिया गया !
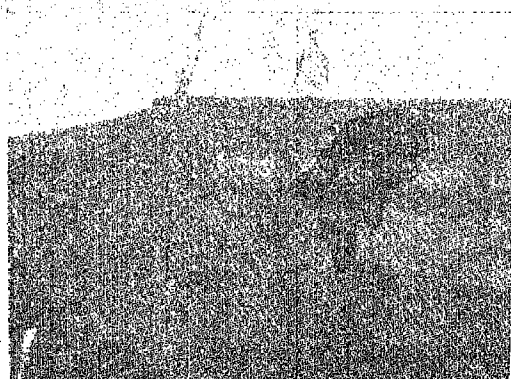
श्रीअम्बिका दास कनौजिया
(बिदूपुर, मुजफ्फरपुर) का
मकान जला दिया गया !

तालेसे बन्द कर दिया। फिर वह डाकघर आयी जहां उसने झंडा फहराया। डाक-घरका चार्ज वहांके पोस्ट मास्टरसे श्री सुखम मिश्रने लिया जिन्हें डाकघरमें सिर्फ पौने ग्यारह आने पैसे मिले। डाकखाना बन्द कर दिया गया। वहांसे लोग रेलवे स्टेशन पहुँचे। रेलवे पुलिस स्टेशनपर उनने झंडा फहराया और जब रेलवे पुलिस स्टेशनमें ताला देनेकी बारी आई तब दारोगाने उनका सामना किया। उत्तेजित भीड़ तोड़ फोड़की ओर झुक पड़ी। रेलवे थाना और स्टेशनके कागजात और फरनीचरको तोड़ फोड़ कर जला दिया और रेलवे पुलिसकी एक बन्दूक जब्त करली। दूसरे दिन स्वयंसेवकोंने अपना कैम्प सुगौलीसे उठा लिया और फुल-वरिया हिन्दी प्रचारक पुस्तकालयमें आकर वे रहने लगे।

उसी दिन गोरे आये और सुगौली स्वयंसेवक कैम्पको लूटते हुये रक्सौल चले गये। तुरत स्वयंसेवकोंका एक दल सुगौली घाट पहुँचा। वहांकी कुल नावोंको जोड़ी गांवा घाट ले जाकर उसने डुबा दिया।

बेतियामें सरकारने १४४ दफा जारी कर रक्खी थी। उस दफाको तोड़ कर बेतिया कचहरीपर झंडा फहरानेका प्रोग्राम बेतिया सबडिविजन भरके कार्यकर्त्ताओंने

बेतिया बनाया। २४ अगस्तको राजस्कूलके सामने छात्रों, कार्यकर्त्ताओं और जनसाधारणकी एक बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई। जलूस निकला जिसे सारे बाजार घूमकर कचहरीपर झंडा फहराना था, फिर विक्टोरिया मेमोरियलके सामने वाले मैदानमें सभा करके तितर-बितर हो जाना था।

इधर यह जलूस बाजारमें घूम रहा था उधर गांववालोंका दूसरा जलूस बाजारकी ओर आता दिखाई पड़ा। जब वह मीना बाजारके पास पहुँचा तो घुड़सवारोंने उसे रोका। वह रुक तो गया पर अपनी आगे बढ़नेकी कोशिशसे बाज नहीं आया। इसी समय मिलिटरीने सीटी बजाई जिसे सुनते ही घुड़ सवारोंने जलूसका रास्ता छोड़ दिया। जलूस लालबाजारकी ओर बढ़ा और ज्योंही चौराहेके पास पहुँचा कि मिलिटरीने उसे अपनी गोलियोंका निशाना बनाना शुरू किया जिसके फलस्वरूप कई घायल हुये।

राजस्कूलसे निकला हुआ जलूस घूमता घामता उस समय विपिन हाईस्कूलके पास पहुँचा था। गोली चलनेकी खबर पाकर वह उत्तेजित हो गया। जोश हुआ वहां दौड़ जाय और मिलिटरीसे भिड़ जाय। पर नायकने मना किया। उसने कहा हमें हरगिज उधर न जाना चाहिये। हम सब उस ओर मैदानमें चलें और वहीं

सभा करके अपने अपने घर जायं। किन्तु क्रोधातुर कहीं शान्तिकी सलाह सुनता है? काफी लोग मिलिटरीकी ओर दौड़ पड़े, उसे घेर लिया और चारों ओरसे उसपर ढेले बरसाने लगे। ढेलेके जवाबमें गोलियां आईं और खूब आईं। नौ शहीद हुए; बेतियागंजके श्री भागवत उपाध्याय, मिश्र बलिया, जिला सारनके श्री रामेश्वर मिश्र; महेसड़ा, थाना मझौलियाके श्री तुलसी राउत और सरयू राउत, बेतियाके श्री भिखारी कोयरी, श्री जगन्नाथपुरी, श्री गणेश राउत और मझौलियाके श्री फौजदार अहीर। घायल हुये अनेकों जिनमें इक्कीसकी चोट सख्त थी।

इस जलूसमें सबडिविजन भरसे लोग आये थे और इस गोली काण्डका सबोंको अनुभव हुआ। सभी अवसन्न से होगये।

सिकटा थानापर जनता एक जलूस लेकर आई और वहां अपना तिरंगा झंडा फहराना चाहा। पुलिस बाधक नहीं हुई और विधिपूर्वक झंडा फहराया गया।

शिकारपुर थानापर जनताने धावा किया। उसकी तादाद और ताकतको देख पुलिस सहम उठी और जनताको झंडा फहराने दिया।

मझौलिया थानेकी पुलिस भी जनताकी राह न रोक सकी। जनता थाने गई और झंडा फहरा आयी।

केसरिया थानेका जलूस तोड़ फोड़ करता हुआ पुलिस स्टेशन पहुँचा। उसने ऐलान किया कि थानेको दखल किया जायगा और आजसे इसपर कांग्रेसका झंडा उड़ा करेगा। पुलिस हाथ बांधे एक ओर खड़ी रही। थानेपर झंडा फहराया गया और सारे कमरोंमें कांग्रेसके ताले लगा दिये गये।

सारन

१४ अगस्तको श्री महेश्वर सिंहके नेतृत्वमें हिन्दू-मुसलमानोंका एक सम्मिलित जलूस थानेपर पहुँचा। थानेवालोंने उसका विरोध नहीं किया। वहां पुलिसकी एक उच्च अधिकारीभी मौजूद थे। सबोंको सरकारी नौकरी छोड़ देनेकी अपील की गई जिसको थानावालोंने मान लिया। श्री महेश्वर सिंहने उन सबोंसे कहा कि आपलोग घर चले जाइये, जरूरत पड़नेपर स्वराज्य सरकार आपको बुला भेजेगी। फिर इनने थानेपर झंडा फहराकर थानेको अपने कब्जामें कर लिया। वहांसे जलूस स्टेशन हातेमें आया। डी० टी० एस० ऑफिसपर झंडा फहराया, रेलवे स्टेशनपर झंडा फहराया और इसके बाद तो सभी मुख्य मुख्य इमारतोंपर झंडे-ही-झंडे फहराते दीखने लगे।

सोनपुर

१४ अगस्तको विद्यार्थी श्री नारायण सिंहके नेतृत्वमें एक जलूस थानेपर कब्जा करनेके लिए वहां पहुँचा। थानेमें उस मौकेपर मिलिटरीके पचीस सिपाही थे। डिपटी मजिस्ट्रेट भी मौजूद थे और पुलिसका सारा काफिला भी था। उस समय दिघवारामें कुछ ऐसी हवा बह रही थी और जनतामें ऐसा जोश काम कर रहा था कि जलूसके सामने कोई सरकारके नामपर मुकाबला करने न आया। जलूसने थानेपर झंडा फहराया और इन्सपेक्टर साहब और डिपटी मजिस्ट्रेटने झंडा उठा कर तमाम लोगोंका साथ दिया। दूसरे दिन कार्यकर्त्ताओंने पुलिसको थाना छोड़ देनेको कहा। पुलिसने थाना छोड़ दिया। पर तीसरे दिन यानी १६ अगस्तको बाबू रमानन्द सिंहने नावका इन्तजाम किया और इन्सपेक्टर साहबको सपरिवार दिघवारेसे भी विदा कर दिया। थानेमें तबसे स्वराजी ताला लगा दिया गया। फिर कार्यकर्त्ता दिघवारा स्टेशन पहुँचे, स्टेशनपर झंडा फहराया और स्टेशनको अपने कब्जेमें कर लिया। उनने स्टेशन-स्टाफसे स्टेशनका चार्ज ले लिया। स्टेशनमें जो रुपये मिले उनको स्टाफको दे दिया। उनने स्टाफसे कहा कि आजाद सरकारकी ओरसे हम आपको फुरसत दे रहे हैं और साथ-साथ तलब भी दे रहे हैं। आजाद सरकारको जब आपकी सेवाकी जरूरत होगी तब आपको बुला भेजेंगे। अभी हमें गाड़ी चलाना नहीं है, आन्दोलन चलाना है। फिर उनने रेलवे कर्मचारियोंसे पाये हुये रुपयेकी रसीद लेली। स्टेशनपर खादी-भंडारके कपड़े मिले जिन्हें उन सबोंने खद्दर-भंडार पहुँचा दिया। वहांसे सभी पोस्ट आफिस आये और पोस्ट आफिसका चार्ज लिया। फिर उन सबोंने प्रेम पूर्वक पोस्ट आफिसके स्टाफको और रेलवे स्टाफको अपने अपने घर विदा कर दिया।

दिघवारा

१५ अगस्तको कार्यकर्त्ताओंका जलूस बनियापुर थाना दखल करने निकला थानाके सभी कागजात और फरनीचरको लोगोंने जला दिया। हां, अमलोंके रहनेके क्वार्टरको बेलाग छोड़ दिया।

बनियापुर

१४ अगस्तको एकमा थानापर झंडा फहराया गया। बादको थाना कांग्रेसके कब्जेमें कर लिया गया और वहाँके कागजात फरनीचर वैगरह जला दिया गये।

एकमा

मांझी थाना अपने यहाँके लोगोंके मारे जानेके कारण जरा गर्म हो रहा था। वहांके कार्यकर्त्ता अन्य सरकारी इमारतोंको जलाते हुये जब थाना आये तब उसे भी सामान सहित जला दिया। थानाका दारोगा और सब सरकारी

मांझी

कर्मचारी उस दिन आन्दोलन कारियोंके 'अंग्रेजो भारत छोड़ दो' के नारोंके बीच विदा हो गये। थानेके बहुतसे चौकीदारोंने अपनी वरदी जला दी और नौकरोंसे इस्तीफा दे दिया।

गरखा थानेकी विचारधारा और कार्य-पद्धति बिहारके अत्यधिक कार्यकर्त्ताओंकी विचार-धारा और कार्य पद्धतिका परिचय देती है, इसलिये गरखा थानाकी कारवाईका सविस्तर उल्लेख आवश्यक है। गरखाके नेता गरखा श्री जगलाल चौधरी, जो आंदोलनके पहले बिहार-सरकारके मंत्री थे और आज भी हैं, लिखते हैं, "१८ अगस्तको मैं गरखा पहुँचा। फिर मैंने कुमार पशुपति द्वारा संगठित स्वयं सेवक दलको देखा; वे लाठी और भालेसे सुसज्जित थे, मुझे पसंद न पड़ा। मैंने कुमारको समझाया। उनने कहा कि टैंक, बम्बर, मशीनगन आदिके सामने लाठी और भालोंका प्रयोग अहिंसा ही है, महात्माजीने वर्त्तमान विश्व-युद्धमें पोलैंडको अहिंसक ही कहा है। मैं कुमारको समझा न सका। श्री फिरंगीसिंह, श्री रामप्रसाद सिंह भी वहां थे, वे कुमारके समान उग्र न थे पर उनका विरोध करना भी वे उचित न समझते थे। मैंने सबको इस बातपर राजी किया कि वे इन अस्त्रोंसे अपनी रक्षा ही करें किसीपर आक्रमण न करें। यहाँपर मैं अहिंसाके सिद्धांतका नहीं बल्कि हथियारोंकी अनुपयोगिता और अव्यावहारिकताका प्रतिपादन कर उनके ऊपर विजय पायी। साथ ही मैंने एलान कर दिया कि इस फौजमें भर्त्ती होनेकी इच्छा मेरी थी पर लाठी और भालोंके कारण मैं अब भर्त्ती न होऊँगा। हां, मैं फड़कसे यथा साध्य सलाह दिया करूँगा। ताकि इन अस्त्रोंका आक्रमण कारी प्रयोग न होने पावे। पर पीछे मुझे सूझ पड़ा कि मेरी यह सेवा भी उसमें रहकर ही हो सकेगी; विलगसे नहीं।

उसी दिन यानी १८ अगस्तको दिघवारेसे मेरे दो मित्र श्री हीरालाल सराफ और श्री द्वारिका नाथ तिवारी आये। उसदिन गरखामें बाजार लगनेका दिन था। कुमारने उक्त नेताओंके व्याख्यान कराये, जिसमें उनने लोगोंके कर्त्तव्य बतलाये। इन कई दिनोंमें गोरे, और काले फौजियों तथा गोरी और काली पुलिसने कैसे-कैसे जुल्म किये हैं, सबों लोगोंको सुनाये गये। दिघवारे और सोनपुरमें, सिवान और महाराजगंजमें और पटनेके सेक्रेटेरियटमें जो खून हुये थे उनका वर्णन सुनाया गया और महात्माजीने इन जुल्मोंको रोकनेका क्या उपाय बतलाया था, सो भी कहा गया। मेरी ओर अफवाह उड़ी थी कि मढ़ौरेमें कई गोरोंको गांववालोंने मार डाला है;

और यह भी अफवाह उड़ी थी कि गोरे स्त्रियोंका अपमान करते हैं। इससे लोगोंको गोरोंके प्रति अति घृणा और अपने पाशविक बलमें अधिक विश्वास हो रहा था। उनने मुझसे कुछ सुनना चाहा। मैंने अहिंसाका प्रतिपादन किया। लोगोंने तरह-तरहके प्रश्न पूछने आरंभ किये, सबसे जटिल प्रश्न था—यदि किसीकी बहू-बेटी बेइज्जत की जाये तो चुपचाप कैसे सह लेंगे? माना, कि हमारे अस्त्र उनके अस्त्रके सामने काम न कर सकेंगे, फिर भी चुपचाप कुत्तेकी मौत मरनेके बजाय क्यों न लाठी और, भालोंसे ही मुकाबला करते-करते मर जाय? मैंने बतलानेकी कोशिश की कि अहिंसक कायरतासे हिंसा ही बेहतर है। लोगोंने कहा—सिरपर आफत आ पड़ी है, गोरोंके जुल्मोंका मुकाबला अहिंसासे करना हमारी शक्तिके बाहरकी बात है। आप तो हमें हिंसाका उत्तमसे उत्तम उपाय बतलावें।

मैं इस प्रश्नके लिए तैयार न था। मुझे याद पड़ा कि पूज्य महात्माजीसे भी किसीने ऐसा ही प्रश्न कभी किया था, तो उनने उत्तरमें कहा—तो आप किसी दूसरेके यहां जायें; मैं तो हिंसाका विशेषज्ञ नहीं। जो यह कला जानता हो उसीसे राय लें। पूज्य महात्माजी अहिंसाकी मूर्ति हैं और उनने सचमुच ही कभी हिंसाका प्रयोग किया नहीं। उनके मुखसे वह उत्तर ठीक था। पर मैंने तो २६ वर्षकी उम्र तक अहिंसाकी शिक्षा न पाई थी। लगातार २८ वर्षों तक पूज्य महात्माजीकी शिक्षाका अध्ययन और मनन करनेमें तथा यथासाध्य उनकी शिक्षा पालन करनेकी कोशिशसे कुछ रोशनी पा सका हूं। मैं यह नहीं कह सकता था कि मैं यह हिंसाका उपाय जानता ही नहीं। मैं केवल इतना ही कह सकता था कि मैं हिंसाको व्यर्थ और हानिकर समझकर त्याग चुका हूं, उससे काम नहीं लेता। यद्यपि अहिंसामें निपुण नहीं, तो भी कुछ तो जानता ही हूँ। अतः मैंने हिंसाका निषेध करते हुए भी कुछ साधनोंका वर्णन कर दिया, और यह भी बतला दिया कि ये साधन ऐसे नगण्य हैं कि आधुनिक वैज्ञानिक अस्त्र शस्त्रोंका सामना तो नहीं ही कर सकते उलटे विरोधीको अवसर देते हैं कि वे अपने अस्त्र शस्त्रोंका प्रयोग अधिकसे अधिक कर सकें। जो साधन मैंने बतलाये उनमेंसे अनेक तो ऐसे थे जो मैंने बचपनमें पिताजीसे सुने थे और कुछ ऐसे थे जिनका वर्णन कहीं कहीं पुस्तकों और अखबारोंमें भी देखा था। यथा घरमें गुड़की चाशनी चूल्हेपर बनती ही रहे, वही झाड़ूसे शत्रुओंपर छिड़का जाय।

(२) मिर्चा पीसकर पानीमें घोलकर रखें और पिचकारीसे शत्रुओंकी आंखोंपर दें।

(३) बांसके लम्बे टुकड़ेके छोरपर नोक बना लें जो बर्छेका काम करेगा। आदि-आदि।

ये उपाय शत्रुओंको मारनेके लिये कदापि समर्थ नहीं हो सकते। उन्हें केवल कुछ देरके लिए अपने अस्त्र प्रयोग करनेसे रोका जा सकता है और यदि हमलोग काफी संख्यामें रहें तो इसी बीच उनके अस्त्र छीन ले सकते हैं और अपने प्राण बचा सकते हैं। फिर भी मैंने ताकीद की कि इन पुराने और छोटे मोटे साधनोंसे लाभ कम होगा और दुश्मन तो हमारे ऊपर बहुत दूरसे आक्रमण करेंगे। जैसे कि उन्होंने कितने घर जलाये हैं। वे घरोंपर पेट्रोल छिड़ककर बन्दूक दाग देते हैं और आग लग जाती है, ऐसे शत्रुओंपर भला इन साधनोंका क्या असर होगा? श्री हीरालाल सर्राफका घर भी इसी प्रकार जलाया गया था।

यह सभा समाप्त हुई और लोग घर गये। श्री सर्राफजी रातभर ठहरकर सुबह ही छपरे गये और श्री तिवारी निकट गांवमें जहां उनका ससुराल था रात भर ठहर कर अपने घर चले गये।

१६ अगस्तको मढ़ौरा थानापर चढ़ाई करनेके लिये इतने लोग इकट्ठे हुए कि दर्शक सहित आध मीलका जलूस बन गया। अगली कतारमें अमनौर स्टेटके श्रीमती बहुरिया

मढ़ौरा

रामस्वरूपा देवीजी, मेहता परिवारकी महिलायें, शुक्लजीकी पुतोहू और अन्यान्य स्त्रियां थीं, संख्या थी लगभग दो दर्जन। उनके पीछे थे सुदिष्ट नारायण सिंह और सूरज सिंह, सभापति तथा मंत्री थाना कांग्रेस कमिटी और शीतल सिंह, रामकुमार तिवारी, शुकदेवनारायण मेहता, गोरखनाथजी वैद्य और बोधनप्रसाद श्रीवास्तव वगैरह। एक मीलकी दूरी तय करके यह जलूस रजिस्टरी औफिस पहुँचा। उसपर झंडा फहराया गया और थाना ओफिसमें ताला लगा दिया गया। मुलाजिमोंको हुक्म हुआ कि आप इस्तीफा दाखिल करें। थानेपर भी झंडा फहराया गया और थाना औफिसमें ताला लगा दिया गया। थानेमें डिपटी मजिस्ट्रेट दोनों दारोगा, दोनों जमादार, मुंशी और दो-तीन सिपाही मौजूद थे। १५ फौजी सैनिक भी थे। महथा शुकदेव नारायण लिखते हैं :—थानापर कब्जा कर लेनेके बाद आर्म्ड पुलिसकी बन्दूकोंको ले. लेनेकी बारी आयी। बंदूकों या अन्य युद्धके सामानोंको लेकर किसी सुरक्षित स्थानमें रख देनेकी बात पहले ही हमलोगोंको सोलह आदेशवाले पर्चेसे मालूम हो गया था।

अतएव मैंने डिपटी मजिस्ट्रेटसे कहा कि पुलिसवाले बंदूकोंको हमारे सुपुर्द करदें नहीं तो हो सकता है कि बात बढ़ जाये। अभी तक आर्म्ड पुलिसवाले दिखाई नहीं पड़ रहे थे। वे थानाके एक बैरकमें भरी हुई बन्दूकोंके साथ एक कतारमें तैयार खड़े थे। जब संध्या हो चली तब बड़े जोरोंसे बंदूकें छीन लोका नारा बुलंद होने लगा। दो-चार सौ लोग थानेके भीतर भी आगये। डिपटी साहबपर बंदूक दिला देनेके लिए दबाव पड़ने लगा। पर वे जरा भी राजी नहीं होते थे। आखें लाल-पीली करके सबको घूर रहे थे। मैंने उनसे कहा कि मैं स्वयं सैनिकोंसे बातें करूंगा, यह कह कर मैं बिना किसी इन्तजारीके सैनिकोंके बैरकमें घुस गया।

फाटकपर डिपटी साहब क्रुद्ध खड़े थे और मैं अकेला चौदह सैनिकोंके बीच खड़ा खड़ा उनसे बातें कर रहा था, 'आप मेरे भाई हैं; मेरी ही तरह ही गुलाम हैं। इस आजादीकी लड़ाइमें आपको भी जोग देना चाहिये। बंदूकके साथ ही साथ ही हमलोगोंके गिरोहमें आ मिलना चाहिये।' मेरी बातोंका इतना ही निचोड़ था। सिपाहियोंमें एक जो औरसे कुछ अधिक पढ़ा लिखा जान पड़ता था मुझे विश्वास दिलाने लगा कि सैनिक हथियार तो न देंगे पर छपरा जाकर सरकारको इस्तीफा दे देंगे। हथियार दे देनेसे उनपर इल्जाम आयेगा जिससे न मेरा काम सधेगा न उनका। सैनिकोंकी बात-चीत और भाव-भंगीसे उनकी सचाईपर मेरा विश्वास होगया और मैंने उनके हथियार न ले उनको छपरा जाने देनेकी बात मानली। फिर मैं हरेक सैनिकसे गले मिलने लगा, सभी चावसे मिले। फिर वे 'महात्मा गांधीजीकी जय' का नारा लगाने लगे, फिर उनके अगुआने जनतासे दो बातें करनेका इरादा जाहिर किया। वे लोगोंके सामने आये और बोले—हमलोग आपके साथ हैं; हथियार देकर अगर हमलोग इस्तीफा देने जायेंगे तो फौजी कानूनके अनुसार हमें गोली मार दिया जायगा। इससे बेहतर है कि आप भाइयोंके हाथ मृत्यु हो। आप हथियार लेलें और हमें गोली मार दें। वरना हमलोगोंको आजकी रात वापस जाकर इस्तिफा दाखिल करने देवें।"

डिपटी साहब सब कुछ देख रहे थे। उनके पैरके नीचेकी धरती धँसी जा रही थी और इधर जनता क्रान्तिके नारोंके बीच घर लौटी जा रही थी।"

१५ अगस्तको करीब दस हजारकी संख्यामें लोग थानेपर इकट्ठे हुए और निर्विघ्न थानेपर झंडा फहराया। १९ अगस्तको कार्यकर्त्ताओंने थानेको जला देनेका

परसा निश्चय किया पर देखा कि थानेको जला देनेसे परसा बस्तीको बड़ी आंच पहुँचेगी। क्योंकि थाना बस्तीके ही भीतर है। तब उनने अपना निश्चय बदल

दिया और जलानेके बदले थानाको ढाह दिया। जितने कागज मिले वहां उनको जला दिया यद्यपि सरकारी नौकरोंके निवास स्थान सुरक्षित थे, तथापि सभी सरकारी नौकर वहांसे चले गये। थाना खाली होगया। फिर तो गांवोंके चौकीदार आ-आकर कांग्रेस ऑफिसमें अपनी वरदियां जमा करने लगे। कुमार पशुपतिके जत्थाके कार्यकर्त्ता थानेको जलानेके लिये उतावले हो रहे थे, मैं उन्हें बराबर रोकता रहा, पूरे चौबीस घंटे बीत गये तब उन्तीस अगस्तको आठ बजे सबेरे उन्होंने कहाकि आज थानेको जलाकर राख कर ही देना होगा। मैंने उन्हें फिर समझाया कि मैं थानेको बचा देना चाहता नहीं, पर इतना जरूर चाहता हूँ कि थानेके साथ यह गांव भी न जल जाय और थानेके कर्मचारियोंके बाल बच्चे शरण हीन न हो जायें। यदि थाना जलाया जाय तो कर्मचारियों के वासस्थान बचा दिये जायें। यह कैसे होगा? कार्य-कर्त्ताओंने कहा—उन कर्मचारियों और उनके आश्रितोंको अपने गांवमें रहनेके लिए जगह देंगे पर थानाको जला देंगे। मैंने कहा कि वे सरकारी आदमी आपपर विश्वास न करेंगे। और आप भी उनपर कैसे विश्वास करेंगे। इस प्रकार बहुत तर्क वितर्कके बाद मैंने उन्हें इतनेपर राजी किया कि थाना जलानेके बदले वह ढाह कर गिरा दिया जाय। थानेदारोंके रहनेका घर ज्योंका त्यों छोड़ दिया जाय।

कार्यकर्ताओंको इस प्रकार राजी कर मैं थानेमें गया, दारोगाजीको सड़कपर बुल-वाया। वे कृपा कर सड़कपर आये। हमलोगोंमें बातें हुयीं:—

मैं—दारोगाजी; आपके थानेमें कुल कितने आदमी हैं?

दारोगा—मैं स्वयं, जमादार, मुंशी और छः सिपाही; सिरते पहरमें आठ चौकी-दार भी आवेंगे।

मैं:—आप छपरे खबर भेजकर काफी आदमी और अस्त्र शस्त्र मंगा लें।

दारोगा:—सो अब मैं न करूंगा। मुझे आपसे लड़ना नहीं है।

मैं—तब तो आप अपनी ड्यूटीमें गफलत करते हैं। कमसे कम अपने अफसरोंको खबर दे दीजिये। वे जैसा उचित समझेंगे करेंगे।

दारोगा—मैं वह भी न करूंगा।

मैं:—अच्छा, तो आप अपनी ड्यूटीमें गफलत करनेके बजाय इस्तीफा देकर देशकी सेवा करें तो बहुत अच्छा हो।

दारोगा:—गरीब आदमीको इतनी हिम्मत कहां?

मैं:—अच्छा; आप अपने बंदूक-पिस्तौल हमें देदें। हम उन्हें तोड़ ताड़ डालें।

दारोगा:—मेरे थानेमें ये सब चीज नहीं हैं।

मैं:—दारोगाजी, इस संसार व्यापी युद्धका परिणाम अनिश्चित है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप न अंग्रेजके और न अमेरिकाके नौकर रहें और न जापान द्वारा धूलमें मिलाये जायें। आप केवल इस्तीफा देकर मेरे जत्थामें आ जायें तो स्वतंत्रता मिलेगी।

दारोगा—जब समय आवेगा तो देखा जायगा। अभी तो हिम्मत नहीं है।

मैं—अच्छा, दारोगाजी आपके जीमें जो आवे सो आप करें। मेरा दोष न दीजियेगा। मैं आज सांझको आपका थाना ढाह कर गिरा दूंगा। पूरे आठ घंटे आपको मिल रहे हैं। मुनासिब कारवाई करलें नहीं तो you may be sacked.

दारोगा—आपकी जो मिहरबानी, मैं तो कुछ नहीं करूंगा।

मैं वापस आया। अपने सहयोगियोंको सारी बातें बतला दीं सबोंने कहा—आज तो खूनकी नदी बहेगी। दारोगा भारी दुष्ट है। वह बहुत भारी तैयारी कर चुका है। अब तक हमारे कार्यकर्त्ता छपरेकी सड़कको एक ही जगह काट सके थे जो मैंने छपरेसे आते समय देखी थी। विचार हो रहा था कि वह राह कई जगहोंपर काटी जाय पर असमंजस यह था कि इससे टमटम और बैलगाड़ीकी राह भी तो बंद हो जाती है। जनताको कष्ट होनेसे उनका सहयोग नहीं मिलेगा। दूसरी बात यह थी कि गोरोंकी राह रोकना भी जनताके हितके लिये जरूरी था। वे यदि गांवमें आ गये तो गांवको खतमकर ही डालेंगे। अतः विचार हुआ कि आज रातसे सभी सड़कोंको कई जगह काटेंगे और बड़े-बड़े वृक्ष भी काट कर सड़कपर रखकर राह रोक देंगे। उस समय किसीके माथेमें यह बात न आई कि हवाई जहाजसे भी शत्रु आ सकता है और आसमानसे भी अपने अस्त्रोंका प्रयोग कर सकता है। हमलोगोंने समझ रखा था कि ये चीजें तो बड़े-बड़े युद्धोंके लिए हैं, यह यह तो अब मालूम हो रहा है कि हमलोगोंने जो लड़ाई लड़ी सो मामूली या छोटी लड़ाई न थी और उसमें बड़े-बड़े युद्धोंकी सामग्रियां काममें लायी गयी थीं।

लगभग तीन बजा। हमारे कार्यकर्त्ता थानापर धावा बोलनेको तैयार हुए। उनमेंसे मैंने मरनेवालोंको छांट लिया और जो नाबालिग थे उन्हें छांट दिया। फिर जो बचे, सभी लाठी भाले लेकर सामने आये। उन्हें मैंने अपने शस्त्रोंको छोड़ देनेके लिए कहा। वे बोले घर तोड़ेंगे कैसे? इन्हींसे खोद कर तोड़ेंगे। आप बार-बार लाठी छोड़नेको क्यों कहते हैं? जो मारेगा उसीको हम मारेंगे। यदि न मार सकेंगे तो भी अफसोस न रहेगा। हमें अस्त्र ले चलने दीजिये। मैंने कहा—अच्छा, तो जाओ मैं साथ नहीं

देता। पर जब सब आगे बढ़े, मुझसे न रहा गया। मैं भी साथ हुआ। उम्मीद बनी रही कि शायद ठीक अवसरपर वे मेरी ही आज्ञासे चलें, मैं उन्हें गोलीका शिकार बननेके लिए क्योंकर छोड़ सकता हूँ। आगे तक मुझे ही चलना पड़ेगा।

जब हम सब थानेमें पहुँचे तो देखा कि सचमुच दारोगाने कोई तैयारी नहीं की है। छपरेसे कोई आया न था और जो वहां पहलेसे मौजूद थे सो सब सादे लिबासमें निहत्थे पड़े थे मैंने पहुँचते ही उनसे कहा कि आपलोग अपनी सारी चीजें सरकारी चीजोंसे अलग करलें। हम सरकारी चीजोंको नष्ट कर चले जायेंगे। आप यदि उन्हें भी बचाना चाहें तो अपने अस्त्रोंका प्रयोग करें। दारोगाने कहा कि हमलोग अस्त्र न छुयेंगे। हमारे पास अस्त्र है ही नहीं। फिर थानावालोंने अपनी-अपनी चीजें अपने-अपने घरोंमें रख लीं। थानेमें डाकघरकी तिजोरी रखी थी। डाकबाबूको बुलाकर वह उन्हें सौंप दी गयी फिर कार्यकर्त्ताओंको थाना ढा देनेका आदेश मिला।

कुछ कार्यकर्त्ता थानेके भीतरसे कुर्सियाँ टेबुल आदि निकाल लाये और उन्हें तोड़ने-फोड़ने लगे। कुछ कागज नोचने लगे। बहुतसे छप्परपर चढ़ गये और खपड़े फोड़ने लगे। कोरो-बत्ती, आदिके बन्धन तोड़ बांस आदि नोच-नोच फेंकने लगे, छप्पर तहस-नहसकर दीवारोंके ईटोंके बीच लाठी और भाले घुसा-घुसाकर ईटें ढीलीकर गिराने लगे। सूर्यास्त होते-होते थानेका औफिस और चौकीदारोंका 'बीट-शेड' धाराशायी हो गया। कागज और लकड़ीके सामानोंको कार्यकर्त्ताओंने तोड़-फोड़ दिया। लोहेके सामान मेरे हाथ पड़े जिन्हें मैंने घन और निहाई मंगाकर टुकड़े-टुकड़े करा डाले। फिर इन्हें नदीमें फेंकवा दिया गया। कागजोंको एक गढेमें रखाकर जला डालनेको अनुमति मैंने दे दी। और अपने सामने उन्हें राख बनवाकर हमने आग बुझवायी। फिर हम सब अपने-अपने घर वापस आये।

इसके बाद हमारा काम गाँवका रखवाली करना रह गया। क्योंकि सबके मनमें यही बात आने लगी कि अब तो गोरे आवेंगे और तरह-तरहके जुर्म करेंगे। वहां पांच ओर सड़कें जाती हैं। विचार हुआ कि सभी तरफ काटकर और वृक्ष गिराकर रोक डाली जाये। छपरेकी राहपर विशेष सतर्कता रही। २० और २१ अगस्त तक यही होता रहा। लोगोंके मनमें काफी डर होगया। कुछ बनिये लोगोंने अपने घरकी स्त्रियोंको अपने अन्य सम्बन्धियोंके यहां भेज दिया और मुझे भी ऐसा ही करनेकी सलाह दी। मैंने अपनी स्त्रीसे और भाभीसे पूछा तो वे कहीं दूसरी जगह जानेको तैयार न हुईं। फिर भी मैंने

अगस्त-क्रान्तिके दो सेनानी

श्रीजगलाल चौधरी

(वर्त्तमान अबकारी मंत्री)
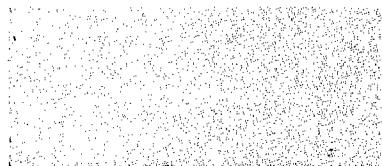
श्रीजगत नारायण लाल
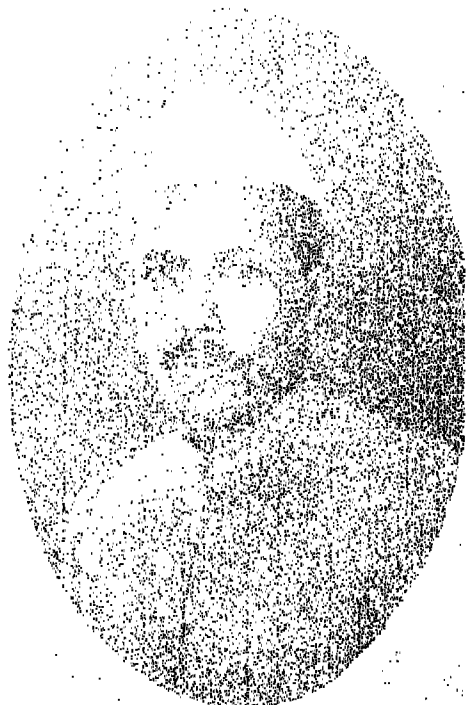
अगस्त-क्रान्तिके दो प्रचारक

श्रीदीप नारायण सिंह,
तत्कालीन मंत्री (बि. प्रा. का. कमिटी)

श्रीवैद्यनाथ चौधरी,
(पूर्णिया)

गांवके भीतर अपने एक मित्रसे बातें करता कि यदि आवश्यकता पड़े तो वे अपने घरमें मेरे परिवारकी स्त्रियोंको शरण देंगे। मेरा घर सड़कपर ही है, इसलिए ऐसा तय किया। पर वे स्त्रियां कहीं भी न गयीं और अन्त तक मेरे ही घर रहीं।

२० अगस्तको सुबहमें दारोगाजी छपरे जानेवाले थे। छपरा मेरे गांवसे पच्छिम दक्षिण पड़ता है। उनका घर डोरीगंज था। जो मेरे गांवसे सीधे दक्षिण पड़ता है। वे छपरेके लिए टमटम चाहते थे पर कोई टमटमवाला उन्हें ले जानेको तैयार न था। उन्होंने मुझसे शिकायत की कि स्वयंसेवकोंने टमटमवालोंको मना कर दिया है। स्वयसेवक कहते थे कि उन्हें अगर छपरे जानेकी सुविधा दी जायगी तो वे वहांसे मिलिटरी लाकर हमारे ऊपर जुर्म करेंगे। वे घर जाना चाहें तो दक्षिणकी राह जायें। दारोगाजीका कहना था कि जाना तो घर ही है पर दक्षिणका रास्ता पानीसे डूबा है। अतः पच्छिमकी राहसे घूमकर जाना ठीक होगा। मैंने स्वयं-सेवकोंको समझाया कि दारोगाजीको कैद करनेका विचार हो तो दक्षिण या पच्छिम कहीं न जाने देना होगा। पर यदि कैद करनेका विचार न हो और घर उन्हें जाने देना चाहें तो वे चाहें जिस रास्तेसे जायें। यदि वे कैद न किये जायें तो उन्हें छपरा जाकर अपने अफसरोंके यहाँ रिपोर्ट करनेका भी अधिकार होगा। यदि मिलिटरीसे डरना है तब तो इस युद्धको छेड़ना ही भूल थी, और यदि वे दक्षिण होकर भी घर जायें तो फिर वहाँसे उनका छपरा जाना कैसे रोक सकेंगे? स्वयं सेवक इस तर्कका उत्तर न दे सके और दारोगाजीको छपरा जानेकी सुविधा मिल गयी। जाते समय उन्होंने अपनी गठरीकी तालाशी देनी चाही जिसमें हमलोग समझ जायें कि उनके पास रिवालवर आदि नहीं है। पर हमने तलाशी लेनेकी आवश्यकता न समझी और फिर भी उनसे कहा कि यदि कोई अस्त्र उनके पास हो तो दिखलावें। मैं उन्हें तोड़ दूँ या वे स्वयं ही तोड़ दें; पर जान पड़ा कि उनके पास कुछ था ही नहीं।"

२१ अगस्तको बसतपुरमें कार्यकर्त्ताओंकी सभा हुई। जहांसे एक जुलूस निकल कर थाने आया, थानेपर लोगोंने अधिकार जमा लिया और कागज-पत्तर, फरनी-

सिवान सबडिविजन चर और वह सब वस्तु जो वहां मिला सबोंको जला दिया। मकानपर झंडा फहराया। बादको कुछ लोगोंने दारोगाजीसे बंदूक मांगी पर उनने कहा कि मेरे पास बन्दूक नहीं है। फिर दारोगाजी खद्दर धारी बनकर जुलूसके

बसतपुर साथ घूमने लगे और नारा लगाने लगे। वहांसे चलकर जुलूस डाकखाने आया। डाकखानेपर भी कब्जा किया गया। उस समय डाकखानेमें

कांग्रेसका ताला लगा दिया गया पर पोस्ट-मास्टरने ताला खोल दिया। लोग खीज उठे। पोस्ट ऑफिसके सारे सामानको इकट्ठा किया और उसमें आग लगा दी। मकानको एकबार फिर बंदकर दिया—और उसपर कांग्रेसका झंडा फहरा दिया। वहांसे जुलूस डाकबंगला पहुँचा जिसको सारे सामानके साथ जला दिया। अन्तमें लोग रजिस्टरी ऑफिस पहुंचे जिसको अपने कब्जेमें कर लिया उसके दरवाजेपर कांग्रेसका ताला लगा दिया और मकानपर कांग्रेसका झंडा फहरा दिया।

१७ अगस्तको दरौली थानेपर जनताका हमला हुआ। थानाके मकानमें ताला लगाकर दारोगा तथा अन्य कर्मचारी गण बाहर आकर खड़े थे। उनसे थानाकी चाभी मांगी गई जिसे देनेसे उनने इनकारकर दिया। बादको उन लोगोंसे कहा गया कि वे सरकारी नौकरीसे इस्तीफा देकर कांग्रेसके साथ हो जायें; परन्तु इसे उनने मंजूर नहीं किया। इसपर लोगोंने तुरत थानेके तालेको तोड़ दिया और जो कागजात मिले उन्हें जला दिया। थानावालोंने कहा कि अब हम यहांसे चले जायेंगे।

दरौली

पीछे पता लगाके पुलिसके अधिकारी गण थानेमें अभी तक डटे हुए हैं; और जो कुछ कागजात उन्होंने छिपा रखा था उसको लाकर ऑफिसका काम पूर्ववत् चला रहे हैं। इस समाचारसे कार्यकर्त्ताओंमें काफी सनसनी फैल गई; फिर थाने पर दूसरा हमला हुआ। लोग रंज थे ही, बस उस दिन थानेके पक्का मकान मय सारा सामान और फरनीचर वगैरह जला दिया। थानेका नामोनिशान मिटा दिया। पुलिसके अधिकारी गण अधीर होकर शरण मांगने लगे। उन्हें डर था कि कहीं उनका क्वार्टर न जला दिया जाय। पर उनके क्वार्टर ज्योंके त्यों खड़े रहे। फिर पुलिस दल वहां टिक न सका।

थानेपर अपने अधिकारको अक्षुण्ण रखनेके लिए लोगोंने एक विध्वंसक दलका संगठन किया। जिसके जिम्मे गमनागमनके साधनको नष्ट करनेका काम रहा। उस दलने त्रिकालपुर, जहानघाट, शिवपुर आदि डाकघरोंको जला दिया। फिर डि० बोर्डके सोमन चकवाले पुलको तोड़ दिया बादको आन्दरका पुल भी तोड़ा गया और वहांका डाकघर भी जला दिया गया।

गुठनी थानेपर १६ अगस्तको श्री राजवंशी सिंह द्वारा राष्ट्रीय झंडा फहराया गया। चार दिनोंके बाद थानेपर काफी भीड़ इकट्ठी हुई। पुलिस अपना सारा सामान वहीं छोड़कर कहीं भाग छिपी थी, जनताने थानेको

गुठनी

बन्दकर दिया। किसीने प्रस्ताव किया कि थानेके अपवित्र कागज-पत्रोंको जला देना चाहिये। परन्तु धर्मदेव लालने इसका विरोध किया, कहा कि जब थाना हमारा हो गया और हमारा रहेगा तो जलाया क्यों जाय, फिर जलानेका सरकुलर भी तो नहीं आया है, इसलिए किसी चीजको वहाँ जलाया नहीं गया। मैरवामें लोगोंने शांतिपूर्वक झंडा फहरा दिया।

रघुनाथपुर

१६ अगस्तको हजारोंकी भीड़ रघुनाथपुर थानेपर दखल जमाने आई, दारोगाजीने तुरत कुंजी सौंप दी। थानेका चार्ज दे दिया और चार दिनकी मुहलत मांगी ताकि परिवारको घर ले जानेकी समुचित व्यवस्था कर सकें। पं० महाराज पांडेयने थानेपर झंडा फहरा दिया और मास्टर रामचंद्र सिंहने डाकखानेपर झंडा फहराया और पोस्टमास्टरसे उसका चार्ज ले लिया। बादको कांग्रेस मैदानमें जनताकी सभा बुलाई गयी, जिसमें घोषणा की गई कि अंग्रेजी शासन आजसे खत्म हो गया और कांग्रेसका शासन शुरू हो गया। लोग सभी दल और सम्प्रदायकके हितको अपना हित समझते हुए कांग्रेसके शासनको खूब मजबूत बनावें। गांव-गांवमें पंचायत कायम करें। याद रखें कांग्रेसके शासनमें पक्षपातका स्थान नहीं है।

महाराजगंज

थानेमें जो जलूस पहुँचा उसका उद्देश्य था थानेको कांग्रेसके कब्जेमें लाना। एकबार पहले थानेपर झण्डा फहरा दिया गया और उसमें ताला भी लगा दिया गया था। पर पुलिसने झंडा और ताला दोनों हटा दिये थे जिसका लोगोंमें क्षोभ था इसलिए जलूसमें आगे-आगे थे महाराजगंजके मंजे हुए कार्य-कर्त्ता श्री फुलेना प्रसाद श्रीवास्तव और उनकी बगलमें चल रहीं थीं श्री तारारानी श्रीवास्तव। फिर भीड़को संभालते हुए साथ लगे आ रहे थे बाबू देवशरणसिंह। जब सभी थानेके मजिस्ट्रेटके समीप पहुँचे तब उन्हें भीड़का मुकाबला करनेके लिये मुस्तैद पाया। तुरत समझ गये कि मजिस्ट्रेट साहबने दो घंटेकी मोहलत क्यों मांगी थी? इस मोहलतके भीतर जब कि भीड़ तोड़-फोड़के काममें मशगूल थी थानेवाले हरबे-हथियार जुटा रहे थे और जब भीड़को विद्रोहका मजा चखाने पर तुल गये थे। मजिस्ट्रेटने भीड़को अन्दर आनेसे मना किया। हुक्म दिया— तितर-बितर हो जाओ नहीं तो मार डाले जाओगे। फुलेना बाबूने कहा कि हमें थानापर फिर झण्डा फहराना ही है, उसको कब्जेमें लाना ही है, पीछे हटना असंभव है। बारह सैनिक मौजूद थे, उनने राइफल संभाली और मजिस्ट्रेटने

फुलेना बाबूको सोचनेका मौका दिया। फुलेना बाबूने आगे बढ़कर उस मौकेका फायदा उठाया। मजिस्ट्रेटने हुक्म दिया और चौकीदार, दफादार और कन्सटेबिल भीड़की जनतापर लाठियाँ बरसाने लगे। पर भीड़ थानेमें धंसती गई। फिर गोली चली। उस गोलीकी बरसामें सीना ताने अडिग फुलेनाबाबू खड़े रहे। रह रह कर क्रांतिका जयघोष उनके मुंहसे सुन साथी समझ लेते, उनका अमर अगुआ अभी खड़ा है। पर एक एक करके उन्हें नौ गोलियां लगी फिर वे वहां धराशायी हुए। गोलियां कितनो को लगी और भीड़ भागने लगी। उस समयके दृश्यका वर्णन करती हुई ताराराती लिखती हैं:—जब भीड़ भागने लगी मैं हाथकी चूड़ियां भागनेवालेकी ओर फेंकने लगी और उन्हें खड़े होनेको प्रोत्साहित करने लगी। फिर बहुतसे सिपाहियोंने मुझे घेर लिया और लाठियोंकी हल्की चोट करने लगे। मैं बोल उठी—मार डालो, भाई ही तो हो। पर मैं भागूंगी नहीं। सिपाही हट गये और मैं घेरेसे बाहर निकली। देखा रणप्रांगणमें अकेला मेरे देवता खड़े हैं और उनपर धांय धांय गोली चल रही है। उनके बदनसे खून झर रहा है, मैं छलाँग मार पास पहुंची। उनने तृप्त दृष्टिसे मुझे देखा। उसी समय एक गोली उनके सरको छेदती हुई निकल गयी और उनका विशाल-वृक्ष-सा शरीर निर्जीव होकर पृथ्वीके उस अंचलमें सोगया जिसका दावेदार होनेका उन्हें गर्व था। मेरी आँख मुंद गई और जब खुली मैंने अपने देवताका सर गोदमें उठाकर रख लिया। मेरी माताजी आईं और पैताने बैठ गईं, उनका रोना मैंने रोक दिया। सामने अपार जनता खड़ी थी, उत्तेजित मारने मरनेको तैयार। उसे मेरे इशारे भरकी प्रतीक्षा थी, मैंने काँपती हुई आवाजमें कहा··'कोई हिंसा न करो—जिसे आना हो, इन्हींके रास्तेसे आवें; आत्म बलिदान व्यर्थ नहीं जाता। भीड़ बढ़ी कि उसकी ओर भी गोली चलने लगी। बाबू देवशरण सिंहको गोली लगी, जो मेरे देवताको शायद उठाने आ रहे थे। मेरे सामने कुछ दूरपर देवशरण सिंहजी घायल हो गिर पड़े।

मैं विमूढ़-सी बैठी थी कि चिरंजीव मुन्नी सिंह अपने साथी विद्यार्थीको लेकर पास आये और चिल्लाये—उठाओ मा, देखती नहीं हो सिपाही लाश छीनने आरहे हैं। तुरत उन दो किशोरों और मांकी सहायतासे देवताको उठाकर चल पड़ी। हमारे साथ पूज्य देवशरण सिंह भी आये जो जीवित थे। घर पहुँचनेपर देवताका कपड़ा बदला गया। जो लाठियोंकी मारसे चिथरा-सा हो रहा था। हाथमें भाला

महाराजगंज थाना रेडके दो शहीद
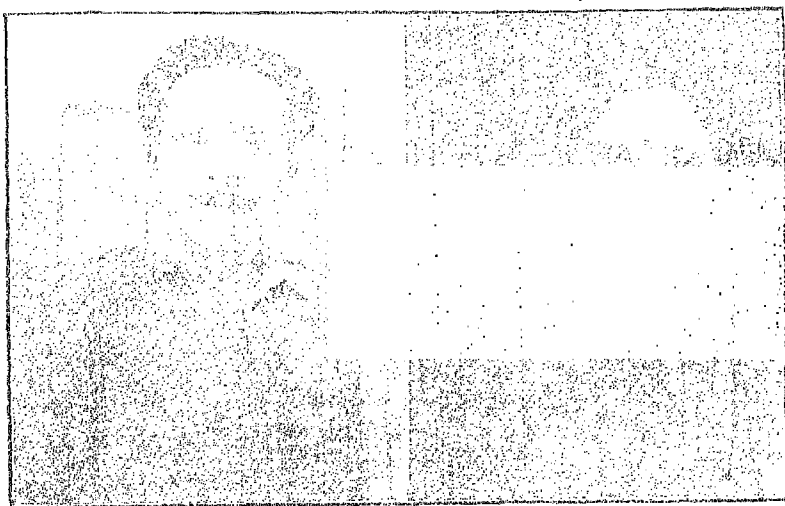
शहीद फुलेनाप्रसाद वर्मा और उनकी पत्नी तारारानी,
महाराजगंज (सारन)

शहीद देवशरण सिंह,
महाराजगंज (सारन)
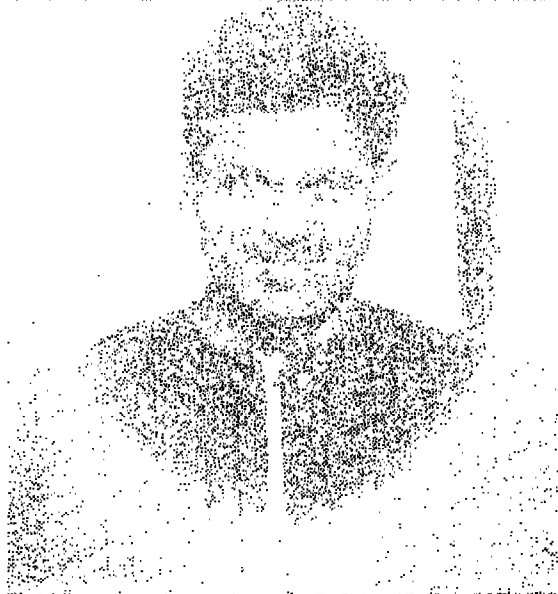
क्रान्तिके दो सत्याग्रही शहीद
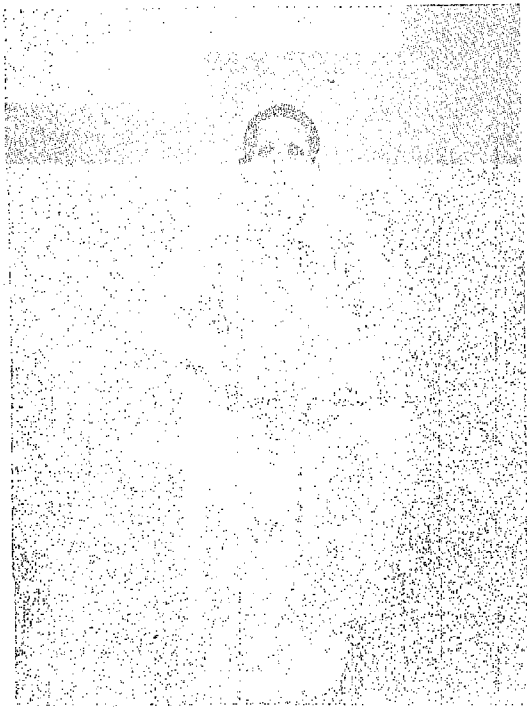
शहीद राधाप्रसाद सिंह,
मेघौल (मुंगेर)

शहीद सदानन्द झा,
अमरपुर (भागलपुर)

लगा था और कलरसे ऊपर आठ गोलियाँ लगी थी; एक गोली सरमें लगीथी और आर-पार होगई थी; गोली और प्राण साथ-साथ निकले थे। गिर जानेपर किसीने वार नहीं किया था। रातभर अपार जनताके बीच उनका शव घरपर रहा पता नहीं कैसे जिलेके बहुत हिस्सोंमें देवताके आत्म-बलिदानकी खबर पहुँच गई और १७ अगस्तके प्रातःसे ही इतनी भीड़ लगने लगी कि शव उठाना मुश्किल होगया। नव वधुयें भी आई थीं। और देवताका दर्शन करके आंखोंका मैल धो रहीं थीं। आठ बजे जब देवताका शव चित्र लिया जा रहा था, किसान कार्यकर्त्ताओंका एक झुँड पहुँचा प्रतिहिंसाकी भूख जगाता हुआ। हमारे यहांके चौकीदारोंने कुहराम मचाना शुरू कर दिया। मैंने कार्यकर्त्ताओंको मना किया, कहा—छोड़दो भाई इन बेचारोंको, इनकी जमात तो सरकारके साथ ही खत्म होगई। ये तो चीलर हैं, चीलरोंको मारनेसे लाभ ? मेरे हृदयमें प्रलयकी अग्नि जल रही थी, पर अहिंसाके देवताको सामने देखती हुई हिंसाकी बात कैसे सोच सकती थी।"

लक्ष्मीनारायण लिखते हैं—शहीद फुलेना प्रसादका मृत शव एकमा होते सरयु तट, डोमाद गढ़ पहुँचाया गया। महाराजगंजसे लेकर श्मशान घाट तक लोगोंका ताँता लग रहा था। जहाँ-जहाँ शहीदकी अर्थी ठहरी, वहाँ-वहाँ बड़ी-बड़ी सभाएँ हुई, लोग दर्शनके लिए बेचैन दौड़-दौड़ कर आते थे। उस समय वीरांगना तारा-देवीका साहस देखने लायक था। वीर पत्नी अपने प्राण-पतिके शवको ले जाते समय लोगोंको शिक्षा दे रही थी कि देशके लिए पत्ते की तरह प्राण विसर्जन करने ही पर स्वराज प्राप्ति होगी। घबराहट न थी। एकमा और ताजपुरमें बड़ी-बड़ी सभाएं हो रही थीं। मृतात्माकी आरती उतारी गई और स्वयं तारा देवी राष्ट्रीय नारा लगा रही थीं।

इस कांडसे लोग भयभीत नहीं हुये और उत्साहमें आगये। मजिस्ट्रेट तो सदल बल थानेसे भाग गया और थाना तड़के ही बिलकुल जला दिया गया। फिर लोगोंने डि० बोर्डको डाक बंगलेको जला दिया। उस चौकीदार और दफादारके घरोंको जला दिया, जिनने श्री तारादेवीपर लाठी चलाई थी। और अगर लोगोंको समझा बुझा कर तोड़-फोड़के प्रोग्राममें लगा नहीं दिया जाता तो कहना कठिन है कि वे क्या कर छोड़ते। वे सब दरौंदाके तरफ बढ़े और रेलवे स्टेशनको सामान सहित जला दिया। रेलवे लाइन उखाड़ फेंके। कुछ व्यक्ति लूट-पाटकी ओर झुके। उन सबोंने रातोंरात स्टेशनका माल लूट लिया और जब माल गोदामको लूट रहे थे

गोली चली और शेख अब्दुल तत्काल अमर हो गया। उसकी लाश उठाने पुलिस आगे बढ़ी कि पुलिसपर ढेले और रोड़े बरसने लगे। और फिर गोली चली। हल्ला हुआ। भगदड़ मची। अगल बगलमें आहत गिरने लगे। जमीन रंगने लगी। और जिलाके सभी हाकिम स्टेशनपर पहुँचकर उस नजारेको देखने लगे।

उसी समय भीड़के बीचसे निकला पतोरका श्री जानकी मिश्र। स्पेशल आदालतमें पुलिस अफसरने उसकी ओर उँगली उठाकर कहा—"जब सभी पुलिस-अफसर, जिला मजिष्टर, और दूसरे दूसरे हाकिम आ पहुँचे तब दंगाइयोंके बीचसे जानकी मिश्र बाहर हुआ और हमलोगोंकी ओर बढ़ा। वह छाती खोले चिल्ला-चिल्ला कहता था—छातीमें गोली मारो। रह-रहकर वह नारे भी लगाता था। कुछ कनस्टबिलोंने उसे गिरफ्तार कर लिया।" पर वह यूं ही गिरफ्तार नहीं हुआ। बिठौलीके शत्रुघ्नरायके शब्दोंमें, जो दूर खड़े सब देख रहे थे; पहले दो कनस्टबिल उसको मारने दौड़े। वह पुलिस हमारा भाई है; नारा लगाता रहा। पुलिसकी लाठी उसपर गिरी। पर उसने बचनेकी कोशिश नहीं की; केवल नारा लगता रहा। फिर कई कनस्टबिल उसपर टूट पड़े और उसके पैरमें लाठीका भरपूर हाथ जमाकर उसे गिरा दिया। उसे गिरते ही एस० पी० पहुँचे जो उसकी देहपर चढ़कर उसका जबरा पैरसे मसलने लगे। वह बेहोश हो गया। पुलिस उसे उठा ले गई। जेलमें दवा-दारू खिला-पिलाकर उसे कुछ चंगा किया गया। पर उसके आहत शरीरको मौत पटना कैम्पजेलमें धीरे-धीरे निगल गई और उसका नाम अमर शहीदोंमें लिया जाने लगा।

इस स्टेशन गोलीकांडमें कितने आहत हुये जिनमें श्री हरूनी मिश्र पतोर, जिनके सरमें गोली लगी थी; मुहम्मदजान चनपट्टी, बटाउ गोप जिवर, राजेश्वर मिश्र पतोर और प्यारे कमती बहादुरपुरको लम्बी सजा भुगतनी पड़ी। इस कांडका असर बड़ा खराब हुआ। जानकीरमण बाबू दो दिनों तक आस-पासके गाँवोंमें छिपते फिरे। सोचते कि हथियार लेकर सरकारका मुकाबला करूँ। पर एक घटनाने उन्हें घबड़ा दिया। पुलिस पतोर आयी और गाँव भरके क्या बूढ़े क्या जवान सबोंको गिरफ्तार करके लहेरियासराय पैदल ले गयी। पुलिस-लाइनमें भी उनको काफी परेशान किया। पतोरके जमींदारोंके लिये यह मामूली तकलीफ नहीं थी। जानकी रमण बाबू भिड़न्तकी योजना बनना छोड़ हाजिर होनेकी सोचने लगे। इसी बीच अफवाह फैली कि उनपर सूटिंग वारेन्ट है। इस अफवाहने हाजिर होनेके

लिये उनको अधीर बना दिया। और वे २१ अगस्तको पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्टकी गोलीसे बचनेके लिये पालकीमें बन्द होकर एस० डी० ओ० की कचहरीमें हाजिर हुये और जेलके अन्दर आकर शान्तिकी सांस ली। उधरका सारा इलाका सो गया और श्री गौरीशंकर सिंह तो आन्दोलनसे अलगसे हो गये।

१७ अगस्तको ५००० की भीड़ लेकर त्रिपितनारायण झा, रामनारायण झा आदि कांग्रेस कार्यकर्त्ता थाना आये और वहाँ अपना झंडा फहरा दिया। फिर भी १९ अगस्तको थानेपर बड़ा जबरदस्त हमला हुआ। बहेरीसे एक जोशीला जत्था लेकर श्री जानकीदेवी आईं और उनने बहेराके काँग्रेसी नेताओंका सारा गुड़ गोबर कर दिया। नेतागण थानावालोंसे मेल करके इस हमलेके प्रोग्रामको एक नाटकका रूप देना चाहते थे। पर जानकीदेवी अड़ गईं कि उन्हें थानाको बरबाद कर देना है। उनके पीछे बेशुमार नवजवान। फिर कौन बोलता है? सभी थानापर टूट पड़े। तरवारा, पड़री, आदिके नवजवान भी जुट गये। फिर बहेरा और नवादाके कार्यकर्त्ता भी पीछे न रहे। थानेका हर एक कमरा ताला तोड़कर खोल लिया गया जिसके कागजात जला दिये गये। दो बन्दूकें छीन ली गईं जो सुखदेव पहलवानके दाव-पेंचसे दरोगा साहबको वापस मिल गईं। बादको रजिस्टरी और पोस्ट ऑफिसमें ताला लगा दिया गया। २० अगस्तको दारोगा और उनके साथियोंको सपरिवार बैलगाड़ियोंपर चढ़ाकर आदरके साथ आशापुर भेज दिया गया। तबसे वहाँ सरकारके सभी अड्डोंपर कांग्रेसी झंडा फहरता रहा।

बहेरा

बिरौलपर चढ़ाई हुई १८ अगस्तको श्री विन्ध्येश्वरीप्रसाद सिंह विद्यालङ्कारके नेतृत्वमें। उनके साथ तरवारा, सुपौल, रजवा, बैंक बलिया आदि स्थानोंके काफी लोग थे। थानेपर इनलोगोंने दो दलमें बँटकर पूरब और पश्चिमसे हमला किया। थानेके हिफाजतमें जमादार विन्ध्येश्वरी बाबूसे भिड़ गये और दोनों गिर गये। विन्ध्येश्वरी बाबूका ललाट थोड़ा खुरच गया और जमादारके ठेहुने और केहुनी छिल गये। इस दृश्यको देख चौकीदार और दफादार तो नौ दो ग्यारह हो गये। कनस्टबिलोंने भी आस-पासके घरोंमें अपने छिपनेकी जगह ढूँढ ली। पर जमादार साहेबने अपनी बेबशीको समझकर विन्ध्येश्वरी बाबूसे प्रार्थना की कि मुझको छोड़ दीजिये, मैं चुपचाप मौलाबख्शके यहाँ चला जाऊँ। विन्ध्येश्वरी बाबूने उसे मुक्त कर दिया और उसे राहमें कोई न छेड़े इसलिये खुद मौलाबख्शके यहाँ पहुँचा दिया। हमला करनेवालोंकी हरकत देख जमादारके मनमें बैठ गया

बिरौल

था कि ये लोग हिंसा नहीं करेंगे। इसलिये वह इनलोगोंको भद्दे-भद्दे शब्दोंमें याद कर रहा था। विन्ध्येश्वरी बाबू सब सुन सह रहे थे। उसी समय एक स्वयं-सेवकने 'एक सीकी मौनी' लाकर विन्ध्येश्वरी बाबूको दिया। जिसमें कुछ मूंगे और चांदीके गहने थे। स्वयं-सेवकने कहा कि यह मालखानेमें मिला है। विन्ध्येश्वरी बाबूने उसे तुरत जमादारके हवाले किया और बोले कि ऐसी-ऐसी चीजें हमारे मतलबकी नहीं। हमें तो रुपये-पैसेको छोड़ सरकारी कागजात जलाने हैं और अन्यान्य वस्तुओंको जब्त करना है।

इधर लोगोंने चौराहेपर थानेकी सभी चीजोंको इकट्ठा किया और आग लगा दी। कुछ स्वयंसेवकोंको लेकर विन्ध्येश्वरी बाबू डाकघर आये और डाकबाबूसे चाभी लेकर तिजोरी खोली। तिजोरीमें एक पैसा भी नहीं था। फिर उनने मनीआ-र्डर फार्मको अलग सुरक्षित स्थानमें रख कर डाकघरके सामने उसके और सामान इकट्ठे किये जिसमें आग लगवा दी। वहांसे फिर वे थाना पहुँचे। देखा, वहां होली मची हुई है। पिस्तौल और बन्दूककी खोजमें लोगोंने जमादारके घरकी पूरी तरह तलाशी ली। खबर लगी कि कुछ गहने गायब हो गये हैं। तुरत विन्ध्येश्वरी बाबूके आदेशसे गहनोंकी खोजमें स्वयं-सेवक छूटे और रातों-रात पता लगाकर उन्हें ले आये। सारे गहने एक दूकानदारके यहां रख दिये गये। जहांसे जमादारको यथा समय मिल गये। साढ़े आठ बजे रातको दारोगा साहब थानेके सामने आ खड़े हुये और विन्ध्येश्वरी बाबूसे थानेके अन्दर आनेकी इजाजत चाही। वे आये, थानेको देखा और हमला करनवालोंका नाम नोट करना चाहा। खुशी-खुशी १७ आदमियोंने अपना नाम लिखा दिया। थानेके हमलेमें आदिसे अन्त तक डटनेवाले निकले श्री बाबूनारायण झा, ठक्को धोबी, गजेन्द्र मिश्र सुपौल, श्री बबुआनन्द मिश्र, श्री असरफी मिश्र महुआर, श्री ननुठाकुर पड़रो, और श्री रामस्वरूप सिंह बिजुलिया।

१८ अगस्तको जाले थानाके कार्यकर्त्ताओंने थानेपर चढ़ाई की। एक गिरोहको बाजे-गाजे सहित श्री रूपधर झाजी ले आये, दूसरेको श्री अभयचन्द्रजी और जाले थाना तीसरेको श्री दामोदर सिंहजी। चढ़ाई करनेवालोंकी तादाद ५-६ हजार तक पहुँच गई थी। उनमें हिन्दू थे और मुसलमान भी। दरोगाने मुसल-मानोंको फोड़नेकी कोशिश की। चाहा कि हिन्दू-मुसलमान दंगा हो जाय। पर उस समय सबोंमें इतनी जबरदस्त भावना काम कर रही थी कि क्रान्ति-पथसे उन

लोगोंको दारोगा साहब डिगा न सके। फिर उनने अपनेको जनताके हाथमें सौंप दिया। थानेपर कांग्रेसका कब्जा हुआ। उसके कागजात जला दिये गये। दारोगा और थानाके अन्य कर्मचारियोंसे इस्तीफे लिखवाये गये। १६ अगस्तको कार्य-कर्त्ताओंने ११ बैलगाड़ियां लाई। जिनपर उनने दारोगाजीके सभी सामानको लदवाया और फिर दारोगाजीको सदल-बल दरभंगा पहुँचा दिया। थाने भरमें कांग्रेसी-सरकारका एलान सुन पड़ने लगा।

१५ अगस्तकी शामको विद्यार्थियों और शहरवालोंका एक बहुत बड़ा जलूस निकाला श्री गणेशचन्द्र झाने। जब जलूस थानेके पासकी सड़क होकर गुजरने लगा तब डी० एस० पी० और पुलिस इन्सपेक्टरने सदल-बल उस निहत्थी भीड़पर लाठी चार्ज करवाया। लोग लाठी खाते रहे और डटे रहे; नारे लगाते रहे। जब किसी तरह भी भीड़ तितर-बितर नहीं हुई तब डी० एस० पी० और पुलिस इन्सपेक्टरने श्री गणेशचन्द्र झाको गिरफ्तार कर लिया और उन्हें इतनी बेरहमीसे पीटता हुआ थाना घसीट ले गया कि लोगोंने समझा, झाजी मारे गये। फिर तो गणेश झाजीको देखने, उनकी लाशको पुलिससे छीन लेने और पुलिससे उनकी मौतका बदला लेनेके विभिन्न विचारोंसे ओत-प्रोत जनताके विभिन्न दल थानेपर टूट पड़े। तत्काल डी० एस० पी० और पुलिस इन्सपेक्टरने एक-एक करके सात बार फायर किया। अनेकों घायल हुये और दो तो वहीं निश्चेष्ट होकर गिर गये। थानेमें बैठे-बैठे श्री गणेशचन्द्र झाने देखा कि अकलू और गणेशीको पुलिस-वाले पैर घसीटे थानेमें ला रहे हैं। दोनों जब-तब पानी-पानी कराह कराह कर मांग रहे हैं। थोड़ी देरके बाद दोनोंने गणेशचन्द्र झाके सामने दम तोड़ा।

मधुबनी

इस घटनाके बाद ही अपने हाथों पुलिसवाले थानेके मकानपर ईंट-पत्थर बरसाने लगे। उस वक्त लोगोंको बड़ा ताज्जुब हुआ कि भला ये खुद क्यों ईंट-पत्थरसे थानेकी चीजोंको बरबाद कर रहे हैं। पर पीछे जब थाना लूट केस चला तब लोगोंकी आँख खुली।

दूसरे दिन शानके साथ अमर शहीद अकलू और गणेशीके शवका जलूस निकला। शहरने उनके मातममें पूरी हड़ताल मनाई। इस गोलीकाण्डने जनताकी भावनाओंमें उफान पैदा करदी। हाँ! पुलिसके अफसर लोग जरूर आतंकित रहने लगे। डी० एस पी० राजबल्ली ठाकुर और इन्सपेक्टर श्रीकान्त ठाकुर कठोर पहरेमें रहने लगे।

ता० १५ अगस्तको ५०० आदमियोंकी जमात लेकर खिड़हर स्कूलके हेडमास्टर जयदेवलाल दास थाना आये। वहाँ झंडा फहराया और इस्तीफा दे देनेकी प्रतिज्ञा बेनीपट्टी थाना दारोगासे करवाई। पर जनता तो चाहती थी थानेपर अपना कब्जा। इसलिये थानेपर कब्जा करनेकी आवाज चारों ओर उठने लगी। आगे बढ़े फिर जयदेवलाल दास। १७ अगस्तको करीब २ बजे दिनमें चारों ओरसे करीब ४००० हजार लोग जमा हुये और संगठित रूपमें थानेपर गये। जयदेव लाल दासने दारोगासे चाभी मांगी जो उन्हें नहीं मिल सकी। फिर तो उनके आदेशानुसार जनताने थानेका ताला तोड़ दिया और सभी सरकारी कागज और रजिस्टरोंको निकाल कर जला दिया। मालखाना भी तोड़ कर उसके सामान वगैरह जला दिये। दो बन्दूकें दो राइफल और एक रिवौलवर बरामद किये। एकको जय-देवलाल दासने अपने हाथों तोड़ दिया और औरोंको भी तोड़ फेंकनेका आदेश दिया। किसी भी थाना कर्मचारीकी निजी सम्पत्ति नहीं बरबाद हुई। थानेसे जनता डाकघरकी ओर झुकी। उसका भी ताला तोड़ दिया और सभी कागजात जला दिये। सभी सरकारी कर्मचारियोंके खाने पीने और ठहरनेका इन्तजाम कर दिया गया।

२१ अगस्तको दस हजारकी भीड़ रजिस्टरी ऑफिस जलाने चली। सिमरी भंडारके रामदेव बाबू सदल-बल साथ थे। रजिस्टरी ऑफिसके कमरोंके ताले तोड़ दिये गये और कागज पत्रमें आग लगा दी गयी। आफिस भी जल गया। बादको कांग्रेसकी ओरसे हर जगह स्वयं-सेवकोंका पहरा बैठा दिया गया ताकि कोई कर्मचारियोंकी सम्पत्तिपर हाथ न फेरे। इन स्वयं-सेवकोंसे यह भी कह दिया गया था कि वे किसी सरकारी महकमाको चालू न होने देवें।

खजौली

१६ अगस्तको खजौली कांग्रेसने खजौली थानेको अपने मातहत लानेका निश्चय किया। उसी रातको देंतुआर ग्राम होकर एक कनस्टबिल खजौली थानेके पुलिस इन्सपेक्टरकी बन्दूक लेकर जयनगरसे आ रहा था। लोगोंने उससे बन्दूक छीन ली। दूसरे दिन उनने खजौली रेलवे स्टेशनके कागजात और टिकट वगैरह जला दिये।

भोरमें पुलिस इन्सपेक्टर और दारोगा बन्दूकको खोजमें देंतुआर आये। इन्स-पेक्टर साहेबने पिस्तौल ले रक्खा था, लोगोंने कहा—पिस्तौल दे दीजिये। किन्तु इन्स-पेक्टर साहब देनेके लिये तैयार होते नहीं दीखते थे। इधर कार्यकर्ता भी बिना

पिस्तौल लिये टलनेको राजी नहीं होते थे। बहुत बहस मुबाहिसेके बाद दोनों दलोंमें समझौता होगया। दारोगा साहबने गांधी टोपी पहनी, झंडा उठाया, सबोंको साथ ले थाने आये और वहांसे अपनी व्यक्तिगत चीजें निकाल कर थानेकी चाभी उन्हें सुपुर्द कर दी। कार्य-कर्त्ताओंने थानेके सब कमरोंको बन्द कर दिया और अपना पहरा बैठा दिया।

इस समझौतेसे खजौली खुश नहीं हुआ। उसी दिन दोपहरको सात आठ हजार लोग थानेमें घुस गये। ऑफिसका ताला तोड़ कर कागजात, फरनीचर और सभी सामानको बाहर निकाल कर उनने फूँक दिया। दारोगा साहबसे रिवॉलवर और पाँच सात कारतूस ले लिये। ता० २१ को काँग्रेसके कार्यकर्त्ताओंने बैलगाड़ी मंगाई और स्वयंसेवकोंके हिफाजतमें दारोगा साहब और सब रजिस्ट्रार साहबको उनके घर भेज दिया।

१४ अगस्तको श्री सूरत झा और अनन्तनारायण झा, छात्रों और कार्यकर्त्ताओं की बड़ी तादाद लेकर थानेपर कब्जा करनेको आगे बढ़े। जब भीड़ थानेके पास पहुँची तब सिपाहियोंने सूरत झाको गिरफ्तार कर लिया और भीड़को भाग जानेके

मधेपुर लिये कहा। पर भीड़ थानेमें धँसती ही गई। दारोगाने तब बल प्रयोग किया। जिसके लिये उसने काफी तैयारी करली थी। लोग लाठी और गुलेलकी मार सहने लगे। पर कुछ ही देरके बाद मारकी गहराई असह्य होने लगी। अनन्तनारायण झाका सर फूट गया। बांह भी लाठीकी मारसे टूटसी गई। फलतः इनलोगोंकी ओरसे भी रोड़े और लाठियाँ अपना करतब दिखलाने लगीं। दो सिपाहियोंपर बेतरह मार पड़ी जिनमें एक अस्पताल भेजा गया। बाकी भाग गये। दारोगा साहब बिलकुल बेबश हो गये। लोग थानेको जितना नुकसान पहुँचा सके पहुँचाया। कागजात, फर्नीचर ही नहीं बल्कि किवारों और खिड़कियोंको भी जला दिया। यहाँ तक कि सिपाहियोंकी व्यक्तिगत चीजें भी बचने न पाईं। सभी थानेवाले झंझारपुर भाग गये। झंझारपुरमें रेलवे स्टेशन मधेपुर, फूलपरास और स्थानीय पुलिसका अड्डा बना हुआ था। मधेपुरवालोंने अपने दारोगाको वहाँ जा घेरा। दारोगाके पास बन्दूक थी। मधेपुरके कार्यकर्त्ताओंका कहना था इस बन्दूकसे दारोगा हमारी जान लेगा। इसलिये हम बन्दूक छीन लेंगे। दारोगा दूसरी बात कहता; पर उसकी सुनता कौन? कार्यकर्त्ता तन गये। उस समय

सामने आये दरभंगा राज कचहरीके सर्किल मैनेजर श्री बुलाकीलाल महथा बीच बचाव करनेके लिये। दोनों पक्षके स्वार्थका ख्याल रखकर यही तय पाया कि बन्दूकके दो टुकड़े कर दिये जायँ। नाल वगैरह दारोगा साहबने लिया ताकि वे अपनी सरकारको बन्दूकका हिसाब दे सकें और कुन्देको कांग्रेसवालोंने लिया ताकि नाल गोली छोड़नेके काम न आ सके। मधेपुर कांग्रेसकी ओरसे बाबू श्यामनारायण-झाने कुन्दा लिया।

१८ अगस्तको निर्भयनारायण झा जागेश्वर झा जलूस लेकर झंझारपुर थाना पहुँचे। जलूसको तितर-बितर कर देनेके लिये थानेवाले बिलकुल तैयार थे।

झंझारपुर थानेके प्रायः सभी चौकीदार और दलाल और कसाई टोलेके सभी लड़ाके लाठी, भाले, गड़ासा आदि लेकर पैंतरेबाजी कर रहे थे। पर जब जुलूस सामने आया, घोड़ेपर सवार बन्दूक और तलवारसे लैस, तो दारोगा साहब डोल उठे। लोगोंकी संख्या थी लगभग ५००००। उनने तुरत निर्भयनारायण झा और जागेश्वर झा को बुला भेजा। लाख मना करनेपर भी दोनों दारोगाके पास गये। दारोगाने कहा कि आप दोनों ही आइये और जो करना है कर लीजिये। सबको थानेमें लाइयेगा तो डर है भीषण उपद्रव न हो जाय; बेशुमार जनता है बेकाबू हो जायगी। दोनोंने उनकी बात मान ली और लोगोंको समझाकर पक्षमें कर लिया। फिर बाजारसे एक मिस्त्री बुलाया गया जिसकी मददसे थानेका ताला तोड़ दिया गया। कागजात निकाले गये और जला दिये गये। वहाँ कांग्रेसका अड्डा कायम किया गया। यद्यपि कांग्रेसके कार्यकर्त्ता अहिंसाको पूरा-पूरा बरतते रहे तथापि दलालोंने दारोगाको इतना डरा दिया कि उनने अपने बाल-बच्चोंको तो एक दलालके घर भेज दिया और खुद १६ की रात एक बगीचेमें छिपकर बिताई। बादके दारोगाने थाना छोड़ दिया और झंझारपुर स्टेशनपर अपना डेरा डाला।

फूलपरास थाना

१७ अगस्तको तीन हजारके करीबकी भीड़ फूलपरास थानेमें घुस गई। थानेके औफिसकी किवाड़ोंको उसने तोड़ डाला और कुछ कागजात जलाये और कुछको छोट छाट दिया। दारोगा साहबने लोगोंपर अपनी बन्दूक तानी। परिणाम स्वरूप उनके डेरेपर रोड़े गिरने लगे। फिर दारोगाने बन्दूक चलानेका इरादा छोड़ दिया और लोग भी अपने हाथ रोक चुप-चाप चल दिये। १६ को ब्रह्मस्थानमें एक सार्वजनिक सभा हुई। डाकबंगलेको कांग्रेसका औफिस बना

लिया गया। कार्यकर्त्ताओंने २२ अगस्तको दारोगा साहबके पास अपने कुछ साथियोंके मारफत संदेश भेजा कि भला इसीमें है कि आप थानेको कांग्रेसके कब्जेमें आने दें। दारोगा साहबने औफिस और मालखानेकी चाभी उन्हें सौंप दी और एक पत्र भी दिया जिसमें लिखा था मैं डाक्टर राजेन्द्र प्रसादका सम्बन्धी हूँ; स्वराज चाहता हूँ आप लोगोंका साथ देनेको तैयार हूँ। आजकल आना जाना मुश्किल हो रहा है और मेरी स्त्री इस लायक नहीं है कि चलनेकी कठिनाई बरदाश्त कर सके। इसलिये मुझको तबतक अपने डेरे ही में रहने दिया जाय जब तक बाहर जाने की सुविधा नहीं हो जाती। उनकी दरख्वास्त मंजूर कर ली गई। पर दारोगा साहब दोरंगी चाल चल रहे थे। इधर कार्यकर्त्ताओंसे मीठी-मीठी बातें और उधर खजौली और लहेरियासराय इनके खिलाफ पन्नेके पन्ने रंग कर भेजे जा रहे थे।

लौकही थानामें भी भीड़ने २१ अगस्तको थानेका ताला तोड़ दिया और औफिसकी चीजोंको निकाल-निकालकर जला दिया और बरबाद कर दिया। डाकघरके लौकही लोहेके सेफको भी जो जमीनके अन्दर वहां पक्का जोड़ा हुआ था उखाड़ कर तोड़-फोड़ दिया और सारे सामान जला दिये। फिर डाकघर और आबकारी दफ्तरको भी बरबाद कर दिया, उसके सामान जला दिये। दूसरे दिन उनलोगोंने तय किया कि थानेवालोंको अपने इलाकेसे निकाल बाहर करना चाहिये। किन्तु जमादार दूर दराजके रहनेवाले थे, वहां सपरिवार रहते थे। इसलिये उनने प्रार्थना की कि उन्हें थानासे निकाला न जाय। पुलिसको सब तरहसे अधीनता मानते देख कार्यकर्त्ताओंने उन्हें और नहीं छेड़ा। पर हाँ! उन्हें आदेश दिया कि वे अपने डेरे ही में रहे। खाने पीनेकी चीजोंको भी काँग्रेसवालोंके मारफत मगावें। इस ढंगसे थानावाले अपने ही थानेमें १५ दिनोंके लिये कांग्रेसके नजर बन्द रहे।

लौकहा थानेपर हमला हुआ २३ अगस्तको, नायक थे हृदयनारायण झा। इस हमलेका जबाब देनेके लिये पुलिस कमर कसे थी, भाला, गड़ासा, लाठी, लौकहाथाना फरसा और बन्दूकें—सभी हाथमें। ज्योंही कुछ लोगोंने थानेके पासके रास्तेपर कदम रक्खा त्योंही उनपर भालेका वार हुआ। चोट खाते ही वे सभी चम्पत हुये। कुछ हो हल्ला मचा जिसे शान्त करनेको दौड़ पड़े श्री हृदय नारायण झा। उनपर भी भालेका निर्मम प्रहार हुआ। बस नायकजीने तुरत

आदेश दिया हमला बन्द करो। जब नायकपर भी पुलिस वालेका निर्मम प्रहार करें तब भला थानेपर हमला कैसे हो सकता है!

बाबा श्रीकृष्ण शर्माजी विद्यार्थियों और थानेके प्रमुख व्यक्तियोंका जलूस लेकर १५ अगस्तको थानेपर गये और तिरंगा झंडा फहरा दिया। फिर दारोगा, जमादार **मधवापुरथाना** और पुलिसको लेकर समूचे शहरमें झंडा लहराते हुए और नारा लगाते हुए सब लोग घूमे। बादको पुलिस थाना छोड़कर दरभंगा चली गयी और लगभग एक महीना गायब रही। फिर पोस्ट ऑफिस और आबकारी महालकी ऑफिसमें ताले लगाये गये। उसमें लगभग एक हजार जनता कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं के साथ थी। जहाँ-तहाँ सरकारी कर्मचारियोंने विरोध किया, लाठी चार्ज भी किया पर जन-शक्तिके सामने उनको माथा टेकना पड़ा। २१ अगस्तको बिहारीका पुल तोड़ा गया। तोड़ते समय रामनारायण सिंह और प्रेम चौधरीने बाधा भी दी, पर जागृत जनता बाधा क्या माने। ब्रह्मपुरीका पुल तोड़ा गया। बासुकी, बसबड़ियाकी सड़क खराब कर दी गयी। वहांभी जयकर्ण चौधरी, रामनन्दन सिंह आदिने स्वयं-सेवकोंको तंग किया। पर स्वयं-सेवक बेपरवाह रहे।

हरलाखी थानापर १९ अगस्तको हजारोंकी संख्यामें लोग चढ़ आये। लोगोंने **हरलाखीथाना** थानेका ताला तोड़ा, उसके सामान निकाल बाहर किये और उन्हें बरबाद कर दिये।

लदनियां थानापर अनेक चढ़ाइयां हुई। ११ अगस्तको दारोगा साहबकी पिस्तौल छीन ली गई, फिर वापस कर दी गई। १७ अगस्तको लगभग १० हजार **लदनियांथाना** प्रदर्शनकारी थानेमें घुस गये जहां अपना झंडा फहराया और कमरोंमें अपने ताले लगा दिये। जब्त शुदा कांग्रेस ऑफिसको फिर अपने कब्जेमें ले आये। पुलिसने थानेसे ताले हटा दिये। और अपने थानेका काम यथा पूर्व चालू रक्खा।

नथुनी साहु जैसे लड़केकी शहादतने जनताके हृदयको थानावालोंके प्रति क्रोध और घृणासे भर दिया। उनका यहां तक बहिष्कार किया गया कि बाजारसे उनको **जयनगरथाना** भोजन सामग्री मिलनी भी बंद हो गई। चारों ओरसे आवाज आने लगी—थाना खाली करो, थाना कांग्रेसका है, इस बीच थानेकी हिफाजतके लिए पुलिस लेकर एक डिपटी मजिस्ट्रेट आये। अपना काम निकालनेका इनने अकबरी तरीका अख्तियार किया। गोकुलचंद बरोलिया इनके दूत बने। इनने अगस्त

क्रान्तिको जगानेवालोंसे कहा—आप अपना काम शांतिपूर्वक क्यों न कर लेवें थाना तैयार है (१) आपको थानाका चार्ज दे देनेके लिए (२) थानेके कागजात जला देनेके लिए (३) जो गोली चलाई उसका प्रायश्चित करनेके लिए और (४) कुछ दिनके बाद थाना खाली करके चले जानेके लिए। हिचकते-झिझकते कार्यकर्त्ताओंने आखिरकार इन शर्त्तोंको मान लिया और २१ अगस्तकी दोपहरको वे सभी थाना पहुँचे। डिपटी मजिस्ट्रेटसे लेकर चौकीदार तकने उनका स्वागत किया। थानेके जमादार "थानाका कागज" ले आये और चौकीदारने उसे जला दिला। फिर एक पुरानी बंदूक लाई गई और कार्यकर्त्ताओंके हवाले कर दी गई। दारोगाने सबोंसे कहाकि गोली छोड़नेका मुझे सख्त अफसोस है। बाद उसने अपने हैटको जलती आगमें डाल दिया। गाँधी टोपी पहनी, झंडा उठाया और जनताको संतुष्ट कर लिया। वह खुशी-खुशी थानेसे विदा हो गई। पर शीघ्र कार्यकर्त्ताओंको मालूम हो गया कि गोकुलचन्द बरोलियाकी चालमें आकर वे थानावालोंके हाथ उल्लू बने हैं। वे बड़े बिगड़े और जहां-तहां जुलूस बाँध गोकुलचन्द बरोलिया मुर्दाबाद का नारा लगाने लगे। अंतमें हारकर बरोलियाने भरी सभामें शपथ खायी कि अब से पुलिसका साथ नहीं दूंगा। देवधा जयनगरकी फाँड़ी है। वहाँके इन्चार्जको बाबू अयोध्याप्रसाद सिंह आदि स्वयं-सेवकोंने गिरफ्तार कर लिया और उनको जुलूसमें चारों ओर घुमाया। जहाँ-तहाँ स्वयं-सेवक उन्हें खड़ा कर चिल्लाते—जमादार गिरफ्तार। तब कुछ स्वयंसेवक जोरसे पूछते—कहाँके? जवाब मिलता—देवधाके।

देवधाको दखल करके उनने सभी चौकीदार और दफादारको सूचना दी कि सरकारी नौकरी छोड़ो और कांग्रेसकी सेवा करो। फलतः फाँड़ी भरके चौकीदारों और दफादारोंने अपना अपना इस्तीफा लिख कर कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंके हवाले कर दिया।

दलसिंगसरायमें १४ अगस्तको कांग्रेस कमिटीके सेक्रेटरी श्री नागेश्वरप्रसाद, बाबू शिवनन्दन सिंह, और बाबू मथुरा प्रसादसिंह गिरफ्तार करके थाना लाये गये; समस्तीपुर सबडिविजन उनको विदा करनेके लिए जनता उमड़ पड़ी। विद्यार्थी एक-एक करके थानेके हातेमें आनेकी कोशिश करने लगे, पर बलदेव ठाकुर जो नायब दारोगा थे किसीको आने नहीं देते थे। वे जिसको पकड़ते उसे खूब पीटते और झंडा छीन लेते। रामजी साहु और चन्द्रदेव सिंह तो खूब ही पीटे गये।

जब नागेश्वर बाबू वगैरह थाना ऑफिसमें पहुँचाये गये तब पुलिसका ध्यान उनकी ओर खींचा गया। बस मौका पाकर परमेश्वरी महतो जो हाइ इंगलिश स्कूलकी ११ वीं श्रेणीमें पढ़ता था, थानेकी देहलीपर फांद आया और छप्परमें अपने हाथके झंडेका डंडा खोंसने लगा। बलदेव ठाकुरने उसे पकड़ लिया। और थप्पर घूसेसे पीटते हुए देहलीके नीचे पटक दिया। पीछे आप भी कूद पड़ा और परमेश्वरी महतोको ठोकरें मारने लगा। फिर उसकी छातीपर चढ़ बैठा। तत्काल नागेश्वर बाबूने उसकी कमर पकड़ ली और रामाशीष साहु लपक पड़ा और बलदेव ठाकुरको परमेश्वरी महतोकी छातीसे खींच हटाया। परमेश्वरी साहूको इतनी चोट आई कि वह जेलमें जाकर मर गया। उस दिन जनतापर भी काफी लाठी चली, श्रीनाथ सिंहकी चांदीमें सख्त चोट लगी और वह बेहोश होकर गिर पड़ा। भीड़ उत्तेजित हो गई। और संभुआके श्री रामदेवसिंह उसको समझा कर थानेसे हटा न लेते तो खूनकी धारा बह जाती।

थानेसे भीड़ लौटकर तोड़-फोड़में लग गई। चकशेखूकी रेलवे लाइन उखाड़ी जाने लगी। सैकड़ों गांववाले कुदाल हथौड़ा वगैरह लेकर रेलवेको बरबाद करनेमें लगे हुये थे। बड़े दारोगा बाबू जगतनारायण सिंहको बेटे और दामादको भी श्री लक्ष्मीनारायण बरतनवालेने वहाँ लाइन उखाड़ते देखा। तीन बजे दलसिंगसराय स्टेशनको जलाकर और वहाँके सारे सामानको लूटकर भीड़ थाना पहुँची। वह थानेको जला देना चाहती थी। उसको रोकनेके लिए पहले तो पुलिसकी ओरसे रोड़े फेंके गये, बाबू लक्ष्मीनारायणने अनवर मियाँ चौकीदारको भी जनतापर रोड़े फेंकते हुए देखा। फिर जनताकी ओरसे भी रोड़े चलने लगे। फिर पुलिस खुलकर बंदूक दागने लगी। दो-एक आदमीको गिरते देख भीड़ भाग खड़ी हुई। पुलिस गोली छोड़ती हुई थानेके हाते भर उसका पीछा करती रही। तबतक साम हो गई और थानेका मैदान साफ हो गया। जनताके छः जवान खेत रहे। जैता, समस्तीपुरके चैता पोद्दार, गोसपुर दलसिंगसरायके अनूप महतो और बंगाली दुसाध, चकहबीबके सरयुग काजड़ दलसिंगसरायके जागेश्वर लाल और घमथा तेगढ़ाके एक अज्ञातनामा दुसाध। घायल तो कितने हुये। प्रत्यक्ष दर्शी श्री लक्ष्मीनारायण लिखते हैं, "मैंने अपने कोठे-परसे देखा, कन्सटेबिल सब थानेके दरवाजे किवाड़ तोड़ रहे हैं। कुछ चौकीदार सड़कपर गये और दो घायलोंको उठा लाये और पटक दिया। बादको ही पांड़ाके

रामदेव सिंह दफादार मेरे पास आये और बोले, दारोगा साहब बुला रहे हैं, मैंने कहा कि मैं नहीं जाऊँगा। उनका गवाह बनना मुझको मंजूर नहीं है, मैं देख रहा हूं, किवाड़ वगैरह खुद तोड़वा रहे हैं, जिसका दोष वे जनताके माथे मढ़ेंगे। मैं यहां हूँ, वे मुझको भी शूट कर सकते हैं। पर दफादारने कहा उनकी स्त्री आश्रय चाहती है। तब मैं थानेपर गया। जगत बाबू मेरे कन्धोंपर दोनों हाथ रख फूट-फूट कर रो पड़े; बोले- मैंने अबतक चिड़ियापर भी गोली नहीं चलाई सो आज आदमी मारनेका अपराधी बना हूँ, मेरी स्त्री घबड़ा रही है। वह अपनी लड़की लेकर आपके घर जाना चाहती है। मैंने कहा कि वे दोनों मेरी मा-बहन हैं; मेरा घर उनका ही घर है; खुशीसे आवें। ठीक इसी वक्त मैं दारोगा साहबसे घायलोंकी सेवाका सवाल उठाना चाहता था कि एक कन्सटेबिलने आकर कहा—एक अध्यापिका घायलोंकी सेवाको आना चाहती है। यह वही अध्यापिका थी जिसने मुझसे घायलोंकी सेवा करनेकी इच्छा प्रकटकी थी। मैं जगत बाबूसे मिलने जा रहा रहा था, इसलिये उसे रुकनेकी सलाह दी थी। कहा था कि मैं दारोगाजीसे मिलने जा रहा हूँ आपके लिये इजाजत ले आऊँगा, तभी जाइयेगा। कान्सटेबिलके मुंहसे घायलोंकी सेवाकी बातें और सो भी एक अध्यापिका द्वारा—सुनतेही दारोगाजी फट पड़े। गरज उठे, 'वेश्यापुत्री सब वेश्या वृत्ति करा कर अभी आई है सेवा करने। उस समय कहां थी जब हमारे नातीपर ईंटें बरस रही थीं। मै इनकी बात सुन चुपचाप घर वापस आया। थोड़ी देरके बाद उनकी स्त्री और लड़की मेरे घर आ गयीं, मैंने उन्हें घरमें ले लिया।

सिंगिया थानापर १७ अगस्तको आक्रमण हुआ, एक बजेसे ही चारों ओरसे झुंडके-झुंड आदमी आने लगे, और कांग्रेस सभाका मैदान खचाखच भर गया। सिंगिया थाना दो बजेके करीब लगमाके बाबू रामप्रसाद सिंह विशाल जन-समूह लेकर आये। सबोंने झंडा उठाकर उनका स्वागत किया और स्वयं सेवकोंने सलामियां दीं। लोगोंकी संख्या कमसे कम ११ हजार तक पहुँच चुकी थी। इधर थानेवाले भी काफी तैयार थे। आसपासके सभी गुंडोंको हरबे हथियार सहित उनने बटोर रखा था, थानेभरके सारे चौकीदार और दफादार लाठी और फरसा लिये ऐंठ रहे थे, दारोगा और जमादार भी बंदूक लिये चौकन्ने नजर आते थे। उनकी तैयारीमें एक ही कमी रह गई थी। उनका एक आदमी दरभंगेसे

घातक गोलियां ला रहा था। वह विश्वनाथ सिंह आदि सेवकोंके द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया था। इसलिए थानावालोंके पास घातक गोलीका अभाव था।

परिस्थिति देख सभाने निश्चय किया कि पहले श्रीयुत रामेश्वरसिंह साधु और रामनन्दन सिंह आदिका एक डेपुटेशन थाना जाय और दारोगासे कहे कि वे शांति पूर्वक थानेका अधिकार कांग्रेसको सौंप दें। दारोगा झंडा फहरानेके लिये तो राजी हो गया। बाबू राधाप्रसाद सिंह, बाबू रामनन्दन सिंह और हितलाल महतो आदिने थानेमें झंडा फहरा दिया। पर जब ताला बंद करनेका मौका आया तब बड़ा विवाद उठा। थानावाले कतई राजी नहीं थे कि थानेमें कांग्रेसका ताला लगे, पर जनता बिना ताला लगाये हटनेको तैयार नहीं थी, समझौता करानेवाले परेशान थे और बड़ी देर लगा रहे थे। जनता अधीर हो उठी, बाबू राधाप्रसाद सिंहने अपने दलवालोंसे जिनकी तादाद बहुत बड़ी थी कहा कि हमलोग लौट चलें। ये सिंगिया-वाले कुछ करने न देंगे। पुलिसका साथ छोड़ना इन्हें मंजूर नहीं। उनके मुंहसे कुछ अनाप सनाप भी निकला। विद्यार्थी दलमें जोश आ गया। सिंगिया स्कूलके योगेन्द्र झा और बंगरहट्टा स्कूलके महानन्द झा थानेमें प्रवेश करनेके लिये चल पड़े। रामेश्वरसिंह साधुने रोकना चाहा। नकली कुंजी दिखला कर कहा कि आपलोग जाइये, हमें थानेकी कुंजी मिल गई। पर उनकी एक न चली, छात्र समूह और उसके पीछे जनता बढ़ती ही गई। परिस्थिति बेहाथ देख शत्रुघ्न प्रसाद सिंह दारोगासे बोले, अब हमलोग चलते हैं, आपको जो मुनासिब सूझे कीजिये। और इतना कहकर वे संगी साथी सहित थानेसे चले गये। तबतक विद्यार्थी थानेके हातेमें पहुँच गये, एकके बाद एक विद्यार्थी थानेपर चढ़नेकी कोशिश करने लगे। जिनमें दोको गहरी चोट लगी। एक तो देर तक बेहोश रहा, जनता और उत्तेजित हो गई, एक साथ आगे बढ़ी फिर तो उनपर लाठियां फरसेका अटूट वार होने लगा। फिर बन्दूकके छर्रोंकी मार पड़ने लगी। जनता कुछ पीछे हटी और वहाँसे जमकर थानेपर ईंट और रोड़े बरसाने लगी, धीरे-धीरे थानेवाले थक गये, उनके कितने मददगार नौ-दो ग्यारह हो गये। दारोगा साहब और जमादार साहबके उठाये बंदूकें भी उठती न थी, तब जनता जोशके साथ अपनी सारी ताकत समेट थानेको मटियामेट करने आगे बढ़ी। रामेश्वरप्रसाद साधुने एकबार फिर कोशिश की कि शांतिपूर्वक ही कांग्रेसका सारा विधि विधान पूरा हो जाये, वे थानेपर पहुँचे।

दारोगा साहबको अक्लमंदोसे काम लेनेको कहा। दारोगा साहबने अपनी पगड़ी उतार फेंकी अपनेको खादीसे लपेट लिया और कांग्रेसका झंडा लेकर गांधीजीकी जयजयकार करने लगे, पर जनता उन्मत्त हो गई थी और अन्धेरी रात उसके उन्मादको और बढ़ा रही थी। वह थाने आई और अपने घातकोंको पीटने लगी, जमादार साहब थाना छोड़ मकईके खेतमें जा छिपे पर उनको छिपते कुछ लोगोंने देख लिया और उनका मार डाला। दारोगा साहब भी बुरी तरह घायल हुये पर कुछ लोगोंने इन्हें बचा लिया। और अन्यान्य थानेके मददगार भी जो वहां डटे रहे, घायल होनेसे बच न सके। जब शांति हुई तब स्वयं सेवकोंका दल थाने आया; देखा थानेके सामने आग धू-धू करके जल रही है, जिसमें थानेके हातेका तिनका-तिनका जला जा रहा है, कुछ लोग लूट पाट कर रहे हैं और काफी लोग लाठी फरसेकी चोट खाकर कराह रहे हैं। दारोगा साहब बेहोश जेसे हैं। सिफ जब तब कराहनेकी आवाज मुंहसे निकल रही है। इन स्वयं सेवकोंने सभी घायलोंको अस्पताल पहुँचाया और बाबू कुलान्द सिंहने अपनी तीमारदारीमें दारोगा साहबको ले लिया जिनके लिये कपड़े और दूधका प्रबन्ध करने लगे। उन लोगोंमें से ही कुछने खेतमें पड़े हुये जमादार साहबकी लाशको दूर ले जाकर जल-समाधि दे दी, बीस दिन तक थानामें कांग्रेसकी व्यवस्था काम करती रही।

रोसड़ा

रोसड़ाके कार्यकर्त्ता श्री वालेश्वर सिंह, रमाकांत झा और यदुनन्दन सिंह एक बड़ा जुलूस लेकर रोसड़ा थाना आये। थानापर झंडा फहराया। उनने दारोगाको कुर्सीसे उतरनेको कहा। टोप उतरवा कर उससे वन्दे मातरम् कहवाया। रमाकान्तजी थानेमें ताला लगाना चाहते थे पर पुराने कार्यकर्त्ताओंके बीचमें पड़नेसे वैसा न हो सका। इसी समय बादल गरजा, कितनोंको भ्रम हुआ कि गोली चली। बस जुलूसके आधे लोग भाग निकले। बाकी म्युनिसिपैलिटी आये। जिसके मकानपर झंडा फहराया। वहांसे संस्कृत पाठशाला आकर जुलूस खत्म हुआ।

मुंगेर जिला

१३ अगस्तको चौथम मिडूल स्कूलके विद्यार्थियोंने हड़ताल मनायी और जलूस निकाला। जवाहर आश्रमके कार्यकर्त्ताओंने भी उनका साथ दिया। जुलूसने थानेके कागजात जलाये और उसपर झंडा फहरा दिया। जमादारकी बंदूक लेली। बंदूक कुछ दिन थाना कांग्रेस कमिटीके कब्जेमें रही और बादमें थाना-डिक्टेटर-श्री सूर्यनारायण सिंहके द्वारा उनके नियुक्त ध्वंसात्मक विभागके कमांडर

श्रीमहेन्द्र चौधरीको सौंप दी गयी। १४ अगस्तको थाना कांग्रेस कमिटीकी ओरसे जलूस निकला; अगुआ थे श्री सूर्यनारायण सिंह और रामदेव आर्य। जलूसने झंडा फहरा कर थानेमें अपना ताला लगा दिया। अपना बोरिया बंधना समेट कर चौथमकी पुलिस भाग गयी। तबसे लगभग एक मास तक चौथम थाना कांग्रेसके कब्जेमें रहा। १५ अगस्तसे जत्था बना-बना कांग्रेसके स्वयं-सेवक थाने भरमें हुकूमतके अड्डोंको उखाड़ने लगे। कमलेश्वरी मंडलके नेतृत्वमें एक जत्था रामनगर आया और वहां रामसेवक सिंहके दलसे मिलकर कामानगर और बेलदौरकी कलाली जला दिया। पीर नगरके डाक घरको कब्जेमें किया। रामधारी सिंह, ईश्वरी प्रसाद यादव और महावीर नाथके नेतृत्वमें कई दल, पिपरा, मानसी आदिके डाकघरोंपर कब्जा करते रहे और थानेभरकी कलालियां नष्ट करते रहे।

चौथम थाना

१५ अगस्तको बड़हियाके कार्यकर्त्ताओंने जलूस निकाला। थानेपर कब्जा किया। वहाँ दारोगाने भी झंडा लेकर कांग्रेसकी जयजयकार की। कुछ लोग थानेको जलानेको उत्सुक थे, पर पुराने कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंने ऐसा नहीं करने दिया। फिर वे डाकघर आये और उसे कब्जेमें कर झंडा फहराया।

बड़हिया

लक्खीसरायने भी थानेपर कब्जा किया और उसपर अपने झंडे फहराये। थानेवाले बाजार चले आये जहाँ कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंकी व्यवस्थासे ही आरामसे रहे।

सूर्यगढ़

१३ अगस्तको सूर्यगढ़ थानेभरके कार्यकर्त्ता एकत्र हुए और श्रीरूप कान्त शास्त्रीके नेतृत्वमें थाने पहुँचे। थानेपर अपना झंडा फहराया और उसके कागजोंको जला दिया। वहां सभी कार्यकर्त्ताओंने मिलकर कांग्रेसी सरकार स्थापनाकी घोषणा की। चौकीदारोंकी वरदी जलादी गयी और उन्हें गांधी टोपी दी गयी। चौकीदार कार्यकर्त्ताओंके साथ थानेमें आते जाते और कांग्रेसी वरदीमें परेड करते। थानावाले बोरिया बंधना समेट कर चले गये। जिस समय वे जा रहे थे, कांग्रेस कार्यकर्त्ता 'अंग्रेजो! भारत छोड़दो' नारे लगा रहे थे। जनताने इसे देखा और समझा कि ब्रिटिश राज उठ गया और अपना राज आगया।

तारापुर

तारापुरके कार्यकर्त्ताओंने थाना दखल करनेका प्रोग्राम बनाया और तैयारीमें लगे। इसी बीच १५ अगस्तकी रातको मिलिटरी आयी उसने थानेके सभी साज-सामान समेटे, थानेके सभी कर्मचारियोंको साथ लिया और रातको ही चली गयी। १६ की सुबहमें जनताने थाना खाली देखा जिसमें कांग्रेसी स्वयं-सेवक नारे लगा रहे थे।

जमुई सबडिविजन

सिकन्दराके कार्यकर्त्ताओंने थानेको अपने कब्जेमें कर लिया। पुलिस वहांसे भाग गया और चार महीनों तक झांकनेका भी साहस नहीं कर सकी।

बेगूसराय थाना

१५ अगस्तको बेगूसराय थानेपर धावा हुआ और झंडा फहराया गया। पुलिसकी मददके लिये श्री चन्द्रमौली देवने एक मोटर दी। पुलिस उससे बाहर जाना चाहती थी, पर सैकड़ों छात्र उस मोटरके चारों ओर जमीनपर लेट गये। मोटर जा नहीं सकी।

श्री महादेव भाईके मरनेकी खबरसे जनता उत्तेजित हो गयी थी। लोगोंका ख्याल था कि सरकारने जहर देकर उन्हें मार डाला है। जनताकी उत्तेजना तोड़ फोड़के रूपमें प्रकट हुई। सारे रास्ते काट दिये गये। अनेक थानोंपर धावे हुए। कितने ही पोस्ट आफिसोंपर ताले लगाए गये और कितनोंके कागजात जले।

१७ अगस्तको विद्यार्थियोंका एक जत्था बेगूसराय खजानेपर कब्जा करने चला। वे चाहते थे खजानेपर कब्जा कर ताले लगा देना और तबतक बन्द रखना जबतक गांधीजी छोड़ नहीं दिये जाते। किन्तु एस० डी० ओ० साहब उसकी रक्षाके लिये सदल बल डट गये। एकबार फायर हुआ और साथ ही विद्यार्थियोंका नारा लगा—छाती सामने है, गोली चलाओ। ऐन मौके पर श्री सरयुगप्रसाद सिंह वकील, विद्यार्थियों और पुलिसकी गोलीके बीच आ गये और एस० डी० ओ० से कहा—आप खजाना और दफ्तर बंद कर देवें और कबूल करें कि फायरिंग गलतीसे हुई है। नहीं तो हम सबोंको पछताना होगा। एस० डी० ओ०ने सरयुग बाबूकी कही मान ली और अन्तमें बोले बेगूसरायमें अंगरेजी हुकूमतका अन्त आ गया। अब यहांका शासन आपलोग करें और मेरे जान मालकी हिफाजतको जवाबदेही लें। जनता जयघोष करती हुई वहांसे टली और कांग्रेस मैदानमें इकट्ठी हुई। वहाँ चौकीदारों, दफादारोंको हटाकर जनता राज कायम करनेका निश्चय हुआ।

भागलपुर

जिलेमें सबडिविजनके सभी थानोंपर १४ अगस्त तक कब्जा हो चुका था। १४ के बादसे हुकूमतपर हमला करनेकी प्रवृत्ति जगी, मधेपुरा और बांका सबडिविजनको।

मधेपुरा

मधेपुराने आन्दोलनमें शानदार हिस्सा लिया है। वीरेन्द्र प्रसाद सिंह, भूपेन्द्र नारायण मंडल, और देवता प्रसाद सिंहके साथ एक जलूस १३ अगस्तको कचहरीपर पहुँचा। वीरेन्द्र प्रसाद सिंहने उस पर झंडा फहराया और उसके बरामदेमें

भूपेन्द्र नारायण मंडलने एस० डी० ओ० तथा अन्यान्य अफसरोंके सामने सबको कांग्रेसका प्रोग्राम पढ़कर सुनाया। जलूस फिर थाना और रजिस्टरोंकी ओर बढ़ा और उनपर झंडा फहराया।

१४ अगस्तको पुलिसने कांग्रेस आफिसको जब्त कर उसपर अपना पहरा बैठा दिया। लेकिन १५ को महताब लाल यादव, कमलेश्वरी मंडल, देवदत्त महतो, प्रेमनारायण मिश्र और हाईस्कूलके छात्रोंने जनताकी सहायतासे जब्तशुदा कांग्रेस आफिस पर हमला किया। पहरेदार नौ दो ग्यारह हुए। बादमें एक बड़ी सभा हुई जिसमें ऐलान किया गया कि राष्ट्रीय सरकारकी स्थापना हो गई। अब इस सरकारकी ओरसे ब्रिटिश सरकारकी ताकतके सभी अड्डोंपर ताले लगा दिये जायेंगे।

इसी तारीखसे हाइ-स्कूल बंद होगया। और छात्र राष्ट्रीय सरकारकी सेवामें लगे।

१७ अगस्तको लगभग पचीस हजार जनताकी उपस्थितिमें तय हुआ कि सरकारी दफ्तरों और खजानेपर कांग्रेसको ताला लगा दिया जाय। इस प्रोग्रामको अमलमें लाने के लिए पांच-पांच लोगोंके पांच जत्थे बनाये गये। जिन्हें आवश्यकतानुसार बारी-बारीसे आगे बढ़ना था। कार्यक्रमके अनुसार श्रीमहताबलाल यादवकी अध्यक्षतामें पहला जत्था कचहरीकी ओर बढ़ा। सड़कपर बेशुमार लोगोंकी भीड़ थी। एस० डी० ओ० और दूसरे-दूसरे अमले अपने अपने दफ्तरको बंद कर लट्ठधर और हथियार बंद पुलिसकी जमातके बीचसे उस जत्थेकी गति-विधिको देखने लगे। जत्था जब कचहरी पहुँचा, तब उसके अध्यक्ष महताबलाल यादवने एस० डी० ओ० साहबसे देशकी पुकार सुननेकी जोरदार अपील की, बादको उनने एस० डी० ओ०के कचहरीपर मुन्सिफी पर, रजिस्टरी औफिसपर और थाना एवं खजानापर कांग्रेसके ताले लगा दिये। डाकखाना और शराब गोदाम बंद कर दिया। ३० अगस्त तक सभी सरकारी दफ्तर बंद रहे। खजानेपर स्वयं सेवकोंका पहरा पड़ता रहा झंडा फहराते हुए, नारा लगाते हुए।

किशुनगंजका थाना कांग्रेस कमिटी के नियंत्रणमें पूर्ववत् कायम था। परंतु १६ अगस्तको एक घटना घटी। आलमनगरसे प्रदर्शनकारियोंका एक जत्था थाना कम्पाउन्ड होकर कांग्रेस सदर कैम्पमें आरहा था। दारोगा साहबने अपने सहयोगियोंको लेकर उस जत्थेपर लाठी चार्ज किया। काफी लोग पीटे गये। और श्रीयुक्त लक्ष्मणझाजीको काफी चोट लगी। लोग उत्तेजित हो उठे। १७ अगस्तको १२ बजे तक पचीसों हजार जनता इकट्ठी हो गयी, लाठी, गड़ासे, तीर, भालेसे लैस। सभी मारने-मरनेको तैयार। जब जनता थानाके अधिकारियोंके क्वार्टरकी ओर बढ़ी तब सामने आ खड़े

हुए श्रीकुलानन्द सिंह। उनने सबोंको हर तरहसे समझाया कि हिंसासे बाज आओ। हमें स्वराज लेना है, जमादार-दारोगासे बदला लेना नहीं। इनने यहां तक कहा कि आप लोग मेरी लाशको रौंद कर ही आगे बढ़ सकते हैं और थानेदारोंका रोआं छू सकते हैं। तब भीड़ कुछ शान्त हुई। दारोगा साहब भी उन सबोंके आगे आये और माफी मांगी। भीड़ वापस लौट गयी। इस लौटती भीड़मेंसे कुछ लोग बिहारीगंज रेलवे स्टेशन जा पहुँचे और स्टेशनका माल लूटने लगे। तार काटने और पटरी उखाड़नेका काम भी चलने लगा। वल्हा पुलको जला दिया गया। रेलगाड़ीका आना-जाना बंद हो गया।

२० अगस्तकी बैठकमें यह निश्चय हुआ कि सरकारी थाना अधिकारियोंको इलाकेके बाहर कर दिया जाये। श्रीयुत शिवनन्दनप्रसाद मंडल आदिने अधिकारियोंको हटानेका भार कुलानन्दजीको सौंपा।

२४ अगस्तकी सुबहमें थानाके कर्मचारीगण सपरिवार ३० बैल गाड़ियोंपर लद कर चल दिये। सभी प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंने उन लोगोंको प्रेम पूर्वक विदा किया। कुलानन्द बाबू इनके रक्षार्थ अरार घाट तक गये और इन सबोंको नावपर चढ़ाकर लौट आये। अब थानेपर पूर्ण अधिकार होगया।

यों तो बनगांव थानेपर १३ अगस्तको ही कांग्रेसका झंडा गाड़ दिया गया था। पर अच्छी तरह वह कब्जेमें आया १५ अगस्तसे, जिस दिन १४ अगस्तकी

बनगांव घटनाओंके फलस्वरूप थाना खाली करके पुलिसवाले चले गये। ता० १४ को एस० डी० ओ० और पुलिस इन्सपेक्टर सदल-बल बनगांव आये। और थानेपरके फहराते हुए कांग्रेसी झंडेको उतार दिया। थानेकी हिफाजतके लिए हथियारबंद पुलिसको तैनात कर दिया। इस खबरको सुनकर कार्यकर्ताओंको बड़ा क्षोभ हुआ। दस-पन्द्रह विद्यार्थी कार्यकर्ता वहां गये और विधि पूर्वक थानेपर झंडा फहरानेके लिये अपने झंडोंकी मांग की। एस० डी० ओ० साहबने लड़कोंको [illegible]

करते रहे। उन्होंने कहा कि इनको तो अपना झंडे फहराना ही है [illegible] दो देंगे तो हम नये झंडे फहरा देंगे। एस० डी० ओ० साहबने उन्हें चेतावनी दी कि ऐसा करोगे तो गोलीसे भून दिये जाओगे। लड़के लौटे और अपने नायक पं० छेदी झाको खबर दी जो उस समय पास एक स्कूलमें बैठे हुए थे। छेदी झा फौरन एस० डी० ओ० के पास पहुँचे और बोले, हमारे झंडे हमें दे दीजिये, एस० डी० ओ०

उनपर भी बिगड़ा और बंदूक दिखायी, श्री छेदी झाजीने कहा कि आप हिंसा कीजिये या जो कीजिये, पर हम तो बिना झंडा लिये न चैन लेंगे न आपको लेने देंगे। तब एस० डी० ओ० ने उनसे शिकायतकी कि आपलोगोंने हमारे जमादारको मारा-पीटा और थानाका सामान लूटा है, किस मुंहसे आप गांधोजीकी अहिंसाकी बात चीत करते हैं। उसने छेदी झाको गिरफ्तार करना चाहा, पर जनताका रुख देख हिम्मत नहीं हुई। हिंसा-अहिंसाके संबंधमें कुछ कह सुनकर थानेके अपने कमरेमें चला गया। इन्सपेक्टरसे कहा मेरी तबियत खराब है आप सब कुछ देखते रहिये।

छेदी झाने इन्सपेक्टरसे झंडा मांगा, पर उसने बिना एस०डी०ओ० की आज्ञाके देनेसे इनकार किया। उसी समय सहरसाके एक कार्यकर्ताने आकर खबर दी कि वहांसे काफी स्वंय सेवक आरहे हैं। छेदी झाने कार्यकर्ताको तुरत वापस जाकर हजारोंकी संख्यामें स्वंयसेवक लानेको कहा। उन्होंने कहा कि कुछ सरकारी अमलोंको कैदी बनाना है।

कार्यकर्ताके लौटते ही इन्सपेक्टरने झन्डे लाकर दे दिये। स्वयंसेवकोंकी संख्या और मुस्तैदी देखकर कुल सरकारी अमले सहरसा चले गये और थानेपर जनताका कब्जा हो गया।

त्रिवेणीगंज थानेपर लगभग १० हजारका जलूस पहुँचा और झंडा फहरा, ताला लगा आया। पुलिसने झण्डा उतार लिया। इससे लोग तैशमें आगये और थाना त्रिवेणीगंज जला देने तथा बंदूक छीन लेनेका निश्चय किया।

प्रायः १५, २० हजार लोग एकत्र हुए। उसमें मधेपुराके प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री रामबहादुर सिंह पहुँचे। सभामें अगस्त क्रान्तिका प्रोग्राम दिया और पूर्ण संगठन बनाय रखनेके लिये कहा। सभामें दारोगा आदि पुलिसके अमलोंसे कहा गया कि वे इस्तीफा दे दें। उन्होंने सोचकर कहाकि वे थानेपर झंडा फहराने देने और कमरोंमें ताले देनेके पक्षमें हैं। पिछली बार झंडा उतार लिया था उसके लिये खेद प्रकट किया। इस्तीफा देनेको राजी नहीं हुए।

लोगोंने शान्ति पूर्वक थाना और पोस्ट ऑफिसको बन्द कर दिया। फिर उत्साहके साथ ग्राम पंचायत, ग्राम रक्षा दल कायम करने और मरनेवाले सत्याग्रहियोंकी भरती करने गांवोंमें निकल गये।

सुपौल सबडिविजन अगस्त क्रांतिको अहिंसा पूर्वक आगे बढ़ानेमें हमारे प्रांतमें

सबसे आगे रहा है। इसकी अहिंसामें कर्मठता और निर्भयता रही है, जो गांधीजीकी अहिंसाका एक विशेष गुण है। इस थानेने हुकूमतपर अपना हमला शुरू किया १७ अगस्तसे। हजारोंकी संख्यामें जनताकी भीड़ उस दिन 'इन्कलाब जिन्दाबाद'; अंग्रेजो भारत छोड़ दो, नारे लगाती हुई सुपौल पहुंचने लगी। देखते देखते पचीसों हजार भीड़ इकट्ठी होगई, सम्पूर्ण बाजार तिरंगे झंडेसे भरा दिखने लगा। भीड़ सर्व प्रथम सुपौल कांग्रेस औफिस पहुंची, कांग्रेसके स्थानीय कार्यकर्ता नेतृत्व कर रहे थे। औफिस पहुँच कर लोगोंने पुलिसके लगाये तालेको हथौड़ेसे तोड़ डाला और जयघोष करते हुए घरमें प्रवेश किया और विधि पूर्वक चौकपर झंडा फहरा दिहा, वहांसे लोग सरकारी महकमोंकी ओर बढ़े। थानेके मकानपर झंडा फहराया और ताला लगा दिया। अंग्रेजोंके अमले चुपचाप अपनी अपनी जगहसे सारी कार्रवाई देख रहे थे। बहुत डरेसे मालूम होते थे। किंतु, वह विशाल जन समूह अनुशासित सिपाहियोंकी टोलीकी तरह काम कर रहा था। बादमें उसने दारोगा साहबको साथ कर लिया जो महात्मा गांधीकी जय जयकार करते हुए चलते दिखाई पड़े।

सुपौल

थानाकी जब्तीके बाद भीड़ पो० औ० पहुँची, पोस्ट मास्टरने भी सारी चीजें बेरोक टोक सुपुर्द कर दी, वहां ताला लगा दिया गया और झंडा फहरा दिया गया। लोगोंकी राय हुई कि यहांके सब रुपये लेलिये जायें और सुरक्षित स्थानमें जमाकर दिये जायें, पर इस ढंगका कोई आदेश न रहनेकी वजहसे इस विचारको छोड़ देना पड़ा।

यद्यपि कोसी नदीकी बाढ़के कारण टेलिग्रामके कन्केशन कटे हुए थे, फिर भी कटे हुए एकाध तार इधर-उधर लटक रहे थे, कुछ युवकोंने उसे भी काटकर अपना हौसला पूरा करना चाहा। इसपर दारोगाजी बिगड़ उठे और तारकी ओर बढ़नेवाले को गोली मारनेकी धमकी दी। फिर क्या था। लोग आगे कूद पड़े और देखते-देखते वह बेचारा निःसार तार काट डाला गया। दारोगाजी आग बबूला हो गये। लोग भी तन गये, कुछ धक्कम-धक्का भी हुआ। उनको धक्का लगा, झट दारोगा साहबने अपनी रिवालवर निकाल ली, फिर तो लोग उनपर टूट पड़े, इसी बीच आनन-फाननमें श्रीयुत शत्रुघ्न प्रसाद, गंगाप्रसाद सिंह और लोहटन चौधरी सीना खोलकर दारोगाके सामने खड़े हो गये और रिवालवर चलानेको ललकारा। दारोगा साहब निस्तेज हो गये और मामला जहाँका तहाँ ही रह गया। लोगोंको भी समझा

बुझाकर शांत कर दिया गया।

भीड़ आगे बढ़ी, वह कलालीको लूटनेका प्रयत्न करने लगी पर कार्यकर्त्ताओंको शीघ्र वहाँ पहुँच जानेसे कलालीको कुछ नुकसान नहीं पहुँचा। हाँ उसपर ताला लगा दिया गया और झंडा फहरा दिया गया।

इसी बीच जनताका एक दल अमरीकन मिशनमें पहुँचा, उस वक्त सिर्फ एक मेम बाहर थी, वह बेचारी भयके मारे थर थर कांप रही थी क्योंकि लोग कुछ उपद्रव मचाना चाहते थे। जहाँ तहाँ हातेमें लगे हुए फल-फूलोंको तोड़ने लग गये थे। रास्तेमें उनलोगोंको एक खबर अचानक मिली थी कि गाँधीजीके सेक्रेटरी महादेव भाई देसाईको अंग्रेजी सरकारने अपने जेलमें मार डाला है। इससे वे सब क्रोधांध हो रहे थे। मेम हाथ जोड़े खड़ी थी और भीड़ उसपर दांत पीस रही थी। इतने ही में फिर वहाँ कार्यकर्त्ता पहुँचे और लोगों समझा बुझाकर वापस कर दिया। हाँ मेमके मकानपर झंडा फहरा दिया गया। फल फूल मेमको वापिस कर दिये।

फिर कोओपरिटेव बैंक, आबकारी औफिस, रजिस्टरी औफिसमें भी ताले लगा दिये गये।

इन्हीं दो चार दिनोंके अन्दर थानेके भीतरके अन्य सरकारी मुहकमोंमें भी ताले लगाये गये तथा झंडे फहराये गये। इन इन जगहोंमें आम जनताने ही सारे काम किये। कांग्रेस कार्यकर्त्ता तो पहुँच भी नहीं पाये क्योंकि सबके सब मुपौलमें ही फँसे रहे। महेशपुर पुलिस फाँड़ी और सुखपुर, पिपरा बाजार, परसरमा, चन्दौल इत्यादि जगहोंकी कलालीमें ताले लगाये गये। कहीं शांति भंग न हुई; सरकारी चीजें नुकसानकी गयीं। सिर्फ सुखपुर कलालीमें जनताने थोड़ा-तोड़ फोड़ किया किन्तु कार्यकर्त्ताओंके पहुँच जानेपर उनने तो .-फोड़से अपना हाथ खींच लिया।

लगभग महीने दिनों तक तमाम सरकारी काम-काज बंद रहे और हर महकमोंपर स्वयंसेवकोंका पहरा पड़ता रहा। पर जैसा ऊपर लिखा जा चुका है सिर्फ ताले लगाकर महकमोंके दफ्तरोंको छोड़ दिया गया था। उनकी चीजें और बंदूक वैगरह नहीं हटाई गई थीं। स्कूलके कुछ विद्यार्थी तथा कांग्रेस कार्यसे सहानुभूति रखनेवाले कुछ लोग बन्दूकें जब्तकर लेनेके लिए कार्यकर्त्ताओंपर बड़ा दबाव डालने लगे। दबाव इतना जबरदस्त रहा कि सभी कार्यकर्त्ता सहमत हुए और बंदूक

जब्त करनेके लिए थानेपर गये। पहले तो पुलिस इन्सपेक्टर बिगड़े; बादको परिस्थिति समझ गिड़गिड़ा कर उनने कार्यकर्त्ताओंसे कहा कि आप स्वयंसेवकोंने ही यदि बंदूक उठवाकर ले जायेंगे तो हमें अपने बचावके लिए कोई जवाब नहीं मिल सकेगा। इसलिये आपलोग एक दो दिनोंके भीतर दो चार सौ जनताके साथ आवें और बंदूकें उठाकर ले जायं। तब पूछे जानेपर मैं कह दूँगा कि बड़ी भीड़को लड़नेके लिए आमादा देख मुझसे कुछ करते-धरते न बना। वह जबरदस्ती बंदूकें ले गयी। बात तय हो गई। दिन मुकर्रर कर लिया गया। लेकिन पीछे कार्यकर्ताओंके हो विचार बदल गये। सोचा यह गया कि संभव है कि हथियार व्यक्तिगत हाथोंमें पड़ जायं और उनका दुरुपयोग हो। और इस ढंगकी खबर आस-पासके जिलेमें आ भी रही थी और फिर थानेमें कांग्रेसका ताला लगे रहनेके कारण बंदूकें कांग्रेसके अधिकारमें थीं तब उन्हें अलग हटा लेनेसे ही क्या खास फायदा होता। यदि यह सोचा जाय कि दो चार बंदूकें हटा देनेसे ही हम सरकारी ताकतको बहुत घटा देंगे तो यह भी भूल ही होगी। क्योंकि संगठित तौरपर हर जगह ऐसा काम नहीं हो सका। फिर एकाध जगह हथियार लेकर सरकारको पंगु बना देनेका विचार रखना ख्याली पुलाव पकाना है। इस सोच विचारने बंदूक जब्त करनेके प्रोग्रामको अमलमें नहीं लाने दिया।

कोसीकी बाढ़की वजहसे सुपौलकी सबडिविजनल कचहरी उठकर सहरसा चली गयी थी जो मधेपुरा सबडिविजनके बनगांव थानेमें है। इसलिए इसको कब्जेमें किया उधरके कार्यकर्ताओंने। बाबू रामबहादुर सिंह अपनी अगस्तक्रांतिकी डायरीमें लिखते हैं कि मुझको चित्र नारायण शर्माने बताया कि यहांका, सुपौल एस० डी० ओ०, आज १६ अगस्तको अपनी कचहरी बन्द कर देनेका, चार दिन हुए वादा किया था। हम उसके पास चलें और आज उसकी कचहरी बन्द करवायें। मैंने कहा उनका वादा आपके साथ है, आप जायं और कचहरी बंद करवायें पर शर्मा जीने हठ करके मुझको साथ ले लिया। मैं जनता था कि हम दोनोंकी मनोवृत्ति एक जैसी नहीं है। न आन्दोलन चलानेका तरीका एक जैसा है। पर यह मौका मतभेद पर जोर देनेका नहीं है। ऐसा समझ उनका साथ दिया। आगे चलकर पं० छेदीझा भी शर्माजीके आग्रहसे हमलोगोंके साथ होगये। जब हम एस० डी० ओ० के यहां पहुँचे तो, मालूम हुआ कि उनका लड़का बहुत दिनोंसे बीमार था, जिसकी वजहसे वह परीशान थे, वह अब अच्छा हो

गया है। कचहरी बंद करनेके लिए एस० डी० ओ० राजी होगये, मगर खजाना बंद करना उनने पसंद नहीं किया। वे दलील देते कि १ली तारीखको सबोंको मुशाहरा देना है। मेरा कहना था कि अगर खजाना न बंद नहीं रहनेका कारण यही हो तो मैं सबोंको छः महीनेका मुशाहरा देनेको तैयार हूँ। किंतु, मेरी न सुन वे अपनी कहते गये। उनकी न मानने लायक दलीलको मैं माननेके लिए तैयार नहीं था। पर बीचमें पं० छेदी झा बोल बैठे कि खैर १ सितम्बर तकके लिए खजाना बंद रखना छोड़ दिया जाये। मैंने तब वहां आपसमें झगड़ना उचित नहीं समझा और चुप होगया। खजानाको छोड़ कर कोर्टके सब कोठरियोंमें हमारे ताले लगे। कोर्ट बंदकी खुशीमें शामको एक सार्वजनिक मिटिंग हुई जिसमें मुझे भी कुछ बोलना पड़ा। मैंने लोगोंको अगाह किया कि हमें इस तालेबन्दीसे निश्चिंत होकर बैठ नहीं जाना है, यह तालेबन्दी बन्दूक लाने चल पड़ी है, हम लोगोंको अपनी मोर्चाबन्दी इस प्रकार करनी चाहिये कि इस कचहरीकी आवश्यकता ही नहीं रह जाय। यह खुले ही नहीं और खुले भी तो निकम्मी होकर।

१९ अगस्त १९४२ को गणपतगंज सबरजिस्टरी औफिसमें ताले लगाये गये, फिर जनता बड़े समारोहसे प्रतापगंज थानेमें आई जिसमें ताले लगाकर अपना झंडा प्रतापगंजथाना फहरा दिया। २० अगस्तको प्रतापगंज पो० औ० और सुरपतगंज पो० औ० पर ताले लगे और झंडे फहराते दीखे। थानेकी सभी कलाली बंद कर दी गई। जितने अड़गड़े थें, बंद हो गये।

१९ अगस्तकी रातको दो जगहोंमें डकैती हो गई जिसकी खबर २० अगस्तको लोग थाना देने आये। दारोगाने उन लोगोंको कांग्रेस थाना शिविर भेज दिया। कहा—थाना खुलबाओ तब केस लेंगे। वे लोग कांग्रेस थाना शिविर आये। उनका ब्यान लिख लिया गया। पर न तो ये लोग डाकुओंको पहिचानते थे और न किसीपर शक करते थे। लेकिन शिविरके जिम्मेवारोंको दारोगाके पास चलनेके लिए जोर देते थे, आखिर श्री खूबलाल महतो थाना गये, दारोगाने उनको कहा—थाना खोल दीजिये, खूबलाल महतोने थाना खोलना जरूरी नहीं समझा और वापस चले आये। रातके दारोगाने थानाका ताला तोड़ दिया और राष्ट्रीय झंडाको उखाड़ फेंका। सुबहमें यह खबर शिविर पहुँची। शिविरने इस खबरको गांव-गांवमें भेज दिया, निश्चय हुआ १४ अगस्तको थाना फिर बन्द करनेका। उधर दारोगाने बंदूकोंके लिए थाने भरमें अपने आदमी दौड़ाने शुरू किये। कहींसे कोई

मदद नहीं मिली। सिर्फ सुरजापुरके मियाँ साहब अपनी बंदूक खुद चलानेको थानेमें हाजिर हो गये। पर दारोगा साहबका कलेजा कांप रहा था। लोगोंका उत्साह और जमाव देख वे अपने दो एक सलाहकारोंकी बात काट शिविरमें दौड़ आये और बोले 'बांह गहेकी लाज।' उनकी दशा देख कार्यकर्त्ताओंने उनकी बात मानली और उन्हें कांग्रेसका ताला और झंडा अपनी-अपनी जगह लगा देनेको कहा।

२४ अगस्तको लोगोंकी बड़ी भीड़ थानेपर पहुँची और वहाँ अपना ताला और झंडा बरकरार देख शांत होगयी। उनके जलूसने सभाका रूप ले लिया। सभामें वही बाबू रामबहादुर सिंहका भाषण हुआ। खूबलाल महतो, यमुनाप्रसाद मंडल आदिने भी जनताको शांत और संगठित रहनेका आदेश दिया। दारोगा और जमादारपर ताला तोड़ने और राष्ट्रीय झंडेका अपमान करनेका चार्ज था इस-लिए भरी सभामें उन्हें अपनी सफाई देनेको कहा गया। दारोगा बहुत ही सीधे तरीकेसे अपनी सफाईमें सारा कसूर निगल गया और राष्ट्रीय झंडेके सम्बन्धमें बोला कि जिस तरह आपलोगोंके हृदयमें झंडेके लिए इज्जत है। उसी तरह मेरे हृदयमें भी है। फिर उसने और जमादारने झंडे उठाये और सभी लोगोंसे माफी मांगी। जनता संतुष्ट हो गयी और शांतिपूर्वक अपने-अपने घर चली गयी।

डगमारा थानापर २३ अगस्तको जनता जुलूसके रूपमें पहुँची। शांतिपूर्वक थानापर झंडा फहरा दिया। थानेपर ताला लगा दिया गया और कांग्रेसकी मुहर डगमाराथाना देदी गयी। पो० ऑ० को भी इसी ढंगसे मोहर बन्द कर दिया गया। सभी जगहके अमले काम काज बन्द अपने-अपने डेरेमें रहने लगे। थानेमें कांग्रेसका राज्य हो गया। और चिन्ताहरण राय तथा सौदागर सिंह थानेमें घूम-घूम पंचायतकी स्थापना करने लगे।

१३ अगस्तको फौजदारी, दीवानी, रजिस्टरी, पोस्ट ऑफिसपर झंडा फहराया गया। उक्त कार्यमें श्री सर्वेश्वर सिंह और श्री लक्ष्मीकांत प्रसादकी गिरफ्तारी हुई और १४ तारीखको ही छः छः महीनेकी सजा दोनोंको देदी गई। सुबहमें थाना काँग्रेस ऑफिस जब्त कर लिया गया था अतः तारीख १४ को उसका ताला तोड़कर उसपर कब्जा कर लिया गया। सरकारी ऑफिसरोंके दफ्तरपर धरना शुरू किया गया। कांग्रेस ऑफिसपर पुलिसका पहरा बिठला दिया गया था। उसपर कब्जा करनेके लिये प्रतिदिन जत्था भेजा जाने लगा। पुलिसवाले उन्हें गिरफतार करके दिन भर रखते और शामको छोड़ देते। कलालीपर धावे

बाँका

होते रहे। कलालीवालेने थोड़ी शराब नीचे डाल दी। वहाँ उपद्रवकी आशंका देख श्री रमणीमोहन सिंह और श्री तेजनारायण चौधरीने लोगोंको लौटा दिया। थानेके अन्दर २१ कलाली नष्ट किये गये। १२ अगस्तको पंजवारा, महुआ, डौलिया सीलकुड़ियाके तारका सम्बन्ध विच्छेद कर दिया गया। खड़हराके निकट अंडारीचक, बांका-जमदाहा सड़क, बौंसी—समस्तीपुर रोड बांका—बेलहर, बांका अमरपुरका सड़कोंके प्रायः सभी पुल तोड़ दिये गये और सड़कोंपर प्रायः सभी पेड़ काटे डाले गये। नेमुआ पुलको बार-बार तोड़ा गया।

१४ अगस्तको अमरपुर थानाके कार्यकर्ताओंने एक बड़ा जलूस लेकर अमरपुर थानापर धावा किया। थाना चारों तरफसे घेर लिया गया। कुछ बहादुर और अमरपुर तेज सैनिक थानेके मकानके ऊपर चढ़ गये और उसपर अपना तिरंगा झंडा फहरा दिया और थानेके कमरोंमें ताले लगा दिये। अब थानेपर पूरा-पूरा कांग्रेसका कब्जा हो गया। दारोगा साहब मौखिक विरोध करनेके सिवाय और कुछ नहीं कर सके। पीछे थाना कांग्रेस कमिटीके मंत्रीकी अपीलपर राष्ट्रीय-सरकारकी मातहती कबूल की। उनने साफ-साफ कहा कि अबसे हम राष्ट्रीय-सरकारके ऑफिसरोंके हुकुमके मुताबिक अपना काम किया करेंगे। पर दूसरे दिन ही खबर पहुँची कि दारोगा साहबने कांग्रेसकी मातहतीसे इनकार कर दिया है, इसपर राष्ट्रीय-सरकारकी ओरसे थानेपर दूसरी बार चढ़ बैठनेकी तैयारी होने लगी। कार्यकर्त्ता थाने भरमें दौरा करने लगे और सैकड़े ९२ चौकीदारोंकी वरदियाँ जला दीं।

१८ अगस्तको पाँच हजार कांग्रेसी सैनिक थानेपर इकट्ठे हुए। श्री राजवल्लभ सिंह, गिरिवर नारायण सिंह, श्री सन्तोषी शर्मा और चुनचुन कुमार आदि सैनिकोंको नियंत्रणमें रख रहे थे। ठीक दो बजे दिनमें सभी थानेमें घुस पड़े। दारोगा साहब शरणापन्न हुए। थानेके दोनों दारोगाको गाँधी टोपी पहना दी गयी। फिर उनसे नारे लगवाये गये और राष्ट्रीय-सरकारको धोखा देनेके कसूरमें माफी मंगवायी गयी। उनने फिर राष्ट्रीय-सरकारकी मातहती कबूल की। पर अबकी सैनिकोंका जरा कड़ा रुख था। उनने मालखानाको जला दिया। थानेके मकानके एक भागको भी फूँक दिया।

थानेपर कब्जा करके सैकड़ोंकी भीड़ पो० ऑफिसकी ओर बढ़ी। पो० ऑ० को जला कर खाक कर दिया। शराबखाना भी बिलकुल बरबाद कर दिया गया।

ता० १६-८-४२ को दारोगा साहबने अपने और सामानके साथ अमरपुर थाना छोड़ दिया। वे बाँका चले गये। इस तरह अमरपुर थानामें अंग्रेजी हुकूमतका खात्मा हो गया और शासनकी बागडोर राष्ट्रीय सरकारके अफसरोंके हाथमें आ गयी।

ता० १३ अगस्तको अमरपुर थानाके विद्यार्थियोंने स्थानीय विद्यार्थियोंसे मिल कर थानामें ताला लगा दिया। १५ अगस्तको खरौधामें थाना काँग्रेसके कार्यकर्त्ता बेलहर मिले और प्रस्ताव किया कि ९ अगस्तको नेताओंकी जो गिरफ्तारी हुई उसके विरोधमें हड़ताल प्रदर्शनादिका संगठन हो। फलस्वरूप १६ अगस्तको ऐसी हड़ताल हुई जिसमें घसियारेसे लेकर गृहस्थ तक शामिल थे। खेसर, साहब-गंज, झिकलियामें सभा हुई और २० तारीखको एक बड़ी भीड़ बेलहर थानेपर पहुँची, थानेमें काँग्रेसका झंडा गाड़ा गया। मकानको खुला देख उसमें काँग्रेसका ताला लगाया गया। विद्यार्थियोंने कहना शुरू किया कि मकानमें हमने अपना ताला लगा रखा था फिर यह खुला कैसे? उनमें रोष फैला और उनने ठाकुर नरसिंह नारायण सिंह और जगदम्बाप्रसाद सिंहके मना करनेपर भी थानेके कागजात जलाये और फरनीचर भी। उनने थानेदारसे इस्तीफा भी लिखवाया। उनका रुख देखकर थानेदार डर गये, और नरसिंह बाबूसे अपनी हिफाजतके लिए मदद मांगी। नरसिंह बाबूने उन्हें दो अंगरक्षक दिये। बालेश्वरप्रसाद सिंह और जगदम्बाप्रसाद सिंह। सुबहमें अंगरक्षकोंने थानेदारसे कहा कि आप हिफाजतसे अपने घरकी ओर पहुँचा दिये जा सकते हैं। थानेदार बोले कि मैं यहाँसे जाना ही चाहता हूँ पर जानेकी समुचित व्यवस्था हो, और व्यवस्थाका मतलब पूछनेपर उनने कुछ नहीं कहा। कार्यकर्त्ता समझ गये कि वे जाना नहीं चाहते, न जानेका बहाना कर रहे हैं। २० तारीखको साहबगंजमें ग्रान्ट साहबकी कोठीके कागजात जलाये गये। घड़ी, फाउन्टेन पेन आदि सब सामान लूट लिये गये। इस खबरसे कांग्रेसके कार्यकर्त्ता चौंक उठे। वे लूट और आगलगीको नापसंद करते थे। उनके यहां इसके पहले एक और कचहरी जली थी; राज बनैलीकी। १८ अगस्तको जमुईके बाबू गिरधर नारायण सिंह आये थे और किसानोंको बनैली राज्यके अमलोंके जुल्मके बारेमें समझाया बुझाया। किसान उभड़ उठे और बनहतीकी कचहरीको जला दिया।

२१ अगस्तको काशोडीहमें आत्म निरीक्षण और आत्म शिक्षणके लिए सभी

कार्यकर्त्ता मिले। उनने निश्चय किया कि प्रत्येक सर्किलमें शिविर खोला जाये। दूसरे दिन बघौनियाँमें मिटींग हुई जिसमें जिलाके प्रधान मंत्री शशिप्रसाद सिंह श्री नरसिंह मेहता वकीलको लेकर आये। उन दोनोंने बेलहर थानाको तोड़-फोड़का प्रोग्राम बतलाया। तबसे ही यहांके कार्यकर्त्ताओंके विचारमें परिवर्त्तन आया। उसी दिन बेलहर थानामें मिलिटरी आई। उसने फहराते हुए कांग्रेसी झंडेको पिस्तौल मारकर गिरा दिया और फिर बूटसे कुचल कर जला दिया। इससे थाने भरमें बड़ा क्षोभ फैला और २५ अगस्तको एक बड़ी भीड़ थानेपर इकट्ठी हो गई। लोगोंने देखा कि भीष्म सिंह दरोगईसे दो बार इस्तीफा देकर भी दारोगाके लिबा-समें डटा हुआ है और अपने साथ आध दर्जन देशी मिलिटरी रख रखी है। उसकी धोखेबाजी कार्यकर्त्ताओंको खली, उनने उससे जवाब तलब किया। भीष्म सिंहने कहा कि हमतो दारोगा हैं; आपलोगोंको जो करना है कीजिये। कुल भीड़ वापस लौट आई।

२८ अगस्तको भितियामें दो सौ कार्यकर्त्ताओं और अनेक विद्यार्थियोंकी मिटींग हुई। निश्चय किया गया कि हर थानेके सरकारी अड्डोंको नष्ट कर दिया जाये। यातायातके साधन ध्वंसकर दिये जायें। तुरत यानी १८ की रातको ही भितियाका पुल तोड़ा गया और २९ अगस्तको बेलहरथानेपर हमला हुआ। अपने भाई अमृत सिंहके समझानेपर भीष्म सिंह थाना छोड़ भागे। उनने अपनी सम्पत्ति थानेसे हटा ली थी। कार्यकर्त्ताओंने थानेके मैदानमें अपना झंडा फहराया और थानेके सारे मकान चीजोंके सहित जला दिये गये। कोई रोक-थाम करनेवाला न था। मिलिटरी पहले ही चली गयी थी। थानेसे भीड़ बेलहर डाकबंगला गयी और उसे जला दिया। फिर संग्रामपुरका डाकबंगला जलाया। बादको बनैली कचहरीके कागजात जलाने आगे बढ़ी कि लठैतोंसे मुकाबला हुआ। लठैतोंमें जमींदारके सिपाही ही नहीं थे, बल्कि संग्रामपुरके चोर बदमाश भी थे जिनकी रोजी कांग्रेसी व्यवस्थासे मारी जा रही थी। कार्यकर्त्ता पीटे गये। दोको सख्त चोट आयी। तब संग्रामपुर वाले भी डरे। और कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंसे कहा कि आप जांच करवाइये। जो फैसला कीजियेगा हम मान लेंगे। कार्यकर्त्ताओंने जांच कमिटी बैठायी। जिसने संग्रामपुर वालोंसे पाँच सौ रुपए दंड लेनेकी सिफारिश की। उनने दंड देना कबूल किया। फिर तो कांग्रेसी सरकारकी तूती सब जगह बोलने लगी। उसके द्वारा गांव-गाँवकी व्यवस्थापर ध्यान दिया जाने लगा। हिंसात्मक कामने भी खूब जोर पकड़ा। थाने

भरकी सड़कें और पुलको हानि पहुँचायी गई। पाँचो सर्किल पंचके कागजात जला दिये गये। तीनों डाकघर फूंक दिये गये। थानेभरकी कलाली नष्ट कर दी गई। प्रायः सभी जमादारों और चौकीदारोंके वरदी मुरेठा जला दिये गये। सभी स्कूल बंदकर दिये गये।

सरसोकी बैठकके पहले थानेपर जो हमला हुआ उसमें भी तेजी और तैयारीकी कमी न थी। उसका इतिहास भी अपूर्व शहादत और कष्ट सहिष्णुताका उल्लेख पूर्णिया जिला करता है। हां! पुर्णिया शहरमें सरसोकी बैठकके निर्णयके अनुसार जो धावा हुआ सो ही पहला और अन्तिम धावा था। वहां सिर्फ श्री जगमोहन मंडलकी प्रेरणासे जलूस निकलता रहा। १६ अगस्तको तो विद्यार्थियोंका एक बड़ा जलूस निकला। देहातसे भी जलूस समय-समयपर निकलता और शहरके जलूसमें शामिल हो जाता। एकदिन जिला मजिस्ट्रेटने उन लोगोंको हाथके तिरंगे झंडे रखकर चल देनेको कहा। भला यह माननेकी बात थी? लोग अड़ गये और जेसे आये थे वैसे ही जलूसमें सजे धजे चले गये।

मनिहारी थानेपर हमला हुआ १६ अगस्तको। लोगोंकी एक बड़ी तादाद थानेमें घुस गई। उसपर झंडा फहरा दिया और उसके सारे कागजात जला दिये।

मनिहारी

वहाँसे लोग गये और कलालीको जला दिया। फिर स्टेशनकी ओर दौड़ पड़े और उसे भी फूंक डाला। मालगाड़ीके कई डब्बे गंगामें लुढ़का दिये। बंगाल आसाम रेलवेके फ्लेटपर माल लदे थे, उनको लूटसे बचानेके लिये रखवारे फ्लेटको दूर गंगामें लेगये। पर लोग काठके स्लीपरोंको पानीमें डाल उनके सहारे फ्लेट तक तैर गये और उन्हें लूट लिया। फिर मदारीचक डाकघरको जलाया। मालसाही रेलवे स्टेशन और कलालीमें भी आग लगा दी। २० अगस्तको हिमकुंज डाकघर जलाया फिर अमदाबाद कलाली और बैरियाके अड्गड़ेको जला दिया। २२ अगस्तको रोशनाहाटकी कलाली और महादेवपुर डाकघरमें आग लगायी। फिर जलानेको जब कुछ न बचा तब वे गाँव-गाँव ग्राम-पंचायत और ग्राम-रक्षा दलके संगठनमें घूमने लगे।

१६ अगस्तको रुपौली थानापर कांग्रेसका झंडा फहराया जा चुका था, पर १८ अगस्तके निश्चयके अनुसार २५ अगस्तको थानापर चढ़ाई करनेका फिर प्रचार शुरू किया आनन्दीप्रसाद सिंहने। फकरिया, भलारी, रहीपुर, भीखना, अकबरपुर

रुपौलीथाना

भवानीपुर तथा राजधाममें सार्वजनिक सभा करके श्री मोहितलाल,

पं० नेवालाल मेहता और धनुषधारी चौधरीने रुपौली थानापर चढ़ाई करनेके लिए जनतासे जोरदार अपील की। कांग्रेसके १६ प्रोग्रामके अन्तर्गत हथियार छीनना भी एक कार्यक्रम था—यह कार्यकर्त्ता तथा जनताकी दृष्टिमें विशेष महत्व रखता था, इसलिए आनन्दी बाबू तथा अन्य कार्यकर्त्ताओंने अग्रकी बन्दूक तथा हथियार छीननेपर काफी जोर दिया। थानाके दक्षिणी हिस्सेके कुछ अंशोंको छोड़कर प्राय: और सभी हिस्सोंमें इतनी जागृति फैल गई थी कि गांवके मुखियाओंने अपने-अपने गांवके सभी आदमियोंको बुलाकर प्रतिज्ञा करवाली कि हर घरसे कमसे कम एक आदमी तो जरूर ही २५ अगस्तके थाना रेडमें जायगा। फलस्वरूप उस दिन लगभग १० हजार आदमी रुपौली थानापर जमा हुये, थानाके प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री मोहितलाल पंडित उस दिन थानापर नहीं आकर थानेके अन्दर आस-पास ही चंदा वसूलनेका बहाना लेकर घूमते रहे। जनताके लिए विश्वसनीय कार्यकर्त्ताओंका सर्वथा अभाव हो रहा था। इसी समय तीन बजे दिनको श्री नरसिंहनारायण सिंह तथा श्री नरसिंहप्रसाद पूर्णियासे हाजिर हुये। इन लोगोंके आगमनसे जनताकी आँखोंमें विश्वास झलकने लगा और हृदयमें साहसका संचार हो उठा।

इसके पहले ही थानेके प्रमुख सर्वश्री आनन्दीप्रसाद सिंह, लक्ष्मी प्रसाद मंडल, चक्रधर प्रसाद, हेमन्तप्रसाद सिंह, मेवालाल महतो, नागर मल, देवनारायण मंडल, छोटेलाल सिंह, श्रीकान्त झा, दामोदरप्रसाद सिंह तथा गेन्दालाल यादव पहुंच गये थे। ये लोग थानावालोंसे मिलकर कांग्रेसका प्रोग्राम कार्यान्वित करना चाहते थे। पर दारोगा साहब किसी प्रकार भी रास्तेपर नहीं आते थे। सभी चाहते थे कि शांतिपूर्वक आज भी सभी काम सम्पन्न हो जाये। पर ऐसा होता नहीं देख सभीके मनमें क्षोभ उत्पन्न हो गया था। नरसिंहबाबूने पहुंचते ही रोबसे बातें करनी शुरू कर दी और थानाके बड़े दारोगा, छोटे दारोगा, हवलदार और मुन्शीको कालीस्थानमें बैठनेको कहा। फिर हुक्म दिया कि आपलोग जल्दीसे इस्तीफा लिख करके दे दीजिये तथा जो सब रेकर्ड और सामान आदि हैं, उनको राष्ट्रीय सरकारको सुपुर्द कीजिये। बंदूक तो हवाले कर ही देना पड़ेगा, थानापर राष्ट्रीय झंडा फहरा दिया जायगा और हमेशाके लिए यह थाना आजाद थाना घोषित कर दिया जायगा। आपलोगोंको घर चला जाना होगा। और जिस दिन आप लोगोंकी बुलाहट होगी, उस दिन चले आयेंगे। आप लोगोंको आजाद

भारतमें विशेष सम्मानके साथ नौकरी दी जायगी।

दारोगा साहबने जवाब दिया—हमलोगोंसे अभी चाहे जो कुछ भी करा लीजिये पर हथियार देना उतना आसान नहीं जितना कि आपलोग समझते हैं। बात चल ही रही थी कि इस बीच कुछ गुंडोंने जिनको कि उस साल ११० दफामें बांधकर चालान कर दिया गया था और जो अपनी बदमाशीका रेकार्ड जलानेको आतुर हो रहे थे; थाना घरमें आग लगा दी। आग लगी देखकर नरसिंह बाबू आदिने दस-पन्द्रह विद्यार्थीको काली-स्थानमें दारोगा तथा उसके साथियोंके पैर पकड़े रहनेके लिए कहकर थानेको दौड़े। आग बुझवाई और बंदूककी तलाशमें निकले। बड़ा दारोगाका क्वार्टर बाहरसे बिलकुल बंद था। सभीको पहले ही पता चल गया था कि बंदूक उसी घरमें रखा गया है। ज्योंही दीवारपर चढ़कर भीतर प्रवेश करनेका प्रयत्न किया गया कि लोगोंने देखा वहाँ दो-तीन कांस्टेबुल बंदूकमें टोटा आदि भरकर तैयार हैं, जो सिर्फ हुक्म पानेकी प्रतीक्षामें हैं। लोग डरकर दीवारसे उतर आये। फिर थाना घरमें आग लगा दी गई। जिन लड़कोंने दारोगा आदिको गिरफ्तार कर रखा था, समझा कि शायद सब काम समाप्त हो गया है। इसलिए दारोगा आदिने जब अपने पैर छुड़ानेकी कोशिश की तो विद्यार्थियोंने अपने हाथ ढीले कर दिये। ये सभी अपने थानेमें दौड़ आये और सिपाहियोंको कहा कि गोली चलाओ। इतना कहना था कि बंदूक भर कर तैयार सिपाहियोंने दन-दन करके भीड़पर गोली चलानी शुरू कर दी। पहली गोलीका शिकार हुआ बंगाली सहनी और दूसरीका पांचू धोबी। छर्रेसे तो प्राय: बहुत ही आदमी घायल हुये। इधर थानेमें धांय-धांय आग जल रही थी, उधर उसी तरह निहत्थी जनताकी छातीपर नहीं पीठपर गोलियाँ चलाई जा रही थीं। लोग बेतरह घायल हो रहे थे। तीसरी संगीन गोली जब श्री चन्द्रेश्वरी सिंहको लगी, तब जनता भागना छोड़ गोलियोंके बीच अकड़कर खड़ी हो गई और ईंट, पत्थर, लाठी, बांस जहां जो मिला लेकर पुलिसपर आक्रमण करने लगी। दो एकको छोड़ कांग्रेसके कार्यकर्त्ता तो प्राय: भाग चुके थे, अब पुलिसवालोंके पैर उखड़ने लगे। फिर जनताने उनपर हमला किया। महेश्वर बाबू छोटे दारोगा जिन्होंने गोली चलानेका हुक्म दिया था, पकड़ लिये गये। उन्हें इतना पीटा गया कि उनका सारा शरीर खूनसे लथपथ हो गया था। उनको बचानेमें कई कार्यकर्त्ताओंको लाठी लगी। एक तो बेहोश होकर वहीं गिर गया।

फिर किसीको हिम्मत नहीं हुई कि दारोगाजीको बचानेके लिये आगे बढ़े। बेहोश दारोगाको लोगोंने उठा लिया और जलते हुए थानेकी आगमें फेंक दिया। कुछ लोग कुर्बान खांपर टूट पड़े और उन्हें भी लाठीसे चूर-चूर करके थानाकी दहकती भट्टीमें झोंक दिया। कांस्टेबिल भगवान दास और गोरख सिंहने भी लाख हाथ-पैर पटके, पर वे भी क्रुद्ध जनताके जाल फांससे अपनेको छुड़ा न सके और एक-एक करके उसी आगमें डाल दिये गये।

अब जनता, बड़े दारोगा और बाकी कांस्टेबिलको पकड़ने चली। वे सब एक कमरेमें बंद होकर खिड़कीसे गोली चला रहे थे। लोगोंने सोचा कि खिड़की बंद कर दें और धुआँ देकर उनका दम घोंट दें। या तो बेदम होकर वे निकल पड़ेंगे और हमारे हाथों मारे जायेंगे, या भीतर ही ढेर हो जायें तो और अच्छा। श्री सुक्खू भगत खिड़की बंद करनेके लिए आगे बढ़े और ज्योंही खिड़कीको बंद किया कि पतले चदरेके टीनको पार करती हुई गोली आई और उनकी छातीमें धंस गई। वे वहीं चित्त हो गये। इससे जनता घबड़ाई नहीं। वह मिर्चकी गुन्डी और किरासन तेलका लुका बांध-बांध कर पुलिस क्वार्टरमें पहुँचाती रही। पर दारोगा साहब और उनके साथी न निकले। हाँ, उनकी गोलियाँ खिड़की होकर निकलती रहीं। अंतमें जनता थक गई और लौट गई। फिर घोड़ेपर सवार बाबू मोहितलाल पंडित रुपौली पहुँचे और आस-पासके कार्यकर्त्ताओंको जुटाया। सभी विचार करने लगे कि अब क्या करना चाहिये। इसपर सभी सम्मत हुये कि पुलिस-लाशको तत्काल जल समाधि मिलनी चाहिये और सबोंके सहयोगसे लाशको जल समाधि मिल गई। उधर सन्नाटा पाकर अपने कमरेसे दारोगा साहब अपने साथियों समेत निकले और पूर्णियाकी ओर भाग गये।

आजमनगर थानापर तिरंगा झंडा उड़ाता हुआ एक विशाल जन-समूह चढ़ आया। भीड़की संख्या, संगठन और शक्ति देख दारोगा साहब सहम गये। स्वयं-आजमनगर थाना सेवकोंने उनके गलेमें माला पिन्हाई सरपर गाँधी टोपी और उनका टोप लेकर नोच-चोथ डाला। चाहनेपर दारोगाजीने खुद सरकारी कागजात दे दिये जो जला डाले गये। जनताका रुख देख जमादार आपेसे बाहर हो गया। उसने सिपाहियोंको गोली चलानेको कहा; पर उसकी किसीने न सुनी। थानेपर कांग्रेसका कब्जा हो गया, ता० २७ की सुबहमें पुलिस वहांसे चली गयी।

२५ अगस्तको पांच हजारकी जनताका जुलूस निकला। उसने चौराहेपर

दारोगा साहबको गिरफ्तार कर लिया। उनका लिबास उतरवा उन्हें खादीका कुरता धोती पोशाक पहना अपने साथ ले चली। उसने सामान सहित दुर्गागंज डाकघर जलाया, कलाली और अड्गड्डा, फिर डाक बंगला और थाना आगकी भेंट हुए। दारोगा बेचारा टुकुर टुकुर देखता रहा। कभी कभी उसे नारे भी लगाने पड़ते। दूसरे दिन खबर पूर्णिया पहुंची। मिलिटरी आकर दारोगाको कटिहार ले गयी। पूरे एक महीना सात दिन अंगरेजी सरकारका थाना वीरान रहा।

धरहरा (बनमनखी) थानेके संगठनका भार श्री प्रताप साहित्यालंकार, जगमोहन मंडल, सरयुग नारायण, कुंवर निरंजनप्रसाद गुप्त तथा पूर्ण मिस्त्री आदिने धरहरा थाना अपने ऊपर लिया। श्री प्रतापजी स्थानीय छात्रोंके साथ थाने भरके तमाम गांवोंमें घूमने लगे और एक जत्था लेकर चौपड़ा बाजार पहुंचे। हेमराज चौपड़ा पचास चौकीदारोंको भोजन दिया करते थे। ताकि चौपड़ा बाजारको चोर लूटेरोंसे सुरक्षित रखा जाये। प्रतापजीने चौकीदारोंको बुलाया, वरदी-पेटी दे देनेकी अपील की। चौकीदारोंने अपनी-अपनी वर्दी और पेटियाँ दे दीं जो वहींपर जला डाली गयीं। वहाँकी कलाली भी जला डाली गयी। बनमनखी और खूंटका पुल भी नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया।

२५ अगस्तको लगभग हजारोंकी भीड़ बनमनखी बाजारमें इकट्ठी हो गयी। चार सौके करीब तो उसमें संथाल ही शामिल थे जो अंग्रेजो भारत छोड़ो और करेंगे या चाम देंगे के नारे लगा रहे थे। बाजारसे सभी थाने पहुँचे और वहाँ अपना झंडा फहरा दिया।

थानेपर झंडा फहरा लेनेके बाद जलूस कलालीपर टूट पड़ा। कलाली लूट ली गयी और उसकी टंकीमें जो शराब था उसे संथालोंने गट गट पी लिया। वहांसे सभी स्टेशन पहुंचे। स्टेशनके सारे सामान जला दिये गये। संदूक और शीशेको चूर-चूर कर दिया गया। पुलिसवाले स्टेशन पहुँचे और तोड़-फोड़ करनेवालोंको धमकाना शुरू किया। जुलूसके लोग जोशमें आ गये और पुलिसपर लाठी चलाना शुरू किया। दारोगा साहब तो जान लेकर भागे, पर मिलिटरी जो मौजूद थी गोली चलाने लगी। पहली गोली लगी जोगेन्द्रनारायण सिंहको जो दारोगा साहबके बहनोई थे और दारोगा साहबको बचा रहे थे। फिर सनिचर ततमा और धमलाल भगतको गोली लगी जो बाजारसे सौदा खरीदकर घर जा रहे थे। दोनों

वहीं धरतीपर हमेशाके लिए सो गये। भीड़ भाग गयी, हताहतोंकी सेवामें निरंजन प्रसाद गुप्त और जगमोहनजी लगे रहे। पर निरंजन प्रसाद गुप्त २६ तारीखको बाजारमें पकड़ लिये गये। इनपर पुलिसकी इतनी मार पड़ी कि काफी अरसे तक चलने फिरनेके लायक नहीं रहे।

धमदाहा थानापर एक बार ११ अगस्तको स्थानीय कार्यकर्त्ता और विद्यार्थियोंने झंडा फहरा दिया था। और इसके बाद जगह जगह सभा करके थाने भरमें धमदाहा अगस्त क्रांतिके आदेशका प्रचार कर रहे थे, इतनेमें उन्हें सूचना मिली कि सरसी प्रस्तावके अनुसार उन्हें २५ ता० को थानेपर अहिंसात्मक ढंगसे कब्जा कर लेना है। तदनुसार संथाल नेता श्री धतूरानन्द चौधरी, ठाकुर राजेश्वर प्रसाद सिंह, दुल्ला मांझी, भोला कुँवर तथा कुछ विद्यार्थियोंने थानेमें स्वयंसेवक इकट्ठे करने शुरू किये। २५ ता० को १२ बजे धमदाहा थानापर कब्जा करनेके लिये चारो ओरसे जनता आने लगी। कितनी टोलियाँ बाजा बजाती, गीत गाती, उछलती कूदती आईं। ढाई तीन घंटेके भीतर लगभग २५ हजार लोग इकट्ठे हो गये। और सबोंको एक मैदानमें ही रोक रखा गया। केवल प्रमुख कार्यकर्त्ता थाने गये और उनने दारोगाको जुलूसका उद्देश्य बतलाया। थानेपर राष्ट्रीय झंडा फहराया गया। थानेके एक मकानमें ताला लगा दिया गया और बहुत वादविवादके बाद यह तय पाया कि सभी बंदूकोंको मालखानामें रखकर बन्द कर दिया जाय। वहां तीन बंदूकें रख भी दी गयी थीं।

दारोगा साथी सहित अपनी वर्दीमें था, सबोंके पास बंदूकें थीं। देहातसे उसने काफी बंदूकें मंगवायी थीं। लोगोंने साथ साथ गोलियाँ भी भेजी थीं। चालीस गोलियाँ तो केवल एक वीरनारायण चन्द्रने दी थी। धीरे धीरे वादविवादमें बहुत समय लेता हुआ दारोगा स्वयंसेवकोंको अपना कार्यक्रम पूरा करने दे रहा था। कार्यक्रम पूरा भी न हो पाया था कि पूर्णियासे दो दर्जन सशस्त्र पुलिस लेकर पुलिस इन्सपेक्टर आ पहुँचा। आते ही उसने लोगोंको कुन्दोंसे पिटवाना शुरू कर दिया। बहुतसे लोग थानेके निकट पहुँच गये थे। थानेके बरामदेपर खड़े-खड़े हथियार बंदोंने सीटीकी आवाज सुनते ही गोली बरसानी शुरू कर दी। लोग भागने लगे तो भी गोली चलती रही और तब तक चलती रही, जब तक भीड़से मैदान साफ नहीं हो गया। कितने हथियार बन्दोंने तो लोगोंको खदेड़-खदेड़ कर अपना निशाना बनाया। फलतः १५ व्यक्ति तो थानेके हातेमें ही शहीद हो गये। कुछ

आस पासमें गिरे कुछ घर आकर मरे। डेढ़सौके करीब तो घायल हुये जिनकी चिकित्सामें डा० कुमुदरंजन बनर्जीने बड़ी मुस्तैदी दिखलायी। लोग कहते हैं कि मृतकोंकी संख्या ४५ है, जिनमें १७ के नाम उपलब्ध हो सके हैं। धमदाहाके हैं चार—शेख इसहाक, लक्ष्मी भगत, बालो मारवाड़ी और रामेश्वर पासवान; पुरंदाहाके हैं तीन – श्री जगमंगल सिंह; हेमनारायण गोप और बालेश्वर हजरा। खगहाके हैं दो—श्री रामनिवास पांडेय और श्री परमेश्वर दास और हैं चंद्वाके श्री योगेन्द्र सिंह; चंद्रहीके मोती मंडल; चम्पावतीके श्री भागवत धानुक; बजड़ाहाके बाबू लाल मंडल; बरैनाके महेन्द्रनारायण गोप और बरहकोनाके कुसुमलाल आचार्य।

घायलोंमें श्री कमलाकांत ठाकुर, बालेश्वर हजाम, अलाउद्दीन दर्जी, दाहु महतो और झिंगुर महतोके तो अंगभंग हो गये थे। वे चंगे तो हो गये पर हीनांग होकर।

२५ अगस्तको चार बजेके लगभग सुन्दरलालजीके नेतृत्वमें थानापर चढ़ाई हुई, लोग पाँच छः सौके करीब होंगे। पच्छिमके रास्तेसे आकर दारोगाजी भीड़के **बापसी थाना** सामने खड़े हो गये और बोले—इस छोटेसे थानेपर चढ़ाई करनेसे क्या लाभ? भीड़ने उनकी बातोंका ख्याल नहीं किया और थानेमें घुसनेकी कोशिश करने लगी, तब दारोगाजीने गोली दागनेका हुक्म दिया। हुकुम सुन जनता नारा लगाने लगी "पुलिस हमारा भाई है" सिपाही कुछ देर कर्त्तव्यविमूढ़से रहे और फिर उनने बंदूकें रख दीं। अब दारोगाजी क्या करते? उनने हाथमें तिरंगा झंडा लिया, भीड़के साथ-साथ थानेके चारों तरफ घूमे। जनताने थानेके मकानपर एक दूसरा बड़ा झंडा फहरा दिया। बाद दारोगाजी खुद कुछ कागजात ले आये जिसे भीड़ने जला दिया। वहांसे वह भीड़ डाकघर आई और वहां डाक घरका ताला तोड़ सभी सामान निकालकर जला दिया, लेटरबौक्सको भी उसी आगमें फेंक दिया। वहाँसे भीड़ कलाली पहुँची, जिसे उसने बरबाद कर दिया। फिर दार्जीलिंग रोड पकड़ कर भोरा पुलकी तरफ आई और वहाँ दार्जीलिंग रोड खोद कर उसमें नदीकी एक धारा बहा दी। बादको तितर-बितर हो गई।

श्री रविलाल विश्वासके नेतृत्वमें लगभग दो सौ जवानोंने कनहरिया शराबकी दूकानपर हमला किया। ड्रम और बोतलोंको तोड़-फोड़ कर फेंक दिया और फिर, **कनहरियाकाथाना** मकानपर कांग्रेसका झंडा फहरा दिया। वहांसे वह दल अड़गड़ा-पर आया। घेरेको तोड़कर जानवरोंको निकाल भगाया। फिर वापस हो गया। परं

वापस जाते हुए बुकरू और मटकून मंडल पिछड़ गये। जिन्हें कई अड़गड़े-वालोंने पकड़ लिया और लाठी और खूंटोंसे बेरहम होकर मारा। बुकरूके सिर और मुंहसे खून जारी हो गया और मटकून बेहोश होकर गिर पड़ा। हल्ला सुन वह दल फिर पीछे लौटा, और अपने दोनों साथियोंकी दुर्दशापर क्रोधान्ध हो गया। उसने अड़गड़ेके घरमें आग लगा दी। घायलोंको गाड़ीपर लाद कर ले आया। बुकरू मर गया जिसकी अन्त्येष्टी क्रिया बड़ी धूमधामसे मनाई गयी।

रानीगंज थानाके प्रधान कार्यकर्त्ता सत्यनारायण भगतने एलान किया कि २० अगस्तको हमें थानेपर कब्जा करना है। फिर गाँव-गाँवमें अंग्रेजी हुकूमतके खिलाफ रानीगंजथाना प्रचार होने लगा और उसपर हमले भी होने लगे। १६ अगस्तको चुन्नीदासने छतियौनमें एक डाकियाको पकड़ लिया। उसकी डाकको बरबाद करके उसे वापस लौट जानेको बाध्य किया। महथवा हाटमें भी एक दूसरे डाकियेसे डाक छीनकर जला दी गयी। फिर लोगोंने यूनियन बोर्डपर छापा मारा और जो मिला जला अररियासबडिविजन दिया। २० अगस्तको रानीगंजमें सत्यनारायण भगत सदल-बल पहुंचे। आते ही उनके दलने पोस्ट ऑफिस और यूनियन बोर्डके कागजात नष्ट कर दिये। फिर कलालोंके शराब-गांजेको बरबाद करते हुए अपने आश्रम पहुँचे। थानेवाले सतर्क थे। खबर मिलते ही कि श्री सत्यनारायण भगत साथी सहित अपने आश्रममें आये हैं, दारोगा साहब वहां गये और भगतजी और उनके और साथियोंको जो खाने-पीनेका इन्तजाम कर रहे थे गिरफ्तार करके हाजतमें बंद कर दिया। उनको इन लोगोंको खिलाने-पिलानेकी कोई परवाह न थी। पर थानेका हमला रुका नहीं। तीन बजेसे लोग इकट्ठे होने लगे और चार बजे छः हजारकी भीड़ थाने पहुँची। नायक गणेशलाल वर्मा और जीवनलाल चौधरीने दारोगासे कहा कि हमलोग थानेपर झंडा फहरायेंगे, उसपर अपना कब्जा करेंगे। हथियार बंद पुलिसकी परवाह न कर जीवन चौधरी थानेके मकानपर फांद गये और वहां उनने अपना झंडा फहरा दिया। वर्माजी थानाके सभी कमरोंमें ताला लगाने लगे। पर पुलिसको ऐसा मंजूर न था। उसने इनको कमरे बन्द करनेसे रोका पर भीड़ थानेमें घंसती गयी; वह थानेको सब तरहसे अपने कब्जेमें करनेपर उतारू हो रही थी। पुलिसने आसमानी फायर किया, पर भीड़ न हटी। वर्माजी भीड़को समझा बुझा ही रहे थे कि उनपर एक पुलिसने गोली दागी, वे घायल होकर लुढ़क गये। फिर तो अंधाधुंध गोली चलने लगी। दर्जनों घायल हुये

पर सख्त घाव लगा काली दासको जो अन्डर ट्रायल अवस्थामें ही जानसे हाथ धो बैठे। तुनुकलाल यादवजी सख्त घायल हुए पर बच गये। पर गुलाबचंद यादवको अपना एक पैर खोना पड़ा और सीतारामको अपने दहिने हाथकी अंगुली। गोली कांडके बाद दारोगाने गणेशलाल वर्मा और जीवनलाल चौधरीको घायलोंकी शुश्रूषाके लिए बुलाया और जब वे आये तो गिरफ्तार कर लिया। इस गोलीकांडसे रानीगंजके कार्यकर्त्ता घबराये नहीं। राम चरित्र सिंह, भोला प्रसाद, कलानन्द सिंह, रामकृष्ण विश्वास, और जीहुमंडल इलाके भरमें घूमने और यूनियन बोर्ड और कलालीको ध्वंस करने लगे। फलतः सितम्बर चढ़ते-चढ़ते थानेभरमें न एक बोर्ड बचा और न एक कलाली।

२२ अगस्तको लाळगंज हाटपर एक वृहत सभा हुई, कांग्रेसका सन्देश सुनाया गया। जनतामें सरकारको उलट देनेका एक विचित्र उमंग काम करने लगी। **कुंआरी थाना** २३ अगस्तको कुर्साकांटामें डाक छीनली गयी। कलालीको जब्तकर ताला लगा दिया गया। उसके शराबको बहा दिया गया। नौ सर्किलके चौकीदार, तहसीलदार और पंच सबोंने राजी खुशी अपना-अपना इस्तीफा दाखिल कर दिया। डाकघरको जब्त कर लिया गया। कुंआरीकी कलाली शराब बहा करके जब्त करली गयी और डाकघरके कुछ कागजात जला दिये गये। तीन बजे दिनको एक बड़ी भीड़ने थानापर चढ़ाई की और विधिपूर्वक झंडा फहराकर थानेको अपने कब्जेमें कर लिय

सिकटी थानेपर १६ अगस्तको ही रघुनंदन भगत और सुखदेव ठाकुरकी देख- **सिकटी थाना** रेखमें चढ़ाई हुई और झंडा फहराया गया।

किशनगंज सबडिविजनमें आन्दोलनकी प्रगति बड़ी धीमी रही। हाँ, किशन- गंज कचहरीपर एक हजार प्रदर्शनकारियोंको लेकर शराफत अली मस्ताना गये **किशनगंज सबडिविजन** और झंडा फहरा आये। इनने जब्त शुदा कांग्रेस औफिसपर भी धावा किया और सरकारी ताला तोड़ उसपर अपना दखल जमा लिया। पर तुरत ही गिरफ्तार कर लिये गये।

जहान अली मस्ताना अपने पांच साथियों सहित बस्ती-बस्ती जुलूस निकालते रहे। उनने टेढ़ा गाछ थानापर १३ अगस्तको चढ़ाई की, उसपर अपना **टेढ़ागाछ थाना** झंडा फहराया और जब्त शुदा कांग्रेसके तालेको तोड़ कर उसपर कब्जा किया। बादमें साथी सहित गिरफ्तार कर लिये गये।

१७ अगस्तको चोपड़ा और ठाकुरगंजमें भी जुलूस निकले और थानोंके सामने प्रदर्शन हुये। ठाकुरगंजकी पुलिसने लाठी चार्ज करके कितनोंको घायल कर दिया। दोनों थानेमें तार काटे गये और रेलवे लाइन उखाड़ी गयीं।

कलक्टरको सूचना दे दी गयी कि २७ अगस्तको कांग्रेसकी ओरसे जिला हुकूमतपर हमला होगा। सरसी-प्रस्तावके अनुसार सर्वप्रथम श्री लक्ष्मीनारायण पूर्णिया शहर सिंह 'सुधांशु' को उस हमलेका नेतृत्व करना था, उनकी अगर गिरफ्तारी हो गई तब श्रीबैद्यनाथ चौधरी को। श्री लक्ष्मीनारायण सिंह 'सुधांशु' पूर्णियाके लिये समयसे पहले रवाना हुये। रेलगाड़ीकी सफर थी। एक सरकारी जाने पहचाने अफसरसे मुलाकात हो गई। साथ ही उतरे; डाक-बंगले आये। पुलिसको खबर लग गई जो उन्हें गिरफ्तार कर ले गई। पर गिरफ्तारी इतनी पहले हुई कि श्री बैद्यनाथ चौधरीके लिये पर्याप्त समय रहा पूर्णिया आने और हमलेका नेतृत्व करनेका।

२७ अगस्तको खूब सबेरे श्री बैद्यनाथ चौधरी पूर्णिया पहुँचे। शहरमें प्रवेश करते हुये जब वे मधुबनी चौराहेपर आये तब श्री शुकदेव कुंवरसे मिले। कुंवरजी उन्हें अपने अड्डेपर ले गये और चुपके चुपके धीरे धीरे कार्यकर्त्ताओंको उनसे मिलाना शुरू कर दिया। तय हुआ कि तीन बजे जलूस निकाला जाय और उस वक्त जो जहां हो वहींसे चौराहेके लिये रवाना हो जाय। परिस्थिति ऐसी थी कि एक जगहसे जलूस बांधकर निकालना असंभव था।

जिला मजिष्ट्रेटने पहलेसे ही काफी तैयारी कर रखी थी। चारों तरफ कड़ा पहरा था और मिलिटरीकी लॉरियां दौड़ रही थीं। पुलिस अजनबीसे जिरह करती; सन्देह हुआ कि पीटने लगती और गिरफ्तार कर लेती। तो भी दोपहरको झुण्डके झुण्ड लोग शहरमें प्रवेश करने लगे। बैलगाड़ी, घोड़े और साइकिलोंका तांता सा लग गया। पुलिसने लाठी चार्ज किया, कितनोंको बेतरह घायल कर दिया और जहां लाठी बेकार साबित हुई वहां बन्दूकसे काम लिया। महिनाथपुरके पार्वती महतो लाठीकी मारसे अधमरा हो गिर गये और ठढ़हाके श्री कुताई साह तो गोली खाकर शहीद हो गये। फिर भी ३ बजे मधुबनीसे श्री बैद्यनाथ चौधरीका जलूस निकला ही। उन्हें चौराहेकी ओर आते हुये कितने जलूस दीख पड़े। वे १५ मिनिट ही चले होंगे कि भगवान बाबू मजिष्ट्रेटने उन्हें खींच लारीमें रख लिया और उनके साथियोंपर लट्ठ बरसाने लगे। तुरत मिलिटरी लारी भी एक ओरसे आकर

सामने खड़ी हो गई। मिलिटरीको देख पुलिसकी लाठी और चोट करने लगी। श्री वैद्यनाथ चौधरीने भगवान बाबूसे कहा कि क्यों स्वयंसेवकोंको इतना पिटवा रहे हैं ? वे बोले—जहां लाठीकी मार रुकी, गोलीकी मार शुरू हो जायगी। सामने मिलिटरी लारीको देखते हैं नहीं।

जलूसके प्रायः सभी पीटे गये पर श्री हरदेव प्रसादको खूब चोट आयी। वे जब जब लाठी खाते, नारा लगाते—पुलिस हमारे भाई हैं, और इस नारासे उत्तेजित हो पुलिस उन्हें और पीटती। अन्तमें हरदेव बाबू बेहोश हो गिर गये और पुलिसने उन्हें उस लारीमें पटक दिया जिसमें वैद्यनाथ बाबू बैठे थे। शाम तक भीड़ तितर बितर हो गई।

१७ अगस्तको बाबू बालेश्वर प्रसाद सिंहने सारठके कार्यकर्त्ताओंको लेकर थाना और डाकघरपर चढ़ाईकी। उन दोनों जगह कांग्रेसके झंडे फहराये **संथाल परगना** और ताले लगा दिये गये। फिर पालोजोरीपासकी भट्ठियां बंद कर दीं, गन्डसारा डाकघरमें भी ताला लगाया और झंडा फहराया। बादको थानावालोंने कांग्रेसका ताला तोड़ दिया और झंडेको नोच फेंका। इसकी खबर पाकर कार्यकर्त्ताओंका विद्रोही मन भड़क उठा और उनने चारों ओर खबर भेजी कि थानाको मटियामेट करना है। २४ अगस्त हाटका दिन था। विभिन्न दिशाओंसे विभिन्न विचारके लोग दल बांधकर आ रहे थे। कोई दल नारा लगाता, झंडा फहराता आता और कोई टोकरी और बोरे लिये आता। दोपहर तक लगभग दस हजारकी भीड़ इकट्ठी हो गई। इधर सारठ थानाके अधिकारियोंने भी काफी तैयारी कर ली थी। आसपासके घरवालोंसे सरकारके नामपर बंदूकें मंगाली गईं थीं। थानेभरके चौकीदारोंको जमा कर रक्खा गया था जिनमें किसीका हाथ खाली न था। दोनों दारोगा और जमादार बंदूक लिये मुस्तैद थे और चौकीदार भाला फरसा लिये थानेको घेरकर खड़े थे। उन्हें जैसे ही मालूम हुआ कि खास-खास कार्यकर्त्ता हाटमें जुट गये हैं, वे आगे बढ़े और सुरेश प्रसाद झा, बिगुराय, दशरथराय, हेमराजराय और गोपेश्वर मंडलको गिरफ्तारकर लिया। उनकी सतर्कता और तैयारी देख जनता किंकर्त्तव्य विमूढ़-सी होगयी। च्यार बज गये थे, और आगे बढ़नेकी कोई हिम्मत नहीं कर रहा था। इसी समय सर्वैजोरके कामदेव सिंहने उन्हें उत्साहित किया और वे सब बड़े जोरसे थानेपर टूट पड़े। दारोगा साहबने उनपर गोली चलानी चाही पर सर्वैजोरके सूर्यनारायण

सिंहने बड़ी फुर्तीसे उनकी बंदूकके कुन्देमें इस ढंगसे अपना हाथ मार दिया कि निशाना चुक गया। फिर दारोगा और उसके साथियोंपर भूखे बाघकी तरह लोग टूट पड़े। सबोंकी बंदूकें छीनी गईं। जमादार भाग गया। पर दूसरा दारोगा बंदूकके नालसे ही आहत होकर गिर गया। उसपर और भी मार पड़ी जिससे वह बेहोश हो गया। बड़े दारोगा भागनेकी कोशिशमें पकड़ लिये गये। उनपर भी लाठी-मुक्का, घूंसा और लातकी वर्षा होने लगी। बेचारे बेहोश हो गये। दोनोंको कुछ कार्यकर्त्ताओंने सुरक्षित स्थानमें पहुँचाया और डाक्टर लाकर आवश्यक मरहम पट्टी करवायी। थानेके और सरकारी लोग भाग खड़े हुए। फिर थानेकी लूट शुरू हुई। कार्यकर्त्ताओंने अपने गिरफ्तार शुदा साथियोंको साथ ले लिया, फिर सात बंदूकों और अन्यान्य हथियार सहित थानेसे निकल आये और थानेमें आग लगा दी। बादको उनने अन्नगोलाके कागजात जलाये। अन्नको उनके दलवालोंने लूट लिया। फिर उनने पोस्ट ऑफिसमें आग लगा दी और शराबकी भट्ठीको तोड़-फोड़ दिया। शाम हो चुकी थी। प्रोगाम खत्म हो चुका था। धीरे-धीरे लोग अपने-अपने घर लौट गये। थाना और पोस्ट ऑफिस रात भर जलते रहे।

'कप्तान' परमानन्द सिंहकी अध्यक्षतामें एक सार्वजनिक सभा हुई, जिसमें पास हुआ कि सरावां थानेपर कांग्रेसका कब्जा होना चाहिये। अध्यापक और विद्यार्थियोंको सरावां लेकर जनता आगे बढ़ी और स्कूलके नजदीक झंडा भिवादन किया। वहांसे वह बाजार आयी। बाजारमें चारों ओरसे क्रांतिकारी नारे लगाते हुये दलके दल आ रहे थे। सब वहीं मिले फिर तो जनताकी तादाद बहुत बड़ी हो गयी। एक जुलूस निकला जो थानापर पहुँच नारा लगाने लगा—'अंग्रेजों भारत छोड़ दो' 'पुलिस हमारा भाई है'। पुलिस उनकी ओर देखती रही और लोग धड़ाधड़ थानेमें घुस आये। उनने मुहाफिजखानाके तालेको तोड़ दिया और कागजात उठा-उठाकर बाहर लाने लगे। 'कप्तान' का हुक्म हुआ--उन्हें जला दो। कागजात जला गये दिये। दारोगा साहबने रोकनेकी कोशिश की तो उन्हें दो-चार घूंसे खाने पड़े। बादको थाना ऑफिसपर राष्ट्रीय झंडा फहराया गया और कांग्रेसी सरकारकी ओरसे बाबू बैजनाथ सिंहको थानाका दारोगा बना दिया गया। पुलिसकी वर्दी पेटी छीन कर जला दी गई और उनको सरकारी नौकरी छोड़कर आजाद सरकारके आन्दोलनमें शरीक होनेके लिये कहा गया। कितनोंने अंग्रेजोंकी नौकरीसे इस्तीफा दे दिया—आजाद सरकारकी सेवा कबूल की और फिलहाल छुट्टी

लेकर घर चले गये। जुलूसने आगे चलकर पोस्ट-ऑफिसका भी तालाको तोड़ दिया। उसके कागजात जला दिये और उसपर आजाद सरकारका कांग्रेसी झंडा गाड़ दिया। बाजारकी शराबकी दूकान बिलकुल बरबाद कर दी गई।

राजमहलके कार्यकर्त्ताओंने एस० डी० ओ० और पुलिसको सूचना भेजी कि १७ अगस्तको हमलोग कोर्ट और अन्यान्य सरकारी इमारतोंपर झंडा फहरायेंगे। राजमहल फिर वे संगठन कार्यमें लग गये। राजमहल थाना कांग्रेसके सभापति श्री शारदाप्रसाद रायसे इन्हें सहयोगका वचन तो मिला पर सभापति साहब वचन देकर लापता हो गये और वचन पालन करवानेका मौका किसीको न दिया।

सत्रह तारीख आई। छात्रों और जनताकी भीड़ कोर्टकी ओर बढ़ी। मंत्री श्री जगदीशप्रसाद सिंह अपने सहकारी गणेश प्रसादजी, हरेश्वरजी, महेन्द्रजी, रत्तू मरांडी, गंगा सिंह पहाड़िया, नन्दकिशोर शाह और शेख कदीमुल्लाको लेकर स्कूल आये और छात्रोंसे मिलकर स्कूलपर झंडा फहराया। वहांसे कोर्टपर झंडा फहरानेके लिये रवाना हुये। सरकार सतर्क थी। पर उससे भी सतर्क थे स्थानीय हिन्दूसभाके मंत्री श्री सदानन्द राय वकीलजी। हरवे हथियारसे लैस वे सरकारकी हिफाजतके लिये बड़े मुस्तैद दीख पड़ते थे।

भीड़ आई और उसने कोर्टपर झंडा फहरा दिया। उसे शान्त देख एस० डी० ओ० उसकी कार्रवाईमें बाधक नहीं हुये। बादमें थाना, डाकघर, रजिस्टरी आफिसकी इमारतोंपर झंडे फहराये गये।

दूसरे दिन जगदीश प्रसादजी हरेश्वर प्रसाद, गणेश प्रसाद और नन्दकिशोर-जीको लेकर कोर्टमें ताला लगा देनेके लिये वहां पहुँचे। पुलिस सावधान थी। उसने इन सबोंको गिरफ्तार कर लिया।

पर राजमहल कोर्टको बन्द करनेकी इच्छा दबी नहीं। राजमहलके एक प्रधान कार्यकर्त्ता पं० रामकृष्ण आचारीने फिर एक बार ३० अक्तूबरको कोर्ट-बन्दीका प्रोग्राम बनाया और कार्यकर्त्ताओंको एकत्र करने लगे।

जब अगस्त आन्दोलन शुरू हुआ तब आप अपने घर बलियामें (संयुक्त प्रान्त) बेतरह बीमार पड़े थे। जब चंगे हुये तब वकीलोंकी सलाह मानकर इनके पिताजीने कहा—बेटा, नेपाल जाओ। पिताजीकी आज्ञा पाकर बेटा १५ सितंबरको घरसे निकले और पैदल, नावसे और रेलसे दस दिनकी सफर तय करके पहुँचे राजमहल

अपने कार्यक्षेत्रमें। वहां सहकारियोंसे मिलने-जुलने राजमहल दामिनमें घुसे। बांझीमें सभा की, बालदहमें लोगोंसे मिले और फिर देवपहाड़ होते हुये बारहेत बाजार पहुंचे। साथमें थे श्री जयराम मुरमू और महेन्द्र प्रसाद। बाजारमें बड़ी भीड़ लग गयी जिसे अपना प्रोग्राम बतला ही रहे थे फिर पुलिस और परगनैत पहुंचे और तीनोंको गिरफ्तार कर लिया।

जामताराके कार्यकर्त्ता थाना और कचहरीपर झंडा फहरानेके लिये उत्सुक थे और श्री सत्यकाली भट्टाचार्यके नेतृत्वकी प्रतीक्षा कर रहे थे। सत्यकाली बाबू एक जामतारा दल लेकर आये और यहांके कार्यकर्त्ताओं और जनतासे मिलकर जलूस निकाला। उस जलूसने पहले थानापर झंडा फहराया जिसके कुछ कागजात जला दिये गये। वहांसे जलूस कचहरी पहुंचा और उसपर भी शानके साथ झंडा फहरा दिया।

संथाल परगनेमें बड़ा जबरदस्त आन्दोलन हुआ दामनेकोहमें। इस आन्दोलनके नायक थे श्री प्रफुल्लचन्द्र पट्टनायक जो सत्याग्रहके एक साधक रहे हैं। उनने आप दामनेकोह बीती लिख दी है। संवेदनायें तथा अनुभूतियां अन्यान्य कर्मठ सत्याग्रही कार्यकर्त्ताओंकी संवेदना तथा अनुभूति जैसी ही रही हैं। इसलिये उनकी आप बीतीका अधिकांश उद्धृत किया जाता है।

दामनेकोहको एक शब्दमें दामिन कहा जाता है। यह संताल परगनेके जंगलोंका वह हिस्सा है जिसमें अधिकसे अधिक संताल और पहाड़ियोंका निवास है और सरकारने जिसे ताड़के वृक्षोंसे घेरकर एक अलग स्थान-सा बना दिया है।

दामिन चार हैं—दुमका, गोड्डा, राजमहल और पकौड़ सबडिविजनोंमें फैले थे। हर दामिनको अनेक बंगलोंमें बांट दिया गया जिनमें तीन-तीन मीलका अन्तर है। हर बंगलामें एक वा दो परगनैत रहते हैं जिन्हें एक दारोगाका अधिकार रहता है पर जो एक राजाके अधिकारोंका प्रयोग करते हैं। बंगला दामिनका थाना है, कचहरी है और ठहरनेका घर भी है और उसका पहाड़ियोंपर जनवसा आतंक रहता है। पहले दामिन कार्यकर्त्ताओंके लिये अगम्य था मगर अब वो परिस्थिति नहीं है। अब भी शासन सीधे सरकारके हाथ है। क्षेत्रफल है १,३३८ वर्ग मील।

इस दामिनमें श्री पट्टनायक-दलने हुकूमतपर कब्जा करनेके लिये प्रवेश किया। उसने बंगलोंपर कब्जा किया और प्रजाको उनकी मातहतीसे मुक्त करके कांग्रेस

सरकारका पोषक बनाया। इसलिये उनकी कार्रवाइयां तोड़-फोड़ और फूंक-फांक जैसी दीख पड़नेपर भी अलग-सी लगती हैं। श्री प्रफुल्लचन्द्र पट्टनायक लिखते है—"पहले पोड़ैया और पीछे अमड़ापाड़ाको केन्द्र बनाकर संताल पहाड़िया सेवासंघने संताल और पहाड़ियोंके बीच पिछले डेढ़ वर्षोंसे कुछ रचनात्मक काम किया था। इन लोगोंके पेटकी समस्याओंको हम समझ चुके थे। इसलिये रास्ते भर हम यही सोचते जा रहे थे कि उन लोगोंके बीच कौन-कौनसे आन्दोलन शुरू करने चाहियें और कैसे? जंगल-सत्याग्रहका भविष्य अच्छा था। इस सत्याग्रहमें सरकारी जंगलको काटकर उसमें खेती शुरू कर देनी थी जिसे कुरवा कहते है। हम लगानबन्दीकी बात भी सोच रहे थे और सोच रहे थे सरकारी आफिसोंपर कब्जा कर लेनेकी बात भी।

"जंगल सत्याग्रह छेड़ देना आसान था। केवल एक हुक्मनामेको व्यापक रूप देकर प्रचार भर कर देना था। पर बातोंके लिये व्यापक संगठनकी जरूरत थी। अतः आमड़ापाड़ा पहुंचते ही मैंने संताल और पहाड़ियोंमें काम करनेवाले मुख्य-मुख्य सरदारोंको बुलवाया। पिछले दो तीन महीनोंमें कुरवा (पहाड़ी खेती) की गड़बड़ीके संबन्धमें हमारे संघके पास सैकड़ों दरखास्तें पहुँच रही थीं और हमलोग उन सभी गड़बड़ीकी जांच भी कर रहे थे। इस गड़बड़ीको जंगल विभागके सरकारी सिपाही और औफिसर फैला रहे थे और यह पहाड़ियों और साथ-साथ हमलोगोंके लिये भी असह्य हो रही थी। मैं और श्री सत्यकाली भट्टाचार्य दोनोंने एक दो स्थानोंपर जाकर ऐसी गड़बड़ीका निपटारा कर दिया था और संताल-पहाड़ियोंके हकोंकी रक्षा की थी। इसलिये इनका विश्वास हमलोगोंपर काफी जम गया था। इनके बीच कुरवाकी समस्याको उठाकर ही आन्दोलन शुरू करना मैंने अच्छा समझा।

"इसके अलावा मैं संताली और पहाड़िया कार्यकर्त्ताओंको देशकी राजनीतिक हल-चलोंकी जानकारी कराता रहा। उन्हें 'हरिजन-सेवक' और 'सर्वोदय' पढ़ पढ़ कर सुनाता रहा और इस आखिरी लड़ाईमें कुछ अपनी आहुति भी चढ़ानेको प्रोत्साहित करता रहा। अन्तमें हमने एक स्थान निश्चित किया जहां अधिकसे अधिक जनताको इकट्ठा करनेके लिये उन कार्यकर्त्ताओंको चारों ओर भेज दिया। आन्दोलन चलानेके लिये हमारे पास रुपये नहीं थे और आन्दोलन चलाना जरूरी हो गया था—इस बातको मैंने उन लोगोंके आगे रक्खा था। उनका हमें जो उत्तर

मिला उससे हमको बड़ी तसल्ली हुई और बड़ा भरोसा हुआ। उनने तो हमारे निराश मनको आशासे भर दिया। वे बोले—"हमें तो बाबू, अपने अधिकारके लिये लड़ना है और हम जब तक लड़ेंगे घासपात खाकर लड़ेंगे; हमारे खानेकी फिकर तुम मत करो। हमें फिकर है कि तुम्हें हम जंगलोंमें क्या खिला सकेंगे।" मेरे लिये तो इतना ही काफी था। मैंने उनसे कहा कि उस सभामें एक हुक्मनामा सुनाया जायगा जिसमें संतालों और पहाड़ियोंको काफी हक दिया हुआ है।

"इस तथा कथित हुक्मनामेको मैंने और श्री के० गोपालनने मिलकर बनाया था। इसमें सारे सरकारी जंगलोंको काटकर खेती शुरू कर देने, लगान साफ कर देने, छोटे छोटे जंगली टिकस न देने, सभी सरकारी मकानों आफिसोंपर कांग्रेसी सरकारकी ओरसे कब्जा कर लेनेकी बात लिखी हुई थी। हुक्मनामेके आखिरी हिस्सेमें यह बात भी जाहिर की गयी थी कि चौकीदारसे लेकर परगनैत (जंगली दारोगा) तक और फॉरेस्टरसे लेकर रेंजर तकको—यानी सबोंको—कांग्रेसी सरकारने खारिज कर दिया है; अब इनकी बात कोई न माने। अगर ये लोग अपनी बात मनवानेके लिये जोर जुलम करें तो शान्त रहे पर कोई बात माने नहीं।

"१६ अगस्तको सुबह चार बजे ही उठकर हमने आमड़ापाड़ासे विदाई ली। ११ लाख संताल और पहाड़ियोंके लिये १३,३३८ वर्गमीलके भीतर आन्दोलन चलानेकी मंसा ले हम सिर्फ छः साथी कुछ कागज पेनसिल और सिर्फ तेरह रुपये लेकर चले सिर्फ ईश्वर ही पर अपने आपको छोड़कर। हमारे भीतर सिर्फ साहस और विश्वास ही काम कर रहा था। निश्चित स्थानपर हम संध्याको पहुँचे। रास्तेमें सिवाय दो चार आंवलेके और कुछ खानेको नहीं मिला। पहाड़ी नदियोंकी तेज धाराको पार करनेमें बड़ी कठिनाईका सामना करना पड़ता था। हमने देखा कि जब कि सारे हिन्दुस्तानमें काफी उलट फेर हो चुका है सारा जंगल सोया हुआ है। हमलोगोंके प्रचारसे भी उसमें तेजी नहीं आ रही है; कुछ उत्सुकता भर जग जाती है। हमारे पहुँचे दो तीन घंटे ही हुये होंगे कि दुमकासे श्री कृष्ण प्रसादजी एक साथी सहित आ पहुँचे।

"श्री कृष्ण प्रसादजीने बाहरकी सारी खबर दी, कितने परचे दिये और श्री मोतीलाल केजरीवालके भेजे सौ रुपये भी आगे रक्खे। मैंने श्री केजरीवालसे सौ रुपये मांगे थे मगर उनने कहा नहीं कि मैं रुपये दे सकूँगा। इस मौकेपर अकस्मात् जो रुपये मिले उसे मैंने भगवानका ही भेजा हुआ पाया। फिर मैंने परचे देखे,

१६ प्रोग्रामवाला परचा भी देखा और विचार मग्न हो गया।

"१६ प्रोग्रामोंमें एक था अस्त्र-शस्त्रोंको छीनकर सुरक्षित स्थानोंमें रख देना। क्या ऐसा प्रोग्राम गांधीजी दे सकते हैं ? हम दो ही मतलबसे अस्त्र-शस्त्र ले लेंगे। हम उनसे कभी काम लें या हमारे दुश्मन हमें उन शस्त्रास्त्रोंसे मार न सकें इसलिये हम उनसे शस्त्रास्त्रोंको छीन लें। मैंने समझा, पहली बात तो नहीं पर दूसरी बातके लिए गांधीजीने ऐसा हुक्म दिया हो; क्योंकि किसीको भी अधिकार है कि वह आक्रमण करनेवालेका वार शान्तिमय उपायसे रोके। उस प्रोग्रामके आखिरमें यह भी बात थी कि सारे काम 'अहिंसात्मक उपाय और तरीकोंसे हों।' इससे विश्वास जम-सा गया कि हो सकता है गान्धीजीने ही ऐसा प्रोग्राम दिया हो। इस बार अहिंसाका स्थूल-रूप उन्होंने इसलिये रखा हो कि वह सर्वजन सुलभ हो सके।

"साथीसे सब समझ-बूझकर मैंने अपने प्रोग्राममें थोड़ा परिवर्तन कर लिया। सोचा कि सरकारी आफिसों वा इमारतोंके ऊपर दखल कर लेनेका कोई भी अर्थ नहीं होगा। हमलोगोंके चले जानेके बाद उसपर फिरसे सरकारी कर्म-चारियोंका दखल हो जायगा। इसलिए उन्हें क्यों न नष्ट कर दिया जाय। सोलह प्रोग्रामकी स्थूल अहिंसाकी बातपर सोचते हुए मैं इस निश्चयपर पहुँच गया कि सरकारी इमारतोंको गिरा देना बशर्ते उन इमारतोंमें कोई न होवे और न किसीकी व्यक्तिगत सम्पत्ति रहे—शायद हिंसा नहीं होगी।

"२१ अगस्तकी सुबहमें स्त्रियोंकी सभा हुई, सभी स्त्रियाँ नूतन वस्त्र धारणकर पहुँची थीं और अपनी अपनी औकातके अनुसार एक पैसासे एक आना तक आन्दोलन चलानेके लिये चन्दा लाई थीं। मैंने उनसे अन्दोलन चलानेके लिये प्रत्येक घरसे एक-एक मर्द मांगा और उन्होंने इसे मंजूर किया। सभामें यह भी तय हुआ कि जबतक आन्दोलन चलता रहे वे तुलसी-वृंतपर आन्दोलनकी सफलताके लिये प्रार्थना भी करेंगी। संध्याको मर्दोंकी सभा हुई और सांझतक करीब डेढ़सौ चुने हुए सत्याग्रही हमारे तय किये हुए कानूनको मानते हुए आन्दोलनमें भाग लेनेको तैयार हुए। उन्हें हमारी ओरसे कहा गया कि अपने-अपने घरोंसे वे २३ अगस्तको विदा होकर पहाड़पुरमें इकट्ठे हों और आते समय अपने साथ एक-एक लाठी, एक-एक रस्सी और कुल्हाड़ी, गैंती, फावड़े और साबलमेंसे कोई एक चीज लेते आवें।

"हम सिर्फ १३ व्यक्ति उसक्के पहुँचे। हटियामें सभा की। सारी हटिया साथ थी। शराबकी भट्टीके मालिकने पश्चिम मुंह होकर कसम खाई कि शराब नहीं गोड़ा बेचूंगा और सबोंके सामने ताजा शराबके दो ड्रम बहा दिया। जबजब टीनमें बहा देनेके लिये शराब ढाली जाती शान्त जनता गान्धीजीकी जय बोलकर अपना उल्लास प्रकट करती। शराब चुआनेके सारे सामान मालिकने अपने नौकरोंसे फोड़वा दिया। हाँ! जब हमलोग मकान जलानेके लिये तैयार हुए तब उसने विनती की कि ऐसा नहीं किया जाय ताकि वह वहां रहकर दूसरा धन्धा शुरू कर सके। उसकी बात मानली गई। फिर उसी ग्रामका फॉरेस्ट आफिस कब्जेमें लाया गया और उसमें रहनेवाले सिपाहियोंकी व्यक्तिगत सम्पत्ति हटवाकर उसमें आग लगा दी गई। पहाड़िये इसको जलाते हुये बहुत प्रसन्न हो रहे थे क्योंकि यही आफिस अनेकों जायज और नजायज जंगली टैक्सों और जुरमानोंके रूपमें इनकी गाढ़ी कमाईका आधा हिस्सा बरबादकर देता था।

"२३ .अगस्त हमारे लिये महत्वका दिन था। इस दिन हमने अपना संगठन किया और पहली और बड़ी चढ़ाईके लिये तैयार हुए। हमने ग्यारह-ग्यारहकी एक-एक टोली बनाई और पांच विभागमें बँट गये। पहला विभाग भोजनका प्रबन्ध करता था; दूसरा विभाग जासूसी करता था यानी संबाद लाता लेजाता और दुश्मनोंकी टोह लेता; तीसरा सड़कोंको बड़े-बड़े पेड़ गिराकर जाम करता, चौथा बंगलों और पुलोंको तोड़ता और पांचवा विभाग दुश्मनोंको गिरफ्तार कर लेता था। पांचवे विभागमें फुर्तीले जवान थे जो दर्शकोंके वेशमें दुश्मनोंके आसपास खड़े रहते थे और हमारा इशारा पाते ही उन्हें तुरत रस्सियोंसे बांध लेते थे। उनकी कमरमें बांधनेकी रस्सी छिपी रहती थी।

"करीब दो बजे हमारे जासूसोंने खबर दी कि चांदना बंगलेकी रक्षाके लिये सैकड़ोंकी संख्यामें चौकीदार और परगनैत इकट्ठे हैं और हमारा सामना करनेके लिये उनके पास भाले, बरछे, तलवार और बन्दूक भी हैं। पहाड़ियोंको स्थितिकी भयंकरता मालूम हुई। फिर भी वे हमारे साथ चले ही। हमारे हाथमें लाठियां थीं और स्थिति जटिल हो जानेपर हम लाठियां साधारण तौरपर चलानेके लिये तैयार भी थे। हमारे कतारबंद लोगोंको दूरसे ही देखकर हटियाके लोग आतंकित हो उठे और भागने लगे। पर हमारे मना करनेपर वे लौटे। नजदीक पहुँचते ही चौकीदारोंमें कुछ आतंक आगया और हमारे पांचवे विभागने, जिसके लोग

हमारे पहले ही वहां पहुँचकर उनके बीच खड़े थे और हमारी सीटीकी प्रतीक्षा कर रहे थे—परगनैतकी बन्दूक उठनेके पहले ही उसको उनसे छीन ली और उन्हें गिरफ्तारकर लिया। चौकीदार और बाकी परगनैत भाग गये। आज सुबह ही हमारे जासूसोंमेंसे दो युवक इनके द्वारा गिरफ्तारकर लिये गये थे, उन्हें काफी मार लगी थी, हमारे वहाँ पहुँचनेपर वे मुक्तकर लिये गये। यहाँ एक बंगला, एक फॉरेस्ट आफिस जला दिया और शराबकी भट्ठीकी शराब वगैरहको बरबाद करके भट्ठीवालेकी प्रार्थनापर मकानको छोड़ दिया। यहाँ हमें एक बन्दूक और बीस गोलियाँ भी हाथ लगीं। गिरफ्तारशुदा परगनैतको समझा-बुझाकर हमने छोड़ दिया।

"२४ अगस्तको हमने गोड्डाकी सड़कको पेड़ गिराकर जामकर दिया, दो काठके पुलोंको उखाड़ फेंका, फिर बोकड़ा-बाँध बंगलाको जला दिया। वहाँसे हमलोग सुसनी आये। फॉरेस्ट आफिसको जलाया और सुसनी भट्ठीको बरबादकर दिया। यहांसे आमड़ापाड़ाके आफिसोंपर धावा करनेके लिये रात-ही-रात जासूसोंको चिट्ठीके साथ भेज दिया।

"२५ अगस्तको हम दो दलोंमें बँट गये। एक दल गया डूमरचीर बंगलाको और दूसरा आलूबेड़ाको; आलूबेड़ामें सरकारी कर्मचारियोंने विरोध करनेके बदले सहायता दी। फॉरेस्ट आफिस शांतिपूर्वक हमें सौंप दी गई। हमने आफिस और बंगलेको जला दिया, भट्ठीको तोड़-फोड़ दिया। आलूबेड़ाके एक सज्जनने हमें सहायता देनी चाही। हमने सहायता लेनेसे इनकार किया। इससे उनको बड़ा दुःख हुआ। उन्हें दुःखी देख हमने अपनी राय बदली और उनसे कहा—आप सप्रेम जो दे सकें हमें दे दें। उनने हमारी भारी जमातके हर आदमीके लिये आध सेर चावल, आधसेर दाल और कुछ तरकारी दी। वहांसे हम डूमरचीर गये जहाँ हमारा दूसरा दल पहुँच चुका था। वहाँ जाकर देखा—बंगला फॉरेस्ट आफिस और भट्ठी सभी जल रहे हैं। स्थान सुनसान था। साथियोंने कहा कि सभी डरके मारे घरमें छिपे हैं। हमने सबोंसे बातेंकी फिर तो सभी निकले और खुशीसे मिले। उनने बतलाया कि पुलिस-इन्सपेक्टर मि० जेम्सने कहा कि तुम सबोंको लूटनेके लिये संताल और पहाड़िया लोग आवेंगे; तुमलोग भाले और बरछोंसे उनका मुकाबला करना। पर ऐसे मौकेपर पुलिस भाग खड़ी हुई; इसलिये जनता भी घर छिप रही।

"इस जंगलके आन्दोलनको चलानेवाले हम तीन साथी थे। दूसरे और तीसरे थे मि० के० गोपालन और श्री कृष्ण प्रसाद। जब हम तीनों तिलाईपाड़ामें विश्राम कर रहे थे तब एक साथीने कहा—पासमें रेंजरका (जंगलका एक ऊँचा अफसर) ऑफिस है; उसपर कब्जा करना चाहिये और वहां जो हजार-दो-हजार रुपये मिलें उन्हें ले लेना चाहिये ताकि आन्दोलन चलानेके खर्चेसे हम बेफिक्र हो जायं। हम दोको उनका प्रस्ताव मंजूर न था। इसपर वह अलग एक दल लेकर अपनी योजनाके अनुसार काम करनेको तैयार हो गये। पर हमने देखा कि ऐसे समयमें फूट जाना किसी योजनाके हितकी बात न थी। इसलिये उन्हें काफी समझा बुझाकर प्रस्ताव वापिस करवा लिया। पर साथ ही हमने अपने दलका पूर्ण संगठन कर लेना आवश्यक समझा।

"हमलोगोंमेंसे कुछने आलूबेड़ाके बंगलेकी कुछ सुन्दर-सुन्दर चीजें और सुन्दर कपड़े-लत्ते अपने उपयोगके लिये रख लिये थे जबकि ऐसी चीजोंके रखनेकी हमारी मनाही थी। ऐसे व्यक्तियोंको तो आज बिलकुल छांट ही दिया गया और साथ ही और भी करीब डेढ़ सौ व्यक्तियोंको दूसरी जगहका प्रोग्राम देकर भेज दिया गया। अब हमारे साथ डेढ़ सौ ही चुने चुने व्यक्ति रहे।

"यहां हमें आमड़ापाड़ा और चांदनाका पत्रवाहक मिला। अनेक कारणोंसे हमने आमड़ापाड़ा जाना बन्द कर दिया। हमारे चान्दनासे चले आनेके बाद गोरोंकी दो लारियां वहां दूसरे दिन पहुँची थीं। लोगोंने उनके आगे हमारे दलका भयंकर चित्र खींचा। गोरे कुछ रुके पर बादको मोटर आगे बढ़ाई। फिर उन्हें रास्तेमें बड़े-बड़े वृक्ष कटे मिले; पुल टूटे मिले तब लारियां घुमाके गोड्डा लौट गये। जाते हुये उनने पहाड़पुर गांवसे काफी मुर्गियां लूट लीं।

"२७ अगस्तको हमारा दल सिलिंगी बंगला पहुँचा। इस बंगलेमें साधारण सब-इन्स्पेक्टरसे लेकर गवर्नर तकके रहनेकी अलग-अलग व्यवस्था थी। कीमती साज सामान थे। पूराका पूरा बंगला आसपासकी जनताके ऊपर काफी अत्याचार और जोरजबरदस्ती करके बनाया गया था। जब इसे तोड़ा गया, लोग काफी हर्षोत्फुल्ल थे। यहांका फॉरेस्ट आफिस भी नष्ट किया गया। रास्तेको जाम भी कर दिया गया। फिर हमने एक पुल भी नष्ट किया। दूसरे दिन हम बड़ पहाड़ीके फॉरेस्ट आफिसको और केंदुआकी भट्ठीको बन्द करके सिलिंगी पहुँचे। वहां पता लगा कि हमारा पीछा हथियारबन्द पुलिस पैदल और मोटर साइकिलोंपर कर रही है;

उसको तैनात करनेवाले हैं गोरे जो आमड़ापाड़ामें इकट्ठे हो चुके हैं। पुलिस सिलिगी तक कल आई थी और सड़क कटी देख लौट गई। चारों तरफकी सड़कें हम बन्दकर चुके थे। अब हमारा दुःसाहस हुआ कि गुड़्गाजोरोकी ओरसे जो सड़क गोड्डा गयी है और जिस सड़कसे गोरे गोड्डा पहुँचे हैं उसे काट दें। फिर तो कुछ गोरे जंगलमें घिर जायंगे और कुछ गोड्डामें ही पड़े रहेंगे और दुमकापर हमारा कब्जा आसान हो जायगा। गोड्डासे दुमका आनेके सभी रास्ते बन्द थे, और दुमकामें नाममात्रको फौज रह गई थी क्योंकि वहांके अधिकारी संताल और पहाड़ियोंके विद्रोहकी भयावनी कल्पना कर रहे थे और हमारे दमनके लिये काफी फौज सबडिविजनोंमें और जंगलोंमें भेज चुके थे। दुमकाकी ऐसी स्थिति १५ दिनों तक रहती। इसलिये ७ दिनोंके भीतर हमें उसपर दखल कर लेना था।

"हमारा पहला काम था चार बड़ी बड़ी सड़कोंको काट देना जो दुमकासे रामपुर हाट, दुमकासे देवघर, दुमकासे गोड्डा और दुमकासे पकौड़ गयी हैं। हमें एक हजार आदमियोंकी और ५००) रुपयोंकी जरूरत थी। हमने बीसको साथ रखकर बाकी सबोंको आदमी बटोरनेके लिये भेज दिया और एक पुलको तोड़ते हुये दुमकाको चले।

"२९ अगस्तको हमने एक पहाड़ीकी चोटीपर डेरा डाल रखा था और अपने जासूसोंकी प्रतीक्षाकर रहे थे। ठीक उसी पहाड़ीकी राहसे मोटरोंके आनेकी आवाज हुई। मोटरें दस थीं, गोरोंसे भरी हुईं। विभिन्न स्थानोंकी प्रदक्षिणा करती हुई शामको वे सब लौट रही थीं। उस पहाड़ीके पास वे नहीं रुकीं लारगंजकी ओर बढ़ती गईं। रातको जब हम कोरैया पहुँचे तब अपने जासूससे भेंट हुई। जासूसने कहा कि गोरे रातको जंगलमें नहीं ठहरते; उन्हें हमारे दलके आक्रमणका भय रहता है। रातको एक नदी-गर्भमें बिताकर दूसरे दिन हम दुमका पहुंचे।

"दुमकामें गोरोंका आतंक था। कोई कुछ करना नहीं चाहता था। हां! अमुक ठाकुर मिले जिनने २४०) रु० दिये और दुमकाके कुछ अफसरोंको मार डालनेकी सलाह दी। पर हम सहमत न हुये। रातको कुछ सरकारी और अर्द्ध-सरकारी अफसरोंसे भेंट की। उनसे मालूम हुआ, हमारा आन्दोलन कितना भयंकर माना जा रहा है। उनने कहा कि उन्हें तो समय देखकर ही काम करना है। हां! दुमकाके विद्यार्थियोंमें जोश था पर सभी हिंसा चाहते थे। मेरे समझानेपर उनका एक दल स्कूलकी पिकेटिङ्ग करनेके लिये तैयार हुआ। वहां बड़े-बड़े पुलोंको तोड़नेके

लिये एक साथी मिले जो इसके लिये बारूदका प्रयोग करते। हमलोगोंने बारूद वगैरहका संग्रह करनेके लिये एक साथीको रुपये देकर भेजा।

"दुमकासे हम देवघर आये। वहां हमारे कामको तारीफ हुई। हमें (५०) रु० मिले और कहा गया कि दुमकाका काम खत्म करके मैं राजमहल दामिनमें काम शुरू कर दूँ। रात श्री शिवरामभाजीके यहां कटी जहां गिरफ्तार होनेसे मैं बाल बाल बचा। पुलिस वहां आई, भाजीको गिरफ्तार करके ले गई और मुझे नौकर समझ छोड़ गई।

"दूसरे दिन मैं गुरुकुल वैद्यनाथ धामके विद्यार्थियोंसे मिला। उनमें चार काम करनेके लिये तैयार हुये। उनको लेकर देवघरसे रवाना होनेवाला ही था कि मैं १०३° ज्वरसे पीड़ित हो गया। श्री उपाध्याय मिश्र विद्यार्थियोंको लेकर चले पर रास्तेमें ही विद्यार्थियोंके साथ गिरफ्तार हो गये। मैं लाचार था और मेरे साथ मेरे दो साथी भी लाचार हो गये। उन्हें भी ज्वरकी सख्त पीड़ा होने लगी। दो महीने तक हम सब रोगी रहे। इस बीच हमने बारी-बारीसे दो दल भेजा जिन्हें उन एक हजार लोगोंको प्रोग्राम देना था जिन्हें हमने दुमकाकी चढ़ाईके लिये खास स्थानपर इकट्ठा होनेको कहा था। दोनों दल निराश होकर लौट आये। जब हमें मालूम हुआ कि खास जगहपर हमसे प्रोग्राम लेनेके लिये संताली और पहाड़िया लोग इकट्ठे हुये और वहां किसीको न देख वापस चले गये तब हमें बड़ा दुख हुआ।

"१३ अक्तूबरको हम साहबगंजको रवाना हुए। मि० के० गोपालन अभी भी काफी बीमार थे इसलिये उन्हें छोड़कर ही जाना पड़ा। साहबगंजमें किसीसे परिचय नहीं था। इसलिये वहां हम कुछ नहीं कर सके। साहबगंज हमने छोड़ दिया और राजमहल पहुँच श्री भगवान चन्द्रदासके घर ठहरे। उन्होंने हमें साफ कह दिया कि कल सुबह ही हमारे घरसे आपलोग चले जायं। नहीं तो पुलिसके पूछनेपर मुझे साफ-साफ आपलोगोंका नाम बता ही देना होगा। हम दूसरे दिन श्रीचरण मुर्मूसे मिले; उन्होंने भी कुछ मदद नहीं की। आखिर हम ठिकेदारोंके वेशमें पहाड़ टपकर राजमहल दामिनके भीतर पहुँचे; श्री ठट्टू मुर्मूसे मिले और उन्हें तीन दिनोंके भीतर कार्यकर्त्ताओंको बुलानेके लिये कहा। ५ नवम्बरको खूंटा पहाड़पर सभा हुई और वहींसे करीब ७०-८० व्यक्तियोंका हमारा एक दल गम्भरियाकी भट्ठीको जलानेके लिये रवाना हुआ। भट्ठीमें

रखी हुई व्यक्तिगत सम्पत्तिको निकलवाकर भट्ठी जला दी गयी।

"जब हमारा आन्दोलन गोड्डा, दुमका और पकौड़के दामिनोंमें चल रहा था उसी समय हरएक सबडिविजनके एस० डी० ओ० सतर्क हो गये थे। उनने हरेक बंगलोंमें घूम-घूमकर वहांके परगनैतोंको यह हुक्म दिया था कि हरेक बंगलोंमें वहांके क्रिश्चियन संतालों और मुसलमानोंको लेकर एक-एक रक्षक-दल बनावें। वे दिन-रात बंगलेकी रक्षाके लिये पहरा भी दें। फिर बंगलोंपर सैकड़ोंकी संख्यामें लोग सुलाये जाने लगे। जो इस काममें मदद नहीं करता था वह काफी सताया जाता था। रक्षादलको परगनैतकी ओरसे यह हुक्म भी था कि वे हमलोगोंको मार भी दे तो कोई हरज नहीं। पर हम निडर अपनी राह बढ़ रहे थे।

"६ नवम्बरको हम रकसी पहुँचे। रास्तेमें हमने लोगोंईकी भट्ठी जलाई। हमारे पहुँचते ही हमारे पाँचवें विभागने बंगलेके रक्षकको पकड़कर बांध लिया; पर वह जोर लगाकर भाग निकला और सीधे परगनैतके घर पहुँचा। गांव भरमें ढोलकी आवाज गूंजने लगी। आवाजपर श्री रत्तू मरांडी जो हमारे संताली दलका एक मुख्य सरदार था काफी घबड़ाया। वह हमें जोर-जोरसे कहने लगा—बाबू, भाग चलो, यह जुलाहोंकी बस्ती है हमें मार डालेंगे। बंगला जल चुका था। वह काम खतम समझकर और आफतको आता देखकर भाग खड़ा हुआ। हमारा भरोसा पाकर बाकी सब लोग तीर तानकर खड़े हो गये। गांववाले डरसे एकबार हटे पर परगनैतने अपने दलको ललकारा। उसने धमकी दी कि अगर वे भागेंगे तो जिस तरह बंगला जल रहा है उनके घर भी जला दिये जायेंगे। फिर तीर धनुष लिये हुए परगनैतकी ललकारपर गांववाले बढ़े जिससे हमारे दलका साहस टूट गया और पहाड़िया लोग भाग खड़े हुए। उनको भागते देख गांववाले हमारी ओर दौड़े, फिर तो हम सबके सब भागे। भागते हुए बड़ी आत्म-ग्लानि हो रही थी। मैंने देखा मेरे पीछे बहुतसे साथी पकड़ लिये गये थे और बेतरह पीटे जा रहे थे। तीन मीलपर मैं, मेरे साथी श्रीकृष्ण प्रसाद एक घरमें छिपे हुये पकड़े गये। मरणान्तक मार लगी। जब हमको मालूम हुआ कि वे हमें मार ही डालेंगे तब हमने उन्हें सूचना दी कि हमें पुलिसके हाथों लगा देनेसे उन्हें एक हजार रुपये मिलेंगे तब उनने हमें मारना बन्दकर दिया।

जब हम दोनों बंगले लाये गये तो हमने देखा हमारे ही जैसे और नौ व्यक्ति जमीनपर पड़े हैं। श्रीदुर्गो टुडू तो १० मिनटके भीतर खतम हो गये और तीन साथी

श्रीबबुआ पहाड़िया, श्रीमैसा सिंह पहाड़िया और श्रीदुखन बनवार इस तोड़ रहे थे। इस दोनोंके पैरोंपर और पीठपर जैसी चोट थी उसके बारेमें क्या लिखा जाय। ८ नवम्बरकी सुबहको हम राजमहल जेलमें डाल दिये गये। अपने बचे हुये २५०) रु० बड़ी सावधानीसे हमने एक परिचित कांग्रेसीको सौंप दिये।

एक जानकारने लिखा है कि ८ नवम्बरको राजमहल जेलमें १० घायल पहुँचाये गये—प्रफुल्लचन्द्र पट्टनायक, श्रीकृष्ण सिंह, बाबू सिंह पहाड़िया, मैसा सिंह पहाड़िया और दुखन बनवार, ठट्ठू मुर्मू, रघू मुर्मू, परन टुडू, संग्राम मुर्मू और नयन हासदा। बड़ी तत्परतासे इनकी दवा होने लगी। सुइयां पड़ने लगीं। पर बैरक दुर्गंधसे भरा रहने लगा। बाबू सिंह पहाड़ियाके नीचेका जबड़ा छिद गया था। उस जबड़ेके सभी दांत लाठीसे तोड़ दिये गये थे जो लटक रहे थे। मैसा सिंह पहाड़ियका पैर इस तरह कटा था कि मालूम होता था नाममात्रको ही लगा है। श्रीपट्टनायकके ऊपर इतनी मार पड़ी थी कि सारे शरीरमें जमे हुये खूनके काले-काले धब्बे दीख पड़ते थे। वे दूसरेके कन्धेका बल लेकर चलते, प्रसन्न रहते और पूछने पर कहते भाई! चोट तो बेतरह लगती थी पर आह कैसे करता; वह तो अपनी लड़ाई थी। ऐसे बलिदानके साथ राजमहल ही नहीं बल्कि समूचे दामने कोहकी हुकूमतपर जो हमला शुरू हुआ था उसकी समाप्ति हुई।

रांची जिलामें राजनीतिक चेतना भगतोंमें है और भगत चाहे वह संताली, मुण्ड, या उड़ांव वगैरह क्यों न हों, गान्धीजीके सत्याग्रह अस्त्रके कायल हैं। रांची श्रीप्रफुलचन्द्र मित्रने उनके आगे तोड़ फोड़ और धावेका प्रोग्राम रक्खा जिसे भगतोंने मान तो लिया पर अपने ढंगसे ही काम करना शुरू किया।

उनका जत्था मंदार, रांची सदर, कुरूवेरो आदि थानेपर धावा करने लगा। वहां पहुँचकर जत्थेके भगत कार्यकर्त्ता नम्रतापूर्वक पुलिससे बोले कि आप थाना खाली कर दीजिये, इसपर कांग्रेसका कब्जा हो गया। पुलिसपर उनकी नम्रताका कुछ भी प्रभाव न पड़ा। उसने उन्हें ही थानासे निकल जानेको कहा और जिनने निकलनेसे इनकार किया उन्हें हिरासतमें ले लिया।

२३ अगस्तको एक मजेदार घटना हुई। आठ-नौ टाना भगत कोतवाली और सदर थानाको कब्जामें लाने पहुँचे। 'महात्मा गान्धीजीकी जय; अंगरेजो, भारत छोड़ दो' आदि नारे लगाये और थानेके हातेमें झंडा फहराया। दारोगाने उन्हें गिरफ्तार न करके कहा—आपका काम पूरा होगया आपलोग अब घर जाइये। भगतोंने घर

जानेसे इनकार किया; बोले—आप थाना खालीकर दीजिये, नहीं तो हमें गिरफ्तार कीजिये, अगर गिरफ्तार नहीं किया तब हम तो घर हरगिज न जायेंगे, अपने दूसरे दूसरे काम करेंगे। दारोगा चतुर था। भगतोंको कौन कौन दूसरे काम करने हैं, जानना चाहा। भगतोंने कहा—हमें तार काटना है, रेलकी पटरियां हटानी हैं, सड़क जाम करना है। पूछनेपर उन्होंने बता दिया कि प्रतुल बाबूने ऐसा प्रोग्राम दिया है और जब प्रतुल बाबूने दिया है तब कांग्रेसका ही प्रोग्राम होगा।

आदर्श गोसेवा संघके व्यवस्थापक अलौरी नारायणशेखर जिन्होंने गुमला सबडिविजनमें अच्छा काम किया। थाना, डाकघर, अन्त शुदा कांग्रेस आफिसपर अधिकार करनेकी कोशिश की गई। जगह ब जगह तार काटे गये।

२२ अगस्तको खूंटी सबडिविजनमें घूमते घामते श्रीप्रतुलचन्द्र मित्र गिरफ्तार कर लिये गये और उनकी राह बनानेवाला परवा भगत पुलिसके चंगुलसे बच निकला। गुमला सबडिविजनमें विध्वंसक प्रोग्रामका प्रचार करता हुआ वह एक महीनेके बाद पकड़ा गया।

१६ अगस्तको कई थानोंपर धावे हुये। सतगावां थानेपर धावा करते हुये हजारीबाग जलूसमें से श्री ब्रजनन्दन प्रसाद गिरफ्तार कर लिये गये। उन्हें साल भरकी सजा मिली।

चतरामें श्री रामानुग्रह प्रसादजी, नागेश्वर प्र० सिंह और अब्दुल हई साहब, श्री नन्दकिशोर भगत और शालिग्राम सिंह वगैरहने जलूस लेकर सरकारी कचहरीपर धावा किया। उनको लेकर और पचीस प्रमुख कार्यकर्त्ता गिरफ्तार हो गये।

हंटरगंजमें पंडित जगदेव दुबे, श्री गयाप्रसाद सिंह और मुलुकधारी सिंहने जलूस लेकर थानेपर धावा किया। थानापर ताला लगा दिया गया। पर पीछे और पुलिस आई और सबोंको गिरफ्तार कर लिया। जोरीसे भी लोग धावेमें शामिल होने आये पर पकड़ लिये गये।

श्री रामानन्द तिवारीने जमशेदपुरके इलाकेमें अगस्त क्रान्तिकी जड़ जमाई। ३ सितंबरको पुलिसके हरेक बैरेकसे राष्ट्रीय झंडा फहराने लगा। साकचीका बड़ा सिंहभूम जमशेदपुर पुलिस स्टेशन क्रान्तिकारी कनस्टबिलोंके कब्जेमें आ गया। इस केन्द्रसे वे बिस्टोपुर, गोलमुरी, जुगसलाई थानों और पांच नाकोंकी व्यवस्था करने लगे। श्री रामानन्द तिवारीने किसी अंगरेज अफसरको इन थानोंमें घुसने नहीं

लिया। और थानांकी व्यवस्था, डायरी वगैरह भरना खुद मोख्तार होकर शुरू कर दिया। तिवारीजी सुपरिटेन्डेंटके पास गये, उसे अपनी जगह खाली कर देनेको कहा। उसने दो दिनका समय मांगा।

पुलिस गान्धी टोपी पहने कौमी झंडा उठाये रोज परेड करती और खुला विद्रोह जनताकी भावनामें उफान पैदा कर देता।

५ सितंबरको इन्सपेक्टर जेनरल औफ पुलिस हवाई जहाजसे जमशेदपुर पहुँचा और तिवारीजीको सरकिट हाउसमें बुलाया। तिवारीजीके वहां जानेसे इनकार करनेपर वह खुद बैरेकमें आया और तिवारीजीको समझाने लगा। उसने कहा कि कांग्रेसके फेरमें मत पड़ो, पड़ोगे तब बरबाद हो जावोगे। राज भक्तिकी सपथ याद करो और पहलेकी तरह काम करने लगो। हम तुमको सुबेदार बना देंगे और तुम्हारे जो १५ साथी हैं उनमें एक एकको हवलदार।

श्री रामानन्द तिवारीने कहा कि हम अब कांग्रेसके हो गये हैं। हम अंगरेजी राजका खातमा चाहते हैं। हम सुबेदारी हवलदारी नहीं चाहते। हम अपने नेताओंको छोड़ाना चाहते हैं। जिन्हें अंगरेजी सरकारने गिरफ्तार करके कहीं छिपा रक्खा है।

ऐसा सुनकर आई० जी० वहांसे चला गया और तिवारीजी अपनी जमातके संगठनमें लग पड़े।

पूर्व निश्चयके अनुसार श्री सत्यकिंकर महतोंने जो पुराने और अनुभवी कांग्रेस कार्यकर्त्ता रहे हैं, ५०० का जलूस लेकर मान बाजार थानापर धावा किया। मानभूम राहमें जलूस भट्ठियोंको जलाता, सड़कोंको काटता, डाकघर और चौकीघरको भस्मसात करता आया था। थाना वाले सशङ्क थे। जलूसके पास पहुँचते ही उनने उसे आगे बढ़नेसे मना किया। पर जलूस बेपरवाह बढ़ता गया। खाली फैरकी चेतावनी भी उसे डरा न सकी। तब पुलिस गोली दागने लगी। फल स्वरूप चूनाराम महतो छातीमें गोली लेकर तत्काल शहीद हुये और गोविन्द महतो अस्पताल जाकर एक दो दिनके बाद। घायलोंकी संख्या तो लगभग ५० थी, पुलिसने घायलोंकी ओर ताका भी नहीं। हां! मरनासन्न गोविन्द महतो जब 'पानी-पानी' चिल्ला रहे थे और उनको पानी पिलानेके लिये उनके कई साथी आगे बढ़े तब पुलिसने साथियोंकी ओर राइफल तानकर उन्हें भाग जानेको कहा और एकको जो नहीं भागा गिरफ्तार कर लिया। पीछे गहरी रकम घूसके रूपमें देकर

उस पानी पिलानेकी कोशिश करनेवालेने पुलिससे अपना पिण्ड छुड़ाया।

जितानके भजहरि महतोके दलने बन्दवान थानापर धावा किया और पुलिसके देखते न देखते उसपर कब्जा करके उसके कागजात और सामानादि जला दिये।

पटमदा थानाको कब्जा करनेके लिये जो दल निकला उसे राहमें तोड़ने और जलानेके लिये अनेक सड़क पुल और चौकसीघर मिले। दल ज्यों ज्यों आगे बढ़ता गया त्यों त्यों उसमें बहुत लोग शामिल होते गये। अन्तमें दल कुमीर पहुँचा दस बारह हजार लोगोंको लेकर।

वहाँ लोगोंको खबर मिली कि एक हवागाड़ी जा रही है जिसे पकड़ने लोग दौड़े। हवागाड़ीपर मजिष्टर थे। उनके मना करनेपर भी कुछ लोगोंने पत्थर फेंके और तीर भी चलाये। फलस्वरूप गोली चली जिससे कितने घायल हुये और लक्ष्मण महतोको अपनी एक टांगसे हाथ धोना पड़ा।

पलामू जिलेके लेसलीगंज थानेपर एक बड़े जन समूहने हमला किया। थानेदारसे उसके अगुओंने कहा कि कांग्रेस सरकारकी ओरसे हम इसे दखल करेंगे। आप

पलामू

हमारे भाई हैं; अंगरेजी सरकारकी गुलामी छोड़ हमसे मिल जाइये और अंगरेजी हुकूमतको मिटा देनेमें हमारे मददगार बनिये। मगर दारोगा साहबने तो वैसा पाठ पढ़ा ही नहीं था। उनने लोगोंको थानासे निकल जानेको कहा और वर्दी उतारनेसे भी इनकार किया। नतीजा हुआ कि लोगोंने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और थानेपर अपना दखल जमा बैठे। बादको कई लोग आये और कार्यकर्त्ताओंको समझा बुझाकर थानेदारको मुक्त कर दिया। पर थाना मुक्त न हुआ। अरसे तक वहां तिरंगा झंडा फहराता रहा।

जन-व्यवस्था और जनता राज

बिहारकी जनताने देखा—रेल, तार, सड़क छिन्न-भिन्न ; डाक और रजिस्टरी बन्द हैं; जहां तहां थाने उजाड़ हैं और कितने थानोंमें तिरंगा झंडा फहराते हुए कांग्रेसके स्वयंसेवक क्रान्तिके नारे बुलन्द कर रहे हैं और किसी कोनेमें भी अंगरेजी सरकारका नाम लेवा पानी देवा सर उठाता नजर नहीं आरहा है। बस, उसने मान लिया, अंगरेजी राज उठ गया; जनता राज कायम हो गया। पर कार्यकर्त्ता वस्तु स्थितिसे अपरिचित न थे। वे मानते थे कि अपने क्षेत्रसे हमने अंगरेजी अमलदारी उठा दी है पर जानते थे कि प्रान्त अभी अंगरेजी राजमें ही है और जब तक जेलका फाटक खोलकर हम अपने नेताओंको अपने बीच व्यवस्थापकके रूपमें नहीं ले आते हम निश्चिन्त नहीं हो सकते। इसलिये वे चौकन्ने रहे और जहां जहांसे सरकारी अड्डोंको उखाड़ सके वहां वहां शक्ति संगठनमें लग गये। जिन्हें छोटा क्षेत्र मिला यानी कुछ गांवोंका, उनने पंचायतकी स्थापना करके वहां शान्ति तथा सतर्कताको पनपाना शुरू किया; जिनके क्षेत्रमें एक या अनेक थाने आगये उनने वहां पंचायतका जाल-सा बिछा दिया, पंचायतोंको एक दूसरेसे संबद्ध किया और उनके द्वारा जनताके जानमालकी हिफाजतका इन्तजाम किया; उनकी स्थापित इस जन-व्यवस्थाको सफलता भी मिली; और जो सबडिविजन भरमें अंगरेजी अमलाशाहीका अन्त कर सके उनने तो वहां जनता राज कायम कर दिया। उनकी अपनी शासन-व्यवस्था थी और अपने कायदे-कानून।

जन-व्यवस्थामें क्या करना चाहिये, जनता राजका क्या दृष्टिकोण होना चाहिये—ऐसे-ऐसे सवाल कार्यकर्त्ताओंके मनमें उठते थे। पर उनका दिमाग बिलकुल कोरा भी न था। गान्धीजीके विचार प्रायः सभी कार्यकर्त्ताओंके दिमागमें चक्कर काट रहे थे। कांग्रेसके सर्कूलरोंसे भी उनको बड़ी मदद मिली। सर्कूलर नं० ८ से उन्हें बतलाया कि—

" × × × लोगोंको इस ढंगसे चलना चाहिये जिससे मालूम पड़े कि सरकारी राज्य उठ गया और हमें खुद देशका सारा प्रबन्ध करना है। इसलिये

एक ओर तो ऐसा कोई काम न करें या किसी काममें मदद न दें जिससे सरकारी हुकूमत चलती रहे या सरकारको मदद मिले और दूसरी ओर वे ऐसे सब काम करें जिससे लोगोंके आपसमें प्रेम बढ़े, उनके जानमालकी रक्षा हो, उनके खाने पीनेकी कठिनाई दूर हो और वे निर्भय होकर और एक साथ मिलकर सरकारी अत्याचारोंका मुकाबिला करें। × × × "

"(ग) × × × यदि लोग डरे तो उनका खैर नहीं है क्योंकि इन जुल्मोंके शिकार सिर्फ वे ही लोग नहीं होते हैं जो कुछ करते हैं बल्कि ज्यादातर वे ही हैं जो कुछ नहीं करते। पटनेमें तो बड़े-बड़े सरकारी नौकर, डाक्टर, शिक्षक वगैरह भी पीटे गये। इसलिये अगर लोग यह सोचें कि वे चुप रहेंगे या कुछ न करेंगे तो वे बच जायंगे बिलकुल गलत है। जो भागता है वह ज्यादा मार खाता है, जो डटता है वह दुश्मनके दिलमें भी भय पैदा कर देता है और उसके जुल्मको अगर एकदम ठण्ढा नहीं तो बहुत कुछ कम कर देता है। इसलिये जहां कहीं सरकारी फौज या पुलिस जाय वहांके लोगोंको डट जाना चाहिये। आसपासके गांवोंके सब लोग अगर इकट्ठे हो जायें और डटकर बोलें कि चाहे जो हो जायगा हम तुम्हारे डरसे नहीं भागेंगे और न अपने घरकी खाना तलाशी और साथ-साथ बहूबेटियोंको बेइज्जत होने देंगे तो निश्चय जानिये कि कुछ लोग मार तो जरूर खा जायंगे पर उन गांवोंमें ज्यादा जुल्म नहीं हो सकेगा और वहांके लोग तबाहीसे बच जायंगे। अगर गांववाले इस तरह नहीं डटे और आसपासके गांव आपसमें मिलकर मुकाबिला करनेको नहीं खड़े हुये तो निश्चय रखिये कि गोरी पलटन या पुलिसवाले एक एक कर हर घरमें और हर गांवमें घुसेंगे और माल असबाब लूटेंगे, लोगोंको मारेंगे, पीटेंगे और पकड़ेंगे और ताज्जुब नहीं कि स्त्रियोंको भी बेइज्जत करेंगे। इसलिये डर छोड़कर हिम्मत करनेमें ही कल्याण है और इसीमें जानमालकी कम हानि है। जो लोग निहत्थोंपर गोली चलाते हैं वे लोग दिलसे डरपोक होते हैं और डट जानेपर खुद डर जाते हैं।

× × × × ×

"(ङ) सब गांवमें पंचायत कायम हो जिसके जरिये गांवकी रक्षाका प्रबन्ध किया जाय, झगड़े निपटाये जायें, मोकदमाबाजी रोकी जाय और गरीब और भूखोंके लिये खाने पीनेका इन्तजाम किया जाय।

× × × × ×

(छ) लोग मुंहामुही सब समाचार फैलाते रहें और जो कुछ हिदायत उनको मिले उसका प्रचार करते रहें। अगर जरूरत समझें तो पत्रिया जारी किया करें जिसमें बहुत जल्द समाचार वा हिदायत सब जगह फैल जाये।"

जन-व्यवस्था अन्तर्गत क्षेत्रोंमें या जनता राज्यमें कार्यकर्त्ताओंने उक्त सर्कुलरको अमलमें लानेकी चेष्टा दिखलाई। वे समझ रहे थे कि वे निष्कण्टक नहीं हैं, सरकारी दमनकी नंगी तलवार उनके सर लटक रही है। किन्तु साथ ही महसूस हो रहा था कि उनके हाथ कुछ अधिकार आया है जिसका उपयोग इस ढंगसे करना है कि जनता संतुष्ट दीखे, सबल बने और क्रान्तिकी साधना करे। जहाँ जितने दिन कार्यकर्त्ताओंकी तूती बोलती रही उनने अपने लक्ष्यको अपने सामने रक्खा। एक हफ्ता तो वे समूचे बिहारमें मजबूत रहे, फिर शहरोंसे उनका पांव उखड़ा परन्तु देहातमें वह एक पखवारा जमा रहा। हर जिलेमें कितने गांव ऐसे भी थे और कहीं-कहीं तो थाने भी जहां वे एक-डेढ़ महीना डटे रहे। भागलपुर जिलेके तो दो-दो सब-डिविजन, पूरा-पूरा, लगभग एक मासतक कार्य-कर्त्ताओंकी सत्ताके आधीन रहे और बांका सबडिविजनका एक हिस्सा ऐसा भी रहा जहां लगभग दो मास तक अंगरेजी राजके अमलोंको झांकनेकी भी हिम्मत नहीं हुई। इससे यह नहीं मान लेना चाहिये कि जहांका संगठन जितना मजबूत था वहाँ उतने दिन कार्यकर्त्ताओंका बोलबाला रहा। मजबूतीमें उतना भेद नहीं था जितना कि भौगोलिक-स्थितिमें। जो स्थान जितना दुर्गम था वहाँ उतना ही अधिक जनताराज टिका। और स्थानको दुर्गम बनाया तोड़-फोड़से कहीं ज्यादा बाढ़ने, जंगल और पहाड़ने।

जनता कार्यकर्त्ताओंकी पीठपर थी। वह धन-जनसे उनकी मदद करती और 'शठे शाठ्यं समाचरेत'में उनसे कहीं आगे रहती। वह कार्यकर्त्ताओंको अपना सेवक मानती और विश्वास करती थी कि उनने जो व्यवस्था स्थापित की है वह उसकी अपनी व्यवस्था है, उसका अपना राज है। हाँ अंगरेजी शासनके पोषक बनकर जिनने अपना रहन-सहन ऊँचाकर दिया था उन्हें जनताराज उत्साहित नहीं करता था; कार्यकर्त्ता उन्हें फूटी आँख नहीं सुहाते थे और अगस्त आंदोलन उन्हें पहाड़से टकराने जैसा लगता था। इस शासन-यंत्रके बिगड़ते ही उनके ऐसे आरामकी अट्टालिका जमीनमें धँस जायगी—ऐसी आशंका उनके मनमें उठा करती और सरकार परस्तीका तूफान पैदा किया करती। ऐसोंमें सबसे आगे थे

बिहारके कचहरिया-लोग जिनका जमघट शहरोंमें लगा रहता है। उनके पीछे थे बड़े-बड़े सूदखोर जो जमींदार और दूकानदारके रूपमें अपने-अपने इलाकोंमें क्रांति-विरोधी करतूतोंके लिये कुख्यात हो रहे थे। जनतामें ऐसोंकी तादाद कुछ कम न थी जो पूँजी और धर्मके शिकञ्जेमें पिसते रहनेके कारण पौरुष विहीन हो रहे थे और 'चेरी छाडि न हो उब रानी' के रागके सजीव प्रतीक बन बैठे थे। कार्यकर्त्ताओंको इस वर्गसे पूरी हमदर्दी थी और उनने जहाँ-तहाँ और जबतब अपने सिद्धान्तोंको नजर अन्दाज करके भी इस वर्गको संतुष्ट करनेकी चेष्टा दिखलाई ताकि यह वर्ग उभड़े और उनकी पीठपर रहे। पहले दो दलोंसे कार्य-कर्त्ताओंकी सहानुभूति न थी। सच पूछिये तो वे दोनों दल उनकी आँखोंमें खार जैसे खटक रहे थे। पर जबतक उनकी व्यवस्था रही—जनता राज रहा, उनने सब दलों सब वर्गोंकी सुख-सुविधाका जैसा खयाल रक्खा वह दुनियाकी क्रान्तिके इतिहासमें बेजोड़ है।

पटना जिलामें जगह-जगह जन-व्यवस्था चमकी। उसकी कई खूबियां तो ऐसी थीं जिनपर किसी भी प्रजातंत्रको नाज हो सकता है। फतुहा थानाके खुशरूपुरने पटना श्री द्वारिकाप्रसाद आर्य्यके संचालनमें संरक्षक दलका संगठन किया जिसका काम था शान्ति कायम रखना, रातको पहरा देना, गुण्डोंका दमन करना और कांग्रेसके हुक्मनामेको सब जगह पहुँचा देना।

शान्ति और तृप्ति सगी बहन है। इसलिये ही श्री द्वारिकाप्रसाद आर्य्यने शांति कायम रखनेके लिये जो पहला काम किया वह था सुलभ और सस्ती दूकानोंको खुलवाना। लोगोंको मुनासिब कीमतपर अन्न मिलने लगा जिससे असंतोषको पनपनेका मौका नहीं मिला। अब रह गये गरीब जिनके लिये 'व्यापार मंडल'की ओरसे सस्ती दूकान खोलवायी गयी जहां रुपयाकी चीज नौ आनेमें मिलने लगी। बस, उपद्रवकी आशंका जाती रही।

फिर भी खुशरूपुरका स्वयंसेवक दल चौकन्ना हो रहा और जब पुलिसकी करतूतसे प्रोत्साहित होकर खुशरूपुरपर कुछ डकैतोंका आक्रमण हुआ तो उनने डकैतोंका कसकर मुकाबला किया और उनके एक साथी श्रीमहावीरलालने भाले और गँड़ासेकी चोट भी खाई।

उन दिनों रेल छिन्न-भिन्न हो जानेके कारण पैदल चलनेवालोंकी संख्या बहुत बढ़ गयी थी जिससे धर्मशाला ठसाठस हुआ रहता था। उस भीड़मेंसे ढूँढ़ ढूँढ़कर

भूखे प्यासे खोज निकाले जाते और उन्हें मुफ्त खिलाया पिलाया जाता। जब लाइन ठीक हुई तब जहाँ तहाँ पड़ी पसिन्जर गाड़ियाँ धीरे-धीरे खुशरूपुर पहुँचने लगीं जिसमें कितने ऐसे मुसाफिर होते जो भूखसे विकल दीख पड़ते। श्री महादेव-लालके सुप्रबन्धसे उनलोगोंके लिये दाल-भात, गुड़ फहरी और चना स्टेशन पर सहजमें उपलब्ध थे। बच्चोंके लिये दूधका भी अच्छा इंतजाम था।

श्रीद्वारिकाप्रसाद आर्य्यको अपनी जन-सेवाका पुरस्कार मिला दो सालका कठोर कारावास। आप जेलसे जर्जर शरीर लेकर निकले जिसे पटना अस्पतालकी चिकित्सा चंगा न कर सकी। आप वहीं चिर विश्राम पाकर शहीद हो गये।

मालसलामी थानेका फतहपुर पटना जिलाके जन-व्यवस्थाके इतिहासमें अपना विशेष स्थान रखता है। जल्ला इलाकेके इस गांवमें 'समानान्तर सरकार'की स्थापना आंदोलनके शुरूमें ही हुई। बुनियाद डाली श्रीरमणबाबूने ६२ व्यक्तियोंकी एक टोली बटोरकर जिसके हरेकने रमणबाबूके साथ सपथ ली कि हम प्राणोंकी बाजी लगाकर अगस्त आन्दोलनको चलायेंगे। इन व्यक्तियोंने समूचे जल्लाको अंगरेजी राजका विद्रोही बना दिया। अधिकांश चौकीदारोंने खुद अपना वरदी-मुरेठा जला दिया और कुछ इस टोलीमें शामिल भी होगये। इलाकेके दो कनस्टबिल रामबहाल सिंह और रामाश्रय सिंह जो क्रमशः बिहार पुलिस और बंगाल पुलिसमें काम करते थे, नौकरीपर लात मार कांग्रेसके काममें जुट गये। इसलिये वहां ऐसा एका होगया कि अन्त तक सी० आई० डी० और पुलिसवालोंकी दाल न गली।

शीघ्र फतहपुरने प्रान्तीय कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंके ध्यानको खींच लिया। जिला काँग्रेसका दफ्तर वहां था ही, प्रांतका भी आगया और एक अरसे तक किसी न किसी रूपमें रहा।

२६ अगस्तको जगत बाबू फतहपुर पहुँचे और दूसरे दिन सभा की। लोगोंने दिल खोलकर उन्हें धनजनकी मदद की। जगत बाबूने उसी दिन फतहपुरकी मरनेवाली टोलीका नाम 'शहीद-जत्था' रखा। फिर वे दस दिनके लगभग हाथी और नावके जरिये आचार्य जगदीश और अन्य सहकारियोंको लेकर उस इलाकेका दौरा करते रहे।

इसी बीच एक दिन गोरखा सेनासे भरी दो नाव फतहपुर पहुँची। रमण बाबूने अपने शहीद-जत्थासे कहा—क्या देखते हो? शहीद हो जाओ। तत्काल एक बहुत बड़ा जलूस क्रान्तिके नारे बुलन्द करता हुआ निकला। गोरखोंने तुरत नावें खोलीं,

संगीनें चढ़ायीं और बीच धाराकी दिशा पकड़ी। फिर तो शहीद-जत्थाकी धाक जम गयी। उसने अपनी टोलियां चारों ओर भेज ग्राम-रक्षा दलका संगठन किया और पंचायतकी स्थापना की। इलाके भरके चोर उचक्के अपना पेशा मानों भूल गये। झगड़े भी बन्द हो गये और पुराने झगड़ोंको पंचायतने अपना फैसला दे देकर मिटा दिया।

जल्लाका दौरा खतम करके जगत बाबूकी नाव बख्तियारपुरकी ओर बढ़ी जहां वह घेर ली गई। जगत बाबूके साथ अचार्य जगदीश और कुछ और कार्यकर्ता थे। कागजात भी काफी थे। अचार्य जगदीश कागजात ले साथियों सहित चम्पत हो गये। पर जगत बाबू फतहपुरके ही पांच मलाहोंके साथ गिरफ्तार कर लिये गये। उनके साथ साथ आन्दोलन संबन्धी परचेका एक बण्डल भी पुलिसको हाथ लगा जो बारबार पानीमें डूब जानेके लिये फेंका गया पर हर बार उपलाता ही रहा।

इस गिरफ्तारीसे फतहपुरका जोश ठंढा नहीं हुआ। उसने आन्दोलनको और उग्र बनानेकी कोशिश की। डिनामाइट वगैरहका संग्रह किया और गांवके पुलको उड़ा भी दिया।

फतहपुरको अर्थाभावने नहीं सताया। हाइ स्कूल, पुस्तकालय और अन्यान्य शान्तिकालकी संस्थाओंको उसने बन्द कर रखा था और उनके धनसे क्रान्तिका पोषण किया था। हां! कमसे कम आठ महीने तक किसी फतहपुरीने चौकीदारी दाखिल नहीं की और इक्के दुक्केने तो मालगुजारी देनेसे भी इनकार किया और अपनी जमीन नीलाम होने दी।

मोकामाके पास मालपुर नामका गांव है जहांके किसानोंने दो महीने अपना प्रबंध आप किया। उनने मिलकर अपने एक साथीको राजा बनाया और दूसरेको

मालपुर

मंत्रीका ओहदा दिया। गांवके दफादार और चौकीदारोंने अंग्रेजी सरकारसे संबध तोड़ा और अपने किसान राजाके प्रति भक्तिकी सपथ ली। राजाकी ओरसे पंचायत कायम हुई और स्वयं-सेवक बहाल किये गये। अब मालपुर अपने किसान राजपर अभिमान करने लगा। चारों तरफ स्वयं-सेवकोंका पहरा; फिर न चोरी न कलह। अगर कोई किसान राजके खिलाफ जाता तो स्वयंसेवकोंके सरदार जो सेनापति कहलाते थे उसे सीधी राहपर तुरत ले आते। जो मामला सेनापति तय नहीं कर पाता वह पंचायतके सामने आता। कितने ऐसे मामले भी होते जो

दरबारमें पेश होते जहां राजा अपने मंत्री-मंडल सहित बैठते और दरबारका फैसला सर्वमान्य होता। इस किसान राजके राजा जबतक दरबारमें रहते अपने पदकी मर्यादा निभाते और दरबारके बाहर ठेठ किसानके रूपमें नजर आते। दूसरे दूसरे किसानोंकी तरहसे खेती गिरस्ती, उन जैसी ही वेशभूषा। फर्क इतना ही था कि आप जरा औरोंसे बलवान थे और अखाड़ेमें प्रायः सबको लपटा लेते थे।

इस किसान-राजने मालपुरको इस ढंगसे संगठितकर दिया कि वहांकी कोई खबर थानेको नहीं मिलती। सरकारी अमले विश्वास करने लगे कि मालपुरने काफी हरबे-हथियार इकट्ठे कर लिये हैं और उसे जमकर हमारा सामना करनेकी ताकत आ गई है।

गयाका जहानाबाद सबडिविजन जहां-तहां जनव्यवस्थाके लिये प्रसिद्ध रहा है। यों तो जिलाके छत्तीस थानोंमें चौदह थाने लगभग तीन महीने बेकारसे रहे पर गया थानेका काम पंचायतने लिया। कुर्था थानेका स्वयंसेवक दल अपनी संगठन शक्तिके लिये प्रसिद्ध था। रातको गांव-गांवमें पहरा देना और चोर डकैतोंपर कड़ी नजर रखना इनका काम था। पुलिसके हथकंडोंसे हिन्दू-मुसलमानमें अनबन होनेकी आशंका शुरू शुरूमें बनी रहती थी; पर स्वयं-सेवकोंकी सतर्कताने इस आशंकाकी जड़ उखाड़ दी। नोआंवा बस्तीमें कुछ हिन्दुओंने एक मुसलमानका घर लूट लिया। स्वयंसेवकोंने लुटेरे हिन्दुओंको पकड़ा। उनसे लूटके माल बरामद कराये और जो माल न मिल सका उसके लिये नकद रुपये वसूले। इसके अलावा उनने सबोंको डकैतीके अपराधके लिये दंड भी दिया। फिर उस लुटे हुए मुसलमानकी सारी क्षति पूरी कर दी गई और उसे आश्वासन मिला कि फिर कभी उसके जानमालपर खतरा न आयेगा।

इसी बीच थानेमें एक अत्यन्त साहसपूर्ण घटना हुई। थानेको उठ गया देख एक पुराना चोर निशंक चोरी करने लगा, उसको डांटा फटकारा गया पर उसके कानोंपर जूं तक न रेंगी। जनताने देखा कि स्वयंसेवक समझाने-बुझाने डांटने-डपटनेके सिवा और कुछ नहीं कर रहे हैं और उसने अपनी नीतिको काममें लानेका निश्चय किया। एक दिन कुछ लोग दिन-दहाड़े उसके घरमें घुस गये और उसको जानसे मार डाला। इस हत्याकी खबर पाकर स्वयंसेवक तो कांप उठे। वे चोरके घर पहुँचे और उसके घातकोंकी लानत मलामत की। कुछ स्वयंसेवकोंको इसका बड़ा दुःख हुआ और उनने इस दुर्घटनाका प्रायश्चित भी किया। पर जनसाधारणने

खुशियाँ मनाईं। जहाँ-जहाँ इस चोरके मारे जानेकी खबर पहुँची वहाँ-वहाँकी जनता उत्साहित ही होती देखी गयी; साथ ही चोर डकैतोंमें हड़कंप मच गया।

घोघी थानेके लखावर गाँवमें एक चोर पकड़ा गया जो बैलपर गल्ला लादे भागा जा रहा था। स्वयंसेवकोंने उसे पकड़ रखा; असली मालिकका पता लगाकर गल्ला उसे वापस किया और चोरको मारपीटकर छोड़ दिया। हां! उससे जुरमाना भी वसूल किया गया।

सदर सबडिविजनने उस इलाकेमें बागी सरकारका शासन देखा जो इलाका पलामू और हजारीबागकी सीमासे छूता है। डुमरिया और इमामगंजसे जब थाने, डाकखाने और शराबखाने-सब अंग्रेजी राजके अड्डे उखड़ गये तब जनसाधारण घबड़ाया। उसे अपने जानमालकी हिफाजतकी फिक्र पड़ी। इसी फिक्रने बागी सरकारको जन्म दिया; जिसके सभापति हुए श्रीजगलाल महतो।

इस बागी सरकारके दो व्यवस्था केन्द्र थे—मैगरा (डुमरिया) और इमामगंजमें। मैगरा केन्द्रके उपसभापति, मंत्री तथा कोषाध्यक्ष क्रमशः परमेश्वरी सिंह, कामेश्वर ठाकुर; अखौरी राधाबिहारीलाल थे और इमामगंजके श्यामगोविन्द सिंह, रामनन्दन मिश्र और शीतल वैद्य।

इस बागी सरकारने पहरेका, पंचायतका और हिन्दू-मुसलमानोंमें भाईचारा बनाय रखनेका अच्छा इन्तजाम किया। दो महीनेके अरसेमें यानी जबतक इस बागी सरकारको वहाँकी व्यवस्था करनेका अवसर मिला, एक भी कांड ऐसा न हुआ जिससे अंगरेजी हुकूमतका न रहना लोगोंको खटका हो। चारों ओर अमन-चैन और उत्साह ही दीख पड़ते। चौकीदारों और दफादारोंकी चौकसी पहलेकी तरह ही होती रहती। फर्क इतना ही था कि अब वे अंगरेजी सरकारके बागी और बागी सरकारके भक्त थे।

एकबार रानीगंज बाजारमें चोरी हुई। चोर पकड़ा गया। इमामगंज, रानीगंज यूनियन बोर्डके सभापति पं० रामनन्दन मिश्रने चोरको सड़कपर बैठा दिया। जितने राहगीर चलते उसकी फजीहत करते। अन्तमें उसने पंच परमेश्वरके आगे प्रतिज्ञा की भविष्यमें कभी चोरी न करनेकी। तब वह छोड़ दिया गया। मानसिक कष्टके अलावा उसे और कोई तकलीफ नहीं दी गयी। वक्तपर खाना न रोका गया।

दो महीनेके अरसेमें सरकारी पिट्ठुओंके हथकंडोंके बावजूद डुमरिया-इमामगंज इलाकेके हिन्दू-मुसलमान खूब मेलसे रहे। दोनों थानोंमें एक-एक शान्ति सभा थी

जिसकी बैठकमें हिन्दू-मुसलमान दोनों शामिल होते और अपनी कठिनाइयोंका हल निकाल लेते।

बागी शाहाबादने अपने जिलेके ३० थानोंमें १८ थानोंसे अंगरेजी हुकूमतको उखाड़ फेंका। सदरमें संदेश, सहार, बड़हड़ा, शाहपुर और पीरो कांग्रेसी झंडा फहरा शाहाबाद रहे थे; सासाराममें नासीरगंज, करगहर, दीनार, चेनारी और रोहतास; भभुआमें अधौरा, चैनपुर, चांद और रामगढ़ और बक्सरमें ब्रह्मपुर, राजपुर और नरबीरपुर। इन सब जगहोंमें पंचायतें लोगोंके झगड़ोंको मिटा रही थीं; ग्राम-जगदीशपुर रक्षक दल पहरा दे रहे थे और कार्यकर्त्ता क्रान्तिके मोरचेको मजबूत बनानेमें लगे थे। इन सब थानोंसे जब पुलिस गई तब अपने साथ चोरी डकैतीको भी लेती गई।

जगदीशपुर थानामें तो १२ अगस्तसे २३ अगस्त तक स्वराज्य था। वहांके कार्यकर्त्ताओंमें शुरुसे ही जन-शक्तिकी अकड़ थी। नौ अगस्तको पुलिसने थाना कांग्रेस कमिटीके सामानके साथ-साथ मंत्रीके कुछ सामानको भी जब्तकर लिया था। कार्यकर्त्ताओंने मंत्री-का सामान लौटानेके लिये उसपर इतना जोर डाला कि दूसरे दिन उसे वैसा करना पड़ा। फिर कार्यकर्त्ताओंने पुलिस इन्स्पेक्टरकी पिस्तौल छीन ली जिसपर पुलिसने इन्द्रकुमार, अली इमाम और वंशीधरको गिरफ्तार कर लिया; किन्तु तीनों लड़के उसके हाथसे बलपूर्वक छीन लिये गये। बादको थाना कांग्रेसके दखलमें आगया और श्री रामदयाल पाण्डेय, थानाके व्यवस्थापक नियुक्त किये गये। थानेमें पुलिस थी; हिन्दुस्तानी फौज थी। दोनों जन-शक्तिके सामने हतप्रभ हो रही थीं। १८ अगस्तको अंगरेजोंकी तमाम ताकतें थाना खाली कर चली गयीं।

श्री रामदयाल पाण्डेय जगदीशपुर, दासीपुर आदि गांवोंमें साथियों सहित घूमे और ग्रामरक्षक दल तथा पंचायतका संगठन किया। थानेमें कोई अशान्ति नहीं हुई।

संदेशने ऐसे स्वराज्यका एक मास तक उपभोग किया और सहार थानेने तो दो मास तक। इस अरसेमें अंगरेजोंका एक भी अमला वहां झांकनेकी हिम्मत नहीं दिखला सका।

भभुआके चांद थानाको भी कांग्रेस सरकारकी व्यवस्था देखनेका अवसर मिला। १७ अगस्तको अंगरेजी थाना कार्यकर्त्ताओंके कब्जेमें आगया था और उसके

अमले गिरफ्तार हो गये थे। पर फिर कार्यकर्त्ताओंने उन्हें मुक्त करके थानेके बाहर कर दिया था और अन्यान्य सरकारी संस्थाओंपर भी दखल जमा लिया था।

चांद पहाड़ी इलाका है। दुश्मनोंसे मोरचा लिया जा सकता है; गरिल्ला लड़ाई लड़कर उन्हें परेशान किया जा सकता है। इसलिये वहांके कार्यकर्त्ताओंने कांग्रेस सरकारके नामपर काफी जवानोंको इकट्ठा किया और उन्हें गरिल्ला बनानेकी कोशिश की। उनने थानाको चार हिस्सोंमें बांट दिया और हरेक हिस्सेकी सुव्यवस्थाके लिये वहां वहां एक-एक केन्द्र खोला। उनने न्याय-विभागका संगठन किया जिसके द्वारा गांव-गांवमें पंचायतें कायम की गई। प्रचार विभाग खोला जिसके द्वारा कांग्रेस सरकारके हुक्मनामेका थाना भरमें एलान होता रहा। कांग्रेस सरकारका एक गुप्तचर विभाग भी था जिसके सेवक चारों केन्द्रोंमें रहते और दुश्मनोंकी गतिविधिको सूचना चांदकी सरकारको पहुँचाते रहते।

सिरहिरामें एक तेलीके घर डाका पड़ा। गुप्तचरोंने खबर दी कि माल गांवमें ही है और अलिवारिस खां तथा अन्यान्य व्यक्तियोंपर जोर डालनेसे बरामद हो सकता है। तुरत श्री कैलाशपति सिंह अपने जवानोंको लेकर सिरहिरा पहुँचे और अलिवारिस खां तथा गांवके प्रमुखोंको बुलाकर कहा कि तीन घंटेके भीतर तेलीको माल मुआवजा सहित नहीं मिल जाता है तब हम कांग्रेस सरकारकी ओरसे मुनासिब कार्रवाई करेंगे। गाँववालोंने सात घंटेका समय मांगा पर पांच घंटेके बाद ही तेली आया और कैलाशपतिजीसे बोला कि मेरा माल वापस मिला; मुझे और कुछ नहीं लेना है। फिर कैलाशपतिजी अपने जवानोंको लेकर केन्द्र लौट आये।

इस घटनाके अलावा जबतक कांग्रेस राज रहा और कोई चोरी डकैतीकी घटना चांद थानेमें नहीं हुई।

पटना डिविजनसे तिंहुत डिविजनकी जन-व्यवस्थामें अधिक जान थी। कहा जा सकता है कि वहां कहीं कहीं तो जनता राज कायम हो गया था और राज्यकी तिहुत सबडिविजन व्यवस्थाके लिये कायदे कानून बन गये थे।

सारन जिलेमें मांझी, इकमा, दिघवारा, दरौली, रघुनाथपुर, सिसवन, परसा, बैकुण्ठपुर और गरखासे अंगरेजी अमलाशाही उठ गयी थी और उन इलाकोंकी व्यवस्थाका भार कार्यकर्त्ताओंको अपने सर लेना पड़ा था।

सारन सदरमें स्वतंत्र-मंडल स्थापित हुआ था। इस मंडलके संरक्षणमें इकमा सम्पूर्ण थाना, मांझी थानेका आधा और बनियापुरके कुछ गांव थे।

स्वतंत्र मंडल पंचायतोंके द्वारा अपनी व्यवस्था करता था। गांव ग्राम केन्द्रोंमें बँटे थे और प्रत्येक ग्राम-केन्द्रमें पंचायत थी जिसे ग्राम पंचायत कहते थे। ग्राम पंचायतके ऊपर थी थाना पंचायत और सबके ऊपर मंडल पंचायत। मंडल पंचायतका सभापति मंडलाधीश कहलाता था जिसका आदेश समस्त स्वतंत्र-मंडलको मान्य था।

स्वतंत्र मंडलके अधीन पंचायतके अलावा चार विभाग थे:—तोड़ फोड़ विभाग, प्रचार विभाग, ग्राम रक्षा विभाग और सेवक-दल विभाग। प्रत्येक विभागका सर्वोच्च पदाधिकारी अध्यक्ष कहलाता था—जिसके आदेशोंका पालन करना सेवक दलका काम था। तोड़ तोड़ दलके लोग देखते रहते कि रेल रास्ते वगैरह मरम्मत तो नहीं हो रहे हैं और उनको मरम्मत पाते तो फिर तोड़ देते ताकि पुलिस और फौज उनके स्वतंत्र मंडलकी सीमाके भीतर पैर नहीं दे सकें। प्रचार विभागके लोग-क्रान्ति पोषक परचे छाप छाप कर बांटा करते और जगह जगह सभा करके और प्रदर्शन निकाल कर क्रान्तिको भावनाको जगाय रखनेकी चेष्टा किया करते। डाकको व्यवस्था भी इन्हीं लोगोंके हाथ थी। ग्राम रक्षा विभागका काम सबसे ज्यादा जवाबदेहीका था। पहरा देना, चोरी डकैती रोकना और अपराधियोंको पकड़ पंचायतके सामने लाना उसका काम था। अंगरेजी सरकारके चौकीदार दफादार सब अब स्वतंत्र मंडलके अधीन थे। और उसका हुक्म बजा लाते थे।

अंगरेजी थानाके उखड़ जानेके बाद १७ अगस्तको इकमा बाजारमें भाले लेकर टॉर्चके सहारे डाकू घुस आये। रातका वक्त था। बाजारवाले घबड़ा गये। पर स्वतंत्र मंडलका रक्षा दल खूब चौकन्ना था। वह भाले और बंदूक लेकर दौड़ा। डाकू उसके सामने ठहर न सके और सरपर पैर रख कर भागे।

जान मालकी हिफाजतमें तो सब जगह जनता-राजने भेद भावको जगह नहीं दी है। यहाँ भी उसने जैसे अपने आदमियोंके जान मालकी रक्षाकी है वैसे औरोंके जान मालकी भी। इकमा स्टेशनपर मालगाड़ी असहाय-अवस्थामें खड़ी थी। कुल ६० डब्बे थे, मालसे भरे हुये। रक्षा-दल बराबर मालगाड़ीके पहरेपर रहा। फिर भी एक रातको एक डब्बेमेंसे ५ टीन घीकी चोरी हो गई। रक्षा दलने मालका पता लगाया और चोरका भी। माल डब्बेमें हिफाजतसे रख दिया गया और चोरोंको स्वराजी जेलमें बन्द कर दिया गया। चोर थे भारती पैंटमैन और सीताराम

कलवार। मंडल पंचायतने उनका विचार किया और उसके फैसलेके मुताबिक चोरोंको चूनेसे टीक कर सारे बाजार घुमाया गया। चोर दिन भर भूखे भी रखे गये और उन्हें पीटा भी गया।

एक दिन मगहिया डोमोंका गिरोह इकमा बाजारमें ताकता झांकता नजर आया। सभी डोम मंडल पंचायतके सामने लाये गये। उन्हें दिन भर हाजतमें रखा गया। फिर इकमाके बाहर पहुँचाकर छोड़ दिया गया।

पर खूब सनसनी तो तब मची जब एक भेदिया (spy) पकड़ा गया। उसकी जेबमें एक चिट्ठी थी एस० डी० ओ० की लिखी हुई, जिसमें पुलिस वगैरहको हिदायत दी गई थी उसकी मदद करनेके लिये। उसकी साइकिल जब्त कर ली गई। उसके पास तीस रुपये भी थे जो ले लिये गये। उसे दिन भर हाजतमें रखा गया। शामको उसका विचार हुआ और उसे 'फांसी' का हुक्म हुआ। पर अंगरेजी तौर-तरीकेसे फांसी देना संभव न था और न वांछनीय ही। इसलिये तय हुआ कि उसे सरयूमें डुबा दिया जाय। मंडल पंचायतके सेवकोंने उसे तब मांझी पंचायतके हवाले किया। मांझी पंचायतके सेवक उसे सरयू तट ले गये और जब डुबानेकी तैयारी करने लगे तब वह बहुत रोया और बोला—मैं बाबू रजनधारी सिंह, सी० आई० ई० का आदमी हूँ; आपलोगोंसे दया भिक्षा मांगता हूँ। पूरा पता देनेपर वह मांझी पंचायतके सामने लाया गया—जिसने मंडल पंचायतसे उसकी प्राण-भिक्षा मांग ली और वह भेदिया मुक्त हो गया।

परसा थानामें भी इसी तरहकी स्वराजी व्यवस्था थी। वहांके चौकीदारोंने अपनी वर्दी-पेटी कांग्रेस आफिसमें जमा कर दी थी—और जन-व्यवस्थाके सेवक बन गये थे। थाने भरमें एक भी ऐसी संस्था नहीं बची थी जिसपर जनताका अधिकार न होवे। एक दिन पोस्ट मास्टरने डाकघरपरसे स्वराजी झंडा उतार दिया। तुरत उसका बहिष्कार किया गया। और जब उसने डाकघरपर झंडा फहराकर कार्यकर्त्ताओंसे माफी मांगी तब उसे समाजमें फिर शामिल कर लिया गया। यहां भी थाने भरमें पंचायतकी सुव्यवस्था थी और मुकदमेबाजी बिलकुल बन्द हो गई थी।

परसा थानाकी स्वराजी-व्यवस्थाने खाद्य-सामग्रीको भी सुलभ करनेकी कोशिश की थी। गल्लेके दरपर नियंत्रण रखा था और चोर बाजारको दबा दिया था।

सिवान सबडिविजनके रघुनाथपुर थानामें भी एक महीना कार्यकर्त्ताओंकी अखण्ड व्यवस्था रही। पंचायत विभाग स्वयं-सेवक विभाग और प्रचार विभाग अपनी अपनी मर्यादाको समझते हुये थाना भरमें काम करते रहे। उनने बाजारपर नियंत्रण रखा और कहीं चोरी डकैती नहीं होने दी। एक भी मुकदमा ऐसा न हुआ जिसका संतोषप्रद फैसला पंचायतसे न हो गया हो।

गोपालगंजका बैकुण्ठपुर थाना भी अपनी पंचायतकी व्यवस्थाके लिये प्रसिद्ध था। ग्राम पंचायत, यूनियन पंचायत और थाना पंचायतका सिलसिला ऐसा मजबूत हो गया था कि किसीको कचहरी झांकनेकी जरूरत महसूस नहीं हुई। चोरी डकैतीकी एक भी घटना सुननेमें नहीं आई।

बरौली थानेकी पंचायतकी भी अच्छी धाक थी। उसने एक डकैतीके मामलेका भी विचार किया था, और उसने जैसा फैसला दिया उससे डकैत और पीड़ित दोनों संतुष्ट हुए। कटेया थानेकी जनव्यवस्था भी बहुत कुछ इसी ढंगकी थी।

चम्पारणने दो महीने जनताराज देखा, गोविन्दगंज थानेमें। पुलिस स्टेशनको दखल करके ऋषिदल समूचे थानेके गठनमें लग गया। प्रचारका काम श्रीपारसनाथ वर्माको दिया गया और वे प्रचार-विभागके अध्यक्ष बने। डाककी व्यवस्था श्रीनरसिंह दुबेके जिम्मे रही और श्रीरामाश्रय दुबे समस्त रक्षक-दलके अधिपति बने। और तोड़-फोड़में आगे रहे महम्मद ताहिर जो भट्ठियोंके तोड़ने-फोड़नेमें काफी मुस्तैद रहते। थानेमें १३ यूनियन हैं जो १३ जिम्मेवार कार्यकर्त्ताओंको सौंप दिये गये जिनका काम था प्रत्येक ग्राममें पंचायत और रक्षक-दलका संगठन करना। यूनियन अधिपतियोंने बहुत जल्द इस कामको पूरा कर लिया। फिर वे केन्द्रको नियमित रूपसे अपनी रिपोर्ट भेजने लगे।

केन्द्रके संचालक थे वही रामपिदेवजी जिन्हें पुलिसके साथ-साथ जन-साधारण भी गोविन्दगंजका बादशाह कहते। ऋषिजी अपनी बादशाहतमें सदल-बल घूमते ही रहते। चौकीदार दफादारकी वरदी-पेटी जलवाकर उनको स्वयंसेवक बनाना, लोगोंकी फरियाद सुनना, हाट-बाजारपर नियंत्रण रखना और भट्ठियोंको बरबाद करना मुख्य-मुख्य काम थे। क्या मजाल था कि उनकी बादशाहतकी हदमें अंगरेजोंका अमला पैर रखता! अगर कोई रखता तो तुरत उनके गुप्तचर उनको खबरकर देते। फिर तो उस अमलेको लेनेके देने पड़ते। कनस्टबिल होता तो अपने साज-सामानसे बाज आता और कान पकड़ता कि फिर वह उधर कभी आवे। कचहरीका सम्मन

तामील करनेके लिये कहीं जाता हुआ सिपाही होता तो उसके सारे कागजात जला दिये जाते और उसे बैरंग वापसकर दिया जाता। ऋषिजीकी राजनीतिसे जनता बड़ी प्रसन्न थी। वह अमन-चैनसे रह रही थी। मामले-मुकदमे बन्द हो गये थे। पहले चोरी डकैतीकी भरमार थी। अब उसका नामोनिशान मिट गया था। पर इसका श्रेय गोविन्दगंजके जनता राजको उतना नहीं है जितना गोविन्दगंजकी जनता-शाही को।

एक घटना है खजुरियाकी। डाकू देवी अहीरने कुछ साथियोंको लेकर वहाँ डाका डाला। रक्षक-दलवालोंने उसका सामना किया। अपनेको कमजोर पा वह दल सहित दामोदरपुरकी ओर भागा। पर वहाँका रक्षकदल भी चौकन्ना था जिसने सबोंको घेर लिया। फिर तो एक तरफ खजुरिया रक्षकदल और दूसरी तरफ दामोदरपुर रक्षकदलकी दो तरफी मार डाकुओंपर बजरने लगी। देवी अहीर मारा गया मगर उसके साथी हाथ न आये—सबके सब भाग निकले। जनताराज चोरी डकैतीको बरदाश्त नहीं कर सकता था। वह जानता था कि अगर उसने चोरी डकैतीको मिटा नहीं डाला तो चोरी डकैती उसे तत्काल मिटा डालेगी। इसलिये दामोदरपुर पंचायतने देवी अहीरकी हत्याका अधिकसे अधिक लाभ लेना चाहा। उसकी लाश एक आमके पेड़में लटका दी गयी ताकि सब आंखे खोल देखें डकैतीका क्या परिणाम होता है। दूसरी घटना हुई गायघाटमें। जंगी अहीर नामक बदमाश डकैती करता हुआ वहां पकड़ा गया और मार डाला गया। इन घटनाओंकी खबर सुनकर चोर डकैतोंके प्राण सूख गये और उन्हें अपना पेशा छोड़ना पड़ा। हां! गुहचोर कुछ दिन और जहां तहां दिलचस्प कहानियोंके पात्र बनते रहे। रायकरहियामें मकईके बाल चुरानेके अपराधमें एक आदमीका सर मूंड़ा गया, चेहरा चूने और कालिखसे पोता गया और फिर बाजे गाजेके साथ गदहेपर उसकी सवारी निकाली गई। ऐसी घटना एक जगह और हुई, फिर तो गोविन्दगंजके जनताराजमें चोरी डकैती जैसे कांड कहानीके रूपमें रह गये।

अब गोविन्दगंज मोतिहारीमें अड़ी हुई अंगरेजी सरकारको परेशान करने लगा। उसे सर करनेको गोरोंकी फौजी गाड़ियां थानेभरमें दौड़ने लगीं जिससे पुलिसकी हिम्मत बढ़ी। उसने अरेराजके चार दूकानदारोंको जिनसे उनका पुराना बैर था गिरफ्तार कर लिया; उद्देश्य था केवल अपनी मिटी हुई धाकको फिरसे जमाना। गिरफ्तार करनेवाले बड़े दारोगा गयाप्रसाद सिंहने एलान किया कि कल मैं "बादशाह" को भी गिरफ्तार करूंगा। "बादशाह" संग्रामपुरमें थे। रातों-रात दो स्वयंसेवक वहां खबर दे आये।

दूसरे दिन खूब तड़के छोटा दारोगा लालबाबू कनस्टबिलों दफादारों और चौकीदारोंको लेकर कुछ देश द्रोहियोंकी मददसे संग्रामपुर पहुँचे। ऋषिजी अपने जत्थेको लेकर मिडिल स्कूलमें ठहरे थे। लालबाबूने श्रीरामर्षिजीसे कहा कि मैं आपको गिरफ्तार करने आया हूं। आप संगी-साथी सहित तैयार होकर थाने चलें। दारोगाके आनेकी खबर आसपासके गांवोंमें तुरत ही फैल गई और सकड़ों किसान वहां आ जुटे। रामर्षिदेवने उनकी उत्तेजनाको शान्त किया और फिर पुलिससे कहा मैं आप सबोंको गिरफ्तार करता हूँ। दारोगाजी तुरत स्कूलकी कोठरीमें बन्द कर दिये गये; उनको गिरफ्तार होते देख चौकीदार वगैरह नौ दो ग्यारह हो गये और कनस्टेबिलोंने पनी पगरियां सौंप दीं और जनता-राजकी जयजयकार मनाई। कैदीके रूपमें साढ़े तीन घंटे दारोगा साहब बंद रहे। उन्हें किसी तरहका शारीरिक कष्ट नहीं दिया गया। बहुत अनुनय विनय करनेपर पीछे छोड़ दिया गया पर उनकी गिरफ्तारीकी खबर ज्योंही मोतिहारी पहुँची त्योंही दो लारियोंमें गोरे दो बजे संग्रामपुर पहुँचे। उस वक्त ऋषिदल एक मील दूर दूसरी गांवमें ठहरा हुआ था। टामियोंने बहुत चक्कर काटे परन्तु ऋषिदलका पता न लगा सके। किसीने उनको पता नहीं बतलाया। फिर संग्रामपुरमें ठहरे हुए श्रीनागेश्वर दत्त पाठक और तीन स्वयंसेवकोंको उनने गिरफ्तार कर लिया। टामियोंने सबोंके कपड़े छीनकर जला दिये। पर हां सिर्फ पहननेके लिये संग्रामपुरके बनियोंसे धोतियाँ लेकर दीं। वहाँ टामियोंने कपड़े छीनकर जला देनेकी अपनी आदतसी बनाली थी।

इस घटनासे जनता हतोत्साह न हुई। ऋषिजीके प्रति उसकी श्रद्धा और बढ़ गई। घूमते हुए उनके दलमें जबतब दो-दो सौ स्वयंसेवक हो जाते और सबोंके खाने-पीनेका प्रबंध ग्रामीण जनता बड़ी श्रद्धासे करती थी। गोरे दिनरात ट्रकोंपर पटरी कुदाल वगैरह लादे ऋषिदलकी टोहमें दौड़ते-फिरते और गाँवकी चिड़िया भी नहीं बोलती कि ऋषिजी कहाँ हैं और उस गाँवमें कब आये थे।

मुजफ्फरपुर जिलेमें कटरा थानाने जिस जनताराजको कायम किया उसमें अगस्त क्रान्तिकी जितनी गर्मी थी उतनी सतर्कता भी। ४४ दिनों तक वहां जनताकी **मुजफ्फरपुर** ओरसे थाने भरकी व्यवस्था कांग्रेसके कार्यकर्त्ता अपने हाथ लिये रहे। जनताराजका हेडक्वार्टर था धनौरा जो कटराके नजदीकका ही एक प्रसिद्ध गाँव है। इसके संरक्षणमें चार कैम्प थे जहाँ खास-खास ढंगके काम होते थे। जजुआरामें जबतब कार्यकर्त्ताओंका जमाव हुआ करता थानेके कार्यकर्त्ताओंकी बैठकें भी होतीं और नेपाल प्रवासी कार्यकर्त्ताओंसे इसी केन्द्रके द्वारा विचार विनिमय हुआ करता।
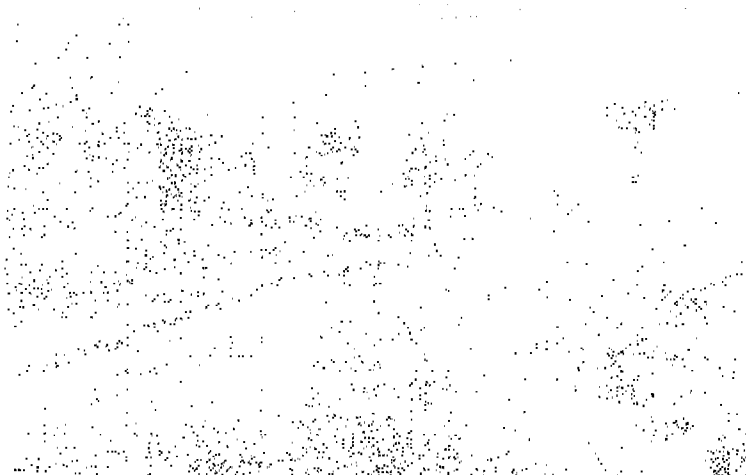
दूसरा कैम्प था जांता जहांसे दो अखबार निकलते—छात्रोंके लिये "बिजली" और जनसाधारणके लिये "डंका"। अखबारके अलावा जांताका प्रकाशन केन्द्र तरह-तरहके परचे निकालता और उनके वितरणका प्रबन्ध करता। पहिला कैम्प जनताराजकी सी० आई० डी० का अड्डा था। अङ्गरेजी सरकारके अमले कहां क्या कर रहे हैं और कटरा थानाकी जनता अपनी इस नई व्यवस्थाको लेकर क्या संकल्प विकल्प कर रही है इसको पूरी जानकारी रखनेकी कोशिश दहिला कैम्पको रहती। चौथा कैम्प था महिसवारामें। यह कैम्प सब जगहकी खबर रखता और कार्यकर्त्ताओंको दिया करता। इस कैम्पके जरिये ही कार्यकर्त्ता एक दूसरेसे सम्बन्ध स्थापित करते। हेडक्वार्टर धनौराका बोझ सबसे भारी था। रुपये-पैसेका प्रबन्ध करना और जनताराजके लिये सेना तथा शस्त्रास्त्रोंका संग्रह करना इसका ही काम था। यहां बराबर तीससे पचास तक स्वयंसेवक रहते जो लाठी, भाले, गड़ासे, बन्दूक और पिस्तौलका अभ्यास किया करते। उनका विश्वास था कि इन शस्त्रास्त्रोंको लेकर ही सरकारकी देश भरमें बिखरी हुई ताकतका मुकाबला कर लेंगे। स्वयंसेवक गूलरके तख्तेका ढाल रखते। उनका विश्वास था कि अङ्गरेजोंकी गोलीको यह ढाल रोक सकेगा। इनलोगोंको अपनी ताकतपर विश्वास करनेका एक और कारण था। बाढ़ आई हुई थी। कटरा और धनौरा चारों ओर पानीसे घिरकर टापू बन रहे थे और कार्यकर्त्ताओंका खयाल था कि पानी हेलकर आते हुए दुश्मनोंसे वे बीस ही साबित होंगे उन्नीस नहीं।

जनता राजकी हिफाजतका इन्तजाम करके कार्यकर्त्ताओंने थाने भरका फिर एकबार संगठन किया। गांव-गांवमें पंचायतकी स्थापना की। जो लोग चोरी-डकैतीके लिये बदनाम थे उन्हें पंचायतमें शामिल किया और देखा गया कि उन सबोंने जवाबदेही निभाई। ४४ दिनोंके अरसेमें कहीं भी चोरी डकैती नहीं हुई। नये झगड़ेकी क्या बात पंचायतने पुराने-पुराने झगड़े भी लिये और जो फैसला हुआ उसे दोनों पक्षोंने माना और दोनों एक दूसरेसे मिले। बसुआ, लखनपुर और जांतामें जगह-जमीनके पुराने झगड़े चले आ रहे थे। पंचायतने उन झगड़ोंको भी मिटा दिया।

जनता राजका बराबर खयाल रहा कि मुनासिब कीमतपर लोगोंको चीजें मिल जाया करें। जो चीजें रखकर नहीं निकालते उन्हें चीजोंको निकालना पड़ता। सी० आई० डी० ऐसे माल चोरोंपर कड़ी नजर रखते; मुनाफाखोर भी अपने हाथ पैर समेटे रखनेमें ही अपना कल्याण देखते। बेनीबाद और अमनौरके दूकानदारोंकी शिकायत हुई कि वे जनतासे ज्यादा पैसा लेते हैं। शिकायत सही पायी

गयी। बस, उनकी दूकानपर धरना बैठा दिया गया फिर वे सीधे हो गये।

अंगरेजोंका थाना जो बरबाद हो गया था उसे भी जनता राजने ४४ दिनोंतक आबाद रखा। कांग्रेस कैम्प थानामें ही रहता। स्वयंसेवक सुबह शाम झंडा प्रार्थना करते, कवायद करते और प्रभातफेरी तथा प्रदर्शनके लिये टोलियां निकाला करते।

२७ सितम्बरको सी० आई० डी० से खबर मिली कि अंग्रेजी सरकारकी फौज चारो तरफसे बढ़ती हुयी जनताराजको पामाल करने आ रही है। फौजमें हाथी हैं, घोड़े हैं, और कितने पैदल हैं हरबे हथियारसे लदे हुए और आगे पीछे कई टैंक हैं। तुरत कार्यकर्त्ता इकट्ठे हुये; सोचा विचारा और फैसला किया कि जनता राजकी सेनाको थाना खाली ही कर देना चाहिये। बस एक तरफसे थानेके हातेमें फौज आई और दूसरी तरफसे कार्यकर्त्ताओंका दल गांवोंकी ओर चला गया। फौजने कटरा गांवमें अपना प्रदर्शन किया और गांवसे सामुहिक जुर्माना वसूल करके चली गयी। थानेमें पुलिस और कुछ देशी फौजोंको बिठा गयी।

जनताराजका दूसरा उदाहरण मिला हाजीपुर सबडिविजनके महनार थानेमें। १८ अगस्तको श्रीमदन झाके नेतृत्वमें श्रीगंगा प्रसाद गुप्त, रामचन्द्र प्रसाद सिंह और मियां हमीदने थानेका चार्ज दारोगासे पूरा-पूरा ले लिया और थानेकी व्यवस्थामें लगे। थाने भरमें एलान कर दिया गया कि अंग्रेजी राज उठ गया है और कांग्रेस महनार राज कायम हुआ है। कांग्रेस राजकी तरफसे रेल, सड़क, हाट, बाजार सभीका नियंत्रण होने लगा। टमटमवाले, रिक्सावाले सबोंने इसका नियंत्रण मान लिया। दारोगा और छोटे दारोगा सपरिवार वहां रह रहे थे। एककी पत्नी गर्भवती भी थी। मदन झाने उनकी सुख सुविधाका प्रबन्ध कर दिया था। तो भी उन लोगोंकी इच्छा हुई कि हम महनार छोड़ महुआ चले जायं। उनने लाख सर पटका पर उनको महुआ जानेकी सवारी नहीं मिली तब वे श्री मदन झाके शरणापन्न हुए। श्रीमदन झाने तुरत चार टमटम और दो बैलगाड़ियोंका इन्तजाम कर दिया। और स्वयंसेवकोंको ताकीद कर दी कि पुलिसवर्गको महुआ जानेमें कोई असुविधा न हो।

कार्यकर्त्ताओंने थानेभरकी पंचायत कायम करके संगठित किया। पंचायतके काम थे लड़ाई झगड़ेको मिटाना गांवकी हिफाजत करना और बाजार निर्खपर आंख रखना। पंचायतने अपनी जवाबदेही निभानेके लिये भिन्न भिन्न विभाग खोले। इन विभागोंकी सुचेष्टाके फलस्वरूप जब

तक जनताराज कायम रहा यानी १८ अगस्तसे ३ सितम्बर तक; कहीं झगड़ा तकरार नहीं हुआ और न लूटपाट हुई। चारो ओर शान्ति रही। हां! शुरू-शुरूमें कुछ लोगोंका खयाल रहा कि अंगरेजी राज उठ गया है अब हमलोग मानमाने ढगसे अपनी जरूरत पूरी कर सकते है। इसलिये जहां-तहां हलकी चोरी हुई; लूट भी हुई। श्रीमदन झा कहते है—"जहां-जहां चोरी और लूट हुई वहां-वहां जाकर हमलोगोंने तहकीकात की और माल बरामद करवाकर मालवालेको दिया। करनौतीमें सरमस्तपुर हाट है। वहां एक बनियेका ४००) रु० का माल लूटा गया। ज्योंही थाना कांग्रेस कमिटीके सभापति श्रीविश्वनाथ प्रसाद सिहको इसका पता लगा वे वहां गये और बनियेको, उनकी मुस्तैदीसे, सारा माल वापस मिल गया। एक बनिया देसरीसे सामान खरीदकर लौट रहा था। देसरीके लोगोंने ही उसके ७०) रु० के माल लूट लिये, मैं श्रीविन्ध्यवासिनी प्रसादजीके साथ वहां गया। हमलोग वहां बनियेका १४) रु० का सामान ही बरामद करवा सके जो उसको मिला। शेषके लिये हमने उसे माल हड़प जानेवालोंसे ही ५६) रु० नकद दिलवाये। महनार पेठियाके नजदीक एक का १००) रु० का सामान लुट गया। मेरी गिरफ्तारीके बाद उसे १००) रु० मिल गये। कांग्रेसकी इन कार्रवाइयोंके कारण लुटेरोंपर कांग्रेसकी धाक बैठ गई। चारो ओर फैल गई—"कांगरेस लूट न होय देई छई; लूटल माल घुमवा देई छई"। बस, लूटपाट बन्द हो गई और बन्द रही।

"जनताराजको सुरक्षित रखनेके खयालसे २८ अगस्तसे महनार थानेमें तोड़-फोड़ शुरू हुआ। मैने इसमें दिलचस्पी नहीं दिखलाई और न ऐसे-ऐसे कामोंकी ओर ध्यान देनेकी फुरसत ही मुझको थी। मैं अपने ऑफिसको केन्द्र मान कई मील निकल जाता और जाते-आते लोगोंको समझाया करता कि अंगरेजी राज उठ गया; अब न उसकी पुलिस है और न फौज; कांग्रेसी राज है जिसको न पुलिस है और न फौज; इसके सब कुछ तो आपलोग हैं; आप ही कांग्रेसकी पुलिस हैं आप ही कांग्रेसकी फौज हैं। अपनी हिफाजत कीजिये और अड़ोसी-पड़ोसीके जानमालकी जबावदेही लीजिये। अपने प्रचार कार्यमें मुझको श्रीविन्ध्यवासिनी प्रसाद सिंह और चर्खासंघके श्रीचन्द्रदीप नारायण वर्माका सहयोग बराबर मिला करता।

"मेरा कायदा था दिनभर घूमना फिरना और रातको अपने ऑफिसमें जरूर

रहना ताकि जनता जरूरत पड़नेपर मुझसे तुरत और सुविधापूर्वक मिल सके। अपने कायदेके मुताबिक ३ सितम्बरको मैं अपने आफिस वापस आ रहा था। मरौवनपुर पहुँचा तब लोगोंने कहा, फौज आ गई। चार-पांच रोजसे उसके आनेकी गरम अफवाह थी। मैंने सुन लिया और आगे डेग बढ़ाई। जिस आम सड़कसे चलता था उस सड़कसे ही चलकर सीताराम साहु हलवाईकी दूकानके सामने आया। लोग घबराये हुए थे। मैंने देखा—दूकानमें छोटे और बड़े दारोगा भोजनकर रहे हैं। अपनी रीतिके अनुसार उनसे कुशल मंगल पूछा और अनुकूल उत्तर पाकर आगे बढ़ा ही था कि दारोगाने कहा—ठहरिये। फिर मैं गिरफ्तार कर लिया गया।"

इनकी गिरफ्तारीकी खबर पाकर और कार्यकर्त्ता गाँवोंमें घुस गये और जनता राजका अन्त हुआ।

सीतामढ़ी सबडिविजनके पुपरी थानाने जन व्यवस्थाकी मजबूत बुनियाद डाली थी। १९ अगस्तको खुद ही इधर उधर कागजात जमा कर श्री अर्जुन सिंह पुपरी थाना दारोगा अपना थाना खाली कर गये थे और उनका भार जन-सेवकके रूपमें श्री नन्दकिशोर सिंहने लिया था। रचनात्मक कार्यक्रमको सफल बनानेके लिये श्री लाखो चौधरीको कहा गया था और बाजारको व्यवस्थित रखनेकी जवाबदेही श्री रामपरीक्षण ठाकुर और श्री मोहित ठाकुरको सौंपी गई थी।

थानेका भार सरपर आते ही कार्यकर्त्ताओंके आगे सबसे पहले बाजारकी समस्या आई। गाड़ी बन्द हो जानेके कारण नमक-तेल वगैरहको दूकानदारोंने मनमाने तौरपर बेचना शुरू कर दिया था। कुछ दूकानदारोंने तो इनका बेचना ही बन्द कर दिया था। लोग बड़ी दिक्कतमें पड़ गये थे। उनकी दिक्कतको दूर करनेके लिये थाना-व्यवस्था-समितिने सभी चीजोंका स्टॉक ले लिया, उनकी कीमत ठीक कर दी और उनके उचित वितरणका प्रबन्ध कर दिया। २० अगस्तको बाबा नरसिंह दास आये और थाना संचालनके सम्बन्धमें कार्यकर्त्ताओंको समझाया बुझाया।

थानेका एक केन्द्र खड़का था जिसके संचालक थे श्री देवेन्द्र झा। आपने खड़का, सामर, नयाटोल आदि ग्रामोंमें पंचायत स्थापित की थी और रक्षादलका सगठन किया था। इस बीचके असेसर सूरत साहूने और दफादार महम्मद हनीफने अपने अपने पदको छोड़ जनताको अपनी सेवा अर्पित की थी। इनकी

प्रेरणा पाकर कई चौकीदारोंने इस्तीफे दे दिये थे। बाबा नरसिंह दासने केन्द्रका भी निरीक्षण किया था और कार्यकर्त्ताओंको खूब उत्साहित किया था। फलस्वरूप बीट नं० २ से १२ तकके ४२ गांवोंमें पंचायतकी स्थापना हुई।

पुपरी थानाकी जन-व्यवस्था अपनी ताकत दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ा ही रही थी कि २४ अगस्तको हरदीप-हत्याकाण्ड हुआ जिसकी प्रतिक्रियाने पुपरी जन-व्यवस्थाकी कमर तोड़ दी।

दरभंगा सदरके बिरौल थानाने जन-व्यवस्था देखी रसियारी केन्द्रमें। इस दरभंगा इलाकेसे १० अगस्तसे ४ सितम्बरतक ब्रिटिश राज्य उठा ही रहा।

श्री विन्ध्येश्वरीप्रसाद सिंह लिखते हैं—"१९३८ से बिरौल बहेड़ा थानाकी फांड़ी (Outpost) हुआ जहां एक दारोगा सदल बल रहता था। १९४२ के आन्दोलनके बाद अब यह स्वतंत्र थाना हो गया है। यह इलाका जिला भरमें पिछड़ा हुआ था; परन्तु १९४२ के आन्दोलनमें यह थाना जिलामें किसीसे पीछे नहीं रहा। यहां कांगरेसी और सरकारी ताकतोंमें कई दफा भिड़न्त हुई, केवल हत्या नहीं। जब दूसरे दूसरे थाने आतंकित थे, उस समय भी इस थानेमें कांगरेस कर्मी जत्था बाँधकर थानेमें घूमते थे और लोगोंके साहसको बढ़ाते थे। यही कारण है कि जहां सरकारकी ओरसे दरभंगा जिलामें कांगरेस कर्मियोंके घर और आश्रयका जलाना अगस्तमें ही खत्म हो गया वहाँ सैलिसबरीको बिरौल थानेमें घर जलानेके लिये १५ सितम्बरको भी आना पड़ा। इसके पहले बिरौलके दारोगा और जमादार सुपौलसे बाहर निकलनेका साहस नहीं करते थे। रातमें डरके मारे चार चार बार सोनेकी जगह बदलते थे। दारोगा कहा करता था कि यहाँ इन्कलाब जमीन फोड़ कर निकलता है।" इसी थानेमें १९ अगस्तको श्री लक्ष्मण झाकी प्रेरणासे रसियारी राजभूपर जनताने दखल जमाया और वहाँ जन-व्यवस्थाकी केन्द्रीय कमिटी संगठित हुई। प्रत्येक गांवमें पंचायती बोर्ड बनाया गया और पचीस पचीस स्वयंसेवकोंका एक एक जत्था उस गांवकी रक्षाके लिये तैनात कर दिया गया। हर-एक गांवसे दो दो स्वयंसेवक केन्द्रमें भेजे गये। इन पंचायती बोर्डों और स्वयंसेवकके जत्थोंका हेड ऑफिस भी रसियारी केन्द्रमें ही था। केन्द्रीय कमिटी इन सबोंके ऊपर थी और इस ढंगसे व्यवस्था करती थी कि सभी काम सिलसिलेसे होते रहे और सभी संस्थाओंका परस्पर सहयोग रहा।

इस इलाकेमें हिन्दू मुसलमानोंमें दंगा करवानेका सरकारकी ओरसे भगीरथ प्रयत्न हुआ, जहां तहां लूटमें पुलिस काफी मुसलमानोंको शामिल कर लेती रही पर केन्द्रीय कमिटीके प्रचारने जनताको क्रान्ति-पथसे विचलित होने नहीं दिया। न चोरी डकैती हुई और न आपसी दंगा-फसाद ही। इस इलाकेके गमभा, पाली, रसियारी और लुमौल जाग्रत स्थान थे जो सरकारी भेदियोंके हथकंडोंकी पर्वाह न करके पीड़ित क्षेत्रोंके कितने कार्यकर्त्ताओंको आश्रय देते रहे।

बिरौलमें दारोगा रहता था पर दबा हुआ। एक बार जमादारकी एक स्वयं-सेवकसे बमचख हो गई। स्वयंसेवकने कहा—हम जाते हैं विन्ध्येश्वरी बाबूके यहाँ। जमादार घबराया और उस स्वयंसेवकको मना देनेके लिये सुपौलके कुछ सज्जनोंकी खुशामद करने लगा।

सिंगिया थानेमें भी १८ अगस्तसे १० नवम्बर तक जनताकी व्यवस्थासे ही लोगोंके जान मालकी हिफाजत होती रही और उत्साहका वातावरण बना रहा। पिछले ही दिन थानेमें भीषण काण्ड हुआ था। सामान जले थे, लूट हुई थी और हत्या भी। तौभी कार्यकर्त्ता घबड़ाये नहीं थे; दस बजे रातको थानापर दखल किया था। आज उनने एक सार्वजनिक सभा की और सर्वसम्मतिसे थाना सुरक्षा कमिटी कायम हुई। गांव गांवमें पहरेका इन्तजाम किया गया और पंचायत संगठित हुई। ग्राम-पंचोंको सावधान कर दिया गया कि किसी भी विवादको सुलझानेसे बाज न आवें; विशेष परिस्थितिमें ही किसी मामलेको थाना पंचायतमें आने दें; साथ ही थाना पंचायतमें चुने चुने लोगोंको रक्खा ताकि थाने भरका विश्वास उसपर जमे। रचनात्मक कार्य समितिकी भी स्थापना हुई जिसमें वे लोग थे जो शुरूसे चर्खेका काम करते थे। चर्खा चलानेका काम और जोर पकड़े और नियमित तथा नियंत्रित रूपसे होवे—यही रचनात्मक कार्य-समितिका उद्देश्य था।

पहरेकी जवाबदेही जिन नवयुवकोंने ली थी उनकी कार्य तत्परताके कारण जगह जगह नियमित रूपसे प्रभातफेरी होने लगी; लोग क्रान्तिके नारे लगाने लगे; आजादीके गाने गाने लगे। सबसे महत्वकी बात तो यह रही जनता आमतौरसे हर बातोंमें साथ देती रही।

थाना सुरक्षा कमिटीने डाकका भी इन्तजाम किया था और खास खास-आदमियोंको खबर पहुँचानेका काम सौंप रक्खा था।

२८ अगस्तको सुरक्षा-कमिटीको खबर मिली कि गोरे सिंगिया आ रहे हैं। तुरत

कोल्हुआघाट और पथारीके पुलको तोड़नेकी राय हुई। कोल्हुआका पुल तोड़ डाला गया और पथारीका पुल पहलेसे ही टूटा पाया गया। फिर कुछ लोग नकाब डाल कर अस्पतालमें घुस गये और कम्पाउण्डरसे रजिस्टर छीनकर जला दिया। उस रजिस्टरमें उनलोगोंके नाम दर्ज थे जिनको छर्रे लगे थे अस्पतालमें चिकित्सा करानी पड़ी थी। कम्पाउण्डर डर गया और भाग गया। दारोगा और कनस्टबिल भी जो श्रीकुलानन्द सिंहकी तीमारदारीसे अब चल फिर सकते थे अस्पताल छोड़ श्रीनथुनी सिंह दूकानदारके यहां चले गये। वहांसे दूसरे दिन रातको श्रीसूर्यकान्त झा उर्फ बेनी बाबू कुछ साथियोंके साथ आये और दोनोंको अपने यहां ले गये। श्रीकुलानन्द सिंहको इसका दुःख रहा। उनने घायल दारोगाको घातक मारसे बचाया था; दूध पिलाया था; कपड़े दे उसका तन ढका था और काफी खिदमत की थी। दारोगा उनसे बात तक न करेंगे और चल देंगे उनको ऐसी आशा न थी।

२३ अगस्तको १ बजे दिनमें एटकिन्स साहबके नेतृत्वमें गोरे सिंगिया आये, गांवमें हलचल मच गई। श्रीरामेश्वर सिंह और श्रीशत्रुघ्न सिंह जैसे प्रमुख व्यक्ति गाँव छोड़ भाग चुके थे, इसलिये गोरोंके सामने डटनेका खयाल भी किसीको नहीं हुआ। गोरोंने सड़कके अगल बगलके सत्रह सज्जनोंके घर जलाये। पं० राधाकान्त झा वैद्य, मोसम्मात सोहाग वती, राधे साहु, जीबछ झा, भूल्ल कानू और साधु रामेश्वर सिंहके नाम उल्लेखनीय हैं। गोरोंने एक हत्या भी की। जब श्रीकुलानन्द सिंहका घर घेरा गया तब उनके लड़के रामगुणी सिंहकी एक टामीसे भिड़न्त हो गई। उसे झटक पटककर रामगुणी सिंह भागे तो देखा सामने दूसरा टामी राइफल ताने है। उसकी राइफलमें झटका दे वह फिर भागे। तुरत टामीने गोली चलाई पर वह बाल-बाल बच गये। टॉमी दौड़ते हुये श्रीकुलानन्दके घरमें घुस गये और कुलानन्दजीको गोली दाग दी। वह तत्काल शहीद हो गये। इस हत्याके बाद टॉमी वहाँ नहीं ठहरे। श्री रामेश्वर प्रसाद साधुके घरमें आग लगा फौरन रफूचक्कर हो गये। फिर ११ सितम्बर तक सरकारका कोई इस थानेमें झाँकने न आया। सब जगह शान्ति रही; व्यवस्था कायम रही और आपसी लड़ाई-झगड़ा २७ आगस्तसे ११ सितम्बर तक इस थानेमें हुआ ही नहीं।

मुंगेर जिलामें सूर्यगढ़ा, चौथम और तारापुर थानेकी जनताको अपनी व्यवस्था आप करनेका सुअवसर मिला।

१३ अगस्तको ही सरकारी संस्थाओंपर कब्जा करके कार्यकर्त्ताओंने तिलक

मैदानमें एक विराट सभा बोलाई जिसमें घोषणा की गई कि आजसे सूर्यगढ़ा

सूर्यगढ़ा थानामें पंचायती राज्य कायम कर दिया गया और जनतासे अपील की गई कि आप अपने गाँवमें जल्दसे जल्द पंचायती व्यवस्था स्थापित करनेमें कार्यकर्त्ताओंको पूरा-पूरा सहयोग दें। थाना पंचायतका तुरत संगठन कर लिया गया।

थाना पंचायतने गाँव-गाँवमें पहरेका इन्तजाम करवाया। थानेपर कब्जा हो चुका था पर दारोगाजी तीन दिनों तक थानेमें ही रहे। तबतकके लिये उनके जानमालकी हिफाजतकी जवाबदेही थाना पंचायतने ली और निभाई। थानेके चौकीदारोंने अपनी वर्दियाँ थानामें जमाकर दीं जो जला दी गईं। अब वे गान्धी-टोपी पहनने लगे और थानामें गान्धी-टोपी पहनकर ही परेड करने आने लगे। उनके सहयोगसे परेडका काम अच्छी तरह होने लगा। सौदागरों और मुसाफिरोंकी नावोंपर भी पहरा पड़ने लगा।

पाँच आदमियोंका थाना न्यायालय कायम किया गया, जो रोज इजलास करता। जो मुकदमा ग्राम पंचायत नहीं तय कर पाता सो यहाँ आता। और कई मुकदमें आये जिनमें अपराधियोंने अपना कसूर मान लिया। एक भी घटना ऐसी नहीं हुई जब कि इसका फैसला सर्व मान्य नहीं हुआ।

थाना पंचायतने जेल भी बनाया था जिसमें अपराधी दंड भोगनेके लिये रख दिये जाते। जेलपर हमेशा पहरा रहता। कई अपराधियोंको जेल दिया भी गया जिनमें अधिकाँशने जुर्माना देकर मुक्ति पा ली और सुधरनेका पक्का वादा किया। थाना पंचायतने अन्नकी समस्याको सुलझानेकी काफी चेष्टा की। बनियों वा गृहस्थोंको अन्न चुरा रखनेसे रोका। बाजारको नियंत्रणमें रखा और अन्न रखनेवालोंको आदेश दिया कि वे भुक्खड़ोंको अन्न बाँटें। डरसे वा प्रेमसे, जैसे भी हो, पर अमीरोंने, जितना कहा गया, उतना अन्न भुक्खड़ोंको दिया। यह बड़ा कारण हुआ जो १३ अगस्तसे २६ अगस्त तक सूर्यगढ़ामें सुख शान्ति तथा संतोषकी झलक पायी गयी और जनताने पंचायती राज्यकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

तारापुर १५ अगस्तसे जब सरकारने थाना खालीकर दिया २८ अगस्ततक थानामें कॉंग्रेसका ही बोल बाला रहा। कार्यकर्त्ताओंने वहाँ जनता राज कायम किया जिसकी विकट समस्याओंको सुलझानेकी उनने सच्ची

कोशिश की। जबतक उनने जनता राज चलाया उन्हें सिद्धान्त और व्यवहारके संघर्षका जैसा सामना करना पड़ा—जैसे जैसे सनसनीखेज घटनाओंका सूत्रधार बनाना पड़ा; उससे अगस्त-क्रान्तिके इतिहासमें तारापुरका स्थान अमिट हो गया है।

पुलिसके भागते ही कार्यकर्त्ताओंने तारापुरमें एक व्यवस्था समितिका निर्माण किया जिसको कई काम करने पड़ते। चौकीदारोंने सरकारी काम छोड़कर जनता राजको अपनी सेवा दी थी। समिति उन्हें हिदायत देती जिसके मुताबिक वे गाँव गाँवकी रिपोर्ट लाकर काँग्रेस आफिसको दिया करते। कार्यकर्त्ताओंने गाँव गाँव घूमकर जनताकी रक्षाके लिये सेवादल संगठित किया था। फिर भी समितिको केन्द्रमें स्वयंसेवक रखने पड़ते ताकि जरूरत पड़नेपर केन्द्रसे एक स्वयंसेवक दल जाय और किसी गाँवमें शान्ति स्थापित कर आवे। गाँव गाँव पंचायतें थीं पर समितिने एक विशेष पंचायत भी स्थापित कर रखी थी—जो सबकी शिरमौर थी और जिसका फैसला सर्वमान्य होता था। व्यवस्था समितिने जेलका भी इन्तजाम कर रक्खा था। विद्यार्थी तो क्रान्तिकारी बन गये थे। इसलिये असरगंज हाइ स्कूल क्रान्तिकारियोंका अड्डा बन गया था। वहीं जेल था और केन्द्रीय स्वयं-सेवक शिविर भी।

तारापुर जनताराजको धनका अभाव न था। एक असरगंज बाजारने जब चंदा देना शुरू किया तो इतनी रकम आ गई कि जरूरतसे ज्यादा समझी गई और काफी चंदा देनेवालोंसे कहा गया कि अभी कुछ मत दीजिये; जैसे जैसे जरूरत होगी दिया कीजियेगा।

तारापुरकी जनता जमींदारीकी ज्यादतियों और चोर डकैतके उपद्रवोंसे परेशान थी। स्वभावतः कार्यकर्त्ताओंको इनकी परेशानी दूर करनेका उपाय करना पड़ा। पर जनता जिस हद तक जिस उग्रतासे जाना चाहती थी उस हद्‌तक उस उग्रतासे जाना इनके लिये असंभव था। फिर भी वे जनताको संतुष्ट रख सके और जनता इन्हें सदैव सहयोग देती रही।

अंगरेजी राजके उठते ही राज बनैलीके उत्पड़नके विरुद्ध जनता खड्गहस्त हुई। कुछ कार्यकर्त्ताओंको साथ देना पड़ा। देगाँव कचहरी जला दी गई जिसके कागज पत्र नष्ट कर दिये गये। बादको और भी कचहरियाँ जलीं। तहसीलदार और पटवारीने विरोध नहीं किया बल्कि उनका रुख हमदर्द जैसा ही रहा। एक तो वह

जमाना ही ऐसा था कि जमींदार हाथ पैर समेट बैठे थे और उसपर ऐसे-ऐसे कामोंको करके कार्यकर्त्ताओंने उनकी सत्ताको नगण्य बना दिया। फिर कार्यकर्त्ताओंने थाने भरकी कालाली भी बन्द कर दी और संग्रामपुरका डाक-बंगला जला दिया।

कई गाँवके लोग धनियोंको लूटना चाहते थे। स्वयंसेवक दलने वहाँ जाकर परिस्थिति संभाली। जनता राजके व्यवस्थापकोंने ऐलान कर दिया था कि आवश्यकता हुई तो चोरी डकैतीको रोकनेमें बलका भी प्रयोग किया जायगा। फलस्वरूप हर जगह शान्ति स्थापनामें कार्यकर्त्ताओंको सफलता मिली। पर एक जगह एक भीषण काण्ड हो ही गया।

माधोडीहमें कई बदमाश रहते थे मन मारे। पर संग्रामपुरमें एक घटना घटी। बेलहर थानेके कुछ कार्यकर्त्ता वहाँ कचहरी जलाने गये और बदमाशोंसे खूब पीटे गये। सबोंको प्राण लेकर और घाव भी भागना पड़ा। माधोडीहके बदमाशोंको हिम्मत हुई। उनको विश्वास हुआ कि मुठभेड़ होनेपर वे भी तारापुरके कार्यकर्त्ताओंकी दुर्गति कर देंगे। फिर वे सबके सब अपने पेशेमें लग गये। वहाँका सेवादल उन्हें सर न कर सका और तारापुर खबर भेजी। इधर बदमाशोंने एक बनियाको लूट लिया और फिर एक गृहस्थको नोटिस दी कि तुम्हें अमुक दिन लूटा जायगा। बस, सदल-बल थाना व्यवस्थापक माधोडीह पहुँचे। वहाँ उनने पंचायत बुलायी और एक बदमाशको पकड़ा जिसे इतना पीटा कि बेचारेको अपने सभी साथियोंका नाम उगलना पड़ा। उसकी मददसे कार्यकर्त्ताओंने और १९ बदमाशोंको गिरफ्तार किया जिनमेंसे हरेकको इतना पीटा कि सबोंको कहना पड़ा, बनियेकी चीजें कहाँ-कहाँ हैं? फिर तो सारा माल बरामद हो गया। सभी बदमाश विशेष पंचायतमें हाजिर किये गये। जनता भी बड़ी तादादमें आई हुई थी। पूरी जानकारी हो जानेके बाद सजा तजबीज होने लगी। अङ्गरेजी राज तो था नहीं; इसलिये उसके कायदे कानूनकी क्या चर्चा हो सकती थी? भारतवर्षमें चोर डकैतोंके हाथ काट लिये जाते थे; कामान्धोंकी आँखें फोड़ दी जाती थीं और इन बदमाशोंके खिलाफ सब तरहके जुर्म साबित हो चुके थे। इसलिये एक व्यवस्थापककी ओरसे प्रस्ताव हुआ कि अधिकसे-अधिक एक आँख फोड़ दी जाय और एक हाथ काट दिया जाय। पर माधोडीहकी जनताने कहा कि जब तक दोनों आँखें न फोड़ी जायंगी और दोनों हाथ न काट दिये जायेंगे तब तक हमलोगोंका न धन सुरक्षित रहेगा और न इज्जत बचेगी। व्यवस्थापकों और जनतामें मतभेद हो गया। फिर

स्वयंसेवकोंसे पूछा गया। उनने अपनी राय व्यवस्थापकोंके पक्षमें दी। कहा कि जान बरबाद कर देनेके पक्षमें हमलोग नहीं हैं। हम इतना ही चाहते हैं कि बदमाशोंको डकैतीके नाकाबिल बना दिया जाय। फलस्वरूप विशेष पंचायतका फैसला हुआ कि उन्नीस बदमाशोंमें जो सरदार है उसकी दोनों आँखें फोड़ दी जायं और जो कमार है उसका दाहिना पंजा काट लिया जाय। चार बदमाशोंमेंसे हरेककी एक आँख फोड़ दी जाय और दाहिना पंजा काट दिया जाय, पाँच गरम लोहेसे दाग दिये जायं और आठको सिर्फ बेंत मारे जायें। पर बदमाशोंको सजा सुनाई नहीं गई। स्वयंसेवकोंको आदेश मिला कि सबोंको नदी किनारे ले चलो।

साढ़े पाँच बजेके करीब सभी व्यवस्थापक, स्वयंसेवक और बदमाश नदी किनारे पहुँचे। बदमाश तो चलने-फिरनेसे लाचार हो रहे थे। कितनोंको तो शब्दशः ढो ले चलना पड़ा था। वहां विशेष पंचायतके मुखिया हरेकको सजा सुनाते गये और दंड दिलाते गये! एक बंधे हुए बदमाशको पटककर छातीपर चढ़ बैठा; दूसरेने उसका सर पकड़ा और तीसरेने एक बड़े भालेसे उसकी आँख फोड़ी। उसी तीसरेने सबकी आँखें फोड़ीं पर पंजा काट फेंकनेका काम दूसरेने किया और दागनेका काम किसी तीसरेने। सबके सब बदमाश अचेत वहीं गिर पड़े। सजा देखनेके लिये लगभग तीन सौ लोग आये थे। पर सजाका दृश्य सब देख न सके। कितने भागे और कई बेहोशसे हो गये। दो-एक व्यवस्थापक भी वहाँ मौजूद न रह सके। आँखें फोड़नेमें जितना जोश दिखलाया गया उतना हुनर नहीं। पीछे चलकर प्रायः सबकी आँखें अच्छी हो गईं। सिर्फ एककी आँख ही नहीं जान भी चली गई।

इस घटनाकी खबर जंगलकी आगकी तरह चारो ओर फैल गई। चोर डकैत सन्न रह गये; और मुंगेरमें ही नहीं, भागलपुर और संथाल परगनामें भी लंबे अरसे तक जरनैली चोर डकैतोंके कलेजेमें इतनी कूवत न आई कि जनताको लूटें। तारापुरकी जनता तो अमन-चैनसे रहने लगी जिससे कार्यकर्त्ताओंको संघटित होनेका खूब मौका मिला। फलस्वरूप फौजियोंका आतंक भी उनका संघटन तोड़ न सका।

भागलपुर

भागलपुरका बाँका सबडिविजन जिन सब बातोंके लिये अगस्त-क्रान्तिके इतिहासमें अपना निराला स्थान रखता है उनमें एक यहाँके जनता राजकी रीतिनीति भी है।

१९ अगस्तको अमरपुर थानेके शासनकी बागडोर 'राष्ट्रीय सरकार'के अफसरोंके हाथमें आ गई और १४ सितम्बर तक रही। अफसरोंने थानेको तीन हिस्सोंमें बाँट दिया और हरेक हिस्सेमें एक एक कैम्प खोला जिसपर अपने-अपने हिस्सेकी सुव्यवस्थाकी जवाबदेही रही। एक कैम्प था भतसिलामें, दूसरा अमरपुरमें और तीसरा संभूगंजमें। अमरपुर कैम्प प्रधान था और संयोजकका काम करता था। हरेक कैम्पमें कमसे कम दो दर्जन 'सैनिक' रहा करते जो राष्ट्रीय सरकारके आदेशके अनुसार चलते।

अमरपुर

राष्ट्रीय सरकारके दो विभाग थे—ध्वंसात्मक तथा रचनात्मक।

ध्वंसात्मक विभागके काम थे सरकारी इमारतों, डाकघरों और कलालियोंको बरबाद कर देना और राजबनैलीकी कचहरियोंको फूंक डालना। राजबनैलीपर लोग क्रुद्ध थे और उसके रिसीवरने जोर-जुल्म करके और फिर कचहरियोंको फौजका अड्डा बना करके प्रजाकी क्रोधाग्निमें घीकी आहुति डाल दी थी। रचनात्मक विभागके काम थे ग्राम संगठन करना, हर गांवमें पंचायत कायम करना और हर गांवमें पहरा-दल संगठित करना।

२९ अगस्तको दस बजे रातको अमरपुर थानेपर टॉमियोंकी चढ़ाई हुई। साथमें बांकाके दारोगा नसीर मियां और हरिहर सिंह वगैरह थे। मकदुमा पहुँचकर वे सभी मिडल स्कूलपर चढ़ दौड़े किसीको न पाकर उनने रसोइयाको पकड़ा और खूब पीटा। श्री रमचू दरबेको पुल ठीक कर देनेके लिये कहा और इनकार करनेपर उसने बन्दूकके कुन्दोंसे रमचू दरबेको इतना मारा कि वे बर्दाश्त न कर सके और चल बसे। फिर उनकी लॉरी कांग्रेस आफिसके सामने आयी और श्री हरिहर सिंह दारोगाने कहा—यह कांग्रेस आफिस है; इसे जला दो। पर उतनी रातको लॉरीसे उतर कर वहाँ तक जानेका साहस कोई दिखला न सका।

दूसरे दिन वह टॉमी-दल चपरी पहुँचा। श्री सोखी चौधरीके घरको लूट कर जला दिया—और श्री महावोर चौधरीके घरको जलाकर खाक कर दिया। फिर उस दलका धावा महोलापर हुआ जहाँ उसने दारोगा महतो, छोटे महतो, बीसो महतो, नित्या महतो और छबीला महतोके घर जला दिये। फिर चोरबेकी बारी आई। श्री रामेश्वर वैद्यका घर जलाया गया और उनकी स्त्रीके हाथसे टॉमियोंने जेवर छीन लिया।

फिर सबके सब बांका लौट गये। पुलिसको वहाँ ठहरनेकी हिम्मत नहीं हुई।

डोमियोंकी आग लगी और लूट राष्ट्रीय सरकारसे अंगरेजी सरकारके कायदे कानून नहीं मनवा सकी। ९ सितम्बरको राष्ट्रीय सरकार बड़ी भीड़ लेकर गई। थानेको पूराका पूरा जला दिया और फिर उसकी दीवारें ढाहकर धूलमें मिला दी। इतना ही नहीं, राष्ट्रीय सरकारका ध्वंसात्मक विभाग जग उठा; कुण्डा, नोनिपरी मकदुमाके पुलको उसने तोड़ दिया और कई जगहोंपर सड़कें भी काट दीं।

संभूगंज कैम्पने संभूगंज और नूरगंजके डाक बंगले जलाये। उस हिस्सेके सभी डाकघरोंकी डाक लूट ली और राजबनैलीकी कचहरियां जला डालीं। भत-सिला कैम्पने राज सर्कलकी कचहरी, गुलनी, प्रतापपुर, केशवपुर और जिधौड़ा आदिकी कचहरियां फूंक डालीं और डाकघरोंको लूट लिया।

१४ सितम्बरको मिलिटरी लेकर दारोगा आया और अमरपुर थानेमें रहने लगा। पर एक मास तक हाथ-पैर हिलानेकी हिम्मत वह न कर सका।

बेलहर थानेका ताज कार्यकर्त्ताओंने पहना अगस्तके अन्तमें। और जो ताज पहनता है उसे शान्ति कहां? बेलहरके कार्यकर्त्ताओंको भी लड़ते झगड़ते पीटते बेलहर पिटाते अपनी व्यवस्थामें थानाको रखना पड़ा। पर जब तक उनकी व्यवस्था चली खूब ठीकसे चली। पीड़क दूबे पीड़ित उठे। अंगरेजी सरकार तो उठ गई थी पर बनैली राज छातीपर बैठा ही था। इसलिये कार्यकर्त्ताओंको पहले उससे ही निबटना पड़ा।

संग्रामपुर डाक-बंगलाको जलाकर कार्यकर्त्ता बनैली राजकी कचहरी जलाने चले और 'पूंजीवाद नाश हो, जमींदारी नाश हो' के नारे बुलन्द करने लगे। पर ज्योंही वे कचहरीके पास पहुँचे त्योंही कुछ लोग उनपर टूट पड़े और लठिया-कर सबोंको भगाया। श्री बालेश्वर प्रसाद सिंह और डा० नरेन्द्रनारायण झा पर तो सख्त मार पड़ी और उनको उठना बैठना मुश्किल हो गया। कार्यकर्त्ताओंने संग्रामपुरको सर कर देनेका निश्चय किया। संग्रामपुर वाले डर गये, आये और कहा कि आपलोग जांच कीजिये और जो अपराधी साबित हो उसे दंड दीजिये। जांच कमिटी बैठी, उसने संग्रामपुरको ५००) रु० बतौर दण्ड देनेको कहा जिसे उसने मंजूर कर लिया।

थानाकी व्यवस्थाके लिये सभी कार्यकर्त्ता खरौंदामें इकट्ठे हुए और ध्वंसात्मक तथा रचनात्मक विभागोंको संगठित किया। दोनों विभागोंके कार्यकर्त्ता गांव-गांवमें पिल गये और अपने अपने विभागका नाम बढ़ाने लगे। बेलहरकी कोई सड़क

अछूती न रही और जैसी सड़क वैसा पुल। पांचो सर्कल पंचके कागजात जला दिये गये; तीनों डाकघर बरबाद कर दिये गये। कलाली तो सारीकी सारी नष्ट कर दी गई। स्कूल सारे बन्द कर दिये गये।

रचनात्मक विभागने गांव-गांवमें रक्षा दलका संगठन किया और पंचायतें स्थापित की। धौरी, बेलडीहा, बनगामा, धमराही, खेसर, फिकुलिया, डुब्बा, मधुबन, कुसौल, बड़हरा और राजपुरने इस दिशामें ठोस काम दिखलाया। चोरी बिलकुल बन्द हो गई। हां! डकैती शुरू शुरूमें जरूर हुई। पर आत्मरक्षादलने डकैतोंकी दाल कभी गलने नहीं दी। जमुनीमें, पसियामें और बारामें डकैतोंको रक्षादलने मार भगाया। पसियाके एक डकैतको तो जानसे हाथ धोना पड़ा।

इस बीच दो बार गोरे आये और पुलिसको थानेमें बिठाना चाहा पर साहस न हुआ। पहली बार गोरे आये १५ सितम्बरको और बेलडीहा, धौरी और खेसर गांवोंमें खुल खेले। साथमें थे श्रीअचिन्तप्रसाद घोष पुलिस इन्सपेक्टर और दफादार अवधबिहारी पाठक। भितियाका पुल टूटा था; इसलिये वहांसे सबोंको पैदल आना पड़ा। उनने धमराहीमें श्रीगिरिवरनारायण सिंहके घरपर धावा किया। पर गिरिवरजी मिले नहीं, उस गांवमें सात गिरफ्तारियां हुईं। इन्हीं सैनिकोंकी एक टुकड़ी बेलडीहा पहुँची जिसने ठाकुर नरसिंहप्रसाद सिंहके घरको लूटा और उनके लड़केको पकड़ लिया। श्री सत्यनारायण सिंह और अयोध्या सिंह भी लूटे गये। धौरीमें १५ आदमियोंको पकड़कर संग्रामपुर डाकबंगला ले गये और वहां एकको छोड़ बाकीको एक सांससे भागनेको कहा और उनको पीटना शुरू किया। लोग लाठी खाते गिरते पड़ते भागे। जो गोरे तरैया आये उनने एकको गिरफ्तार किया और एक भागी जाती हुई स्त्रीका कपड़ा खींच लिया।

दूसरी बार गोरे आये १ली अक्तूबरको। धौरीमें श्री रघुनाथ मिस्त्री और महेश्वर प्रसाद सिंहके घरको लूटा और बेलडीहा गांवको रातमें ही घेर लिया। अहले सुबह अनजान श्री परमेश्वर सिंह पाखानाके लिये घरसे बाहर हुये और ललकार सुन घबड़ाकर भागे; फिर गोली लगी जिससे उनके दोनों पैर खराब हो गये। कई गिरफ्तारियां हुईं जिनमें एक थी श्री नरेन्द्रनारायण सिंहजीकी जो नारे लगाते गये और जनतासे सरकारको दंड टैक्स न देनेकी अपील करते गये जिसके लिये बेतरह मार खाते गये। इन गोरोंने खेसरका कांग्रेस कैम्प भी जला दिया।

१० अक्तूबरको श्री राजेन्द्रराय दारोगा दो दर्जन मिलिटरी लेकर बेलहर थाना

आये पर वहां एक मकान भी रहनेके लिये उन्हें न मिला। इसलिये वे साहबगंजमें जमे। पर महीना बीतते न बीतते भीष्म सिंह आगये, बेलहर थानेमें जमगये और थानेकी व्यवस्था हथियाने लगे।

बेलहरके कार्यकर्त्ता अब शाकिम न रहे, उन्हें अपने केन्द्र बदलने पड़े और पुलिससे भी बचनेके लिये सावधान रहना पड़ा। किन्तु उनका संगठन टूटा नहीं। उनकी पंचायत, उनका ग्राम रक्षा दल काम करते रहे। सर्कल नम्बर ३ का संगठन तो ऐसा पक्का रहा जिसपर किसी भी क्रान्तिकारी देशको नाज हो सकता है। न उसके चौकीदारोंने फिर सरकारी नौकरी ली न असेजरने और न उस सर्कलका कोई इन पदोंके लिये उम्मेदवार ही खड़ा हुआ। उन दांगी कोइरियोंके गांवसे सरकार न चौकीदारी वसूल सकी, न सामुहिक जुरमाना ले सकी और न वहां कोई गवाह पा सकी। हां! उन गांवोंको वह खूब सता सकी और लुटवा सकी।

मधेपुरा सबडिविजन पूराका पूरा जनताराजका केन्द्र रहा। मुरलीगंज, बनगांव और मधेपुरा जनताराजके जाग्रत क्षेत्र रहे।

मुरलीगंजमें दारोगा रहे पर थानेपर जबतक जनताराज रहा यानी १६ अगस्तसे १३ सितम्बर तक, कांग्रेसका ही झंडा फहराता रहा। थाना आफिसमें कांग्रेसका ही ताला लगा रहा और थानाका हाता भर कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंका ही अड्डा बना रहा। दारोगा थे पर दरोगई नहीं थी। कांग्रेसका बोलबाला था। कार्यकर्त्ताओंकी चलती थी।

किशुनगंजमें भी १६ अगस्तसे थानेका प्रबन्ध कांग्रेसके हाथमें आ गया था। हाइ स्कूलके हेडमास्टरने अपने छात्रोंके सहयोगसे प्रचार विभागके कामको संभाल रक्खा था। और लोग घूम-घूमकर पंचायत और रक्षा-दल संगठितकर रहे थे। थानेमें पंचायत कमिटी खास-खास मामलेको देखती और जिसे जेलकी सजा देती उसे उसी कोठरीमें बन्द रखती। वह बदमाशोंको जेलमें भूखा भी रखती।

यहाँ भी कई दिन तक दारोगा साहब रुके रहे और सब तरहसे उनको आराम ही दिया गया। पर जनताका उत्साह कभी-कभी ऐसे-ऐसे नारोंमें प्रकट होने लगता कि दारोगा साहब डर जाते। आखिर २४ अगस्तको वह तीस गाड़ीपर सपरिवार तथा सामान सहित लदकर थाना छोड़ चले। सभी प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंने उन्हें प्रेमपूर्वक विदा किया। तबसे और कोई घटना नहीं हुई। थानेमें अमन-चैन रहा। हां! मिलिटरीके आनेसे कुछ दिन पहले पार्थ ब्रह्मचारीका दल आया और

लोगोंसे उनकी बन्दूकें छीनकर ले गया। बनगांव थानाने पचीस दिनों अपना राज आप चलाया। १४ अगस्तको ही एस० डी० ओ० और पुलिस इन्सपेक्टरके रातोरात थाना छोड़ भागनेसे थानाका खोखलापन जाहिर हो चुका था; फिर भी १६ अगस्तको जनताने थाना जलाकर अंगरेजी राजका नामोनिशान मिटा दिया। थानाके बाद जनताकी आँखमें गड़ रही थी बनगांव कोठी जिसकी मालकिन थी एक मेम जो बरयाहीमें रहती थी। जनताने उसको कोठी छोड़ इंगलिस्तानका रास्ता नापनेको कहा। वह डर गयी और जवाबदेह कार्यकर्त्ताओंसे मेल-जोल बढ़ाने लगी। उसने एक-सौ स्वयंसेवकोंका खर्च देना भी मंजूर किया जो सैफाबाद कैम्पमें रहते और थाने भरको शान्त रखते। पर पछगाछियाके श्रीरामबहादुर सिंहके विरोधके फलस्वरूप कार्यकर्त्ताओंने मेमसे रुपये-पैसेकी मदद न ली। हां! आगे चलकर उसने अपने मनसे ६०) रु० बतौर चन्दा दिया।

बनगांवमें एक युद्ध समितिका निर्माण हुआ। इस समितिके संचालनमें ध्वंसात्मक विभाग ही नहीं था बल्कि रचनात्मक विभाग भी था। पहले विभागके प्रमुख कार्यकर्त्ता थे सर्वश्री चित्रनारायण शर्मा, रमेश झा, बलभद्र मिश्र और गौरीशंकर आदि और दूसरे विभागके थे सर्वश्री जटाशंकर, जगेश्वर मोची, मगनीराम झा प्रभृति। श्रीछेदी झापर धन-संग्रहका भार था और उनने बाबू मनोहरलाल तथा उनके मित्रोंकी सहायतासे पर्य्याप्त धन प्राप्तकर लिया था।

ध्वंसात्मक विभागने बनगांवको सुरक्षित रखनेके खयालसे रेलवे लाइन और खास-खास सड़कोंपर अपने आदमी तैनातकर रखे थे और लोगोंसे बन्दूकें भी ले ली थीं। बन्दूक जब्त करना उस विभागका खास प्रोग्राम था। इसी प्रोग्रामके अनुसार श्रीचित्रनारायण शर्मा सहर्षा अमरीकन मिशनके व्यवस्थापक डिक साहबके यहां गये और वहांसे दो राइफल ले आये।

रचनात्मक विभागने थाने भरमें पंचायतकी व्यवस्था स्थापित कर दी थी। ग्राम रक्षादल कायमकर दिया था और कांग्रेस बुलेटिन तथा युद्ध समितिकी हिदायतोंको पहुँचनेका इन्तजामकर लिया था।

सहर्षा और मधेपुराके कब्जेमें आ जानेसे सबडिविजनकी परिस्थिति ऐसी हो गई थी कि किसीके जान-मालकी हिफाजतकी जवाबदेही कांग्रेस ही ले सकती थी। मिस्टर डिकने पहले एस० डी० ओ० से अपनी रक्षा चाही पर निराश होकर कांग्रेसकी शरणमें आये और बरियाहीकी मेम साहिबाको भी आना पड़ा। उसने

अपनी मोटर और डाइनामो और रेडियो श्री चित्रनारायण शर्माके हवाले कर दी। २१ अगस्तको छेदी झा आदि प्रमुख कार्यकर्त्ताओंने सर्व सम्मतिसे उनको लिखा भी कि आप अपनी चीजें मंगालें पर मेम साहिबाने चीजोंको कांग्रेसके पास ही रहने दिया। उनने जो विश्वास किया उसका प्रतिफल उन्हें मिला। दूसरे ही दिन जनताके द्वारा लूटी जानेसे कार्यकर्त्ताओंने उन्हें बचाया जिसके लिये उनने श्री चित्रनारायण शर्माको धन्यवाद दिया है। अपने मई १९४६ के पत्रमें वह लिखती हैं कि अपनी जानको खतरेमें डालकर भी श्री चित्रनारायण शर्माने उनको बचाया और उनने सरकारको ऐसा कहा भी। एकबार उनसे एक सज्जन रुपये मांगने गये। आपने कांग्रेसकी निन्दा की और अपनेको कम्यूनिष्ट बतलाया। मेम साहिबाने छेदी झा दलको इसकी सूचना भेजी। दलने उन सज्जनको गिरफ्तारकर रक्खा परन्तु उसके बहुत कहने सुननेपर २४ घंटेके बाद रिहाकर दिया।

२६ अगस्तको भागलपुरसे देशी-विदेशी फौजकी एक टुकड़ी सहर्षा आई। वह मधेपुरा खजाना लाने जा रही थी। युद्ध समितिके ध्वंसात्मक विभागको खबर लगी और उसने उन सैनिकोंसे राइफल छीन लेनेकी तैयारी शुरू की। श्री छेदी झाने उस टुकड़ीसे राइफल छीन लेनेका विरोध किया। श्री चित्रनारायण शर्मा तथा औरोंने कहा कि प्रोग्राम है केवल प्रदर्शन करनेका। पर स्टेशन पहुँचते-पहुँचते लगभग पन्द्रह हजार लोग इकट्ठे हो गये और काबूमें न रहे। सिपाहियोंने बार-बार भीड़को लौट जानेका इशारा किया पर भीड़ आगे बढ़ती गई और उसकी ओरसे गोलियाँ भी चलीं। फिर तो सैनिक भी गोलियां दागने लगे, पहले आसमानी फैर; फिर घातक मार। फलस्वरूप पांच मारे गये—बनगांवके सर्व श्री पुलकित कामत और हरिकांत झा; गढ़ियाके कलेसर मंडल, चैनपुरके भोला ठाकुर और नदियारके केदारनाथ तिवारी।

इस गोली काण्डसे बनगांव घबड़ा गया और वहाँके लोग इधर उधर भागने लगे। श्री रामबहादुर सिंह और छेदी झा वगैरह ढाढ़स बँधानेके लिये चारों ओर घूमने लगे। ६ सितम्बरको सभी हताहतोंके परिवारसे मिलने गये और उन्हें सान्त्वना दी। उसी दिन श्री रामबहादुर सिंह बनगांवके डिक्टेटर बनाये गये और छेदी झा प्रकाशन विभागके प्रधान बने। इन दोनोंको सबोंका सहयोग मिला और थाना फिर उत्साहमें आ गया।

सबोंने प्रोग्राम बनाया कि सत्याग्रहियोंका जलूस निकले जो थाना भर घूम-घूमकर सबोंको आनेवाली परिस्थितिका सामना करनेके लिये तैयार करे। फिर ८ सितम्बरको लगभग ८० सत्याग्रहियोंका जलूस निकला जिसमें सर्वश्री राम-बहादुर सिंह, छेदी झा, चित्रनारायण शर्मा और कुशेश्वर झा वगैरह थे। बरियाही, रहुआ और कहरा होते हुये यह जलूस सहर्षा पहुँचा जहाँ दारोगा केशव प्रसाद सिंह, इन लोगोंको गिरफ्तार करने आये। वारण्ट तो इन लोगोंपर था ही। इन लोगोंने दारोगाको कहा कि आप हमें गिरफ्तार करनेकी चेष्टा मत कीजिये। पर सहर्षा सुपौल सबडिविजनका हेड क्वार्टर हो रहा था; एस० डी० ओ० वगैरह सब वहाँ मौजूद थे। इसलिये दारोगा अपनेको वहाँ बलवान मान रहे थे। उनने कनस्टबिलोंको लेकर श्री रामबहादुर सिंह; छेदी झा वगैरहको घेरा। तुरत जलूसके नायक श्री कुशेश्वर झाने अपने जवानोंको हुक्म दिया—इन सबोंको गिरफ्तार कर लो! बस, दारोगा साहब और कनस्टबिल पकड़ लिये गये। बादको रामबहादुर सिंहजीने उन सबोंको छुड़वा दिया।

इस घटनाके बाद ही १२ सितम्बरको गोरे आये। सैफाबाद कैम्प जलाया गया और दमन शुरू हुआ।

अपने छोटे और उथल-पुथलसे भरे जीवनमें बनगाँवके जनता राजने थानाकी व्यवस्था संभाली। ग्राम तथा रक्षा-दल संगठनके काम सुन्दर ढंगसे किये। गांवोंमें बाजाप्ता पहरा पड़ता रहा। पंचायतें किसी भी तरहके बम बखेड़ेको बहुत सुन्दर ढंगसे निबटा देती रहीं। चौकीदारी टिकट देना बिलकुल रोक दिया गया। पुलिस, अदालत और फौजदारीका अभाव कभी लोगोंको नहीं खटका। राज दरभंगा और बनैलीको छोड़ कर प्राय: सभी स्थानीय जमींदारोंने उस साल नालिस नहीं करनेकी ठान ली। लोग सजग और संतुष्ट थे। हाँ! धनीवर्ग सशंकित दीखता था। अपनी स्वार्थ परता और वर्ग-संघर्षके प्रचारके कारण।

अब मधेपुराकी बात जो इन सभी थानाओंका हेड क्वार्टर था। १६ अगस्तको कार्यकर्त्ताओंने देखा, मधेपुराकी सभी सरकारी संस्थायें कांग्रेसी हुकूमतकी मातहती कबूल कर रही हैं और वे अपनी हुकूमतको मजबूत करनेका तौर तरीका अखतियार करने लगे। उनने मधेपुराके दफ्तरको संभालनेके लिये श्रीकार्तिक प्रसाद सिंह, श्री कुदरतुल्ला तथा श्रीदेवदत्त महतोको चुना और उनकी सहायताके लिये ५० स्वयंसेवक और स्कूलके छात्रोंको रखकर सबके सब देहातको

चल पड़े। उनने सब जगह ग्रामरक्षा दलों और ग्राम पंचायतोंको कायम किया।

रक्षादलके जवान गांवोंमें पहरा देने लगे और अजनबीपर आंख रखने लगे। चारों ओर शान्ति रही। शुरूके दिनों थानेभरमें केवल तीन डकैतियां हुईं। डाकू पकड़े गये, उनसे माल बरामद किया गया और उन्हें समझा बुझा कर छोड़ दिया गया।

पंचायतोंने जैसी निष्पक्षता तथा जागरूकता दिखलाई उसके फलस्वरूप कोई मामला गांवकी सीमा न लांघ सका।

ता० २० को श्रीरामबहादुर सिंह मधेपुरा पहुँचे थे। वह लिखते हैं—मधेपुरामें अदालत और फौजदारी दोनों कोर्ट, थाना, पोस्टऑफिस रजिस्टरी ऑफिस और स्कूल वगैरह सभी पूर्णरूपसे बंद थे। सभी सरकारी नौकर पंगु होकर बैठे थे। सवारी आदिका प्रबन्धकर देनेसे अपने अपने घर जानेकी भी मनोवृत्ति दिखला रहे थे और बहुत डरे हुये भी थे। ऊपरसे एकदम सम्बन्ध विच्छेद हो गया था और गवर्नमेन्ट भी इन अफसरोंके निसबत कुछ कर नहीं रही थी। इसलिये सबका दिल मान रहा था कि अंगरेजी हुकूमत अब शायद उठ जाय। मगर आशा नहीं गई थी। एस० डी० ओ० और मुन्सिफसे मेरी बातें हुईं। वे अपनी कमजोरीको छिपानेके लिये बहुत सतर्क दीख पड़े और अबतक जो घटना घटी थी उसका सम्बन्ध हिंसा, जोर जबर्दस्तीसे जोड़नेके लिये सारी दलील दे रहे थे। रामजी सिंह, मुन्सिफ तो सत्याग्रहकी भी बुराई कर रहे थे। राजेश्वरी प्रसाद सिंह एस०डी०ओ० बनगांवकी घटनासे भीतर भीतर जल रहे थे क्योंकि वहां उन्हें गिरफ्तार कर लेनेकी धमकी दी गयी थी और बीमार हो जानेपर भी डाक्टरी सहायता नहीं मिली थी। मैंने उनको कहा—क्रान्तिका जैसा स्वभाव होता है उसपर गौर कीजिये। एकाध गलतीपर ध्यान नहीं दीजिये; याद रखिये अगर महात्मा गांधीकी अहिंसा काम नहीं करती होती तो आन्दोलनका वह रूप नहीं होता जो आप अभी देख रहे हैं यानी एक बागी और एक एस० डी० ओ० शान्तिपूर्वक यहां इस तरह बातें कर रहे हैं। लोगोंके पवित्र उद्देश्यपर आपको ध्यान देना चाहिये और यह समझ लेना चाहिये कि अंगरेजी सरकार फिर आई तब आप हिन्दुस्तानी कर्मचारियोंके बुलानेसे ही आयगी जिसके लिये १९४२ का इतिहास पढ़ कर आपकी सन्तानें आपको कोसेंगी। मेरी बातें सुन एस० डी० ओ० का रुख कुछ बदला।

मधेपुराके कार्यकर्त्ताओंके लिये जेल तोड़ देना वा खजाना लूट लेना कठिन न

था। पर उनने जेल रखना जरूरी समझा और खजाना लूटना अपने हितके प्रतिकूल माना। इसलिये उनने उन दोनोंकी व्यवस्थामें फेरफार नहीं किया। हां! उन दोनों जगह अपना नियंत्रण रक्खा। २३ अगस्तको एस० डी० ओ० ने कांग्रेसी हुकूमतको संवाद भेजा कि जेल खर्चके लिये, खजानाके सिपाहियोंकी तनखाहके लिये रुपयोंकी जरूरत है; खजाना खोलवाया जाये। कांग्रेसके कार्यकर्त्ता गये और खजाना खोलवाकर चार हजार रुपये निकलवाया; फिर ताला बन्द हुआ और काँग्रेसका पहरा पड़ने लगा।

मधेपुरा शहरका इन्तजाम भी कांग्रेसके हाथमें था। उसके ही स्वयंसेवक वहां पहरा देते और सबकी सुख-सुविधाका खयाल रखते।

३० अगस्तको सहर्षा गोली काण्डकी खबर यहाँ पहुँची और लोग मधेपुराकी सुरक्षाकी चिन्ता करने लगे। मिलिटरीसे उस तरह भिड़ना कार्य साधक नहीं हो सकता, ऐसा माना गया। उसी दिन शामको मिलिटरी आई और खजाना और पादरी डिक साहबको लेकर चली गई।

मिलिटरीके आ जानेसे अंगरेजोंके अमले जरा सुगबुगाये। उनने कचहरियां खोल दीं और पूर्ववत् काम करनेकी चेष्टा करने लगे। पर श्रीभूपेन्द्र नारायण मंडल, कमलेश्वरी प्रसाद यादव और यदुनंदन झा आदि कार्यकर्त्ताओंने निश्चय किया कि नौ सितम्बरको फिर संस्थाओंपर कांग्रेसकी सील-मोहर लगा देनी है। गाँवोंमें भी तैयारी होने लगी मधेपुरामें स्वयंसेवकोंको भेजनेकी जो अमलोंसे मोरचा ले सकें और मधेपुरामें रसद न भेजनेकी ताकि अमले वहाँ भूखके मारे डट न सकें।

९ अगस्तको शान्तिपूर्वक कई जत्थे कचहरी गये। सरकारी सिपाही लोकल बोर्डके छतपर बन्दूक लेकर खड़े थे। इधर जनताकी बड़ी भीड़ सड़कपर खड़ी नारे लगा रही थी। मजिस्टर साहबसे जत्थेकी बातचीत हुई और कोर्टपर कांग्रेसकी सील-मोहर लग गई पर केवल दो दिनोंके लिये। ११ अगस्तको मधेपुरामें मिलिटरी आई, शहरको काबूमें करके गाँवमें घुसनेकी तैयारी करने लगी।

सुपौल सबडिविजन भरमें २५ दिनोंसे डेढ़ महीना तक जनता राज रहा। इसकी रीति नीति कुछ ऐसी रही कि इसका इतिहास प्रान्तमें अपना अलग स्थान रखता है। यहांके कार्यकर्त्ताओंने विजयकी घड़ियोंमें जिस सत्याग्रहसे काम लिया, विपत्ति-कालमें उसका ही परिचय दिया। इनका दृष्टिकोण एक रहा और गति-विधि भी समान रही।

यहां थाना, अदालत, फौजदारी सबोंपर जनताका कब्जा था। बाढ़की वजहसे सबडिविजनल हेड-क्वार्टर सहर्षा चला गया था जो वनगांव थानामें है। वह वहांकी जनताके द्वारा बन्द किया गया।

भीमनगर थानामें २५ अगस्तसे ३० सितम्बर तक जनता राज रहा। भीमनगर पिछड़ा हुआ थाना है; जंगल-झाड़से परिपूर्ण; चोरी डकैतीके लिये प्रसिद्ध। यह उस थानेके रक्षा-दलके लिये अभिमानका कारण है जो महीना भर वहाँ चोरी डकैती नहीं हुई।

त्रिवेणीगंजमें १८ अगस्तसे ४ सितम्बर तक जनता राज रहा। जनता राजने जो पहला काम किया वह था एक क्रिश्चियन कोठीवालको उसका लूटा हुआ माल वापस कराना। लोग उस दिन थाना आ रहे थे। रास्तेमें वह कोठी पड़ती थी जिसमें कुछ घुस गये और एक घड़ी मय सामान उठा ले गये। साहबने कार्यकर्त्ताओंको सूचना दी। सर्वश्री सखीचन्द मंडल, कुञ्जीलाल यादव और चन्द्रकिशोर पाठकने माल बरामद किया और साहबको पहुँचा दिया।

डगमारा थानामें २६ अगस्तसे २५ सितम्बर तक जनता राज रहा। इस थानेमें डाकुओंके दो उपद्रव हुये और दोनोंको शान्त करनेमें डगमाराके कार्यकर्त्ताओंने अपनी मर्यादाका पालन किया।

एक उपद्रव तो हुआ शुरू शुरूमें ही जो कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंकी निष्पक्षता तथा तत्परताकी वजहसे गृह-कलहमें परिणत होते होते बचा। निर्मलीमें बहुत पहलेसे देशवाली और मारवाड़ी समाजके बीच लागडांट चली आ रही थी। एक दिन एक मारवाड़ीके यहां डाका पड़ा; फिर चोरी हुई। मारवाड़ियोंकी ओरसे एक चोरकी खाना-तलाशी हुई और उसके परिवारपर काफी जोर जुल्म हुआ। देशवाली बिगड़े और उनमें जो दंगाई थे बड़ी तादादमें इकट्ठे हो गये और दो दिनों तक मारवाड़ी समाजका मालमता लूटते रहे। अन्तमें गोलियां चलीं भाले चले एक आदमी मरा और लूट बन्द हुई। कार्यकर्त्ताओंका बहुत समय लूटको रोकने और परिस्थितिको संभालनेमें ही लग गया और आन्दोलनकी गति रुद्ध सी रही।

दूसरी बार नेपालके महाजनोंका पचीस हजारका कपड़ा निर्मलीसे हनुमान नगर, नावसे जा रहा था। कमलपुरवालोंने सारा माल लूट लिया। महाजनोंने कुनौली कांग्रेसको खबर दी। श्री राजेन्द्र मिश्र और खूबलाल महतो स्वयं-सेवकोंको लेकर कमलपुर गये, सब माल बरामद कराया और महाजनोंको भेजवा दिया।

और कोई घटना नहीं हुई। जनता राज सबोंको सन्तोष दे रहा था। लोगोंको खटका था जो एक यही कि यह राज कहीं अल्पस्थायी न हो!

प्रतापगंजमें जनता राज २४ अगस्तसे २५ सितम्बर तक रहा। इसकी पॉलिसी भी सबडिविजनकी पॉलिसी जैसी ही रही। कुछ लोग करजा,इनके स्ट्रौंग साहबको परेशान करना चाहते थे। उनका कहना था कि बरियाहीकी मेम और सहर्षाके पादरीकी बन्दूक और रेडियो वगैरह् जब्त किये गये हैं। वैसा यहाँ भी होना चाहिये। पर कार्यकर्त्ताओंने उन लोगोंकी बात काट दी। साथ ही उनने स्ट्रौंग साहबको परिस्थिति भी समझाई जिसपर साहबने एक बन्दूक और रेडियो उनके पास जमा कर दिया जिसकी रसीद साहबको लिख दी गई।

९ सितम्बरको हरिराहामें भोला मियांके घर डकैती हुई। डाकुओंने घरवालोंको बड़ी बेरहमीसे मारा और आगसे जलाया और हजारोंका माल लेकर चम्पत हो गये। भोला मियां पहले थानेदारके यहां गये। पर थानेका तो ढाँचा भर रह गया था। सो थानेदारने उनको कांग्रेस शिविरमें भेज दिया जो थानेकी व्यवस्था करता था। शिविरने भोलामियांको अस्पताल रखवा दिया और तहकीकात शुरू कर दी। दो डाकुओंने अपना अपराध कबूल किया और पना लूटका हिस्सा शिविरमें जमा कर दिया पर औरोंने पांच दिनकी मोहलत ली। बादमें जब अंगरेजी अमलदारी बनगांवमें फिर आई और सुपौल कोर्ट सहर्षामें बैठने लगा तब इन डकैतोंने उलटा शिविरके कार्यकर्त्ताओंपर नालिश ठोक दी। २७ सितम्बरको प्रतापगंज थाना खुला और इन डाकुओंके सम्बन्धके कागजात कोर्टमें दाखिल हुये। कांग्रेसके पंचोंने डाकुओंके द्वारा जमा किया हुआ माल अमलोंको सौंप दिया और डाकुओंके खिलाफ बयान दिये। सात डाकुओंको सात सात सालकी सजा मिली और उस केससे सभी कार्यकर्त्ता बरी हुये।

इनके अलावा प्रतापगंजमें जनता राजके जमानेमें और कोई घटना नहीं हुई। सभी शान्त, सजग और अहिंसात्मक बने रहे। इन सब थानोंमें जो विचारधारा काम कर रही थी उसका स्रोत सुपौल था।

सभी सरकारी संस्थाओंसे अपनी ताकत मनवाकर सुपौल कांग्रेसने थानेका इन्तजाम १८ अगस्तसे अपने हाथमें लिया। स्वराज्य भवनमें विराट सभा हुई जहां कार्यकर्त्ताओंने एलान किया कि कुछ ही दिनोंके बाद दमनचक्रका प्रारम्भ होगा और वही हमारे असली मोर्चेका समय होगा। उस समय मरनेवालोंकी जरूरत होगी जिनको आजसे ही उस समयकी परिस्थितिका सामना करनेकी ट्रेनिङ्ग दी जायगी। दोसौ

लोगोंने अपने नाम दर्ज कराये और ५० स्वयंसेवक तो तुरत शिविरमें भर्ती होकर ट्रेनिङ्ग लेने लगे। सबोंको प्रतिज्ञा लेनी पड़ी कि हम देशके लिये जीवन देंगे और मरते दम तक अहिंसक बने रहेंगे।

स्वयं-सेवकोंके काम थे जब्त किये हुये सरकारी महकमोंपर पहरा देना और आश्रित अमलोंकी रक्षा करना, फिर थाने भरमें अमन-चैन कायम रखना। प्रधान शिविरके अलावा देहातोंमें भी जगह जगह कप थे जहां स्वयंसेवक रहते। सबोंके नायक थे श्री अच्युतानन्द झा।

पुलिसवालोंको भय था कि अपनी अमलदारीमें कांग्रेसवाले हमारी दुर्गति कर डालेंगे पर अन्त तक कांग्रेस राजने उन्हें आरामसे रक्खा। इधर उधरसे खबर आती रहती कि अमुक जगह पुलिसवाले मार डाले गये, अमुक जगहसे खदेड़ दिये गये या गिरफ्तार रक्खे गये और यहाँकी जनता जोशमें आ जाती। पर कार्यकर्त्ताओंके चौकन्नापन और अहिंसा व्रतके कारण पुलिसवालोंके सभी संकट टलते रहे।

पुलिसवाले इस उपकारका बदला जैसा चुकायेंगे इसको लेकर सुपौलके कार्यकर्त्ताओंको भ्रम न था। वे महसूस करते कि पुलिसका जैसा व्यवहार हो रहा है वह कपट भरा है, वह भीतर भीतर छूरेपर शान दे रही है जिसे वह हमारे गलेपर चलायगी अगर अगस्त आन्दोलन असफल होगया। और आन्दोलनकी सफलताके लिये अहिंसा व्रत अनिवार्य है, इसलिये पुलिसकी धूर्तता उसका कपटाचार कार्यकर्त्ताओंको और अहिंसक बननेके लिये प्रेरित करता।

सिर्फ ताला लगाकर सरकारी महकमोंको छोड़ दिया गया था। उनकी चीजें बन्दूक वगैरह भी ज्योंकी त्यों भीतर पड़ी थीं। विद्यार्थी और कितने दूसरे दूसरे लोग भी जोर देने लगे कि बन्दूकें जब्त हो जानी चाहियें। कार्यकर्त्ताओंको सहमत होना पड़ा और थाना जाना पड़ा। जब्तीकी बात सुनकर पहले तो पुलिस इन्सपेक्टर साहब बिगड़े पर क्या कर सकते थे? तुरत ठंढे पड़ गये और गिड़गिड़ाकर बोले—'इस तरह बन्दूकें न लीजिये एक दो दिनोंके भीतर दो चार सौकी भीड़ लेकर आइये और उन्हें उठा लेजाइये। उस हालतमें मैं मौका आया तब कोई जवाब दे सकूंगा।' बात तय हो गई। दिन मुकर्रर होगया। पर पीछे कार्यकर्त्ताओंका विचार बदल गया। कहीं ये हथियार व्यक्तियोंके हाथोंमें पड़ जाय और उनका दुरुपयोग होने लगे तब? फिर बन्दूकोंकी कोठरीमें भी तो हमारा ताला है। उनपर हमारा कब्जा तो है ही। फिर दूसरी जगह हटाने से लाभ? अगर वक्तपर इनसे काम लेनेके इरादेसे हम इन्हें हटावें तो हमारी भूल है।

हम इन बन्दूकोंसे अंगरेजी ताकतका सामना नहीं कर सकते। इस तर्कधाराने जब्तीके प्रोग्रामको अमलमें आने न दिया।

कांग्रेसी इन्तजामके शुरू शुरूमें चोरी लूट रोकनेके लिये कार्यकर्त्ताओंको जाग-रूक रहना पड़ा। सदाकी सतायी हुई जनता इस वक्त अपने परवानेदार लुटेरोंसे (Licensed robbers) बदला लेनेके लिये 'तलफला' रही थी। रोज खबर आती कि अमुक बनिया लूटा जायगा वा अमुक किसान लूटा जायगा। पर खबर पाते ही कार्यकर्त्ता दौड़ जाते और लूट न हो पाती। सरकारी महकमा बन्द करनेके लिये जो विशाल जन-समूह सुपौल आया वह लालच भरी निगाहोंसे दूकानदारों और बनियोंकी सम्पत्ति देखता; चाहता कि कहींसे नेक इशारा मिल जाय और हम क्षण भरमें सारा माल उड़ा लें। पर कार्यकर्त्ताओंके समझाने बुझानेका फल हुआ कि किसीकी पैसेकी भी चीज नहीं गई।

हां! एक बार गनपतगंजमें एक मारवाड़ीकी अन्न लदी नाव लूट ली गई। खबर पाकर श्री यदूदास और रामधनी साहु साथी सहित घटनास्थलपर पहुँचे और समझा बुझाकर छटांक छटांकका अन्न ऊपर करवाया और मालिकके पास पहुँचा दिया।। जिन लुटेरोंने अन्न गाड़ रक्खा था उनने जमीन खोद अन्न बाहर किया और जिनने खा लिया था उनने पाई-पाई कीमत चुका दी। देखने-वाले दंग रह गये। दूसरी घटना है खरैलाकी। लोगोंने एक किसानके घरसे कुछ अनाज और रुपये जबरदस्ती उठा लिये। खबर पाकर कार्यकर्त्ता पहुँचे और किसानको सारी चीजें दिलवा दीं।

इन घटनाओंसे बाजारपर कांग्रेसकी धाक जम गयी। बनिये मुनासिब कीमतपर माल बेचने लगे और गाहकोंकी सुविधा-असुविधाका खूब खयाल रखने लगे। फल-स्वरूप थानेकी जनता शान्ति और सुखसे रहने लगी और पंचायत, पहरा और संगठनके काममें खूब सहयोग देने लगी।

सितम्बरका पहला हफ्ता बीता कि सुपौलमें गोरोंके आनेकी खबर उड़ने लगी। उनके अमानुषिक अत्याचारकी कहानियां लोग सुनने लगे पुलिसने नमक मिर्च लगाकर उन कहानियोंको और भयावह बना दिया और खूब प्रचार करना शुरू कर दिया। उसका रुख बदल गया।

कल तक जो पुलिस इन्सपेक्टर कार्यकर्त्ताओंकी मर्जीपर जी रहा था उसीने क्लबमें कुछ प्रमुख व्यक्तियों, सरकारी अमलों और कुछ कार्यकर्त्ताओंको बुलाया

और कहा कि सरकारके खिलाफ जो प्रचार हो रहा है बन्द नहीं हुआ तो हमें कार्रवाई करनी पड़ेगी। कार्यकर्त्ता स्तब्ध रह गये। पर उनने डटकर कहा कि हम जो कर रहे हैं, करते रहेंगे; आप जो कर सकें, करें। इन्सपेक्टर आग-बबूला हो गया और सभा भंग हो गई। कुछ दिन पहले यही इन्सपेक्टर कहा करता कि आजादीकी राहमें तीन रोड़े हैं—एमरी, लिनलिथगो और जिन्ना। ये रोड़े अवश्य दूर होंगे और देश स्वतंत्र होगा। फिर जो चापलूश कांग्रेसीकी शिकायत करता उसे यह फटकारता भी था। इसका रंग बदलना बतलाने लगा कि विपत्ति शीघ्र आनेवाली है।

अब धीरे-धीरे स्वयं-सेवक खिसकने लगे। शिविर खाली सा हो गया। श्री लहटन चौधरी लिखते हैं—"जब मालूम हुआ कि मिलिटरी एक दो दिनोंमें ही आनेवाली है तब हम सब अपना रास्ता ठीक करने बैठे। हम तय कर चुके थे कि मिलिटरीका अहिंसात्मक तरीकेसे मुकाबला करेंगे और फरार नहीं होंगे फिर भी हम बैठे और विचार करने लगे। पड़ोसी सबडिविजनके लोग फरार हो रहे थे और शिवनन्दन मंडलजी भी फरार हो चुके थे, जिससे बुद्धि-भेद पैदा हो रहा था। अधिकांश साथी और हमदर्द लोग कहते—फरार हो जाइये पर हम चार साथी अपने पूर्व निर्णयपर डटे रहे। फिर हमने निश्चय किया कि हम सारी ताकत थानेपर लगावें। उसे दखलमें रखें और जब मिलिटरी पहुँचे तब भी उसे नहीं छोड़ें और मिलिटरीका सामना सत्याग्रह द्वारा करें। सर्वप्रथम श्री शिवनारायण मिश्र (लाल बाबाजी) थाना जाकर मिलिटरीका सामना करें, फिर चार-चार या पांच-पांचका जत्था सत्याग्रह करनेके लिये थाना पहुँचा करे। श्री शत्रुघ्न प्रसाद सिंह तथा श्री गंगा प्रसाद स्वयं तबतक न पकड़ायें जब तक स्वयं-सेवकोंको जुटा-जुटा कर सत्याग्रहको नियमित रूपसे चलाते रह सकें। फिर हम निश्चिन्त मिलिटरीके आगमनकी प्रतीक्षा करने लगे जो अब न आई तब आई-सी हो रही थी।

आग और अत्याचार

जहां तहां जनता राजमें अपने चरम विकासको पहुँचकर अगस्त-क्रान्ति निस्तेज होने लगी। अवसर और उद्देश्यने जनताको खूब जगा दिया था जिसके साथ-साथ क्रान्ति ऊंची उठी थी। उस ऊंचाईपर टिकी रहनेके लिये क्रान्तिको जनताका संघटित बल चाहिये था जिसका पूर्णतया अभाव था। इसलिये जो कल होते ही उसे अंगरेजी सरकारका संघटित बल लेकर गोरे आये और आज ही कर दिखलाया। गोरोंने क्रान्तिकारियोंके गांवके गांव जला दिये और जो सामने पड़ा उसको भून डाला। जनता राज उनके संघटित अत्याचारका सामना न कर सका, चार दिनकी चांदनी साबित हुआ। फिर जो अन्धेरी रात आई उसमें पुलिस और हाकिमोंने क्रूरता डाकेजनी और बलात्कारके जैसे जैसे काण्ड किये उनको लंबे अरसेकी गुलामीसे अधः पतित मानव ही कर सकते हैं; सह सकते हैं।

सभी गोरे अंगरेज नहीं थे। कनाडियन और अमरीकन भी काफी थे। मालूम होता था कि ब्रिटिश साम्राज्यकी जंजीरको तोड़नेकी कोशिश करनेवाले निहत्थे हिन्दुस्तानियोंको सजा देनेके लिये समूची आंग्ल जाति उठ खड़ी हुई है। और सभी गोरे फौजी भी न थे और न पुलिसके थे। कोई जज था कोई व्यवसायी और कोई जमींदार। सभी अपने पेशेकी मर्यादा भूलकर निहत्थे हिन्दुस्तानियोंका शिकार खेलने दौड़ पड़े थे। और हिन्दुस्तानियोंका अपराध था गोरोंकी बराबरी करना और इसमें सफल होनेके लिये गोरोंके ही अजमाये तोड़ फोड़ जैसे दो एक अस्त्रका प्रयोग करना।

ये गोरे जज, खास करके व्यवसायी और जमींदार सहायक सेनाके (Auxiliary Force) सदस्य थे। हिन्दुस्तानमें जितने गोरे रहते हैं सबोंको सैनिक शिक्षा लेनी पड़ती है और सहायक-सेनामें भर्ती हो जाना पड़ता है, इस सेनामें भर्ती होकर गोरे अपना दूसरा दूसरा पेशा करते रहते हैं। हां! जब आपद्काल आता है तब जहां वे रहते हैं वहां और उसके आस पास अपने देशके दुश्मनोंसे लड़नेके लिये हथियार उठाते हैं। जहां जहां बगावत हुई वहां वहां तुरत उसे कुचल कर फैलने और संगठित होनेसे रोक देनेमें सहायक सेना बड़े कामकी साबित होगी;

ऐसा सोचकर ही साम्राज्य लिप्सु दूरदर्शी अंगरेज जातिने १६२० में इसका संगठन किया था। १९४२ में इसने खूब काम किया। संकटापन्न चीन और रूसकी सच्ची मदद आजाद हिन्दुस्तान ही कर सकेगा—इसलिये आजादीकी अहिंसक लड़ाई छेड़ कर हिन्दुस्तानियोंने गोरोंके देशको आपदमें डाल दिया था। फलस्वरूप सभी गोरे अपने अपने राजमें अपने देशकी रक्षाके लिये एक हाथमें पलीता और दूसरे हाथमें पिस्तौल लिये अगस्त क्रान्तिकारियोंके देह गेहको ढूढ़ते फिरते थे। और अगस्त क्रान्तिकारी थे निहत्थे और उनके गांव थे बेगढ़के। फिर ढूढ़नेमें उत्साह क्यों न होता।

गोरे व्यवसायी और जमींदार हिन्दुस्तानियोंके बीच रहते हैं, इसलिये स्वभावतः किसीसे दोस्ती और किसीसे बैर रखते हैं। एक ढेलासे दो चिड़ियोंको मार गिरानेका अपूर्व अवसर उन्हें मिला। राष्ट्रका बदला लिया और अपना भी। इसलिये जहां जहां वे गये निर्दयता सीमा पार कर गयी।

पर सहायक सेना तो सहायता ही देती है। कामका भार तो रहता है मुख्य सेना पर। वह आई और इसे बल मिला। और यह मुख्य सेना सब जगह एक साथ न पहुँच सकी। जहां जहां छावनी है वहां वहां हिन्दुस्तानी फौजकी संख्या अधिक थी। पर क्रान्तिकी चढ़ती लहरमें हिन्दुस्तानी फौज वा पुलिस ही को लीजिये, हिन्दुस्तानियोंके खिलाफ जायगी ऐसी उमीद न सरकारको थी और न जनताको; और उन दोनों वर्गोंकी गतिविधिसे मालूम भी ऐसा ही होता था। गोरी फौजने आकरके सब जगहका रंग बदल दिया। जो गोरे जहाँ-तहाँ पड़े थे उन्हें मैदानमें उतरनेका उसने बल दिया और हिन्दुस्तानी फौजमें भी राजभक्ति जगाई। पुलिसको तो राजभक्तिका नशा पिलाकर उसने सनका दिया।

१४ अगस्तको रांचीसे बड़ी तादादमें हरबे-हथियारसे लैस गोरे आये और यहांसे चारो ओर जाने लगे। रेलसे यथासमय यथास्थान पहुँचना असंभव था। इसलिये उन्हें जल-पथसे जाना पड़ा। आई० जी० एन० कम्पनी जिसे कारकम्पनी भी कहते हैं, बड़ी चुस्तीसे उनकी सेवा करने लगी। इनके तीन बड़े-बड़े जहाज भामो, आरडॅमोरनॉक और आरलॅमॉन्ट गोरोंके साथ-साथ टैंक, मशीनगन और ट्रक वगैरहको ढोनेमें रात-दिन व्यस्त रहने लगे। गंगा और सरयू होकर शस्त्रास्त्र सुसज्जित गोरोंको इनने ही मुजफ्फरपुर, छपरा, भागलपुर, मुंगेर, बलिया और गोरखपुर जिलोंमें पहुँचाया। दो दिनोंसे पटना निवासी

तोड़-फोड़में लगे थे—पसीनेसे लथपथ और इसके पीछे पागल। पर सुरक्षित आई० जी० एन० कम्पनीके जहाज इनकी समझदारीपर भोंपू बजाते और गोरोंको लाद-लाद चल देते। इसके छोटे-छोटे जहाज चन्डा, चेतल्ला और पल्लास नदीमें घूमते रहते और जहाँ कहीं हिन्दुस्तानियोंकी नाव देखते उस पर गोली बरसाते। कितनी नावोंको इनने जलाया, कितने नाविकों और उनपर सवार लोगोंको मौतके घाट उतारा—कहना कठिन है। मौजे पतलपुरका शिवकुमार बिन्द लिखता है कि पटनासे स्कूलियाको चढ़ाकर मैं छपरा ले गया और लौटते समय मैंने बबुरामें नाव लगाई। तुरत कारकम्पनीका जहाज पहुँचा। लोग जहाज देख भागने लगे। मैंने भी अपनी नाव हटायी। फिर तो जहाज परसे गोरे गोली चलाने लगे। हमलोग नाव खेना छोड़ भीतर घुस गये। पर भीतरसे ही देखा—जहाजपरसे फटफटवा उतरकर तेजीसे मेरी नावकी ओर आ रहा है। हमलोग एक दीआरमें उतरे और भागे। गोरोंने हमारा पीछा किया पर आगे दलदल देख लौट गये। फिर जहाज भी मेरी नावके पास आया जिसपरसे गोरोंने पेट्रोल और किरासन तेल छिड़क कर मेरी नावमें आग लगा दी। जहाज ठहरा रहा जबतक मेरी नाव जलती रही। जहाज फिर बबुआरा घाट लौटा जहांसे गोरे गांवमें घुसे, कुछ घरोंको जलाया और कुछ गोलियां भी चलाईं।

इसी तरह काशी विश्वविद्यालयके कुछ बिहारी विद्यार्थी नावसे घर लौटे आरहे थे। महनारके श्रीभोलानाथ 'विमल' कहते हैं कि हमने नावपर तिरंगा झंडा फहरा रखा था। कारकम्पनीके एक जहाजने उसे देखा और उसपर गोली बरसने लगी। हमलोग तो भीतर पेंदेसे जा चिपके। गोलियां नावको छेदती हुई हमारे सर परसे उड़ रही थीं। नाव तो छलनी हो गई पर हम सभी बच गये! हां! कुछके चमड़े जहां-तहां छिल गये।

पर सभी भोलानाथ 'विमल' जैसे भाग्यवान न थे। उनकी नावोंपर तो गोलियां चलीं, वे मारे गये और उनकी नावें डुबा दी गईं। आई० जी० एन० कम्पनीके एक नजदीक-से-नजदीकको कितनी ऐसी घटनाओंकी जानकारी है।

पटनाको काबूमें करके गोरे जिलाके भीतर घुसे। शहरमें उनको रक्तपात करनेका मौका न मिला। हाँ! रातको कालिज एरियाके सामने गंगा किनारे लगती हुई नावपर इनने गोली चलाई और दो मछुओंके प्राण ले लिये।

कुछ गोरे अपनी खास गाड़ीपर बिहटासे वापस आ रहे थे। सदीसोपुरके

पास लाइनपरसे हटते कुछ लोगोंको देख उनने गोली चलाई जिससे मदीसोपुरके श्रीगंगाप्रसाद तुरत और श्रीगोपालजी अस्पताल जाकर दो महीने बाद और शेखपुराके श्रीअर्जुन प्रसाद शहीद हुये।

फुलवारी थानेके बैरिया गांवका रामधनी गोप गुलजारबागसे दही बेचकर आरहा था। गोरोंने उसे अगमकूपके पास पकड़ लिया और जाम हुए-हुए रास्तेको साफ करनेके लिये कहा। गोपने इनकार किया जिसपर एक गोरेने जबरदस्ती उससे रास्ता साफ करवाना चाहा। गोप उसे पटककर जलकी ओर भागा। बाढ़का पानी उधर फैल रहा था। उसमें डूब देता तैरता हुआ वह आगे बढ़ रहा था। गोरोंने लगातार उसपर गोलियां चलाई और एक उसके सरसे पार कर ही गई। रामधनी गोप इस तरह शहीद हुआ।

विक्रम थानेमें पहुँचे वे १६ अगस्तको। दारोगा साहब दल सहित साथ थे। पहले नगहर गांव मिला। वहां गोरोंने लोगोंको खूब पीटा। फिर अपने हाथों अपने घरका खपरा बरबाद करनेके लिये कहा। जिनने खपरे फोड़नेमें सुस्ती दिखलाई उनपर कुन्देका वज्र-प्रहारका हुआ। फिर श्रीकुलदीप भगतके बंगलेको गिरा दिया। उसमें सत्याग्रह शिविर भी था। भगतजीके मकानको लूट लिया। विक्रम बाजार भी लूटा गया। गोरे पीटनेमें रहते और दारोगा दल लूटनेमें रहता। यहां भगवानसाहु, हरिहरसाहु, खेमाजीतसाहु और जानकीशरण मिश्रके मकान लूटे गये। खादीकी दूकान भी लूटी गई।

दूसरे दिन फौज पुलिस लेकर गोड़खड़ी पहुँची अंबिकादत्त त्रिपाठीका मकान तोड़ा। काबा और राजीपुरके भी कई घर उनने लूटे और जलाये।

पालीगंजमें गोरे पहुँचे दारोगा श्रीमहेन्द्र सिंहके साथ। राजासाहु, अनजान रामवृक्ष सोनार, राम स्वरूपलाल, बाबूलाल साहु, लोटनी साहु तथा गिरजा साहु थाने पकड़ मंगाये गये और बेतरह पीटे गये। चार दूकानें लूटी गयीं। गड़हनी और लोटनी साहु, शिवशंकर साहु, शिवनाथ साहु रामसेवक सिंह पालीगंजके घर लूटे गये।

२८ अगस्तको गोरोंने मनेर गांवको रातके ३ बजे जा घेरा। भोरको निकलते हुए महम्मद इस्माइल खां गोरोंकी गोलीके शिकार बने। लोगोंको काफी मारा पीटा और आठ व्यक्तियोंको गिरफ्तार किया। फिर मनेरमें ९ घरोंको लूटा। नारायणसाहु और सीताराम गुप्ताकी काफी सम्पत्ति

गई। ११ मोचियोंके घर पेट्रोल छिड़ककर जला दिये गये।

सितम्बरमें फिर सिकन्दरामें गोरे घुसे। श्रीजगन्नारायण सिंह सभापति, थाना कांग्रेसका मकान तोड़ा गया। भंडारके श्रीअनन्त मिश्रजीका घर भी जो दानापुर कैम्प जेलसे फरार होगये थे, तोड़ा गया और उनके सामान जला दिये गये। श्रीकन्हाई सिंह और श्रीईश्वरी सिंहके घर भी लूटे और बरबाद किये गये। उनके माल मवेशी जब्त करके कुर्क कर दिये गये। कन्हाई बाबूके ६५ बीघे खेतकी उपज कुर्ककर दी गई। रामचरित्र सिंह, यशोदानन्दन उपाध्याय और जगबली उपाध्यायके घर लूटे और बरबाद किये गये।

बाढ़में गोरे पहुँचे ठीक जब १६ अगस्तको कांग्रेस मैदानमें सभा हो रही थी। कलक्टर और एस० डी० ओ० साथ थे। सभा भंग होते न देख उनने गोली चलाई जिससे श्रीनारायण साहु वहीं मारे गये और बालकृष्ण सिंह, सिद्दिकपुर; रावोगोप (मसूदचक) रामचन्द्र साह (बाजिदपुर) और प्रगास दुसाध (सिकन्दरा) घायल होकर अस्पताल पहुँचाये गये। एस० डी० ओ० के साथ गोरे शहरपर भी टूटे। लोगोंको खूब पीटा, अथमल गोलामें श्रीसत्यनारायण सिंहको मार मारकर बेहोश कर दिया और शहरीमें राणा शिवलालपति सिंहके घरका सारा सामान लूट लिया।

२७ अगस्तको पुलिसने पंडारकमें एककी जान लेली। अपनी लॉरीको स्कूलके पास छोड़कर पुलिसवाले गांवमें घुस गये और लॉरीकी हिफाजतके लिये एक सिपाही रख गये। उस सिपाहीने बीड़ी सुलगानेके लिये अक्षयसिंह बढ़ईको जो तम्बाकू पी रहा था अपनी दूकानके बाहर आनेके लिये कहा। पर ७ बजे शामसे ७ बजे सुबह तक कर्फ्यू ऑर्डर था। इसलिये अक्षयसिंह अपनी दूकानके बाहर नहीं निकला। सिपाहीने उसे गोली मार दी और वह घायल होगया। लोग जमा होगये और कुछ लोगोंको गिरफ्तार करके जब दारोगा साहब लौटे तब उनसे सबोंने अक्षयसिंहको अस्पताल पहुँचानेके लिये कहा। दारोगा साहबने उनकी प्रार्थना नहीं मानी। आखिर लोगोंने खटोलीपर अक्षयसिंहको अस्पताल पहुँचाया। पुलिसने कहा कि लोग लॉरीको जला देना चाहते थे। इसलिये गोली चली थी और उसने वहां दूसरे दिन ५ आदमियोंको गिरफ्तार भी किया।

९ सितम्बरको श्रीमहादेव सिंहजी [illegible] जो [illegible] स्टेशन तिजोरी केसके अभियुक्त थे, गोरे पुलिसके साथ रेलसे आये और घर घेरा। उनने पुरुषोंको इकट्ठा

करके एक मैदानमें बिठाया और चारो ओर मशीनगन लगाकर चेता दिया कि जो उठेगा सो मार डाला जायगा। फिर वे सब गाँवमें घुसे; श्रीगजाधर सिंह, माथो सिंह और उमासिंह लूटे गये; स्त्रियोंपर भी अत्याचार हुआ।

मोकामाघाटमें जभी गोरे पहुँचे तब स्टेशनकी लूट हो रही थी। उनने भीड़ पर दनादन गोलियाँ छोड़ीं। रामस्वरूप कहार और कारी मल्लाहके अलावा तेईस और मरे जिनका पता न लगा। फिर तीन आदमी प्रह्लादपुरमें मार डाले गये। जानवर तो कितने ही खून किये गये। मोकामा जंकशनपर भी गोरोंने अन्धाधुन्ध गोली चलाई पर वहाँ किसीको मार न सके। फिर पश्चिमकी ओर बढ़े और रेलवे लाइनपर बच्चा लिये जाती हुई एक मुसहरनीको उनने गोली मारी। माँ बच्चे दोनोंकी जान तुरत चली गई। पर जब गोरे डिस्ट्रिक्टबोर्डकी सड़कपर मोकामाघाटके पास पहुँचे तो जनताकी बड़ी भीड़ उनकी ओर दौड़ी जिसे देख वे सब फिर स्टेशन भाग आये।

१८ अगस्तको एस० डी० ओ० के साथ गोरे मोकामा पहुँचे। मोकामा बाजारमें छड़ी और लोटा लिये हुए श्रीब्रह्मदेव सिंह मिले। एस० डी० ओ० ने छड़ी माँगी। उनने नहीं दिया। एस० डी० ओ० ने उनपर हण्टर चलाया और उनने एस० डी० ओ० पर लोटा। इसपर एक सिपाहीने उन्हें तीन गोलियां चलाकर बेतरह जख्मीकर दिया। लोगोंने टांग-टूंगकर उन्हें मोकामा अस्पताल पहुँचा दिया। पर घाव सख्त था। इसलिये वे पटना अस्पताल लाये गये जहाँ एक अरसा इलाज करवानेके बाद वे चंगे हुए।

बादको पुलिसके साथ-साथ गोरे गाँवमें घूम-घूमकर लोगोंपर अत्याचार करने लगे। औंटाके श्री रामसिंहपर उनने भीषण अमानुषिक अत्याचार किया। रामसिंह गोरोंसे मिल गये थे और अपने देहातियोंके घरकी तलाशी करवाकर लूटका माल बरामद करवाया करते थे। लोगोंने उनका भी भण्डाफोड़ कर दिया; गोरोंको बतलाया कि इनने भी काफी माल लूटा है। फिर तो गोरोंने इन्हें बेतरह कई दिन पीटा और अन्तमें गुदामार्गमें नोकीली लकड़ी घुसेड़ मार डाला।

गुलाबगढ़में श्री[illegible] सिंह [illegible] थे जिन्हें पैरके बल सर नीचा करके लटकाया गया। फिर उनपर बेतहाशा मार पड़ी।

सूरज साहुको जो [illegible] भरी [illegible] था उसने [illegible] कुलुवसिंह तथा उनके तीन लड़कोंको काफी परेशानीमें डाला। ये लोग गिरफ्तार हुये और

स्टेशनपर रक्खे गये। श्री पं० केशवप्रसाद शर्मा भी वहां पकड़ लाये गये। सबोंको दो-दो छटाँक उड़द उबालकर खानेको दिया गया। मूसन धानुकने कितने औरोंको भी पकड़वाया जिससे खीझकर लोगोंने उसका घर जला दिया।

१६ अगस्तको अमरीकन सेना बिहार शरीफ आई और लोगोंके आने-जानेपर रोक लगा दी गई। नालन्दा कॉलिजके मैदानमें ऐसी रोकके विरोधमें सभा हुई जिसमें श्री महेशलाल आर्य्य और श्री ओमप्रकाश आर्य्यका व्याख्यान हुआ। सैनिकोंके आक्रमणसे श्री रुद्रबिहारी शरण दारोगाने लोगोंको बचा लिया और सिर्फ ओमप्रकाशको गिरफ्तारकर लिया। दूसरे दिन बिहार खादी भंडारके मैनेजर श्री जितेन्द्रकुमारकी पत्नीने जलूस निकाला। वे गिरफ्तार न हुईं पर साथके सभी पुरुष पकड़ लिये गये।

हिल्सामें फोर्स पहुँची १७ अगस्तको। उसके सहारे पुलिसने लोगोंको लूटना खसोटना शुरू कर दिया। २० अगस्तको पुलिस करायें परसुराय पहुँची और उसने गाँवको इस तरह लूटा कि किसीके घरमें खाने पीनेके लिये बर्तन न रहा। उसी दिन हिलसा निवासी रघुसाहु और उसके दोनों लड़कोंको बड़ी बेरहमीसे पीटा गया। महाबीर लोहारको यह अभियोग लगाकर कि उसने तोड़-फोड़के लिये औजार दिये खूब पीटा गया, जब वह अशक्त होकर गिर पड़ा तब उसके मुंहमें पेशाब कर दिया गया और फिर उसे जेल भेज दिया गया।

मईग्राम, योगीपुर, चिकसौरा और हिल्सा बाजारमें काफी लूट-पाट हुई।

एकंगर सरायमें १ सितम्बरसे गिरफ्तारीकी धूम मची। कितने अभियुक्तोंके परिवारको घरसे निकालकर उनमें ताले लगा दिये गये। थानाकी हिफाजतके लिये पुलिसने इलाकेके लुटेरोंको इकट्ठाकर लिया था जो वहाँके दूकानदारोंको लूटा करते। गाँवोंमें भी इन लुटेरोंने जनताको बरबाद करना शुरूकर दिया। सैंयां भये कोतवाल उन्हें अब डर काहेका था।

चंडी थानाकी जनतापर डाकुओं और पुलिस दोनोंकी शनि दृष्टि पड़ी थी। १७ अगस्तको तो विष्णुपुर और गौरी आदि स्थानोंके बदमाश माधोपुर बाजार लूटने आये। जनताने सामना किया। तीन डकैत मारे गये, तब बाकी जान बचा भागे। वे सब केवल एक दूकान लूट सके। पर नूरसरायवाले सामना करते हुए भी कुछ न कुछ लुट गये। मौसमपुरवालेका भी यही हाल हुआ।

१८ अगस्तको पुलिस नगरनौसा आई और कांग्रेसवालोंके घर लुटवा दिये।

वह विष्णुपुर ग्राम गई और माधोपुर बाजार लूटनेवालोंके घर भी लुटवा दि । दो दिनके बाद श्री जगन्नाथ पाठक सहायक मंत्री थाना कांग्रेसको पुलिस थाना पकड़ ले आई और खूब पीटा।

पटना जिलामें सबसे अधिक अत्याचार हुआ फतुहाकी जनतापर। परसा गांवको गोरोंने लूट लिया। एनिओको पुलिसने लूटा। उरफा नामक गांवके प्रसिद्ध कांग्रेसी भागवत शरण त्रिपाठीका घर तोड़ दिया गया। पर यहांके महन्थ शंकर गीरको जैसी यंत्रणा दी गई वह रोंगटे खड़े कर देने वाली है। महंथ शंकर गीरजी जिनका पहला नाम विहारी तिवारी है लिखते हैं—"१३ अगस्तको फतुहा कनाडियन हत्याकाण्ड हुआ। मैं सपरिवार २२ अगस्तको अपने मठ पोखरैराके लिये रवाना हुआ। रास्तेकी गड़बड़ीके कारण मैं २४ अगस्तको मठ पहुँचा।

"११ सितम्बरको रात अढ़ाई बजे मेरा मठ घेर लिया गया।××× पहले मेरे छोटे भाई रामचन्द्रको गिरफ्तार किया गया जो औरोंके साथ मठके बाहर सो रहा था। जब प्रातःकाल हुआ तब फाटक टूटने लगा। आवाज सुन कर मैं उठ बैठा और आकर फाटक खोलना ही चाहता था कि फाटक तोड़ दिया गया। मालूम होते ही कि मेरा ही नाम बिहारी महंथ है मुझे मेरी ही धोती खोलकर बाँध दिया गया और उसके बाद वहाँ लाकर पटक दिया गया। जहाँ मेरे छोटे भाई बंधे पड़े थे। मेरे छोटे भाईको फिर भीतर लाया गया और उसपर निर्मम प्रहार होने लगा। प्रहार तो मैं नहीं देख सकता था किन्तु उसका आर्त्तनाद सुनकर मैं विह्वल हो रहा था।×× मैं भी भीतर लाया गया। भीतरका दृश्य देखकर मैं सहम गया। भाईका अंग प्रत्यंग लहू लुहान था और मेरे घरकी स्त्रियां चुपचाप यह दानवी-लीला देख रही थीं। मुझे भी उसी स्थानपर पेटके बल सुला दिया गया। चार अंगरेज मेरे पैरपर चढ़े थे और चार गर्दन और हाथ पकड़े थे। राइफलके संगीनसे मेरी पीठसे जांघ तक उधेड़ दिया गया। उसी वस्त्रहीन दशामें दोनों भाई मोटरपर लादे गये। इधर हम दोनों भाइयोंको टार्चर किया जा रहा था उधर मेरा घर लूटा जा रहा था। स्त्रियोंके शरीरपरके गहने उतरवा लिये गये। कपड़े बाहर निकाल जला दिये गये। मैं जब मोटरपर लादनेके लिये बाहर लाया गया तो देखा कि जितने भी छप्परपोश मकान हैं सभी धू-धू करके जल रहे हैं। ××× समस्तीपुरमें जब पहुंचा तब दोनों भाइयोंको नंगे ही हाथमें रस्सा बाँधकर प्लेटफार्मपर घसीटते हुए रेलवे थाना लाया गया। अब हम पांच व्यक्ति थे। सुबहसे

दस बजे रात तक हमलोगोंको तब तक टार्चर किया जाता जब तक हमलोग बेहोश नहीं हो जाते। जब पहला बेहोश हो जाता तब दूसरा लाया जाता।

"दूसरे दिन सबेरे फिर पीटना आरम्भ हुआ। जख्मोंपर छिड़कनेके लिये जब एक सज्जन सिपाहीने थोड़ा सा नमक दिया तब वह बेचारा फटकारा गया। मेरे जख्मोंपर नमक छिड़का गया, चाय उड़ेल दी गई और सारे शरीरको सिगरेटसे दागा गया। पीनेको एक बूंद पानी भी न दिया गया।

"१२ सितम्बरको केवल मैं अपने छोटे भाईके साथ पटना लाया गया। साथमें मैंगवार्ट मोरिंग्टन और चार दूसरे-दूसरे अंगरेज थे। राहमें सबोंने हमें इतना पीटा कि हम बेहोश हो गये। जब होशमें आया तब देखा दो सिविल डाक्टर मेरे जख्मोंपर पट्टी बाँध रहे हैं। × × × × करीब छः महीनेके बाद जख्म आराम हो गया।"

ये संहथ शंकर सीर और पं० रामचन्द्र तिवारी, श्री जे० एन० बोसके हवाले किये गये जो पटना रेलवे पुलिस इन्सपेक्टर थे। उनने देखा कि इन दोनोंकी देह ही नहीं गुप्तांग भी क्षत विक्षत हो रहे हैं और दोनों मरणासन्न हैं। उनने इनके दवा दारूका इन्तजाम किया। अधिकारियोंने जे० एन० बोस महाशयके आचरणकी निन्दा की और दारोगा बनाकर उन्हें हजारीबाग भेजवा दिया।

आरामें छावनी है। कुछ गोरे थे ही और १४ अगस्तको तो मालूम हुआ जैसे वे सब जगह छागये। उस दिन ही अहीरपुरवामें उनने मखूना सिंह और उसकी बुढ़ियाको शाहाबाद अपनी राइफलका शिकार बनाया था। तबसे शाहाबादमें गोरोंकी राइफल गरम बनी रही। दूसरे दिन अपनी गाड़ीसे उनने देखा कटैयाके पास रेलवे लाइनपर जो जमा थे उनकी गाड़ीके आनेपर भाग रहे हैं। फौरन उनने राइफल दागी, एकको घायल किया और श्रीसहदेव गिरको मार गिराया। फिर उनकी गाड़ी बिहिया आई। हाटका दिन था। ज्योंही उनकी गाड़ी फाटकसे गुजरने लगी कि लोगोंने उनपर ईंट पत्थर बरसाना शुरू किया। उनने भी अपने ढंगसे जवाब दिया। फलस्वरूप बिहियाके शिवपूजनजी और केवटियाके रामदेवजी और चार अन्य लोग मारे गये।

गोरोंका एक दल शाहपुर बेलौटी पहुँचा, कई लोगोंके घर जलाये जिनमें त्रिपाठी परिवारके घर भी थे। वहां आग बुझानेकी चेष्टा करते हुये एक आदमीको उनने गोलीसे मार डाला।

१६ अगस्तको गोरोंका एक दल डुमरांव आया। वहां उसने कई घर

जलाये और कई घर ढहवा दिया और बिक्कू साहुको मार गिराया ।

इसी दिन रेलवे लाइनसे गुजरते हुये राजेन्द्र नामक विद्यार्थीको जानसे हाथ धोना पड़ा । मोखा थानेमें गोरे और बलूची १६ अगस्तको ए० एस० पी० के साथ आये । नहर ऑफिसमें जो कांग्रेसका ताला लगा था उसे तोड़ा, झंडेको गिराकर पैरों तले रौंद डाला । फिर ये अबदुल्ला भठियाराके घर घुसे और उसकी बहनको जिसकी गोदमें एक सालका बच्चा था पीटना शुरू किया । छटपटाहटमें बच्चा हाथसे गिरा और ऐसी चोट आई कि संभाले न संभला; मर गया ।

फिर बाजारकी आम लूट हुई । मार पीट भी काफी हुई । श्रीयमुना प्रसादकी छातीपर ए० एस० पी० चढ़ बैठा और ऐसा दबाया कि उनकी पसली टूट गई जब कि हंटरके मारसे उनका सर पहलेसे जख्मी हो गया था और दो दांत टूट गये थे ।

नवानगरमें गोरे १६ अगस्तको पहुँचे । एक राहीको चूंकि वह भागा उनने अपनी गोलीका शिकार बनाया । बँसढ़वाके पास सड़क कटी थी जिसे मरम्मत करनेका हुक्म एक साधुको दिया । इनकार करनेपर उसे बुरी तरह पीटा और दो एक जगह उसका सर फोड़ दिया । फिर खुद सड़क ठीक करके वे आथर आये जहांसे उन्हें पैदल गांव आना पड़ा । आथरवालोंने रास्ता इतना खराब कर दिया था कि लॉरी किसी तरह आगे नहीं बढ़ सकती थी । गांवमें घुसते ही गोरोंने देखा आथरवाले जमकर सामना करनेको तैयार हैं । फिर तो उनकी ओरसे दनादन गोलियां चलने लगीं । फलस्वरूप रामेश्वर पाण्डेय, शिवपूजनराम, दुखार लोहार और चंगन अहीर तत्काल शहीद हो गये ।

ब्रह्मपुर थानाके निमेज नामक गांवमें गोरोंकी एक बड़ी जमात पहुँची और दो तीन बजे रातको ही गांव घेर लिया । साथमें मजिस्टर इलियट भी थे । गांवके चारो ओर मशीनगन, लुईगन, फिट कर दिये गये । आतंकित जनता नदी तैरकर भागने लगी । उनपर गोरोंने गोलियां बरसाईं पर कोई मरा नहीं । गोली चलाते वक्त ब्रह्मस्थानके चौतरापरसे एक गोरा फिसलकर नदीकी तेज धारामें गिरा और विलीन होगया ।

गोरे श्रीबब्बन तिवारीको पकड़ना चाहते थे । वे हाजीपर चढ़कर कहीं चले गये । उनके मकानको गोरोंने डिनामाइटसे उड़ा दिया ।

उसी दिन सपही गांवमें बलिया स्टेशनसे गोरोंका एक दल पहुँचा । बच्चा पाण्डेय और लल्लन सिंहके घर जलाये गये । चीजें लूट ली गईं । छः रोज बाद बड़ी नैनीजोरमें बीवाके स्टीमरपर गोरोंका गिरोह पहुँचा । भगोला मिस्त्रीके घरको लूट लिया । उनका पचीस तीस हजारका माल लूट गया । गोरोंने कई व्यक्तियोंको पीटा था ।

१९ अगस्तको डुमरांवमें थानाके कोरानसरैयामें गोरोंने अन्धाधुन्ध गोलियां चलाईं। सुखारी लोहार गोलीसे मारे गये। भिखारी कमकरकी बांह गोली लगनेसे बेकार हो गई और एक बुढ़ियाका मुंह टेढ़ा होगया। २० अगस्तको चारबजे सबेरे नावडेरा पो० पुरानाभोजपुरमें एकाएक पुलिस इन्सपेक्टर देवनाथ सिंह, इलियट साहब और ४० गोरोंने धावा किया। उनने साधु अहीरको अपनी गोलीका शिकार बनाया। रामदीर अहीर गोली खाकर दो दिनोंके बाद मरे। सात गोलीसे घायल हुये। और ३५ गांववाले कुन्दोंकी मारसे। वहां तो मार खाते खाते जब लोग बेहोश होजाते तब दियासलाई जलाकर उनके शरीरको दागा जाता जांचनेके लिये कि वे जिन्दा हैं कि मर गये।

डुमरांव हाइस्कूलके हेडमास्टरपर भी कुंदोंकी मार पड़ी। ढेकाइचमेंभी गोरोंका धावा हुआ; वहां १९ आदमी पकड़े गये।

सड़क कटी देख गोरोंका एक दल संझौली आया; सड़क मरम्मत करवानेके लिये लोगोंको बुलाया और उनके नहीं आनेपर गोलियां छोड़ीं और दो के प्राण ले लिये। फिर कवईके टूटे पुलसे जब गोरे गुजरने लगे तो एकको जो पुलके पास खड़ा था भागते देखा और फौरन उसे अपनी गोलीका शिकार बनाया

२३ अगस्तको जोगनीमें गोरे पहुँचे। श्रीजयराम द्विवेदीको पकड़ना था। उनका घर घेरा गया और एक आंगनमें रहनेकी वजहसे श्रीशुकदेव द्विवेदी भी घर सहित घिर गये। आप छप्परपर फांद गये और भागनेको चेष्टामें गोलीके शिकार होगये।

अभियुक्तोंकी तलाशमें ही गोरे जमोरा आये जहां तीन आदमियोंको मार डाला और धनडीहामें एकको। फिर चांदीमें हरिनन्दनजीके लड़के और नरवीरपुरमें मिट्ठू महतो उनकी गोलियोंके शिकार हुये।

१५ सितम्बरको १४ लॉरियोंपर गोरे आये और लसांड़ीको चार बजे भोरमें ही घेर लिया। गांवके चारों ओर मशीनगन फिट करके वे बेतरह झूठा फायर करने लगे। दूर दूरके लोग भाग पड़े और लसांड़ीके लिये चिन्तित हो उठे। इधर दिन उठा और गोरे लसांड़ी गांवमें घुसे। एक बूढ़ा मिला जिससे स्वराजियोंका घर बतलानेके लिये कहा गया। बूढ़ा अनजान बन गया। गोरोंने क्रोधमें आकर उसे कुएँमें धकेल दिया; पर पीछे निकाल बाहर कर छोड़ दिया। फिर वे घर घर घुसने लगे। कुछ लोग घबड़ाये और कुछ लोग बौखलाये। तुरत एक भीड़ इकट्ठी होगई जिसपर गोरोंने गोलियां चलाईं और श्रीगिरिवर सिंह और एक स्त्रीकी हत्या कर डाली। इसी समय गोरोंमें एक सनसनी फैल गई। दारोगाने कहा—बेहिसाब लोग आपसे लड़ने आरहे हैं।

डंकेकी आवाजसे हवा कांप रही थी जिसमें ललकारें गूँज रही थीं और अनगिनत लोग लाठी, भाला, गँड़ासा और तलवार भांजते उछलते कूदते गोरोंसे अपने भाई बन्धुओंकी हत्याका बदला लेने दौड़े आ रहे थे। पच्छिममें ढकणी, डुमरिया, बेरथ और रतनाढ़के लोग थे और पूरबमें चासी बनौलीके। सबके सब किसान—अपने देशकी मिट्टीके लिये कट मरनेवाले! मशीनगन गरजी—एक बार नहीं, अनेक बार; पर लोगोंका दौड़ना धीमा न पड़ा। समझानेवाले जिनमें कई कांग्रेसके कार्यकर्त्ता भी थे, हार मान पीछे रह गये। फिर तो सभी तरहकी जितनी बन्दूकें थीं उनपर फट पड़ीं। गोलियां उन्हें फाड़ खाने लगीं। सबके सब भागे। कुछको खदेड़ते हुये गोरे ढकणी पहुँचे और जैसे ही टोलेमें घुसे कि महादेव सिंहने भाला मार एक गोरेको घायल कर दिया और तुरत फिर भाला संभाला और दूसरा गोरा घायल हुआ। तत्काल कई गोरे महादेव सिंहपर टूट पड़े। गोलीने उसका प्राण ले लिया और संगीनने पेट फाड़ दिया। चासीवाले जरा डटे; इसलिये मारे भी गये और गिरफ्तार हुये। लसांड़ीके दोको छोड़कर इस मानव-मशीन युद्धमें १० मानव खेत रहे—चासीके चार और ढकणीके छः। शीतल लोहार, रामधारी पाण्डेय, रामदेव और केश्वर चासीके शहीद थे और जगन्नाथ सिंह, सभापति सिंह, महादेव सिंह, शीतल सिंह, वासुदेव सिंह और केश्वर सिंह ढकणीके।

बलीगांवमें गोरे पहुँचे १९ सितम्बरको। छट्ठन सिंहको बन्दूकके कुन्दोंसे इस तरह पीटा गया कि बेचारे दुनियांसे चल बसे।

२८ सितम्बरको आरामें एक सनसनी खेज घटना हुई।

गोरे और बलूचियोंके आतंकसे शहर थर्रा रहा था। न कौमी नारा, न राष्ट्रीय झंडा, न कांग्रेसी कार्यकर्त्ता—शहर सुनसान। यकायक कचहरीमें आये हुये लोग चौंक उठे। देखा—चार स्वयंसेवक परचे बांट रहे हैं और नारा लगा रहे हैं—"रोल (Revenue) मत दो"; "रोल देना पाप है"। आगे आगे एक अधेड़ हैं श्री कैलाश पति सिंह और पीछे पीछे तीन स्वयं-सेवक। सबोंके गलेमें फूलकी माला, सरपर गान्धी टोपी, हाथमें राष्ट्रीय झंडा। कुछ ही देर हुई होगी कि एक हंटरवाले सफेदपोशने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और एस० डी० ओ० की कोठीपर ले आया। वह उनके मुंहमें हंटर घुसेड़-घुसेड़कर उनको चुप करना चाहता था पर वे सब कभी चुप न हुए रास्ते भरमें नारा लगाते आये। एस० डी० ओ० ने उन्हें एक कतारमें खड़ा किया; पूछा किसने परचे

दिये ? कहाँसे झंडे आये ? किसने यहाँ भेजा ? सबोंका एक ही जवाब था—महात्मा गान्धीके हुक्मसे जनताने भेजा। ए० एस० पी० भड़का। ठोकर और घूसोंसे मारने लगा। फिर उसने रिवालवरका निशाना करके पूछा—बतलाओ! परचे किसने दिये नहीं तो मार दूँगा गोली। पर स्वयंसेवकोंके मुंहसे सचाई नहीं निकली। साहब दाँत पीसने लगा। फिर बलूची आये; सबोंको घसीट ले गये।

सिनहाघाट, बड़हरा थानाके जीवित शहीद गुलाबचन्दलालका बयान है, "...चार आदमी मिलकर दोनों हाथ और पैरको अपनी-अपनी शक्ति भर अपनी अपनी ओर खींचते थे। दो आदमी बगलसे होकर डंडासे पीठपर मारते थे। एकबार मेरे मुंहसे जोरोंकी आवाज निकली। उन्होंने आवाजको बन्द करनेके लिये मुंहमें कपड़ा कोंच दिया। उस समय मुझे ईसा-मसीहका दृश्य नजर आने लगा। मैं उनकी तकलीफोंसे अपनी तकलीफकी तुलना करने लगा। ...मैं अपने जीवनकी सारी आशाओंको त्यागकर उसीमें लीन हो गया; बलूची बारबार पूछते कि परचे किसने दिये पर जो ईसा-मसीहमें लीन सो उत्तर क्या दे ?" गुलाबचन्दको बलूची उठा-उठाकर पटकते। जब वह अधमरा-सा हो गया, उसपर उनने एक बाल्टी गरम पानी उड़ेल दिया। ......जेलके अस्पतालमें गुलाबचन्द डेढ़ महीना खाटसे चिपका रहा। और कैलाशपतिकी कुछ न पूछिये! एक प्रत्यक्षदर्शी कहता है कि कैलाशपतिजीके हाथपर कई डंडे लगे तब तो हाथसे राष्ट्रीय झंडा छूटा पर मुंह कभी बन्द नहीं हुआ। उनपर मानों लाठियों और ठोकरों और घूसोंकी वर्षा हो रही थी। देखकर दिल दहलता था। अन्तमें वे गिर गये और छटपटा-छटपटाकर शान्त होगये। शव परीक्षक सिविल सर्जनने लिखा है कि कैलाशपतिके दोनों हाथ चूतड़ बेतरह सूजे हुए थे। रगोंके फट जानेसे मांसमें खून जम गया था जिससे समूचा चूतड़ नीला-काला दीख रहा था। उसपर लाठी या बेंतके लगभग एक दर्जन निशान थे। उनका बायाँ पंजरा और छातीका ऊपरी हिस्सा दोनों कुचल गये थे और खून जम जानेसे बदरंग हो रहे थे। वहाँकी तीसरी पसली भी टूट गई थी। दाहिना भाग भी कुचलकर बदरंग हो रहा था और वहाँकी ९ वीं तथा दसवीं पसलियां टूट गई थीं। निचला होंठ पूराका पूरा थकुच गया था। बांयी तलहत्थीका ऊपरी हिस्सा भी कुचला हुआ था जहाँकी दो हड्डियाँ टूट गई थीं। फिर समूची पीठ लाठीके निशानसे भरी हुई थी।

लड़ाईमें भर्ती होकर जिस अंगरेजी सरकारके लिये कैलाशपतिजीने १९१४

से १९१९ तक अपना खून बहाया, उसी अंगरेजी सरकारने १९४२ के २८ सितम्बरको ५२ सालकी उम्रमें उनका खून कर दिया बड़ी बेरहमीसे, पागल कुत्तेकी तरह नोच-नोचकर। उस लड़ाईमें वे अंगरेजोंकी आजादीके लिये लड़ रहे थे और इस लड़ाईमें वे अपनी आजादीके लिये लड़ रहे थे जिसके लिये आजाद-पसन्द अंगरेजोंने उन्हें वैसा दण्ड दिया। घोड़ादेई निवासी कैलाशके बलिदानने शाहाबादवालोंको बलवान बना दिया। उनकी निधन-तिथि पुण्य तिथि मानी गई। जिले भरमें जहाँ तहाँ जलूस निकलने लगे।

गयामें जहानाबाद सबडिविजन भीषण अत्याचारका शिकार बना। अरवलकी श्रीमती देवलगन देवीका बयान है कि २२ अगस्तको श्री रामाधार सिंह दारोगाने गया मेरे पति श्री केश्वर पासमानको थाना पकड़वा मंगाया और पीटना शुरू किया। जब वह पीटते पीटते थक गया तो चौकीदारोंको पीटनेके लिये कहा। इन चौकीदारोंमें एक था कलेरका रसूल मियां और दूसरा था कौनी-कुटीका जिबोधन। अन्तमें मेरा पति गिर कर बेहोश हो गया और थानेमें ही मर गया। उसकी लाश भी मुझको नहीं दी गई। चौकीदारोंके मार्फत चुपचाप जला दी गई।

श्रीमती लक्ष्मी देवी कहती हैं कि मेरे पति कन्हाई साहुको सिपाही लोग पकड़कर थाना ले गये जहाँ दारोगा श्री रामाधार सिंहने उन्हें खूब पीटा और पिटवाया। बादको वे जेल भेज दिये गये। फिर दारोगा साहब कई सिपाहियोंको लेकर आये और जबरन मेरे घरमें घुस गये और माल असबाब लूट लिया। इस लूटमें ५२ भर सोना, दस सेर चांदीके जेवर तथा बीस पचीस बर्त्तन शामिल हैं।

श्री सुदानी गोपके घरकी किवाड़ जला दी गई जिससे घरमें भी आग लग गई। और भी १२ आदमियोंके घर लूट लिये गये। श्री रामदेनी सिंह और श्री रामरक्षा सिंहके घर ढाह दिये गये। गया सदरके उन इलाकोंमें जहाँ बागी सरकार कायम हो गई थी उधरके हिन्दू जमींदारोंकी मददसे पुलिसने घोर दमन किया। पठानोंकी भी बड़ी बड़ी जमींदारियां हैं, पर उनमेंसे एकने भी पुलिसके ऐसे ऐसे कामोंसे दिलचस्पी नहीं दिखलाई। अखौरी प्रयाग नारायणने मैगराके एक उत्साही कांग्रेस-कार्यकर्त्ता श्री परमेश्वर सिंहको पकड़वा कर पुलिसके हवाले किया। इधर बाबू रामभजन सिंहकी प्रेरणासे बभंडीमें एक कांग्रेस-कार्यकर्त्ताका

घर लूटा गया। बिजुआके सरयू महतो भी पकड़ कर पुलिसके पास भेजे गये। इसी तरह स्थानीय जमींदारोंकी मददसे धीरे धीरे उस इलाकेमें पुनः अंग्रेजी सलतनत कायम हुयी।

औरंगाबाद सबडिविजन

ग्रैंडट्रंकरोडके चलते औरंगाबाद सबडिविजन अंग्रेज और अमेरीकन फौजकी धमा चौकड़ीका अखाड़ा बन गया। एस० डी० ओ० मि० आइफ इन फौजियोंकी मददसे जनताको दबाते फिरे। आपने डा० रामेश्वर तिवारीकी बंदूक जब्त कर ली और सामुहिक जुर्मानेका शिकार उन्हें भी बनाया। उनका कसूर इतना ही था कि नवीनगर थानापर हमला करनेके मौकेपर स्वयं-सेवक घायल हुये थे उनकी उनने मरहम पट्टी की थी। साथ ही घायल दारोगाकी मरहम पट्टी करना भी न भूले थे। नवीनगर इलाकेके टंड़वा गाँवमें गोरोंने एक धनी बनियाँके घरमें आग लगाई और उसे लूट लिया। फिर गफूर मियाँके घरको जो एक काँग्रेस कार्यकर्त्ता थे जला दिया। वहाँसे आइफ साहब गोरी पलटनके साथ-साथ कुटुम्बा पहुँचे। वहाँ श्री ब्रह्मदेव सिंहका घर जलाया, लूटा और बरबाद कर दिया।

जन्माष्टमीके दिन आइफ साहब गोरों और पुलिसवालोंको लेकर देव आये। वहाँसे पैदल ही कीचड़ और पानीमें छपाके खेलते हुए एरकी आ पहुँचे और उसे घेर लिया। गाँवके लोग जूझनेके लिये तैयार हो गये परन्तु श्री मथुरानाथ तिवारीने गांववालोंको समझा बुझाकर शांत किया और खुद आगे बढ़कर गिरफ्तार हो गये। उन्हें लेकर आइफ साहब औरंगाबाद वापस हो गये। और वहाँसे मथुरा बाबूको डेढ़ सालके लिये जेलमें डाल दिया।

सोनपुर

१६ अगस्त सोनपुरवालोंके लिये आतंकका दिन था। रेलवे कर्मचारी और खासकरके अंगरेज डर रहे थे कि कहीं कलके खूनका बदला जनता हमारा खून करके न लेवे। श्रीजगदीश शर्मा और श्रीभागवतनारायण सिंह घूम घूमकर उनके डरको दूर करनेकी कोशिशकर रहे थे। एकाएक हाजीपुरसे काफी गोरे आये और आते ही मूठी फायरिङ्ग शुरू कर दी। स्टेशनसे लोग भागे, लूट बन्द हो गई। सर्जेन्ट क्वार्टरमें जो अंगरेज जा छिपे थे अब साहस करके निकले। उनकी मेम बच्चोंको लेकर कमान्डरके पास गई और आँसू पोंछती हुई अपना दुःखड़ा रोने लगी। कमाण्डर गोरोंको लेकर गोला बाजार आया, कुछको बन्दूकके कुन्दोंसे मारा और बल्लभ सिंहके गोलामें आग लगा दी। पीछे लोगोंने आग बुझा दी।

इधर १७ अगस्तसे सोनपुरमें भगदड़ मच गई और यहांके नामी रईस यमुना प्रसाद और देवकी नन्दन सिंह गोरोंके खाने पीनेके लिये रसद जुटाने लगे उधर बनबारचकमें चीनीकी लूट जारी थी। श्रीरामनाथ सिंह, जयमंगल सिंह और लक्ष्मी मिस्त्री कार्यकर्त्ताओंका सहयोग पाकर बची खुची रेलवे लाइन उखाड़ रहे थे। नयागांवमें भी जीवन था। वहांके लोग मिरचाइका घोल और रोड़ेसे गोरोंको मार भगानेका मन्सूबा बाँध रहे थे। १८ अगस्तको गोरे बनबारचक पहुँचे, खाली आवाज करके लुटेरोंको भगा दिया और नजदीककी बस्तियोंमें घुस कर लोगोंको कुन्दोंसे मारा। फिर सोनपुर लौटते हुये कसमर मौजामें जाकर कुछ झोपड़ियां जलाईं और वहांसे दुधैला बाजार आये। हाटका दिन था। लोग इकट्ठे थे। आवाज भी हो रही थी। गोरोंने समझा, सभा हो रही है। गोली चलाई और दीपू महतोकी जान लेली।

१६ अगस्तको गोरे ट्रेनसे नयागांव और परमानन्दपुर पहुंचे। वहां एकको गोली मार घायल कर दिया। नयागांवमें भी एक घरको जला दिया। लोगोंने रोड़े फेंके और गोरोंने गोलियां चलाईं। कई घायल हुये।

२० अगस्तसे तलाशियां शुरू हुईं। लोग लूटकी चीजोंको जहाँ तहाँ छिपाने लगे। रुपये बोरा चीनी बिकने लगी। तोभी किलनोंको गाहक नहीं मिला। फिर चीनी नदी तालाब और कुएँमें डाल दी गई। सैकड़ों कुओंका पानी शर्बत जैसा होगया। बादको उसमें कीड़े पर गये। पानीके अभावसे लोग अकुलाने लगे और उस पानीको पीकर कितने जानवर मर गये। पर यह तो आगेकी बात है। उस दिन तो सारी आफत आदमियोंपर ही आई। बाबू भगेलू सिंह, रईस, मुलाकात करनेके बहाने बुलाये गये; बेरहमीसे पीटे गये और जेल भेज दिये गये। फिर अनेक लोग गिरफ्तार कर लिये गये और सोनपुर शान्त-सा होगया।

१७ अगस्तको बड़ी बड़ी मोटर गाड़ियोंको लेकर गोरा पलटन छपरेमें उतरी कारकम्पनीके स्टीमरसे। पलटनमें सभी थे अंगरेज, कनाडियन और अमरीकन। अब सरकारी कर्मचारियोंकी जानमें जान आई। जिला मजिस्ट्रेटने कर्फ्यू ऑर्डर जारी किया और एलानकर दिया कि जो लाईन नष्ट करता पाया जायगा गोलीका निशाना बनेगा। फिर राजेन्द्र कालिजके छात्रोंकी गिरफ्तारी शुरू हुई। कचहरीमें आनेके लिये वकील मुख्तारोंपर भी दबाव डाला जाने लगा और आखरी हफ्तेमें बार एसोसियेशन और मुख्तार एसोशियेशनकी बैठक बुलाई गई और कचहरीमें

जानेका निश्चय किया गया। फिर गोरे चारों ओर घूमने लगे और जनताको सताने लगे।

जहां जहां पुल टूटे थे वा सड़कें काट दी गई थीं वहां वहांके लोगोंसे जबरदस्ती उनकी मरम्मत कराई गई जिसके लिये उनके घरके सामान ले लिये गये। यहांतक कि घरके चौकठ किवाड़ भी छुड़ा लिये गये। कांग्रेसी गैरकांग्रेसी वा अवर्ण सवर्ण किसीका कुछ खयाल नहीं किया गया।

शहरको मुट्ठीमें करके गोरोंने देहातोंमें भी अड्डे कायम किये जहां उनके खाने पीने और आराम करनेके सामान जमींदार लोग जुटाने लगे।

छपरा रेवाघाट सड़कपर बाबू विश्वनाथ मिश्र और बा० भागवत प्रसाद वकील, जारहे थे। गोरोंने उन्हें सड़कपरसे उतारा और सड़क मरम्मत करवायी, सिवान जाते समय गोरे दाउदपुर रुके जहां पुल बरबाद किया गया था। वहां लोगोंसे उनने पुल मरम्मत करवाना चाहा पर कोई बात माननेको तैयार नहीं होता। पासमें एक छोटीसी भीड़ थी जिससे कुछ लोग पुलमें हाथ लगानेको बढ़ तो नहीं रहे थे हँस रहे थे। गोरोंने तैसमें आकर उनपर गोली चलाई; फलस्वरूप एक बच्चा मरा, बारह वर्षका, श्रीकामता गिर और एक युवक मरे २२ वर्षके, श्रीफागू गिर।

१६ अगस्तको २१ अमरीकन फौज दिघबारा पहुँची। टेनब्रुक साहब अगुआ थे। गोरोंने सीताराम सिंह, हरिनन्दन प्रसाद और सहबीर साहको अपनी गोलियोंका शिकार बनाया और श्रीयदुनन्दन सिंह और श्रीमहेश प्रसादको घायल किया। उसी दिन श्रीहीरालाल सर्राफ और श्रीनवल प्रसादके गोलेमें आग लगा दी गयी। शीतलपुरके श्रीगुरुसहाय साहका घर फूंक दिया गया। दूसरे दिन ४० अमरीकन फोर्स लेकर टेनब्रुक दिघबारा पहुंचा और बाबू रामविनोद सिंहके मकानको फूंक दिया। बैठकके सामनेके हिस्सेको गैंतासे तोड़ दिया और उनकी तिजोरी उठाकर लेगये। दो दिनके बाद २५० गोरोंको लेकर कार कम्पनीके जहाजसे टेनब्रुक साहब उतरे और खूब तड़के ही मलखाचक गांवको घेर लिया। गोरोंने चारो तरफ छोटी छोटी ८ तोपें भिड़ा दीं। फिर सदल बल श्रीरामानन्द सिंहके घरपर धावा किया। पर श्रीरामानन्द सिंह सपरिवार मकईके खेतसे निकल भागे। गोरे उन्हें न पा सके पर उनके घरको लूट लिया और उसमें आग लगा दी।

गोरोंकी आग और गोली मलखाचकको दबा न सकी। श्रीनारायण सिंहजी युवकोंकी टोली ले गोरोंसे मोरचा लेनेकी तैयारीमें इधर उधर घूमते रहे। उनने

जिला भरके फरारोंसे सम्बन्ध स्थापित किया और समानान्तर सरकार कायम करनेकी कोशिशमें लगे रहे। ५ अक्तूबरको परसाके फरारोंसे मिलकर वे लौट रहे थे कि सोनपुर पुलके पास माही नदी पार करते हुये गोरोंने उन्हें देख लिया। उनपर गोली चलायी गयी परन्तु वे बाल बाल बच गये। १४ अक्तूबरको दिघवारेकी पुलिसने श्रीहरिचरण भगतको रामानन्द सिंहके घरमें पकड़ा और भगतजीको छिपा रखनेके अपराधमें श्रीरामानन्दजीको भी गिरफ्तार कर लिया। दोनोंको लेकर पुलिस मलखाचकसे दो फर्लांग ही गयी होगी कि श्रीनारायण सिंह अपना युवक दल लेकर आये और हरिचरण भगतको छुड़ानेके प्रयत्नमें लगे। पुलिसने उन्हें बार बार सावधान किया पर उनने सीना खोल कहा कि गोली खाना है या हरिचरणको छुड़ा लेना है। उनके साथियोंने पुलिसपर ढेले भी फेंके। तुरत पुलिसने उनका जवाब गोलीसे दिया और मलखाचक गांवके निकट ही रेलवे हातेमें युवक श्रीनारायण सिंह शहीद होगये। दिघवारा थानाकी यह अन्तिम आहुति थी।

सरकारी संस्थाओंपर दखल जमाकर मढ़ौराके कार्यकर्त्ताओंने मढ़ौराके कारखानोंको कब्जेमें लाना चाहा। कारखाने मामूली कारखाने जैसे न थे। मढ़ौरा कारन इञ्जिनियरिंग वर्क्स तो लड़ाईकी चीजें बना ही रहा था साथ ही कारीगरोंको युद्धोपयोगी शिक्षा भी दे रहा था। चीनीका कारखाना जो बेग सदरलैन्डका था, नौकरशाहीका एक अड्डा बन रहा था। शराब और मिठाई तैयार करनेके भी बड़े-बड़े कारखाने थे। फिर अच्छा-सा शस्त्रागार भी था। जनता जो इन्हें अपनी आजादीकी राहके रोड़े समझती थी उसका पर्य्याप्त कारण था।

कारखानेके साहबोंको मालूम हो गया कि जनता कारखानोंपर हमला करना चाहती है। तुरत उनने गोरी फौज लानेके लिये अपनी लारी दौड़ाई और साथ ही कार्यकर्त्ताओंसे समझौतेकी बातचीत शुरू करवा दी। पर उनकी चाल छिपी न रही। बाबू वासुदेवनारायणने अपने साथियोंको सतर्क कर दिया, सभी इकट्ठे हुये और तय किया कि गोरोंको मढ़ौरा घुसने न दिया जाय और अगर घुस गये तो सामना किया जाय—महथाजीके बागमें, अमनौरमें या रसूलपुरमें। फिर सब सड़क काटनेमें लग गये ताकि गोरे आ न सकें।

१७ अगस्तकी रात थी। पानी बरस रहा था और कार्यकर्त्ता सड़क काटनेमें व्यस्त थे। अढ़ाई बजे रातको श्री बोधन प्रसाद श्रीवास्तव दौड़े हुए आये और

कहा कि गोरे मढ़ौरे पहुँच गये। गोरे पहुँचते ही जुल्म ढाने लगे। जिसको पाया बन्दूकके कुन्देसे पीटा। नगर रक्षकदलके स्वयंसेवकोंपर भी मार पड़ी। आठ नौ आदमी बेतरह घायल हो गये। बाजारमें कुहराम मच गया। भोर हुआ और दिन चढ़ते-चढ़ते चारों ओर खबर फैल गई कि फौज आ गई।

इस दिन महथाजीके बागमें सभा होनेको था। फौजके आजानेसे महथाजी नहीं चाहते थे कि वहां सभा हो और ग्यारह बजे तक लोगोंको आते न देख खुश हो रहे थे। उनने समझा कि गोरोंके आनेसे लोग आतंकित हो गये हैं, फिर सुबहमें पानी भी खूब पड़ा है; इसलिये सभा नहीं हो सकेगी। पर कुछ ही देरके बाद उनने देखा कि चारों दिशाओंसे बाजे बजाती हुई टोलियां-पर-टोलियां नारे लगाती हुईं बागमें इकट्ठी हो रहीं हैं—गरखा, बनियापुर और मसरख जैसे दूसरे थानोंकी भी। इधर सारन इञ्जिनियरिंगके किरानी बाबू सुखदेवसिंह और मिस्टर फ्रान्सिसने गोरोंको जो सबके सब कनाडियन थे, समझाया कि बागमें चलकर फायरिङ्ग करना अच्छा है; भीड़ बड़ी है पर उसमें नेता नहीं है आवाज सुनेगी और डरकर भाग जायगी। श्री महम्मद-अली दारोगा और श्री कैलाशपति नारायण डिपटी मजिस्ट्रेटके जो फिर अपने सिपाहियोंकी टोली सहित वापस आगये थे, मना करनेपर भी कनाडियन महथाजीके बागको रवाना हो गये और वहाँ पहुंच गोली चलाने लगे। उनकी गोलीसे बीसों आदमी घायल हुये। श्री रामजीवन सिंह तो घर पहुँचते-पहुँचते शहीद हो गये। श्रीचन्द्रदीप बिन्दको अपनी एक टाँग खोनी पड़ी। सर्वश्री रामविलास राय, भागवत तिवारी, संतलाल सिंह और चूड़ामणि सिंह भी सख्त घायल हुये।

एक प्रत्यक्षदर्शी एम० ए० बी० एल० लिखते हैं—मैं फौरन बाहर आया। देखा, भगदड़ मची हुई है। कुछ लोग तो महथाजीके जनानखानेमें घुसने लगे। महथा शुकदेव नारायणने उन्हें निकाल बाहर किया और दरवाजेकी ओर जंजीर बन्दकर दी। लोग जहाँ-तहाँ छिप रहे थे। बहुरियाजी बागमें खड़ी थीं। फिर मैंने देखा कि कुछ कनाडियन महथाजीके मन्दिर और कुएंपर आ गये हैं। ××× पाँच छः मिनिट ही हुए होंगे कि लोग फिर जुटने लगे। हजारों कण्ठोंसे मारो! मारो! की आवाज निकलने लगी। कनाडियनोंपर ईंटोंकी बरसा होने लगी। वे हरबे-हथियारसे पूरे थे; टॉमीगन भी रखते थे तौभी सब के सब

भागे। भारी शरीर और भारी साजबाज; फिर कीचड़ भरे धानके खेतसे या पोरसा भर लम्बे मकईके खेतसे भागना कठिन हो रहा था। और पीछे भाले, गँड़ासे, भुजाली और लाठीसे रोड़े तक लेकरके अनगिनत दौड़नेवाले जो बड़ी फुरती दिखला रहे थे। मैने देखा पाँच-सात मिनिटोमें एक भीषण काण्ड समाप्त हो गया है।

"कहा जाता है पहले बारमें ही चार कनाडियन और एक यूरोपियन जो कारखानेके किसी अफसरका छोटा भाई था, खत्म हो गये। एक-डेढ़ घण्टेके बाद सुना कि एक और कनाडियन जो अपनी मोटरकी निगरानीकर रहा था मारा गया। जिस जिसने उन सबोंके सामान ले लिये।

कुछ देरके बाद समझदार लोग जुटे। कुछ लोगोंने प्रस्ताव किया कि लाशोंको मिट्टीके तेलसे जला देना ठीक है। पर इसे खतरनाक समझा गया; और सभी लाशोंको बैलगाड़ीपर लादकर रातोंरात सावन भादोंकी उमड़ती हुई नदीकी गोदमें छिपा दिया गया।"

उस काण्डके फल-स्वरूप बाकी कनाडियन मढ़ौरा छोड़ छपरा भागे और गांव-वालोंने तो जिधर डौल लगा उधर ही का रास्ता नापा। मढ़ौरावाले बेतहासा भाग रहे थे परन्तु अड़ोस पड़ोसके गांव गोरोंका सामना करनेकी तैयारी कर रहे थे। इसी बीच खूब पानी बरसा जिसने रक्तके छींटोंको धो पोछ कर बहा दिया। चौथे दिन ६५ गोरे, २० सिपाही और काफी पुलिस बड़ी तैयारी करके मढ़ौरा आये और लोगोंपर जोर जुल्म होने लगा। मढ़ौरा स्कूल सामान सहित जला दिया गया। बाबू चांदी सिंहका मकान जला दिया गया और श्री हरनारायण महथाके घरोंको लूट खसोटकर तोड़ फोड़ डाला गया।

फिर सारी पुलिस और फौज अमनौर चली। सड़क-पुल तोड़ दिये गये थे। इसलिये आनेमें सबोंको कठिनाई हुई। अमनौर पहुँचते ही उनने अन्धाधुन्ध गोलियां चलाई। लोग पहलेसे सतर्क थे। इसलिये श्री जयमंगल महतोकी ही जान गई। जानवर तो कितने मरे। गोरोंने फिर हरिहर मिश्रजीका घर लूटा और एक सज्जनको गोलीसे घायल करते हुये अमनौर दरबार पहुँचे। बहुरियाजीका अमनौर दरबार बहुत पुराना दरबार है और अच्छी हैसियत रखता है। उसके मकानोंकी खूब लूट-पाट हुई और काफी समान फूँक डाले गये। फिर वहांका आश्रम जला दिया गया। वहांसे फौज मढ़ौरा आ गई।

यह मढ़ौरा ही उन गोरोंका अड्डा बना। वहांसे ही वे पुलिसके साथ गरखा, मसरख, वैकुण्ठपुर, नगियापुर और परसा थानोंमें आग और अत्याचारका क्रूर प्रदर्शन करने जाते।

रातको ही हरनाथ सिंहजीका घर, जो कांग्रेसके विरोधमें ही रहे, लूटा गया और उनको खूब पीटा गया। फिर खिलहौरीके श्री मातवर सिंह और मढ़ौराके श्री परमा सिंह मढ़ौरा थाना पकड़ मंगाये गये और खूब पीटे गये। मांगनेपर इन्हें पानी तक नहीं दिया गया। अमनौरके देवी साह तेली और गोसी-अमनौरके भोला तिवारी, पं० वासुदेव तिवारी और बांके सिंहके घरोंको लूट लिया गया और उन सबोंको गर्दनसे एक ही रस्सेमें बांध ठोंकर और कुन्दोंसे पीटते हुये जेल पहुँचाया गया। वहां इनके नाक-कान साफ किये गये जिनमें खून जमा था। बांके सिंहके तो दांत भी टूट गये थे। इस इलाकेके दफादार यमुना तिवारीजी बड़े उत्साहसे इन लोगोंका पीटते और गोरोंके सुरमें सुर मिलाकर कहते—"गांधीको बुलाओ"। सलीमपुरके बाबू सूर्य सिंह, असांवके पं० रामबहादुर मिश्रके सामान लूटे गये।

इन सब चढ़ाईमें मि० बी० पी० मित्र, पुलिस इन्स्पेक्टरका साथ था और मि० टेन मुकका हाथ।

मढ़ौरा थानेमें एक और सनसनी खेज घटना हुई।

श्री जगदीश शर्मा, सभापति, थाना कांग्रेस कमिटी, सोनपुर लिखते हैं कि १२ अगस्तको ही सोनपुर स्टेशनपर एक जाट-राजपूतोंके मिलिटरी जत्थेके कमाण्डरसे मेरी बातचीत हुई। हमारी क्रान्तिसे उनको खुशी हो रही थी और वह चाहते थे कि जो हमें कल करना है उसे हम आज ही कर दिखलावें। दूसरे दिन उनका जत्था मुजफ्फरपुर चला गया। × × × × फिर जब अपने थानासे भागकर मैं मढ़ौरामें रह रहा था एक दिन खबर मिली कि मुजफ्फरपुरसे ६ जाट-राजपूत सैनिक भागकर सोदपुर होते हुय यहां आये हैं और गण्डक नदीके किनारेके बांध होकर जा रहे हैं। मैंने उनका पीछा किया पर आगे जाकर मालूम हुआ कि वे लोग गोलीसे मार दिये गये।

मढ़ौरा थाना कांग्रेस कमिटीकी रिपोर्ट है कि ५ गढ़वाली सैनिक सोनपुरकी ओरसे गण्डक नदीके बाँधके रास्ते परशुरामपुर पहुँचे। वहाँ वासुदेव बाबूका घर खाली था पर दरवाजेपर राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था। उन सबोंने झंडेको सलामी

दी और थके मांदे वहाँ बैठ गये। × × × फिर वहाँसे उठकर वे सब बाबू देवशृङ्गार सिंहके यहाँ पहुँचे जिनने इन लोगोंको खिलाया पिलाया। इसी बीच हलका सालके चोकीदारों और दफादारने कुछ फासलेसे इनकी निगरानी शुरू कर दी। × × × × × बाबू सरयू सिंहको खबर मिली और वे थाना साइकिल ले चढ़े। वहांसे ब्रजभूषण प्रसाद दारोगा गोरोंको लेकर दौड़े आये और कुँवारी पहुँचे। वहाँ बाँधकी बगलमें ब्राह्मणोंके मकान हैं और सामने झाड़ियाँ हैं जिनमें सबके सब छिप गये। फिर ज्योंही गढ़वाली सैनिक वहाँसे गुजरने लगे उनपर गोलियोंकी बोछार शुरू हुई। सैनिक घबड़ा गये और बांधके उत्तरकी ओरकी खाईको पार करके लड़ना शायद मुनासिब समझा इस उद्देश्यसे उधर दौड़े। लेकिन उसमें काफी पानी था। वे डूबने लगे। ऐसी हालतमें तीन मारे गये और दोने जखमसे अवश होकर आत्म-समर्पण किया। ब्रजभूषण बाबूने तीनों लाशोंको गंडकमें फेंकवा दिया। उनके हथियार उस दिन नहीं मिले। पर वहां पहरा बैठा दिया गया और तीसरे दिन महाजाल डालकर सारे हथियार निकाल लिये गये।

गरखा थानाके कार्यकर्त्ताओंने गोरोंसे निबट लेनेके लिये अच्छी तैयारी कर ली थी। और जगहोंकी तरह मकईके खेतका यहां भी बड़ा भरोसा था। राइफलके गरखा निशानोंसे ओझल करके मकईने अनगिनत जानें बचाई थीं। पर गरखामें इसे दूसरा काम करना था। इसे हरबे हथियार, रोड़े और गुड़-मिरचाईके काढ़े और बुकनीको लेकर आये हुये लोगोंको छिपा रखना था ताकि ऐन मौकेपर जब छपरासे आते हुए गोरे गरखामें प्रवेशकर रहे हों ये निकल बाहर होवें, गोरोंपर टूट पड़ें और उन्हें सदौराकी राह दिखलायें।

इधर श्रीजगलाल चौधरी दूसरे उधेरबुनमें थे। आप लिखते हैं, "२२ अगस्तको तीन बजेके करीब छपरेमें मेरे दो मित्र आये और बोले—देखो मैं तुम्हें बारबार कहता हूँ कि गोरोंको तुम्हें गोली दागनेकी आज्ञा मिल चुकी है। वे तुम्हारी खोजमें हैं।

मैं—तो मैं छिपा कहां हूँ? यदि वे चाहें तो मुझे गोली मार सकते हैं।

मित्र—नहीं नहीं; तुम्हारी खोजमें वे गांवमें आवेंगे तो गांवके उजाड़ डालेंगे पर यदि तुम खुद उनके यहां पहुँच जाओ तो तुम्हारी ही जान जायगी, गांव बच जायगा। ....

मैं—आप लोग मुझे फुरसत दें; मैं अपने ढंगसे मरूंगा आपके ढंगसे नहीं।

पर मित्र लोग अपनी बातपर अटल रहे। ......सभी कार्यकर्त्ता बराबर छपरेकी राह छेंके रहते थे कि गोरोंको इधरसे न जाने देंगे। × × × मैं दूसरी सड़कपर मित्रोंसे तर्क कर रहा था। मैं जानता था कि लोग यद्यपि उस दिन लाठी आदिका उपयोग कर युद्ध करनेकी बात कह रहे थे तौभी वक्तपर अधिक जबर्दस्त अस्त्रोंके सामने वे न टिकेंगे, उन्हें भागना पड़ेगा; फिर यदि मैं ऐसे अवसरपर हाजिर नहीं रहता तो अधिक हानिकी संभावना थी; लोग थोड़ा बल प्रयोग करेंगे और गोरे निर्दयताके साथ उन्हें कत्ल करेंगे; पर यदि कुछ भी शरीर-बलका प्रयोग न किया जाय तो गोरे केवल कुछ ही लोगोंको कत्ल कर शांत हो जायंगे; मैं उनके साथ रहकर उन्हें बल प्रयोग करनेसे रोक, अधिक हानिके बदले थोड़ी हानि उठा गांवकी रक्षा कर सकता था, फिर भी मेरे मित्रोंने मुझे आत्म-समर्पणके लिये राजी कर लिया × × × मैं छपरा चल पड़ा।

पर भाग्यमें दूसरा ही बदा था। जिसपर मैं था उसी राहसे गोरों की लॉरियां आ धमकीं। मैं गांवमें पहुँच नहीं सकता था। वे गांव पार कर थानेमें चले गये और तुरत वापस आकर गोलियां चलाने लगे।"

लोगोंका पूरा जमाव तो छपरासे आनेवाले रास्तेपर था। पर गोरे आये मढ़ौरा वाली राहसे। इसलिये राहमें कोई घटना न हुई। पर गरखाके नवयुवकोंने भी गोरोंसे भिड़नेकी तैयारी की थी। रोड़ोंसे भरे हुये झोले टांगे फिरते थे। इनमें एक थे श्री इन्द्रदेव चौधरी श्री जगलाल चौधरीके सुपुत्र। धारा-सभा भवनकी चढ़ाईमें आपके सर जो पटनेकी पुलिसकी लाठीका घाव लगा था सो सूखा भी न था, सरमें पट्टी बंधी हुई थी। मांने आपसे झोला छीन लिया और घरमें छिपा रखा। पर आप वहांसे उसे ले उड़े और चौराहेके पासकी एक दूकानके छतपर चढ़ गये जहां पहलेसे और लड़के मौजूद थे। जैसे ही गोरोंकी लौरी पास आई उस छतपरसे गोरोंपर रोड़े बरसने लगे। गोरोंने गोली चलाई। छतवाले मकानको घेर लिया और दरवाजा तोड़ सीढ़ीसे छतपर चढ़ना ही चाहते थे कि देखा सरमें पट्टी बांधे एक लड़का सीढ़ीसे उतरा आ रहा है। उस लड़केको उन्हें गिरफ्तार तो करना था नहीं इसलिये उनने चट उसे गोली दाग दी। गोलीकी पहली बौछारमें कितने घायल हुये थे और सख्त घाव लगा था श्री चन्द्रदीपको। श्री इन्द्रदेव बेलाग बच गये थे पर अबकी तो वह मानो साक्षात यमके मुंहमें ही दौड़ आये थे।

श्री जगलाल चौधरी लिखते हैं—"× × × एक सज्जनसे पता लगा कि गोलियाँ

दो विद्यार्थी शहीद

शहीद इन्द्रदेव चौधरी,
(श्रीजगलाल चौधरीके सुपुत्र)
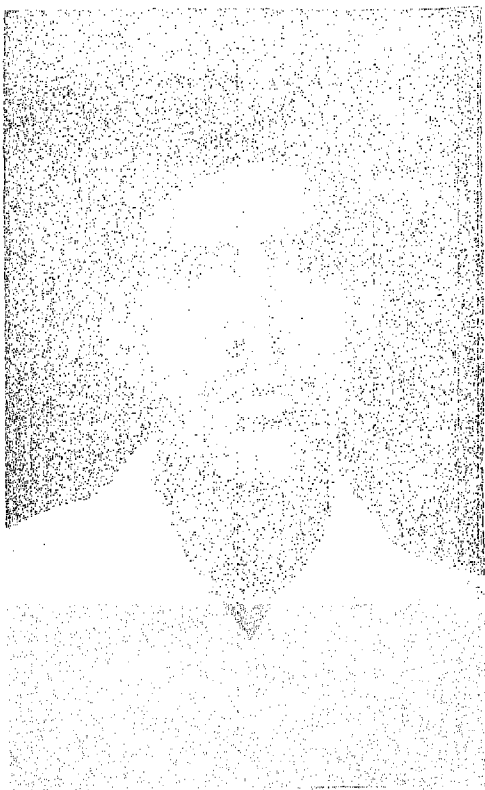
शहीद श्रीनारायण सिंह,
दिघवारा (सारन)
(श्रीबासुदेव नारायण सिंहके सुपुत्र)
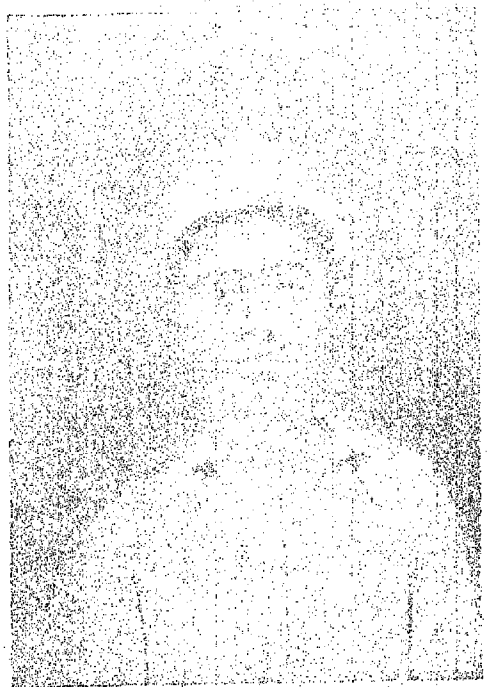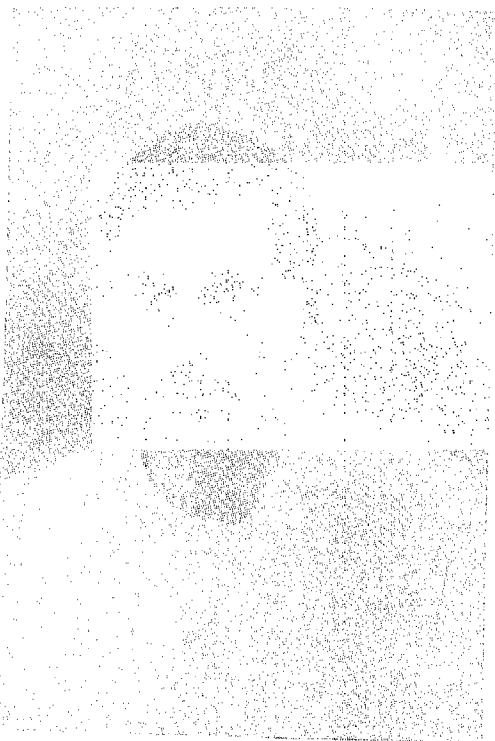
लालगंज थाना रेडके दो शहीद

शहीद श्रीसिद्धेश्वर महरा,
लालगंज (मुजफ्फरपुर)

शहीद विभिक्षण महरा,
लालगंज (मुजफ्फरपुर)

खूब चलीं पर मरा केवल मेरा एक लड़का और गोरे उसे लेकर चले गये। मैं और भी घबड़ाया। × × × मैं क्या करूँ? क्या घर लौटकर बच्चे के लिये रोऊँ? यदि प्राण नहीं दे सका तो रोनेसे क्या लाभ? × × मै छपरेकी ओर लौट चला। धोती और गंजी ही मेरा कुल वस्त्र था पैरमें जूते न थे। सात मीलकी कंकरीली राह चलकर थक गया और एक मठमें सो गया। ता० २३ के सुबह उठकर शहरमें घुसा। सीधे ससुराल गया। × × तुरत रसोई बनी और मैं स्नान भोजन कर चल पड़ा। लोगोंने पूछा कि मैं कहां जा रहा हूँ; मैंने कहा, मैं दूर जा रहा हूँ। × × तेजीसे चलकर तुरत डिस्ट्रिक्ट बोर्डके स्पेशल ऑफिसर श्री बेनी माधव प्रसादके वास स्थानपर पहुँचा और उनसे मिलनेकी इच्छा प्रकट की। पता लगा कि वे पूजापर हैं। मैंने कागज पेनसिल मांगा और लिखा:—S. D. O. I learn I wanted by soldiers who have orders to shoot me wherever I am found I am hear at your doors d request you to send me to them, as I no longer wish to live. अर्थात् मुझको मालूम हुआ कि गोरे मेरी तलाशमें हैं उनको हुक्म है कि जहां वे मुझको पावें गोली मार दें। मैं आपके दरवाजे आया हूँ। अर्ज करता हूँ मुझे उनके पास भेज दें अब जीनेकी मेरी इच्छा नहीं रही। पुरजा मैं दे भी न सका था कि एक पालकी गाड़ी सामने सड़कपर आ लगी और एक पुलिस सब इन्सपेक्टर उतर कर खड़े हुए; उनने मुझे बुलाया और गाड़ीमें बैठा लिया, गाड़ी बढ़ी तब उनने कहा—"आप गिरफ्तार हैं।" मेरे हाथका पुरजा उनने ले लिया और उसे मसोड़कर पाकेटमें डाल लिया।

दो तीन मिनटकी चुप्पीके बाद दारोगाजीने कहा—I am very sorry to learn that your son is dead—मुझे जानकर दुख हुआ कि आपका लड़का मारा गया। × × मैं—आप मुझे लाश देखने देंगे?

दारोगा—चलिये न; मैं दिखला दूंगा। × × मैं लाशके पास पहुँचाया गया एक मशहरीमें लपेटा हुआ शव मैंने उघार कर पहचाना—मेरा इन्द्रदेव! नाभिके नीचे गोलीका घाव, नाकमें खून! मैं रो न सका, शवको चूम लिया और मन ही मन कहा—जा, तू स्वर्ग गया मुझे नरकमें छोड़ गया।

दारोगाने कहा—आप चाहें तो लाशको दफनानेका बन्दोबस्त करा सकते हैं।

× × कुछ ही देरमें मेरे ससुरालसे दारोगाजीके सिपाही कई सज्जनको बुला ये और रंथीपर शवको लाद चले। इधर मैं भी जेल पहुंचा दिया गया।"

बनियापुर

बनियापुरमें गोरोंका आतंक तो पहले ही फैल गया था पर लूट पाट शुरू हुई, ६ सितम्बरसे। सहाजीतपुर बाजारमें श्रीनथुनी साह, बुधन साह और दुःखी साहकी दूकानें लूटी गईं। दाढ़ीबाड़ी, बनियापुर बाजारके माधवजी, रामदत्त दुबे और केदार पुरीका घर बरबाद किया गया। श्रीठाकुर ओझा और भृगुनाथ ओझाका घर भी बरबाद कर दिया गया और वे दोनों बाप बेटा पकड़ लिये गये।

एकमा

एकमा गोरे आये अगस्तके अन्तमें। उनने कई घर जलाये और गोस्वामी फूलनदेव गिरिजीके घरका सारा सामान फूंक दिया। यहांका संगठन इतना जबरदस्त था कि गोरे डरते थे। इसलिये अत्याचार बढ़ नहीं पाया।

परसा

परसा थानेमें २६ अगस्तको गोरोंकी सात लॉरियां पहुँची। पहरेदार स्वयं-सेवकोंने खतरेकी घण्टी बजायी और कार्यकर्त्ता इधर उधर छिप गये। हाइ स्कूल और छात्रावासके मकानोंको गोरोंने फूंक दिया; ट्यूब वेल और कुएंके ढेकुलको तोड़ फोड़ दिया; स्वराज्य आश्रमके मकानको तोड़ कर जला दिया और लगे हाथ यूनियन बोर्डका आफिस भी फूंक डाला। इधर उधर गोलियां भी चलाईं। कोई मरा नहीं पर सभी आतंकित हो गये। पर परसाका काम बन्द नहीं हुआ। कार्यकर्त्ताओंने डिस्ट्रिक्टबोर्डके डाकबंगलेको शिविर बना लिया और ग्राम संगठन करने लगे। वे रामपुर गांवके रहनेवाले मिस्टर विलसनके यहां गये और उससे हथियार मांगा। उसने कार्यकर्त्ताओंसे हमदर्दी दिखाई और अपना घर दिखा दिया। हथियार नहीं था। १४ सितम्बरको पं० द्वारिकानाथ तिवारी जत्था लेकर छपरा कचहरीकी पिकेटिंग करने गये और गिरफ्तार हो गये। परसा थानेसे और जत्थे भी छपरा गये और कार्य कर्त्ताओंकी गिरफ्तारी होती रही। इस थानामें गोरोंके अत्याचार भी काफी हुये। गणेश सिंहको गोरोंने ऐसा पीटा कि करीब एक महीना तक जेलमें केवल दूध ही पर रक्खे गये। रामदास सिंहको ४८ दिनों तक अस्पतालमें रहना पड़ा और सूर्यदेव सिंहके नाकसे खून आता रहा।

सिवान

सिवानमें गोरे १६ अगस्तको पहुँच गये और मनमानी करने लगे। गिरफ्तारी शुरू हुई। पर डा० सरयू प्रसाद फरार हो गये थे। इसलिये उनके घरका सामान जब्त हुआ और उनका दवाखाना लूट लिया गया।

गोरोंके साथ साथ पुलिस आई दरौलीमें २८ अगस्तको। उनने पं० रामायण शुक्ल, तथा श्रीविश्वनाथ शर्मा और मधुसूदन सहके घर जला दिये और सिवान

दरौली   वापस होते हुये वे जेजोरके श्रीबासुदेव नारायणका मकान भी फूंकते गये। फिर सबके सब आसांव गये और रामानन्द साहकी दूकान लूटी। दूसरे दिन फिर वे दरौली पहुँचे और श्रीरामावतारको पकड़ लिया। जो कार्य कर्त्ता फरार थे उनके घरके सामानकी जब्ती कुर्की शुरू हुई। श्रीतपेश्वर तिवारीका घर लूटा गया। श्रीदीनेशचन्द्र, विश्वनाथ प्रसाद और रामबहाई सिंहके सामान गये। ३० अगस्तको रामावतारजी आर्य्य और रामबली दुबे पकड़े गये। दोनोंके सरके बाल नोचे गये और आंखकी पपनियां उखाड़ ली गईं। रामबली दुबेजी मिडिल स्कूलके हेड मास्टर थे।

श्रीसरयू प्रसाद व्यापारीकी चेष्टासे मियां खलील फिर गुठनी वापस आगये थे पर थानामें कांग्रेसका ताला लगा था और उसपर कांग्रेसका झंडा फहरा रहा था जो

गुठनी   २ सितम्बरको मिलिटरीके द्वारा हटाये गये। गुठनी आश्रम जब्त कर लिया गया। फिर गिरफ्तारी शुरू हुई। श्रीराजवंशी सिंह थानेका दौरा करते हुए पकड़े गये फिर श्रीरघुनन्दन दास गिरफ्तार हुये। कांग्रेस आफिसकी बहुतसी किताबें और श्रीधर्मदेव लालके सामान बरबाद हुये। मदन कान्दूका घर और विश्वनाथ मुन्नीलाल कुंजबिहारीकी दूकानें लूट ली गईं। सोहगराके श्रीकुंजबिहारी प्रसादको पुलिस जमादार बृन्दा सिंहने इस बेरहमीसे मारा कि वे बेहोश होगये।

१३ सितम्बरको गुठनी बाजारमें सभा करके एक भीड़ लेकर श्रीधर्मदेव लाल, साधुशरण मिश्र, राधारमण दुबे और रामबहाई चौधरी जब्त आश्रमको दखल करने जा रहे थे कि गिरफ्तारकर लिये गये। फिर गुठनी शान्त हो गया।

मैरवामें गोरे आये गोरखपुरसे। खादी भण्डार लूटा गया और जलाया गया। भण्डारमें जो थे सो गिरफ्तार हुए। बादको छपरेसे भी अंगरेज और

मैरवा   अमरीकन फोर्स पहुँचा जिसने मैरवा आश्रम जला दिया। फिर बिहार प्रान्तीय सेवा समितिका दफ्तर लूटा गया और बरबाद कर दिया गया। शिवपूजन चौधरी और जंगबहादुर सिंहके घर लूटकर जला दिये गये। गोरोंकी इन करतूतोंकी खबर जब गांवोंमें पहुँची तो कुछ लोग जोशमें आ गये। २३ सितम्बरकी बात है जमापुर, सुखल और जिरादेई आदि गांवोंके लगभग पांचसौ व्यक्ति भाटापोखर स्टेशनकी ओर रवाना हुये। ठीक उसी समय एक स्पेशल ट्रेन रेलवे लाइन मरम्मत करती हुई आ रही थी। गांवमें आग लगानेवाले गोरे उस समय उस ट्रेनमें ही आरामकर रहे थे। भीड़ देख ट्रेन हटकर गुमटीपर

आई जिसमेंसे भीड़को लाइनपर एक पेड़ रखते देख दो गोरे उतरे। फिर सीटी बजी और चार गोलियां चलीं। लोग चिल्लाने लगे—झूठा फायर है। पर जीरादेईका बोधा बरई चिल्लाया, मुझको गोली लगी और गिरकर मर गया। तब लोगोंको विश्वास हुआ कि फायरिंग सच्ची है और वे इधर-उधर भागे। तबतक मुखलके पं०हरिशंकर तिवारी घायल हो गये। घाव बड़ा था; पर बच गये। विद्यार्थी सत्यनारायण साह भी घायल हुआ किंतु बच गया। पर ठेपहाके बाबू सेवकरायको जो अपने दरवाजेपर ही खड़े थे, ऐसी संगीन चोट लगी कि इलाज करने पर भी हफ्ता भीतर वे मर गये। धर-पकड़ जारी था। सामुहिक जुर्माना भी ठोक दिया गया था जो दोनों जनताके विविध कष्टोंके कारण बने। फिर भी तोड़-फोड़ जबतक जहां-तहां होती ही रही। सरकारको मालूम हुआ कि जंगबहादुर सिंह और श्री शिवपूजन चौधरी ही सभी बखेड़ोंकी जड़ हैं। इसलिये उनकी खोज कसकर होने लगी। पुलिसको खबर लगी कि दोनों ठेपहाके श्रीसीताराम भगतके यहाँ रातको ठहरते हैं। पुलिसने श्रीसीताराम भगतके घरोंको रातमें ही घेरा। उसने पुलिसको डाकू समझा और वारकर बैठा। फलतः पुलिसने गोली चलाकर उसे मार डाला। बहुत बादको शिवपूजन चौधरी गिरफ्तार हुये और उनको १७ सालकी सजा मिली और जंगबहादुर सिंह पकड़े जाकर नजरबन्द किये गये।

यहाँ गोरे आये अगस्तके अन्तमें पं० उमादत्त शर्मा, श्रीगया प्रसाद, श्रीगोरख सिंह आदिके घरोंको लूटा और जलाया। गोरख बाबूको काफी **महाराजगंज** नुकसानी हुई। बादको रुकुन्दीपुरके चन्द्रदेव बाबूका घर भी जलाया गया। फिर तो लोग डर गये और पुलिसकी चल निकली।

कटेयामें गोरोंने श्रीमहादेव रायके घरको लूटा और जला दिया। उनके जानेके तीन दिन बाद पुलिसने मुक्तासाहकी दूकान लूट ली और श्री राजालाल वगैरहको खूब पीटा।

२८ अगस्तको आकर गोरोंने बसहाँके कालीचरण ठाकुर आदि कई लोहारोंके घर फूँक डाले। हमीदपुरमें दुर्गा सिंह वगैरहके और करतारपुरमें कवलेश्वर राय **बैकुण्ठपुर** वगैरहके घर जलाये गये। ११ सितम्बरको मोहर सिंह पं० शिववचन त्रिवेदी आदिके घरोंपर उनका धावा हुआ और कुछ न कुछ सामान सब घरोंसे ले लिये गये।

मुजफ्फरपुर

मुजफ्फरपुरमें भी गोरे, गुरखे और बलूची १४ अगस्तको ही पहुँच गये जिससे मध्यवर्गीय पुरुषोंपर काफी आतंक छा गया। फौजियोंको गांधी टोपी, खद्दर और गाँधीजीकी तस्वीरसे काफी चिढ़ थी। जिन जिनके पास ये चीजें पाई गईं उन्हें बड़ी बेरहमीका सामना करना पड़ा। बाबू राजेन्द्र प्रसाद वकील और दूसरे-दूसरे कई प्रतिष्ठित व्यक्ति सरे बाजार पीटे गये। कई दूकानें भी जिनमें गाँधीजीकी तस्वीरें लटक रही थीं लूटी गईं।

पारू

एक महीनाके बाद बड़ी सावधानीसे पुलिस थानेमें आई और गिरफ्तारियोंका तांता बंधा। साथ ही साथ लूट और मार पीट भी शुरू हुई। दोकड़ा ग्रामके श्रीगोरखनाथ मिश्र, चकनाके श्रीबदरीनारायण साही, कोल्हुआके श्रीडाक्टर बिन्ध्येश्वरी सिंह, कालिका सिंह और जयमंगल सिंह, बखराके श्रीजानकी जीवन सिंह तथा रेवाड़ीके डाक्टर श्रीरामपरिक्षण सिंहके घर लूटे गये।

गिरफ्तारीके समय मोती छपराके श्रीसरयू सिंह, श्रीहरिहर सिंह, श्रीगजाधर सिंह तथा गरीबाके श्रीमधुमंगल शर्माके सामान लूटे और बरबाद किये गये। श्रीरामेश्वर प्रसाद साही भी लूटे गये और उनके मवेशी जब्त कर लिये गये।

श्रीरामपरिक्षण सिंहको इस बुरी तरह मार लगी थी कि वे एक महीनेके अंदर शहीद हो गये। अत्याचारको बलूची सैनिकोंने थानेपर आक्रमण करते समय सीमापर पहुँचा दिया। श्रीदेवनाथ सिंह, सीताराम मिश्र और बिगन साह घूसे डंडे और हंटरसे बेतरह पीटे गये और उन्हें बूटकी ठोकरें मार बार-बार गिरा दिया गया। श्रीजयनारायण वैष्णवकी छातीपर सैनिक चढ़ गये और बूटसे मशलने लगे। बेचारे वैष्णवजीकी छातीकी एक हड्डी भी टूट गई तौभी वे छोड़े नहीं गये। उन्हें घोड़ेसे बांध दिया गया और तीन मील दौड़ाया गया। अन्तमें सबके सब जेलमें डाल दिये गये।

सकरा

पहले पहल इस थानेमें सड़कपर सैनिकोंका मार्च कराया गया, फिर जहां तहां झूठी फायरकी गई। २२ अगस्तको बखरीमें दो घर जला दिये गये। छिटफुट सड़कके किनारे कुछ और घरोंमें भी आग लगा दी गई। अन्तमें २८ अगस्त आया जबकि कप्तान मैकमिलन एक सौ गोरे लेकर समस्तीपुरके डिपटी मजिस्ट्रेटके साथ मि० डैनबीके बंगलेपर पहुँचे। वहां तेपड़ी गांवका नकशा कुछ जयचन्दों द्वारा पेश किया जा चुका था जिसमें विद्रोहियोंके घरपर निशान भी लगे थे। दूसरे दिन फौज तेपड़ीके लिये रवाना हुआ।

तेपड़ीवालोंको खबर लग चुकी थी कि हमारा गांव जला दिया जायगा। इसलिये वहांके जवान सैकड़ोंकी संख्यामें हरबे हथियारसे लैस गोरोंका सामना करनेके लिये तैयार थे। गांवके दोनों छोरपर नगाड़े रख दिये गये थे जो गोरोंके पहुँचते ही जोरसे बज उठे। जवान आगे बढ़े पर अनुभवी कार्यकर्त्ताओंने उन्हें समझाया कि दुश्मन कहीं मजबूत हैं उनसे लोहा लेना बेकार है। पीछे हटनेमें ही बुद्धिमानी है। गोरे गांवमें घुसे। वे चुने चुने घरोंपर पेट्रोल छिड़क कर आग लगा देते। थोड़ी देरके बाद ही पैंतीस घरोंसे आगकी ज्वाला निकली और सारे गांवको धुआंसे भर दिया। परन्तु गोरे वहांसे नहीं टले जबतक कि रत्ती रत्ती जल-कर मकान खाक न हो गया।

गोरोंके लौट जानेके बाद लोगोंने समझा कि आफत गई। कुछने अपने घरोंको फिरसे आबाद कर लिया पर वे फिर आये और नये नये घरोंको जलाकर चले गये। फिर तो उनका रवैया हो गया ठहर ठहर कर आना और नये-नये घरोंको जलाना। पीछे नेशनल वार फ्रॉन्टवालोंके बीच बचाव करनेसे गोरोंका आना जाना बन्द हुआ।

इस थानेमें पुलिसका अत्याचार कम ही हुआ। हां, फरारोंको खोजनेके सिलसिलेमें श्री सुन्देसरी ठाकुर, दोरिक ठाकुर, राजेन्द्रठाकुर, बिसेसर ठाकुर और किशोरी महतो मारे-पीटे गये। यहांके तात्कालीन दारोगा श्री दीपनारायण सिंहको मारपीटमें रस नहीं मिलता था। पर बादको सूर्यदेव नारायण सिंह आये और जोर जुल्म कुछ बढ़ा। अर्जुन सिंहने तो आते ही एक तरहकी धांधली मचाई। उनने भलेमानसोंकी एक लिस्ट तैयार कर ली और सबोंसे धमका-धमकाकर अपना उल्लू सीधा करना शुरू किया। उनके कारनामोंका एक उदाहरण है ढोलीका एक सुनार जिसकी तीन सौ रुपयेकी गायको उन्होंने पचास रुपयेमें खुलवा ली। सुनार रोता पीटता मि० डैनबीके यहां पहुँचा जिनकी सिफारिशसे वह गाय उसे वापस मिली।

२१ अगस्तको कलक्टर, मजिस्टर, फौजी अफसर और बलूची सैनिक धमाधम मीनापुर थाना पहुँचे। छीतरपट्टी, गंजसेन्टर और महदेइया नामके गांवोंको

मीनापुर

उन्होंने फूँक दिया। महदेइया तो पूरा-का-पूरा जल गया पर बाकी दोनों गांवोंका एक-एक घर ही जला। आग लगानेके बाद इन सबोंने लोगोंको लूटना शुरू किया। जिस किसीके घर पहुँचे बिना कुछ स्पष्ट कारण बताये घरमें

घुस गये और उसका तिनका-तिनका इस तरह लूट लिया कि घरवाला दर-दरका भिखारी हो गया। श्री रीझनसिंह, श्री साधुशरणजी, श्री बुनीलाल भगत, श्री बुलाकीलाल साह, श्री जंगबहादुर सिंह, श्री रामसिंहासन सिंह तथा श्रीमथुरा प्रसाद सिंह ऐसी लूट खसोटके शिकार हुए।

पुलिसने इस थानेको काफी चूसा। अभियुक्तोंकी खोजमें संगीनोंसे लैस होकर पुलिस अफसर जहां पहुँचते रुपयोंकी झरी लग जाती। जिन्दा दारोगा जला दिया गया था इसलिये लोग खूब आतंकित थे। अभियुक्तोंकी सूचीसे निकलनेके लिये सब कुछ करनेको तैयार थे। हाँ, कितने ऐसे भी थे जो पुलिसके सामने तने पर उन्हें जेलकी हवा खानी पड़ी। औरोंको पुलिस परमात्माकी पूजा करनी ही पड़ी। जिन्हें कुछ नहीं था उन्हें बकरे बकरियां ही चढ़ानी पड़ीं। शुरू-शुरूमें मुद्दालहको लिस्टमें पांच सौ छिहत्तर लोग थे। बादको हुए बाईस और फिर बढ़कर हो गये एकासी। इस उतार-चढ़ावका रहस्य घूसखोरी ही समझ सकती है।

दारोगा हत्याकांडका मुकदमा लंबे अरसे तक चला जिसके दरम्यान पुलिसने अपनी मुट्ठी खूब गरम की। अन्तमें जुबां सहनीको फांसी हुई और दस व्यक्तियोंको आजीवन कारावासका दंड मिला; जिनके नाम सर्वश्री रामधारी सिंह, राजदेव सिंह, सुवंश झा, बिहारी सिंह, रूपन महतो, चुल्हाई कोयरी, दुलार सिंह, गंगा दुसाध, रिझावन राय और चरीतर राय थे।

करीब दो महीने तक कटरा थानेपर वार करनेकी हिम्मत अंगरेजी सरकार नहीं दिखला सकी। अन्तमें सत्ताइस अक्तूबरको एक बड़ी ताकत लेकर सरकार वहाँ पहुँची। कटरा कहते हैं कि उस पहुंचनेवाली सरकारी गिरोहमें मुजफ्फरपुर, दरभंगा और भागलपुरके कलक्टर, तीन एस० पी० कई दारोगा और इन्सपेक्टर और पाँच सौ फौजी सिपाही थे। अस्त्र-शस्त्रसे लैस इस सैनिकदलको देख लोग घबड़ा गये पर सभी शाँत और संगठित रहे। सरकारी दल थानेमें पुलिसको बैठा लौट गया।

फिर फौज लोगोंपर सब तरहके अत्याचार करने लगी। विद्रोहियोंके अखाड़ेपर धावे होने लगे। लोगोंके घर लूटे और बरबाद किये जाने लगे। धनौर तो सरकारका कोपभाजन शुरूसे था ही। उसपर सैनिकोंका हमला हुआ। श्रीमहावीर सिंह इस तरह पीटे गये कि अरसे तक इन्हें अस्पतालमें पड़े रहना पड़ा। फिर बेदौल आश्रम लूटा गया। पुस्तकालयकी किताबें फाड़ दी गईं और अशोक रासायन शालाके लगभग ढाई हजारकी दवायें और अन्य सामान नष्टकर दिये गये।

वहांसे सैनिक गाँवकी ओर चले। रास्तेमें जो मिला उसे संगीनसे घायल किया। एक जगह लोगोंकी भीड़ देख गोलियां भी चलायीं जिसके फलस्वरूप बीगन तिवारी धरखन ठाकुर, महाबीर ठाकुर, रामदत्त राय, लोटन तिवारी और राजेश्वर तिवारी घायल हुए।

सैनिकोंकी ऐसी हरकतसे वहाँके नवजवान अत्यन्त उत्तेजित हो उठे और उनपर टूट पड़े। कुछने हैट कुछने कपड़े और कुछने बन्दूकें छीन लीं। एक बुढ़ियाने एक सैनिकपर ऐसी ईंट चलाई कि वह बेहोश होकर गिर पड़ा। दूसरीने ईंटकी चोटसे दूसरे सिपाहीका ठेहुना फोड़ दिया। कुछ लोगोंने बीचमें पड़कर सैनिकोंकी सारी चीजें वापस दिला दीं पर सैनिकोंको सन्तोष नहीं हुआ। वे श्रीराम प्रसाद तिवारीके घर घुसना चाहते थे पर तिवारीजी कहते थे कि हम हवेलीमें हरगिज घुसने न देंगे। हुज्जत होने लगी। एक सैनिकने गोली चला दी। परिमाण स्वरूप राम प्रसादजी वहीं शहीद हो गये और रामनारायण तिवारी दो दिन बाद मुजफ्फरपुर अस्पतालमें चल बसे। इसी सैनिकदलसे तेजौल निवासी श्री अयोध्या सिंहको गोली लगी जिन्हें तत्काल वीर गति मिली।

तीन चार सितम्बरसे ही साहबगंजमें सैनिकोंका दौरा होने लगा। सड़कके किनारेके घर लूटे जाने लगे और घरवालोंकी गिरफ्तारी शुरू हुई। २१ सितम्बरको

साहबगंज ६ लॉरियोंमें गोरे काले सैनिक डिपटी मजिस्टर मि० बनर्जीकी अध्यक्षतामें साहबगंज आये। उनने मनाइन स्कूल और डाक-बँगलेकी तलाशी ली। श्री बिलासराय मारवाड़ीसे जेवर और रुपये झटक लिये और सर्वश्री मोहन साह और महेन्द्र साहकी दूकानें लूटीं। फिर उनने श्री शंकरलाल, सोहनलाल आदिको गिरफ्तार किया और बहुतोंको बेरहमीसे पीटा। बादको शंकरलालकी तिजोरी तोड़ी गई और असर्फी साहकी दूकान लूटी गई। वर्लीके श्री रामप्रसाद सिंहका मकान कई बार लूटा गया और श्री चतुरी साह, असर्फी साह तथा महेन्द्र साहको बड़ी मार पड़ी।

लगभग ७० आदमी गिरफ्तार होकर जेल गये जिनमें १९ को ही सजा पाकर रहना पड़ा। २८ फरार थे जिनमें एक श्री बैद्यनाथ सिंह स्वर्गवासी हो गये और बाकी धीरे-धीरे पकड़ लिये गये।

१६ अगस्तको गोरोंका एक दल सीतामढ़ी पहुँचा। शहर डर गया। लोगोंने चुपकेसे अपने मकानोंपर फहराते हुये राष्ट्रीय झंडाको उतार लिया और दुबक

सीतामढ़ी

रहे। फौज वापस चली गई। पर फिर २४ अगस्तके बाद उसकी लॉरियां दिनादिन पहुँचने लगीं। मुजफ्फरपुरके एडिशनल कलक्टर मि० बन गोरोंको लेकर सीतामढ़ी पहुँचे। उनने कांग्रेस कमिटीका दफ्तर और खादी भण्डारके मकान फूँक दिये। बाबा नरसिंह दासकी कुटिया, ठाकुर रामनन्दन सिंह तथा श्री मोहन सिंह आदि व्यक्तियोंके मकान भी उनने जला डाले।

रेवासीमें सड़क काट दी गई थी। गोरोंकी लॉरी आती आती वहां फँस गई। वहांके कार्यकर्त्ता जमुना महथाकी खोज होने लगी। पर वह नहीं पाये गये। अपने घरपर मेथुर मंडल मिले जो गोरोंको देखते ही मारे डरके चिल्ला उठे। तुरत बन्दूक सीधी गई और मेथुर मंडलकी आवाज पूरी निकल भी न पाई थी कि हमेशाके लिये बन्द हो गई।

इस तरह आग लगाती गोली बरसाती गोरी फौज आई और चली गई। तब पुलिस भाई आये और आतंकित जनतासे रुपये ऐंठना शुरू किया। श्री धनुधारी मिश्र इस कलामें बड़े पटु निकले और गहरी रकम मारी।

घूस न देनेकी वजहसे बखरीके महन्थ श्री रामकृष्णदासका मठ लूट लिया गया। रेडियो, बन्दूक, गहना और बहुतेरे सामान मठसे उठा ले जाये गये। मन्दिरके पुजारीका चमड़ा मारते-मारते उधेड़ दिया गया। महन्थजी बड़ी कोशिश पैरवीके बाद जेल जानेसे बच गये।

मेजरगंजमें सैनिकोंने इतना आतंक फैलाया कि लोग इनके आगमनकी खबर पाते ही मकईके खेतोंमें छिप जाते। इनने अम्बाके पं० मौजे झाको जो रेलवे

मेजरगंज

लाइनसे गुजर रहे थे, गोली मार दी। कार्यकर्त्ताओंकी गिरफ्तारीके सिलसिलेमें रातको घूमते हुए उनने नरहाके श्री सुखराजतको गोली मार घायल कर दिया। बेचारे छः महीनेके बाद उसी चोटकी पीड़ासे स्वर्ग सिधारे।

रघुनाथपुरके नन्नूमियांके शहादतकी दिलचस्पी कहानी है। नन्नूमियां योगेन्द्र चौधरीकी नौकरी करते थे और मेजरगंजके डेरेपर रहते थे। हथियारबन्द सिपाही वहां आये और डेरेमें घुसने लगे। योगेन्द्र चौधरी फरार थे। नन्नूमियांने राह रोककर कहा मालिक नहीं हैं; उनकी गैरहाजिरीमें आपलोग घरमें घुस नहीं सकते। उनकी बात सुनकर वे सब ऐसे पाजामेसे बाहर हुए कि एकने दसो दम गोली छोड़ी और नन्नूमियाँको जख्मी कर दिया और बेचारे बड़ी तकलीफ सहकर दो महीनेके बाद मर गये।

मुबारकपुरके श्री रीझन सिंहको पुलिसने पीटते पीटते अधमरा कर दिया। उसने लूट पाट भी कम न किया। नरहाके बाबू शिवध्यान सिंह और ठाकुर रामपरीक्षन सिंहके घर लूटे। फाजिलमें तो उनने घरोंको लूटकर तोड़-फोड़ भी दिया।

रीगा सूगर फैक्टरीके मि० विन्सेन्ट तो बाजाब्ता सैनिकोंके कमान्डर बन गये थे। गोरी फौज फैक्टरीमें ही ठहरी हुई थी। इस फौजको लेकर विन्सेन्ट साहब रात दिन कार्यकर्त्ताओंके घरोंपर छापा मारते रहे और जनताको तबाह करते रहे।

दारोगा अर्जुन सिंह थाना छोड़ भागे तो जरूर पर धमकाते गये कि वह फौज लेकर तुरत आयंगे और थाने भरको खाकमें मिला देंगे। पुपरी रोज खबर पहुंचती पुपरी कि अर्जुन सिंह आ रहे हैं और उस उस गांवको फूँक देंगे। उनके साथ मिलिटरी आ रही है जो किसीकी एक इज्जत उठा न रखेगी। इस इलाकेमें मिलिटरीकी बड़ी बदनामी फैल रही थी। एकबार इसकी बेजा हरकतकी शिकायत एस० डी० ओ० हरदीप सिंहसे की गई। लेकिन उनने कहा कि अभी क्या हुआ है? जब नौ महीनेके बाद घर घरसे गोरे गोरे बच्चे, निकलेंगे तब लोगोंको मालूम होगा कि मिलिटरी आई थी। एस० डी० ओ० की इस उक्तिसे लोग क्षुब्ध थे और मिलिटरीका सामना करनेकी तैयारीमें लगे थे।

२३ अगस्तको खबर फैली कि कल अर्जुन सिंह दारोगा मिलिटरी लेकर बाजपट्टी और पुपरी वगैरह लूटने आ रहे हैं। हर तरहसे उनका सामना करनेको लोग तैयार हो गये। जगह जगह सड़कें काटकर और पेड़ गिरा कर बिलकुल जाम कर दी गयीं। फिर लोग बनगांव चौकपर अर्जुन सिंहकी घातमें बैठ गये। लगभग दो बजे मोटर आई और सड़क जाम देख रुक गई। लोग चौकन्ने थे ही आंख मूँदे उनकी ओर दौड़ पड़े। मोटरसे आवाज आती रही कि हटो! भागो! रास्ता साफ करो और लोग उसपर लाठी पीटते रहे। अब मोटरवाले स्थिर न रह सके। उतर कर एकने राइफल संभाली पर लाठीकी कड़ी चोट खाकर हाथने राइफल डाल दी। पलक मारते लोग उसपर टूट पड़े। शोर हुआ 'हरदीप बाबू हैं! एस० डी० ओ० साहब हैं।' पर सुनता है कौन; लाठी और भाले चलने लगे। साथ बैठे थे पुलिस इन्सपेक्टर मूरतझाजी और दो कनस्टबिल श्रीश्यामलाल सिंह और श्रीदरवेशी सिंह। तीनों एस० डी० ओ० हरदीप नारायण सिंहको बचाने दौड़े और उन्हें गिरते देख अपनी जान लेकर भागे। तुरत दोनों सिपाही तो पकड़े गये

और मौतके घाट उतारे गये। हां ! सूरतझाजीको मौका मिला और वे सड़ककी बगलके झोपड़ेमें छिप गये। क्रोधान्धोंने झोपड़ेमें आग लगाकर उन्हें बाहर निकाला और उनके आरजू मिन्नतपर कान न दे बड़ी बेरहमीसे उन्हें मार डाला ? फिर लाशोंको गायब कर देनेकी योजना बनी और लाशें इकट्ठी की जाने लगीं। एस० डी० ओ० की लाश अपनी जगहपर न थी। लोगोंमें सनसनी फैल गई और लाशकी तलाश होने लगी। तुरत एस० डी० ओ० साहब कुछ ही दूरपर बड़ी कठिनाईसे खिसकते हुये पाये गये। फौरन उन्हें खत्म कर डाला गया। फिर सभी लाशोंको पासके सोतेमें छिपाकर लोग तितर बितर होगये। लोगोंको यह जाननेकी भी फुरसत नहीं थी कि एस० डी० ओ० दलका एक ड्राइवर बच गया है जो उस हत्याकाण्डकी खबर देने सीतामढ़ी पहुँच गया है।

इस हत्या काण्डने लोगोंके खूनको सर्द कर दिया। एक सरकारपरस्त एस० डी० ओ० होनेके अलावे हरदीप बाबूकी और कोई खास शिकायत न थी। जोर जुल्म करके आन्दोलनको दबानेकी चेष्टा करनेवालोंमें उनका नाम नहीं लिया जाता था। इसे वह जानते थे। इसलिये बिना किसी तैयारीके बनगांव किसी तहकिकातमें आ रहे थे। श्रीसूरतझाजीके खिलाफ तो और कम शिकायत थी। इस हत्याका कार्यकर्त्ताओंको दुःख हुआ और वे कुछ घबड़ाये फिर तो जनताका आतंक सीमा पार कर गया और वह घर बार छोड़ भागने लगी। पुलिस हमारे भाई हैं—के नारेको पुलिस पहले चुप चाप सुन लेती थी किसनोंपर तो उनका असर भी पड़ता था। पर अब उस नारेको सुन वह चिढ़ने लगी। उनका मन फेरनेमें बनगांव हत्या काण्डका बड़ा हाथ है। उनकी राष्ट्र भावना ऐसी न थी जो उन्हें समझा देती कि हरदीप बाबू बिलकुल धोखेमें मारे गये और उनकी हत्याकी जबाबदेहीसे बचनेके लिये और हत्यायें हुईं; जनताकी विचार धाराका सम्बन्ध इस काण्डसे न था। पुलिस और अन्यान्य अफसरोंमें जो हमदर्द थे उनने भी मान लिया कि जनता बदल गई। और जनताने भी जान लिया कि वे सभी बदल गये।

२५ अगस्तको ग्यारह बजे अर्जुन सिंह, एस० पी० और कलक्टरके साथ ६ लॉरियोंमें फौजियोंको लेकर बाजपट्टी आ धमके। आपने लाशोंका पता लगाया, फिर पुपरीमें १६ और बाजपट्टीमें २५ आदमियोंको गिरफ्तार किया। लगे हाथ लालचन मदनगोपालकी दूकान लूटी। इनके दो लड़कोंको गिरफ्तार किया और तीसरे लड़के देवकीनन्दनको बेतरह मारा और आंखके पास संगीनसे घायल कर

दिया। दूसरे दिन फिर फौजियोंकी दो लारियां पुपरी पहुँचीं। हाटका दिन था। फौजियोंने लोगोंपर अन्धाधुन्ध गोलियां चलाईं। चोरौतके अदई कबारी वहीं ढेर हो गये और बहेड़ाके सहदेव साह और महावीर गोप अस्पताल जाकर मरे।

इस गोली काण्डसे पुपरी बाजार कांप उठा और अनगिनत लोग जान माल और इज्जतकी रक्षाके लिये रातों रात नेपाल भागने लगे। आसपास उजाड़ होगया।

३ सितम्बरको डी० आई० जी० और कलक्टर गोरे लेकर आये और जहां हत्याकाण्ड हुआ था वहां उनने आग लगा दी। ११७ घर धू धू करके जल गये। इन घरोंमें ४८ घरोंकी मालियत हजारसे ऊपरकी थी। फिर इनने बाजपट्टी और मधुबनके बाजार लुटवाये कुछ लोगोंने लुटेरोंका हाथ पकड़ना चाहा, बस, इन कायदे कानूनके पुतलोंने गोली चलवा दी जिससे जानकी प्रसाद और जयकृष्ण साहकी माताकी तत्काल मृत्यु हो गई।

५ सितम्बरको अर्जुन सिंह फौज लेकर आये और नारायण प्रसाद, कमला प्रसाद, गौरीशंकर, सीताराम सर्राफ, नन्दलाल शर्मा आदिकी दूकानोंसे हजारोंका माल लुटवा लिया। अंगरेजी सरकारको अपना सगा समझ चोर डकैतोंने सर उठाया और एक तरहसे अराजकता फैल गई। गांव गाँवके स्त्री बच्चे गाँव घरके बाहर पेड़ोंके नीचे, मकई या ऊँखके खेतोंमें दिनभर छिपे रहने लगे। ७ सितम्बरको अर्जुन सिंहने फिर थानेमें आसन जमाया और पुराने तथा प्रसिद्ध कांग्रेसी श्रीरामविहारी महथा उसके कृपाभिखारी बने। चोरौतके पण्डित केदार पाठक भी उसकी ठकुरसुहाती करने लगे। फिर तो गोरोंकी मददसे अर्जुन सिंहने थानेभरको पीसना शुरू कर दिया। पुपरीमें १२ आदमियोंको गिरफ्तार किया जिनमें एक थे श्रीराजनारायण मिश्र जिनने हेड गुरुआइ छोड़ कर आन्दोलनमें भाग लिया था। फिर तो यह रोज कोई न कोई गांव जाते घर लूटते, लोगोंको गिरफ्तार करते और बड़ी बेरहमीसे मारते पीटते।

बाजपट्टी हत्याकान्डमें श्री रामबुझावन ठाकुर अव्वल मुद्दालेहमें से थे। आप फरारीकी हालतमें ही स्वर्ग सिधारे। पर रामफल मंडर पकड़ लिये गये और आपको फांसी हुई। औरोंके साथ साथ आप भी नेपाल भाग गये थे परन्तु वहां दस दिन रह कर वापस आगये। लोगोंने कहा फिर लौट जाओ; तुम्हारी जानका खतरा है। आपने जवाब दिया—"तू सब एतना बड़ डेराइ छ; फांसी अगर परब त हमही न। चोरी न कैलेछी जे हमरा लाज है।"

जिन्हें फाँसी लटका दिया गया !
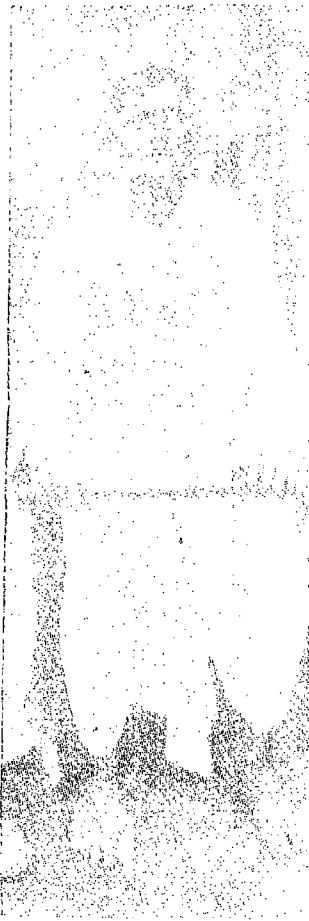
शहीद रामफल मण्डल,
बनगाँव (मुजफ्फरपुर)

सिद्धुपुर (मुजफ्फरपुर) के विद्यार्थी
रेलवे लाइन पर मार्च कर रहे हैं
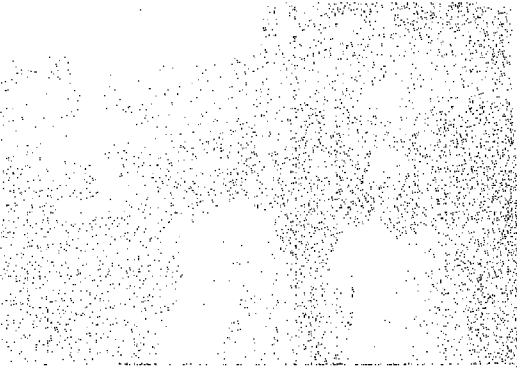
एक राजबन्दीका घर जला दिया गया !
सीतामढ़ी (मुजफ्फरपुर)
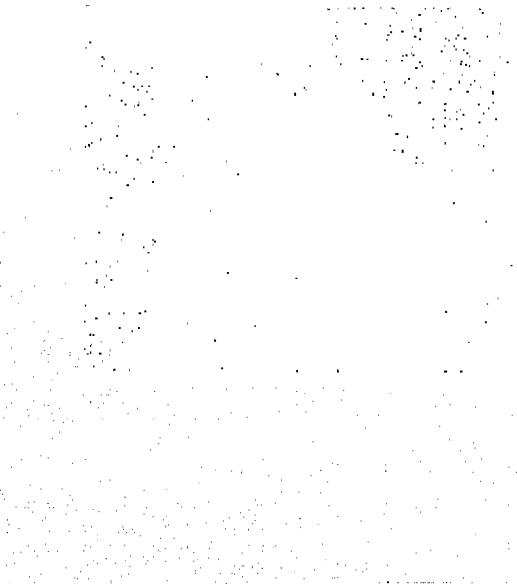
उसी राजबन्दी का दमन-
पीड़ित परिवार,
सीतामढ़ी (मुजफ्फरपुर)

मुजफ्फरपुरके विद्यार्थी,
सरैयागंजमें मार्च करते हुए
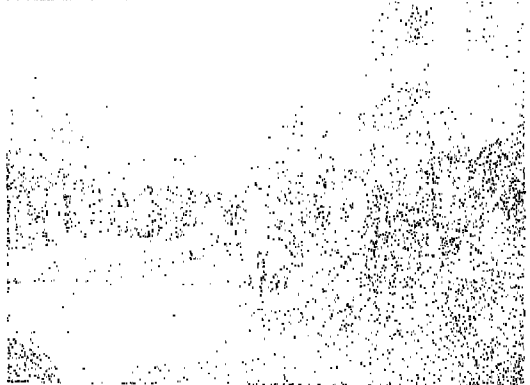
१६ अगस्तको जूनियर दारोगा अभयनन्दनजीके साथ फौजियोंकी एक टुकड़ी बेलसंड आयी। २१ अगस्तको ग्यारह बजे वे सब सदपुर पहुंचे। कार्यकर्त्ता शिविरमें बेलसंड भगदड़ मच गई। श्री हरिहर प्रसाद सिंहने हटने या भागनेसे साफ इनकार कर दिया। दारोगाने उन्हें पकड़ कर जमीनपर पटक दिया और सीटी बजाई। गोरे दौड़ आये जिनको अभयनन्दनजीने कहा—"यही हरिहर बाबू हैं, थानेके एक मात्र नेता—१५००० की भीड़ लेकर थानेपर रेड करनेवाले।" गोरोंने राइफलके कुन्दोंसे हरिहर बाबूको मारना शुरू किया। वे बेहोश होकर गिर गये और तब घसीट कर सड़कपर लाये गये। वहां जब होश हुआ तब फिर उनपर कुंदों, गोरखोंकी भुजाली और बूटोंके ठोकरकी मार पड़ने लगी। वे मृतप्राय होगये और लॉरीपर लाद कर अपने घर अथरी लाये गये। राहमें भी वे खूब पीटे जाते रहे और बेहोश हो जानेपर नादके पानीमें डुबाय जाते रहे। घरपर पहुंच कर हरिहर बाबूने गिड़गिड़ा कर कहा—मुझे अब गोली मार दो।" सुनते ही सिपाहियोंने उन्हें पटक दिया और उनकी छातीको इस तरह दबाया कि मुंहसे खून निकल आया। गोरे उनके मुंहपर घूसेबाजी करने लगे; कहते—यह जापानसे मिला हुआ है, पांचवें दस्तेका है।

अभयनन्दनजीने हरिहर बाबूके भतीजा श्री सुधीश नारायणको भी गिरफ्तार कर लिया। उसकी जेबसे गान्धीजीकी तस्वीर निकाली और झंडा निकाला जिन्हें बूट तले मसल डाला। फिर सबोंने कुन्दोंसे उसे खूब मारा और ब्लेडसे उसके कानके चमड़ेकी उपरली परत छील डाली।

सदपुरसे बेलसंड जाते समय उन सबोंने बहुतोंको मारा पीटा और लूटा। फिर वे सब सीतामढ़ी लौट गये।

उनके अत्याचारसे जनता और उत्तेजित हो गई और २६ अगस्तको थानेपर चढ़ दौड़ी। थानेमें कोई सिपाही न था। हां, सरकारके कागजात वगैरह तो थे ही। जनताने सबोंको जला दिया और थानेको खूब तहस-नहस करके लौट आई।

३० अगस्तकी संध्याने छपरेकी वीरताको कहानी खूनकी स्याहीसे लिखी है। छपरा कार्यकर्त्ताओंका केन्द्र था जहांसे आन्दोलनके संचालनकी योजनायें बना करता। उस दिन उन सबोंकी बैठक हो रही थी कि लॉरियां छपरा बाजार पहुँचीं। जनताने रास्ता रोक लिया। कार्यकर्त्ता भी उसकी दिलेरी देख कंधेसे कंधा भिड़ा खड़े हो गये। सैनिकोंने न आव देखा न ताव; गोली बरसानी शुरू कर दी। हताहत गिरने लगे पर जनता डटी रही। सैनिकोंने लाशें लादीं और चलते बने। जो तत्काल शहीद बने उनकी

संख्या थी दस और नाम सर्वश्री जयमंगल सिंह, शुकदेव सिंह, भूपन सिंह, मौजद सिंह, वंशी ततमा, परसत साह, सुन्दर महरा, छट्टू साह, बलदेव सूड़ी और शूकन लोहार। सख्त घायलोंमें उल्लेखनीय थे सर्वश्री बिकाऊ कुर्मी, बुधन कहार, बुझावन चमार, मुक्ष सिंह, राजेन्द्र धानुक, गुगुल धोबी, पूजन सिंह, गुलजार सिंह, रामाश्रय सिंह, बंगाली महतो, मौजे सूड़ी, चुल्हाई ठाकुर, रामलोचन सिंह, रामदेव सिंह और रामपुकार ततमा।

१ ली सितम्बरको सदलबल थानेदार आये और थानेमें बैठ गये। उस दिनसे लूट-पाट मार-पीटका जमाना शुरू हुआ। रामदेव सिंहजी और श्यामनन्दन सिंहजीके घरके सामान लूटे गये। डुमराके श्री प्रदीप नारायण सिंह, बेलसंडके बनारसी मारवाड़ी, रामप्रसाद सिंह, नन्दा जालान, पचड़ाके श्री मुसाफिर सिंह तथा सरयाके श्री ब्रह्मदेव नारायणको पुलिसने लूटकर कंगाल बना दिया। थानाको सहायक भी मिल गये। परसौनीके राजा साहबने फरार श्री शिवनन्दन महतोको पकड़वाकर खूब पिटवाया और पुलिसके सुपुर्द किया। छपराके श्री यमुना प्रसाद सिंहने बाहरसे आये हुये मस्ताना नामधारी स्वयं-सेवकको पुलिससे पकड़वा दिया। उसपर अमानुषिक अत्याचार किया गया। एक सिपाही उसकी छातीपर चढ़कर जोर अजमाने लगा और दूसरा उनके गुदा-मार्गमें छड़ी घुसेड़ने लगा।

बैरगनियां थानेमें २२ अगस्तसे दमन शुरू हुआ। श्री रामप्रताप ठाकुर लोहार, मथुनी प्रसाद, श्री युगलकिशोर, श्री देवकीनन्दनके घरपर गोरे और काले सैनिकोंने

बैरगिनियां पुलिस सहित धावा किया और मनमाना लूटा। पिपराढ़ीके पं० विश्वनाथ अवस्थी तथा उसी थानेके श्री जंगबहादुर शर्माके घरोंकी तलाशी हुई और लूट-पाट भी। घूसका बाजार भी बहुत गरम रहा जिससे पं० गंगाधर झा और श्री रामबरण सिंह वगैरह जो पुलिसकी नाकके बाल बन रहे थे फायदा उठानेसे न चूके।

मार-पीट भी बेहद हुई। चश्मदीद गवाह डा० रामप्रसाद विश्वकर्माका कहना है कि कुँवर सिंह कनस्टबिलके साथ सशस्त्र गोरोंके दलने सड़कपर जाते हुये एक दयाली साह नामक व्यक्तिको पकड़ लिया। उससे कुछ मुद्दालहोंके नाम पूछे गये जिसका जवाब वह नहीं दे सका। इसीपर बन्दूकके कुन्दोंसे उसे इतना पीटा गया कि हफ्ते भर कराह कराह कर उसका प्राण पंछी उड़ गया।

इस थानेमें लोगोंको अहिंसाका खूब खयाल रहा। एक घटना है, रक्सौलसे एक गोरा मालगाड़ीमें बन्द होकर रीगा मिलमें छिपने जा रहा था। रक्सौलमें उसपर काफी

मार पड़ी थी। जब मालगाड़ी बैरगनियां आकर रुकी तो मुंहा-मुंही खबर फैल गई कि एक डब्बेमें गोरा बन्द है। बौखलाई हुई जनता स्टेशनपर जमा हो गई और अपनेपर किये गये जुल्मका सारा बदला उस गोरेसे चुका लेनेके तैयार दीखी। ऐन मौकेपर श्री ब्रजनाथ लालजी, सभापति थाना कांग्रेस साथी सहित वहां पहुँचे, लोगोंको शान्त किया और बड़े इन्तजामके साथ गोरेको रीगा पहुँचवा दिया।

एक और घटना यहां हुई जिससे हल्की सनसनी फैली। श्री युगलकिशोरजी मोतिहारी जेलसे सीतामढ़ी जाते वक्त पुलिसकी आंखमें धूल झोंक निकल गये और एक अरसेके बाद पकड़े गये।

सुरसंड थानाकी पुलिस दम साधे रही, जनता और कार्यकर्त्ताओंको सब कुछ करने दिया। पर ज्योंही ८ सितम्बरको अमरीकन सैनिक पहुँचे उसने अपना असली रूप दिखलाया। सर्वश्री जयनारायण लाठ और बलराम तिवारीकी हजारोंकी सम्पत्ति अर्जुन सिंह दारोगा लूटकर ले गये; और भी कितने लूटे गये। दीवालीके रोज कलक्टर और एस० डी० ओ० खुद हरेक फरारके घर फौज लेकर गये और उनकी आंखों आगे फरारोंके घर लूटे गये। सिर्फ एक श्री रामखेलावन साहके घरसे ७००) रु० के गहने लूट लिये गये।

सुरसंड

आगलगी और मार-पीटका अनुभव इस थानेको भी हुआ। श्री रामलखन गुप्तका मकान जलाया गया। श्री बलराम तिवारी और उनके पुत्र श्री पवित्र तिवारीको अर्जुन सिंह पकड़ कर ले गये और थानेमें बड़ा मारा-पीटा और अपमानित किया। सुरसंड थानेमें भी अर्जुन सिंहका अत्याचार और जगहोंकी तरह ही अपनी सीमापर पहुँच जाता अगर श्री रा० बा० महेश्वर प्रसाद नारायण सिंह उनके अत्याचारोंका घोर विरोध नहीं करते।

२५ सितम्बरको थानेदार और भुतहीके रजिस्टरार सशस्त्र सैनिकोंके साथ थाना पहुँचे। महन्थ रघुनन्दन दासका निर्दोष चेला लाठीसे बेतरह पीटा गया। जुलुम सिंहकी दाई भी मार मार कर बेहोश कर दी गई। भुतहीमें श्री भोला महतोका घर लूटा गया।

सोनबरसा

२० अगस्तको अमरीकन सैनिक लेकर एस० डी० ओ० और पुलिस इन्सपेक्टर थानेमें पहुंचे। उसी दिन उनने मांझ पकौनीके श्री रामवृक्ष साहु, श्री सीताराम साहु आदि ७ व्यक्तियोंके घरपर धावा किया और २५ हजारका माल लुटवा दिया। २४ अगस्तको जमादारके साथ एक लारी अमरीकन सुतिहारा आये और श्री राजदेव सिंह और उनके भाइयोंका सामान लूट लिये। २ सितंबरको कांग्रेस कमिटीका

बेला

मकान और कोइरिया पिपराके बा० सोनकी सिंह तथा परमेश्वर सिंहकी बखारियां और मवेशीके घर जला दिये।

ठीक दीवालीकी रातको लूटते पाटते श्री गणेश प्रसाद सिंह देशी-विदेशी सैनिकोंको लेकर सिरसिया पहुंचे और डा० रुद्रदेव नारायणको ठोकर और राइफलके कुन्दोंसे मारने लगे। उनलोगोंने बेदम करके उन्हें एक तरफ गिरा दिया, फिर उनकी तिजोरियां तोड़ीं और सारा धन लूट ले गये। उसी रातको मनपौरा ग्राममें एक गर्भवती स्त्री सामने पड़ी। वह उन्हें गहना देनेमें हिचकिचाई, पर उसपर मार पड़ने लगी और इतनी मार पड़ी कि उसका गर्भपात होगया।

३ सितम्बरको एडिशनल कलक्टर बन साहब ३८ गोरोंको लेकर महुरिया पहुँचे। शिवहर थानेके दारोगा महाविद्या प्रसादजी भी साथ थे। कोलावका पुल दुरुस्त नहीं कर शिवहर कनेकी वजहसे सभी पैदल बरसातके जमे हुये पानीको पार करके ठाकुर नवाब सिंहके मकानपर पहुँच गये और ठाकुर साहबकी खोज की, पर ठाकुर साहब नेपाल चले गये थे मिलते कैसे? क्रोधमें आकर बन साहबने नवाब सिंहजीके मकानात जला डाले और उनका माल असबाब लूट लिया। फिर वह सदल बल शिवहरको रवाना हो गये।

शिवहरमें बन साहब और गोरे सैनिकोंका शिवहरके राजाने दिल खोल कर स्वागत किया। पर जब गोरा दल बिदा हुआ तो अपने साथ उनके लड़के राजकुमार महेशनन्दन सिंहको लेता गया, पर बादको छोड़ दिया। मुक्ति पाकर राजकुमार महेशनन्दनने राजकुमार उमेश नन्दनसे सलाहकी और हरबे हथियारसे लैस अपना जत्था निकाला रातको पैट्रोमैक्स जलाकर, तारीख १० सितम्बरको। आगे आगे दो पट्ठे हाथी, फिर बन्दूकची सवार जिनके पीछे भाले बरछेवाले घुड़सवार और तब पैदल लठैत और कितनी बैलगाड़ियां। राजकुमार महेशनन्दन साहबके कमरसे बिगुल लटक रहा था और आप घोड़ेपर सवार सारे जत्थेका नेतृत्व कर रहे थे। जत्था ज्योंही ठा० नवाब सिंहके गोलेके पास पहुंचा, बिगुल बज उठा। सभी गोलेमें घुस मकान बरबाद करने और मकानके सामान लूटने लगे। गोला तो नामका रह गया था। दरअसल अब वह धर्मशाला जैसा था रातभरमें उसका मकान ढाह दिया गया और उस जगह राजकुमारने मजदूरोंसे जबरदस्ती अपना मकान बनवाना शुरू कर दिया। वहांसे जत्था आगे बढ़ा और बिगुलकी आवाज सुन श्रीशंकर उपाध्यायकी दूकानपर रुका। दिन दहाड़े दूकान लूट ली गई और उसका छप्पर हाथियोंने नोच नोच दिया। फिर हाइ स्कूलका नम्बर

आया जो तोड़ फोड़कर जला दिया गया। स्कूलमें छिपे थे शंकर उपाध्यायके भाई जो स्कूल जलता देख निकल बाहर हुये। राजकुमारने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। बादको राजकुमारने ज्वर पीड़ित तथा शय्याशायी श्रीकीर्त्तिनारायण सिंहको पकड़वाया, वह थानेके प्रधान कांग्रेस कार्यकर्त्ता थे। उन्हें बड़ी बेरहमीसे पीटा गया। उनकी आँखमें सख्त चोट आई और अपना लहू-लुहान देह लेकर वे बेहोश गिर पड़े। उनके तीमारदार श्रीकिशोरी सिंह और श्यामलाल सिंहपर भी खूब मार पड़ी। सबोंको लाकर राजकुमारने अपने मकानकी एक कोठरीमें बन्द कर दिया। आपने पुस्तकालय भी जलाया और लुटवाया, फिर कुछ विश्राम करके आपका जत्था श्रीकमलेश्वरीनन्दन सिंहको लूटने निकला। पर वहां रा० ब० महेश्वर प्रसाद नारायण सिंह आये हुये थे। आपने राजकुमारको काफी फटकारा और जनताको उनसे भिड़ जानेके लिये उत्साहित किया। फिर तो जनता आवेशमें आगई। खदेड़ कर राजकुमार और उनकी सेनाको घर घुसा दिया और उनका रामबाग जला दिया।

इसी दिन यानी १२ सितम्बरको दारोगा महाविद्या प्रसाद साथी सहित गोरोंको लेकर महुअरिया पहुँचे। आतंक जमानेके लिये उनने गोली चलायी और श्री अनिरुद्ध सिंह शहीद हो गये। फिर ठाकुर रामनन्दन सिंहका घर जलाया गया और समूचा महुरिया बाजार लूटा गया। लोग आतंकित हो गये। और बहुतोंने नेपालकी राह ली।

गठियासे पीड़ित कुमार रत्नेश्वरीनन्दन सिंह २० अगस्तको पकड़ लिये गये थे। मि० बन गोरोंको ले उनके घर जा धमके और भाई-भतीजोंको बन्दूक, रेडियो सहित गिरफ्तार किया। सबोंको पानी हेलवाकर कैदीके रूपमें रीगा टेनब्रुकके पास पहुँचाया गया। वहांसे बनगांव होते हुए जिसे इनकी आँखोंके सामने जला दिया गया गोरे इन्हें लेकर मुजफ्फरपुर पहुँचे। कुमार साहबके लड़केपर वारंट था जिसकी तलाशमें सीतामढ़ीके डिपटी मजिस्ट्रेट महंथ दर्शनदासके यहाँ पहुँचे और जो सामान हाथ लगा लेकर चलते बने।

गिरफ्तारीके समय मारपीट भी जहाँ तहाँ खूब हुई। मोनहनपुरके कांग्रेस कार्यकर्त्ता बाबू रामबहादुर लालके मुंहमें घोड़ेका लगाम लगाकर घोड़ेकी तरह दौड़ाया गया और ऊपरसे कोड़े बरसाये गये।

हाजीपुर शहरमें १७ अगस्तको ही गोरे पहुँचे और पुलिसको कमर सीधी करनेकी ताकत मिली। गोरोंने स्टेशनपर फकीरचन्द साहकी दूकान जला दी।

हाजीपुर टाउन   और इधर उधर घूमकर खूबकर आतंक फैला दिया। फिर जोरोंकी गिरफ्तारीशुरू हुई। जो गिरफ्तार होते श्री केदारशर्मा, दारोगाके हवाले किये जाते। श्री केदारशर्मा जिन्हें पाते अन्धाधुन्ध पीटते। उनने हाजीपुर दियाराके सर्वश्री बेनी भगत, हरिजीवन भगत, भोला भगत, जईलाल भगत, रामनन्दन सिंह, आदिको गिरफ्तार किया और एक मील पीटते पिटवाते थाना ले आये। थाना आकर इनने बेनी भगतको जो ग्वालोंके नेता थे, लात जूतासे खूब मारा; फिर लाठी और बेंतके प्रहारसे इन्हें बेहोशसा कर दिया। तब इनके मुंहपर कालिख-चूना पोता गया, गलेमें झाड़ूकी माला पहनाई गई और फिर इनको बाजारमें मार खाते हुए घुमाया गया। बेचारे बेनी भगतजी खूनका दस्त करने लगे और पटना कैम्प जेलमें सदाके लिये सब कष्टोंसे छुटकारा पा गये।

श्री केदारने बूढ़ोंपर भी डंडे बरसाये। ५० सालसे भी अधिक उम्रके श्री सत्यदेव सिंहको इस तरह पीटा कि उनके अगल-बगलके दो दाँत टूट गये। श्री बलदेव तिवारी भी काफी पीटे गये। पं० जयनन्दन झाको भी तमाचा लगा। परन्तु केदार शाहीकी कठोरता पराकाष्ठापर पहुँची जब जगन्नाथानन्दजी उनके पंजेमें पड़े। स्वामीजी जेल तोड़ निकले और रेल तार छिन्न-भिन्न करते हुए बिदूदूपुर पहुँच गये। १८ अगस्तको एक कनस्टबिल उन्हें गिरफ्तार करने आया पर उनने उसको ही गिरफ्तार करके नीमके पेड़से बाँध रक्खा और जब उसने प्रतिज्ञा की कि अबसे सरकारी नौकरी नहीं करूँगा और स्वेच्छासे अपनी वर्दी पेटी वगैरह दे दी तब उनने उसे छोड़ दिया। उसकी वर्दी पेटी वहीं जला दी गई। लगभग दो महीने स्वामी जगन्नाथानन्दजी इधर उधर घूमकर देशरी और पटोरीमें काम करते रहे जहांसे वे जन्दाहा आये और महुआके दारोगा श्री सूर्य सिंह द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये। सूर्य सिंहने उनके हाथ पैर और गर्दनको एक साथ बाँध लॉरीमें पटक दिया और पीटता हुआ स्टेशन आया। वहांसे रेलकी सफर थी। उनको साथ लेकर सूर्यसिंह हाजीपुर आया और केदार शर्माके हवाले कर दिया।

केदार शर्मा उन्हें हाजीपुर थाना लेआये। साथमें थे जन्दाहाके राहुलजी और महुआ थानाके श्री जगदीशपुरी। थानाके बरामदेमें इनको खड़ा करके श्री केदार शर्मा दारोगा और श्री रामप्रीति पाण्डेय इन्सपेक्टरने सात आठ सिपाहियोंको लेकर इन्हें पीटना शुरू किया। इनका सारा शरीर फूट गया; तलहत्थी फट गई,

अंगुलियां थकुच गईं और वह बेहोश होगये। पुलिसने तब इन्हें नालेमें गिरा दिया, एक सिपाहीसे संगीन लेकर श्री केदारने बगलसे इनके पेटपर वार किया जिससे लगभग ८ इञ्च लंबा और २ इञ्च गहरा घाव होगया। इनका भीमकाय शरीर ही कुछ ऐसा था जो इतनी यातनायें बर्दाश्त कर सका। नालेकी ठंड और दुर्गन्धने इन्हें होशमें ला दिया। फिर पुलिस इन्हें पकड़ लाई और रामप्रीति पाण्डेयजीके आदेशानुसार इनका बाजारमें जलूस निकाला गया—कालिख चूना लगाकर, गदहेपर चढ़ाकर। केदार शर्माजी नारा लगवाते—'जेल तोड़नेवालेकी दशा देखिये।'

हाजीपुरमें लूट पाट भी कम न हुई। हेला बाजारके दुसाधके घर भी बुरी तरह लूटे गये। पर जबरदस्त लूट हुई पटेल परिवारकी। डा० गुलजार और श्री राजेश्वर पटेल फरार थे। घरके सभी पुलिसके क्रूरपाशसे बचनेके लिये जहां तहां भटक रहे थे। उस समय पुलिस इनके मकानपर आई और लूट पाट तोड़ फोड़ शुरू किया। फिटन घोड़ा और दूसरे दूसरे सामान पहले जब्त हो चुके थे। अबकी पलंग, कुर्सी, किवाड़ चौखट, दवायें, किताबें, बरतन बासन उठाये गये। कपड़े लत्ते भी न छोड़े गये। श्री केदारनाथ सिंहकी भी काफी लूट हुई।

लूट और घूसखोरी साथ साथ चली। दोनों तरहसे पुलिसने काफी माल उड़ाया। हां श्री केदार शर्मा लूट-घूसके साझीदार न थे; वे कार्यकर्त्ताओंका मांस उड़ाते थे, माल नहीं।

डा० गुलजार प्रसाद और श्री राजेश्वर पटेल आदिने जेलसे निकल कर सारन जिलेमें आश्रय लिया। पर ये दोनों केदारनाथ सिंह और शिवनन्दन दुबेके साथ छपरा शहरमें पकड़ लिये गये और जेलमें डाल दिये गये। छपरा जेलसे सभी २५ सितम्बरको मजिस्टर साहबके इजलासमें हाजिर होनेके लिये हाजीपुर लाये गये। डा० गुलजार प्रसाद लिखते हैं—"मैं तीन व्यक्तियोंके साथ छपरा जेलसे हाजीपुर लाया गया। ऐसा जान पड़ता है कोर्टके साथ स्थानीय पुलिस अधिकारियोंने कोई षड्यंत्र पहले हीसे रच रखा था। अतएव मैं कोर्टमें दाखिल करके वहांके जेलमें भेजा न जाकर स्थानीय थानामें लाया गया। वहां रातभर बन्द रहा। सुबहको जूनियर दारोगा बाबू केदारनाथ शर्माने मुझको बुलवाया। पूछा—कहिये, आपके साथ क्या किया जा सकता है? मैंने कहा जो कुछ आप कर सकते हैं खुशीसे कीजिये। इसपर उनने बेंत मंगवाया और मुझे थानेके भीतर लेगये। बोले,

स्वराज देखनेके लिये मैं आपको जिन्दा न छोड़ूंगा। मैंने उत्तर दिया—खुशी है मुझको कि मेरे मरनेके बाद ही सही पर स्वाराज्य तो होगा, इसे आपने कबूल-कर लिया। इसपर भूखे शेरकी तरह आप मुझपर टूट पड़े और मुझे बेंतसे काफी मारा, फिर आपने हुक्म दिया कि मेरा शृङ्गार किया जाय और मेरे लिये खास सवारी मंगायी जाय। मेरा मुंह कालिख चूनेसे रंगा गया; गलेमें जूतोंका हार पहनाया गया और दो गदहोंमें से एकपर चढ़ाया गया। दूसरा गदहा भी साथ रखा गया शायद इसलिये कि एकके थकनेपर दूसरा काममें लाया जाय। इस तरह पुलिसवालोंके घेरेमें मेरा स्वांग निकला।

मेरे सड़कपर आते ही शहरकी दूकानोंके किवाड़ फटाफट बन्द होने लगे। भीतर घरोंसे किसी किसी औरतके रोने और चीखनेकी आवाज आने लगी। कहीं कहीं जो मर्द दीख पड़ते थे उनका चेहरा रोषसे तमतमाया जान पड़ता था। मगर किसीकी हिम्मत नहीं पड़ती थी कि पुलिसवालोंके विरुद्ध कुछ बोल सके। रास्ते रास्ते थप्पड़ बेंतसे मेरी पूजा होती रही। साथ साथ अश्लील गालियोंकी बौछार हो रही थी, लौटते समय उनका विचार हुआ कि मुझे जूतोंसे पीटा जाय। मैंने उन्हें अपना चप्पल निकाल कर दे दिया। मारते मारते उन्होंने चप्पलको तोड़ दिया। ············फिर मैं जेल भेज दिया गया। हां यह सब मारपीट जो हुई सब पुलिस इन्सपेक्टर बाबू रामप्रीति पाण्डेयजीके सामने।"

हाजीपुर थानेके बिदुपुर बाजारमें २५ अगस्तको देशी विदेशी सैनिकोंकी दो लॉरियां आईं। श्रीकेदार शर्मा, दारोगा हाजीपुर, श्रीरामप्रीति पाण्डेय, पुलिस हाजीपुर थाना इन्सपेक्टर हाजीपुर और एक कनाडियन कप्तान उन सैनिकोंके साथ थे।

इन लोगोंने शीतलपुरके बाबू लालबहादुर सिंहका मकान सामान सहित जला दिया। उनपर स्वामी जगन्नाथानन्दके छिपा रखनेका अभियोग था। बाजारमें श्रीअम्बिका दास कनौजियाके पक्का मकानमें आग लगा दी गई और घरका सारा सामान उठा उठाकर आगमें फेंक दिया गया। अम्बिका दासजी फरार थे। उनके बूढ़े और अन्धे पिताको भी तमाचे लगाते और बन्दूकके कुन्देसे उनकी पीठकी हड्डी हिला देनेसे श्रीकेदार बाज नहीं आये। फिर श्रीद्वारिका प्रसादके मकानमें आग लगाई गई। ठीक इसी समय क्रान्तिकारियोंका जयघोष सुन पड़ा। इन सबोंका ध्यान उधर खिंचा; इधर लोगोंने द्वारिका बाबूके घरको आग बुझा दी। तुरत एक

अमानुषिक अत्याचारके शिकार

श्रीरामानन्द ब्रह्मचारी,
दलसिंह सराय (दरभंगा)

श्रीराधाप्रसाद सिंह,
सिंधिया (दरभंगा)

अमानुषिक अत्याचारके शिकार

डाक्टर गुलजार प्रसाद,
हाजीपुर (मुजफ्फरपुर)
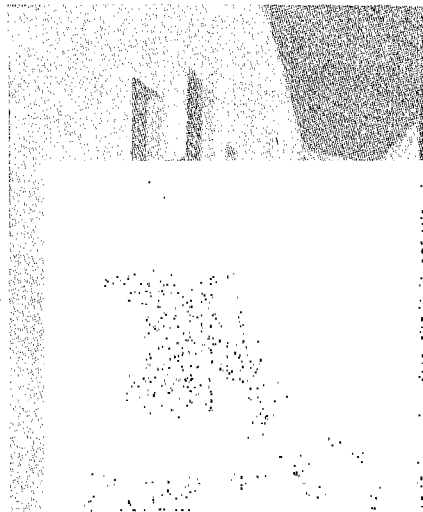
ठाकुर मुक्तेश्वर सिंह,
ताजपुर (दरभंगा)
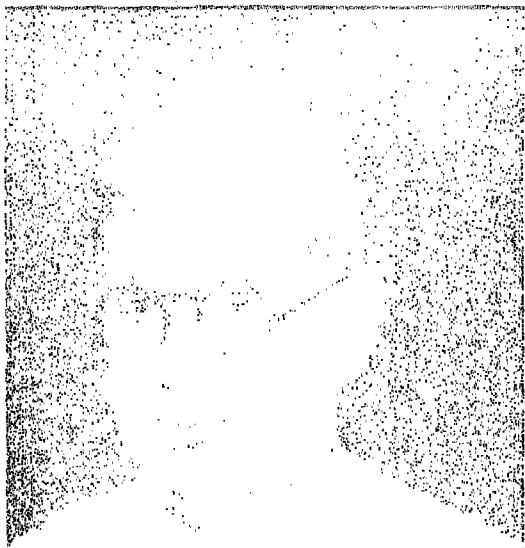
बहुत बड़ा जलूस बिदुपुर चौककी ओर आता दीख पड़ा। जलूसको प्रोग्रामके मुताबिक आज निकलना था; इसलिये वह निकला था। इसे दुर्योग मानिये कि जब वह चौकको आ रहा था वहां पुलिस और फौज पहुँची हुई थीं और "स्वाभाविक" कार्रवाई कर रही थीं। जलूसको देख वे डरीं और दनादन उसपर गोली छोड़ने लगीं। पहले खाली आवाज जरूर हुई पर तुरत गोली सीधी मार करने लगी और बातकी बातमें सात आदमी अपना अमर नाम सदाके लिये छोड़ गये। उनके नाम हैं सर्वश्री राम औतार राय, हरवंश राय, बुधन दुसाध और रोशन राय, ककरहटाके, ढोढ़ाई राय और राम दास, बिदुपुरके और एक हेमराज राय परोहांके थाना राघोपुरके जदुराय बुरी तरह घायल हुये।

उखड़ी हुई रेलवे लाइनको जोड़ती बैठाती गोरोंकी स्पेशल गाड़ी १६ अगस्तको टेनब्रुक साहब भगवानपुर ले आये। गोरोंका एक दल उतरा और श्रीदीपनारायण सिंहके बिठौली आश्रमपर जा धमका। आश्रम जला दिया और लगे हाथ स्कूल, ग्रामसुधार केन्द्र और खादी भण्डारको सामान सहित फूंक दिया। दूसरे दलको टेनब्रुक साहब बिठौली गांवमें लेगये और १० बजेसे ३ बजे शामतक किरासन तेल छिड़क छिड़ककर लोगोंका घर जलाते रहे। ८० घरोंको धू धू करके आग चाट रही थी और ऊपर हवाई जहाज मड़रा रहा था। और निहत्थोंका बिठौली ग्राम सुनसानसा था क्योंकि एक दिन पहले ही लोगोंने गांव छोड़ दिया था।

महुआ

थानेके और और हिस्सोंमें भी टेनब्रुक दलने अपनी करामात दिखलाई। बिहारीमें चार घर, गोरौलमें पाँच घर, जन्दाहामें अनेक और कन्हौलीमें एक घरको जला दिया गया। लोना, कन्हौली, वोम्हा आदि गांवोंमें पुलिसकी सहायतासे गोरोंने अनाज निकाल ढेर कर दिया और उसमें आग लगा दी।

टेनब्रुक दलने कितनोंको मौतके घाट उतारा। बिठौली ग्राममें आग लगाते समय गोरोंने देखा कुछ दूरपर एक खड़ा खड़ा उनको देख रहा है। तुरत वह गोलीका निशाना बनाया गया। नाम था श्रीरासबिहारी सिंह। श्रीरासबिहारीको काम करनेकी लगन थी और सोभी बहुत पुरानी। आपने उस असहयोगके जमानेमें गया कांग्रेस पैदल ही चल कर देखा था।

इस थानेमें अमानुषिक अत्याचार भी काफी हुये। कन्हौलीके पण्डित महावीर झा वैद्यके मुंहमें गोरोंने थूक दिया। उन्हें पकड़ कर वे सब थाना लेगये और थूक फेंक कर चाटनेको कहा। पण्डितजीने ऐसा करनेसे इनकार किया जिससे उनपर

हण्टर और कोड़े खूब बरसे। बिभूरौलीके श्रीशिवनन्दन चौधरीको खूब पीटा गया और उनके खूनसे चपचपाये शरीरपर लाल चींटियोंका छत्ता डाल दिया गया। लाल चींटियां उनके शरीरको चिमट खाने लगीं जिससे वे छटपटाने लगे। गोरे और काले दोनों उनका छटपटाना देखते और मुस्कुराते। श्रीभागवत शर्माके दोनों पैर उठाकर एक साथ कुर्सीके सिरेसे बाँध दिये गये और तलवोंपर हण्टरसे इतना मारा गया कि वे मुर्छितसे हो गये। बादको वे जेल भेज दिये गये जहां कई दिनों तक वे चल फिर नहीं सके। यहांके स्वामी जगन्नाथानन्दपर जो बीता सो हाजीपुर प्रकरणमें लिखा जा चुका है।

महुआ थानेमें लूट पाट और घूसखोरीकी भी धूम रही। सेहानका खादी भण्डार लूटा गया। महुआके श्रीरामेश्वर चौधरी प्रेसिडेन्ट थाना कांग्रेस कमिटीका, बीस हजारसे भी अधिकका माल लूटा गया। श्रीसूर्यदेवनारायण सिंहके नेतृत्वमें अमरीकन फौज उनकी दूकानपर गई और उसे लूट लिया। उनके भतीजे श्रीअवधेश्वर चौधरीने गोरोंको लूटनेसे रोका जिसपर वे सब अवधेश्वर चौधरीपर टूट पड़े। ठोकर, हण्टर और राइफलके कुन्दोंसे उन्हें इतना मारा कि कुछ दिनके बाद ही वे दुनियासे चल बसे। यहांके गणेश लाल चौधरी और बहैसीके चन्दू सहनी और धोंधुआके फुदेनी प्रसाद आदि लूटे गये। लोआ, धोंधुआ, जन्दाहा और सिंघाड़ा आदि गांवोंमें और भी लूट हुई। घूसखोरीके शिकार तो थाने भरके लोग हुये। बीट नं० १८, ८, ६, ५, और २ को छोड़ कर १ से २० बीट नम्बर तकके गांवोंको पुलिसके जेब खूब भरने पड़े।

३ सितम्बरको १० गोरोंको लेकर दारोगाने महनार थानेमें पैर रखा और श्री मदन झाको गिरफ्तार कर लिया। श्रीयुत मथुरा प्रसाद चौधरी और मियां महनार सर्फुद्दीन कार्यकर्त्ताओंके घर बतलाने और उनके परिवारवालोंको तंग करवानेमें पुलिसके दाहिना हाथ साबित हुये। ४ सितम्बरको दारोगाजी फिर गोरोंके साथ आये। मदन झाजीके घरका ताला तोड़ यूनियन बोर्डके कागजात मथुरा बाबूके पास भेजवा दिया और लौट गये। उस दिन उनने श्री मदन झाजीको महुआ पहुँचा दिया। ६ अगस्तसे उनने अपनी 'असली कार्रवाई' शुरू की। गान्धी आश्रमकी तालाशी ली, श्री रामचन्द्र सिंहके सभी सामान, कपड़े लत्ते, पलंग बक्से और चौखट किवाड़ जला डाले। उनके चाचा श्री निरसूसिंहको गिरफ्तार कर लिया पर २००) रु० घूस लेकर छोड़ दिया। बादको वे सदल बल

हमीद मियांके घर पहुँचे और उनके घरको बिलकुल फूँक दिया। श्री रामप्रसाद ठाकुरका घर भी जला दिया गया।

इस थानेमें अगस्त आन्दोलनका इतिहास अधिकांशतः श्री मदन झाकी शूरता और शहादतका इतिहास है। वे लिखते हैं—"शामको महुआ पहुँचा। वहांके दारोगा श्री सूर्यदेव सिंह मुझको देख कांग्रेसवालोंको गलियाने लगे। मैंने टोका मुझपर फट पड़े। मेरा मन दुखी हो गया। मैंने रातको भोजन नहीं किया, दारोगा साहब तब पछताने लगे। सुबहमें मैंने भोजन किया और उसी दिन यानी ५ सितम्बरको हाजीपुर पहुँचाया गया। वहाँ मैं कोर्ट इन्सपेक्टरके आफिसके ओसारेपर खड़ा रहा। मेरे साथ चार अभियुक्त और थे जो वहीं बैठ गये।

तीन बजे होंगे। कहींसे श्री केदार शर्मा, हाजीपुरके दारोगा आये और मुझे गान्धी टोपी और खद्दरकी धोती कुर्ता पहने देख कोसने लगे पर महनारके एक कनस्टबिलने उनसे कुछ कहा और वे चुप हो गये। महनारकी पुलिसने बराबर मेरे साथ अच्छा व्यवहार रक्खा। कुछ देरके बाद इन्सपेक्टर ऑफ पुलिस श्री रामप्रीति पाण्डेय आये और आते ही उनने जो चार अभियुक्त बैठे थे उनमें हरएकको तीन चार बेंत मारा और एक एक ठोकर दिया। फिर वे मेरी ओर बढ़े। मेरी पीठपर दस-बारह बेंत खींच लिया। फिर ग र्दनपर इस जोरसे मारा कि मैं ओसारेपर बेहोश गिर पड़ा।

चेतना आई तब सोंचा कि अब छुट्टी मिल गई। पर रामप्रीति पाण्डेयने एक कनस्टबिलको कहा—इसकी एक टांग उठाओ और पीटो। उसने एक टांग उठाई और तलवेसे कमर तक दस-बारह बेंत मारे और इसी तरह दूसरी टांगमें भी। फिर पाण्डेयजीने हाजीपुरके छोटे दारोगा श्री केदार सिंहसे कहा—इसे ऑफिसमें ले जाओ खूब पीटो।

"केदार बाबू आफिसके टेबुलके पच्छिम तरफ मुझको ले गये और पीटने लगे। मैं बेहोश हो गया। होश आनेपर फिर उनने पीटना शुरू किया और फिर मैं बेहोश हो गया। अबकी जब होश आया तब उनने कहा—उठो। मैं उठा। वे बोले—कान पकड़कर बैठो। मैंने ऐसा करनेसे इनकार कर दिया। तब एक कनस्टबिल उनके हुक्मसे मेरी कनपट्टीमें तमाचे लगाने लगा। इसी वक्त रामप्रीति पाण्डेयने बाहर आनेका हुक्म दिया। मैं बाहर लाया गया जब उनने दस-बारह बेंत लगाये और जो चार कैदी मेरे साथ आये थे उनको कहा—इसको मारो।

डराने धमकानेपर उन सबोंने मुझको धीरे धीरे पीटना शुरू किया पर जब डांट पड़ी जोर जोरसे पीटने लगे। एक बोला—अंगरेजी राजमें हम सब चैनसे रहते थे। ऐसे ऐसे फसादियोंने ही हमें आफतमें डाला है।

"फिर रामप्रीति पाण्डेयके हुक्मसे कालिख चूना लाया गया और एक कनस्टबिलको मेरा मुंह पोतनेके लिये कहा गया। मैंने मुंह ढक लिया। पर जबरदस्ती यानी मेरे हाथोंको मेरी पीठ पर कसकर एक तरफ चूनेसे और दूसरी तरफ कालिखसे मेरा मुंह पोता गया। फिर मेरे गले एक लबनी लटका दी गई। तब पाण्डेयजीने कहा—लेजाओ! इसे घुमाओ। केदार बाबू दो कनस्टबिलके साथ मुझको कचहरीकी सड़कसे लेचले और जब मुख्तार खानेके सामने पहुँचे तब जोरसे बोले—देखिये, यह महनारके इन्सपेक्टर साहब हैं। जगलाल चौधरी इनके लिये लबनी छोड़ गये हैं जिसे लटकाकर यह घूम रहे हैं। यह इनकी दावात है और यह बेंत इनकी कलम है। वहांसे वह पोस्ट ऑफिसके सामने आये और अपनी बात दुहरायी। जितने वहां थे सुनकर हँस पड़े। वहांसे केदार सिंह मुझको लौटा लाये और एस० डी० ओ० की कचहरीके नजदीक पहुँचे वहाँ नालेसे थूक पीक मिला हुआ पानी बह रहा था। केदार बाबूने एक कनस्टबिलको कहा—इस पानीसे इसका मुंह धो दो। पर उस समय पाण्डेयजी आगये और उनने दूसरे पानीसे मेरा मुंह साफ करवाया। मैं फिर उनकी ऑफिसमें लाया गया जहाँ मेरी लबनी हटा दी गई। पाण्डेयजीने कहा इसे भीतर लेजाओ और खूब पीटो। एक कनस्टबिल मुझे लेगया और घूसे लात थप्परोंसे मारने लगा। मैं गिर गया और उठनेसे अपनेको असमर्थ पा वहीं बैठ गया। पाण्डेयजी मां बहनको गलियाते हुये बोले—इन्हीं लोगोंने मूरत झाको मरवा डाला है। जाओ, इसे जेल रख आवो। तब मैं ५ सितम्बरकी शामको हाजीपुर जेलमें दाखिल हुआ।"

शहीद मदन झाकी आपबीतीका यह एक अंश है। जेलमें इनका शरीर दवा दारूके बावजूद भी संभल न सका। रामप्रीति पाण्डेय और केदार सिंहकी अमानुषिकता इन्हें धीरे धीरे और तिल तिल करके निगलती गई। बीमारीकी वजहसे अधिकारियोंने इन्हें जेलसे बाहर कर दिया और बाहर ही क्षय रोगको पीड़ाने इन्हें अमर शहीद बना दिया।

राघोपुर

२१ अगस्तको गोरे और भारतीय सिपाही राघोपुर थाना आये और मकान तोड़ना, लूटना और जलाना शुरू हुआ।

ठाकुर अमीर सिंहका मकान लूटा और जलाया गया। बिकाऊ सिंह, सन्त विलास सिंह, शिव प्रसाद 'आजाद', राम लखन भगत, हरनन्दन राय, राम नन्दन सिंह, जगदीप सिंह, दारोगा सिंह, नन्दन सिंह, राजमंगल सिंह आदिके मकान लूटे गये। तेतर राय और देवनन्दन रायकी सबसे ज्यादा लूट और बरबादी हुई। इनमेंसे कई सज्जनोंके अन्न और मवेशी तक लूट लिये गये।

रुस्तमपुरके बुलाकी साहको भारतीय सिपाहियोंने इतना पीटा कि तीन दिनोंके बाद उनका प्राणान्त ही हो गया।

पातेपुर

इस थानेमें गोरे, जाट, बलूची तीनों आये और थानाभर घूमे। बहुआरा कोठीके मैनेजर मि० डोन्टने गोरोंको लेकर बाबू नथुनीलाल मेहताका घर लूट लिया और घरको पस्त भी कर दिया। यहां बलूचियोंने हाट बाजार जाकर चीजोंकी काफी छीना झपटी की। मालवालोंमें आतंक छागया। जबरदस्ती चीज उठा लेनेमें जाट किसीसे पीछे न थे।

इन सभी सैनिकोंको अपनी कार्रवाई करनेमें मदद मिलती थी पातेपुर महंथ, चौधरी मदन मोहन प्र० सिंह, वशिष्ठनारायण सिंह और रामगुलाम साहसे।

पातेपुर महंथको खास दुश्मनी थी शिव नारायण महतोसे। उनने फौज बुलाई और शिवनारायण महतोजीको गिरफ्तार करवाकर थानेपर खूब पिटवाया और फिर उनके परिवारको तंग किया। सुन्दर महतोको अपने स्थानपर बुला कर खूब पिटवाया और उसकी मकई उठवा ली। फौजियोंसे पकड़वाकर खूब काम लेना या धूपमें खड़ा रखना तो आम बात थी।

दरभंगा

शहरमें १६ अगस्तसे पुलिसका सिक्का जमने लगा। १८ अगस्तको मेडिकल स्कूलका होस्टल घेर लिया गया और उसकी तलाशी हुई। श्रीजगतनारायणकी पेटीसे बघनखा निकला और वे गिरफ्तार कर लिये गये। मिथिला कॉलिज और जिला-स्कूल आदि संस्थाओंपर भी पुलिसका आक्रमण हुआ और सभी संस्थायें बन्द कर दी गयीं। १६ अगस्तको बाबू कमलेश्वरी चरण सिन्हा और श्रीरामबहादुर प्रसाद गुप्त, श्रीराजेन्द्र प्रसाद आदि गिरफ्तार हुए और शहरका आन्दोलन बहुत ढीला पड़ गया। फिर भी रामेश्वर प्रसाद सिन्हा वकीलकी कर्मठता और दिलचस्पीकी वजहसे शहरवाले कुछ जोश दिखलाते रहे पर पीछे वह भी गिरफ्तार हो गये और शहरका आन्दोलन बंदसा हो गया। फिर सरकारकी ताकत गांवोंको दबानेमें लग गयी।

२१ अगस्तको पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट कुछ फौज लेकर बहेरा पहुँचा। उसने कांग्रेस आश्रमको सामान सहित जला दिया। फिर उसने श्रीसत्यदेव झा और रामनारायण झाके घरोंको लूट कर जला दिया। श्रीनथुनी पटवाकी दूकान भी इसने लुटवा दी और सूबेलालको गिरफ्तार कर लिया। वहांसे वह सदल बल हावी भौआर गया। वहां श्रीपरमानन्द झाकी कुछ चीजें लूटी गयीं और श्रीरघुनाथ झाका मकान लूटा गया और बखारी जला दी गयी। इसके बाद बहेरामें पुलिसकी मनमानी चलने लगी और बहेरा हाइ स्कूलके मास्टर विष्णुगुलाम झा उसके दाहिने हाथ बन जनताको तरह तरहसे सताने लगे। सितम्बरके पहिले हफ्तेमें पुलिस बिठौली आदि गांवोंमें गयी और श्रीशत्रुघ्न राय आदि कार्य कर्त्ताओंके माल मवेशीको जब्त करने लगी।

६ सितम्बरको एक मजिस्ट्रेटके साथ डी० एस० पी० सदलबल ठाढ़ूपुर पहुँचे। वहां उनने रामकरण सिंह, रामाश्रय सिंह और बच्ची सिंहको लूटा। वहां हुलास सिंह खड़ा था जिसे उनने एककी बखारीसे धान निकालनेको कहा। उसने इनकार किया। जिसपर डी० एस० पी० उसे पीटने लगे। हुलास सिंहने एक दो बार मना किया फिर भी बेंतको रुकता न देख उसने डी० एस० पी० को पटक दिया और उसकी छातीपर चढ़ बैठा। तुरत मजिस्ट्रेटके हुक्मसे सिपाही लपके और डी० एस० पी० को छुड़ा दिया। डी० एस० पी० चला गया। पर थोड़ी देरके बाद एक ट्रक पर पुलिसको लेकर ठाढ़ूपुर लौटा। बन्दूककी खाली आवाज करके लोगोंको डरा दिया। बच्ची सिंह और बहादुर सिंहके मकानको लूट कर जला दिया। इतनेमें लोगोंकी भीड़ लग गयी और सभी डी० एस० पी० को खरी खोटी सुनाने लगे। वह आगे बढ़ा तब लोग राह रोक खड़े हो गये इसपर उसने काफी गोलियां चलवायीं। तीन घायल हुये। दो स्त्रियां और एक पुरुष। दूसरे दिन बहेराके दारोगा बहेरी पहुँचे और अनूठ महतो, विन्ध्येश्वरी मिश्र और वासिल शाहकी मदद पाकर उनने लोगोंपर खूब अत्याचार किया। दारोगा साहब हाथीपर सवार थे और अपने साथ नवादाके विष्णु गुलाम झाको रख रखा था। वहां उमाकांत ठाकुरका घर लूटा गया और जयनारायण ठाकुरके घरको लूट कर हाथीसे पस्त करवा दिया गया। ठक्कोसाहु और लक्ष्मीकांत ठाकुर और कौशिक मुखियाके घरकी भी ऐसी ही दुर्दशा की गयी। वहांसे यह पुलिस दल बघौनी आया जहां उसने श्रीउमाकांत झा और सीबन गहलौतके घरको लूट कर जला दिया। उगन्त मिश्र

और गंगाधर मिश्रकी भी कुछ लूट हुयी। सहरू गांवमें भी इन पुलिसवालोंने गोली चलायी। लोगोंको डराया और काफी लूट पाट मचायी। फेंकन मंडरके घरको लूट कर दारोगाने जला दिया और हरौती मंडर, सेवालाल मंडर और झगरू मंडरके घरोंको लुटवा दिया। नोच खसोट और घुसखोरी तो कितने गांवोंमें चलती रही।

खरारीमें सरकारी ताकतसे लोहा लेनेवाले थे परिवार सहित श्रीरामबरन सिंह और उनके संगी साथी। इनकी वजहसे हथौड़ी कोठीकी मेम साहबाने अपने यहां दारोगा सहित सिपाहियोंका पड़ाव डलवा रखा था। इस तरह हथौड़ी कोठी थाने जैसा काम करती थी। इसने रामबरन सिंह आदिके घरको जला दिया और जिन जिन गांवोंमें वे लोग गये उन सबको काफी परेशान किया।

बिरौल थानाके रसियारी गाँवमें पुलिस आयी ४ सितम्बरको और दरभंगा राजके भूप ऑफिसपर कब्जाकर लिया और राजके अमलोंको वहाँ बैठा दिया। दूसरे दिन वे पाली आये; काफी साज-बाजके साथ। पालीमें हिन्दू-मुसलमान भाई-भाईकी तरह रहते थे। गाँवमें पुलिसको देख डंकेपर चोट पड़ने लगी और लाठी भालेसे सुसज्जित ग्रामीणोंकी भीड़ लग गयी। इसलिये पुलिसवाले उस गाँवको लुटवा न सके। वे चुपचाप कनकलाल झाके पास आये और बोले मैं आपको गिरफ्तार करता हूँ। पण्डितजीने कहा कि मैं ७ अगस्तसे ही आजाद हूँ। मैं गिरफ्तार नहीं हो सकता। इसपर पुलिसने उन्हें उठाकर हाथीपर चढ़ा लिया और चलते बने।

दूसरे दिन हथियारबन्द सिपाहियोंको लेकर सैलिसबरी साहब सुपौल पहुँचे; वहाँसे पैदल चलकर रजवा आये जहाँ उनने सर्वश्री बिन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह, सत्यनारायण सिंह और उनके सभी भाइयोंके घर फूँक दिये। उनके एक भाई बुच्चनबाबूके घर दो दिनका बच्चा था। जिसे लेकर बैठी हुई मां आगसे घिर रही थी और सिपाही उसको निकालनेसे बुच्चनबाबूको रोक रहे थे। लेकिन अन्तमें सैलिसबरीने इजाजत दे दी। आगकी लपटोंके बीचसे बुच्चनबाबूने जच्चे-बच्चेको निकाला। इस अग्निकांडसे बिरौल थाना भर आतंकित होगया और पुलिस दूर-दूर भी छापा मारने लगी। तरवारामें चरखा संघ और बिहार विद्यापीठके सामान लूट लिये गये और मकानको भी बरबाद करनेकी कोशिश की गयी। तरवाराके पास गनौरा नामका एक टोला है। वहां भी पुलिस गई और

भदई रावतके घरको बुरी तरहसे लूटा। इस लूटमें तरवाराके कई शरीफ समझे जानेवाले पठान और रजील समझे जानेवाले बनिहार शामिल थे। इन लुटेरोंमें से एक दो शरीफको गोनौरावालोंने पीटा भी पर सरकारी ताकतके आगे वे इससे ज्यादा कुछ कर न सके। २४ सितम्बरको पुलिस लुटेरोंका बड़ा दल लेकरके गलमा पहुँची। स्त्रियाँ अपने गहने और पेटियां लेकर जहाँ-तहाँ जा छिपीं, जब पुलिसने लूट शुरू करवायी तब सीधा गांवोंमें घुसनेकी हिम्मत न करके लुटेरे खरही और गाछोंमें पैठे और स्त्रियोंसे गहने छीनने लगे। एक युवतीकी हँसली झटकनेके लिये एक लुटेरेने उसके गलेमें हाथ दिया जिसपर वह चिल्ला उठी। खरहीसे युवतीकी चिल्लाहट सुनकर गांववाले उत्तेजित हो गये और श्री रमाकांत झाने लोगोंसे कहा—अब इज्जत जा रही है; इन लुटेरे गुण्डोंको मारो। बस गांववालोंने जिसे नजदीक पाया पीटना शुरू किया। पुलिसने तुरत गोली चलायी; जिससे कितने घायल हुए। पर लोगोंका जोश बढ़ता ही गया उनकी तादाद बढ़ती ही गयी और उनने पुलिस और उनके लुटेरोंको चारो ओरसे घेरना शुरू किया। फिर तो पुलिस भागी, लुटेरे भागे और गांव लुट जानेसे बच गया। २७ सितम्बरको बहेरा और बिरौलकी पुलिस फिर पाली आयी। साथमें काफी लुटेरे थे। इनका सामना करनेके लिए भाले और गुलेल लेकर काफी लोग आगे बढ़े। फिर ज्योंही लूट आरम्भ हुई त्योंही गांववालोंने लूटनेवालोंपर वार किया। फिर तो गोलियाँ चलने लगीं। कितने घायल हुये। जिनमें कुछ भाग गये और कुछ पकड़े गये। गांवकी खूब लूट हुई। यह बिरौल थानेका आखरी मोरचा था। इसके बाद लूटका रास्ता साफ हो गया।

जाले थानाके रतनपुरमें पुलिसके साथ फौज आई २६ अगस्तको और राममूर्ति शर्माके घरकी कुछ चीजोंको उठाकर कछुआ चली गयी। वहां उसने रूपधरजीके घरको लूटा और जला दिया। कछुआसे फौज पुलिस सहित फिर रतनपुर आयी। यहांका जमींदार विन्ध्येश्वर ठाकुर और ब्रह्मपुरके श्रीमन्नारायण ठाकुरने इन सबोंका खूब आदर सत्कार किया। गोरोंको पता चल गया कि गांववाले कितने पानीमें हैं। उनने फिर राममूर्ति शर्माका घर जला दिया। इस अगलगीका लोगोंने विरोध किया जिसपर गोरोंने गोली चलायी और कई ग्रामीणोंको घायलकर दिया। गोलीसे गांववाले और उत्तेजित हो गये। चौकपर वे जमा हुये और जैसे ही गोरे वहां पहुँचे श्री

खोभाड़ी ठाकुरने एक गोरेको दे पटका और उसकी छातीपर बैठ गये। गोरा उन्हें उलट फेंकनेकी कोशिश करता और ये गोरेको बिलकुल काबूमें लाना चाहते। श्री प्रदीप शर्मा और बिलट दर्जी खोभाड़ी ठाकुरकी मददको दौड़े। इसी बीच गोलियां चलने लगीं। प्रदीप शर्मा और बिलट दर्जी बुरी तरहसे घायल हो गये। कयलू कुंवर और नूजा झाको भी गोली लगी। गोरेको मौका मिला, वह उठ खड़ा हुआ और अपने साथी सहित गांव छोड़ भागा। इधर गांववाले डा० रामचन्द्र प्रसाद और डा० घोषकी सहायता लेकर घायलोंकी सेवा शुश्रूषामें लगे। पर श्री प्रदीप शर्मा और बिलट दर्जी बच न सके। दुरभंगा अस्पतालकी राहमें शहीद हो गये।

इस घटनाके बाद जाले थानामें कितने पुलिसके भेदिया बन गये और थानेमें धर पकड़ और लूट-खसोट शुरू हो गयी।

१५ अगस्तके गोलीकांडसे मधुबनी कुछ आतंकित हुआ जरूर पर १६ को शहीदोंको लेकर जो जलूस निकला उससे छात्र खूब उत्साहित हुए। पर शहरवाले मधुबनी साथ देनेके लिये तैयार न थे। इसलिये छात्रोंको शहर छोड़ देना पड़ा। १७ अगस्तको मधुबनी जेलके फाटकसे ७६ कैदी भाग निकले। जिनमें एक भी कांग्रेसी नहीं था। इसलिये इस घटनासे लोगोंको राजनीतिक बल न मिला। हां, मधुबनीमें अखिल भारतवर्षीय चर्खा-संघकी बिहार शाखाका केन्द्र था। केन्द्रमें प्रान्तके मजे हुए कार्यकर्त्ता थे। उनकी उपस्थिति मधुबनी शहरको प्रान्तमें सबसे आगे रख सकती थी। कार्यकर्त्ताओंको विचार-धारासे कुछ ऐसा ही टपकता था कि इस गान्धीजीके आखरी आन्दोलनमें मधुबनी कुछ कर दिखायेगा। श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह लिखते हैं—"बिहार चर्खा-संघके मंत्री बाबू लक्ष्मी नारायणने मुझसे कहा कि हमारे कार्यकर्त्ता संघमें रहेंगे और आन्दोलनका भी काम करेंगे। मैंने कहा कि सरकार कभी भी इन अड्डोंको चालू न रहने देगी। लक्ष्मी बाबू बोले कि यदि सरकार चर्खा-संघको जब्त करेगी तो अपनी टांग आप कुल्हाड़ी मारेगी। उस हालतमें ७०० कार्यकर्त्ता सारे प्रान्तमें बिखर जायेंगे और कोने-कोनेमें क्रांतिकी आग फैला देंगे।" पर केन्द्रके ही एक कार्यकर्त्ता लिखते हैं कि उस गोली-कांडके बादसे मधुबनीमें कोई नई बात नहीं हुई। मधुबनीको देखते हुए यही अनुमान होता था कि क्रांति दब गयी। २० अगस्तको लक्ष्मी बाबू आये। उनके आनेके पहले चर्खा-संघकी तलाशी हुई थी। लक्ष्मी बाबूने आकर कहा कि अब

आग नजदीक आ गयी; इसलिये उनका आदेश आगमें कूद पड़नेका हुआ और वे यातायातको भंग कर देनेका समर्थन करने लगे। २२ अगस्तको प्रभातफेरीके लिये एक आदमी भी न मिला। संघमें जो रह गये थे उत्साहहीन हो रहे थे। दोपहरको पता चला कि सिमरीसे एक बड़ा जलूस आ रहा है। साथ ही यह भी खबर लगी कि ६, ७ गोरे भी आ गये हैं। लक्ष्मी बाबूने मुझे जलूसका स्वागत करनेके लिये भेजा। जब मैं जलूसके नजदीक पहुँचा तब लक्ष्मी बाबूने तुरत-तुरत दो आदमियोंके द्वारा संदेश दिया कि गोरे आ गये हैं; आज गोली जरूर चलेगी। इसलिये जो शांतिपूर्वक गोली खा सकते हैं वे ही आगे बढ़ें। इसपर जलूस राहसे ही लौट गया। हाँ, जलूसमेंसे एक सिमरी खादी विद्यालयके श्री माताधर द्विवेदी मधुबनी पहुँचे और नागेश्वर मिश्र शास्त्रीके साथ लक्ष्मी बाबूका आशीर्वाद लेकर मधुबनी थानाकी ओर बढ़े और पुलिस द्वारा गिरफ्तार हो गये। इसके बाद गोरे पुलिस लेकर आये और लक्ष्मी बाबू, गोपाल बाबू आदिको गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारीके मौकेपर लक्ष्मी बाबूने कहा कि मैं आजाद हूँ गिरफ्तारी नहीं मानता। इसपर वे हवागाड़ीपर चढ़ा लिये गये। संघके बाकी कार्यकर्त्ता संघ छोड़ भागे। फिर मधुबनी शांत हो गया।

इसी समय सकरीके इलाकेमें आग लगाना, और घर लूटना जारी हो गया था। २२ अगस्तको मकरमपुरमें श्री जमुना सिंह आदिका घर जला दिया गया। सागरपुर आश्रमके श्री शिवनारायण मिश्र लिखते हैं—"आगलगीकी खबर पाकर हमलोगोंने घटनास्थलपर पहुँच कर लोगोंको ढाढ़स दिया और जले हुए घरोंकी मरम्मत कर देनेके लिये गांववालोंसे अपील की। दूसरे दिन सागरपुरके बहुतसे लोग खर बांस लेकर मकरमपर पहुँच गये। वहाँसे कुछ राख उठाकर डिस्ट्रिक्ट-बोर्डकी सड़कके किनारे रखवा दिया गया और वहाँपर अंगरेजीमें एक पोस्टर लिखकर गाड़ दिया गया—look at the ashes of the British Empire, यानी ब्रिटिश साम्राज्यकी राखको देखो। इसके बाद गोरोंने सरसो-पाही टोलमें श्री हरे मिश्र और उनके चार भाइयोंके घर जला दिये। जिस समय श्री हरे मिश्र आदिके घर जल रहे थे उस समय कुछ दूरपर जमा होकर लोग नारे लगा रहे थे। उनपर एक गोरेने गोली चलाई। एक आदमी घायल हो गया। फिर लोग वहाँसे हट गये। तुरत गोरे वहाँ पहुँचे और आसपासके घरोंमें आग लगा दी। इसके बाद सर्वश्री शान्तिनाथ झा और चेतनाथ झाके घर जला दिये। श्री चेतनाथ बाबू

घरपर नहीं थे। इसपर धमकी दी गई कि वे कल आकर मजिस्ट्रटके यहाँ हाजिर हों, नहीं तो उनके संबन्धी राघोपुरके बाबूके यहाँ पुलिस छापा मारेगी। राघोपुरके बाबूसाहबने घबड़ा कर चेतनाथ बाबूको हाजिर होनेके लिये बाध्य किया। चेतनाथ बाबू दरभंगा गये और पं० गिरीन्द्र मोहन मिश्रजीके द्वारा मजिस्ट्रेटके यहाँ हाजिर हुये। उनसे मजिस्ट्रेट और सुपरिन्टेन्डेन्टने कहा कि निश्चित तारीखके अन्दर शान्तिनाथ झाको जो तुम्हारे मित्र हैं हाजिर करो। चेतनाथ बाबू इतने भयभीत थे कि कुछ जवाब नहीं दे सके।। इधर साहबोंने समझा कि उनने हमारी बात कबूल कर ली है। इसलिये जब तारीख गुजर गई तो एक दिन चार बजे रातमें ही मिलिटरी पहुंची और उनके घरको चारो तरफसे घेर लिया। उनके नौकर और भगिनाको खूब पीटा और उनके घरमें घुसकर काफी चीजें लूट ली। फिर चेतनाथ झाजी गिरफ्तार हो गये।

बादको सकरीका लोहट मिल गोरोंका अड्डा बन गया और मधुबनीके एस० डी० ओ० मि० शेरखां कमाण्डर बनाये गये। एक दिन वे सदल बल भिठीके श्री रमेश शुक्लके यहाँ पहुंचे। उनके घरके कई सामानको जला दिया और भीतर घुसकर स्त्रियोंके शरीरसे बेशकीमती गहने उतरवा लिये। वहां उनने और दो तीन घरोंको जला दिया। ता० ३० को वे पण्डौल श्री राजकुमार मिश्रके यहां आये। मिश्रजी गिरफ्तार हो चुके थे। उनके यहां उस समय कोई नहीं था। ऐसी हालतमें भी मि० शेरखांने उनका सारा सामान बेदरदीसे लुटवा दिया। उनके घरके चौखट किवाड़ तक खोल लिये गये। फिर खां साहबने सकरी बाजारके एक कलवारके घरको जला दिया। वहांसे आप सागरपुर आये, हरिनन्दन बाबूसे बातें कीं और सागरपुर आश्रमको लूटकर फूंक डाला। जब आश्रम जल रहा था आश्रम वासी हंस रहे थे। चिढ़कर मि० शेरखांने कहा घर जलता देखनेमें बड़ा मजा आ रहा है? पासके लोगोंने कहा इनको तालीम ही ऐसी दी गई है। खां साहबका सर नीचा हो गया और वे वहांसे चले गये।

पर इस काण्डसे वह इलाका आतंकित नहीं हुआ। साठ सत्तर गांवोंका संगठन था कार्यकर्त्ता मिलते ही रहते और कुछ न कुछ करते ही रहते थे।

ता० २५ सितम्बरको स्वामी पुरुषोत्तमानन्दजी और दूसरे दिन मेरी गिरफ्तारी हो गई।

मि० सैलिसबरी सदल बल आये २७ अगस्तको। उनने डाक्टर वैद्यनाथझाके

घरको और खादी भंडारको जला दिया। उनके बाद पुलिसको अपना जोर आजमानेका
बेनीपट्टी मौका मिला। उसने डाक्टर साहबके घरको जब्त कर लिया
और उनके परिवारको इतना तंग किया कि उसे दो तीन महीनोंके लिये गांव छोड़
देना पड़ा। फिर पुलिसने परसौनीमें बाबू धर्मेश्वर महथाके घर और दूकानको लूटा,
बलियामें मोहन मिश्र और विलट झाको लूटा फिर अड़ेरमें पं० उमानाथ झा, नरहीमें
रत्नकांत झा, नरसाममें परमेश्वर महतो और ओजपडौलमें सरदारी यादव और
अशर्फीलाल दास लूटे गये।

२५ अगस्तको मि० सैलिसबरी सिमरी खादी विद्यालय पहुंचे। बेनीपट्टी थानेकी
बन्दूकोंकी खोजमें उनने वहांकी तलाशी ली बक्सोंको तोड़ डाला और चीजोंको
छिन्न भिन्न करके कहा—जिस तरह तुमलोगोंने हमारी चीजें जलायी हैं उसी
तरह हमलोग भी तुम्हारी चीजोंको जलायेंगे। तुमलोग भाग जाओ तुम्हें कुछ नहीं
कहेंगे। सिर्फ मकान तथा सामान जलाकर बदला लेंगे। रामदेव बाबूने पूछा आप
कौन हैं? इसपर मि० सैलिसबरीने उनको एक थप्पड़ मारा। फिर गोरोंने घूम
घूमकर स्त्रियोंके जेवर घड़ियाँ और फाउन्टेनपेन वगैरहको ले लिये और मकानमें
तीन तरफसे पाउडर छींट कर आग लगा दी। जब सब छप्पर जल कर गिर गये
तब जो सामान बाहर पड़े थे उन्हें उठा उठा कर आगमें फेंक सबके सब चले गये।
उनके चले जानेपर लोग आग बुझाने और सामान संभालनेमें लग गये। उसी
समय असेसर नन्दलाल राउतके उभाड़नेपर एक तरफके तीन चार सौ गांववाले
सामान लूटने आये पर औरोंकी मुस्तैदीके आगे उन्हें उलटे पांव वापस जाना पड़ा।

२५ अगस्तको मि० सैलिसबरी एस० पी० के साथ सदलबल झंझारपुर आये
और खादी भंडारके एक घरको जलाते हुये श्रीमहादेव मिश्रकी तलाशमें सर्वसीमा
झंझारपुर आये। वहां मालूम हुआ कि मिश्रजी स्वयंसेवकोंको लेकर 'विदेश्वर
स्थान' की ओर गये हैं। सबके सब वहां पहुँचे, जूता पहने ही धड़-धड़ाते हुये
शिवजीके मन्दिरमें घुस गये और किसी कांग्रेसीको न देख पुजारियों और
यात्रियोंको पीटने लगे। पुजारियोंने गाली मार सही पर मिश्रजी और उनके दलका
पता गोरोंको नहीं बतलाया। गोरोंको निराशा हुई और उनने थानाभरको परेशान
करनेका निश्चय किया। झंझारपुर स्टेशन झंझारपुर, मधेपुर और फूलपरास तीनों
थानाओंका अड्डा बन गया और काफी गोरे और हथियार बन्द जमकर
रहने लगे।

१ ली सितम्बरको एस० पी० साहब आये और थानापर दारोगा साहबको बैठा गये। अब दारोगा साहबने अपना रंग बदला। सर्वश्री रमाकान्त ठाकुर सिमरा, और महादेव मिश्र हनौलीके घरको लूट खसोट कर पस्त कर दिया। सर्वश्री सत्यदेव झा कर्णपुर, दिगम्बर झा रूपौली और निर्भयनारायण झा तथा शहीद जागेश्वर झा हैठीबालीके घरोंको लूटा। श्रीरामाधीन झापर घोड़ा दौड़ा दौड़ाकर उन्हें इतना थका मारा कि वे दारोगा साहबके बेंतकी मारसे और अधिक अपनेको बचा न सके। उनके शरीरका सारा चमड़ा फट गया और वे आगे चल कर मर गये। मेहथूमें दारोगा साहबने फेकन झा और भनेश्वरके घरोंको और रैयाममें श्रीरामचन्द्र झाके घरको लूटा और पस्त कर दिया। पीटना और घूस लेना तो दारोगा साहबके लिये सांस लेने जैसा सहज हो गया था। १२ सितम्बरकी ही घटना है जबकि आप हैठीबाली गांवमें गये थे। आपने कंटीर झा, रामानुज झा और मांगन तेली आदि साठ ग्रामीणोंको एक रस्सामें बंधवाया और उनके परिवारके सामने ही बेंत, लाठी जूता और बन्दूकके कुन्दोंसे पीटा और पिटवाया। पर दारोगा साहबने रैयाममें जो किया सो जनताको बहुत दिनों तक याद रहेगा। उस घटनाका साधारणसे साधारण वर्णन श्रीयोगनारायण झाने दिया है। आप लिखते हैं—"५ सितम्बर '४२ को ६ बजे सुबहमें पानी बरस रहा था। झंझारपुर थानाके दारोगाने अपने सशस्त्र पुलिस और चौकीदारोंको लेकर रैयामके दुसाध टोलेपर हमला किया। महल्लामें प्रवेश करते ही पुलिसने झूठी फायरिङ्ग की। उस समय लोग सोये हुये थे। असमयमें इस तरहके धड़ाकेकी आवाज सुन कर सब एकाएक चौंक पड़े और समूचे महल्लावाले चिल्लाने लगे और अपनेको बचानेके लिये इधर उधर भागने लगे। गांव बाढ़के पानीसे घिरा हुआ था। इसलिये ये लोग भाग भागकर उधर ही आ रहे थे जिधर पुलिस थी। पुलिस और चौकीदार इन लोगोंको खदेड़ खदेड़ कर पकड़ता और पीटने लगता। कितनोंके सर फूटे; कितने बेहोश हो गिर गये। लगभग दो घंटे ऐसा व्यापार चला।

फिर सभी एक जगह इकट्ठा किये गये और उन लोगोंके सामने उन लोगोंका मकान लूट लिया गया। कितने मकान तो तोड़ डाले गये। पानी पीने तकके लिये एक फूटा बर्त्तन भी न रहने दिया गया।

इसके बाद चौकीदारों और पुलिसवालोंने औरतोंको पकड़ना शुरू किया। इस धड़ पकड़में पाशविक और जघन्य अत्याचारकी कितनी घटनायें हुईं। ऐसे

नृशंस अत्याचारको भुगतनेके बाद सभी स्त्रियां और पुरुष एक रस्सीमें बांधे गये। दारोगाके कहनेसे स्त्रियोंके शरीरका कपड़ा उतार लिया गया। फिर उनके स्तनों तथा शरीरके दूसरे अंगोंको जनका और सरबजीत चौकीदारने खजूरकी बेंतसे फोड़ डाला। सब जगह लहू चपचपा आया।

फिर एक एक करके पुरुष रस्सीसे खोले गये। जनक, सरबजीत और हरिजन चौकीदारोंने गांवके दफादारके साथ साथ इन लोगोंपर लाठीका प्रहार किया।

मार खत्म हो जानेके बाद दारोगाके कहनेके मुताबिक पुरुष और स्त्री सभी एक रस्सीमें बांधे गये और थानेकी ओर रवाने किये गये। कुछ ही दूर जानेके बाद श्री लत्ती झा मिले जिनने कहा कि आदमी पीछे दस रुपयेके हिसाबसे दारोगा साहबको ५००) रु० दो तब वे तुमलोगोंको छोड़ देंगे; यदि तुमलोग कहो तो मैं दारोगाजीको रुपये दे दूँ, घर जानेपर मुझे रुपये दे दोगे। सबोंने लत्ती झाकी बात मान ली। सिर्फ सात आदमियोंने दारोगाजीको कुछ देनेसे इनकार किया जो चालान किये गये। इनमें ६ व्यक्तियोंको चार-चार सालकी सजा मिली।

इमादपट्टीको तो पुलिस और उसके पिट्ठुओं बरबाद कर देनेकी कोशिश की। गांववालोंको अन्न कष्ट था और जमींदारकी बखारियोंमें अन्न भरा था। जमींदार थे दो दो और दोनों बाहरके। गांववालोंने पहले तो अन्नको कर्जके रूपमें मांगा जब न मिला उनने बखारियोंपर कब्जा कर लिया। फिर सैलिसबरीकी राह पाकर एक रातको दोनों जमींदारोंने इमादपट्टीकी लूट करवायी। एक जमींदार थे सिमरी राजनगरके श्री लक्ष्मी नारायण सिंह। उनन ओलीपुर टोलाके लोगोंको पिटवाया और एक घरको जलवाया भी। ईमादपट्टीका तो तिनका-तिनका लूट लिया गया।

रातके लुटेरे गये तो दिनके लुटेरे आये जो दो महीने तक गांवको तबाह करते रहे। इसके बाद उनने खास खास लोगोंको गिरफ्तार करना शुरू किया।

जब झंझारपुरका खादी भंडार जला तब वहाँके कुछ कार्यकर्त्ता घबड़ाये और डाकबंगला छोड़ भाग गये। पर श्री रेवन्त नारायण ठाकुरने तीन-चार छात्र और कुछ कार्यकर्त्ताओंकी मदद पाकर बाजारमें जलूस निकाला "जिससे", वे लिखते हैं, "भागनेवालोंने जो हमारी प्रतिष्ठा खराब की थी सो पलट आई और डाक-बंगलामें हमारा काम जारी हो गया। उस दिन यानी २८ अगस्तको कार्यकर्त्तामें फिर जोश भर आया और पुलिससे बन्दूक छीननेके लिये उनने लोगोंको इकट्ठा

किया और झंझारपुर स्टेशन चल पड़े। इधर एस० पी० सदलबल आया और लक्ष्मीपुर कैथिनिया नामके समूचे गाँवमें उसने आग लगा दी। दूर-दूरके गाँवोंने कैथिनियाका जलना देखा। इससे बन्दूक छीननेके लिये जानेवाले हतोत्साह नहीं हुये। उनमें मधेपुरके लोग थे; दीपके लोग थे। बाजा बज रहा था नारा लग रहा था। कैथिनियाकी आगसे उनमें जोश पैदा हुआ। बाजेके साथ नारे बुलन्द होने लगे। उनकी भीड़ स्टेशनके पास आई। तुरत खाली आवाज हुई और फिर अन्धाधुन्ध गोलियाँ चलने लगीं। कितने लोग घायल हुये और तीन तो तत्काल शहीद हो गये जिनमें दो हैं श्री पंचेलाल झा और पूरन खवास—दोनों दीपके। इस घटनाके बाद एस० पी० दीप आया और ७४ घरोंके समूचे गाँवको जला दिया।"

फिर एस० पी० सदलबल मधेपुर आया। डाकबंगलासे लोग भाग चले। उनपर गोली चली पर कोई नहीं मरा। हाँ एक गिरफ्तार हुआ। एस० पी० ने श्री महादेव मिश्रका डेरा और श्री सीताराम और बनवारीके घर जला दिये। श्री जगदीश नारायण सिंह और श्री ठाकुर प्रसाद सिंहको थानापर बुलाकर खूब पीटा और गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद मधेपुर थानामें फिर पुलिस बैठ गई और लूटपाट आदि अत्याचार होने लगे। श्रीनगेन्द्र झा पकड़े गये, उनका घर पस्तकर दिया गया और उनको काफी देर तक पीटा गया जिससे वे बीच बीचमें कई बार बेहोश हुये। श्री खंतर महतोका घर लूटा गया। श्री रेवन्त नारायण ठाकुर और महावीरके घर तोड़े गये। फिर तो समूचा थाना आतंकित हो गया।

१८ सितम्बरकी बात है। मधुबनीके एस० डी० ओ० महंथ रामचन्द्र नारायण दासकी खोजमें सदल बल अदलपुर स्टेशन पहुँचे। स्थानपर महंथजी नहीं मिले। फिर उनके मकानोंके ताले तोड़ एस० डी० ओ० का दल भीतर घुसा और सारा सामान उसने लूट लिया फिर नौकरों और बच्चोंको खूब पीटा ताकि वे सब महंथजीका पता बता दें। निराश होकर झंझारपुरके दारोगाने सिपाहियोंको मन्दिरमें घुसकर महन्थजीको ढूढ़नेके लिये कहा। सिपाही मुसलमान थे; इसलिये अन्दर जानेसे इनकार करने लगे। तब उनके हुक्मसे मन्दिरमें गोलियां छोड़ी गईं जिनके दीवारपर अबतक निशान बने हैं। अन्तमें जूता पहने ही मुसलमान घुसे और मूर्तिके शरीरसे सारे आभूषण उतार लिये। फिर उनने

चार पाँच आदमियोंको गिरफ्तार किया और चलते बने।

२२ अगस्तको खजौलीमें फौजियोंके दो दल आये। एक दलके अगुआ थे

खजौली मि० सैलिसबरी और दूसरे थे श्रीकान्त ठाकुर।

दारोगा श्रीकान्त ठाकुरके दलके गोरोंने कलुआहीके पासके हरिपुर गांवमें लोगोंकी भीड़ देखी नारे सुने और गोलियां चलाई। पांच आदमियोंको सख्त घाव लगा जिनमें दो मर गये—श्रीनारायण मिश्र और शिव झा जो आठ नौ सालका बच्चा था। मि० सैलिसबरी उसी दिन खजौली पहुँचे। उनने देखा दो स्वयं-सेवक झंडे लेकर स्टेशनकी ओर आ रहे हैं। तुरत गोरोंने गोलियां दागीं, दोनों शहीद हुये। एक थे मंगतीके श्रीजयनन्दन सिंह और दूसरे नराढ़के श्रीनेबी ठाकुर।

मि० सैलिसबरीने खजौली खादी भंडारकी ओर जाते हुये श्रीजनकधारी चौधरी नराढ़ और श्रीरामेश्वर सिंह तारापट्टीको पकड़ा। दारोगाने कहा कि ये लोग पोस्टऑफिसका चार्ज ले रहे थे। मि० सैलिसबरी दारोगाके साथ गोरोंको लेकर रामेश्वर बाबूके यहां तारापट्टी पहुँचे। गोरे और दारोगा रामेश्वर बाबूके घरमें घुस गये और उनके सभी बक्सोंको तोड़ कर उनने बेसकीमती चीजें और रुपये पैसे लूट लिये। फिर मि० सैलिसबरीने उनके सभी मकानोंको सामान सहित जला दिया; पांच बखारियाँ फूंक डालीं और जहां तहाँ रक्खे हुये अन्नके ढेरको भी तेल छिड़क कर जला दिया। इससे भी जब सन्तोष नहीं हुआ तब उनने श्रीरामेश्वर सिंह और श्रीजनकधारी चौधरीको 'नाद' के ऊपर सुला दिया और कपड़ा उतार कर बीसों फट्टे मारे। श्रीरामेश्वर बाबूके घरके साथ साथ श्रीमहावीर सिंहका घर और श्रीनिरंजन सिंहकी बखारियां भी जल गईं।

२३ अगस्तको श्रीकान्त ठाकुर ठाहर गांवमें पहुँचे। वहां उनने श्रीसूर्यनारायण सिंहके घरमें आग लगा दी। घर जला और घरसे बथान और बथानके जलनेसे एक बैल जलने लगा। श्रीभगवन्त पासबान बैल खोलने दौड़ा। बस, उसे गोली मारी गई और वह मर गया। उधर बैल भी जल गया। श्री सूर्यनारायण सिंहके घरसे सटा मोहित सिंहजीका घर था। वह भी जल गया।

उसी रोज श्रीकान्त-दल खजौली पहुँचा और खादी भण्डारको लूट कर जला दिया। फिर २५ अगस्तको वह दल नराढ़ जनकधारी चौधरीजीके यहाँ गया। चौधरीजीके घरका तिनका तिनका लूट लिया गया और उनके मकान और बखारियां जला दी गईं। फिर तो लूट और आगका शोर मच गया। बरहीका खादी-भण्डार

लूटा और जलाया गया। चतराके बिलट रामका घर लूटा और जलाया गया और बासी ग्रामके दुसाधोंका पचीस घरका टोला जलाकर बिलकुल खाक कर दिया गया। कन्हौलीके श्री नौबत महतोके यहाँ तो बेहिसाब लूट हुई।

इस थानेकी एक विशेषता यह रही कि मिलिटरीके भोग-विलासका सारा खर्च देना पड़ा एक आदमीको। गोरे ददुआरके श्री रामजी सिंहके यहाँ आये; उनकी मोटर, रेडियो और दो बन्दूकें जब्त कर ली और उनके भाई श्रीवासुदेव सिंहसे शर्त करायी कि जब तक खजौलीमें मिलिटरी रहेगी उसके लिये दानापानी, अण्डा, चाय, साबुन, तौलिया, वगैरह वगैरह आपको देना पड़ेगा। उनसे ढिंढोरा भी पिटवाया कि हम कांग्रेससे अलग हैं और उनको सरकारी गवाह भी बननेके लिये कहा।

और और काण्डोंके साथ एक काण्ड जो महाशय श्रीकान्त ठाकुरने यहां किया है उसकी वजहसे लोग उन्हें जल्दी भूल न सकेंगे। खजौलीके श्री हजारीलाल गुप्ता कहते हैं—"× × × २४ अगस्तको दारोगा साहब मेरे घरपर आये और × × × × मेरे घरका सारा सामान बैलगाड़ीपर लाद कर थाने ले गये। × × × × २६ अगस्तको मुझको गिरफ्तार करवाकर खजौली थानेपर ले गये। × × × मेरे हाथसे वेस्ट एन्ड रिस्टवाच खोल लिया, जेबसे २५) रु० ले लिया और कुरता उतरवा कर मेरे सीनेपर तमञ्चा सटा दिया; फिर तरह तरहके सवाल पूछने लगे। × × × पहले उनने रोलसे मारना शुरू किया; फिर ठोकर मारने लगे। उस दिन थाने भरके चौकीदार आये थे। उनसे मेरे सरके सारे बाल उखड़वा डाले गये और कानोंको खिंचवाया गया। मेरा सारा कपाल सूज गया और कानकी बुरी हालत हो गई। आज भी कानसे पीप आता है।

"मैं इन कष्टोंसे मूर्छित सा हो गया। कुछ होश होनेपर मैंने इशारेसे पानी मांगा। दारोगाजीने अपना थूक जमीनपर डाल कर मुझे चाटनेको कहा। मेरे इनकार करनेपर उनने चौकीदारोंको जो हुक्म दिया उसके मुताबिक उन लोगोंने मुझे पछाड़कर मेरे ओठोंको उस थूकमें रगड़ दिया। फलस्वरूप मेरे ओंठ फूल गये।

इसके बाद दारोगाजीने मेरे चेहरेपर आधेमें चूना और आधेमें कालिख पोतवाया और चौकीदारोंके जलूसमें मुझको सारे बाजारमें घुमवाया। चौकीदार नारे लगाते—कांग्रेसके सेक्रेटरीकी दशा देखो।

मैं थाना वापस आया तब दारोगाजीने कहा कि माफी मांगो। इनकार करनेपर

उनने मुझको इतना मारा कि मैं बेहोश गिर पड़ा। फिर उनने पासके एक गन्दे डबरेमें मुझको फेंकवा दिया। × × × रात हो जानेपर मेरे कुछ मित्र आये और मुझको उसी अवस्थामें उठाकर अपने घर ले गये। होश आनेपर मैं जान सका कि मैं एक मित्रके घरपर । १३ दिन तक मेरा इलाज हुआ। फिर जब मैं सिर्फ दूध भर ले सकता था; दारोगा साहब ७ सितम्बरको मेरे घर आये; बोले—"आप जिन्दे ही हैं ?" मैंने कहा—हाँ। वे बोले—"तब चलिये कुछ दिनके लिये हवा खा आइये × × ×" अ र मैं गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया। बादको मुझे पांच सालकी सजा हुई।"

मि० सैलिसबरी टामियोंको लेकर जयनगर पहुँचे २४ अगस्तको और इधर उधर देख सुनकर मधुबनी चले गये। अपने साथ केवल झंडा उतारकर लेते गये जो शहीद

जयनगर नथुनी साहकी चितापर फहरा रहा था। दूसरे ही दिन हथियारबन्दोंको लेकर पुलिस दल निकला। उसने ताला तोड़कर बाबू रामयश सिंहकी खादीकी दूकान लूट ली। फिर देवधाके श्री रामेश्वर पंजियार और जयलाल साहु लूटे गये। भदौरमें श्रीसूबालाल ठाकुरका घर भी पुलिसवाले लूटने गये पर ठाकुरजी डट गये और गंडासेका वार किया जो दारोगाके साईसके कानपर पड़ा। फिर तो वे वहांसे चम्पत हुये। हां! जाते जाते उनके घरमें आग लगाते गये। बाबू रामप्रताप मंडर और राजेन्द्रप्रसाद सिंह जसे जैसेको गिरफ्तार करके पुलिसने जयनगरको आतंकित कर दिया। श्री महाबल कुंवर और बदरी चौधरी जैसे कार्यकर्त्ता पकड़ लिये गये और बाकी फरार होगये।

हरलाखीमें तुरत ही दमन शुरू होगया। मिलिटरीने पं० बुची मिश्र वैद्य और

खदनिया कपड़ेके व्यापारी रामदासको लूट लिया और दोनोंको खूब पीटा; फिर श्रीतृप्तनारायण झाकी बन्दूक ले ली।

यहां मि० सैलिसबरी आये ३ सितंबरको। थाना कांग्रेस आफिस, बनवारी साहु, सुड़ी और महम्मद यासीनके घर उसने जलाये। बादको सारा खादी भंडार लूटा गया।

मधवापुर सूबेदारी साहु, बासुदेव साहु सूड़ी, जंगबहादुर ठाकुर और रामयाद ठाकुरके घर लूटे गये। फिर वहां आन्दोलन बन्दसा होगया।

३० अगस्तको एस० पी० सदल बल आये। फिर श्री कपिलेश्वर झा शास्त्री फुलपरास, तेजनारायण मिश्र सिसवार, अवधविहारी तिवारी, फुलकाही और श्री

फुलपरास देवनारायण गुरमैताके घरोंमें उनने आग लगा दी। उनके आनेसे

पुलिसको काफी बल मिला और उसने लूट-खसोट, धड़-पकड़ शुरू कर दी। एक दिन पुलिस सिसवार गयी और सोते हुये श्रीतेजनारायण मिश्रको गोली मारकर घायल क' दिया और तब उन्हें गिरफ्तार करके ले आयी।

लौकहीमें फुलपरासले ही पुलिस इन्सपेक्टर वगैरह आये और दमन करने लगे। कितनोंको गिरफ्तार किया और श्रीहीरा सिंह सिख, सूर्यनारायण साह, सीरी चमार और लौकही मितिलाल गुरसैताके घर लूटे और श्रीकृष्णदासके दवाखाना और हवेलीको लूटकर जला दिया।

यहां खजौलीसे पुलिस इन्सपेक्टर दमन करनेके लिये पहुँचे। श्रीबच्चूलाल साहुका घर जला दिया गया और पं० हृद नारायण झाका दवाखाना और फौजदार साहुके लौकहा घर लूटे गये। ...ड़ाबीर साहुका घर नीलाम करा दिया गया और खुटौनाके छेदीलाल चौधरी भी लूटे गये।

गुमती गोली काण्डके बाद ही समस्तीपुरमें दमन शुरू होगया। आस पासके सभी कोठवाल साहब समस्तीपुरमें इकट्ठा होगये थे और सारेके सारे सहायक समस्तीपुर सेनाके थे। वे सबेरे कुछ टामियोंको लेकर निकलते और लूट, आगलगी मार, पीटसे मन बहलाकर शामको वापस होते। २३ अगस्तसे रेलगाड़ीका आना जाना शुरू हो गया और साथ ही जोर जुल्म अपने हदपर पहुँच गई। गोरे जिसे जहां खद्दर वा गान्धी टोपी पहने देखते उसे बेतरह पीटने लगते। टोपी फाड़ देना, गान्धीजीकी तस्वीर मसल देना आम बात थी। और गोरोंका सगा अपनेको साबित कर रहे थे डिपटी मैजिस्ट्रेट बाबू रामटहल सिंह। किसीके घरमें घुस जाना, इज्जतदारोंको बेतोंसे पीट देना। फौजियोंसे घर लुटवा लेना इनके लिये सहज हो गया था। दो रायबहादुर डा० आर० पी० घोस और श्रीमौजीलाल चौधरीने गोरों, पुलिसवालों और मजिस्ट्रेट साहबको ऐसे ऐसे काम करनेकी राय बड़ी बहादुरीसे दिया करते और अपना उल्लू सीधा किया करते। किंग एडवर्ड स्कूलके श्रीसतीशचन्द्र सरकार भी छात्रोंको पकड़वानेमें तत्परता दिखाते।

डढ़ियामें डोमी राउतका घर जलाया गया और बिहारी राउतके घरको लूट लिया गया। विष्णुपुर, चकनिजाम, डिहुलिया और पटपारामें कितनी ऐसी घटनायें हुईं। फिर मुजौनाके बाबूजी पाठक लूटे गये।

पर जो काण्ड मि० सी० जी० एटकिन्स और मि० आर० ... उनने

२७ अगस्तको किया उसके सामने समस्तीपुरके और अत्याचार नगण्य दीखते हैं। समस्तीपुरके बी० डी० शर्मा लिखते हैं—"२७ अगस्तको सबेरे × × × हम २१ बन्दियोंको समस्तीपुर सब जेलसे चलनेकी आज्ञा हुई। × × × एक एक मोटरपर दो तीन बन्दी और चार पाँच गोरे संगीन ताने रहते थे। ऊड और एटकिन्स साहब कमान्ड कर रहे थे। जब हमसब जटमलपुर घाट पहुँचे तब उतारे गये, देखा, एक चौकी रखी हुई है। उसे गोरोंने अपनी बन्दूकें भरकर घेर ली और निशाना लगाकर खड़े हो गये। फिर पहली मोटरके कैदी उतारे गये, खासकर बी० एन० झा, सुखदेव चौधरी, चन्द्रप्रकाश और मैं। हर एकको सुलाकर नंगा कर दिया गया और फिर चौदह पन्द्रह बेन लगाये गये। मैं और चन्द्र प्रकाश हँस रहे थे। इसलिये जब हमारी बारी आई तो इस तरह पीटे गये कि साथी घबड़ा उठे। हमारे बीच एक थे श्रीमथुराप्रसाद सिंह, जिनका रुपया धारते थे एटकिंस साहब। मथुरा बाबू रुपया वसूलनेमें कड़ाईसे काम लेते थे। इसलिये उनको पीटनेमें एटकिंस साहबने इतनी कड़ाईसे काम लिया कि कुछ ही बेंत खानेपर मथुरा बाबू बेहोश हो गये। सर्वश्री रामागार शर्मा, यदुनन्दन शर्मा, माधवप्रसाद शर्मा, उमाकांतप्रसाद सिंह, चन्द्रदेव सिंह, कमलनाथ ठाकुर, जगदीश पोद्दार, यदुनन्दन सिंह और के० पी० जायसवाल आदि सबके सब पीटे गये। फिर रातमें दस जो ज्यादा घायल हुए थे मोटरसे दरभंगा जेल पहुँचाये गये और बाकी ग्यारह टमटमसे।"

२६ अगस्तको टौमी इस थानेमें आये और दमन होने लगा। बीरसिंहपुरके मुनीन्द्रप्रसाद सिंह, ब्रह्मचारीजीका घर पांच-पांच बार लूटा गया। घर-बार, बारिस नगर जमीन-जायदाद सब जब्तकर लिया गया। इनके ससुरालवाले भी काफी तंग किये गये। गोरांईके बाबू रामसुभग ठाकुर तथा कृष्णदेव ठाकुरके घर कई बार लूटे गये। जटमलपुरके श्रीनन्दू मिश्र तथा श्रीमौजे चौधरीके घर लूटे गये और बरबाद कर दिये गये; जमीन जायदाद जब्त करली गई। जितवरियाके बाबू लक्ष्मीनारायण रायका घर कई बार लूटा गया। गोहीके ठाकुरप्रसाद शर्माजीका भी घर लूटा गया। रहुआके रामसरोबर शर्माको जो फैक्टरीमें काम करते थे कामसे हटाकर काफी परेशान किया गया। सर्वश्री हरिनन्दन ठाकुर, जगदीशप्रसाद ठाकुर और वशिष्ठनारायण सिंहको थाने लाकर टौमियोंने टेबुलपर सुला दिया और नंगा करके इतना पीटा कि तीनोंको

बोखार आ गया। रहुआ डेवढ़ीकी बखारियोंमें डिपटी मैजिस्ट्रेट रामटहल सिंहजीने टॉमियोंसे आग लगवा दी और भगवानकी मूर्तियोंको फेंकवा दिया। हासोपुरमें श्री रामसुभग ठाकुर और रामविलास ठाकुरके घर लूट लिये गये। सेंदुरवाके मास्टर रामशरण ठाकुरका भी घर बार लूट लिया गया।

२१ अगस्तको गोरे पुलिस लेकर डा० मुक्तेश्वर प्रसाद सिंहके घरपर आये और इन्हें थाना पकड़ ले गये। वहाँ आन्दोलन-कारियोंका भेद लेनेके लिये गोरोंने इन्हें पीटना शुरू किया और सरके बल इनको कई बार जमीनपर पटका। फिर भी जब यह चुप ही रहे तब वे गोली मारनेपर उतारू हुए परन्तु दारोगाने रोका और इनको हाजतमें डाल दिया।

ताजपुर

२८ अगस्तको फिर गोरे ताजपुर आये और डाक्टर साहबको नंगा करके ५० बेंत मारा। उनका चमड़ा फटकर आध इञ्च गढ़ा हो गया। बादको वे समस्तीपुर सब जेलमें बन्द कर दिये गये।

२२ अगस्तको चिरौलाके श्री छितनू सिंह पकड़े गये। उनका घर पूराका पूरा जलाकर खाक कर दिया। परिवार मुंहताज बन गया। फिर उनपर हाजतमें काफी मार पड़ी।

ताजपुर थानाके उत्तर भागमें पुसा है जहाँ भीषण रूपमें तोड़-फोड़ कार्य हुआ था। उधर मि० ई० पी० डेनबी दमन-चक्र चला रहे थे। आप १७ टामियोंके कमाण्डर बन गये थे और बथुआ, मुसकौल आदि जगहोंमें लोगोंके घर जलाते फिरते थे। सर्वश्री यमुना कार्यी, लक्ष्मीनारायण सिंह और डा० रामप्रकाश शर्माका सहयोग डेनबी-दलको बराबर मिलता रहता था और दमन-चक्र अबाध चलता रहता था।

ताजपुरके दक्षिण भागमें पटोरी बाजार है जिसके नजदीक तम्बाकूका कारखाना है। इसीके अंगरेज मैनेजरको खद्दरधारी बनाकर लोगोंने जलूसमें घुमाया था। गान्धीटोपी पहने तिरंगा झंडा उठाये जब वह गांधीजीकी जयका नारा लगाता तब जनताकी छाती दुगुनी हो जाती। आज वह लोगोंके भीषण दमनका कारण बन रहा था। यहीं वरुणा पुल है जो तोड़ दिया गया था। जब टॉमीकी लॉरी यहाँ आई तब रुक गई। लॉरीके रुकते ही जो लोग वहाँ थे हटने लगे और एक तो जोरसे भागे। टॉमियोंने तुरत उन्हें गोली मारी जो उनका प्राण ले उड़ी। नाम था श्री विद्यानन्द भारती।

गोलीकाण्डके तीसरे दिन ही गोरे आये और बाजारमें प्रदर्शन करके बाजितपुर चले गये जहां उनने मऊमें नोखेलाल झाजीकी दूकान और रामसिलान साहुजीके दलसिंग सराय घर और गोलाको जला दिया। वे उधर दूसरी बार भी गये और जानकीजीकी दूकान जलाई गई।

फिर पुलिसको बल मिला और दलसिंग सरायको लूटना खसोटना शुरू कर दिया। एक गरीब हलुआई रामप्रसादने मिठाई देनेमें आनाकानी की। तुरत थानेसे श्रीराजेन्द्र सिंह और राधाठाकुर दौड़े, उसकी छातीमें बन्दूक लगा दी और दो-तीन बेंत ऐसा खींचा कि उसका बदन फूट गया।

श्रीलक्ष्मी नारायण लिखते हैं, "एक दिन मैं अपने कुआँपर खड़ा था कि थानेमें कोई चीत्कार करता मालूम हुआ। लहरे परसे उचककर देखा—एक कनस्टबिल बाना भांजता हुआ आता है और एकके नंगे चूतरपर जमा देता है। बानाके लगते ही बड़ी दर्दनाक आवाज उठती है। मैंने उसे पहचान लिया। वह था भजनगामाका रामखेलावन पाठक। उसे इस तरह पचीसो बाना लगे। फिर वह हाजतकी ओर ले जाया गया और जब उसके दरवाजेपर पहुंचा तब अनवर मियां चौकीदारने दोनों हाथोंसे उसके चूतड़को पकड़ लिया और उसके गूदामें थूक दिया। पुलिस-मण्डली ठठाकर हँस पड़ी और हँसती रही। पीछे मालूम हुआ कि बानासे मारनेवाले रघुवर खां थे। और यह भी मालूम हुआ कि गूदामें थूक देनेपर खुश होकर दारोगा श्री जगतनारायण सिंहने अनवर मियांको एक रुपया इनाम दिया।"

दलसिंग सरायके बहुत पुराने कार्यकर्त्ता श्रीरामानन्द ब्रह्मचारीपर जो बीता सो उनके शब्दोंमें सुनिये। "× × × × २५ अगस्तको थानाके सामनेसे जा रहा था कि छोटे दारोगाने बुलाया, कुर्सी दी और कहा कि बड़े दारोगा आते हैं मिल लीजिये। वे आये और काफी बातचीत हुई। मैंने कहा कि जबतक मैं बाहर रहूँगा कांग्रेसका जो काम होगा करता रहूँगा। दोनों दारोगा पुलिसको कुछ इशारा करके डेरा चले गये। फिर तुरत राजदेव सिंह, राधा ठाकुर और राजेन्द्र सिंहने मुझे कुर्सी परसे ढकेल दिया और लात, घूसे और तमाचे और पीछे डंडेसे मारने लगे। जहां तहां मेरा शरीर फूट गया, नाकसे बेतरह खून निकलने लगा। मैं बेहोश हो गया। × × × होश होनेपर मैंने देखा कि मैं हाजतमें पड़ा हूँ। मेरा चश्मा वगैरह सारा सामान ले लिया गया है और

मेरे पास जो परचे थे उन्हें भी निकाल लिया गया है। परचेमें सुभाष बाबूके सेना सहित आनेकी खबर थी और लिखा था कि आरा आजाद हो गया। दोपहरको एटकिन्स और ऊड साहब गोरे सहित आये और पुलिससे मेरा परिचय लेकर मेरे पास पहुँचे। ××× मुझे हाजतके बाहर घसीट लाया गया और दूसरे कमरेमें ले जाकर एक चौकीपर गिरा दिया गया। एक सिपाहीने दोनों हाथ और गर्दनको पकड़ा और दूसरेने पैर पकड़े। फिर चूतड़का कपड़ा हटा दिया गया। फिर बेंत पड़ने लगे और सवाल पूछे जाने लगे। मेरे चूतड़के दोनों तरफके मास कट गये और वहाँसे खून बह निकला।×××× मैं फिर बेहोश हो गया। जब होशमें आया तो शाम हो गई थी और तीन चार नये नये कैदी हाजतमें घुसाये जा रहे थे।"

सितम्बरसे पुलिसने गिरफ्तारी और घूसकी घूम मचाई।

१६ अगस्तको एटकिन्स साहब सदल बल आये और रोसड़ाका अग्निकाण्ड शुरू हुआ। श्री केशवदास शर्माके घर और दूकानको लूट कर जला दिया गया। रोसड़ा श्री जागेश्वर पूर्बे और केशो पूर्बेके मकान और गोदामकी भी ठीक यही हालत हुई। श्री रामकिशुन मंडरका मकान भी न बचा। फिर श्री बालेश्वर सिंहका मकान क्यों न जलता जो अधिकारीकी आँखमें खटक रहे थे।

दूसरी बार एटकिंस साहब सदलबल रामटहल सिंह डिपटीके साथ आये। बालेश्वर सिंहजीके चाचाको पीट कर गिरफ्तार किया, रामेश्वर नायकको भी पकड़ा और उसके घरमें घुस कर स्त्रियोंकी देहके गहने छीन लिया। फिर सब केशवदेव शर्माके यहाँ आये। उनके भाईको गिरफ्तार किया और उसकी अँगुलीसे सोनेकी अँगूठी निकाल ली। वहां ठाकुरबाड़ी थी जिसके महंथको खूब पीटा गया और भगवानके सामनेके चौखटपर बूटकी ठोकरें मारी गईं।

श्रीरामटहल सिंहने जिनको जिनको गिरफ्तार किया उनको पाखाने पेशाब तककी सुविधा नहीं दी जिससे एककी धोती खराब हो गई।

फिर थानेकी लूट खसोट शुरू हुई जिससे सर्वश्री जागेश्वर महतो, लक्ष्मी पूर्बे, नारायण नायक वगैरह पुलिसके आगे पीछे रहते आये।

इस थानेमें कुछपर असाधारण मार पड़ी। रामावतार पूर्बे तो चार चार बार बेहोश हो गये और जब उनने प्रार्थना की कि उनको गोली मार दी जाय तब एकने डांट कर कहा—क्या तुम गोलीकी कीमत कुछ नहीं समझते?

यहां एक रोसड़ा पुलपर गोरी-संगीनोंकी भेंट हो गये। नाम था वशिष्ठ नारायण ठाकुर मौ० आरिजपुर—बिसंदरपुर जिला मुजफ्फरपुर।

२० अगस्तको एटकिन्स साहब हसनपुर रोड पहुँचे। श्रीसुन्दरलाल, भगवान दास, शंकर लाल और शेर मलके घरको जला दिया और १० फूसके मकानोंको फूंक डाला।

१४ सितम्बरको श्रीरामटहल सिंह, डिपटी आये जिनने श्रीप्रियव्रतनारायण सिंह, कुलदीप सिंह और अंबिका सिंहके घरको मनमाना लूटा। खूब गहरा माल हाथ लगा।

फिर तो सारा थाना आतंकित हो उठा जिसकी प्रतिक्रियाने गुप्त आन्दोलनको जन्म दिया और इधर उसके चलानेवाले हुये श्रीशोभाकान्त झा और भरत शरण सिंह।

११ सितम्बरका सिंगियामें सरकारी थाना लौट आया। वही दारोगा श्रीविन्ध्येश्वरी मिश्र और उनके चार कनस्टबिल, फिर ११ हथियारबन्द सिपाही सिंगिया और उनका हवलदार श्रीनन्दकिशोर झा और एक मुंसिफ मजिस्ट्रेट बाबू जगदीश नारायण। तुरत दारोगा हवलदार और मुंसिफ मजिस्ट्रेटकी साठ-गांठ बैठ गई। डाक्टर देवनारायण सिंह, मास्टर रघुवर सिंह और एक शत्रुघ्नप्रसाद सिंह उनके अनाचारके वाहन बने और सिंगिया त्रितापके उत्पीड़नसे कराहने लगा।

१५ सितम्बरको परमानन्द सिंह, चन्द्रनारायण सिंह, कमलादत्त लाल, रामलगन सिंह और सोनेलाल गिर दोनों भाई सहित, पकड़े गये और बन्दूकके कुन्देसे पीटे गये। गिर परिवारकी सम्पत्ति भी लूट ली गई। दूसरे दिन श्रीबम्बबहादुर सिंह पकड़े गये। उनको खूब पीटा गया, उनकी दाढ़ी उखाड़ उखाड़कर मुंह लहू लुहान कर दिया गया और दाढ़ीके बचे हुये बालोंको दियासलाईसे झुलसा दिया गया। मटरा धानुक यदु खतबे और रामधनी ततमाको मारते मारते बेहोश कर दिया गया। देवकी सिंहको बांधकर पेड़से लटका दिया गया और बड़ी बेरहमीसे पीटा गया और २१ सितम्बरको जब रामखेलावन सिंह पकड़े गये तब वह भी इसी तरह पेड़से लटकाकर पीटे गये। श्रीबचनू सिंह और श्रीरामबल्लभ सिंहपर भी बड़ी मार पड़ी। २५ सितम्बरको बाबू राधा सिंह पकड़े गये। उनपर जैसे जैसे अत्याचार हुये उनको याद करके मानवता थर्रा उठती है।

राधा बाबूको पहले खूब पीटा गया, घूसे थप्परके बाद जूते और हन्टरसे। वे बेहोश गिर पड़े और घसीट कर हाजतमें डाल दिये गये। फिर एक डोमको पकड़ मंगाया गया। उसका नाम था केवला। वह कहता है—"हम बाधमें सुअर चरावे वास्ते जाय पर रही कि दो चौकीदार और एक हवलदार गपये हमरा पकड़ि लेलक। चौकीदार और हवलदारके हम पहलेसे नहि जानैत रहियैक। दारोगा बाबू पुछलखिन जे, डोम है? हम सलाम कैलिऐन्ह। हमरा लगमें बजाक कहलैथ जे, पेसाब करो! हम कहलियन्ह जे, सरकार हम गरीब आदमी छी, हमरासे पेसाब नहिं होतैक। तब कहलखिन्ह—सूट करो इसको, मारो सालेको। तब ओसाराके भीतर हाजतमें लये गेलाह। तब एक चौकीदार (केशव चौकीदार) हमर धोती खोलि देलक। तब कहलैथ पेसाब करो, नहीं तो सूट कर देगा। बहुत धींचातीरी कैलेथि; दु चारि गरदनियां मारलैथ वो कहलैथ जे पेसाब करना होगा। हमरा डरके मारे पेसाब नहिं होइत रहे। एकबार बाहर करके फेर घुरौलेथ। पीछा एक डोल पानि हमरा देहपर फेंकवैलाह। तब पेसाब जबरदस्ती हमरा हाथमें करवायके चौकीदारसे जबरदस्ती राधा बाबूपर फेंकवा देलखिन्ह। हमरा इन्द्रीपर भी पानि फेंकवैने रहथिन्ह। वहां दारोगाजी, रघुवर मास्टर व हवलदार साहेब रहथिन्ह। वहां और भी बहुत आदमी व हाकिम रहथिन्ह।"

सिंगियाके त्रिगुटका उपद्रव तो थाने भरमें होता रहा पर फुलहारा, लगमा, माहे, सिंगिया, वारी, बंगरहटा, हिरनी और कुशेश्वर स्थान विशेष रूपसे सताये गये।

चम्पारण जिलेमें १८ अगस्तको गोरे पहुँचे मोतिहारी और १९ को बेतिया। उन जगहोंसे उनकी गाड़ियां थाने थाने दौड़ने लगीं।

चम्पारण

आदापुरमें मि० मैरिक साहब कोठवाल पहुँचे नौ गोरोंको लेकर। उनने वहांका आश्रम जला दिया और रक्सौल चले गये। वहांसे दूसरे दिन फिर आदापुर आये जहांसे पचपोखरिया जाकर उनने श्यामलाल राउतको गिरफ्तार किया और ठेलागाड़ीपर बैठाकर ले चले। गांववालोंको भय हुआ कि कहीं उन्हें छौड़ादानो लेजाकर मि० मैरिक मार न डाले इसलिये उन लोगोंने श्यामलाल राउतको ले भागनेकी कोशिश की। मैरिक साहबने तुरत गोली चलवायी जिसे श्रीयदु राउत मारे गये और जनक राउत तथा गुगुली चमार घायल हुये।

वहांसे मैरिक-दल छौड़ादानो पहुँचा। जब लोगोंको मालूम हुआ कि गोरे आये हैं उनने उनके विरोधमें जलूस निकाला। जलूसमें एक भी कार्यकर्त्ता न था

सबके सब गांववाले थे। जलूस जब गोरोंके सामने आया तब मि० मैरिकने उसे लौटनेको कहा। पर वह आगे बढ़ा जिसपर मैरिकने फिर गोली चलवायी। दो तत्काल शहीद होगये—द्वारिका कहार और हरिहर हजाम, घायल हुआ एक—जगदीश चमार। गोरा दल तो चला गया पर श्रीराघोजी तिवारीकी मुस्तैदीसे घायलकी सेवा हुई और शहीदोंका अन्त्येष्टि-संस्कार सम्पन्न हुआ।

३ सितम्बरको कैम्पस साहब दलबल रक्सौल पहुंचे और पं० जगदीश झा ओवरसियरका सामान लूट लिया, उनको पीटा और गिरफ्तार करके ले गये। भोलासाहु, वैद्यनाथ राम सोनार, श्री शिवनन्दन राम और विद्या प्रसादकी सम्पत्ति लूट ली। श्रीजगन्नाथ प्रसाद और श्री सरयू प्रसाद भी लूटे गये।

रक्सौलमें गोरे फिर आये सितंबरके अन्तिम सप्ताहमें। परेवआ टोलाके लोगोंके घरोंमें घुसकर उनने अमानुषिक अत्याचार किया। पाठापाठी और दूसरी दूसरी चीजोंको उठा ले जाना तो उनके लिये कोई बात ही नहीं थी। सुगौलीमें डि० आई० जी०; एस० पी० और मैरिक सभी गोरखोंको लेकर पहुँचे और श्रीहीरानन्द मिश्र, श्रीकान्त झा और श्रीयमुनाकान्त झा आदि कार्यकर्त्ताओंको बेंतसे मारा।

पिपरामें राजबल्ल सिंहजीके साथ गोरोंने बुरा व्यवहार किया। ढाकामें गोरे पहुँचे ११ अगस्तको। उनके टैन्क (लड़ाकू गाड़ी) के नीचे आदमी दबकर मर गया। उनने आते ही कांग्रेस आश्रम जला दिया। वहाँसे वे पहुँचे फेनहारा जहाँ उनने गोली चलाई और पाँच आदमियोंको घायलकर दिया। कोई मरा नहीं, इलाज करवाकर सभी चंगे हो गये।

लौरियामें बाबूलालको पुलिसने मारा और गोरोंने रात भर पेड़से लटका रखा।

चम्पारणमें भी गोरोंने अपनी पैशाचिक क्रूरताका परिचय दिया मधुबन थानाके महेशी स्टेशनपर। २३ अगस्तकी रातको ही गोरे महेशी आये और अर्जुन प्रसादके गोदामपर धावा किया। डरके मारे एक मजदूर गोदामसे निकल भागा जो गोलीसे मार दिया गया। श्रीमोहन तिवारीके घरके किवाड़को तोड़ गोरे भीतर घुसे और सारा सामान जला दिया। कुल २५ गिरफ्तारियां हुईं।

२४ अगस्तको सभी गिरफ्तार लोगोंको गोरोंने मुजफ्फरपुर ले चलनेके लिये रेलगाड़ीपर बैठाया। किन्तु कुछ ही देरके बाद श्रीरामावतार साहु उतार लिये गये। गोरे उन्हें झाड़झाड़ीकी आड़में ले गये। उनपर क्या बीती सो उनके संगी

साथी न जान सके। हां! जबतब चीखने चिल्लानेकी आवाज आ आकर उनकी छातीको दहलाती रही। फिर उनके साथियोंने देखा चार आदमी एक लोथकी टांग टूंगकर ला रहे हैं—खूनसे लथपथ—वेदनासे विकल। अपने रामावतारजीकी वैसी दुर्गति देख कुछ बन्दी रोने लगे। उन्होंने चुप रहनेका इशारा किया। पर मुजफ्फरपुरमें उनके सभी साथी जेल पहुँचाये गये और उनकी लाश पहुँचायी गई डाक्टरके यहां जिसने चीर फाड़कर रिपोर्ट लिखी कि नाभि-क्षेत्रमें घातक मार पड़नेसे मृत्यु हुई।

गोविन्दगंजका शानदार जनता-राज शान्ति-पूर्वक समाप्त हुआ। श्रीरामर्षिदेव चालीस साथियोंके साथ सभामें बैठे थे। खबर मिली कि गोरे आ रहे हैं। भागना गोविन्दगंज 'बादशाह' को कैसे शोभा दे सकता था? २५ साथियोंको लेकर वे गोरोंकी प्रतीक्षा करने लगे और श्रीब्रह्मा तिवारीको चौदह-पन्द्रह साथियोंके साथ वहांसे हटा दिया। भीड़पर नजर पड़ते ही गोरोंने बन्दूकें संभालीं पर डिपटी मैजिस्ट्रेट बलभद्र झा चिल्ला उठे—No firing! No firing! गोली मत छोड़ना! गोली मत छोड़ना! बन्दूकें नीचे झुक गईं और इज्जतके साथ ऋषिजी अपने दल सहित बेतिया लाये गये। थानेके हिन्दुस्तानी सिपाही, दारोगा और घुड़सवार ऋषिजीको जिन्दा ही गिरफ्तार देख फूले न समाये। सबोंने उनको बड़ा आराम दिया। गोरोंने भी भलमनसाहत दिखलाई।

ऋषिजीके कामको श्रीब्रह्मा तिवारीने आगे बढ़ानेकी कोशिश की। पंचायतोंके संगठनको मजबूत किया और कोठवालों तथा अन्य सरकारके पिट्ठुओंकी हाटें उनने उजाड़ी और उनकी जगह दूसरी दूसरी हाटें लगाईं। पर तबतक बलूची और पुलिस गोविन्दगंज भरमें छा गये थे जिनके द्वारा ब्रह्मा तिवारी दल सहित गिरफ्तार हो गये।

मुंगेर

श्रीप्रभुनारायणकी शहादतके जोशपर ही खगड़िया मैदानमें देर तक न टिक सका। कार्यकर्त्ताओंके पैर उखड़ गये और १६ अगस्तको उनने श्रीउचितनारायण सिंहको डिक्टेटर बनाकर 'गुप्त रूपसे कार्य' करनेका निश्चय किया। फिर कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंके घरोंको जलाते हुये गोरे वहां पहुँचे और सर्वश्री श्रीकान्त विद्यार्थी, उचितनारायण सिंह, बालेश्वर प्रसाद सिंह, रामदेव प्रसाद सिंह तथा जनार्दन प्रसादके घरोंको उनने फूंक डाला। श्रीकेदारनाथ सिंह 'आजाद'का घर लूट लिया गया। रानी सकरपुरामें अनेक घर जलाये गये और श्रीकमलेश्वरी

प्रसाद सिंह तथा श्रीपरमेश्वरी प्रसादको काफी नुकसान पहुँचा। गंगौर आदि गांवोंमें भी कितने घर जलाये गये। बादको धड़-पकड़ शुरू हुई।

गोगरी थानाके पनराहाको अभी चैन न मिला था। गोरे मोटर बोटसे आसपासके पानीको मानो मथ रहे थे। ३० अगस्तकी बात है, उनने एक नावको जाते देखा, उसे खदेड़ा और उसपर सवार कबेलाके श्रीशुकदेव कुंवरको गोलीसे मार डाला।

मानसी स्टेशनपर गोरोंका अड्डा था। वहांसे ही आकर उनने बारबार महेशखूंट बाजारको लूटा और पासके राजधान बस्तीमें जघन्य क्रीड़ायें कीं। परबत्तामें बलूची रहते थे जिनने डुमरिया, बन्देहुरा और कन्हैयाचक आदि बस्तियोंमें लोगोंके घर घुस जाते और मारपीट किया करते। आतंक फैल गया था जिसको नयागांव, अगुआनी, डुमरिया, खजरैटा, और गोगरीमें प्रचार केन्द्र खोल-कर स्वयंसेवक दूर करनेमें लगे रहे।

इधर गोगरी राष्ट्रीय विद्यालय लूट लिया गया; जमालपुर बाजारमें फिर कन्हैयाचक और डुमरियामें कई व्यक्ति लूटे गये। ११ सितम्बरको महेशखूंट आश्रम जला दिया गया और महेशखूंट बाजारमें हुंकार मलके घरको लूटकर जला दिया गया। श्रीरामधन और श्रीनिवासके घर भी लूटे गये।

चौथम थानेमें ही मानसी है जहां गोरोंका अड्डा था। इसलिये स्वभावत: पासके खुटिया बाजार और उसके चारों ओरके इलाकेमें गोरोंने भीषण आतंक फैला रक्खा था। चौथम थानाके कुछ कार्यकर्त्ताओंने प्रदर्शन तथा प्रचार करके उस आतंकको दूर करनेका संकल्प किया। फलत: चौथम आश्रमसे सात आदमियोंका एक जलूस निकला जो ठाठा होकर चैधा गया और वहांसे खुटिया पहुंचा। आतंक इतना था कि पुराने पुराने कांग्रेस कार्यकर्त्ता भी जलूससे मिलनेमें डरते और कन्नी कटाकर निकल जाते। इसलिये जलूसको खाने-पीने और सोनेकी बड़ी तकलीफ रही। फिर भी जलूसवाले जानको हथेलीपर लेकर दो दिन इधर-उधर प्रचार करते रहे, कांग्रेसी झंडे फहराते रहे और कांग्रेसी नारे लगाते रहे। २६ अगस्तको ठाठाके पास रेलवे लाइन पार करके जब वह आश्रम लौटे आरहे थे कि गोरोंकी रेलगाड़ी पहुंची जिसपरसे जलूसपर गोलियां बरसीं। एक गोली श्रीबलदेव पण्डितकी नाभिको छेदती हुई एक भैंसको लगी। भैंस तो तत्काल मर गया गई पर पंडितजी जो एल० पी० स्कूलके गुरु थे कुछ घंटे बाद मरे।

शहीद बलदेव पण्डितके अधिकांश साथी बंगलिया-रोहियारके थे। वहीं ३० अगस्तको एक बड़ा हवाई जहाज गिरा जिसमें तीन अंगरेज थे। तीनों जहाजके पंखोंपर चढ़कर उस जलमग्न स्थानको पार करनेका उपाय सोच रहे थे। अंगरेजोंको देखकर शहीद पण्डितके शोक-संतप्त साथियोंकी प्रतिहिंसा जाग उठी। वे बंगलिया और रोहियारके काफी लोगोंको लेकर नावसे जहाजके पास गये। अंगरेजोंने मानसीका रास्ता पूछा। लोगोंने मानसी पहुँचानेके लिये उन्हें नावपर ले लिया और उनके हथियार भी ठग लिये। फिर वे एकाएक उनपर टूट पड़े और भाले-बरछेसे उनका काम तमाम कर दिया। लाश घघरी नदीमें डुबा दी गई। फिर जहाजकी लूट शुरू हुई। उसपर काफी हथियार थे। मनों गोलियां थीं। सभी चीजें ले ली गईं। हां! एक लोहेका बक्स था जो खोले न खुला। फिर जहाजको खींच खांचकर लोग ले आये और धमाराकी धारमें बहा दिया। पर जहाज डूबा नहीं। हां! अंगरेजोंके खोजे न मिला। उसे हिन्दुस्तानी अफसरोंने ढूंढ़ निकाला।

इस घटनाके दूसरे ही दिनसे मोटर लंचपर गोरे उस जलमग्न क्षेत्रमें आने लगे। २ सितम्बरको उनकी फौज रोहियार पहुँची और गांववालोंपर अन्धाधुन्ध गोली चलने लगी जिससे दसके प्राण पखेरू उड़ गये। वे थे श्री कारेलाल वर्मा, लालजी गोप; नगरू गोप; जागू गोप; हूँकरी तेलिन और उसकी गोदकी तीन वर्षकी बच्ची; सात सालका लड़का महादेव; सुरनी देवी और उसकी गोदका बच्चा उम्र तीन साल और टुट्ठीके डोमन ठाकुर। जान लेकर ही गोरे शान्त न हुये। उनने लालजी गोप, जानकी साह, सैनी वर्मा, तीलो मण्डल, छट्ठू साह, तिलो साह और जगदेव साह आदिके घर जलाये, कितनोंके घर लूटे और स्त्रियोंके साथ अपना मुंह काला किया। गांव खाली हो गया।

रोहियारसे तीन मीलपर बदला घाट रेलवे स्टेशन है। उसके पास ही बलहा बाजार है। वहां अनन्त पाण्डुरंग नाद्ू और नारायण पाण्डुरंग नाद्ू दो भाई रहते थे। कपड़ेकी दूकान थी और आसपासमें जमीन जो उनके पिता स्व० श्रीहरि पाण्डुरंग, रेलवे ठीकेदारकी कमाई थी। दोनो भाई सेवा भावनासे ओत प्रोत थे। बलहा बाजारमें अखाड़ा खोल रक्खा था। वे सब नवयुवकोंको व्यायाम सिखलाते थे और ग्रामीणोंको समाज सेवा। निस्सन्देह अगस्त आन्दोलनसे उनको दिलचस्पी थी; निस्सन्देह बदला घाट और धमारा घाट

स्टेशन रेडमें उनका हाथ था पर इसमें कोई शक नहीं कि रोहियारकी दुर्घटनासे उनका कोई सम्बन्ध न था। उसकी जानकारी उनको पीछे हुई और जानकर वे दुखी हुये। पर कुछ ईर्ष्यालु लोगोंने जिनमें श्रीनाथबिहारी सिंह और सिरनियांके अब्बास मियांका भी नाम लिया जाता है उनके खिलाफ गोरोंके कान भर दिये। गोरे ३ सितम्बरको बलहा बाजार आये; दूकानसे नारायण पाण्डुरंगको पकड़ा और घरमें घुसकर अनन्त पाण्डुरंगको जो उस समय रुग्नावस्थामें थे। और दोनोंको अपने साथ पर मानसी ले गये।

दो दिनोंके बाद गोरोंने अचानक रोहियारके तिलो महताको पकड़ लिया और उसे खूब पीटने लगे। उसने कबूल किया कि मैंने हवाईजहाज-दुर्घटनाके बारेमें जो कुछ सुना है उसे बता दूंगा तब पीटना बन्द कर गोरे उसे मानसी ले गये। रोहियारके अपर प्राइमरी स्कूलके हेड पण्डित शालिग्राम सिंहजीके सामने बाबू नागेश्वरी प्र० सिंहको १९४३ में ही तिलो महतोने अपना वक्तव्य दिया। वह कहता है—"× × × × मानसी जब पहुँचे तब मुसाफिरखानामें बैठाये और वहीं हमसे अनन्त बाबू और नारायण बाबूसे मुलाकात हुई। तब हम उनको नहीं पहचान किया क्योंकि बहुत ही बेरहमीसे उनके शरीरपर मार लगी थी जिससे उनका कपड़ा लत्ता खूनसे तर था और बहुत ही जख्मी थे। जब उनने बात चीत किया तब हम पहचान किया। बाद इसके जब हम और वे दोनों आदमी बैठे तब एक साहबने आकर हमारा टिक काट लिया और कहा कि हम तुमको विलायत ले जावेंगे; नहीं तो बताओ साहब कहां है? दूसरा साहब आंखपर छूरा चला दिया। हम अपनेको बचाया। लेकिन छूरेका नोक हमारे नाकमें थोड़ासा लग गया। फिर गोली चलाया, हम बाल बाल बच गये। उस गोलीसे कुत्ता मर गया। तब दूसरा साहब आकर बचाया, कहा कि यह सरकारी गवाह है इसको मत मारो। × × × × × × × जब उन लोगोंका इरादा होता था हम लोगोंको भी साथ लिये जाते थे और फिर लौटा कर मानसी लाते थे। × × × × एक रोज फिर करीब सात आठ बजेमें गाड़ीमें चढ़ा कर पसराहा स्टेशनसे पूरब काटिनसे (Cutting) पश्चिम गाड़ी लगा दिया गया। खिरिकको खोल कर दोनो भाईको उतार लिया गया। हम उतरते थे लेकिन हमको बैठा दिया गया और खिरिक बंद कर दिया गया। उस वखत दो साहब बन्दूक लेकर उस जगह तैयार था और गाड़ी बढ़ाकर काटिनके तरफ ले गया और इधर चार बार बन्दूकका

आवाज हुआ। आवाज बन्द होनेपर गाड़ी फिर लौटी और लौट कर बारह बजे मानसी पहुँच गई तब बिरिक खोल कर खानेके वास्ते पूछने लगे × × × × जो साहब काटिनपर वे दोनो आदमीको उतारे थे उनसे हम पूछा—वह दोनों आदमी कहां हैं तो कहिन कि उनको काटिनपर शूट कर दिया ×××।"

आस पासकी क्या जनता और क्या कार्यकर्त्ता सभी विश्वास करते हैं कि पाण्डुरंग बन्धुओंको भीषण यंन्त्रणा दी गई। अनगिनत बार संगीनसे उनके शरीर भोंके गये, फिर बारा बारी उनकी आंखें फोड़ी गईं और तब गोली मारनेकी दया दिखलायी गई। १९४५ में लेखक तिलो महतोसे मिला था और सब बातोंकी पूछताछ की थी। उसने लेखकसे कहा कि जबतक वह दोनों भाइयोंके साथ रहा उनकी आंखें फूटी न थीं; हां! चोटसे सूजी हुई और बदरंग होगई थीं; सारा शरीर और मुंह और कपड़े फट फट गये थे; पहचानना मुश्किल था; हां! आवाज वैसी ही कड़ी थी और उसीसे पहचाने जाते थे; उनने कहा—तिलो! जो तुम जानते हो कह देना, नहीं तो ये गोरे तुम्हें छोड़ेंगे नहीं, मार डालेंगे।

लेखकने पूछा—तुमने भी उनको यही क्यों नहीं कहा? क्या वे दोनों कुछ नहीं जानते थे?

तिलो—वे दोनों सब कुछ जानते थे पर जब गोरे कुछ पूछते झिड़क देते थे। उनकी बात बड़ी कड़ी होती थी।

लेखक रोहियारमें था, उस दुर्घटनाके नायक उपनायकोंसे घिरा हुआ। उनमेंसे एक बोला—वे जबान खोलते तो अन्धेर होजाता। कितनोंकी जान जाती।

सो अनन्त पाण्डुरंग नाइू और नारायण पाण्डुरंग नाइूने अपनी जान दी ताकि औरोंकी जान बचे, अपने शरीरके परखे परखे कटवाये ताकि औरोंके शरीरका रोयां भी न टूट सके। पसरहा कटान उनकी समाधि है। आज वह गहरी खाई है पर कल जब हमारी आजादीकी भावना मजबूत होगी वह बहुत ऊँचा उठेगा,-पाण्डुरंगके अपूर्व बलिदानके स्मारकके रूपमें।

इधर ९ सितम्बरको थाना फिर सरकारके अधिकारमें आ गया। कार्यकर्त्ताओंके नाम संगीन जुर्मोंके लिये वारण्ट कटने लगे और उनको पकड़नेके लिये खुफिये छूटे। अधिकांश कार्यकर्त्ताओंको अपने बचावकी फिक्र हुई। इस परिस्थितिसे लाभ उठा कर दो तीन कार्यकर्त्ताओंने चौथम थानामें दूसरी तरहका तहलका मचा दिया।

इधर सूर्यगढ़ाके कार्यकर्त्ता अपनी व्यवस्थाको थाने भरमें मजबूतसे मजबूत बनानेकी चेष्टामें लगे थे उधर गोरे रेलवे लाइनकी मरम्मत करके थानेमें घुसनेकी तैयारी कर रहे थे। रेलवे लाइनपर उनकी चौकसी रात दिन होती रहती थी। १८ अगस्तको उनने देखा एक लाइनके पास हाथमें कोई औजार लिये खड़ा है। तुरत गोली दागी और बेचारे शेखो धानुकको मार डाला जो सहूर ग्रामका निवासी था और लाइनके किनारेके अपने खेतमें काम कर रहा था। इसी तरह उनने २१ अगस्तको बेनी सिंहकी जान ले ली जो उरैन रहते थे और लोकल बोर्डकी सड़कसे आ रहे थे।

सूर्यगढ़ा

२६ अगस्तको एक खास जहाजसे एस० डी० ओ० साहब फौज और पुलिसको लेकर सूर्यगढ़ा पहुंचे। पहुंचते ही उनने कर्फ्यू आर्डर जारी किया, आश्रम जब्त किया तथा मौजूद कार्यकर्त्ताओंको गिरफ्तार किया। किन्तु लोगोंका उत्साह पूर्ववत् बना रहा। श्री रामेश्वर साह, पोखन दास और परमेश्वर मिस्त्री वगैरहने जलूस निकाला, सूर्यगढ़ामें सभा की और नारा लगाते हुये थाना आये जहां पांच गिरफ्तारियां हुईं।

२९ अगस्तको फिर जलूस निकला जो थाना कांग्रेस आफिसके मैदानमें आकर एक सभाके रूपमें बदल गया। उस सभाकी कार्रवाई चल ही रही थी कि फौज लेकर एस० डी० ओ० आये। गोली चली और दो शहीद हुये—श्री डोलन गोप और श्री कारू मिश्र।

इस गोलीकाण्डके बाद पकड़ धकड़ और घूसखोरी शुरू हो गई और थानेकी हवा बदल गई।

खड्गपुरके कार्यकर्त्ताओंमें जान थी और उनने गोरोंके फैलते हुये आतंकको दूर करनेका निश्चय किया। २८ अगस्तके आसपासकी घटना है। श्रीसच्चिदानन्द शास्त्रीने सबोंकी सलाहसे तय किया कि मनी नदीपर जो पुल है उसे तोड़ दिया जाय। क्या विद्यार्थी और क्या जनसाधारण सभी काफी तादादमें पुल तोड़ने गये। अकस्मात उसी समय फौजी पहुंचे; भीड़मेंसे सात व्यक्तियोंको उनने पकड़कर गाड़ीपर चढ़ा लिया और जो लोग पुलपर खड़े नारा लगा रहे थे उनपर गोलियां चलाईं जिससे कलर पोद्दार तत्काल शहीद हुये और तीन घायल हुए—नेबाजी मोदी, सबीर मियां और खड्गपुर राष्ट्रीय विद्यालयका एक विद्यार्थी। इस गोलीकांडके परिणाम-स्वरूप लोग आतंकित हो गये पर

खड्गपुर

कार्यकर्त्ताओंका संगठन नहीं टूटा। वे छिप-छिपकर मिलते और जनताको उत्साहित करते रहते।

लक्खीसरायमें गोरे आये १६ अगस्तको। किउल स्टेशन तो उनका अड्डा बन गया था। दूसरे दिन श्रीराज्येश्वरीप्रसाद सिंह गिरफ्तार हो गये और बाजारमें लक्खीसराय पुलिसका दबदबा छा गया। जो देहातसे आता पुलिसवाले उसे धर पीटते। १७ अगस्तकी शामसे ही कर्फ्यू आर्डर जारी हो गया था जिसकी खबर गांववालोंको तो तुरत हुई नहीं। इसलिये कितने अनजाने आते जिनमेंसे कई किउल स्टेशनके पास गोलीके शिकार बन जाते। ३१ अगस्तको १४४ धारा तोड़कर लक्खीसरायके कार्यकर्त्ताओंने एक जलूस निकाला जो प्रदर्शन करता हुआ दक्खिनसे उत्तर गया और उधरसे वापस हुआ। जब वह स्टेशनके पास आया तब एकाएक किउलसे रेलपर मिलिटरी पहुंच गई और आसमानी फायर करने लगी। पर भीड़ आगे बढ़ती ही गई क्योंकि वह अपने मुकामपर वापस आ रही थी जहांसे वह तितर बितर हो जाती। पर उसे आगे बढ़ते देख मिलिटरी भीड़पर गोलियां बरसाने लगी। कितने घायल हुये और ६ मरे। दो लाशोंको तो टामियोंने उठा लिया और उमड़ी हुई किउलमें भँसा दिया और चारका दाह-संस्कार जनताने किया। वे चार थे बराहिल बलियाके श्रीवैद्यनाथ सिंह, सलौना चकके गुरुजू सिंह, मसौढ़ाके दारो साहु और सामनडीहके केशव सिंह।

बेगूसरायमें १८ अगस्तसे गोरे आने लगे और उसी दिनसे कर्फ्यू ऑर्डर जारी किया गया। पर कार्यकर्त्ताओं और छात्रोंने उस आर्डरको नहीं माना। उस दिन भी तोड़ा और दूसरे दिन भी जबकि बेगूसरायमें काफी गोरे आ गये थे। हाँ! उस दिन श्रीरामप्रताप सिंह और १६ विद्यार्थी पकड़े गये। २० अगस्तको स्वयं-सेवक फिर कर्फ्यू आर्डर तोड़ने निकले नौ बजे रातको। शहरमें प्रवेश करते ही बन्दूक और लाठी लेकर सिपाही दौड़े आये और उनपर टूट पड़े। कितने चोट खाकर सड़कपर गिर पड़े। श्रीराजराजेश्वर प्रसाद सिंह, श्रीशिवचन्द्र सिंह और श्रीतरुण घोषको तो बेतरह चोट लगी थी। शामसे ही घरमें रहना था और रातके दस बज गये थे। फिर भी श्रीब्रजमोहन शर्मा दौड़ पड़े और घायलोंकी दवा दारूका इन्तजाम किया। इसके बाद कार्यकर्त्ता देहात चले गये और गांवोंको संघटित करने लगे। शुरू सितम्बरमें ही श्रीसरयू प्रसाद सिंह, और पं० गूदर झा वगैरह गिरफ्तार होगये और कांग्रेसका काम गुप्त रूपसे होने लगा।

बलियामें १८ अगस्तको जो गोरे आये सो महज थाना खाली करनेके लिये हां! आते ही उनने फायर करना शुरू किया जिससे एक आदमी घायल होगया। फिर उनने बाजार लूटा, एक मारवाड़ी लादूरामकी दूकान लूटी, कांग्रेस भवनको जला दिया और दारोगाको लेकर बेगूसराय चले गये। फिर ९ सितम्बरतक अंगरेजी सरकारकी ओरसे कोई बलियामें झांकने भी न आया। १० सितम्बरको काफी गोरे आये। उनने श्रीसीताराम अग्रवाल और श्रीप्रतापनारायण सिंह और पत्रवीरके श्रीद्वारिका शर्माकी सम्पत्ति लूटी। फिर पुलिसका दमन आरम्भ होगया। बखरी थानेमें एटकिन्स साहब पुलिस और गोरे लेकर आये २१ अगस्तको। उनने सलौनामें झड़ी साहुका घर जलाया और बखरीमें सर्वश्री बैजनाथ प्रसाद सिंह त्रिवेणीप्रसाद सिंह, शिवनारायण गुप्त तथा मैहीलाल साहुके घरोंमें आग लगा दी। उनने बाबू सदाव्रतनारायण सिंहके घरको लूटा भी और बीच बीचमें गोली चलाकर श्रीबालगोविन्द पोद्दारको घायल कर दिया। दूसरे दिन श्रीशिवब्रत नारायण सिंहका घर जलाया गया और गोली चला कर दो तीन व्यक्तियोंको घायल भी कर दिया गया। फिर पुलिसके लिये रास्ता साफ होगया और उसने हथकड़ी अपनी करामात दिखाने लगे।

तेघड़ा थाना मुङ्गेर जिला भरमें खूब जाग्रत रहा है। यह अन्ततक जाग्रत रहा और दमनका शिकार बनता रहा। यहां बरौनी जंक्शनमें मिलिटरी आ गई १८ अगस्तको ही और वहीं इसने अपना डेरा डाला। वहांसे यह इर्द गिर्द गाली और जनताको परेशान करती। दूसरे दिनकी ही बात है। एक महुआ पासी कोयलेके ढेरकी बगलसे गुजर रहा था। उन लोगोंने इसे गोलीसे मार डाला। बेचारेका नाम था मुसहरू पासी, गांव बारो। फिर मिलिटरी तेघड़ा आयी और उसने कांग्रेस भवनको जला दिया और राहमें बौनू कुञ्जराको गोलीसे मार डाला। वहांसे वह बछवाड़ा आई और एक नेपाली राहीको घायल कर दिया जिसे कुछ कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंने उठाकर मनसूरचक अस्पताल पहुँचा दिया।

बछवारेमें इनके आ जानेसे लोग घबड़ा गये। कार्यकर्त्ताओंने इस घबड़ाहटको दूर करना आवश्यक समझा और जलूस लेकर स्टेशनकी ओर चले। कुछ लाइनकी पटरी भी हटानेको चले। सैनिक सतर्क होगये। इसी बीच श्रीउमाकांत चौधरी झंडा लेकर एक टीलेपर खड़ा होगया और लोगोंमें नारे लगा लगाकर जोश भरने लगा। एक गोली सनसनाती हुई आई और उ[illegible]

छातीको पार कर गई। जब कांग्रेसके कार्यकर्त्ता उसके पिता श्रीविन्ध्यबासिनी चौधरीको सान्त्वना देने गये तो चौधरीजी कार्यकर्त्ताओंकी हिम्मत बढ़ाते हुये बोले कि मेरे लड़केने जो किया ठीक ही किया; उसपर मुझको अभिमान है। दोबारा आकर सैनिकोंने सेघड़ा बाजारको काफी लूटा और बादको वे २२ अगस्तको बिहट पहुँचे। गांववालोंकी गति विधि देख उन्हें वहां कुछ करनेकी हिम्मत नहीं हुई और वे चुप चाप उस गांवसे वापस लौट रहे थे कि एकने पुकारा—"ठहरो! ठहरो! डर कर भागे क्यों जा रहे हो?" पर उन्हें ठहरना तो था नहीं। बस! उनने निशाना किया और तिरंगा झंडा लेकर ललकारनेवाले उस युवक उचित सिंहको वीरगति देदी। फिर उसी दिन उनने फुलबरियाके बदरी पोद्दारका सर्वस्व लूट लिया। अगले दिन कहारामें श्रीअम्बिका शर्माके घरको सामान सहित फूंक दिया गया और पासमें खड़े हुये श्रीप्रद्युम्न मिश्र नामक एक अस्सी सालके बूढ़ेकी हत्या की गई। वहां श्रीब्रह्मदेवरायका भी घर जलाया गया।

१ ली सितम्बरको बाबू रामचरित्र सिंह गिरफ्तार हो गये और पुलिसका जोर दमन शुरू हुआ। ऐसी परिस्थितिमें भी आन्दोलन जीता जागता रहे, जनताको आगे बढ़ता रहे—इस गरजसे कार्यकर्त्ताओंने युद्ध समिति और ध्वंसात्मक समितिका निर्माण किया। युद्ध समिति प्रचार और संगठन करती थी और ध्वंसात्मक समिति तोड़ फोड़का काम करती थी।

परन्तु पुलिसका अत्याचार बढ़ता ही गया। १० सितम्बरको तो एक दफादारने श्रीसीताराम महाराज मोख्तारको पकड़ लिया। वे टामियोंके हवाले कर दिये गये। जो उन्हें बेंतसे पीटते रहे और वे बराबर इन्कलाब जिन्दाबादका नारा लगाते रहे। थाना पहुँचने तक क्रूरता और वीरतामें होड़ लगी रही। कोई किसीको दबा नहीं सका।

इधर पुलिसने बजलपुराके बाबू तारिणीप्रसाद सिंह, रामलखन सिंह और वशिष्ठनारायण सिंहकी सम्पत्ति लूटी। सदौलीके श्रीरामबहादुर सिंह वगैरह लूटे गये और फिर लूट, जब्ती और गिरफ्तारीकी हवा बह गई।

२४ अगस्तको मि० सी० जी० एटकिन्स और मि० आर० ओ० कुछ काफी मिलिटरी लेकर अचानक सेघौल आये। स्वयंसेवकोंने इनके आगमनकी सूचना

बरियारपुर सबोंको दे दी। झटपट सौ डेढ़ सौ लोग हरबे हथियार लेकर इनका सामना करनेके लिये गाँवके स्कूलपर जमा हो गये, किन्तु श्रीराजबंशी

सिंहने समझा बुझाकर लोगोंको वहाँसे हटाया और मकईके खेतमें छिप जानेकी राय दी। उनने गांववालोंसे कहा—मैं गोरोंको मनामुनूकर वापस कर दूँगा; आपलोग नहीं घबड़ायें। पर गोरे आये गोली छोड़ते हुए जिससे एक लड़की घायल हो गई। राजबंशी सिंहजीने जब ऐसा माजरा देखा तो गोरोंके सामने जानेकी हिम्मत नहीं हुई और वे सब धड़धड़ाते हुए श्रीराधाप्रसाद सिंहके घरपर आ गये। राधा प्रसादजी बाहर निकले। गोरे उनके घरमें घुसने लगे तो उनने रोका और अपने भाईके कमरेको दिखाकर जिसपर कांग्रेसका झंडा फहरा रहा था, बतलाया कि वही कांग्रेस भवन है। गोरे भीतर घुसे सभी सामान इकट्ठे किये और पेट्रोल छिड़ककर आग लगा दी। उनकी हरकत देख राधा बाबू घबड़ा गये और निकल भागनेकी चेष्टा की पर कुछ दूरपर ही पकड़ लिये गये। गोरोंने उनको पटक दिया और बूटों और कुन्दोंकी मारसे उनके हाथ-पाँवको फोड़ डाला। फिर जहाँ जहाँ गोरे गये उनको साथ घसीटते ले गये। श्रीराजबंशी बाबूका घर जलाया गया। उनके भाई श्रीसूर्यशेखर सिंह परिस्थिति न समझ बोले—"राधा! तुम्हीं दोनों भाई तो कांग्रेसके काम करते आये हो; दौलतपुर कोठी भी गये थे पेट्रोल लूटने; फिर आज मेरा घर क्यों जलवाते हो।" गोरोंने सुना और राधा बाबूपर फिर टूट पड़े। बेचारे अधमरे हो गये। अब सूर्यशेखर बाबूसे पहचनवा पहचनवाकर गोरोंने सर्वश्री कैलाशपति सिंह, राजबंशी सिंह, राम कृष्ण सिंह, गया प्रसाद सिंह, कैलाश सिंह और बिन्दो सिंह आदि इक्कीस सज्जनोंके घर जलाये। गाँवमें भगदड़ मच गई जिसके धक्केमें श्रीशत्रुघ्न सिंहका नवजात शिशु मर गया पर श्रीसूर्यशेखर गोरोंके पंजेसे निकल भागे। श्रीरामजीवन झा नामका विद्यार्थी जब एक घरकी आग बुझाने लगा तब तुरत उसे गोरोंने गोली मारी और वह बेतरह घायल हो गया। गाँवसे बिदा होते समय मि० एटकिन्सने राधाबाबूको छोड़ दिया पर मुश्किलसे ललमलाते हुए वे कुछ ही डेग बढ़े होंगे कि उसने इशारा किया और तुरत एक गोरेने गोली दागी और वे और घायल हो गये।

लोग श्रीराधाप्रसाद सिंह और रामजीवन झाको अस्पताल ले चले परन्तु राधाबाबू तो राहमें ही स्वर्गके राही बने और रामजीवन झाने दम तोड़ा बेगूसराय अस्पताल में।

इस आग और अत्याचारका आतंक अरसे तक कायम रहा।

गोरोंकी पैशाचिकताकी नई-नई खबरें जब तारापुर पहुँचने लगीं तब कार्यकर्त्ताओंने सोचा कि एक जगह अपनी सारी शक्ति समेटकर रहना अच्छा नहीं। उनने थाने भरमें तीन कैम्प खोले—पंचभूरमें, तारापुरमें और ढोल पहाड़ीमें। कुछ दिनोंके बाद जब पं० सुरेश्वर पाठक जिलेके डिक्टेटर नियुक्त हुये तब ढोल पहाड़ी कैम्प जिला ऑफिस हो गया।

२८ अगस्तको मिलिटरी तारापुर पहुँची और जिसे गांधी टोपी पहने या खादी धारण किये या झोला लटकाये देखा उसे खूब मारा। तारापुर कांग्रेस ऑफिसपर कब्जा करके उसकी सारी चीजें उसने जब्त कर लीं। नौगाईं आश्रमको नष्ट किया और संग्रामपुरके कार्यकर्त्ताओंको अच्छी तरह पीटपाटकर गिरफ्तार कर लिया। थाने भरमें मिलिटरीकी पेट्रोलिङ्ग जारी हो गई। सेवादल और पंचायतको गैर कानूनी माना गया और इससे संबन्ध रखनेवाले सताये जाने लगे फिर थानेकी जनता आतंकित हो गई। तारापुरसे कैम्प उठकर भगलपुरा चला गया और वहींसे थाने भरकी स्वराजी डाककी व्यवस्था होती रही।

१ ली अक्तूबरको मिलिटरी ३५ लॉरियोंमें भरकर आई। गुलनी, कुसहा, सहोड़ा और संग्रामपुरको घेरकर उसने घर-घरकी तलाशी ली पर कार्यकर्त्ता बालबाल बच गये। अपनी मिलिटरी और पुलिस दोनोंने खूब अत्याचार किया। देगांवमें श्री हितलाल राजहंसजी बेतरह पीटे गये; गुलनी कुसहामें एक आदमी गोलीका शिकार बनाया गया और गनेलीमें श्रीजयमंगल शास्त्रीके घरका कुछ सामान लूटा गया, बाकी जब्तकर लिया गया और उनके घरके सभी काफी पीटे गये और एक नौकर तो गोलीसे घायलकर दिया गया। माधोडीहके यमुना पासमानके घरके गचको कोड़कोड़कर उसकी सारी चीजें लूटी गईं। नौगाईंमें श्रीचतुर्भुज सिंह भ्रमरके नौकर और मजदूरोंको पीटा और उनकी चीजें भी लूट लीं। फिर संग्रामपुरमें काशीप्रसाद सिंहके और हलकराचकमें श्रीवासुकी नाथ रायके घरोंको बुरी तरहसे लूटा।

असरगंजमें मिलिटरी पहुँची रातको। स्वयंसेवक विश्वनाथ सिंहने समझा डाकू आये हैं और तुरत उनने एक फौजीपर लाठीका वार किया। फलस्वरूप वे गोलीसे मार डाले गये। फिर परसीरामका घर लूटा गया। इतना सब कर कराकर ४८ घंटेके भीतर मिलिटरी वापस चली गई।

इसके बाद घुड़सवारोंका हमला आरम्भ हुआ और धरपकड़ शुरू हो गई।

फिर उधरका दृश्य ही दूसरा हो गया, कार्यकर्त्ता छिप गये और नये ढंगसे अपने बचावका उपाय सोचने लगे ।

बड़हिया

बड़हियामें टॉमी आये १६ अगस्तको। उनने आते ही देखा, स्टेशनके फाटकसे एक आदमी निकला जा रहा है। तुरत उनने गोली चलाई और उसको मार डाला। नाम था गुलमी महतो, इङ्गलिशाका बासिन्दा । उसकी रथीका जलूस निकाला गया जिसपर लाठी चार्ज हुआ। १८ अगस्तको वहांके प्रमुख कार्यकर्त्ता गिरफ्तार हुये और क्रान्ति धीमी पड़ गई। पर बड़हियाको अपने एक और सपूतकी भेंट चढ़ानी पड़ी। २८ सितम्बरकी घटना है। बड़हिया होकर टॉमियोंकी लारी जा रही थी। इन्दुपुरके श्रीबनारसी सिंह जो भागलपुर कालिजके विद्यार्थी थे पीछे हाथ करके किसी दूकानकी सीढ़ीपर खड़े थे। उस तरह उनका खड़ा रहना शायद गोरोंको अखरा, तुरत उनने गोली चलाई और बनारसी बाबूको घायलकर दिया। बनारसी बाबू अस्पताल भेजे गये जहां दूसरे रोज वे शहीद हो गये ।

भागलपुर

भागलपुर शहर २० अगस्ततक शांत हो गया पर नाथनगरमें क्रांतिकी आग धीमी नहीं पड़ी। कर्फ्यू आर्डर जारी था और उसको तोड़नेकी तैयारी भी हो रही थी। एक रातको जबकि मिलिटरी सड़कोंपर गश्त लगा रही थी नवजवानोंकी एक टोली कर्फ्यू आर्डरको तोड़ कर निकली। टोली कुछ ही दूर बढ़ सकी कि मिलिटरीका सामना हुआ। गोली दागी गयी और दो शहीद नाथनगरकी सड़कपर गिर पड़े। एक थे चम्पानगरके चुल्हाई मियां और दूसरे नाथनगर ग्राम नूरपुरके रामेश्वर साहु। इस गोलीकांडके परिणाम स्वरूप नाथनगरमें भी आन्दोलन गुप्तरूपसे चलने लगा ।

पीरपैंती

पीरपैंतीमें ११ से १८ अगस्ततक जोर शोरसे कांग्रेसका प्रचार चलता रहा। कहींसे किसीने न विरोध किया न किसी प्रकारकी गड़बड़ी ही हुई। १९ अगस्तको हाटका दिन था। कार्यकर्त्ताओंने सभा करनेका आयोजन किया था। पर इसकी खबर किसीने गोरोंको दे दी। गोरे धड़धड़ाते हुये रेल ट्रकपर पीरपैंती पहुँचे। एक ओर हाटमें लोगोंकी भीड़ लगी हुई थी और दूसरी ओरसे क्रांतिका नारा लगाते हुये स्वयंसेवकोंका जलूस आ रहा था। टॉमियोंने आंखसे सामनेकी भीड़ देखी और कानसे क्रांतिकारी नारे सुने। समझा, सामनेके सभी क्रांतिकारी ही हैं बस उन्हींपर अन्धाधुन्ध गोली बरसाने लगे। कितने मारे गये, कहना

कठिन है। पीरपैंतीके कार्यकर्त्ताओंके कथनानुसार मृतकोंकी संख्या कमसे कम ६३ है; जिसमें २५ के नाम मिले हैं—कालीप्रसादके तीन; बीकू धोबी, महादेव परिहार और कुचाली दास, अठन्नियाके दो; नरसिंह गोप और रामदयाल गोप, फिर महावीर साह, हरचन्दपुर; जुमराती मियां, सामपुर और जोगियातलाबके दो; हेला कोइरी और गंगा कोइरी, किसनीचकके दो सखीचन्द कोइरी और जगन कोइरी; फिर बच्चू दुसाध मोलटोला; जगदीश हरिजन सिमानपुर, बसन्त कुम्हार लहरजंगी; अगहनु पण्डित ध्यालापुर, गुजराती मियां सिपरसारी, भुजंगी हरिजन लक्ष्मीपुर, श्रीरामदयाल गोप श्रीमदपुर, बाबूलाल भगत रोशनपुर, कल्लू मिस्त्री गोपाली चक; समरतिया ग्वालिन अम्मापाली, भखरू मियांकी स्त्री अम्मापाली, साधु कुम्हारकी स्त्री, इटहरी जुलब मियांकी स्त्री नौआटोली। एक संताल परगनेका भी मरा है जिसका परिचय वहाँवाले भगत करके देते हैं।

सुलतानगंज गोलीकांडके बाद दो-तीन दिन पुलिस चुप रही। फिर उसने अपनी करामात दिखाना शुरू किया। धड़ल्लेसे तलाशियाँ होने लगीं। ठाकुर सुलतानगंज प्रसाद मंडल और तोताप्रसाद सिंहके परिवारवालोंको गोरोंने बुरी तरह पीटा। सबके सब घायल हो गये। उनके सामान भी जब्त कर लिये गये। सभी प्रधान कार्यकर्त्ता फरार हो गये और कुल छिपकर अंग्रेजी सरकारकी उखाड़ फेंकनेकी कोशिश करने लगे। पुलिस इनको पकड़नेके लिये घरतोड़ मिहनत करने लगी। श्रीसियाराम सिंहको पकड़नेके लिये ५०० से १००० तक इनाम देनेकी घोषणाकी गयी। ठाकुर मंडलपर भी २०० रु० इनामकी घोषणा हुई परन्तु जनता न प्रलोभनमें पड़ी और न गोरोंकी लहूसे लाल संगीनोंके आगे माथा टेका। सभी अत्याचार सहते हुये उसने सियाराम बाबू और उनके साथियोंको छिपा रखा और उनके काममें मददगार बनी।

थानेपर कब्जा हो जानेके कई दिन बाद टॉमियोंकी एक टोली कहलगांव टाउन पहुँची। इसने श्रीआदित्यप्रसाद गुप्त, तारिणीप्रसाद चौधरी और बीकू कहलगांव साहको खूब पीटा। इसने जहां जहां तिरंगा झंडा फहराता देखा वहां वहांसे उसको उतार फाड़ा। फिर यह टोली ताड़र पहुँची और जगदीश सिंहको घायल किया। इस तरहकी ज्यादतियां कई गांवोंमें हुईं।

रेलवे लाइन खराब हो जानेकी वजहसे हिन्दुस्तानी फौजकी एक स्पेशल ट्रेन [illegible] आयी हुई थी। वही सिहपुर पहुँची। सभी सरकारी इमारतोंको जला

बिहपुर टूटा! देख उस फौजकी प्रतिशोधकी भावना जाग उठी। उसने स्वराज्य आश्रमपर धावा किया। आश्रमके कुछ सामान जला दिये गये और कुछ जब्तकर लिये गये। श्रीतुलेश्वरी शर्माने विरोध किया। इसलिये वे पीटे गये और गिरफ्तारकर लिये गये। श्रीचुल्हाई सिंह उर्फ धनराज शर्मा भी गिरफ्तार कर लिये गये। उन्हें खूब मारा पीटा गया। सिगरेटसे उसका तमाम बदन दाग दिया गया। कई दिनके बाद वे जेल भेज दिये गये। हाँ तुलेश्वरी शर्मा तो पकड़नेके कुछ घंटेके बाद ही छोड़ दिये गये थे।

फौजके आजानेसे पुलिसकी जानमें जान आई। जमादार कहीं छिपा था; दारोगा कहीं छिपे थे। सबके सब फौजके शरणागत हुए और इलाके भरकी जनताको पीस डालनेकी योजना बनाई गई।

पुलिसको साथ ले फौजी गाँवमें घुसे। लोग लूटका माल छिपाने लगे, फेंकने लगे और गंगा मैयाको भेंट चढ़ाने लगे। ऐसे लोगोंको फौजियोंने खूब तंग किया। फिर रेलवे लाइन बैठानेके लिये कुन्दोंको जोरसे धनिकोंको ठीक किया। क्या जमींदार, क्या व्यापारी, क्या देशवाली क्या मारवाड़ी सभी रेलवे लाइनपर मजदूरकी तरह खटने लगे। पीछे मजदूर जुटानेका वचन देकर बहुतोंने छुटकारा पाया।

जब लोग लाइन बैठाते-बैठाते बिहपुर आश्रमके सामने आये तो फिर एकबार उस फौजके गोरे अफसरने आश्रमपर हमला करनेका हुक्म दिया। आश्रमके फर्नीचर, कागजात और पुस्तकालय सभी जला दिये गये और मकानको भी नुकसान पहुँचाया गया। कांग्रेस आफिस उठाकर अमरपुर चला गया था। वहाँ भी फौजियोंने धड़पकड़ शुरू कर दी।

इधर गाँववालोंसे जबर्दस्ती रेलवे लाइनपर बैठाया जा रहा था। कार्यकर्त्ता भी चुप न थे। वे हर तरहसे फौजियोंके काममें अड़ंगा लगानेकी कोशिशमें थे। बिहपुरके पास है झंडापुर। वहाँ श्री जगदम्बी चौधरी रहते हैं—एक पुराने कांग्रेस कार्यकर्त्ता; आप माला पहने हमेशा हरे राम! हरे राम! रटते रहते हैं। आप कुछ साथियोंके साथ बिहपुर आश्रमको देखने जा रहे थे कि फौजियोंका सामना हुआ। साथी तो हट गये पर आप डट गये और हरे राम! हरे राम! की रट लगाते रहे। फौजियोंने आपको पकड़ लिया, साथ ले गये और रेलकी पटरी बिछानेके लिये कहा। आप बोले—हरे राम! हरे राम! जहाँसे पटरी

हटा दी गई वहां कैसे बिछायी जा सकती है ? फौजियोंने समझाया, धमकाया पर आप अपनी टेकपर ही रहे; फिर मारपीटकर जेल भेज दिये गये। छत्तीपुरके अमर शहीद श्रीसत्यदेव रायसे भी जो थाना युद्ध समितिके संचालक थे मजदूरोंको लेकर स्टेशन पहुँचनेके लिये कहा गया। उनने सुनी अनसुनीकर दी। फिर फौजका कर्नेल सदलबल उनके दरवाजे पहुँचा, विविध उत्पात करनेपर उतारू हुआ पर सत्यदेव रायजी अपनी आनपर अड़े रहे, फिर गिरफ्तार हुये और जेल भेज दिये गये।

७ सितम्बरको फौजी सदलबल पहुँचे अमरपुर श्रीअर्जुन सिंह बी० एल० को गिरफ्तार करने। श्रीअर्जुन सिंह नहीं मिले। तब सब झंडा-चौक पहुँचे और झंडा गिराने लगे। कार्यकर्त्ता इसे बर्दाश्त नहीं कर सके और काफी लोगोंको लेकर विरोध करने आये। फौजी सतर्क हो गये और उनने भीड़को आगे बढ़नेसे मना किया। पर भीड़ आगे बढ़ी ही और श्रीनवल किशोर मिश्र भोंपूसे बोल बोलकर लोगोंको झंडेकी रक्षा करनेके लिये उत्साहित करने लगे। फिर तुरत गोली चली, एक चमार घायल हुआ, श्री नवलकिशोरको गोली लगी और उनके साथी श्रीसदानन्द मिश्रको भी। लोग इधर उधर भागे और फौज भी तत्काल गांव छोड़कर चली गई। सर्वश्री नवलकिशोर मिश्र और सदानन्द मिश्र अस्पताल पहुँचाये गये जहां नवलजी तीसरे दिन ही शहीद बन गये और सदानन्दजी दो महीने बाद।

बादको फौज और पुलिस फरारोंकी खोजमें तेलघी पहुँची, कुछ गांववाले भागे, कुछ इधर उधरसे नारा लगाने लगे और बाकी घरोंमें छिप गये। फौज सदलबल तेलघीमें गश्त करने लगी। उसने देखा, एक आदमी खिड़कीसे घूर रहा है। इसपर उसने गोली चलाई और फिर गांवसे रवाना हो गई। देखा गया, जिन्हें गोली लगी, वे हैं गोमरी थानाके भरसो ग्राम निवासी श्री जगरूप चौधरी। बेचारे पहुनाई करने आये थे और मारे गये।

मढ़वामें घोर अमानुषिकता दिखलाई गई। पुलिस और फौजको लेकर एक गोरा अफसर बाबू बसन्तरायके घर पहुँचा। उनके घरकी तलाशी हुई, बक्से, आल्मारियां तोड़ डाली गयीं और कितनी चीजें लूट ली गयीं। फिर बसन्तरायजीसे कहा गया कि जिन बन्दूक और पिस्तौलोंको तुमने छिपा रखा है उन्हें दे दो। बसन्तरायजीने कहा—मुझे उनकी कोई खबर नहीं। इसपर उनके हाथ जकड़कर

बांध दिये गये और इन्हें हन्टरसे पीटा जाने लगा। उनकी पीठ फूट गयी और वे बेहोश हो गये। फिर वे गोरेके हुक्मसे होशमें लाये गये जो उन्हें पासके 'मुसखार' में ले गया। वहां उनके गलेमें फांसीकी रस्सी लगा दी गई और राम ! राम ! बोलनेके लिये कह दिया गया। वे अपने इष्टदेव 'नृसिंह हो ! नृसिंह हो ! की गोहार करने और बोले—"हुजूर, मैं बेकसूर फांसीपर चढ़ाया जा रहा हूँ।" वे अपनी बात पूरी भी न कर पाये थे कि गोरा अपने हाथोंसे उनके गलेकी रस्सीको धीरे धीरे खींचने लगा; बोला—तू नाहक अपनी जान दे रहा है। बन्दूक बता दे। पर बन्दूक कहांसे लाते ? लाचार थे। फिर उनका गला, घुटने लगा शरीर अधरमें झूलने लगा और चेतना जाती रही। तुरत उस गोरेने चौकीदारोंको पुकारा और उनके शरीरको संभालनेके लिये कहा। छौकी हजरा और गेना हजरा—दो चौकीदार हवा पानीका उपचार करने लगे। फिर होश हुआ और वे थाना पहुँचा दिये गये। थानावालोंने २००) रु० घूस लेकर बसन्तरायजीको छोड़ दिया। तत्काल उनके रिश्तेदारोंने उनका इलाज करवाया और वे चंगे हो गये। पर वे ६० सालके थे, उस धक्केको उनका शरीर सह न सका और वे बादको चल बसे।

अब विहपुर थानेके गांव गांवमें दमनचक्र चलने लगा। फौजकी चहलकदमी होने लगी और दुअन्निया-चवन्निया भेदियोंकी मण्डली ताकझांक करने लगी। कार्यकर्त्ताओंने भी तौर तरीका बदला।

बेलहर थानेमें दारोगाके आ जानेसे कलाली चालू हो गयी। बनैलीराजकी कचहरियां भी रियायापर धौंस जमाने लगीं। इसलिये १४ नवम्बरको धौरीमें बेलहर थाना तारापुर और बेलहरके कार्यकर्त्ता बैठे; निश्चय किया कि किसान सभाको फिरसे जिन्दा किया जाय और कचहरियां जलायी जायं। फलस्वरूप कलालियां और कचहरियां जलायी जाने लगीं। अमरपुर और तारापुरमें बड़ी सरगर्मी दिखलायी गयी। साहबगंजका कलाल बड़ा ऐंठा करता। कहता कोई हमारी कलाली जलाये तो जानें ! २३ नवम्बरको उसकी कलाली जलायी गई और सबके संगी साथियोंपर काफी मार पड़ी। इस धावेमें श्रीशशिप्रसाद सिंह भी शामिल थे जो निमोनियासे वहीं पीड़ित हुये और घर जाकर मरे। ता० २५ को खरौंधामें बाबू गिरिवरनारायण सिंह गिरफ्तार होकर थाना आये। उनकी गिरफ्तारीकी खबर पाकर जनता उत्तेजित हो गई और उनकी रिहाईकी मांग करती हुई थाने दौड़ी आई। पर इसके पहले ही दारोगा गिरिवर बाबूको लेकर भागलपुर

रवाना हो चुके थे। थानेके जमादार साहब इतनी बड़ी भीड़की गति विधि देखकर घबड़ा उठे और बन्दूक दागने लगे।

इस गोलीकाण्डका परिणाम भीषण हुआ। श्रीयमुना सिंह, श्रीआद्याप्रसाद सिंह और श्रीगूदर सिंह मारे गये और बेलडीहाके हरिमोहन सिंह और बनगामाके श्रीजगदीशप्रसाद सिंह सख्त घायल हुये। पुलिसने शहीदोंकी लाशोंको जनताको न सौंप चौकीदारोंके पहरेमें बसुआ नदीके किनारे डाल दिया ताकि उनका उचित संस्कार न हो सके और गीध, चील, कौवे उनकी लाशोंको नोच चोथकर खायें।

१८ नवम्बरको ढाई तीन सौ गोरोंका कैम्प साहबगंजमें गड़ गया। कांग्रेस कैम्प उठ गया, कार्यकर्त्ता घुमन्ता बन गये और भिन्न भिन्न दल नये ढंगसे परिस्थितिका सामना करनेके लिये तैयार होने लगे।

बेलहर थानेके जाग्रत गांव धोरीमें भी २८ नवम्बरको आई० जी० साहब मिलिटरी लेकर आये। गांववालोंसे बोले—तीन महीने तुम्हारा राज रहा अब हमारा राज लौटा है। फिर उनने दो ढाई सौ मुसहरोंको लेकर श्रीजगदम्बा प्रसाद सिंह, बालेश्वर प्रसाद सिंह और सरयूप्रसाद सिंहकी फसल कटवाकर लूटवा दी और उनके घरोंके सामान जब्त कर लिये क्योंकि ये सभी कार्यकर्त्ता छिप छिपकर काम कर रहे थे और उनको गिरफ्तार करना पुलिसके लिये टेढ़ी खीर हो रही थी।

११ सितम्बरको मिलिटरी आयी और उसने कचहरीको खुलवाया। उस दिनसे सरकारका काम बेरोक टोक चलने लगा। अनेक कार्यकर्त्ता गिरफ्तार

मधेपुरा

कर लिये गये। जो बचे उनने गीधा नामक स्थानमें एक सभा बुलायी जिसमें मुरलीगंज और किशुनगंजके कार्यकर्त्ता भी शामिल हुये। वहां निश्चय हुआ कि सत्याग्रह किया जाय और जत्थे भेजे जायं। सत्याग्रह संचालनका भार श्रीकमलेश्वरी मंडलको सौंपा गया।

कुछ कार्यकर्त्ताओंने कहा कि ऐसी परिस्थितिमें सत्याग्रह करना आत्म-समर्पण ही है। उनने अपना अलग दल बनाया और स्वतंत्ररूपसे काम करने लगे।

५ अक्तूबरको छः सत्याग्रहियोंका पहला जत्था निकला श्रीभूपेन्द्रनारायण मंडलके नेतृत्वमें। लोग डरे हुये थे। तौभी वकील, मुख्तार और बोर्डके शिक्षकोंकी अच्छी तादाद इकट्ठी हो गई। भूपेन्द्र बाबूने भाषण दिया और गिरफ्तार हो गये। फिर ८ अक्तूबरको दूसरा जत्था श्रीदेवदत्त महतोके साथ फौजदारी कोर्टपर गया और गिरफ्तार हुआ। इस तरह महीना भर सात जत्थे निकले। यों तो सभी

सत्याग्रही गालीमारके शिकार होते रहे पर सर्वश्री बहादुर महतो और लालचन मंडल खूब पीटे गये। अनूपलाल पासमान चौकीदारी छोड़कर सत्याग्रही बना था इसलिये उसपर और बेरहमीसे मार पड़ी।

किशुनगंजमें आते ही मिलिटरीने बाजा साहु नामके एक निरपराध व्यक्तिको गोलीसे मार दिया। लोग आतंकित हो गये। फिर दारोगा पारस नाथ मिलिटरी किशुनगंज लेकर गांव गांव जाने लगे और लूट मार करने लगे। नयानगरमें श्रीकुलानन्द सिंह लूटे गये। मरामीमें श्रीसत्यदेव सिंह और परमेश्वर झा लूटे गये। पुरैनी बाजार, बजराहा बाजार और फुलौलकी लूट हुई। फिर चोपसा, कलासन, ढोलबजा और झलारीके बाजार लूटे गये। खाड़ामें नन्दलाल रामका और ग्वालपाड़ामें महम्मद यूनुसके घर लूटे गये। फिर तो मैदानमें तरह तरहके लुटेरे आगये और किशुनगंजका समां बदल गया।

११ सितंबरको मिलिटरी बनगांव आई और थाना चालू हुआ। फिर सैफाबाद कैम्प जला दिया गया। बादको बलहामें गणेश झा, महादेव मंडल और नीरो बनगांव मंडलके घर जले, कुशेश्वर खांका घर घनी आबादीके बीचमें था; इसलिये उसके सामान बाहर निकालकर जला डाले गये।

१२ सितंबरको ए० एस० पी० पुलिस और मिलिटरी लेकर पचगछिया श्री रामबहादुर सिंहको गिरफ्तार करने आया। सभी हितैषियोंने आग्रह किया कि आप टल जाइये पर श्री रामबहादुर सिंहने मिलिटरीके आगेसे भागना या छिपना सत्याग्रहकी मर्यादाके विरुद्ध समझा और घरकी स्त्रियोंको निरापद स्थानपर पहुंचाकर आपने अपनेको दरवाजेपर आयी हुई मिलिटरीके हाथमें सौंप दिया। आप लिखते हैं—"टॉर्च देनेपर जैसे ही मेरेपर निगाह पड़ी, बरामदेके निकट आकर मुझसे पूछा—'तुम्हारा नाम ?'

मैं—रामबहादुर सिंह।

वह—तुम अन्दरमें था और भाग गया था।

मैं—लुकना, छिपना या भागना मेरा काम नहीं है।

वह—चलो यहां आओ।

मैं बरामदेसे उतरकर उसके सामने जाकर खड़ा हो गया। ××× उसने एक पाठान मिलिटरी मैनको कहा—लगाओ !

पाठान मेरी बाईं ओर खड़ा होकर पूरी ताकतसे मेरी पीठ और कन्धेपर मारने

लगा और सार्जेन्ट टार्चसे मेरे चेहरेको देखने लगा। पहली लाठीके प्रहारसे ही मेरा शरीर सुन्न होगया। मगर मैं बिना हिले डुले खड़ा रहा। चेहरेकी स्वाभाविकता कायम रही। शायद तीसरी लाठीके अवसरपर ए० एस० पी०ने पूछा कि तुम लोग कहता है कि पुलिस हमारा भाई है; यही तुम्हारा भाई है? और उसने पाठानकी ओर इशारा किया—और मैं तुम्हारा दुश्मन हूँ?

मैं—Not as a nation but as a rular, अर्थात् आप अंगरेजके नाते मेरे दुश्मन नहीं हैं पर एक हाकिमके नाते हैं।

इसपर उसने पाठानको कहा—रुक जाओ। और दारोगासे कहा—He is not a violent man; he seems like Dr. Prasad. यानी यह मारकाटवाला आदमी नहीं है, डाक्टर प्रसाद जैसा दिखता है। × × × × ×

मेरे दोनों भाई और मुझको एक ही रस्सामें बांध मिलिटरी पचगछिया ले गई। × × स्टेशनपर तीन ट्रॉली तैयार थीं जिसपर सबके सब सहर्षा पहुंचे जहांसे हमलोग सुपौल कचहरीके हवालातमें लाये गये। जो पाठान साथ आया था उससे जब वह हमें हवालातमें बन्द कर रहा था मैंने उस तकलीफ देह बातका जिक्र किया जिसे मुझको पिटवाते हुये ए० एस० पी० ने पाठानकी ओर इशारा करके कहा था। उसने कहा—यह आप क्या कहते हैं? हम लोग अंगरेजोंके बच्चे हैं और इसके इशारेपर सब कुछ करना हमलोगोंका फर्ज है।

मैंने कहा—भाई बस करो; गलती हुई जो मैंने जिक्र किया; मैं और सुनना नहीं चाहता। मैं हिन्दुस्तानी मिलिटरीकी मनोदशापर गौर करके दुःखी होता रहा।"

रामबहादुरजीकी गिरफ्तारीके बाद भी पचगछिया सत्याग्रहका उदाहरण पेश करता रहा। झंडा-चौकपर कितने सत्याग्रही मिलिटरी द्वारा पकड़े गये और सबोंपर बेहद मार पड़ी। मार पड़ते देख कोई भागा नहीं बल्कि जो दूर था नजदीक आगया। सर्वश्री लक्ष्मीलाल दास, भुवनेश्वरलाल दासपर बड़ी मार पड़ी और स्वयं सेवकोंके कैप्टेन श्रीजानेश्वर ठाकुर पकड़ लिये गये।

१५ सितम्बरको मिलिटरी बनगांवमें श्रीछेदी झाके घर पहुंची और उनको न पाकर घरको फूंक दिया। २० सितंम्बरको वह सुलिबाद गयी और श्रीचित्रनारायण शर्माको न पाकर उनके घरको पस्त कर दिया, वस्त्र और जेवरात लूट लिये और अन्नादिको बरबाद कर दिया। फिर वह गढ़िया गई और श्रीरमेश झाकी बूढ़ी दादीको खाट सहित बाहर रख कर उसने झाजीके मकानमें आग लगा दी। इसी

तरह पड़रीमें श्रीमंगनीराम झाका घर जलाया गया। सोनवर्षा स्टेशन केसके मुद्दालह श्रीरामचरित्र सिंह, श्रीतिलकधारी सिंह वगैरहके घर भी जले।

१३ सितम्बरको एकाएक हल्ला हुआ—"मिलिटरी आगई !" "मिलिटरी आगई !" बाजारमें भगदड़ मच गई। क्या कार्यकर्त्ता, क्या जनता—सबोंको सुपौल निश्चय था कि बाजार गोलीसे भून दिया जायगा। इसलिये जिधर जिसकी सींग समाई उधर वह भाग छिपा। पर अपनी निश्चित योजनाके अनुसार सत्याग्रही कार्यकर्त्ताओंने अपनी कार्रवाई शुरू की। श्रीशिवनारायण मिश्रने झंडा लिया और सबसे आखरी भेंट करके थानेकी ओर बढ़े। और लोग आफिसकी चीजें हटाने लगे। इसी बीच मिलिटरी वहां पहुंचती दीख पड़ी। भागना मर्यादाके प्रतिकूल था। इसलिये ऑफिसमें जो दो मौजूद थे थानेकी ओर चल पड़े। आगे जाकर उनकी संख्या चार हो गई।

बाजारमें सन्नाटा था। सिर्फ ये चार नारा लगाते हुये मौतके मुंहमें कूदने जा रहे थे। लोग झांक-झांक कर इन आहुतिके सजीव पुतलोंको देख लिया करते थे; पर कोई न चूं बोलनेकी हिम्मत करता था, न बाहर निकलनेकी। विचित्र दृश्य था! पर पहुंचते पहुँचते जब चारो सकुशल थाना पहुँच गये तब खुद इन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ और जब इनकी नजर मुस्कुराते हुये श्रीशिवनारायण मिश्रपर पड़ी तब तो इनके हर्ष और आश्चर्यका कोई ठिकाना न रहा। मालूम हुआ कि मिलिटरी इसी होकर आई और गई। इधर उसका ध्यान ही नहीं गया। संभवतः उसे मालूम नहीं हुआ कि यही थाना है और यहाँ सत्याग्रह हो रहा है।

इन चारोंके पास झंडे नहीं थे। इसलिये जो समय मिला उसमें झंडे बाजारसे लानेके लिये उनने एक साथीको भेजा। पांच मिनट बीते होंगे कि मिलिटरी आती दीख पड़ी और ये सभी सत्याग्रही सड़कपर घूमने लगे, नारा लगाते 'इन्कलाब जिन्दाबाद !" "अंगरेजो ! भारत छोड़ दो।" जब मिलिटरी बिलकुल करीब आ गई तब ये बरामदेपर चढ़ गये और इनमेंसे हरेक एक-एक कमरेको रोककर खड़ा हो गया। मिलिटरीमें दो गोरे और दो दर्जन हिन्दुस्तानी थे। दोनों गोरे बरामदेपर चढ़ गये। लालबाबाकी गर्दनपर बन्दूकका एक कुन्दा जमाया और जोरका धक्का दिया। औरोंको भी धक्के दिये। इतनेमें ही इन्सपेक्टर आ गया और सबके सब गिरफ्तार करके हाइ स्कूल पहुँचाये गये जहां मिलिटरी ठहरी हुई थी। रातको ये फिर थाना लाये गये और एक तंग कोठरीमें जहां

सब बैठ भी नहीं सकते थे, रात भरके लिये बन्द कर दिये गये।

दूसरे दिन दूसरा जत्था तैयार हुआ पर निकलनेके पहले ही मिलिटरीने कांग्रेस आफिसपर धावा किया और जत्थेको गिरफ्तारकर लिया। सभी सत्याग्रही सर्वश्री शत्रुघ्नप्रसाद सिंह, लहटन चौधरी, शिवनारायण मिश्र, रामचन्द्र मिश्र, गंगाप्रसाद सिंह, अच्युतानन्द, रामेश्वर खां, और शिवनन्दन झा थानेमें खड़े किये गये। श्रीलहटन चौधरी लिखते हैं—×××गोरेने जोरसे पूछा—थानेमें ताले किसने लगाये? इन्सपेक्टरने मेरा नाम बताया। मुझे बुलाकर पूछा गया और मैंने स्वीकार किया। गोरेने चाभीका गुच्छा मेरी ओर फेंकते हुए कहा—"किस तालेकी कौन चाभी है खोजो और तालेको खोल दो।" मेरे वैसा करनेसे इनकार करनेपर वह आग बबूला हो गया और मुझे भीतर ले चलनेका हुक्म दिया। किवाड़ खोल दिया गया। मेरे सभी साथी मेरी हालत देखनेके लिये सामने पर बाहर खड़े कर दिये गये। एक टेबुलपर पेटके बल मुझे इस तरह लेटा दिया गया जिससे कमरका भाग टेबुलपर पड़ा और नीचेका हिस्सा लटकता रहा। फिर चूतड़परका कपड़ा हटाकर मुझको नंगाकर दिया गया और एक गोरा ठेहुनेके बल मेरी गर्दनपर इस प्रकार जोरसे दबाकर बैठ गया कि मेरे ओठ फट गये। अब मुझपर बेंत पड़ने लगी। यह काम दूसरे गोरेका था। बेंत लगातार चूतड़पर एक ही जगह बरस रही थी। बीचमें मैंने 'इन्क़लाब जिन्दाबाद' और 'महात्मा गांधीकी जय' के नारे लगाये। बेंतकी चोट और भी सख्त हो गई और पड़ती ही रही जबतक चमड़े फट नहीं गये और खूनसे कपड़े तरबतर नहीं हो गये ××××। मेरे बाद मेरे हर साथीको इसी तरह सुला सुलाकर पीटा गया। अन्तर इतना ही रहा कि कुछ कम बेंत लगनेकी वजहसे उनके चमड़े फटे नहीं बल्कि सिमेण्टकी तरह कड़े हो गये और खून जम जानेके कारण उन्हें कहीं ज्यादा तकलीफ होने लगी। मेरे साथियोंमेंसे सिर्फ गंगाको मार नहीं लगी। ××× मारके बाद हमारा इलाज नहीं किया गया। हमारे घावमें पीब भर गया और महीनोंके बाद कैम्प जेल भागलपुरमें जाकर आराम हुआ।

सुपौलमें सत्याग्रहियोंके जत्थे भी निकले। ५ वां जत्था निकला १० अक्तूबरको। उसमें थे श्रीरामफल यादव और गंगा चौधरी। कलालीके एक मुसलमान ठेकेदारने इन्हें पकड़ा और दारोगाके सामने हाजिर किया। दारोगाने इन्हें

मुसलमान मिलिटरीके हवालेकर दिया। वह इन्हें पीटते हुए सड़कपर इधरसे उधर और उधरसे इधर ले जाने लगी। उनकी दुर्गति देख हिन्दू मिलिटरी बिगड़ खड़ी हुई और उनके लोगोंने कलालको पीटना शुरूकर दिया। तनातनी बढ़ी। पीछे मामला शान्त हुआ और सत्याग्रहियोंका पीटा जाना भी रुक गया। सातवें जत्थेके, जो नवम्बरमें निकला श्रीमहेन्द्र पाठक, राजेन्द्र मिश्र और शैलेश्वर खांको भी बेतरह पीटा गया। फिर श्रीहीरालाल मल और श्रीमधुकर कामतकी गिरफ्तारीके बाद जत्थाका जाना रुक गया। इन दोनोंपर भी परसरमा स्टेशनपर काफी मार पड़ी सुपौल बाजारमें एक तरफ सत्याग्रहियोंपर मार पड़ती थी दूसरी तरफ दूकानदार बेतरह सताये जाते थे। मार पीट और घूसका बाजार गर्म था। गांव भी सुरक्षित न थे। पुलिसकी टोलियां वहां आती थीं और घर जलाकर मार पीट करके और नोच खसोट कर काफी माल लेकर लौटती थीं। संपूर्ण सबडिविजनमें घोर हाहाकार मचा हुआ था।

२६ सितम्बरकी रातको पुलिस मिलिटरी लेकर सिमराही बाजार आ धमकी और अत्याचार शुरू हो गया। दूसरे दिन गनपतगंजमें श्रीयुत खूबलाल महतोको प्रतापगंज पुलिसने गिरफ्तारकर लिया; सिमराही बाजारके खादी भंडारको लूट लिया और प्रतापगंजमें भी मार पीट तथा गिरफ्तारी शुरू हो गई। १ ली अक्तूबरको एस० डी० ओ० और डी० एस० पी० प्रतापगंज थाने आये और ११ बजे रातको हाजतसे खूबलाल महतोको निकाला और खूब पीटा; कानमें ऐसी चोट आयी कि महतोजी अपने एक कानसे आज भी काम नहीं ले सकते हैं।

पुलिसने गनपतगंजमें बंशीधर अग्रवाल और रामचन्द्र अग्रवालके घरके सामान जला दिये और बेरदहमें मूसनलाल दासका घर जला दिया। गौरापुरके फणीन्द्र मिश्रका घर भी जलाया गया। घरके कुछ न कुछ सामान जलानेकी घटना तो पचासों जगह हुई। लूट पाट भी बहुत जगह हुयी। बसानपट्टीमें पुलिस दो दो बार गयी और गांववालोंकी चीजोंको लूटा जलाया और कुछ लोगोंके घरमें घुसकर अनाचार भी किया। डहरियाके लोग भी इसी तरह लूटे गये। उनके घरके सामान जलाये गये और पुलिसने कुछ लोगोंके घरमें घुसकर अनाचार किया।

४ अक्तूबरको पुलिस मिलिटरी लेकर त्रिवेणीगंज आयी और थानेका

कांग्रेसी ताला तोड़ दिया। उसी दिन बाजारवालोंसे तीस हजार रुपये ऐंठे गये।
त्रिवेणीगंज फिर पुलिस सदलबल डबरखा पहुँची और तिलो मंडलके घरको उसने तोड़ दिया। कुछ सामान जलाये और उन्हें गिरफ्तार करके जेल भेज दिया। जदिया बाजारमें भी खूब मारपीट की गयी और भब्बीलाल मंडलको लूट लिया गया। इसी तरह मिलिटरी और पुलिस लूट पाट करती रही। जनता आतंकित हो गयी और घरसे निकलनेमें भी भय खाने लगी।

२५ सितम्बरसे डगमारामें पुलिसका अत्याचार होने लगा। श्रीसौदागर सिंह, चिन्ताहरण राय, और अनिरुद्ध सिंह आदि २० सज्जन गिरफ्तार किये गये और
डगमाराथाना थाने तक पीटते हुए ले जाये गए। कितनोंपर तो इतनी मार पड़ती थी कि वे जमीनपर गिर पड़ते थे और कुछ देर तक उठनेकी ताकत नहीं मिलती थी। मांगनेपर उन्हें पानी तक नहीं दिया जाता था। द्वारिका प्रसाद घरपर नहीं पाये गए इसलिये उनका घर जला दिया गया। रूपन मियांका भी घर जला दिया गया और कितनोंके घर लूटे गये।

भीमनगर थानेमें २३ सितम्बरसे पुलिस राज शुरू हुआ। श्रीमहावीर नोनियाका घर लूट लिया गया। श्रीदेवीलाल और नीलाम्बराचार्यके घर लूटे गये और उनको
भीमनगर गिरफ्तारकर लिया गया। कार्यकर्त्ताओंके परिवारको इतना तंग किया गया कि सबोंको गांव छोड़ नेपाल तराईकी शरण लेनी पड़ी। श्रीनीलाम्बर राय जेलमें थे और उनके परिवारके पीछे पुलिस पड़ी हुयी थी। उनका खेत आबाद करने नहीं दिया जाता था। परिणाम स्वरूप उनकी तीन सालकी लड़की दवा दारूके अभावमें मर गयी।

देवघरमें २८ अगस्तको जो बलूची फोर्स आयी उसके उत्पातसे शहरमें खलबली मच गयी। कुछ बलूची जागो तमोलीकी दूकानपर आये और जबरदस्ती शर्बत पीना चाहा। इनकार करनेपर वे जागो तमोलीको थाने ले गये और हवालातमें बन्द कर दिया। फिर उसकी दूकान तोड़ फोड़ दी गयी और वहां जो लड़के लड़की थे उनको पीटकर भगा दिया गया। मजेस्टिक मार्टका मैनेजर बंकिमचन्द्र कुमारका सर फोड़ दिया गया। बदरीदास रामदेवकी दूकानके आदमी मार भगाये गये। जयनारायण पंडाको बहुत मारा। फिर लूट शुरू हुई। चंडी प्रसाद तमोलीकी दूकान लूटी गयी। मिठाईकी दूकान लूटी गयी। धन्ना सिंहके आमके बगीचेके आम लूट लिये गये और उनपर बेतरह मार पड़ी। परमेश्वर पानवालेको

इतना मारा कि उसका एक पैर टूट गया; तिनकौड़ी रामका हाथ टूट गया और हरिरामके दोनों ठेहुने फूट गये। दो दिन शहरमें हड़ताल रही। बलूचियोंपर मुकदमा दायर किया गया और हरजानाके तौरपर गाजो तमोलीको १००) मिले। ३१ दिसम्बर तक शहरके सभी नेता गिरफ्तार हो गये और कार्यकर्त्ताओंने गांवकी राह ली।

नकटी गांवको मिलिटरीने रातको ही घेरा। लोगोंको खूब पीटा; उनके घरोंको लूटा और काफी सामान बर्बाद कर दिया। अन्न और खानेकी दूसरी दूसरी सामग्रियोंको इस ढंगसे नष्ट भ्रष्टकर दिया कि उस रोज गांवमें किसीके पास पानी पीने तकके लिये बर्तन नहीं बचा। गांवमें कुम्हार था पर उसका भी घर बिल्कुल खाली था। इस गांवपर फौजकी बारबार चढ़ाई हुयी और जब जब पुलिस और फौजी आये काफी लूट पाट हुई। दानो सिंह और शीतल सिंहके मवेशी जब्त हुये जो सरावांके खबाड़में सड़ाकर मार डाले गये।

अमरपुरमें पुलिसने विधुभूषण रायजीके घरपर रातको छापा मारा और जिन जिनको गिरफ्तार किया उन्हें खूब पीटा। वह उनके घरकी कुछ चीजें भी उठा ले गयी।

रामूडीहमें फौज दो बजे रातको आयी। कुछ सिपाहियोंने त्रिलोकी मामीके दरवाजेपर धक्का मारा। उसने समझा डकैत हैं और चिल्ला उठा। गांववाले इकट्ठे हो गये। बस, फौजियोंने डंडे मार मार सबोंको एक कतारमें खड़ा किया। फिर एकके कंधेपर दूसरेको बैठाया और पीछेसे डंडे मार मार उसे खूब दौड़ाया। जब दौड़नेवाला लाचार हो गया तब उसको अपनेपर सवार साथीके कंधेपर बैठाया और उसी तरह डंडे मार मार दौड़ाया गया। बारी बारी सबकी ऐसी दुर्गति की गयी। फिर उनके सामान लूटकर फौज चलती बनी।

कुछ दिनोंके बाद करीब ३०० फौजी सिपाहियोंने सबैजोरको घेर लिया और घटवाल हरगौरीप्रसाद सिंहकी सलाहसे ३८ आदमियोंको गिरफ्तार किया। वे सभी

सारठ

बिना अन्न-पानीके कड़े धूपमें बिठाये गये और उनपर लाठी, डंडे और जूतोंकी मार पड़ी। श्रीसुरेशप्रसाद झा तो इतने पीटे गये कि उनका कपड़ा खराब हो गया पर उन्हें दो दिनों तक कपड़ा बदलने नहीं दिया गया। शामको सबोंको बिना खिलाये पिलाये ही एक तंग कोठरीमें बंदकर दिया गया। रातमें श्रीनर्मदेश्वरप्रसाद सिंह दारोगा सदलबल पहुँचे। एक-एक करके बन्दियोंको

निकाला और खूब पीटा। श्री इन्द्रनारायण सिंह भी पीटे गये और उनकी उंगलीसे एक सोनेकी अंगूठी छीन ली गयी। गांवमें भी फौजियोंने काफी उत्पात किया। श्रीबमबहादुर सिंहकी दूकान लूटी गयी। बेनीडीहमें भी काफी लूटपाट और अन्यान्य अत्याचार हुये। कुकराहा, सिकहिया, मंजरगीला आदि गांवोंमें पुलिसने कई बार लूट मचाई। ये गांव इतने आतंकित हो गये थे कि पुलिसके आनेकी खबर पाते ही भाग खड़े होते थे। एकबारकी भगदड़में एक गर्भिणीको प्रसव हो गया; बच्चा तुरत ही मर गया।

खिरसामें हेमराज रायके घरका सारा सामान जब्तकर लिया गया। उनके कितने सामान नष्ट भी कर दिये गये। इस लूटकी भयंकरताको देख जीवन बांधके देवरामांझीको इतनी घबड़ाहट हुई कि आनेवाले अत्याचारके भयसे उसने फांसी लगा ली।

१७ अगस्तको खबर मिली कि सारठ होकर पलटन आ रही है। सबोंकी राय हुई कि सभी कार्यकर्त्ता अनिश्चितकालके लिये नौ-दो ग्यारह हो जायं। दूसरे

सरावां

दिन लगभग ३०० पलटन सरावां पहुँची। स्कूलके पास पहुँचते ही दनादन गोलियां चलायी गईं; जिसमें दो गरीब बेकसूर घायल हो गये। घरोंमें घुस-घुसकर पलटनवालोंने लोगोंको खूब पीटा। सेठ साहूकारोंसे रुपये भी ऐंठे और उन्हें पीटते हुये थाने ले गये। दारोगाने उपस्थित जनतामेंसे सातको पहचाना और कहा ये लोग आन्दोलनमें शामिल थे। वे सात देवघर ले जाये गये। रास्तेमें बलूचियोंने संगीन भोंक-भोंक इन्हें बेहद तकलीफें दीं। पश्चात् पुलिस नोचने खसोटनेमें लग गयी। श्री के० डी० झाने थानेमें सब तरहका अत्याचार किया। उनका शह पाकर बलूचियोंने भी अत्याचार करनेमें कुछ बाकी न छोड़ा। खरकनाकी घटना है, बलूची गांवमें घुस गये; मुरगी और पाठेकी फर्माइस करने लगे और नहीं मिलनेपर कोदो मियां और कमलू मियांके पुत्रोंको मार डाला। गांववाले भी भिड़ गये और बलूचियोंपर आक्रमण किया और उन्हें मार भगाया। इसका बदला लेने गये उस गांवमें मणिबाबू दारोगा। उनने आठ व्यक्तियोंको गिरफ्तार किया और सबोंको खूब पीटा।

आन्दोलनके बाद गोड्डा, दुमका और पकौड़ इलाकेके दामिन अंचलमें तथा दामिनके बाहरी अंचलमें खास करके बरमसिया और महगामाकी तरफ परगनैतों और दारोगाओंने काफी अत्याचार किया। प्राय सभी सफाहोड़ोंके घरोंसे पांचसे लेकर सौ

रुपये तक वसूल किये गये। घूसके रुपये परगनैतोंके पेटमें जाता था। गोड्डा दामिनमें सिंदरी जोला छोटो, डांगापाड़ा, बड़ा डांगापाड़ा और पकड़ी खूंटामें लोगोंसे काफी रुपये घूस और लूटमें ऐंठ लिये गये। सिंदरी जोलामें श्रीसिहाईमाल पहाड़िया तथा श्रीकार्तिकमाल पहाड़ियाके घर लूट लिये गये और साथ-साथ जला भी दिये गये। डोमन, सोनाई, सुखू, छोटा कार्तिक, छोटो सिहाई, फकई, दुर्गा, शिवा और गंगामाल पहाड़ियोंके घरोंकी लूट हो गई। पहाड़पुरके श्रीलुथरू मुर्मूके घरका सारा अन्न और घर गृहस्थीके सारे सामान आठ बैलगाड़ियोंमें लादकर ले लिया गया और महगामाके श्रीदुलारचंद टुडुके पशु ले लिये गये। इसी तरहकी लूटपाट प्रायः सफाहोड़ोंके घरकी हुई। जो आन्दोलनमें शरीक हुए उनकी भी लूट हुई और जो नहीं हुए उनकी भी हुई।

गोड्डामें तो गोरोंने गोलियां चलाकर एक साधुको मार ही नहीं डाला बल्कि जानबूझकर उनने धार्मिक भावनाओंको ठेस पहुँचानेकी कोशिश की। हाइ स्कूलके हातेमें उनने एक बछड़ा मारा। जिसका खून उनने स्कूलके कुएंमें डाल दिया। प्रत्येक तुलसीके पौधेपर आठ आनेके दरसे परगनैत तथा सरदार लोग टिकस वसूल करने लगे।

दुमकाके उत्तरमें एक पहाड़ी जगह है—पलासी। वहांके संतालोंने भी तोड़-फोड़में हिस्सा लिया था। वे एक गिरोह बनाकर रह रहे थे और पुलिसको अंगूठा दिखाते हुये अपना काम कर रहे थे। फौजी उनकी टोहमें लगे और पलासीमें भोजन पकाते हुए तथा विश्राम करते हुये देख लिया। फिर उनपर अन्धाधुन्ध गोलियाँ चलाई गईं। फलस्वरूप शहीद हुए गुडमा टुडु, कुरा पहाड़ी; बयमान टुडु, बिसवियाम; मंगलमुर्मू करमाटांड़ और काकोहंसदा, सुन्द्राफल। घायल तो कितने हुये।

२९ सितम्बरसे यहाँ सरकारी थाना चालू हुआ और लोग सताये जाने लगे। दारोगा साहब १५ रिजर्व फोर्सके साथ हाथीपर सवार होकर पीरंगेज गये और आजिमनगर थाना बिजली हाड़ीके स्त्री बच्चेको निकाल उसके घरको तोड़वा दिया। मानिकनगरमें तालेश्वर-मंडल और बीजू मंडलके घरको लूटा। असालगंजमें श्रीमहावीर मालाकारके कितने सामान जब्त हुए और लूटे गये।

८ सितम्बर १९४२ को २०० मिलिटरीके साथ मैजिस्ट्रेट और एस० पी० वगैरह रुपौली थाना आये जहांसे आपलोग दो टुकड़ोंमें बंट गये। एक टुकड़ा

रूपौली थाना टीकापट्टीकी तरफ भेज दिया गया और बाकी सबको लेकर मजिस्ट्रेट साहब वीर नारायणचंदके यहाँ भोज खाते हुए भवानीपुर पहुंचे। उस टुकड़ेने टीकापट्टी आश्रम पहुँच कर आश्रमके सभी सामानको लूट लिया। फिर वे गांवमें घुसे और मोहन मंडल, बेचन मंडल, तिलकचंद मंडल, अमिचंद मंडल और धनिकलाल पोद्दारके घरोंको लूट लिया। ५ आदमी गिरफ्तार किये गये जो बुरी तरह पीटे गये। फिर वे लोग गदीघाट पहुँचे श्रीमोहित लाल पंडितजीके घरको लूटा और बर्बाद कर दिया।

कलक्टर साहबका दल भवानीपुर पहुँचा। जहां उसने श्री बलदेव राम और सुन्दरमलके घरोंको लूटा और बहुत सी चीजोंको जला दिया। श्रीबलदेव रामके परिवारवालों खूब मारा पीटा। द्वारिका प्रसादको ऐसी मार लगी कि उनका पैर ही टूट गया। बौका, इसामन आदि जो बलदेव रामके सिपाही थे उनकी देहमें टॉमियोंने संगीन भोंक दी। शरीरसे तर तर खून बहने लगा। भवानीपुर मिडूल स्कूलके सामान जला दिये गये। उसी रोज ब्रह्मज्ञानीके श्री बच्ची मंडलके घरकी लूट हुई और बबुजन बाबूके घरके सामान लूटे और जलाये गये।

१६ सितम्बरको रायबहादुर रघुवंश प्र० सिंहके सिपाहियोंको लेकर मिलिटरी कोसकीपुर और सिमरा आयी। २ बजे रातको ऊधो मंडल और जागो मंडल वगैरह पकड़े गये और खूब पीटे गये। यहां काफी लूट पाट हुयी। रूपौलीमें श्रीगोरेलाल सिंह, रामदेव भगत, मथुरा भगत, शांति भगत, छांगुर भगत और नेबालाल मेहताके घरोंमें एक तिनका भी नहीं रहने दिया गया। बहहरो, पकड़िया और अकबरपुरमें भी बहुत घर लूटे गये। मिलिटरीकी गतिविधिसे प्रोत्साहन पा करके गुंडे भी लूट पाट करने लगे। मेंहदीके अनूपलाल मंडल और रसिकलाल मंडलकी फसल काट ली गयी। मतेलीके श्री रामनारायण चौधरीकी फसलकी भी यही हालत हुयी। गुंडाशाही इतनी बढ़ी कि लोगोंकी दौलत और इज्जत खतरेमें पड़ी रही। मिलिटरी हमेशा गुंडेशाहीको शह देती रही। श्रीसीताराम सिंह, झलारीके रास्तेमें, पकड़े गये। जिन्हें रूपौली थाना लाकर फरीदखां हैदरने इतनी मार मारी कि उनके मुँहसे खून जारी हो गया। फिर भी उनपर मार पड़नी तब बन्द हुइ जब कुछ हिंदू मिलिटरीने दारोगा साहबके जुल्मका घोर विरोध किया। थानाकी जनता आतंकित हो गयी और बेतरह लूटी खसोटी जाने लगी।

बड़हारामें रामचरित्र सिंहके घरके सामान नष्ट भ्रष्ट कर दिये गये और

जगत् हजराको अरबिया जाते वक्त इतना पीटा कि घर लौट कर उसका प्राण छूट गया। नकछेदी साहको भी बुरी तरह पीटा गया जिससे उसकी आँख खराब हो गयी। रानीगंजमें श्री नरेशचन्द्र दत्त और बोढ़न महतोकी दूकान लूट ली गयी। खोजरीमें गरीबादास और बुद्दी यादव लूटे गये।

रानीगंज थाना

कदवाथानामें श्रीदुखमोचन मिश्र बड़े सताये गये। पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट ८० मिलिटरी लेकर नूनगढ़ा पहुँचे और मिश्रजीको बैलके खूंटेसे बंधवाया। उनके हुक्मसे एक सिपाहीने मिश्रजीके सरपर ऐसी लाठी जमायी कि सर फट गया और खूनकी धारा बह निकली। सुपरिन्टेडेन्टने उनके मेहमानकी धोती छीन ली जिसकी आधी जलायी गयी और आधी मिश्रजीके घावके बांधनेमें काम आयी किसी तरह खूनका बहना रुक गया। फिर गोपाल झाजीके साथ गिरफ्तारकर थाने पहुँचाये गये।

अररियामें मलदबारके जयश्रीलाल साहके मकानको एस० डी० ओ० ने हाथीसे तोड़वा दिया।

फारबिसगंजमें अन्यान्यके साथ उत्साही वृद्ध बाबू रामखेलावन सिंह और स्व० रामदेनी तिवारी गिरफ्तार हुए और ढोलबज्जा गांवके काफी लोग पुलिसकी गालीमार और घूसखोरीके शिकार बने। वहांवालोंने यूनियनबोर्डके कागजात भी फूंक डाले थे जिससे उनपर अधिकारियोंको ज्यादा खीस थी।

धुरनामें श्रीशिवरांज सिंहपर जैसा अत्याचार किया गया उसे अमानुषिक ही कहा जायगा। उनके घरमें घुसकर पुलिसने उनकी स्त्रीको पीटा और काफी चीजें लूट लीं। दूसरे दिन जब वे पकड़े गये वे बेरहमीसे पीटे गये जबकि उन्हें तेज बोखार चढ़ रहा था। पानीमें भींगते हुये वे थाने आये वहां फिर पीटे गये जिससे हमेशाके लिये उनकी तन्दुरुस्ती बिगड़ गई! इसी तरहका अत्याचार उस सबडिविजनके कार्यकर्त्ता श्रीरघुनन्दन भगतपर हुआ है। आपपर इतनी गहरी मार पड़ी कि आप कभी तनकर खड़े न हो सके; जब जेलमें रहे खाटपर पड़े रहे और वहांसे निकल इटकी सैनेटोरियममें क्षय रूपी मौतसे लड़ रहे हैं।

मानभूम जिलेके बन्दवान थानेमें पुलिसने काफी जोर जुल्म किया। जितानके श्रीमजहरी महतोके घरके सभी मर्द पकड़ लिये गये; बच्चे और स्त्रियां ही बच गईं। उनके पिता घरके मालिक थे। फिर भी सारे मवेशी और सामान वगैरह जब्त कर लिये गये। सिंहभूम जिलेके जमशेदपुरमें ५ सितम्बरकी एक बजे रातको फौजका

काफी इन्तजाम करके श्रीरमानन्द तिवारीका बैरेक घेर लिया गया। क्रीड साहबने पाँच सिपाहियोंको ही गिरफ्तार करना चाहा पर बीस आजाद सिपाही गिरफ्तार होनेके लिये निकल आये। तब बैरेकको बन्द कर दिया गया ताकि कोई और बाहर नहीं आ सके। पर खिड़कियोंको तोड़ कर १३ सिपाही और बाहर आ कूदे जिससे गिरफ्तार होनेवालोंकी संख्या ३३ तक पहुँच गई। सभी हजारीबाग सेन्ट्रल जेलके लिये रवाना कर दिये गये आगे आगे श्रीरमानन्द तिवारी और पीछेसे उनके ३२ साथी। कुछ दूर चलनेपर जबकि तिवारीजी साथियोंकी दृष्टिके ओझल हो रहे थे, साथियोंको शंका हुई कि गोरे तिवारीजीको दूर ले जाकर गोली न मार दें। फिर तो उनने इतना शोर म या कि तिवारीजीको ठहराया गया और जब सब जने साथ हो लिये तब आगे बढ़ाया। रांची और हजारीबागको दमनके अत्याचारका अनुभव नहीं हुआ।

बलात्कार

अगस्त क्रान्तिमें बलात्कारकी असंख्य घटनायें हुई हैं। भिखारिणीसे लेकर राजकुमारी तक बलात्कारकी शिकार बनी हैं। पर प्रायः सभी चुप हैं। नहीं समझती कि चुप्पी बलात्कारको बुलाती रहती है। उनके अपने भी इस संबंधमें जबान तक नहीं हिलाते। वे क्या नहीं जानते कि उनकी नीतिने उनकी बहू-बेटीकी इज्जतको कामुकोंके हाथ सौंप रक्खा है?

सब कहेंगे कि समाज हमें मौन रहनेके लिये बाध्य करता है। सो ठीक है। उसने सतीत्वको स्त्री शरीरका धर्म मान लिया है। शरीर चोट खाये तो उसकी सेवा होगी। सुमार्गपर चलते हुये उसे गोली खाने पड़े तो उसकी पूजा होगी। पर स्त्री शरीरपर किसी कामुकने जबरदस्ती की तो लोग मान लेंगे वह सतीत्व सदाके लिये खो बैठी। सभी उसपर अङ्गुली उठायेंगे। उसके मां बापको गालियाँ देंगे। इसीसे कामुकोंको प्रोत्साहन मिलता है ऐसा कि उन्हें डर भय नहीं रह गया है। वे केवल सुयोगकी ताकमें रहते हैं। बस।

पर यदि समाज समझ ले कि सतीत्व मनका धर्म है और जबरदस्ती उसका अपहरण नहीं हो सकता तब वातावरण ही बदल जाय। कामुक स्त्रीको छू नहीं सके; उसकी ओर बढ़ नहीं सके। बढ़ा कि अण्डा फोड़ हुआ। कभी किसी कामुकने आक्रमणकर भी दिया तो स्त्री आहत समझी गयी, हमारी सेवा और सहानुभूतिकी अधिकारिणी बनी जिस तरह और आहत बनते हैं, और कामुक पकड़ा गया; दण्ड पाया। बलात्कारका अन्त इसी तरह हो सकता है।

आज जिनने बलात्कारकी घटनाओंकी खोज की है उनने समाजकी बड़ी सेवा की है। जिन बहनोंने आप बीती सुनाई है उनने बलात्कारपर घातक प्रहार किया है।

पटना, जमुई और हाजीपुरमें जब टॉमी पहुँचे तो 'लालबीबी'के लिये बेहाल दीखे। पटनामें उनने एक गाड़ी घेर ली। हाजीपुर और जमुईमें उनने हिंदुस्तानी पुलिसके आगे 'लालबीबी'की मांग पेश की। उन्हें हाजीपुरमें ही नहीं बहुत जगह पुलिसके जरिये जैसे तैसे लालबीबी मिली। उनका और पुलिसका सहयोग ही रहा। जहाँ-जहाँ गोरोंने बलात्कार किया है वहाँ-वहाँ प्रायः पुलिस रही है। हाँ, जहाँ-जहाँ पुलिसने बलात्कार किया है वहाँ-वहाँ प्रायः गोरे नहीं रहे हैं।

पटना जिला, बाढ़ थानाकी घटना है। टामियोंने रैली गाँवको घेर रक्खा था। मोकामा स्टेशन तिजोरी केसके फरारोंकी खोज थी। सभी मरदोंको मैदानमें इकट्ठा किया और तब घर-घर घुसने लगे। नवजवान प्रदीप सिंह एक ओर जा रहा था। टॉमियोंने उसे पुकारा। पर वह बहरा था। क्या जवाब देता? कैसे रुकता? उसे उनने गोली मार दी। फिर तो सभी आतंकित हो गये और गोरोंको कई स्त्रियोंपर बलात्कार करनेका मौका मिला।

सिलाव थानेकी पुलिसने राजगीरमें कई स्त्रियोंपर बलात्कार किया। इस्लामपुर थानेमें तो हाजतमें पड़े हुए एक लड़केके साथ वहाँके कन्सटबिल और उसके एक अफसरने मुँह काला किया।

बख्तियारपुर थानेकी पुलिसने ता० १४ अगस्तको रवाइच गांवको टामियोंसे घिरवाया। अन्धेरा ही था। सुबह होनेमें कुछ देर थी। उसने उसी समय थाना देहमें अभियुक्तोंको पकड़नेके बहाने घर-घर घुसना शुरू किया और टॉमियों सहित जो काले कारनामें किये उनको लेकर तरह तरहकी अफवाह फैली रही। पर इतना तो निश्चित रूपसे पता लगा कि उनने दो स्त्रियोंपर बलात्कार किया।

शाहाबादके नोखा थानामें गोरे, बलूचियोंको लेकर पुलिस आयी। वहाँ एक स्त्रीपर बलात्कार किया। डिहरी थानामें गोरे और पुलिसने मिलकर कई जगह बलात्कार किये। डुमरांव थानाके ढ़ ग्राइच गांवमें चार स्त्रियोंपर बलात्कार हुआ।

मुजफ्फरपुरके सकरा थानाकी घटना है। सकरा बाजारमें मिलिटरीका एक जत्था ढोली कोठीकी तरफसे आया। सायंकालका समय था। एक युवती पाखाना जाती हुई पकड़ ली गई और मिलिटरीने उसपर बलात्कार किया।

मीनापुर थानाके गंज बाजारमें जो थानाके बिल्कुल नजदीक है दिनदहाड़े बलूची और गोरे एक पासी और एक महतोके घरमें घुस गये और घरनीपर बलात्कार किया।

बेला थानाकी पुलिसको तो मालूम होता है बलात्कार करनेकी आदत हो गई थी। उसने बेला मछपकौनीके एक कपड़ेके दूकानदारकी स्त्रीपर दिनदहाड़े बलात्कार किया। और कईके घरोंमें घुसकर उसने बलात्कार किया।

सिरसिया बाजारमें पुलिसने टॉमियोंके साथ मिलकर बलात्कार किया। मनेकौरमें पुलिसने एक गर्भवती स्त्रीपर बलात्कार किया और उसके जेवर छीन लिये।

बेलसंड थानेमें बसतपुर पुलके पूरब तरफ हरिजनोंकी बस्ती है। उस बस्तीमें गोरे घुस गये और अनेक स्त्रियोंपर बलात्कार किया।

पुपरी थानेमें ससेर गाँव है। वहाँ एक चौदह वर्षकी लड़कीपर बलात्कार किया पलिस और टॉमियोंने।

दरभंगा जिलाके समस्तीपुर सरकारी अस्पतालमें एक बलात्कारकी पीड़िता आई। वह कहती है—'लज्जावश नाम हम नै बताएब। हमरा घरमें चारिगो गोरा सिपाही घुसि गेल। हमरा साथ बेराबेरी जुलुम कैलक, जैसे हम अचेत हो गेली। तब हमरा लोग सब अस्पतालमें ले गेल।'

सिंगिया थाना बलात्कारका भी अड्डा रहा। सिंगिया बड़ा गाँव है। दो हजार घर हैं। यह समूचा गाँव वहाँकी पुलिसकी कामाग्निमें झोंक दिया गया। एक जानकार वकील लिखते हैं—पुलिस और मिलिटरीका शाम होते ही इतना ही काम था कि आसपासकी औरतोंपर बलात्कार करें। वे सब दिन भर आतंक और रोब फैलानेके लिये गाँवमें चक्कर काटते, धड़पकड़ जारी करते, खानातलाशी लेते और घर धुन लेते। फिर रातको मुजरिम गिरफ्तार करनेके बहाने उन घरोंमें घुस जाते।

फिर बन्दूक और संगीनके बलसे बहुबेटियोंपर बलात्कार करते। इनके काले कारनामोंकी बड़ी तादाद है। पर घरवाले अपनी आबरू बचानेके ख्यालसे इसे कबूल नहीं करते हैं। इसकी चर्चाके जबाबमें लम्बी सांस लेते हैं और आंसू बहाते हैं।

सिंगियाने अपनी दर्दनाक आवाज कलक्टर और कमिश्नर तक पहुँचाई और कमिश्नर साहब २२ जनवरी १९४२ को सिंगिया पधारे भी। पर पुलिसने जनताको इतना डराया धमकाया कि उसे कमिश्नरके सामने आनेकी हिम्मत नहीं हुई। २२ फरवरी '४३ को यानी ठीक एक महीना बाद उसने अपनी फरियाद लाट साहबको सुनाई। कहा—घरमें घुसकर ऐसा जघन्य अपराध किया गया है जिसकी चर्चा, गरीब होनेपर भी हम इतनी मर्य्यादा रखते हैं कि कर नहीं सकते। आप सी० आई० डी० का एक उच्च अफसर तहकीकात करनेके लिये भेजिये। फिर आपको यहाँकी मारपीट, व्यभिचार, उत्पीड़न, बदइन्तजामी और घूसखोरीकी जानकारी हो सकेगी।

पर लाट साहब भी कानमें तेल डालकर लेटे रहे और अंगरेजी ताज पहने बेखटक, निष्कण्टक, पापाचार मानवकी माँ बहनको सिंगियामें दिनदहाड़े भी, रास्ते पैरें भी सताता रहा, रुलाता रहा।

मधुबनी सबडिविजनमें कई जगह बलात्कार हुए। लौकही थानेमें वहांकी पुलिसने तो लगातार कई दिनोंतक कई लड़कियोंको गायब रक्खा है।

झंझारपुर थानेसे सटकर जो सड़क जाती है वह पुलिसके दुराचारकी वजहसे सुनसान हो गई। एक समयकी घटना है, तीन जनानी सवारियां जा रही थीं जिनमेंसे पुलिसने औरतोंको उतार लिया, उनके जेवर छीन लिये और उनपर बलात्कार किया। १३ सितम्बरको भराम गांवमें एक स्त्रीपर बलात्कार किया गया। फुलपरास थानाके सिंघवार गांवमें ३० अगस्त '४२ को एक सोनारिनपर रातमें बलात्कार किया गया और उसके सोने चाँदीके जेवर छीने गये।

पर बलात्कारका जो रोंगटे खड़ा कर देनेवाला दृश्य टॉमियोंने मुङ्गेरके चौथम थानामें दिखलाया उसे संसारकी नारी मर्यादा भूल न सकेगी। सितम्बरके पहले हफ्तेकी बात है टॉमी बंगलिया और रोहियार पहुँचे। आग और गोलीकी संहार लीलाका जो काण्ड रचा उससे वहांकी जनताका बल टूट गया। फिर गिरोह बाँधकर वे बंगलिया और रोहियारकी स्त्रियोंपर टूट पड़े कामान्ध होकर।

एक टॉमीने बंगालियाकी एक स्त्रीका हाथ पकड़ा पर स्त्रीने ऐसा झटका दिया कि टॉमी लड़खड़ाकर दूर हो गया। पर तुरत दूसरा आया। देवीने उसके मुंहपर अपने दोनों हाथोंका धक्का दिया और वह पीछे लड़खड़ा गया। फिर तो एक और टॉमी पहुँचा और तीनोंने मिलकर उस देवीको नीचे गिराया और तीनोंने उसके साथ मुंह काले किये। वहां बलात्कारकी और भी घटनायें हुईं। रोहियारमें आकर तो टॉमियोंकी कामान्धता बढ़ गई। उनने कितनोंपर बलात्कार किया पर सातमें ही हिम्मत हुई कुछ कहनेकी और तीनमें ही ऐसा नैतिक साहस था जो वे बोल सकीं और अपना नाम दे सकीं। टॉमियोंकी भीषण कमान्धताकी पिशाच लीलाने रोहियारकी स्त्रियोंको दुस्साहसी बना दिया। भयावनी रात थी। उमड़ी हुई नदी गांवको चारो ओरसे घेरकर गरज रही थी—खबरदार! कोई हिले डुले नहीं। उस भयंकर परिस्थितिमें गोरोंकी काम-क्रूरतासे बच निकलनेके लिये घरसे बाहर हुईं स्त्रियां, अपने बच्चोंको छातीसे चिमटाती हुईं। नावपर चढ़ीं और पार जाने लगीं। पर न धाराका सहयोग, न हवासे मेल, और न दिशाका ज्ञान! नाव भंवरमें पड़ उलट गई और नौ डूब गईं। डूबी हुईमें नरसिंह पाठककी दो पुत्रवधू थीं और दो लड़कियां; अधीन गोपके दो बच्चे छोटे छोटे और मां और स्त्री और भौजाई।

चौथम थानेका सिपाही टॉमियोंके साथ सोनवर्षा नामक गाँवमें आया। वहाँ उसने टॉमियोंसे मिल कर एक गर्भवतीके साथ बलात्कार किया। परिणाम स्वरूप बेचारीका गर्भपात हो गया।

बलिया थानामें बलात्कारकी अनेक घटनायें हुईं जिनकी जवाबदेही है टॉमियों पर और वहांकी पुलिसपर।

१० सितम्बरको गोरोंका एक दल बलिया बाजार आया और उसने उसी दिन एक लहेरीकी लड़कीपर बलात्कार किया।

जनवरी '४३ की घटना है। बालूपर गोरोंका कैम्प था। कुछ गोरे एक बिन्दटोलीके घरमें घुसे और एक बिन्द लड़कीको उठाकर अपने कैम्पमें ले गये। २४ घण्टेके बाद वे उस लड़कीको फिर बिन्दटोलीके पास छोड़ गये जो उस समय बेहोशीकी हालतमें थी।

संथाल परगनेमें बलात्कारने अपनी संहार शक्तिका पर्याप्त परिचय दिया है। २८ अगस्तको रोहिणी देवघरमें एक स्त्रीपर कई बलुचियोंने बलात्कार किया,

जिसके फलस्वरूप वह तीन चार दिनके बाद मर गई।

जैसीडीहके पास गंगरी ग्राम है। वहां एक युवती लकड़ी चुनने जा रही थी। बलूची कामान्ध कुत्तोंकी तरह उसपर टूट पड़े। वह बेहोश हो गई। गंगरीके कुछ लोगोंने उस राहसे गुजरते हुये सुना सड़ककी एक ओर पड़ी हुई स्त्री पानी ! पानी ! बोल रही है। और शामको वह मरी हुई पायी गई। यह भी २८ अगस्तकी ही घटना है।

जमुआ मौजाकी दो राह चलती हुई स्त्रियोंको बलूची अपने अड्डेपर पकड़ लाये। उनने कन्दवन आश्रमको ही अड्डा बना रक्खा था। यहाँ सबोंने उन दोनोंपर बलात्कार किया।

सरावां थानामें मथुरा गांव है। यहां मार्च १९४३ में बलुचियोंने एक युवती पर बलात्कार किया। उसने अपमान और लाजका इतना अनुभव किया कि गाँवमें रह नहीं सकी। सदाके लिये मैके भाग गई।

खास देवघरमें जहाँ एक राजा वायु सेवनके लिये रह रहे थे, ता० १९ अगस्तको गोरोंकी चपेटमें आ गए। उनकी बहनपर गोरोंने बलात्कार किया। खबरको छिपा रखनेकी स्वाभाविक चेष्टाके अतिरिक्त राजा साहब और क्या कर सकते थे ?

भागलपुरके बांका सबडिविजनने तो कामान्धताकी पराकाष्ठा देखी है।

१९४३ के अप्रैलमें अमरपुर थानाके कुन्नथ गांवमें बलूची पहुँचे, एक डकैती केसमें एक दो अभियुक्तोंकी खोजमें। उनने चार घरोंमें घुसकर बलात्कार किया। इनमें एक घर ब्राह्मणका और दूसरा नाईका है। यहांसे बलूची असौता गये। वहाँ भी एक घरमें घुसकर बलात्कार किया।

इसी माहमें बेलडीहामें पुलिसका बर्बर धावा हुआ। पुलिसके साथ बलूची भी पहुँचे। पुलिसने गाँव भरके पुरुषोंको एक जगह इकट्ठा करके अपने हिरासतमें रक्खा और लूटपाट करनेके लिये बलूचियोंको गांवमें छोड़ दिया। उस गांवमें बलात्कारकी दो घटनाएँ हुईं। घटनाओंका जो वर्णन मिला है वह बलात्कारकी पाशविकताको स्पष्ट कर देता है। यह साधारण पाशविकता है जिसका बलात्कारियोंने हर जगह परिचय दिया।

एक देवीने कहा है—"बलूची घरमें घुस आये। कपड़ा लत्ता झपट लिया। नाकसे बुलकी और गलेसे हंसली ज़बरदस्ती हाथ देकर निकाल लिया। कनफूल

भी खोल लिया। फिर सब चले गए। वे चार थे। दो खड़े रहे और दो जेवर छीन रहे थे। मौका पाकर भाग कर मैं पुरबारी घरमें छिपी ही थी कि एक बलूची आया। मैं चिल्लाने लगी कि उसने मुझको पटक दिया और बदमाशी की। मैं रोती चिल्लाती रही।"

दूसरा बयान सुनिये—"हमार बेटी जेकर उमर १७ बरस छलै। सोगलबा सबसे तीन ठो बन्दूक लेने ऐलै औरो घुसी गेलै। हमर बेटीके साथे जबरदस्ती बदमाशी करे लागलै। हमर बेटी कने लागलै। हम जबे मना करलिये हमरो बन्दूक लेके मारलकै। कुछ दिनके बाद बांकाके हाकिम हमर गांव ऐलै। हमैं औरो हमर बेटीने कह लिये कि हमरा बेइज्जत करलक और मारलक। लिखी ते लेलक पर कुछ न करलक।"

बेलडीहामें दूसरे ही दिन दण्डकर वसूल करने आये राजकिशोर बाबू, जिनको दोनों सूचनाएँ दी गईं, पर नतीजा कुछ न निकला। गांववालोंने कलक्टरके यहां भी खबर भेजी और कलक्टर साहब, एस० डी० ओ० बांका और राय बहादुर सिंहेश्वरप्रसाद सिंह, रिसीवर बनैली राजको लेकर आये। रायबहादुरने गांव-वालोंके संबंधमें उन्हें उलटा सीधा समझा दिया और वे दण्डकर न अदा करनेके लिये गांववालोंको ही डांट डपटकर चले गये। रायबहादुर सिंहेश्वर सिंह उधरके गांववालोंको पीड़ा पहुँचानेमें खास दिलचस्पी लेते रहे हैं और अपने जालिमाना हरकतोंके लिये काफी बदनाम हैं।

कामातुरता क्या कर सकती है क्या नहीं, जाननेके लिये भितिया आइये। कटोरिया थानामें भितिया एक छोटा सा बाजार है। यहां १९४३ के मार्चमें बलूचियोंने अपना पड़ाव डाला। इनने अप्रैलके प्रथम सप्ताहमें ढकना गांवको एक गर्भवतीपर बलात्कार किया जिसके फलस्वरूप स्त्रीका गर्भस्राव हो गया। फिर उनने पजरपट्टाकी एक लड़कीपर भी बलात्कार किया।

भितियाका एक १७ वर्षका लड़का लकड़ी लेकर जंगलसे आ रहा था। बलूची टहलने जा रहे थे। साढ़े आठ बजे सुबहका वक्त था। बलूचीने उसकी धोती छीन ली और उसपर बलात्कार किया। दोपहरको बाहगर नदीके किनारे २४ वर्षका एक युवा पाखानेको गया। उसपर भी बलूची टूट पड़े और बलात्कार किया! रामानन्द सिंह दारोगाको दोनों घटनाओंकी सूचना दी गई थी पर दोनों बार उसने कहा—खूब होता है; इन लोगोंके साथ ऐसा ही होना चाहिये। मालूम नहीं अब

उसने सुना कि बलूचियोंने मितियाकी बकरीपर भी बलात्कार किया तब उसके मुँहसे क्या निकला।

पूर्णियाने बलात्कारकी कई घटनायें देखीं। रूपौली थानाके मधुरापुर गांवकी १६ वर्षकी एक नवयुवतीको फौजी अकबरपुर कैम्प घसीट ले गये; चार दिनोंतक रखा और उसपर बलात्कार किया। श्रीराजा ठाकुरसे नारीत्वका ऐसा अपमान न सहा गया और उनने हल्ला किया जिसपर वे बड़ी बेरहमीसे पीटे गये। ब्रह्मज्ञानीमें दो बलूची एक मुसहरके घरमें घुस गये और १८ सालकी नवयुवतीपर बलात्कार किया। मुसहरोंने दारोगाको इसकी खबर भी दी पर उसके कानोंपर जूं तक न रेंगी। मतेलीकी २० सालकी युवती रूपौलीके फौजी कैम्पमें दस दिनों तक रोक रखी गई और बलूचियोंके बलात्कारका शिकार बनती रही।

पूर्णियामें मातृत्वकी मर्यादापर आघात करके मानवताको घिनानेवाले फौजी या पुलिस ही नहीं थे, बल्कि पुलिसके अफसर भी थे। कोढ़ा थानाकी रिपोर्ट है। मंगहा कैम्पमें सिपाही बैठाकी पत्नी पकड़ ली गई और उसपर पुलिसके सब-इन्सपेक्टर और इन्सपेक्टर साहबने बलात्कार किया।

बलात्कारकी जितनी दुर्घटनायें हुईं उनमें कमका ही उल्लेख हो सका है। बलात्कारके प्रयत्न तो अनगिनत हुए। और जहां परिस्थितिका बल मिला स्त्रियोंका भागना चिल्लाना और सामना करनेके लिये अड़ जाना उन्हें बचानेमें सफल हो सका है।

आत्म-बलका कौन कहे—कामुकता कटारसे भी डरती है और कटारको तो औसत स्त्रियां भी अपना सकती हैं। यदि आज गहनेकी तरह कटारसे भी वे अपनेको सजा रखतीं तो अनेक कामुकोंकी काम-शक्ति उन्हें देखते ही हिरन हो जाती।

मुजफ्फरपुरके पुपरी बाजारकी घटना है। ता० २५ अगस्तको गोरी फौजकी मददसे दारोगाजी लालचन्द मदनगोपालके घरमें घुसे और स्त्रियोंकी इज्जत लेनेपर उतारू हुए। तत्काल निरंजन बाबूकी पत्नी कटार चमकाती हुई आड़े आई; बोली—खबरदार! जो घरमें पैर रक्खा! दारोगा वहांसे नौ दो ग्यारह हो गया।

शाहाबाद डुमरांव थानाके कोरान सरैया गांवमें गोरे श्रीरामशंकर तिवारीके घर घुसना चाहते थे। तिवारीजीने हाथमें भाला संभाला और प्रवेश द्वारपर खड़े हो गए। आंगनमें दनादन गोलियां चल रही थीं पर उनका उधर ध्यान नहीं जाता

था। वे अपने घरकी स्त्रियोंको देखते फिर गोरोंकी ओर देख भाला संभालते। स्त्रियोंकी इज्जतके लिये मरने मारनेको तैयार हो रहे थे। गोरोंने उन्हें देखा और ठिठक गये। पर एकने हिम्मत दिखलाई और भीतर घुसनेके लिये बढ़ा ही था—भाला लगा कचसे। गोरोंने अपने घायल साथीको सहारा दिया और तत्काल गांव छोड़ चले गए। दूसरे दिन वे फिर लौटे और, और ताकतवर बन कर, पर तिवारीजीका घर खाली था जिसके दालानको ही जला कर उनने सब्र कर लिया।

दमनकी प्रतिक्रिया

अक्तूबर १९४२ के आते-आते आतंक बिहार व्यापी हो गया। फौज, मजिस्टर, पुलिस और खास अदालतें जो उस मौकेपर कायम की गयीं, आतंकको व्यापकताके कारण बनीं। सरकारने बिहारके गांव-गांवमें हैडमैन चुने; भेदिये बहाल किये जो कांग्रेसके हमदर्दोंको भी पकड़ने और परेशान करने लगे। चौकीदार और दफादार तक दारोगा बन बैठे। जनता दब गयी; क्रान्तिके मैदानसे हट गयी। पर कार्यकर्त्ता डटे रहे। हाँ! उनके डटनेका तौर तरीका बदल गया। पहले उनका काम खुलेआम होता था; अब गुप्तरूपसे होने लगा।

लगभग २५ हजार कार्यकर्त्ता संगी-साथी सहित जेलकी हवा खा रहे थे। हाजतियोंकी तादाद अलग। फिर जो जेलके बाहर रह गये थे उनकी संख्या कम न थी। दमनने उनको दो गराहोंमें बाँट रखा था। एक गरोह था फरारोंका; दूसरा गुप्त आन्दोलन कारियोंका।

फरारोंमें अधिकांश आतंक-पीड़ित थे। दमन-चक्र उन्हें खदेड़ता फिरता था और उनके क्षेत्रोंकी आतंक पीड़ित जनता भी उन्हें आश्रय देनेको तैयार न होती थी। इसलिये जहाँ उन्हें आश्रय मिला वे भागे। कोई अपने जिला या प्रान्तमें ही जहाँ तहाँ छिप रहा; कोई पश्चिमकी राह गया; कोई पूरबकी राह बढ़ा और कितने नेपालके शरणार्थी हुए। उद्देश्य था 'कानून' से बचना। दमनके एजेण्टोंने

अफवाह उड़ायी थी कि अमुक अमुकके नामसे शूटिंग वारण्ट है। अमुक अमुकको भागना पड़ा क्योंकि गोली खानेसे न भागना तो नादानी ही था। फिर जितने भागे सभी जतलाने लगे कि उनके पीछे भी शूटिङ्ग वारण्ट घूम रही है। इस शूटिङ्ग वारण्टके हौआने सबोंको बड़ा हैरान किया। लेखकको इस सम्बन्धमें एक दिलचस्प कहानी कहनी है। अक्तूबरका ही महीना था। लेखक गुप्त आन्दोलनकारीकी हैसियतसे लहेरियासरायमें डेरा डाले था। आधीरातको किसीने उसका दरवाजा धीरेसे थपथपाया। फौरन दरवाजा खोल दिया गया और जयनगरके प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्रीअयोध्याप्रसाद सिंह दबे पांव आये और बोले कि मुझपर शूटिङ्ग वारण्ट है। लेखकने प्रश्नोंकी झड़ी लगा दी—कब वह वारण्ट कारगर होगा? वह किसी गलीमें ही मरना पसन्द करेंगे या मैदानमें गोली खायेंगे? मैदानमें ही गोली खाना अच्छा होगा क्योंकि सभी देख सकेंगे और उनकी मौतसे सबक लेंगे! अयोध्या बाबू अवाक हो गये। इस आन्दोलनके सिलसिलेमें उनकी और लेखककी पहली मुलाकात थी। पहले भी कभी खास बातचीत नहीं हुई थी; थोड़ी देर चुप रहकर उनने कहा—आप मजाक कर रहे हैं? मैंने यहां बड़े बड़े कांग्रेसी वकीलोंसे राय ली है; पुराने-पुराने कार्यकर्त्ताओंसे बातचीत की है। सबोंने शूटिङ्ग वारण्टकी हकीकत मानी है। मैं बेतरह डरा हुआ हूँ। मेरे साथ मजाक न कीजिये।

लेखकने उन्हें समझाया कि वकील वगैरह शान्तिकालके जीव हैं, क्रान्तिकालमें उनके पास जाना भयंकर भूल है; जो गया सो डरा! दूसरे दिन लेखक अयोध्या बाबूसे मिलने गया। वे एक झोपड़ीमें फटी चटाईपर बैठे थे, दिनमें बाहर नहीं निकलते थे; अन्दर ही पेशाब-पाखानातक करते थे। वैसी जगहमें उनकी दशाको देखकर मानना ही पड़ता था कि सचमुच उनपर शूटिङ्ग वारण्ट है। लेखक उनको लेकर झोपड़ेसे निकला, दिनदहाड़े गलीमें, सड़कपर और इधर उधर घूमा फिरा। फिर तो अयोध्या बाबूके पर निकल आये; उनने अपना नाम निर्भय राम रखा और अपने सबडिविजन्स ही नहीं अपने थानेमें भी घूमघूम वे पीड़ितोंका आंसू पोछने लगे और सरकारके अत्याचारकी रिपोर्ट लेने लगे। उनने फरारोंके बीच भी बड़ा काम किया। कई बार नेपाल गये, लेखकको भी ले गये और फरारोंको देश वापस लौटनेके लिये प्रोत्साहित किया और कामयाब भी हुये।

फरारोंमें सबोंको आतंक पीड़ित कहना अनुचित होगा। उनमें कितने ऐसे भी थे जो काम करते करते थक गये थे और विश्रामके ख्यालसे फरार हो गये थे। कितने ऐसे थे जिनको अपनी जानका डर न था और न जिनमें उत्साहकी कमी थी। जनताको आतंकित देखकर उनने टल जाना ही उचित समझा था। सोचा था कि जब घटना-चक्र जनतामें फिर उफान पैदा करेगा तब वे लौटेंगे और प्राणोंकी बाजी लगाकर जनताका नेतृत्व करेंगे। श्रीविन्ध्येश्वरीप्रसाद सिंह लिखते हैं—"सबोंकी धारणा थी कि बरसातके बाद हिन्दुस्तानपर जापानी आक्रमण अवश्य होगा। उस अवसरके लिये बचा जाय। ज्योंही जापानी आक्रमण हो कि तोड़फोड़का काम जोरोंसे आरंभ कर दिया जाय। इससे अंग्रेजोंको दो मोर्चोंपर शक्ति लगानी पड़ेगी। ऐसी परिस्थितिमें अंगरेजोंको बाध्य होकर गांधीजीको छोड़ना पड़ेगा और कांग्रेससे सुलह करनी होगी। अंगरेजोंके नहीं झुकनेपर भी हमलोग इन दोनों युयुत्सु राष्ट्रोंके भारत भूमिमें लड़ते रहनेसे अराजकताकी स्थितिमें ऐसा दल संगठित करेंगे जो विजेताका पैर यहाँ जमने न देगा और उसे हमारे नेतासे सन्धि करनी पड़ेगी। करीब करीब सभी कांग्रेसियोंके हृदयमें यही बात थी। उनका नेपाल-प्रवास कायरताके कारण नहीं था। × × × पर लोगोंको टीका टिप्पणी करते पाया है और इन प्रवासियोंको अपने बन्धुओंको विपत्तिकालमें छोड़कर जान बचानेकी कायरतापूर्ण चेष्टाके गुरुतर अपराधके आरोपसे विभूषित होते सुना है।"

विन्ध्येश्वरी बाबूको गलत माननेकी कोई वजह नहीं है। पर फरारोंको लेकर जो गलत-फहमी फैली और उसका जनतापर जो बुरा असर पड़ा उसकी जवाब-देही फरारोंके सर ही है। वे सब भागे बिना किसी योजनाके, बिना अपने सहकारियोंकी सलाह मशविराके और बिना उनको कोई सूचना दिये। फिर जहां वे भागे वहां इस तरह डूबे रहे कि जो थोड़ा बहुत खतरा उठाकर लुके छिपे जनताके बीच कामकर रहे थे उनको लाख कोशिश करनेपर भी पता न लगता था कि कौन फरार कहां है और क्या कर रहा है? फौज, मजिस्टर, पुलिस और खास अदालतोंको इन फरारोंकी रीति नीतिसे भी आतंक फैलानेमें काफी सहायता मिली।

बिहारके आन्दोलन कारियोंको नेपालसे बड़ी बड़ी उमीदें थीं और ज्यों ज्यों प्रान्तकी हालत बिगड़ती गई त्यों त्यों वहांका आकर्षण बढ़ता गया। कितने मनचले

कहते थे कि वहां बागियोंको फौजी ट्रेनिङ्ग दी जा रही है और नेपाल खुद अंगरेजोंके खिलाफ सर उठानेकी तैयारी कर रहा है; और प्रायः सभी फरारोंका खयाल था, जैसा कि श्रीविन्ध्येश्वरीप्रसाद सिंहने सुना "नेपाल सरकार भगेलूको आश्रय देती है और कांग्रेसकर्मीको हर तरहकी सुविधा देती है।" पर वहां जाकर सबोंकी आशापर पानी फिर गया।

श्रीरामवरण सिंहका सारा परिवार आन्दोलनमें पड़ा था। इसलिये सभी नेपालमें विश्राम ले रहे थे। उन सबोंको नेपाल सरकारने ही गिरफ्तार किया। श्रीरामवरणजी लिखते हैं—"जलेश्वरके प्रधान श्रीरामशमशेरसे मिला था। उनने कहा था कि इस तरह आप ठहरिये कि ब्रिटिश सी० आई० डी० को आपका पता न मालूम हो सके। उसने पता लगा लिया तब आपको बचाना मुश्किल हो जायगा। हां! मुझको अपना पता देते रहियेगा ताकि मैं आपको कोई नयी परिस्थिति उत्पन्न होनेपर सावधान कर सकूं।" पर जब मैं बिना ब्रिटिश सरकारके आदमियोंके शिनाख्तके नेपाल सरकार द्वारा पकड़ लिया गया और श्रीरामशमशेरके सामने लाया गया तब मैंने उनके वचनकी याद दिलाई। वे बोले—उस समय आपलोगोंका वारण्ट नहीं आया था; इसलिये आपलोगोंको फंसाकर रखना चाहता था; वारण्ट आनेपर गिरफ्तार कर लिया है। उनकी बातचीतसे पता लगा कि शुरूमें जो कुछ सहानुभूति उनने दिखलायी थी वह कांग्रेसकी बढ़ती हुई और ब्रिटिश सरकारकी घटती हुई ताकतको देखकर। १९४२ के अगस्त आन्दोलनमें हिन्दुस्तानमें जैसी परिस्थिति उत्पन्न हुई थी उससे वे घबड़ा गये थे और अपनी हिफाजतके लिये ही काठमांडूसे मिलिटरीके ६१ आदमियोंका एक जत्था मंगा कर जलेश्वरमें रक्खा था। इसे देखकर ही लोगोंने अफवाह फैलायी कि ब्रिटिश सरकारसे मुकाबला करनेकी तैयारी नेपाल सरकार कर रही है। पर बात बिलकुल गलत थी। शुरूमें भी हमलोगोंके साथ नेपालके जिन अफसरोंने सहानुभूति दिखलायी आखिरमें उनको बड़ी बुरी सजा भुगतनी पड़ी। कितनोंकी नौकरी गई, जुरमाने हुये, जेलकी सजा हुई। नेपाल सरकारकी नीति हमीं लोगोंके साथ नहीं बरन् हमलोगोंके साथ सहानुभूति रखनेवालोंके साथ भी बड़ी बुरी रही।"

गुप्त आन्दोलनकारी भी 'कानून' की नजरमें तो फरार ही थे पर जनताकी

पहुँचके बाहर नहीं थे। क्षेत्र बदलकर, डेरा बदलकर या नाम बदलकर वे पीड़ित जनताके बीच जाते और कांग्रेसकी खबरें सुनाया करते। वे पीड़ितोंकी धनजनसे मदद भी करते। उन सबोंने अपना संगठन भी बना लिया था। जो थाना तब भी जाग्रत था वहां थाना संगठन भी था पर जिला संगठन तो प्रान्त भरमें था। इन सबके ऊपर प्रान्तीय संगठन था जिसका काम श्रीध्वजाप्रसाद साहु और श्रीनथुनी सिंह संभाल रहे थे।

पर गुप्त आन्दोलनकारियोंमें विचारभेद जोर पकड़ रहा था। उनका एक वर्ग कहता कि अहिंसाको ध्रुवतारा मान आगे बढ़ना चाहिए। जहां जनताकी ओरसे खून हुआ था, जहां जहां उसकी ओरसे लूट हुई थी वहां वहां अधिक आतंक था। इसलिये उस वर्गका कहना था कि कभी कोई ऐसा काम न करना चाहिये, न इस ढंगका प्रचार होना चाहिये जिससे जनताकी हिंसा-वृत्ति जगे या वह लूटकी ओर आकृष्ट हो। सरकारके अत्याचारका सामना भी अहिंसा द्वारा ही करना चाहिये। यदि अहिंसापूर्वक उसका प्रतिकार न किया जा सके तो उसे धीरतापूर्वक सह लेनेके अलावा और कोई उपाय नहीं है। उस वर्गका सशस्त्र क्रान्तिमें विश्वास न था, इसलिये शस्त्रास्त्र संग्रहसे भी दिलचस्पी न थी। हां! वह तोड़-फोड़में विश्वास रखता था। इसलिये डिनामाइट जैसी चीजोंकी खोजमें वह रहता और उसके लिये काफी रुपये खर्च करता। पर डिनामाइट जैसी चीजोंका उपयोग वह खुद नहीं करता। उसका उपयोग करता था दूसरा वर्ग। यह दूसरा वर्ग अहिंसामें विश्वास नहीं करता था और दमनके प्रतिक्रिया स्वरूप तो वह चिल्लाने लगा था कि अहिंसासे कुछ नहीं होगा; हमें अब हिंसाको अपनाना चाहिये। उस वर्गके लोग हथियार संग्रहमें लगे रहते थे और मानते थे कि सशस्त्र क्रान्ति करनेका इससे और अच्छा अवसर दुर्लभ है। पर उनकी विचारधारा साफ न थी। इसलिये वे न तो ठोस प्रोग्राम बना पाते थे और न व्यापक संगठनकर पाते थे। फिर व्यापक संगठन और गुप्त जीवन साथ साथ चलता भी तो नहीं है, उनको बस एक ही उमीद थी और सो भी युद्धकी परिस्थितिसे। उनको मालूम था कि जनता दब गई है लेकिन उसके हृदयमें ब्रिटिश सलतनतके खिलाफ प्रतिहिंसाकी प्रचण्ड आग जल रही है और उनका अनुमान था कि जहां उस सलतनतकी टांग पूरबी या पश्चिमी मोरचेपर ठीकसे लड़खड़ाई वहां जनता फिर एकबार जी जान लड़ाकर उठ खड़ी होगी

और अच्छा। नेतृत्व मिला तो राजतन्त्रकी जड़ उखाड़ फेंकेगी। वे कहा करते कि हम वैसे नेतृत्वके विकासमें लगे हैं। पर वे जनताको आकृष्टकर सके अपनी तात्कालिक राजनीतिके कारण। दमनकी उग्रताने जनताको पागल जैसा बना दिया था। वह जैसे हो तैसे अपना त्राण चाहती थी। उस समय जिस कोटिके अहिंसावादी जन-सम्पर्कमें थे वे कोई नई बात नहीं कहते थे और न कोई नया काम करनेकी शक्ति रखते थे। पर इस वर्गके लोग नयी-नयी बातें करते, नया प्रोग्राम देते और जनताके हृदयमें नयी आशाका संचार करनेमें समर्थ होते। 'हथियार जुटने दो!' 'धन मिलने दो!' 'और देखो! हम अत्याचारियोंको कैसे मार भगाते हैं', वे बराबर कह सकते थे क्योंकि पर्याप्त हथियार और धनका जुटा पाना असंभव था। पहले वर्गके लोगोंको ऐसी सुविधा प्राप्त कैसे हो सकती थी? इसलिये आतंकित क्षेत्रोंके अहिंसाकी शक्तिसे अपरिचित वातावरणमें जनता स्वभावतः सशस्त्र क्रान्तिकारियोंकी ओर झुकी और जो भी मदद वह उनको दे सकती थी देने लगी।

यों तो शस्त्रास्त्रकी चर्चा करनेवाले कुछ न कुछ हर जिलेमें थे पर मुङ्गेर और भागलपुरमें इनका संगठन था जो इस तरह जोर पकड़ रहा था कि सरकार घबड़ा रही थी।

मुङ्गेर शहरके पास ही हेमजापुर गांव है जहांके श्रीगोविन्द सिंहने अगस्त '४२ में ही एक दल संगठित किया था। दलका उद्देश्य था अपनी बिरादरीके कुछ "दुश्चरित्र और अत्याचारी लोगोंको" मार डालना। उन लोगोंपर असफल वार भी हुये। फिर उन लोगोंने पुलिसकी मदद चाही। इस तरह पुलिस गोविन्द दलके पीछे पड़ी। अब बिरादरीका झगड़ा गोविन्द दल और सरकारके झगड़ेमें बदल गया। तब क्या था? गोविन्द दलसे पुलिस पीड़ितोंकी सहानुभूति होने लगी। श्रीगोविन्द सिंह अनुभवी डाकू थे बड़े फुर्तीले और बलवान। पुलिससे छीनकर, अमभार कैम्प, जमालपुरको लूट कर और कारीगरोंसे बनवाकर उनने काफी हथियार इकट्ठेकर रखे थे। डाके डाल डालकर धन भी जमा कर लिया था। इसलिये उनका अड्डा राजनीतिक फरारोंके लिये निरापद मालूम होने लगा और कितने फरार उनके शरणागत हुये। एक दो सशस्त्र क्रान्तिकारियोंके गरोहने उनसे जब तब रुपये भी लिये। फिर उनके लिये आसान हो गया कि अपनेको क्रान्तिकारी बतलायें।

चौथम थानामें पिपरा गांव है जहांके थे श्रीमहेन्द्र चौधरी। राष्ट्रीय विद्यालय गोगरी और खगड़ियामें आप लिखे पढ़े, फिर विहार विद्यापीठ और काशी विद्यापीठ देखा और चर्खासंघमें काम किया। अगस्त-क्रान्तिमें आप कूद पड़े और सितम्बर '४२ में श्रीछत्रधारी सिंहके द्वारा ध्वंसात्मक विभागके इन्चार्ज बनाये गये। आपने काफी हथियार इकट्ठे किये और महेन्द्र-दलका संगठन किया। शुरू शुरूमें आपको श्रीपार्थ ब्रह्मचारीका सहयोग मिला पर बादको वे आपसे अलग हो गये। फिर भी आपके दलमें काफी लोग थे और बशीर मियां, कारी तांती, बहादुर कमार और कमली तियर तो आपके दायें बायें घूमते थे। चौथम थानेमें राष्ट्रीय सरकार कायम थी और राष्ट्रीय फौज द्वारा सुरक्षित थी जिसकी जवाबदेही आपके सर थी। फौजी बजट मामूली नहीं हुआ करता। इसलिये आपको राष्ट्रीय सरकारके नामपर मांगकर, डाका डालकर, यहांतक कि रामनगर, तेलिहार और पटुआहा आदि गांवोंके छोटे मोटे किसानोंसे भी जबरदस्ती अन्न वसूलकर काफी धन इकट्ठा करना पड़ता था। आप अपने दलके साथ हथियार बाँधे थाने भरमें सबलोंसे निर्बलोंकी रक्षा करते घूमते थे। एक दम्पत्तिमें लड़ाई हो गई। आपके दलने स्त्रीको अबला जान तबतकके लिये अपनी हिफाजतमें ले लिया जबतक कि पति-पत्नी फिरसे स्नेह पूर्वक साथ रहनेका निश्चय न करें। और उस अबलाकी सभी तरहकी आवश्यकताओंको उस दलके लोग अपने मनसे ही पूरा करते रहे। आपको सभी तरहके कार्यकर्त्ताओंका सहयोग मिला। किसीने उनको सलाह दी; किसीने उनका धन रखा। ऐसे लोगोंमें राष्ट्रीय विद्यालय, जिला कांग्रेस और चर्खासंघके भी पुराने कार्यकर्त्ता शामिल थे। इसलिये आस-पासके फरारोंकी जमात श्रीमहेन्द्र चौधरीके इर्द गिर्द इकट्ठी होगई और वे एक बड़े क्रान्तिकारी माने जाने लगे।

मुंगेरमें और भी कई दल संगठित हुये पर पनप न सके। उनसे संबंध रखनेवाले जवान अभी जिन्दे हैं। इसलिये उनकी चर्चा करना ठीक नहीं है। पर दो एक घटनाओंका उल्लेख करना जरूरी है जिससे पता लगे उस समय हथियार इकट्ठा करनेकी धुन कैसी होती थी ?

इटहरीके श्रीलक्ष्मी सिंह और कुछ लोगोंने अममर कैम्प, जमालपुरसे कुछ हथियार उड़ाये। सबोंकी सलाहसे श्रीलक्ष्मीसिंह हथियारके थातीदार बने। कुछ समयके बाद उनसे हथियार मांगे गये। उनने देनेसे इनकार किया। बोले

कि हथियार उड़ाये गये थे विदेशियोंसे लड़नेके लिये; देशवासियोंको उत्पीड़ित करनेके लिये नहीं। १९३० से ही लक्ष्मीसिंहजी कांग्रेसका काम करते थे। उनकी धाक थी। देहदशासे भी काफी दुरुस्त थे। इसलिये पहले कुछ दिन साथी सब चुप रहे। बादको महेशपुरके श्रीकमलेश्वरी सिंहको उनने बीचमें पड़नेके लिये कहा। परन्तु कमलेश्वरी बाबू राजी नहीं हुए। तब एक दिन साथियोंने श्रीलक्ष्मी सिंहसे कहा—चलो! उस दियरामें पार्टी मिटिंग है; बम्बईके नेता आये हैं। लक्ष्मी सिंह दियरा पहुँचे। तुरत उनकी छातीसे पिस्तौल सटा दी गई और हथियार वापस मांगे गये। सिंहजीने बड़ी बेपरवाहीसे अपना पुराना जवाब दुहराया और साथीके हाथसे गोली खाकर शहीद हो गये।

कुछ बम मऊ बाजितपुरके श्रीबलदेवप्रसाद सिंहके हाथ लगे जिनको छिपाकर दो साथियोंके साथ वह कैली सरैया पहुँचे। थक गये थे; इसलिये बम गाड़कर सो गये और साथियोंसे कहा—उखाड़ना मत। साथियोंने सोचा कि उनको सोता छोड़कर हम माल, बम लेकर खुद क्यों न चम्पत हो जायं। खंतीसे उखाड़ने लगे कि बम फूटा और बाराबारी तीनों जानसे हाथ धो बैठे।

मुंगेरसे भागलपुरमें बड़े बड़े दल थे। क्षेत्र बड़ा था और दृष्टिकोण भी। बांका सबडिविजनमें परशुराम-दल था। श्रीपरशुराम सिंह कटोरिया थानामें बसमत्ता गांवके रहनेवाले थे। पहले आन्दोलनसे अलग रहे क्योंकि लड़का बीमार था। पर लड़का मर गया जिससे दुनियासे कुछ विराग हुआ। फिर उनने रेहनके तमस्सुकोंको लोगोंको वापसकर दिया और मजदूरोंको अगाऊ मजदूरीके रूपमें कुछ अन्न बांट दिये। बस उनका नाम आसपासमें फैला और कुछ फरार उनसे मिले जिनके साथ वह रजौन थानेके मकौनी गांव आये जहां सबडिविजन भरके कार्यकर्त्ता इकट्ठे हुये थे। वहां उनको दमनकी उग्रता और फरारोंकी परेशानीका पता लगा। वहांसे लौटकर उनने अपना दल संगठित किया। बसमत्ता जंगल और पहाड़ियोंका इलाका है जहां छिप रहनेके बहुत ठिकाने हैं। इसलिये परशुराम बाबूके यहां फरार इकट्ठे होने लगे जिनकी संख्या छः सौ तक पहुँच गई थी। उनने फूंकफाँकपर ही शुरू-शुरूमें जोर दिया था। एकबार सितम्बरमें इनके यहाँसे ३० स्वयंसेवक बमनी बगीचाकी कलाली जलानेके लिये संतालपरगनाके मधुबन गाँवमें पहुँचे। शाम हो गई थी। इसलिये सभी लक्ष्मीपुर इस्टेटके 'प्रधान' बरसाती गोपके यहाँ आश्रय लेने गये। उसने

गाँववालोंकी मददसे इन सबोंको तलवार बर्छी और लाठीसे घायल कर दिया। तीन तो बुरी तरह घायल हुये। परशुराम दलको जब उनकी दुर्दशाका ज्ञान हुआ तब उसने बदला लेनेकी ठानी। पर बरसाती गोपने माफी चाही। उसको कहा गया कि तीन महीनेतक घायलोंकी सेवा करो। पर इस्टेटके तहसीलदारने बरसाती गोपको रोक लिया और निडर रहनेके लिए कहा। अन्तमें परशुराम दलने बरसाती गोपके घरका तिनका-तिनका लूटकर उसको जला दिया फिर तहसीलदारका ठिकाना जमदाहा कचहरी लूटी गई और वहाँकी कलाली, फाँड़ी, डाकबंगला सभी जला दिये गये। लक्ष्मीपुर स्टेट दरभंगा-राजकी सम्पत्ति है जिसके मातहत जमदाहा है। इसलिये दरभंगा राजने सरकारकी मदद ली। फौज आई और परशुराम दलकी खोज शुरू हुई। दलवाले अपना बचाव करने लगे और खोजनेवालोंको लूटने लगे उनके घरोंको जलाने लगे और आगे चलकर भेदियोंका खून भी करने लगे। सरकार और जमींदारके अत्याचारोंसे पीड़ित जनता परशुराम दलका गोहार करने लगी और वे बांकामें जन-शक्तिके प्रतीक बन गये। ठाकुर नरसिंह प्रसाद सिंह, श्री राघवेन्द्रप्रसाद सिंह और श्रीरामजीमोहन सिंह सभी श्रीपरशुराम सिंहके हमदर्द बन गये। इनका दल और बढ़ा और अपने कार्यकर्त्ताओंमें सर्वश्री महेन्द्र गोप, श्रीगोप, जागो साही, लाखो साही और भुवनेश्वर सिंह आदिको गिनने लगा। दलकी जवाबदेही भी बढ़ी। पहले उसका काम था फूँक फांक करना। अब घरके भेदियेसे आन्दोलनकी रक्षा करनेका भार भी उसे उठाना पड़ा। दलवाले निडर थे, मजबूत थे और जोशमें रहते थे। पर विचारधाराके खयालसे बेमेल खिचड़ी थे। फिर भी दुश्मनके लिये वे सब एकसौ पांच होकर बांका सबडिविजनके अत्याचारियोंके आतंकका कारण बन रहे थे।

भागलपुर सदरके विहपुर इलाकेमें सियाराम दल काम कर रहा था। सुलतान-गंज गोलीकाण्डके बाद पुलिसको अंगूठा दिखाकर तिलकपुर निवासी श्रीसिया-राम सिंह विहपुर आ गये जहां खगड़िया व्यायामशालाके शिक्षक श्रीपार्थब्रह्मचारीसे मिलकर उनने अपना दल संगठित किया। दलके वे प्रधान हुये और श्रीपार्थ ब्रह्म-चारी प्रधान सेनापति। दोनों पुराने समाज सेवक थे। इसलिये इनके दलमें पढ़े-लिखे और समझदार लोगोंकी अच्छी तादाद जुट गई। व्यापक दृष्टिकोण था; इसलिये दलने अपने क्षेत्रको फैलाना चाहा और श्रीराजेन्द्र झा 'स्वतंत्र' इस उद्देश्यको लेकर भागलपुरके अलावा पूर्णिया और दरभंगाके कार्यकर्त्ताओंसे मिले

भी; उनने प्रान्तके और बाहरके कुछ नेताओंसे भी मुलाकात की और चाहा कि हम सशस्त्र क्रान्तिकारियोंका बड़े पमानेपर एक अच्छा संगठन करलें। किन्तु कामयाबी मिलनेके पहले ही वह गिरफ्तार हो गये और दलका कर्मक्षेत्र मुख्यतः बिहपुरका इलाका ही रहा।

सियाराम दलके आगे चार काम थे—धन इकट्ठा करना, हथियार इकट्ठा करना, शस्त्रास्त्रकी ट्रेनिङ्ग देना और जनताको संगठित करना ताकि सरकारी अत्याचारका सामना करती हुई वह सियाराम दलका साथ न छोड़े। धनकी चिन्ता सियाराम दलको न थी। बिहपुरका सम्पन्न इलाका जहां खरीक, तेलघी, धुबगंज, तुलसीपुर और जमुनिया जैसे अमीर गांव। उन गांवोंमें सियाराम बाबूका चार चार परिचय—वे डिस्ट्रिक्ट बोर्डके वायस चेयरमैन, जिला कांग्रेसके मंत्री, तेलघीके दामाद और सबसे बड़ी बात—उधरके कार्यकर्त्ताओंके लंगोटिया यार। इसलिये मांगा कि धन मिला। और जब जहां न मिला वहां हथियारबन्द जवान पहुँचते और धनकी आवश्यकता जतलाते बस। इसलिये सियाराम दलको कभी धनके लिये डकैती करनेकी जरूरत न पड़ी। हां! हथियारकी जरूरत ऐसी थी जिसके लिये और दलवालोंकी तरह सियाराम दलको भी परेशान होना पड़ता था। फिर भी चुराकर, लूटकर, खरीदकर और बनवाकर उसने काफी हथियार संग्रह कर रखे थे। पर सरकारके मुकाबलेमें उसके पास जो हथियार थे, न के बराबर थे। उनने चाहा कि जितने हथियार इधर उधर बिखड़े पड़े हैं और जिनका दुरुपयोग भी हो रहा है, सबोंको इकट्ठे रखा जाये और एक निश्चित योजनाके अनुसार उनका उपयोग होवे। पर उस जमानेमें जब कि हथियार शक्ति तथा क्रान्तिका प्रतीक माना जाता था और जवानोंको अपनी ओर खींच लाता था; कौन मनचला दूसरेको हथियार देता? उसको तो खुद क्रान्तिकारियोंका नेता बनना था। इसलिये इस दिशामें सियाराम दलको कामयाबी नहीं मिली। भिन्न भिन्न दलोंमें उस समय जो कटुता थी उसका एक बड़ा कारण हथियारकी समस्या भी थी।

शस्त्रास्त्रकी ट्रेनिङ्ग देनेका सबसे अच्छा साधन सियाराम दलको ही उपलब्ध था। श्रीपार्थब्रह्मचारीके पास पहलेसे ही काफी सिखे सिखाये जवान थे और इधर उनने ट्रेनिङ्ग कैम्प खोल रखा था जहां दूसरे जिलेके भी लोग ट्रेनिङ्ग पाने आते थे। फिर उसे 'सरदार' नित्यानन्दका सहयोग मिला जो अच्छे निशाने बाज थे। आपने कनस्टबिलकी हैसियतसे नाम पैदा किया था और इस्तीफा देकर
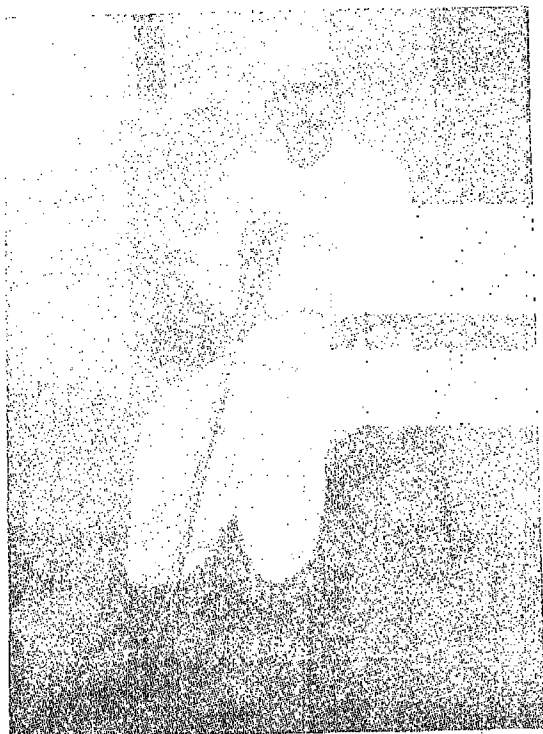
क्रान्तिके दो योद्धा

श्रीश्रीधर शर्मा,
पारू (मुजफ्फरपुर)
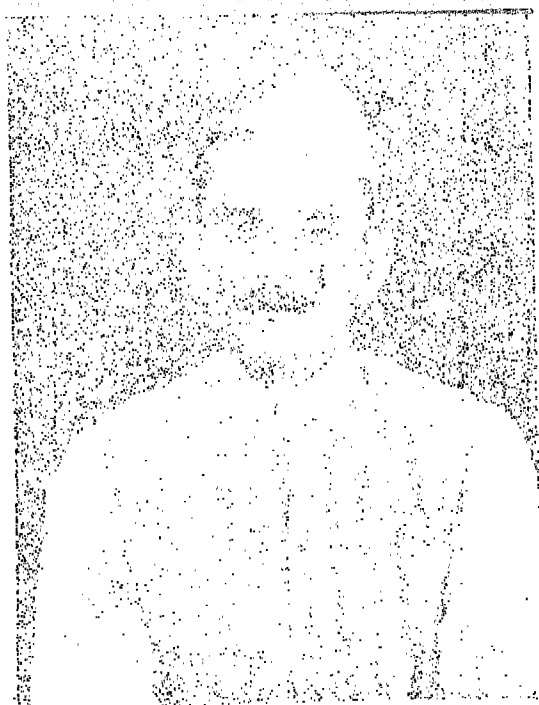
श्रीरामानन्द तिवारी,
शाहाबाद

क्रान्तिकारी बने थे। श्रीविन्ध्येश्वरी सिंह भी पहले कनस्टबिल ही थे। इसलिये ट्रेनिङ्की समस्याको लेकर दल चिन्तित न था।

जन-संगठनपर सियाराम दलने काफी जोर दिया था। उसने इलाके भरमें ग्राम पंचायत और ग्राम-रक्षा दल स्थापित किये; विद्यार्थियोंमें खूब प्रचार किया और उन्हें दलमें शामिल किया। दमनके आतंकको भी उसने दूर करनेकी कोशिश की। दमन पीड़ित परिवारकी मदद की, उनके मोकदमेंकी पैरवी करवायी; मुद्दईके गवाहोंको बिगाड़ा और बिगाड़नेमें सभी युक्तियां लड़ाईं। पहले उनको समझाया, फिर धमकाया और काम नहीं चला तो 'भीमनगर' भेज दिया, यानी मार डाला।

बिहपुर इलाकेमें तो सियाराम दलने समानान्तर सरकार कायम कर रखी थी और प्रेमसे, लोभसे वा डरसे लोग उसके हुक्मको सर आँखोंपर चढ़ाते ही थे। भेदिये तो सीधे भीमनगर भेज दिये जाते थे; औरोंको भी मुनासिब सजा मिलती थी। हाथी तक जब्तकर लिया जाता था।

भागलपुरकी सफलता पूर्णिया और देवघरके ही नहीं सारे प्रान्तके कार्यकर्त्ताओंकी एक टोलीको हिंसाके लिये उभाड़ रही थी। उस समय उन कार्यकर्त्ताओंको जरूरत थी एक ऐसे व्यक्तित्वकी जो एक साथ सशस्त्र क्रान्तिवादी और सशस्त्र क्रान्तिकारी दोनो होवे और अपनी युक्तियोंके जोर और पिस्तौलकी ताकतसे सबोंको एक संगठनके नथमें नाथ रखे। बाहरके पं० जयचन्द्र विद्यालंकार आये पर इस दिशामें वे कुछ न कर सके। यहांके श्रीविद्याभूषण शुक्लने भी संगठनकी चेष्टा की और उनकी ओरसे श्रीसत्येन्द्रनारायण सिंहने दो तीन विद्यार्थियोंको लेकर इधर उधर दौड़ धूप भी की पर कुछ रुपये खर्च करके और कुछ हथियार संग्रह करके वे रह गये। इतनेमें एकाएक खबर मिली कि ८ नवम्बरको जगमगाते हजारी बाग जेलकी दीवार फांद अपने पाँच साथियोंको लेकर श्रीजयप्रकाश नारायण बाहर निकल आये। प्रान्त भरमें उत्साहकी लहर दौड़ गयी। आशा हुई कि अब सशस्त्र क्रान्ति-कारियोंको जबरदस्त नेतृत्व मिलेगा।

श्रीजयप्रकाश नारायणमें ऐतिहासिक आकर्षण था और जिस परिस्थितिमें जिस तरह वे निकले वह उस आकर्षणको बढ़ा रहा था। इस आन्दोलनमें हमारा यह भी नारा था कि गिरफ्तारीको न मानो; जेलको जेल न समझो। फलस्वरूप, जेलसे, हाजतसे और हिरासतसे निकल भागनेकी प्रायः सब जगह कोशिश हुई और

काफी जगह कामयाबी भी मिली। फिर जयप्रकाश बाबूके लिये निकलनेकी शुरूसे ही कोशिश करना स्वाभाविक था। वे बाहरसे सम्पर्क जोड़ते पर वह कारगर नहीं होता। दिन बीतते गये और एकएककर श्रीयोगेन्द्र शुक्ल, गुलाली सोनार उर्फ गुलाब चन्द्र, सूर्यनारायण और रामनन्दन बाबू उनकी योजनामें शामिल होगये। फिर लोगोंसे रायली जाने लगी और बीस पचीस साथियोंने जिनमें समतावादी (Gandhi-ites) और समाजवादी (Socialist) दोनों शामिल थे जयप्रकाश बाबूकी योजनासे दिलचस्पी दिखलाने लगे। फिर जेलकी दीवारपर चढ़नेका अभ्यास किया जाने लगा। राजनीतिक कैदियोंको वार्डके बाहर रहनेकी सुविधा थी इसलिये दीवार पास ही थी जिसपर श्रीयोगेन्द्र शुक्ल, गुलाली और सूर्यनारायणकी देहकी सीढ़ीके सहारे चढ़ जाना आसान ही लगा। दीवारके पार उतर पड़ना भी कठिन नहीं दीखा। सिर्फ जरूरत थी एक मजबूत रस्सीकी जो इसपार किसी चीजसे बंधी रहती; जिसके लिये रस्सी न थी परन्तु चादरें तो काफी थीं। लेकिन आगे? आगे तो भ्याऊँका ठौर दीखता था। कौन हजारीबागके जंगल और झाड़ियोंके, टीले खन्दकोंके पार लेजाता? राजपथपर तो राजके दुश्मन नहीं चल सकते थे! पर निकलनेका संकल्प क्या कठिनाई माने? जयप्रकाश बाबूको मालूम हुआ था कि कॉमरेड बसावन सिंह अपनी गरिल्ला सेना ले पलामूके जंगलोंमें घूम रहे हैं। उनसे मिलनेकी उत्सुकता बढ़ रही थी। पं० रामनन्दन मिश्र भी कम बेचैन न थे। उड़ने न पाये थे कि गिरफ्तार वे हुये। इसलिये चाहते थे चाहे जो हो, एक बार और काम करनेका मौका मिले। बंबईसे वे छूटे थे 'मेल'की तरह और रांची तथा पलामूको प्रोग्राम देते हुये पहुँचे थे कटकमें सीधे एक मजिस्टरके यहां। मजिस्टर साहबने हिन्दुस्तानी होनेके नाते उन्हें बैठाया और सरकारी अफसर होनेके नाते पुलिसको उनके आगमनकी सूचना देदी। पुलिस दौड़ी आई; फिर मजिस्टर साहबकी मोटर पण्डितजीको ले उड़ी और उन्हें पुलिसके हवाले कर दिया। वे छके थे और छकानेको आतुर थे।

इसी बीच अफवाह फैली कि एक अंगरेज जेलका सुपरिन्टेन्डेन्ट होकर आनेवाला है जो बड़ा कड़ा और चौकस है। फिर तो सभी कहने लगे कि काल करै सो आज कर, आज करै सो अब। फिर भी देरी हुयी क्योंकि जमशेदपुरके खतरनाक समझे जानेवाले पुलिस कैदी आ पहुँचे और जेलकी चहारदीवारीके भीतर बाहर पहरा पड़ने लगा। पर दो तीन नवम्बर तक वे सब भिन्न-भिन्न जेलोंमें भेज दिये गये और पहरा हट गया।

इधर जेलमें पहुँचे एक नये कैदी बा० शालिग्राम सिंह, जिनसे जयप्रकाश-दलने जान पहचान करली। शालिग्राम बाबू पहाड़ी चूहा थे। बस; छः जने उस पहाड़ी चूहाके भरोसे हजारीबाग जेलकी चहारदीवारी पार कर गये। बाहर जाकर कपड़े लत्ते और रुपये पैसेकी पोटलीके लिये ठहरे ही थे कि चेतावनी मिली—भागो। फिर वे सब कुछ छोड़ भागे। कुछ ही दूर गये होंगे कि जेलकी दीवारपरसे फेंकी जानेवाली रोशनी जब तक उनपर पड़ने लगी। पर चूहा-दल क्या पकड़ा जाय? झाड़ झंखाड़ और अंधकारसे गुजरता हुआ वह गयाकी सीमा लांघ गया और स्व० श्रीत्रिवेणीप्रसाद सिंहकी जमींदारीकी एक कचहरीमें ठहरा। त्रिवेणी बाबू रामनन्दन बाबूके श्वसुर थे देशभक्तिका तकाजा और दामादका स्नेह दोनोंने उनमें दूना बल भर दिया और इन मुक्त-बन्दियोंको सारी सुविधा दिलवायी। वहांसे दलने कई राह पकड़ी और श्रीजयप्रकाश नारायण अपनी टुकड़ी ले काशी पहुँच गये। काशीमें उनसे बाबू श्यामनन्दन सिंह आ मिले और फिर 'बाबा' का चक्रचाल शुरू हो गया।

यथाशीघ्र श्रीजयप्रकाश नारायणका सम्पर्क श्रीअच्युत पटवर्धन और डाक्टर राममनोहर लोहियासे हुआ जिनने श्री सुचेता कृपलानीकी राय लेकर उनको ऑल इन्डिया कांग्रेस कमिटीमें शामिल कर लिया। शामिल होकर जयप्रकाश बाबूने जो सबसे पहला काम किया वह था ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीको एक विधान देना। अब तक श्रीसुचेता, लोहिया और पटवर्धनजी दोस्ताना तरीकेसे ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीके काम कर लेते थे; विधि-विधानसे सरोकार न रखते थे। पर जयप्रकाश बाबूने सुझाया कि लड़ाई लंबी हो सकती है; इसलिये हमें संगठित हो जाना चाहिये और देहातका संगठन करना चाहिये। सभी सहमत हुये। श्रीअरुणा आसफअली भी सहमत हुईं जो दिल्ली छोड़ बम्बई आगईं थीं। फलतः दिसम्बर १९४२ के अन्तिम सप्ताहमें दिल्लीमें एक बैठक हुई जिसमें दिल्ली रहकर कोशिश करनेके बावजूद भी चतुर दूत न मिलनेके कारण श्रीसुचेता शामिल नहीं हो सकीं। दिल्ली बैठकने निर्णय किया कि (१) ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीके भीतर एक केन्द्रीय संचालक मंडल—Central Dircctorate रहे जिसके श्रीजयप्रकाश नारायण, श्रीअच्युत पटवर्धन, डा० राममनोहर लोहिया, श्री आर० दिवाकर, श्री अन्नदा प्रसाद चौधरी, श्रीअरुणा आसफ अली और श्रीसुचेता कृपलानी सदस्य रहें, इन सबोंको खास-खास काम बांट दिया जाय जिनको पूरा करनेके लिये ये सब हिन्दुस्तान भरका संगठन करें; (२) देश विदेशमें जबरदस्त प्रचार हो और केन्द्रीय संचालक-मंडलका अपना रेडियो रहे और (३) अर्थाभाव दूर

करनेके लिये एक करोड़का स्वराज कर्ज लिया जाय। कामर्मे मुख्यतः थे छात्र, मजदूर और किसानोंका संगठन करना; महिलाओंका संगठन करना और गरिल्ला सेना तैयार करना।

दिल्लीके निर्णयका दोरुखी स्वागत हुआ। समतावादी (Gandhi-ites) क्षुब्ध हुये और समाजवादी (Socialists) खुश। जब श्रीसुचेता मिल सकीं तब उनने भी अपने सहकारियोंके सामने अपना क्षोभ प्रकट किया और कहा—अबतक मैंने काम संभाला अब न संभाल सकूंगी। पर जयप्रकाश बाबूने कहा कि मैं आया और आप निकलीं! आप नहीं चाहतीं कि मैं आपलोगोंके साथ काम करूँ! अगर ऐसा है तो कहिये, मैं ही हट जाता हूँ। श्रीसुचेता शान्त हो गईं। पर बम्बईसे उनने सहकारियोंको खबर दी कि मैं समझ बूझकर इस नतीजेपर पहुँची हूँ कि (१) हमें कांग्रेसके नामका इस्तेमाल बन्दकर देना चाहिये। हम अपनी सूझके मुताबिक काम करते हैं और अपने नेताओंके मार्ग-दर्शनसे वञ्चित हैं। फिर हम कांग्रेसका नाम क्यों लेवें? (२) अगर अंगरेजी राजसे समझौता करनेका मौका आया तब कहीं हमारी कार्रवाई हमारे नेताओंको परेशानीमें न डाले- इसका खयाल रखकर हमें प्रोग्राम बनाना है और (३) हमें अपने प्लाटफार्मसे कोई हिंसात्मक काम नहीं करना है। जिन्हें करना है वे इसके लिये कोई दूसरी संस्था संगठित कर लें। श्रीसुचेताके सहकारियोंने उनकी बातें नोटकर लीं; बस।

बिहारका जन आन्दोलन दब चुका था पर बिहारके कार्यकर्त्ता परेशान होते हुये भी अहिंसा और हिंसा दोनो तरहके मोरचोंको संभालनेमें लगे थे। समझौतेका सपना भी न देखते थे। उन्हें जरूरत थी ऐसे सन्देशकी जो उनका हौसला बढ़ाये, उन्हें प्रोग्राम दे, आगेकी राह बताये। इसलिये श्रीजयप्रकाश नारायणका पहला पत्र जब निकला तब सारे बिहारने उसका स्वागत किया।

जयप्रकाश बाबूने बतलाया कि अगस्त-क्रान्ति आकस्मिक घटना नहीं थी; वह तो हमारी बदलती हुई परिस्थितिका लक्षण थी जो अब भी बदल रही है। उनने कहा कि क्रान्ति घटना नहीं होती जो घटी और समाप्त होगई। क्रान्ति एक नियम है जो काम करती ही है; एक गति है जो लक्ष्यपर पहुँचती ही है। इसलिये अगस्त-क्रान्तिको सफल होना ही है। जिन सामाजिक शक्तियोंका वह लक्षण है उन शक्तियोंका प्रवाह हमें सफलताकी ओर ले ही जायगा। हां! हमें अपने दबनेके कारणको ढूढ़ना और दूर करना है। उनने हमें सुझाया कि हम इसलिये दबे कि

जयप्रकाशके साथ हजारीबाग जेलको फाँदनेवाले !

श्रीरामनन्दन मिश्र,
दरभंगा
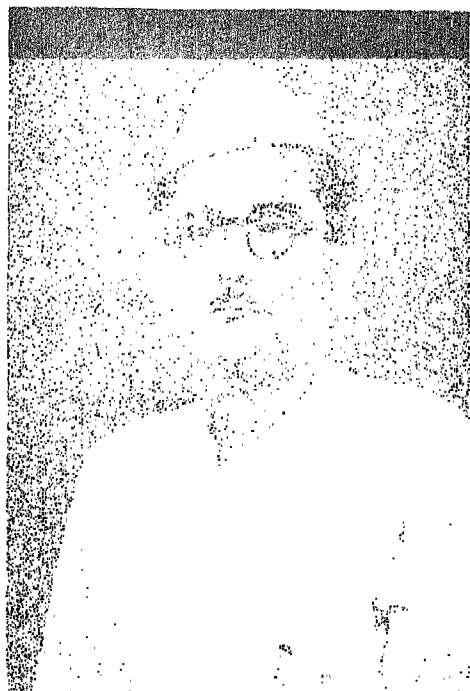
श्रीयोगेन्द्र शुक्ल,
मुजफ्फरपुर
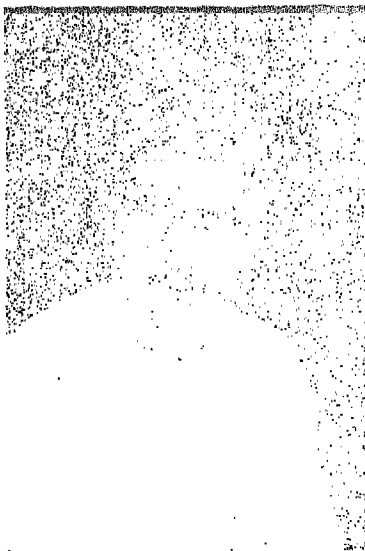
श्रीसूर्य नारायण सिंह,
दरभंगा
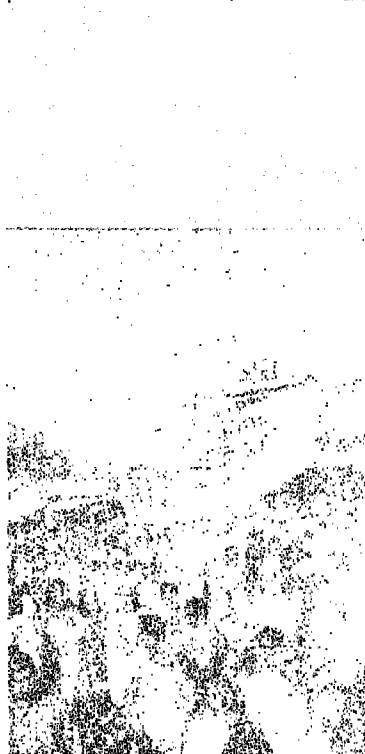
विद्यार्थियों का जलूस,
सरैयागंज (मुजफ्फरपुर) में

न हमारा व्यापक संगठन था और न व्यापक प्रोग्राम। बहुतसे कार्यकर्त्ता जिनमें कितने पुराने और अनुभवी कांग्रेसमैन थे अन्ततक विचार द्वन्द्वमें पड़े ही रहे कि हमें आन्दोलनमें मिलना है या नहीं और रेलतार तोड़ कर, थानेमें बैठकर लोग समझ नहीं सके कि हमें क्या करना है? इसलिये हमें संगठित और अनुशासित होना है; हुनर सीखना है; पहलेकी तरह अनाड़ी जैसा काम नहीं करना है। हमें गांवोंमें, कारखानोंमें, खानोंमें, रेलवेमें आदमियोंके बीच, पुलिस और हिन्दुस्तानी फौजके बीच प्रचार करना है, छात्रोंमें काम करना है। रियासतों और सरकारी इलाकोंमें घुसना है।

हिंसा और अहिंसाके मामलेमें, जयप्रकाशबाबूने कहा कि हमारी नीति कांग्रेसके प्रतिकूल नहीं है। राष्ट्रीय सरकारकी स्थापना हो जानेपर जर्मनों और जापानियोंसे लोहा लेनेको कांग्रेस तैयार रहा है। उसने माना है कि उसे आजादी मिल गई तब अपनी आजादीपर हमला करनेवालोंसे वह लड़ेगा। फिर हम अंगरेजोंके खिलाफ हथियार क्यों न उठायें? हमने तो अपनेको आजाद घोषित किया है, और हमारी आजादीपर अंगरेज हमला कर रहे हैं। उससे हमारा लड़ना कैसे अनुचित कहा जा सकता है?

हमें सब तरहसे तैयार रहना है। हो सकता है हमें दुश्मनपर चढ़ जानेका मौका जल्द मिल जाय, क्योंकि हमारी तैयारी देख जनताकी पस्त हिम्मती दूर हो जायगी। फिर गांधीजीका उपवास वा संसारकी परिस्थितिका अनुकूल परिवर्त्तन जनतामें उफान पैदा कर देगा। पर हमें उतावला नहीं बनना है। तैयारीमें जुटे रहना है। पर इसका मतलब यह नहीं कि हमारी लड़ाई तत्कालके लिये बिलकुल बन्द रहे। हाथापाई, सरहदी कार्रवाई, छोटी मोटी भिड़न्त, निशानेबाजी और गश्ती वगैरह तो होते रहना चाहिये।

जयप्रकाश बाबूकी विचारधारासे बिहारके प्रभावित होनेकी एक और खास वजह थी। सरकार परचों, पुस्तिकाओं और अखबारोंके जरिये, तस्वीर दे देकर प्रचारकर रही थी कि अगस्त आन्दोलन गुण्डापन है; तोड़फोड़ गुण्डों और बदमाशोंका प्रोग्राम है और उसके कृपा-भिखारी उसकी हांमें हां मिला रहे थे। सरकारके प्रचारसे तो आन्दोलन कारियोंका मनोरंजन होता था पर उसके कृपा-भिखारियोंकी ठकुर सोहाती उनके दिलको, हिन्दुस्तानीपनके नाते, ठेस पहुँचाती थी। उनके बीच दरभंगा बड़ा बदनाम था। दरभंगा राज परिवारने एक परचा

निकला था जिसके जरिये उसने भारतीय सभ्यता और संस्कृतिकी दुहाई देते हुये आन्दोलनको गुण्डापन कहा था और आन्दोलन कारियोंको बड़ी खरी खोटी सुनाई थी पर उसकी जमींदारीमें ही, उसकी बगलमें ही सरकारकी ओरसे जो जबरदस्ती सिन्दूरकी मर्यादा नष्ट की जा रही थी; कौमार्यको पाशविक कामुकताका खेल बनाया जा रहा था; गांवके गांव जलाये जा रहे थे और लूटे जा रहे थे, मूर्त्तियां तोड़ी जा रही थीं और मन्दिर भ्रष्ट किये जा रहे थे, उनके सम्बन्धमें उसने चूं भी नहीं कहा था। आन्दोलन कारियोंकी हरकतें बुरी ? हो सकती थीं पर उनका उद्देश्य तो बुरा न था, और सरकारकी हरकतें तो बुरी थी ही साथ ही उद्देश्य भी बुरा था। फिर किस भारतीय सभ्यता और संस्कृतिके बलपर दरभंगा राज परिवार गुड़ खा रहा था गुलगुलेसे (?) परहेज करता था सो आन्दोलन कारियोंकी समझमें नहीं आया। बड़े दुखकी बात तो यह थी कि उस पर्चेपर समर्थकोंमें 'आचार्य' रामलोचन शरणका भी नाम था जिनको आन्दोलनकारियोंके गुण्डापनने ही बनाया और बढ़ाया है। हां! उस पर्चेपर पं० गिरीन्द्रमोहन मिश्र और बाबू धरणीधरके नाम न देख आन्दोलन कारियोंको सन्तोष हुआ। बाबू धरणीधर आन्दोलनकी मुखालफत करते थे और जोरोंसे करते थे पर उनने उस "एक तरफा" पर्चापर दस्तखत करना पाप माना हालांकि उनके साथी वकीलोंने वैसी समझ-दारी नहीं दिखलायी थी। ऐसे विषाक्त वातावरणमें जब कॉमरेड जयप्रकाशकी वाणी अगस्त आन्दोलनके जोरदार समर्थनमें गूंजने लगी तब सभी विचारधाराके कार्यकर्त्ताओंको बल मिला और उनका सर ऊँचा हुआ।

ऑल इण्डिया कांग्रे: कमिटीके केन्द्रीय संचालक मंडलने—Central Directo-rate—२६ जनवरी १९४३ के लिये जो प्रोग्राम दिया उसमें कई विशेषतायें थीं। संचालक मंडलने प्रतिज्ञा करवायी कि हम १९४४ की २६ जनवरी आनेके पहले ही भारतको आजाद कर लेंगे। फिर उसने किसानों, मजदूरों और छात्रोंको और और काम करनेके साथ साथ गरिल्ला दल तैयार करनेके लिये कहा; व्यवसायियोंसे अंगरेज व्यवसायी और अंगरेजी बैंक वगैरहका बहिष्कार करते हुये स्वराज करज-खाते रुपये देनेकी अपील की और फौजवालोंसे आजाद भारत—Republic India की वफादारीकी सपथ लेने और कांग्रेसके हुक्मसे गद्दी-चोर अंगरेजोंके खिलाफ उठ खड़े होनेकी अपील की। इसी ढंगकी अपील पुलिस, सरकारी नौकर-चाकर तथा दूसरोंसे भी की गई।

सरकारकी असाधारण निगरानी और कड़ाईके बावजूद भी बिहारने शानसे २६ जनवरी मनायी। शहरोंमें स्त्रियों, पुरुषों और बालकोंके जलूस निकले; गिरफ्तारियां हुईं और जहां तहां गुब्बारे उड़ाये गये। इधर छात्रोंकी बिखरी हुई ताकतें सिमट रही थीं और पटनेमें शहीद अनिरुद्धकुमार सिन्हाके नेतृत्वमें सेन्ट्रल स्टूडेन्ट्स कौंसिल कायम हो चुकी थी। शहीद अनिरुद्ध जैसे मेधावी थे वैसे कर्मठ भी। इसलिये सभी विचारधाराओंके छात्रोंका विश्वास-पात्र बननेमें उन्हें देर न लगी। वे तब कट्टर कांग्रेसी विचारके थे और उग्रभावना रखते हुये भी पिस्तौल-बाजीका विरोध करते थे। इसलिये आन्दोलनके प्रान्तीय संचालक श्रीनथुनी सिंहने २६ जनवरीके आयोजनका सारा भार उन्हें ही सौंप दिया था।

यों तो २६ जनवरीको सभी जगह कुछ न कुछ हुआ ही पर मुङ्गेर और भागलपुरमें जो हुआ उसका उल्लेख तो करना ही पड़ेगा।

स्वतंत्रता दिवसके उपलक्ष्यमें श्रीमहावीर सिंह और श्रीप्रतापनारायण मिश्रने और स्वयंसेवकोंके सहयोगसे जलूस निकला। तारापुरमें सबोंको मिलिटरीने गिरफ्तार कर लिया और खूब पीटा। फिर सभी मोटरसे मुंगेरके चंडी स्थान लाये गये जहां नाव भयंकर सर्दीकी रातमें उन्हें गंगाकी बीच धारमें ले गयी और डुबा आई। डूबनेवाले सभी तैराक थे। इसलिये किसी तरह उनकी जान बच गई।

सियाराम दलने स्वतंत्रता दिवस मनानेकी काफी तैयारी की थी। सचित्र परचा छपा था जिसमें सिंह जागकर जंजीर तोड़ता हुआ दिखलाया गया था। परचेमें लिखा था—सिंह जग उठा; भारत माताकी जंजीर तोड़ रहा है। ऐसे परचे सप्ताह पहले भागलपुर और मुंगेरमें बांटे गये थे। ता० २३ जनवरीको दुद्धी झरना पहाड़ीपर श्रीसियाराम सिंह फौजी ठाट-बाटसे बांका सबडिविजनके कार्यकर्त्ताओंसे मिले जिन्हें सियाराम दलके सिपाहियोंने सीटी बजते ही झाड़ीसे निकल फौजी सलामी दी और सीटी बजते ही फिर झाड़ीकी शरण ली। ऐसे मादक दृश्यमें सियाराम बाबूने एलान किया कि हमारा भारतव्यापी संगठन है जिसके श्रीअच्युत पटवर्धन इञ्चार्ज हैं। श्रीपटवर्धनने मुझे भागलपुर डिविजनका इञ्चार्ज नियुक्त किया है। मुझे अब डिविजन भरका संगठन करना है। कार्य-कर्त्ताओंने उनको सहयोग देना स्वीकार किया। फिर वहां सबोंने धूमधामसे स्वतंत्रता दिवस मनानेका निश्चय किया और जहां जहां मनाया हथियारोंका

खूब प्रदर्शन किया। एक जगह उन्हें बलिदान भी देना पड़ा।

परशुराम दलकी एक टुकड़ी फट्टापाँथरपर झंडा फहराने जा रही थी। जलूसमें कटोरिया थानेके नकटी गांवका दरबारी माँझी शामिल था। बड़ा सा झंडा उठाये हुये। गश्त लगाते हुये बलूचियोंने झंडे देखे, नारे सुने और गोलियाँ मारीं। दरबारी माँझी शहीद हो गया। पर जलूसने अपनी कार्रवाई बन्द नहीं की। वह फट्टापाँथरकी चोटीपर चढ़ा और शहीदको साक्षी रखकर उसने अपना अनुष्ठान पूरा किया।

इस दिन भागलपुर जिलाके अहिंसावादियोंने भी अनुपम भेंट चढ़ायी है। पुलिसके आतंकको चुनौती देते हुये चुल्हाई मंडलजी निकले मधेपुरा कचहरीपर झंडा फहराकर स्वतंत्रता दिवस मनाने। झंडा फहराते हुये नारा लगाते हुये ज्योंही आप मधेपुरा कचहरीके हातेमें घुसे कि पुलिसने उन्हें पकड़ लिया और इतना पीटा कि आप बेहोश हो गये। बादको आप भागलपुर सेन्ट्रल जेल भेज दिये गये जहाँके अस्पतालका इलाज आपको बचा न सका और आप वहीं शहीद हो गये।

बिहारमें २६ जनवरीका प्रदर्शन देखकर स्पष्ट हो जाता था कि सशस्त्र क्रान्तिकारियोंकी संख्या बढ़ रही है। ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीका सेन्ट्रल डायरेक्टरेट उन्हें प्रोग्राम दे रहा था और उनका श्रीपटवर्धनके जरिये नेतृत्व भी कर रहा था। जहाँ तक उनकी विचारधाराका सवाल था उसे जयप्रकाश बाबूकी वाणी और लेखनी स्पष्टकर रही थी। बिहारकी दूसरी विचारधाराके कार्यकर्त्ताओंको इससे कोई घबड़ाहट न होती थी। पर सेन्ट्रल डायरेक्टरेटके सदस्य विलगसे हो रहे थे। कांग्रेसके प्लॉट-फार्मसे गरिल्ला दल संगठित करनेका प्रोग्राम देना उन्हें बड़ा अखर रहा था और स्वराज करजकी योजनाको भी वे अव्यावहारिक मानते थे। इस योजनाकी तो जानकार हलकोंमें इतनी आलोचना हुई कि उसे छोड़ ही देना पड़ा।

ऐतिहासिक उपवास

१० फरवरीको खबर मिली कि गांधीजी आजसे २१ दिनोंका उपवास कर रहे हैं। वे नींबूका रस मिलाकर पानी पीया करेंगे जिससे पानी हजम हो सके। वे मरना नहीं चाहते। उनका यह यथाशक्ति उपवास है। बिहार स्तम्भित हो गया।

सरकारने अपने वक्तव्यके साथ साथ और चिट्ठियां भी छपवायी थी जिन्हें पढ़नेसे मालूम हुआ कि गान्धीजीने अगस्त १९४२ में ही जब कि अगस्त-क्रान्ति अपनी पूरी मौजमें थी, निश्चय किया था कि अगर सरकारको अपने कियेका पछतावा नहीं हुआ तब छः महीने खत्म होते ही मैं उपवास करूँगा। गान्धीजी कहते थे कि मुझको मिलनेका मौका न देकर लार्ड लिनलिथगोने अन्याय किया; फिर सारे नेताओंको झटपट जेलमें ठूँसकर उनने भयंकर भूल की; इसलिये अगस्त-आन्दोलनकी और उसके फलस्वरूप जो धन जनकी नुकसानी हुई उसकी जवाबदेही लार्ड लिनलिथगो और उनकी सरकारपर है। पर वे दोनों अनुतप्त होते नहीं दीखते। उलटा, हिंसाकी जवाबदेही मुझपर थोपते हैं और कांग्रेसको गलियाते हैं। वे नहीं देखते कि जहाँ असंगठित जनताने अव्यवस्थित रूपसे कुछ हिंसा की वहाँ उनके संगठित बलने हिंसा करनेमें कोई हद्-व-हिसाब नहीं रहने दिया। वे कुछ सुप्रसिद्ध कांग्रेसजनोंपर हिंसाका आरोप करते हैं और कहते हैं कि मैं उनकी निन्दा करूँ। मैंने हिंसाकी बराबर निन्दा की है और बड़ेसे बड़ेकी भी निन्दा करनेसे कभी रुका नहीं हूँ। पर उस घटनाकी मैं कैसे निन्दा करूँ जिसकी पूरी वाकफियत मुझको नहीं है। फिर परिस्थिति विशेष जिन घटनाओंका कारण बन रही है उन घटनाओंकी आलोचना करना मेरे लिये कैसे उचित हो सकता है जब कि परिस्थिति-विशेषमें परिवर्त्तन लानेकी सुविधा मुझे नहीं दी जाती? सरकार जिनपर हिंसाका भीषण आरोप कर रही है उनपर खुली अदालतमें वह मुकदमा क्यों नहीं चलाती? मुझपर मुकदमा क्यों नहीं चलाती? कहती है, मुकदमा जरूर चलेगा पर जब समय आयगा। और जब समय आया उसके पहले ही कोई खास गवाह मर गया, कोई खास सबूत नष्ट हो गया तब? या उस

समय अदालतने किसीको बेकसूर साबित किया तब जो वह उतने दिन मुफ्तमें सताया गया उसका कौन जवाबदेह होगा? अहिंसा मेरा धर्म है; उसपर मेरा विश्वास ज्योंका त्यों बना है। अहिंसाके रास्ते ही ले चलकर मैंने कांग्रेसके द्वारा देश और दुनियाँकी सेवा करनी चाही जिसके बदले सरकार मेरे देशको परेशान कर रही है। इधर मेरा देश अकाल-ग्रस्त हो रहा है। लाखों लोग मर रहे हैं। हमारी राष्ट्रीय सरकार रहती तो परिस्थिति सुधारनेके लिये जान लड़ा देती। मैं भी आगाखाँ महलकी सुख सुविधामें पड़ अपना कर्त्तव्य नहीं भूल सकता। टुक टुक अपने देशके धन जनका ह्रास नहीं देख सकता। इसलिये सत्याग्रहकी मर्यादा जो कहेगी उसे मुझको करना पड़ेगा। बहुतसे अन्यायका प्रतिकार जेल जाने ही से हो जाता है पर उसकी भी एक हद है। इसलिये आजकी परिस्थितिमें सत्याग्रहका तकाजा है कि मैं २१ दिनका अनशन करूँ। अगर सरकार चाहती है कि मैं अनशन न करूँ तो वह मुझे जेलके बाहर कर दे सकती है। तब मेरे लिये अनशन करनेका कोई कारण नहीं रहेगा क्योंकि उन परिस्थितियोंको सुधारनेका मौका मिल जायगा जिनने मेरे देशको परेशान कर रखा है। पर सरकार कहती है कि मैं नौ अगस्तके प्रस्तावको वापस लूँ और वचन दूँ कि आगे अपना आचरण ठीक रखूंगा। नौ अगस्तका प्रस्ताव तो कांग्रेसका है। उसको कोई अकेला वापस नहीं ले सकता। हां! उस प्रस्तावकी जवाबदेहीसे अपनेको बरी कर सकता है। पर मैं तो नौ अगस्तके प्रस्तावको निर्दोष मानता हूँ। आखिर प्रस्तावमें है ही क्या? विश्वसंघकी मांग है, प्रजातंत्रकी मांग है, राष्ट्रीय सरकारकी मांग है। सभी मांगोंको सरकार जायज मानती आई है। हां! सत्याग्रह द्वारा मांग लेनेका जो निश्चय है उसपर ही आपत्ति की जा सकती है। पर सत्याग्रहको ब्रिटिश सरकारने दक्षिण अफ्रिकाकी भारतीय-समस्याको सुलझानेके अवसरपर निष्क्रिय प्रतिरोधके—Passive Resistance नामसे जायज माना है और ५ मार्च १९३१ में जो गान्धी-इरविन समझौता हुआ उसपर मुहर लगाकर यहांकी सरकारने भी माना है। फिर अगस्त-प्रस्तावसे चौंकना क्यों? अब रही मेरे आचरणकी बात, सो तो उसमें कोई फर्क नहीं आया। अंगरेजोंका मैं पहले जैसा ही हितैषी रहा हूँ और अहिंसा मेरे जीवनका व्रत रहा है। मेरे काम इन्हीं भावनाओंकी प्रेरणासे होते रहे हैं। फिर मैं वचन क्या दूं? मैं तो अपनी गलती नहीं देखता। हाँ! सरकार अगर मुझको मेरी गलती सुझा दे तो अलबत्ता जो

मुनासिब हो सकता है मैं सब करूंगा। मैं न कभी अपनी गलती माननेसे घबड़ाया और न उसके लिये प्रायश्चित्त करनेसे। पर न तो सरकार मुझको मेरी गलती सुझा रही है और न मुझको अपने कार्य-समितिके साथियोंसे मिलने देती है ताकि सलाह मशविरा करके कांग्रेसकी ओरसे कुछ कहा जा सके। फिर अनशनके अलावा चारा ही क्या है ? सरकार अपने पसन्दकी जगह जाकर उपवास करनेकी सुविधा मुझे देना चाहती है जिसे मैं ले नहीं सकता। लार्ड लिनलिथगो कहते हैं कि दुनियांकी अदालतमें अपने कारनामोंकी सफाई देनेके डरसे मैं अनशन करके छुटकारेकी आसान राह निकाल रहा हूँ। मैं सोच भी न सका था कि मुझको इतना कापुरुष मान बैठेंगे ! वे कहते हैं कि अनशन करके मैं राजनीतिक मर्यादाका गला दबोचना चाहता हूँ। पर यह तो मेरे लिये बड़ासे बड़ा जो इजलास है उस तक अपनी अपील पहुँचानेका एक साधन है। सत्याग्रहीके लिये तो दूसरा रास्ता नहीं है। यदि मैं इस अग्नि परीक्षासे उबर नहीं सका तो अपनेको सम्पूर्ण निर्दोष मानता हुआ न्यायके उस सर्वोच्च आसनके सामने जा खड़ा हूँगा। आप हैं एक जबरदस्त सरकारके प्रतिनिधि और मैं हूँ एक मामूली आदमी, अपने देश और देशके द्वारा मानव जातिका सेवक। अगली पीढ़ी आपके और मेरे बीच इन्साफ करेगी।

८ फरवरीको उपवासकी सूचना देकर ता० १० फरवरीसे गान्धीजीने अपना २१ दिनोंका यथाशक्ति उपवास शुरू किया।

सुशीला नय्यर लिखती हैं, "१० फरवरी, १९४३ को सुबह नाश्तेके बाद प्रार्थना करके बापूजीने उपवास शुरू किया। उस रोज वे सुबह शाम घूमे। महादेव भाईकी समाधिपर भी गये × × × × ×।

"दिनमें दो-तीन बार बा गरम पानी और शहद पिया करती थीं। उपवासके दिनोंमें बराबर बापूके पास ही रहनेकी उनकी इच्छा स्वाभाविक थी। वे शहदके पानीका गिलास लेकर बापूकी खाटके पास आ जातीं, कुछ काम रहता, तो गिलासको बापूजीके पास मेजपर रख कर काम कर लेतीं और फिर पानी पीने लगतीं। एक दिन डाक्टर गिल्डरने कहा, "यह अच्छा नहीं लगता। मुमकिन है कि सरकारी आदमियोंके मनमें शक पैदा हो और वे समझें कि बा बापूको पिलानेके लिये ही पानीका यह गिलास लिये घूमा करती हैं।" उन्होंने बासे भी यह चीज कही। बाने दृढ़ताके साथ उत्तर दिया "बापूजीके बारेमें कोई ऐसी शंका कर ही नहीं सकता।"

"उपवासके तीसरे दिन बापूजीको मतली आनी शुरू हुई। बाने कहा, "पानीमें थोड़ा मोसंबीका रस लीजिये न ?" बापूने इनकार किया। बोले "मैं यों जल्दी-जल्दी रस नहीं लूंगा।" उसके बाद तो उबकाईकी तकलीफ बढ़ गई। बापू पानी बिलकुल पी ही नहीं पाते थे। खून गाढ़ा हो गया। गुर्दोंका काम ढीला पड़ गया।

"उपवासके तेरहवें दिन यानी २२ फरवरीको बापू दस मिनटके प्रयत्नमें आधा औंस पानी भी नहीं पी सके। थककर बेहाल होगये, और खाटमें पड़ गये। नाड़ी कमजोर पड़ गई। बदन पसीनेसे तर हो गया। बोलना तो दूर इशारा तक करनेकी ताकत न रह गई। २२ फरवरीके दिन बापू जीवन और मरनके बीच झूल रहे थे। बापूजीके उपवासने आगाखां महलके दरवाजे खोल दिये थे। दिन भर मुलाकातियोंका ताँता लगा रहता था।"

इधर सारे देशमें आशा निराशा भरी हलचल मच रही थी। बिहार अपनी विपदा और पैंतरा भूल नयी परिस्थिति और नये कार्यक्रमकी आशामें आगाखाँ महल और नयी-दिल्लीके मुंह जोहता रहा। कारण भी थे। देशके कोने-कोनेसे ही नहीं विदेशसे भी गान्धीजीकी रिहाईकी माँग आने लगी। केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभामें काम-रोकोके प्रस्तावके रूपमें गान्धीजीकी रिहाईकी मांग पेश हुई और दिल्लीमें तो सर्वदल सम्मेलन बैठा जिसने उस माँगको दुहराया। और सरकारकी कार्यकारिणीके तीन सदस्य सर एच० पी० मोदी, सर्वश्री नलिनीरंजन सरकार और एम० एस० अणेने सरकारी नीतिके विरोधमें इस्तीफे भी दाखिल किये। पर बहरे साँपपर झाड़फूंकका कोई असर नहीं पड़ा। केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभामें तो सरकारने काम-रोकोके प्रस्तावके जवाबमें कहा—"तब जापानकी चढ़ाई होनेवाली थी; इसलिये कांग्रेसने अगस्त प्रस्ताव पास किया जिससे जापान प्रसन्न रहे। पर अब आन्दोलन कुचल दिया गया है और जापानकी चढ़ाईकी बात भी दब गई है। आज कांग्रेसकी खोई हुई धाक हासिल करनेके लिये उपवासके अलावा गान्धीजीके लिये दूसरा कौन उपाय है?" फिर सरकारने कहा कि हम पश्चिमके जातियोंकी मर्यादा विरोधीकी मानवता, विनय अथवा दयाकी भावनाको उभारकर उससे जबरदस्ती अपना काम निकालना तनिक भी पसन्द नहीं करतीं। यहाँ सरकार भूलती थी! एक पूरबकी जातिने भी हिन्दू महासभाके प्लॉटफार्मसे उसकी हांमें हां मिलाई; लेकिन उसने साथ ही कहा कि जब उपवासकी कमजोरीसे गान्धीजीकी जान खतरेमें पड़ जाय तब सरकार

तिल-तिलकर मरनेवाले दो शहीद !

शहीद विन्ध्य वासिनी सिंह,
हाजीपुर
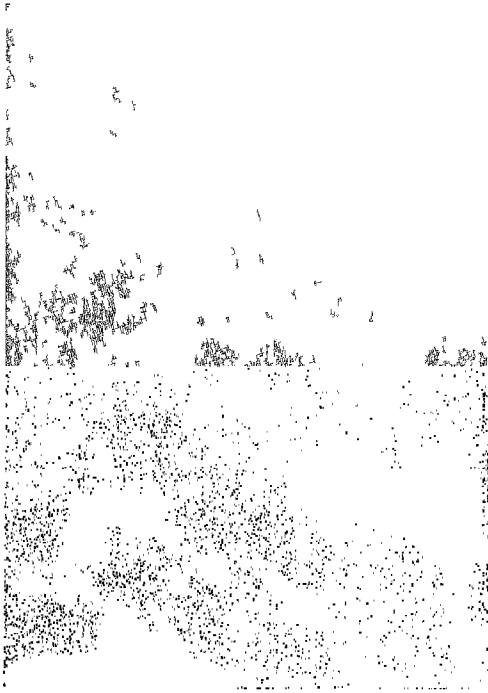
अनिरुद्ध कुमार सिंह, एम. ए.,
पटना

आगा खां महलके दो शहीद !
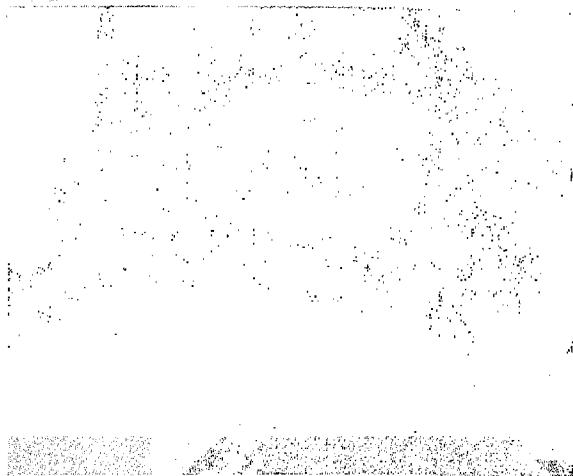
बापू के 'महादेव'

उन्हें जरूर छोड़ दे। मुस्लिम-लीगका रुख साफ था। वह भी हिन्दू महासभाकी तरह सर्वदल सम्मेलनमें शामिल नहीं हुआ था। उसके सभापति जिन्ना साहब बोले कि गांधीजीका उपवास कांग्रेस आन्दोलनके सिलसिलेमें ही है जिसकी सफलता पाकिस्तानकी जड़ खोखलीकर देगी! उनका भी गान्धीजीके उपवासके खतरनाक तरीकेसे विरोध था। फिर भी उनने सर्वदल सम्मेलनको सन्देश देते हुए मनाया कि सम्मेलन शान्ति और समझदारी लानेमें सफल हो।

इधर गान्धीजीकी हालत खतरनाक हो गई। डाक्टरोंका बुलेटिन निकला कि उनकी जीवनशक्ति इतनी क्षीण हो गई है कि आगे क्या होगा, नहीं कहा जा सकता। मौतकी लकड़ी गान्धीजीके शरीरपर फिरती दीख पड़ने लगी। सर तेजबहादुर सप्रूने देशको चेताया कि महान् संकट आ रहा है; जिस क्षण न आ जाय उस क्षण आ जाय; छातीपर पत्थर रखकर सभी उस महान् विपत्तिको सहें, धीरज न खोवें, दंगा न करें। देशकी आर्त्तवाणी फूट निकली, क्या जज, क्या किरानी, क्या मालिक, क्या मजदूर, सभी सर्वोच्च न्यायकर्त्तासे अपने तपस्वी नेताकी प्राण-भिक्षा मांगने लगे और बिहारकी सड़क सड़कपर रात-दिन फौजियोंका शोर और टैंकों और मशीनगनकी गाड़ियोंकी घरघराहट उस गोहार-वाणीको दबानेकी कोशिश करने लगीं। कितने सशस्त्र क्रान्तिकारी जानपर खेलकर सरकारसे बदला लेनेको आतुर हो उठे पर जब उन्हें सुझाया गया कि उनकी कार्रवाईसे उनके तपस्वीका यथाशक्ति उपवास आमरण उपवासमें परिणत हो जा सकता है तब उनके हाथसे रिवाल्वर छूट गये।

उधर सरकार सुखका सपना देख रही थी। उसकी खुशीका कोई ठिकाना न था। बूढ़ा खुद ही मर रहा है जिसे न बाहर छोड़ते बनता था, न जेलमें रखते। सांप मरे और लाठी भी न टूटे तब बेहद खुशी क्यों न हो? इस खुशीमें एक ओर सरकारने घी चन्दन इकट्ठा किया और दूसरी ओर गान्धीजीसे बातचीत करनेकी मित्रोंको पूरी छूट दे दी। तरह-तरहके लोग गान्धीजीसे मिलने लगे और साथ ही उनका मनोबल उनके शरीरमें प्राण फूंकने लगा।

सर तेज और उनके साथियोंने गान्धीजीसे बातें कीं। वे सब कहने लगे कि गान्धीजीकी इच्छा आन्दोलन चलाते रहनेकी नहीं है। वे महायुद्धकी तैयारीमें बाधक भी नहीं होंगे। यही मौका है कि सरकार उनसे समझौता कर ले। हमारा विश्वास है, छूटकर गान्धीजी राजनीतिक जिच दूर करेंगे और अनेक कठिनाइयोंके

सुलझानेमें मदद देंगे। श्रीचक्रवर्ती राजगोपालाचारी और उनके इष्ट-मित्रोंकी बातचीत गान्धीजीसे हुई। उनकी मंडलीमें सुना गया कि गान्धीजी सरकारके और खिलाफ होगये हैं। ब्रिटिश साम्राज्यमें रहनेकी अपेक्षा मर मिटना कहीं अच्छा समझते हैं। उनका कहना है कि लोग मरना सीखें; वे सब और कुछ नहीं कर सकते हैं तो बड़े लाटके महलके सामने हाराकीरी (पेट चीरकर आत्महत्या) तो कर सकते हैं; उनके महलकी सीढ़ीपर सर पटक-पटककर गुलामीका अपना चोला तो बदल दे सकते हैं? भारत छोड़ोका नारा बुलन्द करनेवालोंका दुखी दिल ऐसा सन्देश पाकर हरा हो गया और उनने सारे देशमें इसका खूब प्रचार किया।

ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीके केन्द्रीय संचालक मंडलके सदस्य भी बम्बईमें पहुँचे हुये थे और गान्धीजीके मतामतसे जानकार होना चाहते थे। उन सबने श्रीदेवदासको पकड़ा। उनको अपनी सारी बातें समझा दीं और गान्धीजीकी प्रतिक्रिया जाननेको कहा। श्रीमती सुचेता कृपलानी तो खुद मिलनेके लिये आतुर थीं। पुलिस हाथ धोकर पीछे पड़ी थी तब भी उनने अधिकारियोंके यहाँ गान्धीजीसे मिलनेकी दरख्वास्त भेज दी और उनकी इजाजत लेकर गान्धीजीसे २५ फरवरीको मिल भी आयीं। पूनेकी पुलिसको जैसे ही उनके डेरेका पता लगा वह दौड़ी; डेरा घेर लिया गया पर देखा चिड़िया उड़ गई है।

इन संचालकोंको बहुतकी बातोंकी जानकारी हुई। उनको मालूम हुआ कि (१) गान्धीजी नहीं चाहते हैं कि कांग्रेसके नामसे आन्दोलन चलाया जाय। वे कहते हैं कि लोगोंको मान लेना चाहिये कि कांग्रेस जेलमें है। (२) आन्दोलनके संचालकोंको गुमनाम न रहना चाहिये; अपने आदेश वा सलाहकी जवाबदेही लेनी चाहिये और अपनी कार्रवाईके लिये अपनेको ही जिम्मेवार ठहराना चाहिये। (३) सबुताज (Sabotage) बन्द कर देना चाहिये। सबुताजसे नुकसान ही नुकसान है और (४) सबोंको प्रकट होकर काम करना चाहिये, सत्याग्रह और गुप्त जीवन साथ साथ नहीं चल सकते। यदि कार्यकर्त्ताओंके बाहर आकर काम करनेसे आन्दोलन बन्द हो जाय तो भी परवाह नहीं करना है। श्रीजयप्रकाश नारायण वा अरुणा आसफअली प्रकट हों वा नहीं इसका निर्णय उनपर ही छोड़ देना चाहिये।

संचालकों और उनके हितैषियोंमें खूब बहस मुबाहिसा हुआ। श्रीजयप्रकाश

नारायणने कहा कि मैं मानता हूँ, उस बूढ़ेने कांग्रेसको बनाया है; कांग्रेस उसका है; अगर वह चाहता है कि हम कांग्रेसका नाम नहीं इस्तेमाल करें तब कमसे कम मैं उसकी बात मानूँगा। मेरा आजाद् रस्ता अलग है। मैं उसीके प्लॉटफार्मसे काम करूँगा। पर और लोगोंके लिये कांग्रेसका नाम छोड़ना कठिन हो गया। उनने कहा कि जनता कांग्रेसके नामसे ही लड़ना जानती है ऐसे संकटकालमें दूसरे नामसे उन्हें मैदानमें लाना हम साधारण कार्यकर्त्ताओंके लिये संभव नहीं है; इसलिये अगर आन्दोलन चलाना है तब कांग्रेसका नाम लेना है। फलतः सबोंने मिलकर तय किया कि हमलोग ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीका नाम न लेकर अबसे इण्डियन नेशनल कांग्रेसके नामसे सब काम करें। उनने फिर तय किया कि अबसे जो एलान वा सर्कूलर निकलेगा उसपर निकालनेवालेका नाम रहेगा। लेकिन जो कार्रवाई हो चुकी थी उसकी जवाबदेही कौन ले और किस तरह, यह विवादास्पद ही रहा। श्रीदेवदास गान्धी जैसे हितचिन्तकोंकी सलाहसे तय हुआ कि एक वक्तव्य निकाला जाय जिसमें ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीको जिन जिन कामोंकी जवाबदेही लेनी चाहिये उन सबका जिक्र रहे और उसपर सभी संचालकोंके दस्तखत रहें। वक्तव्य तैयार हुआ पर दस्तखत करनेके मौकेपर कठिनाई आई। श्रीजयप्रकाश नारायण चढ़ते आन्दोलनमें तो बाहर थे नहीं इसलिये उनकी जवाबदेहीका सवाल क्या उठता? फिर श्रीअरुणा आसफअली दिल्लीमें ही रहीं, नवम्बरमें बम्बई आईं इसलिये अक्तूबर तककी घटनाओंकी जवाबदेही उनपर डालना कैसे मुनासिब होता? फिर सरकारकी खूनी आंखोंका भी खयाल करना था। इसलिये सबके दस्तखत लेनेमें कुछ न कुछ दिक्कत पेश आई। श्रीसुचेता कृपलानी कहती हैं कि अकेली वही दस्तखत करनेको तैयार थीं। लेकिन उनका अकेला दस्तखत करना भद्दा जंचता था और कोई आगे भी न आता था। इसी विषम परिस्थितिमें स्व० श्रीअल्लाबक्स (भूतपूर्व प्रधान मंत्री, सिंध) वहां आ पहुँचे और वक्तव्य प्रकाशित करनेका घोर विरोध किया। उनने कहा, "आखिर वक्तव्य निकालनेका उद्देश्य क्या हो सकता है? यही न कि अगस्त आन्दोलनकी कार्रवाईसे गान्धीजीको पाक साफ समझा जाय? सो सरकार न समझेगी और गान्धीजीकी शानमें जो कहती आई है कहती रहेगी। इसके अलावा आपलोगोंकी बातोंके जोरसे आपलोगोंके कान पकड़ेगी। वक्तव्य निकालनेसे नुकसान ही नुकसान है; फायदा कुछ नहीं। इसलिये इसको फाड़ ही डालना है।"

और सबोंका रुख देखकर श्रीअलग्जेक्सने वक्तव्यको फाड़ दिया। सबुताज के सवालपर खूब गरमागरम बहस हुआ। श्रीमती सुचेता रुबुताजसे कतई ताल्लुक नहीं रखना चाहती थीं और श्रीपटवर्धनजी वगैरह इसको छोड़नेके लिये तैयार नहीं थे। अन्तमें निश्चय हुआ कि चूंकि सबुताजके सवालपर फुटक जाना ठीक नहीं है इसलिये इस प्रोग्रामको तीन महीनेके लिये स्थगित किया जाय।

उधर दो मार्चको २१ दिनका उपवास समाप्तकर गान्धीजी अग्नि-परीक्षासे सकुशल निकले थे। सारा देश खुशियां मना रहा था। आन्दोलनके संचालक भी फूले न समाते थे। विवादका अन्त करके उनने इण्डियन नेशनल कांग्रेसकी स्थापना की पर गान्धीजी अग्नि-परीक्षासे जो प्रकाश निकला था उसमें उनने देखा कि हम दो विचार धाराओंमें बह रहे हैं और दो दो दलमें बट रहे हैं।

बिहारमें भी दो धारायें फूट निकलीं। उस समयके आन्दोलन-संचालक बाबू श्यामसुन्दर प्रसाद लिखते हैं—सर्वश्री जगजीवनराम (आज अनस्थायी सरकारके श्रमसदस्य) सिंहेश्वर प्रसाद, ज्ञानदा प्रसन्न साहा, चक्रधर शरण और सच्चीचन्द जायसवाल गिरफ्तार हो गये। मैं अकेला बच गया और अपनी सूझके मुताबिक जिलाओंमें हिदायत भेजता रहा। दो चार दिनोंके बाद आचार्य बदरीनाथ वर्मा, वर्तमान शिक्षा-मंत्री, बिहार सरकार रांचीसे आगये; तब उनसे मार्ग दर्शन प्राप्त होने लगा इसके बाद पटनेमें कोई संगठन सम्बन्धी खास घटना उल्लेखनीय नहीं घटी। २४ सितम्बरको श्रीचन्द्रशेखर प्रसाद सिंहके साथ मैं गिरफ्तार हो गया। ३० सितम्बर या १ली अक्तूबरको आचार्य बदरीनाथ वर्मा भी गिरफ्तार हो गये। उसके बाद बाबू नथुनी सिंह और श्रीध्वजाप्रसाद साहु आ गये और कामका संचालन करते रहे।

१७ दिसम्बरको श्रीचन्द्रशेखर प्रसाद सिंहके साथ मैं जेलसे छूटकर आ गया और फिर काममें जुट गया। ६ फरवरीको ध्वजा बाबू और ३ मार्चको नथुनी बाबू उसके बाद कीर्ति बाबू गिरफ्तार हो गये। फिर मैं अकेला पड़ गया। इस बीच गान्धीजीका उपवास हो चुका था। बड़े लाटके साथ उनका जो पत्र-व्यवहार हुआ था वह भी पत्रोंमें छप चुका था। इसके बाद इस बातकी चर्चा जहां तहां सुनाई पड़ने लगी कि घटनायें जिस ढंगसे घटी वह अच्छा न हुआ। किन्तु हमलोगोंके मनमें कभी अफसोस या पछतावा न हुआ। हम ऐसा मानते थे कि गवर्नमेन्टके आक्रमणका जवाब जनताने जैसा उचित समझा दिया। अब गान्धीजीके उपवासके

बाद हमलोगोंके लिये यह सोचना आवश्यक हो गया कि आगेका कार्यक्रम क्या हो। इस अरसेमें मैंने विपिन बाबू तथा कुछ अन्य प्रमुख कार्यकर्त्ताओंसे भी सम्पर्क कर लिया था और कार्यक्रम तय करनेमें उनकी सम्मति भी उपलब्ध होने लगी।

हमलोगोंने तय किया कि उस समय जो परिस्थिति थी उसमें केवल दो कामोंमें ही शक्ति लगाई जाय—स्वयं सेवक तैयार करके राष्ट्रीय महत्वके अवसरोंपर जलूस वगैरह निकलवाना। इस सिलसिलेमें गिरफ्तारी हो तो उसका स्वागत करना। दूसरा काम गाँवोंमें घूमघूमकर जनतामें जबानी और पर्चोंके जरिये प्रचार करना। इन दोनों कामोंसे जनताका मनोबल बने रहनेकी आशा थी। यह भी तय किया कि उस समयकी परिस्थितिमें तोड़फोड़का (Dislocation) काम उपयुक्त न होगा; अतः तोड़फोड़ (Dislocation) को ध्यानसे हटा दिया जाय। शुरूमें तो हर जगह तोड़फोड़का (Dislocation) काम हो गया था और परिणाम स्वरूप जनताको दमनका जो सामना करना पड़ा उसे उसने बर्दाश्त कर लिया। किन्तु इक्के दुक्के जगहोंपर अगर कोई घटना अब होती थी तो गवर्नमेन्टके जुल्मका शिकार वहींके लोगोंको बनना पड़ता था। इससे गांववाले खुद भी चौकन्ना रहते और यह पसन्द न करते कि कोई उनके गांवके नजदीक तोड़फोड़का (Dislocation) काम करे। इधर कुछ समाजवादी भाई इस बातपर जोर देते कि जहां तहां जारी रखा जाय, पर हमलोग इससे सहमत न हुये। इसी समय श्रीमती सुचेता कृपलानी पटने आईं। उनसे मेरी बातें हुईं। यह २०-२१ मार्चकी बात होगी। उन्होंने कहा कि केन्द्रमें भी Dislocation का सवाल लेकर मतभेद उठ खड़ा हुआ है। अभी इस बातपर समझौता हो गया है कि ३ मास तक इसे बिलकुल बन्द रखा जाय। उन्होंने अपनी राय कही कि जो परिस्थिति है उसमें ३ मासके बाद भी इसे शुरू करनेका सवाल नहीं उठ सकता; Dislocation को तो कार्यक्रमसे हटा ही देना है। मैंने कहा, मैं भी ऐसा ही सोचता हूं और बिहारके हमलोग इसी आधारपर काम भी कर रहे हैं; दूसरे विचारवाले मालूम नहीं, क्या करेंगे। एक बात उन्होंने और कही। वह यह कि काँग्रेस कमिटीको उत्तरदायित्वसे बरी रखनेके लिये हमलोगोंने तय किया है कि पर्चोंमें अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटीका नाम न रहेगा। अबसे हमलोग जो कुछ करेंगे इण्डियन नेशनल कांग्रेसके नामसे करेंगे। प्रान्तोंमें भी आप ऐसा ही कर लीजिये। उनकी बातोंसे ऐसा भी आभास मिला कि केन्द्रमें अधिकारके लिये दोनों विचारवालोंमें प्रतिद्वन्द्विता शुरू हो गई है। नेताओंकी गिरफ्तारीके

बाद्से बहुत दिनों तक सुचेता देवी ही केन्द्रीय कांग्रेस आफिसका संचालन कर रही थीं। अब दूसरे लोगोंको उसपर कब्जा कर लेनेकी कोशिश होने लगी थी। इधर बिहारमें भी कुछ इसी प्रकारकी प्रवृत्ति दीख पड़ने लगी।

श्रीसुचेतादेवीके जानेके बाद मैंने तीन मासवाली बात कार्यकर्त्ताओंको बतायी। मैंने ऐसा देखा कि समाजवादियोंको इसकी खबर पहलेसे ही थी किन्तु उन्होंने मुझसे कहा नहीं था। वे इस बातपर जोर देने लगे कि ३ मास तक Dislocation करना तो नहीं है लेकिन इस बीचमें उसकी तैयारी तो करनी है। अतः प्रान्तसे इसी आशयका सरकूलर जारी होना चाहिये। मैंने इसे कबूल नहीं किया और अपने पूर्व निश्चित ढंगसे ही काम करता रहा। इसके बाद एक चीज और भी सामने आई। आजाद दस्ताका नाम मैंने सुना। मुझे ऐसा लगा कि उसका कार्यक्रम कांग्रेसकी लड़ाईमें अपनानेकी चीज नहीं हो सकती है। मैंने उसमें दिलचस्पी रखनेवालोंसे कहा कि जो लोग उसमें व्यक्तिगत रूपसे शरीक हो चुके हों उन्हें कांग्रेसके संगठनसे कोई भी सम्बन्ध नहीं रखना चाहिये। मेरे इस स्टैण्डको कबूल करनेमें वे लोग आना कानी करने लगे। वाद विवादमें स्वीकार यदि कर भी लेते थे तो व्यवहारमें इस नीतिसे ठीक-ठीक चलनेमें ढिलाई दिखलाते।

मई १९४३ में केन्द्रकी तरह प्रान्तमें भी सात आदमियोंकी डायरेक्टरेट बना। मैं चीफ डायरेक्टर रहा और दूसरे लोग उसके सदस्य रहे। उस मौकेपर भी मैंने आजाद दस्तावाली बात उठायी।

काफी वादविवाद हुआ। लोगोंने अन्यमनस्कता पूर्वक मेरी बातमें हामी भर दी किन्तु जाहिर था कि दिलसे उन्हें मेरी बात जंचती न थी। पीछे पता चला कि डायरेक्टरेटमें एक ऐसे सज्जन भी आ गये थे जो आजाद दस्ताके भी स्तम्भ समझे जाते थे और दूसरे कई लोग भी ऐसे थे जो उनसे सम्बन्ध रखते थे। मैंने यह भी देखा था कि साथ काम करनेवाले कई आदमी मुझसे छिपा कर इधर उधर जाया आया करते। अब एक दूसरेके प्रति अविश्वास शुरू हो गया था। यों तो बहुतसी घटनायें घटीं किन्तु एक विशेष रूपसे उल्लेखनीय है। जुलाई १९४३ में मैं कलकत्ता गया हुआ था। वहां समाजवादी विचारके एक प्रमुख आदमीसे मुझे मिलनेका मौका मिला। जो आदमी मुझे उनके पास ले गया वह उन्हींके पास ठहरा हुआ था। वहां पहुँचनेपर बातचीतके सिलसिलेमें उन्होंने मुझसे पूछा कि वह यहां क्यों ठहरा हुआ है ? मैंने जवाब दिया—मैं क्या जानूँ ?

आपके साथ ठहरा हुआ है और पूछते हैं मुझसे ? उनका सवाल मुझको अजीबसा लगा। एक बहुत बड़ा करार जिसपर इनामकी घोषणा हो, उसके साथ कोई ठहरा हुआ हो, उसके सम्बन्धमें बाहरसे आनेवाले किसी आदमीसे ऐसा सवाल किया जाय, यह मुझे रहस्यमय लगा। उन्होंने फिर मुझसे कहा कि यह कलकत्तेमें पढ़ना चाहता है, आप कोई प्रबन्ध करवा सकते हैं ? मैंने कहा—कलकत्तेमें मेरा जितना संबन्ध है उससे ज्यादा आपका है, इसके अलावा मेरा सम्बन्ध ऐसा है भी नहीं कि इस काममें कोई मदद दिलवा सकूं। × × × इसी समय बलदेव बाबू छूटकर आ गये थे। पटना लौटकर मैंने अपना अनुभव और विचार उनको बताये। उनकी राय हुई कि जहांतक बने फूट रोकनेका प्रयत्न किया जाय। इसके १५-२० दिनके बाद अगस्तके तीसरे सप्ताहमें मैं पटना सिटीमें श्रीशिवनन्दन मंडलके साथ गिरफ्तार हो गया।

हां ! एक बात लिखना भूल गया। अप्रिल मासमें मुझे दो आदमियोंने बारी बारीसे आकर कहा कि जयप्रकाश बाबू नेपालमें आपसे मिलना चाहते हैं। मईमें फिर श्रीब्रजकिशोर सिंहने भी कहा जो प्रान्तीय डाइरेक्टरेटके सदस्य भी थे। × × × मैंने कहा पर्चोंके जरिये उनका विचार जाननेका मौका तो मिला है, इसके अलावा आप लोगोंसे बातें भी हो चुकी हैं। फिर भी अगर कुछ और जानना बाकी रह गया हो तो आप ऐसा कर सकते हैं कि जयप्रकाश बाबूसे पूछ कर मुझे उनकी बातें समझा दीजिये। ब्रजकिशोरजीने कहा कि मैं उनकी बातोंको उतने साफ तौरसे आपके सामने नहीं रख सकूंगा; इसलिये खुद बात करलेना अच्छा होगा। उनके जोर देनेपर मैं उनके साथ ही नेपाल गया पर हमारे जयप्रकाश बाबूके कैम्पमें पहुँचनेके पहले ही वे चार अन्य साथियोंके साथ गिरफ्तार कर लिये गये। जो पुलिस दल उन सबोंको गिरफ्तार करके हनुमाननगर जा रहा था उसने हमलोगोंको भी पकड़ लिया। हमलोग हनुमाननगर पहुँचे तब एक काण्ड हो गया जिसके फलस्वरूप हम सभी मुक्त हो गये। मैं सीधे पटना वापस आ गया।”

इण्डियन नेशनल कांग्रेस और आजाद दस्ता

इण्डियन नेशनल कांग्रेसको अपनाते बिहारको देर न लगी। ऑल इण्डियाकी तरह प्रान्तके कार्यकर्त्ताओंमें भी मतभेद जोर पकड़ता जाता था पर जन-सम्पर्कमें आनेवाले अधिकांश कार्यकर्त्ता अपने सामने एक ही दुश्मन सरकारको देखते थे। उनने जिले-जिलेमें अप्रैलमें राष्ट्रीय दिवस मनाया। आतंकित स्थानोंमें भी जिस तरह यह दिवस मनाया गया उससे उनके जोशका अनुमान किया जा सकता है। बांका थानामें ठीक बलुचियोंके संगीनके सामने सत्याग्रहियोंकी टोली अकड़ती हुई आई झंडा फहराते हुये नारे लगाते हुये। टोलीमें श्रीविन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह, उनकी पत्नी श्रीमानकी देवी और उनके दो लड़के और एक विश्वेश्वर शर्मा। बलुचियोंने लड़कोंको मार पीटकर छोड़ दिया और तीनको जेल भेजवा दिया। जहाँ फौजी कैम्प नहीं थे वहाँका क्या पूछना ?

सेन्ट्रल स्टूडेन्ट्स कौंसिल और मजबूत हो गया था और इसके विद्यार्थी-प्रचारक इण्डियन नेशनल कांग्रेसका आदेश जिला-जिला पहुँचा रहे थे। इसके प्रधान शहीद अनिरुद्ध कुमार भूतकी तरह काम करते और वृद्धा माँ उनकी पीठपर रहतीं। चाचा रिटायर्ड फर्स्ट इण्डियन आई० जी० (सर्व प्रथम हिन्दुस्तानी आई० जी०) और भाई एस० पी०। उनके घरको छोड़कर क्रान्तिकारियोंको मिलनेकी और कहाँ सुविधा हो सकती थी ? माँ सबका स्वागत करतीं। उनके संदेश लड़केके लिये संयोग रखतीं और लड़केका उनके लिये। स्टूडेन्ट्स कौंसिल और अनिरुद्ध बाबू जवानोंमें प्रिय होते जाते।

पर इण्डियन नेशनल कांग्रेसके प्रधान श्रीश्यामसुन्दर प्रसादको कठिनाई ही कठिनाई थी। रहने सहनेका कुछ ऐसा इन्तजाम था कि सबोंसे सब समय मिलना भी असंभव रहता था और उनके मध्यमें (medium) अनिरुद्ध बाबूकी वृद्धा माँ जैसी तन्मयताकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। यही कारण था कि श्यामबाबूसे मतभेद रखनेवालोंमें औरोंके साथ साथ शहीद अनिरुद्धके भी कान उनके खिलाफ भर दिये। परिणाम स्वरूप श्याम बाबूकी स्वीकृतिके बिना ही सेन्ट्रल स्टूडेन्ट्स कौंसिलकी योजनाके अनुसार कार्यकर्त्ता इकट्ठे हुये और इण्डियन नेशनल

कांग्रेस बिहार शाखाके डायरेक्टरेटका संगठन हुआ। इस डायरेक्टरेटमें सात जगहें थीं जिनमें एक जगह रिक्त रखी गई और शेषकी पूर्ति की सर्वश्री सूरजनाथ चौबे, शिवनन्दन मंडल, रामनारायण चौधरी, अनिरुद्धकुमार सिंह, ब्रजकिशोर प्रसाद सिंह और श्यामबाबूने। डायरेक्टरेटमें कोई श्यामबाबूकी विचारधाराका जबरदस्त समर्थक न था पर कई जबरदस्त विरोधी जरूर थे। फिर भी इण्डियन नेशनल कांग्रेसने आगेका जो प्रोग्राम बनाया उसे शानके साथ पूरा किया।

ऑल इण्डियाका आदेश आया कि अबकी आगाखां महलपर धावा बोलकर नौ अगस्त मनाया जाय। बिहारने सौ स्वयंसेवकोंको बम्बई रवाना किया जिनमें कुछ तो बंबई पहुँचते न पहुँचते गिरफ्तार हो गये पर काफी बंबई पहुँचकर पूनेके लिये रवाना हुये और दादरमें पकड़े जाकर वर्ली जेलके मेहमान बने। फिर भी कई आगाखाँ महलके पास पहुँच ही गये जिनमें महनारके श्रीगौरीशंकर सिंह और शिवप्रसाद भी थे। बादको जब कैदी वर्ली जेलसे छूटे तब फिर आगाखाँ महलकी ओर रवाना हुये। पूना पहुँचकर वे दो दलमें बँट गये। पहले दलने तुरत महलके फाटकपर सत्याग्रह किया और दूसरे दलने ९ सितम्बरको। सत्याग्रहियोंको अच्छी मार लगी, वे सात दिन तक हाजतमें रखे गये और बादको यड़वदा सेन्ट्रल जेलमें पहुँचा दिये गये।

प्रान्तमें भी सब जगह प्रदर्शन और गिरफ्तारियां हुईं। पर कार्यकर्त्ता वर्गका जोश और जनताकी सहानुभूति ऊपरके कार्यकर्त्ताओंको सुराहपर न ला सकी। श्यामबाबू कहते कि इण्डियन नेशनल कांग्रेसका दृष्टिकोण अहिंसात्मक ही रहना चाहिये, इसके मार्फत सशस्त्र-क्रान्तिकी तैयारी न होनी चाहिये, इसलिये सशस्त्र क्रान्तिकारियोंकी जो संस्था आजाद दस्ता है उसके सदस्योंको इण्डियन नेशनल कांग्रेसके डायरेक्टरेटमें शामिल नहीं होना चाहिये। उनके राहकारी उनकी बात तो सुन लेते पर काम करते ठीक उलटा और डायरेक्टरेटका चुनाव करके उनने अपनी विरोधिनी विचारधाराको मूर्तरूप भी दे दिया। इसलिये जब श्रीब्रजकिशोरने जयप्रकाश बाबूसे मिलनेका प्रस्ताव किया तब यही सोचकर अन्तमें श्यामबाबू राजी हो गये कि वहां जाकर विचारधाराका स्पष्टीकरण हो सकेगा।

दोनों जब नेपालमें पहुँचे तब श्री सूर्यनारायणने इन दोनोंको जयप्रकाश बाबूके यहां पहुँचानेके लिये अपने एक साथी 'शशि' के हवालेकर दिया। २९ मईकी रात थी। तीनों एक जमींदारके कामतमें टिके। उस कामतमें बाबू श्यामनन्दनकी

कुछ चीजें थीं जिनको लेनेके लिये उनको दोपहरतक आ जाना चाहिये था। वे अबतक न पहुँचे थे, इसलिये शशिको चिन्ता हो रही थी। शशिजी रात ही को बाहर कहीं गये शायद श्रीगुलालीके यहां, पूछताछ करने। लौटे चिन्ताकी भारसे दबे हुये और बोले कि यह स्थान निरापद नहीं रहा, हमलोग पासके उस चमारके दालानमें चल सोवें। शिव ! शिव ! करके रात कटी। तड़के शशि चटपट उठे, देहातीकी तरह केश कपड़े बना लिये और निकले असलियतका पता लगाने। दो घंटेके बाद वह लौटे सिसकते हुए, बोले—श्यामबाबू, गजब हो गया ! सेठजी पकड़ा गये ! बाबा भी पकड़ा गये। आपलोग हट जाइये। हम जाते हैं श्रीसूर्य-नारायणको खबर देने। श्रीब्रजकिशोरने शशिको छः गोलियां दीं और कहा—उनको गोलियां दे देना। खबर क्या जयप्रकाश बाबूका सन्देश था। जब शशि उनकी टोहमें जा रहे थे तब उनने देखा, जयप्रकाश दल चुपचाप आ रहा है और उसको नेपाली संतरियोंने घेर रखा है। वह सन्न रह गये; पर ज्योंही पाखाना करनेके लिये नदी किनारे जयप्रकाशबाबू ले जाये गये वह उनके पास पहुँच गये। उनने कहा प्रतापको खबर दो, ज्योंही हम सरहद पार करें वे चाहे जैसे हो हमें छुड़ा लें।

इधर श्रीश्याम और ब्रजकिशोर किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो रहे थे। उनकी विमूढ़ता दूर की जयप्रकाश दलने वहीं पहुँचकर जिसके संतरियोंने उनको भी गिरफ्तारकर लिया। सब जने इकट्ठे हुए और २० मईकी रात सबोंने काटी एक जगह, उसी कामतमें जहाँ श्यामनन्दन बाबूकी चीजें कबसे उनकी बाट जोह रही थीं।

वहांसे बैलगाड़ियोंपर लदकर सभी रवाना हुए हनुमान नगरको। और ९ बजे रातको वहां पहुँचे। सबके सब गार्ड रूमके बरांडेमें ठहराये गये। एक तरफ छोटा कमरा था और सामने खुली जगह थी। दीवारके सहारे दस-बारह राइफल रखे हुए थे। ये सब वहीं बेंचपर बैठ गये। इतनेमें बड़ा हाकिम आया। सबके सब उठ खड़े हुए और हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

बड़े हाकिमने पूछा—छिप छिपकर तुमलोग रहते थे ? श्रीकार्तिकप्रसाद सिंह बोले—खुले आम रहते थे। कई बार यहां हाजिर हुए हैं। हम पीड़ित हैं। शरणार्थी हैं। बड़ा हाकिम—Who is the doctor ? डाक्टर कौन है ? डाक्टर वैद्यनाथ झा आगे बढ़े और अपना परिचय देने लगे पर उसने कहा—सब मालूम है। सब मालूम है। फिर वह हरेकसे दो एक बात करके चला गया।

बड़ा हाकिम फूसकी छतरीके नीचे चबूतरेपर रखी हुई कुर्सीपर बैठा, उसकी बगलमें बेंचपर सूबा और सामने दरीपर सातो बंदी और दो पेशकार। फिर ऐसे दरबारकी शोभा बढ़ानेके लिये कुछ ही सन्तरी; बस।

दरबारमें बाबू श्यामनन्दन सिंह और डाक्टर राममनोहर लोहिया खूब बोले। श्यामनन्दन बाबू तो अपने सताये हुए मालिकके चिन्तातुर मैनेजर थे। एक टांगपर खड़े होकर बोले कि अंगरेजी राज्यमें विपद पड़ी तो मालिक यहां भाग आये पर यहां भी आफत! हमारे सीधे सादे मालिकको जुरमाना लेकर छोड़ दीजिये, हुजूर! डाक्टर साहब एफ० ए० पास जमींदार हैं। शरणागत हैं। कुछ बहिराष्ट्रीय कानून भी जानते हैं। विलायत भी शरणागतकी रक्षा करता है और नेपाल तो हिन्दूराज है। इसलिये हिन्दुत्वके अभिमानी डाक्टर साहब नेपाल राजकी शरण आये हैं। औरोंने भी अपनेको शरणार्थी ही बतलाया।

बड़ा हाकिम सबकी बातें सुन रहा था। उसके हाथमें कुछ फोटो थे जिनसे शरणार्थियोंके चेहरेका मिलान कर रहा था। जयप्रकाश बाबू उदास थे और सर भी झुकाये रहते थे। बड़े हाकिमने पूछा—वह इतना उदास क्यों है? तुरत मैनेजर साहबने कहा—तकलीफने हमारे मालिकको परेशान कर रखा है। × × × फिर दरबार बरखास्त हो गया।

इधर इन बन्दियोंके इष्ट मित्र चुपचाप बैठे न थे। अफसरों वा उनकी नाकके बालकी जेबोंको गरम करके सबोंको छोड़ा लेना चाहते थे। उनने हनुमाननगरसे काठमाण्डू तक अपना सम्पर्क स्थापित कर लिया था। और जब उनको आशा हुई कि छः सात हजारका घूस बन्दियोंको घर लौटवा सकेगा उनने जयप्रकाश बाबूके पास अपना गुप्तचर भेजा। वह गुप्तचर चार बजे शामको वहां पहुँचा जबकि बरंडेपर सातो साथी उदास बैठे थे। एकाएक जयप्रकाश बाबूने देखा—कुछ दूरपर एक आ खड़ा है। वे पेशाब करनेके बहाने उनके पास गये। वह बोला—सब ठीक है। लौटकर उनने साथियोंको सन्देश सुनाया। फिर सबके चेहरे हरे हो गये। उनने समझा घूसने काम किया। रातको हँसी खुशीकी बातें हुईं जिसके बीच जयप्रकाश बाबू बोले कि अबकी निकलूँ तब इस स्वतंत्रभूमिको अन्तिम नमस्कार करूं। (Good bye to this independant land) सब सोनेकी तैयारीमें लगे। छः सात सिपाही भी सादे वेशमें उनके साथ सो गये और एक हथियार बन्द पहरा देता रहा।

आधी रात हुई होगी कि दनादन गोलियां चलने लगीं, शोर होने लगा। रोशनीको गोली लगी। अन्धेरा हो गया। फिर गोलीके रुकते ही झंडे लेकर कितने आगनमें आ गये, बरंडेपर चढ़ गये और भागो! भागो! मारो! मारो! चिल्लाने लगे। पर शशि चिल्ला रहे थे—भागिये सेठजी! भागिये सेठजी! तुरत सबके सब भाग गये और सारा खेल खत्म छः सात मिन्टोंमें। लेकिन श्यामसुन्दरजी और ब्रजकिशोरजी जहां थे वहीं रह गये। फौरन लोग दौड़े और उन्हें भगा लाये।

इस काण्डमें शशिने गजबका पार्ट अदा किया। तीस मील दौड़कर उसने सन्देश दिया श्रीसूर्यनारायणको। सूर्यनारायण इतनी तेजीसे आगे बढ़े कि दस ग्यारह आजाद सैनिक तो पिछड़ गये और मोरचेपर पहुँच सके केवल चौबीस। और शशि साथ! आते ही सबोंने छापा मारा। श्री सूर्यनारायणने देखा, उधर सरदार नित्यानन्दका राइफल फेल कर गया है [illegible] निशाना ले रहा है। उनने उसी दम अपना रिवालवर नित्यानन्दजीकी ओर फेंका और उछलकर सन्तरीके राइफलको झटका दिया। उसका निशाना खाली गया और उसका राइफल भी छीना जाने लगा। इसी बीच नित्यानन्दजीने रोशनी चूर चूर कर दी। फिर तो अन्धेरा हो गया जिसमें श्री नित्यानन्द और गुलालीकी गोलियां जो गुल खिलाने लगीं उसका खवाब भी नेपालने नहीं देखा था।

जयप्रकाश बाबू पहुँचे कलकत्ता और उसे अपना अड्डा बनाया। उनमें और ताकत आ गई जो लोगोंको अनायास अपनी ओर खींचने लगी। आजाद दस्ता मजबूत हुआ लेकिन इण्डियन नेशनल कांग्रेसकी समस्या ज्योंकी त्यों बनी रही। जुलाईमें जब श्यामसुन्दर बाबू कलकत्ता गये तब फिर उनने जयप्रकाश बाबूसे मिलना चाहा पर उन्हें मिलने नहीं दिया गया। उसी मासमें लेखक जेलसे निकला, उनसे मिला और उनकी कठिनाइयां जानी। उनने कहा कि समाजवादियोंके साथ काम करना मुश्किल है; मैं सोच रहा हूँ, मुझे भी यहां सत्याग्रह कमिटी बना लेना चाहिये जैसा कि श्रीअन्नदाप्रसाद चौधरीने बंगालमें किया है। लेखकने उन्हें ऐसा करनेकी राय न दी और एकताके लिये सचेष्ट रहनेको कहा। वह आजाद दस्तेके चन्द जवानोंसे भी मिला और उनके दृष्टिकोणसे परिचित हुआ। उसने श्यामसुन्दर बाबूसे कहा कि उनको अपना अड्डा ऐसी जगह ले जाना चाहिये जहां सभी कार्यकर्त्ता बेरोक आ सकें। उनने ऐसा किया भी। फिर लेखक उनके साथ रहने लगा और अपने आज़ाद दलके दोस्तोंसे भी

यहीं विचार-विनिमय करने लगा। लेखकका मत रहा है कि अहिंसासे ही हिन्दुस्तानको पूर्ण स्वतंत्रता मिल सकती है पर हां ! पूर्ण स्वतंत्रता दिलानेवाली अहिंसा अभी जनतामें विकसित न हो पायी है, उसका विकास करना है और जान-मालका मोह छोड़ उसमें लग जाना है। साथ ही लेखक मानता आया है कि सशस्त्र-क्रान्तिका उपयोग करके ही दुनियाका कोई राष्ट्र अबतक अपनी आजादी लेता आया है और आज भी दुनिया इतनी सुधर नहीं गई है कि राष्ट्र उस सनातन मार्गको छोड़ देवें। जबतक शोषणका अन्त करनेमें सत्याग्रहको कामयाबी नहीं मिलती तबतक सुपरिचित राहसे चलनेकी प्रवृत्ति उस सनातन मार्गको लुप्त न होने देगी। जिस हदतक अहिंसा अधूरी है उस हदतक समाज सशस्त्र-क्रान्तिको अपनायगा। उसको साधक मिलेंगे और आपत्तिकालमें उनसे सामाजको लाभ भी पहुँचेगा। इसलिये अहिंसाके और सशस्त्र-क्रान्तिके साधकोंको आपसमें लड़ना नहीं है। उन्हें अलग अलग अपना संगठन बनाकर अपने अपने साधनका विकास करना है। एक संगठन द्वारा काम करनेसे दोनों एक दूसरेको पनपने न देंगे। अहिंसावादी जितना खुल सकेगा उतना उसका संगठन मजबूत होगा पर सशस्त्र-क्रान्तिवादी जितना छिप सकेगा उतना अपने संगठनको मजबूत बना सकेगा। इसलिये दोनोंका अलग अलग काम करना ही स्वाभाविक है। और ऐसा करके ही अपने अपने समर्थकोंकी शक्तियोंका दोनों पर्याप्त उपयोग कर सकेंगे। लेखकका यह भी मत था कि इण्डियन नेशनल कांग्रेसको अहिंसावादियोंका ही संगठन बने रहने देना चाहिये और इसमें कोई कठिनाई नहीं लानी चाहिये क्योंकि सशस्त्र क्रान्तिकारियोंके लिये आजाद दस्ता है ही। वह जिन जिन आजाद-दस्तावालोंसे मिला सबोंने उसका समर्थन किया पर साथ ही कहा कि जबतक श्यामसुन्दर बाबू चीफ डाइरेक्टर रहेंगे आन्दोलनका काम ठीकसे नहीं चलेगा। श्यामसुन्दर बाबूके आलोचक आजाद दस्तावाले ही नहीं थे बल्कि स्टूडेन्ट्स कौंसिल और कांग्रेस सोशलिष्ट पार्टीके लोग भी थे। लेखकने सबोंके एक दो कार्यकर्त्ताओंको एक साथ बुलाया और श्याम बाबूसे खुलकर बातें करवायीं। उस समय तो मालूम हुआ कि सारी गलतफहमी मिट गई और अबसे योजनानुसार काम होगा पर दूसरे दिनसे ही वही रफ्तार बेढंगी जो पहले थी सो कायम रही। फिर श्री श्यामसुन्दरजी और शिवनन्दन मंडल गिरफ्तार कर लिये गये। एक डायरेक्टर ब्रजकिशोर पहले ही पकड़ लिये गये थे और दूसरे शहीद अनिरुद्ध कुमार भीषण रूपसे रोग ग्रस्त हो

जानेके कारण काम करनेसे असमर्थ हो रहे थे। केवल श्रीसूरजनाथ चौबे और श्रीरामनारायण चौधरी मैदानमें रह गये थे। इसलिये प्रान्तीय डायरेक्टरेटके पूर्ण संगठनका मौका आ गया जिसके लिये २९ अगस्तको जिला जिलाके प्रतिनिधियोंकी बैठक करना तय हुआ।

तारीख ठीक करके लेखक आरा चला गया जहां पहले पहल श्रीअंबिका सिंह, शिवपूजन सिंह वगैरहसे उसकी भेंट हुई। वे छात्र-संघके कार्यकर्त्ता थे। श्रीअंबिका सिंह हिरासतसे भाग आये हुये थे और कर्मठ पाने जाते थे। उन सबोंने कहा कि प्रान्तकी नीतिका हमें पता नहीं लगता है। हमारे जिला प्रतिनिधि सूर्यनाथ चौबेजी पिस्तौल लेकर भागे फिरते हैं और सेक्रेटरी गोली सहित गिरफ्तार होते हैं; अगर प्रान्तकी नीतिके अनुसार ही ऐसा हो रहा है तब हमलोग अपना अलग संगठन करेंगे। लेखकने उन सबोंको पटना चलनेके लिये कहा। पर २६ अगस्तको एक पुराना साथी आया और लेखकको जयप्रकाश बाबूसे मिलाने कलकत्ता ले गया। कलकत्ता रवाना होनेके पहले लेखकने अपने औफिस इञ्चार्ज श्रीअवधेशनारायण सिंहको अपनी अनुपस्थितिकी सूचना दे दी और यथोचित कार्रवाई करनेके लिये कहा।

कलकत्तेमें जयप्रकाश बाबूने लेखकको अपने सम्पर्कमें आनेका काफी मौका दिया। लेखकने उनसे कहा कि मुझको पार्टीसे नफरत है और मैंने सुना है कि आप कट्टर पार्टीवाले हैं; फिर भी आपकी बुलाहटपर मैं दौड़ आया हूँ क्योंकि मैं मानता हूँ, मनुष्य बदलता रहता है और विश्वास है कि वर्त्तमान संकटने आपको पूरा पूरा बदल दिया है। लेखकने उनसे ऐसा भी कहा कि बिहारकी राजनीतिमें उसका स्थान नहीं है; सत्याग्रहके समय वह खूब आगे आ जाता है और शान्ति-कालमें उतना ही पीछे रह जाता है। उसके साथ कोई गिरोह-बिरोह नहीं है। इसलिये उसपर कहाँतक भरोसा किया जा सकता है—इसे जान आप बातें करें। जयप्रकाश बाबूने काफी बातें कीं—साथीकी तरह, मित्रकी तरह और सबसे बड़ी बात—मानवकी तरह और साफ साफ कहा कि मैं मानता हूँ कि (१) इण्डियन नेशनल कांग्रेस बिहार शाखाके लिये प्रचार, प्रकाशन, प्रदर्शन तथा सत्याग्रहके अन्यान्य काम करना ही उचित है; हां! वातावरण अनुकूल हुआ तो इसकी ओरसे तोड़ फोड़ भी हो सकता है। (२) आजाद-दस्तावालोंको उसमें नहीं घुसना है; उनका अपना संगठन है और उन सबोंको उसे मजबूत बनाना है; (३) कांग्रेस

सोशलिस्ट पार्टीके संगठनकी अभी कोई जरूरत नहीं है। पार्टीके जो सदस्य अहिंसात्मक ढंगसे काम करना चाहते हैं वह इण्डियन नेशनल कांग्रेसमें शामिल हो जायें और जो सशस्त्र-क्रान्तिकी ओर हैं वह आजाद दस्ताको अपना लें। (४) अहिंसा-मार्गी और सशस्त्र-क्रान्तिकारियोंके संगठन और हिसाब-किताब तो अलग अलग रहेंगे पर दोनोंमें सद्भावना रहेगी; दोनों एक दूसरेका विरोध या एक दूसरेके खिलाफ प्रचार नहीं करेंगे।

आजाद-दस्ताको लेकर भी बातें हुयीं। लेखक कहता कि आजाद-दस्तावालोंको हथियारका संग्रह और अभ्यास करते रहना चाहिये और जब परिस्थिति परिवर्तन कल्कि अवतारका रूप धारण करके हमारे बीच अवतीर्ण हो तब उन्हें निकल पड़ना चाहिये। जयप्रकाश बाबू कहते कि उनको कुछ न कुछ काम तो करते रहना है ताकि मौका आनेपर वे कामके अयोग्य न साबित होवें। इस मुद्देपर मतैक्य अनावश्यक था क्योंकि लेखक आजाद-दस्तेका न था।

उनने लेखकको छः हजार रुपये भी दिये जिस रकमको श्यामनन्दन बाबूने एक जगह जमा कर दिया। उसमेंसे लेखक दो बारमें कुल ३५००) रु० ही ले सका। बाकी रुपयेकी जरूरत आजाद-दस्तेको थी। इसलिये श्यामनन्दन बाबूने उन रुपयोंको अपने पास ही रख लिया। हालांकि पैंतीस सौमेंसे आठसौ रुपये लेखकके हाथसे ही वे किसी-किसीको दिलवा चुके थे।

लेखक ३ सितम्बरको कलकत्तेसे लौटा और सुना कि २९ अगस्तकी बैठक हुई जिसकी कार्रवाईके फलस्वरूप डायरेक्टरेट आजाद-दस्ताके लोगोंकी मुट्ठीमें आ गया है। उसने श्रीअवधेशनारायण सिंहसे बैठककी रिपोर्ट मांगी पर उनने कहा कि कोई रिपोर्ट नहीं है। अवधेश बाबूपर लेखकका विश्वास था और उनपर सेन्ट्रल स्टूडेण्ट्स कौंसिल, कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी और आजाद-दस्ता-वालोंका। उनको लेकर वह सभी संस्थाके सूत्रधारोंसे मिलापर किसीने जयप्रकाश बाबूकी बात माननेकी ईमानदारी नहीं दिखलायी। अब जयप्रकाश बाबूकी आशा ही रह गयी थी। उनने कहा था कि निकट भविष्यमें ही आपसे मिलूँगा और लेखकका विश्वास था कि उनसे भेंट हुई कि सारा मामला सुलझा। पर एकाएक उसे धक्का लगा। २६ सितम्बरको उसे पटनेके एक मित्रने कहा कि दो-एक दिन हुये कहीं पंजाबमें जयप्रकाश बाबू पकड़ लिये गये। उसने उस खबरको सच मान लिया।

जयप्रकाश बाबूने लेखकसे कहा था कि उन्हें कश्मीर जाना है और राहमें पंजाबके कार्यकर्त्ताओंके बीच कुछ काम भी कर लेना है। लेखकने पंजाब जाने और वहाँके कार्यकर्त्ताओंके सम्पर्कमें आनेको बड़ा खतरनाक माना था और पंजाबसे प्रत्यक्ष संबन्ध न रखनेकी सलाह दी थी। पर उनने कहा कि मुझको पंजाब नहीं ठहरना है; वहाँके कार्यकर्त्ताओंसे दिल्लीमें ही मिल लेना है। सो वे घूमते-घामते दिल्ली पहुँच गये। वहाँ बुलाहट थी श्रीअरुणा आसफअलीकी जो वहाँ सुपरिचित होनेकी वजहसे न भेजी गईं। दिल्लीमें जिनसे मिलना था उनसे मुलाकात नहीं होती थी। इसलिये वहाँ आठ-दस दिन रुकना पड़ा। वहाँके साथी सावधान न थे; उनके दलमें पंजाबके भेदिये भी शामिल हो गये थे और जयप्रकाश बाबूकी गतिविधिका पता रखते थे। वे चाहते तो दिल्लीमें ही उनको पकड़वा देते। पर थे वे पंजाब-पुलिसके कर्मचारी, इसलिये नहीं चाहते थे कि जयप्रकाश बाबूको पकड़नेका यश दिल्लीकी पुलिस लूटे। १७ सितम्बरको एक छोटे स्टेशनपर सवार होकर वे पेशावरके लिये रवाना हुये। डब्बेमें उनकी जगह रिजर्व थी। पर साथ साथ तीन जगहें और रिजर्व थीं—एक मुस्लिम परिवारकी जिसका कोई कभी आया नहीं; और डब्बा बन्द करके जयप्रकाश बाबू अकेला ही सफर करते रहे। सुबहमें अमृतसर आया। बाहर निकल उनने चाय पी और फिर डब्बा बन्द कर लिया। फिर किसीने दरवाजा खटखटाया। उनने दरवाजा खोल दिया और कहा—आइये; जगहें खाली हैं। पर कोई आया नहीं; सब दरवाजेपर ही रहे। अब उनका माथा ठनका। वे क्या कर सकते हैं क्या नहीं—सोच ही रहे थे कि एक अंगरेज कुछ सिखोंको लेकर अन्दर आया, उनका नाम पूछा, उनकी तलाशी ली और उनको गिरफ्तार कर लिया।

जयप्रकाश बाबूमें दो विशेषतायें हैं :—यह कि उन्हें सी० आई० डी० फोबिया नहीं सताती—उनसे मिलनेपर लेखकको उन झंझटोंकी याद आ जाती थी जिन्हें औरोंसे मिलनेके लिये बरदाश्त करने पड़ते रहे हैं—और यह कि जहाँ कुछ समय तक निश्चिन्ततासे काम चला कि वे बेपरवाह हो जाते हैं जिसकी वजहसे कई बार मुसीबतोंमें पड़े हैं। इस बार भी वे बेपरवाह थे और अपने साथ पता ठिकानाके कागजात लिये हुए थे। बस पुलिसको पेशावरका ठिकाना मालूम हुआ और वहाँसे श्रीआनन्दजीका पता लग गया जो वहाँ जयप्रकाश बाबूके ठहरनेका प्रबन्ध करते। आनन्दजी गिरफ्तार हुए और उनसे पुलिसने बहुत सी बातें उगलवा लीं और

कितनोंको पकड़ लिया। इधर जब लेखकको फिर जयप्रकाश बाबूसे मुलाकात हुई तब उनने आनन्दजीकी चर्चा की। आनन्दजी उनसे अबकी मिले; अपने बयानपर लज्जित थे पर बोले कि मेरा खयाल है मेरे बयानसे आपको कोई ज्यादा नुकसान न पहुँचा होगा। लेखकने कहा कि हाँ! डाक्टर वैद्यनाथ झाने भी ऐसा ही एक बयान दिया था जिससे आप लोगोंका कोई नुकसान नहीं हुआ। जयप्रकाश बाबूने बात काटी। उनने कहा कि बयान देना ही बुरा है; उससे नुकसान पहुँचता ही है; कमसे कम पुलिसको अपने अनुमानका प्रमाण तो मिल जाता है; और श्रीआनन्दके बयानसे तो बड़ा नुकसान पहुँचा। मैंने तो बराबर पुलिसवालोंसे इतना ही कहा कि मैं आपकी बात नहीं सुनता; मैं आपको कोई जवाब नहीं देता।

और कब? जब कि लाहौरके किलेकी काल कोठरीमें वे असीम कष्ट पा रहे थे। उन्हें कभी मारा पीटा नहीं गया। पर उससे भी ज्यादा तकलीफ दी गई। इस ढंगसे पारापारी पुलिसवाले इतने सवाल उनसे करते कि सोनेका मौका नहीं मिलता था और सेहत इतनी गिर गयी थी कि खाना-पीना हराम हो गया था। पंजाबके तांगेवालोंकी जबान भले ही अच्छी हो पर पुलिसकी जबानमें तो इन्सानीयत नहीं है जिसका खराबसे खराब अनुभव उनको हो रहा था।

इधर कार्यकर्त्ता उनके नामपर शतरंजकी गोटी बैठा रहे थे। लेखकको अब उनसे कोई उम्मीद नहीं रह गई थी। फिर भी लेखक कलकत्ता पहुँचा। श्रीअरुणा आसफअली उससे मिलीं और उसके सामने रज़ो साहब और श्यामनन्दन बाबूसे भी बातें कीं। वे लेखकके स्टैण्डको मानतीं थीं और मुक्त कण्ठसे कहती थीं कि जयप्रकाश बाबूके सम्बन्धमें लेखक जो कहता है ठीक कहता है। उनके सामने तय हुआ कि बिहार शाखाके डायरेक्टरेटका फिरसे और उसी विचारदृष्टिसे चुनाव हो, जिसे लेखक सामने रख रहा है और जो ठीक जयप्रकाश बाबूकी भी विचारदृष्टि रही है। लेखक प्रसन्न हुआ और उसने सारी बातें श्रीसुचेता कृपलानी और अन्नदा प्रसाद चौधरीको कह सुनाईं। उन दोनोंने कहा कि अलग होना अनिवार्य है; वे सब जो कहते हैं करते नहीं हैं और जो करते हैं कहते नहीं हैं। लेखकने पूछा—अगर अबकी वैसी बात नहीं हो? दोनों बोले—फिर मेल हो जाये और पक्का मेल। मेलके लिये इतना ही जरूरी है कि वे सब इण्डियन नेशनल कांग्रेसके प्लेटफार्मसे सशस्त्र-क्रान्तिकी बात न कहें, न करें, और जब तक खुलेआम जनता तोड़ फोड़के

लिये तैयार न हो तोड़ फोड़ न करें। लेखक श्रीअरुणासे मिला और बोला कि जब आजाद दस्ता है ही फिर क्या जरूरत है कि आँख मिचौनी खेली जाय? क्यों न इण्डियन नेशनल कांग्रेस अहिंसाका प्लेटफार्म रहे और आजाद दस्ता सशस्त्र-क्रान्तिका? देशहितका कोई काम तो इससे रुकता नहीं? वे राजी हो गईं। फिर श्रीसुचेता और श्रीअरुणा अलग मिलीं जहाँ दोनोंने लेखकको साथ रखा। तीनोंने बातें कीं और तय किया कि बम्बईमें इस समझौतेपर मुहर लगे और सभी इस्तीफे वापस ले लिये जायें।

इस्तीफेका इतिहास है। इण्डियन नेशनल कॉंग्रेसको गरिल्ला दलकी बातें करते देख और वैसे वैसे दलके संगठनमें मददगार बनते देख श्रीअन्नदाप्रसाद चौधरीने मार्चमें ही कहा था कि मैं सेन्ट्रल डायरेक्टरेटमें नहीं रहूँगा। जब उनको समझाया गया तब वे बोले कि इस डायरेक्टरेटमें जब तक जयप्रकाश बाबू अपने विचारोंको लेकर रहेंगे इण्डियन नेशनल कांग्रेस आजाद दस्ताकी ओर झुका ही रहेगा। तब जयप्रकाश बाबूने अपने पदसे इस्तीफा दे दिया और आजाद दस्तेका संगठन करने नेपाल चले गये। पर श्रीपटवर्धन और लोहिया वगैरहने उनका इस्तीफा मंजूर नहीं किया। फिर अन्नदा बाबूने इस्तीफा पेश किया और अगस्तमें श्रीसुचेता कृपलानीने भी। दोनों इस्तीफे न मंजूर होते थे और न वापस लिये जाते थे। अजीब सी हालत थी।

अक्तूबरमें लेखक वापस आया और उसे मालूम हुआ कि सेन्ट्रल स्टूडेन्ट्स कौंसिल, कांग्रेस सोशलिष्ट पार्टी और आजाद दस्तावाले गुट बना रहे हैं। गुट बनाना मर्यादाके विरुद्ध था; इसलिये लेखकने तय किया कि वह झंडा लेगा और जेल चला जायगा। सभा हुई और श्रीअरुणाके आदमियोंने ही श्रीअरुणाके समझौतेके खिलाफ काम किया। लेखक सभामें बैठा रहा। उसने श्रीजयप्रकाश और श्रीअरुणाकी बातें साफ कर दीं। हां! उसने चुनावसे अपनेको अलग रखा। जब उसने अन्तमें कहा कि अपने निर्णयसे उनने ऑल इण्डियाकी एकताको भारी धक्का दिया है तब एक सुप्रसिद्ध समाजवादी फौरन उठे और बोले कि ऊपर कोई मतभेद नहीं है और जब लेखकने कुछ हवाला देते हुये उनकी बात काटी तो बोले कि आपके कलकत्ता छोड़ते ही सबमें मेल हो गया। दूसरे दिन लेखकने श्रीहरिनाथ मिश्र जैसे साथियोंको उन लोगोंके साथ मिलकर ही काम करनेको कहा क्योंकि उसने अपने लिये दूसरा रास्ता तय कर लिया था। पर इसी

दिन श्रीअवधेश नारायण सिंहके सामने ही जिलाके प्रतिनिधि आये और उन उन बातोंको दुहराना शुरू किया जिनको उन लोगोंने लेखकके बारेमें प्रचारकर रखा था। लेखक चौंका; उसने श्रीअवधेशसे पूछा जिनने स्वीकार किया कि बातें सच हैं। तब लेखकने उसी दिन एलान किया कि उसे कार्यकर्त्ताओंका संगठन करना है। क्योंकि उन्हें गुमराह होनेसे बचाना है और अहिंसाको प्लॉटफार्म देना है। और उसी दिन जो एक इण्डियन नेशनल कांग्रेसके डायरेक्टरेटमें थे लेखककी ओर झुकते दिखायी दिये। और कार्यकर्त्ताओंमें भी खूब उत्साह आ गया।

अब सशस्त्र क्रान्तिकारियोंकी दो संस्थायें हो गईं—आजाद दस्ता और इण्डियन नेशनल कांग्रेस। अब प्रान्तके आजाद अपनी अपनी समस्याओंको लेकर सीधे श्रीअरुणाके पास पहुँचने लगे और वे भी बिना छिपे छिपाये उनकी सेवा करने लगीं। दोनोंको बड़ी सहूलियत हुई। साथियोंकी आँखमें धूल झोंकनेकी चेष्टा अनावश्यक हो गई। श्रीपटवर्धन थे बम्बईमें। वहाँसे तो मोटा मोटी आदेश ही भेज सकते थे पर नजदीकसे आजाद दस्ताकी कार्रवाइयोंको देखना और उनपर नजर रखना तो श्रीअरुणाके लिये ही संभव था। बिहारके सशस्त्र-क्रान्तिकारियोंकी जैसी स्थिति हो गयी थी उसमें श्रीअरुणाकी ऐसी सेवाकी जरूरत आ पड़ी थी। पुराने दल अलग थे और नये नये भी पनप रहे थे और उन सबको एक संगठन-सूत्रमें बाँधना कठिन हो रहा था। कुछ तो ऐसे भी थे जो बाँधे जा भी नहीं सकते थे और जिनके लिये मुंगेर और दक्षिण भागलपुरकी बदनामी हो रही थी।

मुङ्गेरका गोविन्द दल बड़ा प्रबल हो गया था। सूर्यगढ़ा थानामें और उसके इर्दगिर्द वह दल डाका डाला करता और तीन जगह उसने खून भी किये। धरहरामें खूनके साथ जो डकैती हुई उसने अमीरोंको आतंकित कर दिया और पुलिसको परेशान। पर दल जनसाधारणके बीच अप्रिय न बना। इसका कारण था। श्रीगोविन्द सिंह जो लूट लाते उसका अधिकांश किसानोंमें बांट देते। वे निर्दयता भी न दिखलाया करते और न बलात्कार करते। इसलिये अमीरोंसे ईर्ष्या करनेवाली जनता उनको और उनके दायें हाथ श्रीकुशेश्वर सिंहको चाहती थी। उनने कितनी बार पुलिसको अंगूठा दिखलाया था। एक बार उससे राइफल भी छीन लिया था। इसलिये सरकार और पुलिसका नाश चाहनेवाले राजनीतिक कार्यकर्त्ता भी उनका पकड़ा जाना पसन्द नहीं करते थे। पर श्रीगोविन्द सिंह और उनके दलका दृष्टिकोण कदापि राजनीतिक न था। वे अपनी जातिके कुछ शोषकोंका नाश

चाहते थे जिसमें उन्हें सफलता भी मिली जब कि उनका प्रधान कोपभाजन सीताराम मंडल उनके हाथ मारा गया।

गोविन्द-दलमें एक बूढ़ा था हेमजापुरका। उसका लड़का एक डकैतीमें मारा गया था। वह अपने पुत्र शोकका कारण श्रीगोविन्द सिंहको ही मानता था और उसीने उनको सदलबल पकड़वा दिया। सरकारने १९४५ में उनको और श्री कुशेश्वर सिंहको फांसीपर लटका दिया।

उत्तर मुङ्गेरमें श्रीमहेन्द्र चौधरी सदलबल जनताको आतंकित कर रहे थे। लगभग पचास जवान कभी कभी उनके साथ लग जाते जिनमें कितने गोगरी राष्ट्रीय विद्यालयके लड़के होते। फिर डकैतियोंका तांता लग जाता, खून होते और बलात्कार भी। राष्ट्रीय वातावरणमें रहते हुये भी, उनने अपने अन्दर ऐसी कामलिप्सा जाग्रत कर ली थी जो भीषण बलात्कारके रूपमें प्रकट होती। आप अपनेको आजाद दस्तेका कहते। कांग्रेस सोशलिष्ट पार्टीका बतलाते। सुडौल शरीर जब फौजी पोशाक पहने पीठपर राइफल बांधे पहले पहल निकला तब सरकारके विरोधियोंका सर ऊँचा हो गया। पर दुर्घटनापर दुर्घटना होने लगी। सोनमा बेला और छर्रापट्टी जैसे काण्ड हुये जहां उनने डकैतीके साथ साथ साथियों सहित एक वयस्का और एक बालिकापर बलात्कार किया; फिर सबका सर नीचा हो गया।

१९४३ के पूर्वार्धमें वे सारन जिलेमें जा छिपे थे जहां अपने सुपरिचित अड्डेपर वे पकड़े गये और १९४५ में फांसी लटकाये गये। इनके दलका कारी जोलाहा गोलीसे मारा गया और कतने सुपरिचित अभी जिन्दे हैं। उनको मालूम है कि उनके धनको कितने अच्छों अच्छोंने बांटापर आज उनकी बदनामी बांटनेके लिये कोई आगे नहीं बढ़ रहा है।

मुङ्गेरके तीसरे दलका अड्डा ढोल पहाड़ी कैम्प था। स्थापित तो किया इसको डा० भुवनेश्वरप्रसाद सिंहने कांग्रेसका काम करनेके लिये और सो हुआ भी। इसके स्वयंसेवक राष्ट्रीय त्योहारोंको मिलिटरीके सब अत्याचार सहते हुये मनाते आये। पर धीरे धीरे यह कैम्प सब तरहके फरारोंका अड्डा बनने लगा और शस्त्रास्त्रकी ओर झुका। श्रीमहावीरप्रसाद यादव, बीरन सिंह, जगत नारायण पंजियार और गिरजाप्रसाद साहु सशस्त्र क्रान्ति करके सरकारको उलटकर किसान राज स्थापित करनेका मनसूबा बांधने लगे। कुछ दिनोंतक इन्हें बिहार विद्यापीठके एक विद्यालंकारका नेतृत्व मिला। पर वे डकैतीकी ओर

इस तरह झुकने और लोगोंको झुकाने लगे कि इन लोगोंने उन्हें हटा दिया।

इनकी जरूरतें थोड़ी थीं—गांववाले खानेको दे देते और ठहरनेका स्थान बता देते। अमीर भी उनका खयाल रखते क्योंकि वे समझते थे कि ये कार्यकर्त्ता मेलमें रहेंगे तो हमारे यहां डाका नहीं पड़ेगा। १९४३ के शुरूमें संजीवन और ननमा नामके दो फरार इस दलमें आ मिले। दोनों बहादुर थे और अपने साथ काफी फौजी पोशाक और कुछ हथियार भी लाये थे। इन दोनोंके संसर्गसे यह दल सशस्त्र-क्रान्तिकारियोंका दल बन गया। पर संजीवन और ननमासे दलकी पटरी बैठती नहीं थी। दोनोंने एक बार डकैती की। दलने बुरा माना पर दोनोंको माफी दे दी। उनके खिलाफ बलात्कारकी शिकायत भी आयी और दोनों सचेत कर दिये गये। फिर संजीवनजी कहीं चले गये और ननमा कैम्पके दो हथियार लेकर नया गांव और कुमैठाके जवानोंसे मिलकर डकैती करने लगा। दलवालोंने पकड़ा और कहा—हमारे हथियार वापस करो, वचन दो कि अबसे डाका न डालोगे। वह हीला हवाला करने लगा। तब वह दोपहरको एक कमरेमें बन्दकर दिया गया और निस्तब्ध रात्रिको निकाला गया। उस समय भी उसका रुख दिन जैसा था। अन्तमें दलवालोंने उसे एक ओर ले जाकर पटक दिया। एक उसकी टांगपर दूसरा उसकी छातीपर और उसके एक एक हाथपर बैठ गये। फिर एकने सर संभाला और दोने लाठीकी कैंचीसे उसके गलेको पीच डाला।

१९४४ के अप्रिलमें दलने आजाद दस्तेकी ट्रेनिङ्ग भी ली। पर ट्रेनिङ्ग लेते समय बन्दूककी आवाज होती और आसपासके लोग डर जाते। फिर पन्द्रह बीस दिनोंके भीतर इस तरह पुलिस और मिलिटरीका आक्रमण होने लगा कि आजाद तितर बितर हो गये।

भागलपुरके परशुराम दलने जब सरकारके हिमायतियोंसे बदला लेनेका प्रोग्राम बनाया तब उसका कर्मक्षेत्र बांका सबडिविजन भरमें फैल गया। ककवाड़ाके ठाकुर रुद्रेश्वरीप्रसाद सिंह फरारोंको ही पकड़ानेमें नहीं बल्कि तमाम कांग्रेस-वालोंको सतानेमें आगे रहे। इसलिये इस दलने उनकी कचहरियां जलाईं और उनके भेदिया गुलाबी चौधरीका खून कर दिया। पंजवाराके ठाकुर युगलकिशोर सिंहने अपने भगिना श्री टी० पी० सिंहको उकसाकर जो उस समय अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट थे श्रीराघवेन्द्रनारायण सिंहके ८२ बीघा धानको लुटवा दिया। इसलिये उनकी कचहरियां भी जलायी जाने लगीं। फिर जिन जिनने कार्य-

कर्त्ताओंके खिलाफ गवाही दी वे लूटे जाने लगे, पीटे जाने लगे और खास खास तो मारे जाने लगे। बादको श्री परशुराम सिंहने बदलाकी भावनाको नियंत्रित करना चाहापर वह इतनी उग्र हो उठी थी कि इनके काबूके बाहर हो गयी थी। फिर वे अपने दलसे अलग बेलहर थानेमें रहने लगे। धौरी गांव इनका अड्डा हो गया। यहींसे श्री जगदम्बा सिंहके सुप्रबन्धसे विप्लव नामक आजाद अखबार निकलता था जिसने श्री परशुरामके नामको चारों ओर फैलाया था।

परशुराम दलकी विचारधारासे मौके बेमौके डट जानेकी भावना तो कार्यकर्त्ताओंमें आ गयी थी। बहारेनासें नरसिंह बाबू थे, २३ कार्यकर्त्ताओंके साथ। उनने सुना कि पुलिस और मिलिटरी धमराही सामान जब्त करने गई है। उनने तुरत जलूस निकला और कई गांवकी जनताको उत्तेजित करते हुये उस सरकारी ताकतके सामने डट गये। पुलिस और मिलिटरी संगीन तानकर पैंतरेमें खड़ी हो गई और कार्यकर्त्ता दल झंडे हिला हिलाकर नारोंसे आसमान फाड़ने लगा। काफी जनता भी इकट्ठी हो गई। फिर तो जब्तशुदा चीजोंको वहीं छोड़ पुलिस और मिलिटरी नौदो ग्यारह हो गई। पर यह भावना नरसिंह बाबूकी गिरफ्तारीसे कमजोर पड़ गयी। उनकी गिरफ्तारीके बाद उनकी जन्मभूमि बेलडीहाको पुलिसने और तंग करना शुरू किया। अप्रिलके धावेमें वह गांव बहुत लूटा खसोटा गया। मर्दोंको एक जगह इकट्ठा करके भीष्म सिंह दारोगाने घर घरमें बलूचियोंको घुसाया। एल० पी० गर्ल्स स्कूलके मास्टर श्रीदामोदर सिंहकी मांने खबर दी कि स्त्रियोंके शरीरसे गहने छीने जा रहे हैं। दामोदर बाबूने श्रीभीष्म सिंहका ध्यान इस ओर खींचा और भीष्म सिंहजीने बलूचियोंका ध्यान दामोदर बाबूकी ओर खींचा। दामोदर बाबूपर मार पड़ने लगी और इतनी पड़ी कि हिलना डुलना तक कठिन हो गया। इस भीष्म-आततायीपनके अवसरपर गहने छीने जानेकी वजहसे कितनी स्त्रियोंके नाक कान फट गये। दो स्त्रियोंपर बलात्कार भी हुआ।

यह वह जमाना था जब श्रीपरशुराम सिंह परशुराम दलके नेतृत्वसे वञ्चित हो रहे थे। बादको वे झरिया चले गये जहांसे डाक्टर नरेन्द्रप्रसाद झा नामके उनके साथी उन्हें धौरी बुला लाये। उसी रातको मई १९४३ में पुलिसने गांवपर छापा मारा और दुक्खन चमारके घर इनको पकड़ लिया।

परशुराम दलकी ताकत थी श्रीमहेन्द्र गोपमें; और जब अपनी बनाई राहसे ही

आगे बढ़नेकी हिम्मत परशुराम बाबू, नरसिंह बाबू और राघवेन्द्र बाबू वगैरह नहीं दिखला सके तब श्रीमहेन्द्र गोप उस राहपर आगे बढ़े और नेता बन गये। श्रीमहेन्द्र गोप बदनाम आदमी थे—अनपढ़ और उजड्ड। अगस्त १९४२ में ११० दफाके शिकार होकर आप जेलमें बन्द थे और उसी महीनेमें जमानतपर रिहा हुये थे। रिहाईके मौकेपर श्रीबलभद्रनारायण सिंह मोख्तारकी मौजूदगीमें बांका और अमरपुरके दारोगा श्रीनसीरुलहक और हरिहर सिंहने उनसे कहा कि कांग्रेसके नामपर इलाके भरमें चोरी डकैती करो; जबतक पुलिस जीती जागती है कोई तुम्हारा बाल बांका न कर सकेगा। पर छूटते ही अपने जमानतदारों और अपने मोख्तारको बखेड़ेमें डाल आप फिरन्ट हो गये और सीधे परशुराम दलमें जा मिले। आप साहसी, बली और फुर्तीले थे। इसलिये तोड़-फोड़ और फूंक-फांकमें आपने काफी नाम कमाया। जब बदला लेनेकी नीति अपनायी गयी तब तो महेन्द्रगोप बेजोड़ हो गये। जिसको बताया गया उसको बेखटक लूटा, निर्दय होकर पीटा वा बेरहमीसे जान ले ली। सबोंने उनकी तारीफ की। फिर तो परशुराम दलके भीतर ही उनका एक गिरोह तैयार हो गया जिसमें लालोसाही, जागोसाहो, श्रीगोप, श्रीधर, प्रद्युम्न और दयानाथ जैसे लोग शामिल हो गये। अब कार्यकर्त्ता घबड़ाये और गोपके खिलाफ परचा निकाला। उनके परचेका गोपपर क्या असर पड़ता? सत्तर चूहे खाके बिल्ली चली हजको। वैसे बिल्लीकी बात बिल्ला क्या सुनता? वह और स्वतंत्र हो गये और गोपदलके नायक बने।

परशुराम बाबूकी संगठन शक्तिमें न दृढ़ता थी और न दूरदर्शिता, और महेन्द्र गोपमें तो इसका नितान्त अभाव था। इसलिये जो इनके साथ आये अपने मनसे आये और अपना लाभ देखकर। जब अलग होनेमें लाभ देखा तब बहुतसे अलग हो गये और कितने दल बन गये। किसीके नेता श्रीधर, किसीके प्रद्युम्न और किसीके दयानाथ आदि। पर गोपका नाम बजा हुआ था। इसलिये जहां आग लगती, डकैती वा हत्या होती श्रीमहेन्द्र गोप ही जवाबदेह ठहराये जाते क्योंकि इनका दल तीनों काम करता।

गोप दलमें संथालियों, गरीब ग्वालों, गरीब घटवाल राजपूतों और कानुओंकी भरमार थी। इसलिये गोपदल जिस घरको लूटता उस घरकी हाड़ी खपरी और चटाई गुदड़ी तक न छोड़ता। उसकी आंखमें सबकी कीमत थी। दल भुक्खड़ोंका था। इसलिये भोजनपर टूट पड़ता और भोजन चाहिये था फौजियों

जैसा—मास, घी, शराब······। पर गोपदलने कभी साधारण घरको नहीं लूटा। उसकी लूटके शिकार बने खास-खास लोग ही जो अपनी सरकार परस्तीके लिये बदनाम थे या जो भेदिया समझे गये थे। श्रीमहेन्द्र गोपका अपना खर्च ज्यादा न था और जितना था उससे अधिक ही उन्हें कटोरिया थानेके रायबहादुर ब्रजकुमार सिंह घटवालसे मिल जाता था।

जितना पता लगा है उनने तेईस खून किये पर कुछ ही खून हैं जिनको उनने अपनी या अपने दलकी रक्षाके लिये किया। अधिकांश खूनोंकी जवाब-देही जिला भरके सशस्त्र क्रान्तिकारियोंके सर है। इन लोगोंने उन्हें दूर-दूर बोलाया और उनसे ऐसोंके खून करवाये जिनसे कोई मतलब न था। उनने अपने दलके मदुली गोपको मारा क्योंकि वह मिलिटरीसे मिल गया था। डहुआघाटके बुन्दू महतो, जमदाहाके दीनाराय और नारायणचकके नारायण मिश्रको मारा क्योंकि उनपर भेदिया होनेका शक था और उनकी मौजूदगीसे उनको खतरा था। पर बिहपुर इलाकेमें गेंदासिंह वगैरह चार व्यक्तियोंके जो खून हुये उसमें उनका कोई स्वार्थ न था उन व्यक्तियोंके खूनसे उस इलाकेकी इच्छा पूरी होती थी जहांसे श्रीमहेन्द्र गोपको डाकू और देशद्रोही करार देते हुए एक परचा निकला था। श्रीपरशुराम सिंहके सम्बन्धी सरैयाके सहदेव सिंहको श्रीमहेन्द्र गोपने लाखोसाही और जागोसाहीकी सहायतासे मारा पर उससे उनको कुछ लेना देना न था। और सहदेव सिंहकी हत्याके मामलेमें ही श्रीमहेन्द्र गोप और दोनो साही भाई फांसी लटकाये गये। उसी मामलेमें श्रीपरशुरामको दामुल हुआ। हालांकि वे उस समय मोटंगामें कार्यकर्त्ताओंकी सबडिविजनल मीटिङ्गमें भाग ले रहे थे।

श्रीमहेन्द्र गोप डाकू थे। पर डकैती छोड़कर क्रान्तिकारी बनने बसमत्ता श्रीपरशुरामके यहां आये थे। वहां बांका सबडिविजन भरके क्या नये क्या पुराने सभी कार्यकर्त्ता मौजूद थे। उनने श्रीमहेन्द्रसे कहा—"घरके भेदियोंसे अन्दोलनकी रक्षा करो!" "सरकारसे लोहा लो।" उस सीधे-सादे बहादुरने अपनी समझ और संस्कारके अनुसार उनके आदेशका अक्षरशः पालन किया। कितनी बार गोपदलकी भिड़न्त मिलिटरीसे हुई। झरना पहाड़पर जिस समय गोपदल खा रहा था उसे मिलिटरीने घेर लिया। दल फौरन पहाड़में घुसकर मिलिटरीका खात्मा करने लगा। दो मिनिट तक दोनों ओर गोली चलती रही फिर धीरे-धीरे फौजको अंगूठा दिखाता हुआ दल गायब हो गया। फौजियोंको

पीछा करनेकी हिम्मत नहीं हुई जबकी सारे इलाकेमें फौजियोंका जाल बिछा था। उनके पास तेजसे तेज घोड़े थे; हालसे हालके हथियार थे और बेतारसे खबर करनेका यंत्र था। उसी तरह दुर्जय पहाड़पर भिड़न्त हुई। पर इस बार दलको काफी नुकसान पहुँचा। श्रीगोप मारा गया और कुछ साथी पकड़ लिये गये। श्रीगोपका साधा हुआ कुत्ता था जो खतरेसे उसको अगाह कर दिया करता। वह पकड़ा गया। फौजियोंने दो दिन उस कुत्तेको श्रीगोपकी लाशसे बांध रखा ताकि भूख-प्यासके मारे वह लाशपर कौर लगाये। पर वफादार मालिककी लाशकी हिफाजत ही करता रहा।

श्रीमहेन्द्र गोपमें मौकेपर जगनेवाली अक्ल भी थी। १९४४ में वह सियाराम-दलके साथ ठहरे हुए थे। एकाएक रन्नूचकमें मिलिटरीने सबोंको घेर लिया। रबरकी नली लगाकर सियाराम बाबू मटरके भूसेमें छिप गये और इण्डियन नेशनल कांग्रेसके डायरेक्टर श्रीरामनारायण चौधरी सरसोंके खेतमें दबक गये और महेद्र गोप मिलिटरीकी आंखोंमें धूल झोंकते हुए सीधे सामनेसे निकल गये। मटरके भूसेकी टालपर फांदकर बलूची दाब-दूब कर खोद-खाद कर भूसोंकी जांच कर ही रहे थे कि जोरकी सीटी हुई। सभी फौजी दौड़ पड़े जहां सरसोंके पौधोंके बीच दबके हुए श्रीरामनारायण चौधरी पकड़े गये थे। इस तरह सियाराम बाबू बाल-बाल बचे।

श्रीमहेन्द्र गोपके सद्गुणोंको बुरा संस्कार मिला था और इधर जो संगति मिली थी सो भी अनुकूल न थी। इसको दृष्टिमें रखते हुए मानना पड़ेगा कि उनमें राजनीतिक-चेतना आ गयी थी और वे शहादतकी राहपर थे। जिन श्रीजगदम्बा सिंहके हस्ताक्षरसे उनके खिलाफ परचे बांका सब-डिविजन भरमें बँट रहे थे उनसे एकाएक निर्जन स्थानमें उनकी भेंट हो गई। श्रीजगदम्बा तो डर रहे थे कि अब मर गया तब गया। पर महेन्द्रजी उनके पास आये और बोले—आप लोग मुझको नाहक बदनाम करते फिर रहे हैं। मैं तो आप लोगोंका ही काम कर रहा हूँ। हां, श्रीधर, प्रद्युम्न और दयानाथ वगैरह जो सो कर बैठते हैं। आप लोग जांच कीजिये, फिर मेरा कान पकड़िये। नारायणपुरके बाबू कीर्तिनारायण सिंहका वक्तव्य है कि जब मैं जेलसे निकला तब शाहकुण्डके श्रीठाकुरप्रसाद सिंहने मुझको ४०) रु० दिये और कहा कि महेन्द्र गोपने किसी राजनीतिक पीड़ितकी मदद्में इसे खर्च करनेको कहा है। मैंने रुपये नहीं

लिये; कहा—मैं चोरी डकैतीके रुपये नहीं लेता। मुझको सियाराम बाबूने दो-दो तीन-तीन सौ रुपये दिये सो तो मैंने लिया नहीं; फिर उसके रुपये क्यों लूं? कुछ दिनके बाद ठाकुर बाबू फिर मिले और बोले कि गोप कहता है कि अगर कीर्ति बाबू कह दें कि मैंने पाप किया है तो मैं आत्महत्या कर लूँ। मैं उससे मिलनेको तैयार हुआ पर मिल नहीं सका। राय मांगनेपर कहला भेजा कि हाजिर हो जावो और नहीं हो सको तब कहीं दूर जाकर छिप रहो।

महेन्द्र गोपके पकड़ाते ही उस दलके नामी-गिरामी जिनने अलग-अलग अपनी टोलियां बना ली थीं पकड़े जाने लगे। उनसे जनता ऊब गई थी। वे डाका डालते थे और रुपयोंसे अपना और कुलटाओंका घर भरते थे। बलात्कार भी किया करते थे। उनके भीषण बलात्कारके परिणाम-स्वरूप एक बारह तेरह सालकी लड़की तड़प-तड़पकर मर गई। ये सब समाजमें मौजूद हैं। केवल महेन्द्र गोप नहीं हैं जो कम-से-कम बलात्कारके दोषसे बिलकुल मुक्त थे।

सियाराम दल अप्रिलके आते-न-आते खूब मजबूत हो गया। अपने जवानोंको शस्त्रास्त्रकी शिक्षा देकर इसने पूर्णिया और मुंगेरके सशस्त्र-क्रान्तिकारियोंको भी शिक्षित करनेका प्रोग्राम बनाया। फिर इसकी शोहरत फैल गई और नेपालसे जयप्रकाश बाबूकी मांग आई—एक बहादुर सैनिक भेजो। इधर श्रीपार्थ ब्रह्मचारी और सरदार नित्यानन्दमें मतभेद हो गया था सो दूर हो गया और सरदारजी नेपाल कैम्पमें ट्रेनिंग देने भेज दिये गये।

एक तो सियारामदल फरारोंकी जमात और दूसरे उसकी सशस्त्र क्रान्तिकी तैयारी! उसको किसी-न-किसी तरह पकड़नेकी सरकार सरतोड़ कोशिश करने लगी। सैकड़ों पुलिस और मिलिटरीवाले बिहपुर इलाकेका कोना-कोना छानने लगे। अफवाह सुनते कि वहां सियारामदलका कोई-न-कोई है तब फौरन गांव घेर लेते। कभी-कभी ऊपर हवाई जहाज मड़राता रहता और नीचे घर-घरकी तलाशी होती। स्त्रियोंका सिन्दूर भी देखा जाता। पर गांववालोंको सियाराम बाबूसे ऐसी सहानुभूति थी कि वे उन्हें जैसे-न-तैसे बचा ही लेते। फिर सरकारने अनगिनत भेदिये बहाल कर रखे थे जिनके शिकञ्जेमें आ जानेकी आशंका पद-पदपर होती रहती थी। यही कारण था कि सियाराम-दल जिसे भेदिया समझता उसको भीमनगर भेजकर ही छोड़ता। उसने जितनोंको भेदिया समझकर मारा है उनकी तादाद थोड़ी नहीं है। अण्डकोश फोड़कर कितने भीम

नगर भेजे गये, घुटने भर पानीमें दमघोट कर कितनोंको वहां पहुँचाया गया और जो भाग्यशाली थे लाठीकी कैंचीके शिकार बनकर भीमनगर जा बिराजे। पर हां! वहां का टिकट चटपट न कटता था। अकसरहां जांच-पड़ताल करके और भेदियोंको एक दो बार चेता करके वहां जानेका आदेश मिलता था।

२८ अगस्त १९४३ को सियाराम-दल अपनी सारी शक्ति समेट सोनबरसा पुलिस चौकीके हथियार लूटने नावसे चला। सियाराम बाबू, श्रीपार्थ ब्रह्मचारी, सरदार नित्यानन्द, श्रीगुलाली उर्फ गुलाबचन्द्र और श्रीविन्ध्येश्वरी सिंह उर्फ दुर्गादास सभी मिलाकर सब साठ-पैंसठ जवान थे। पहुँचना था रात रहते पर पहुँचे पौ फटते-फटते। सिपाही सावधान होगये और जब उनने देखा कि ..ग मकान घेर रहे हैं वे सब थानेमें घुसे और पैंतरेमें खड़े होगये। मालूम नहीं क्या सोच कर पांच आजाद थानेके शस्त्रागारमें जा घुसे। लड्डू सिंह और फौदीदास बिहपुर और अर्जुन सिंह नाथनगर खाली हाथ थे; तुरत मार डाले गये और दो निकल भागे। फिर दोनों ओरसे धुआंधार गोलियां चलने लगीं। सरदार नित्यानन्दने देखा, आजाद सैनिकोंके पैर उखड़ गये हैं; अगर प्राणका मोह न छोड़ा गया तब सब-के-सब मारे जायँगे। वे वीरासनसे बैठ गये और इस ढंगसे गोलियां चलाने लगे कि सब सिपाहियोंको उलझा लिया। फिर उनने बार-बार साथियोंको चौकीपर धावा करनेका आदेश दिया श्रीविन्ध्येश्वरी सिंह कहते हैं कि "हमारी हिम्मत टूट गई थी; हम भागे; गुलाली भागे और सभी भागे।" इस धावेमें कुल आठ शहीद हुए। तीन शुरूमें, फिर सरदार और श्रीकमलेश्वरी सिंह तेलधी, श्री रामावतार झा विसपुरिया, निर्मल झा खरीक और नाविक खुसरू मांझी।

इस दुर्घटनाके बाद दमनने विकराल रूप धारण किया। ३१ मील लम्बे और १७ मील चौड़े थानेमें २३ मिलिटरी कैम्प खोले गये और पुलिसके अतिरिक्त प्रत्येक कैम्पमें दो दर्जन फौजी रख दिये गये। लूट-पाट होने लगी। फरारोंके घर उजाड़ दिये गये, उनपर पहरा बैठा दिया गया और उनके रिश्तेदार गिरफ्तार कर लिये गये।

जयरामपुर निवासी श्रीचामा शर्माके डेढ़ वर्षके दुधमुंहे बच्चेको पकड़ लिया गया और एक सप्ताह मिलिटरी कैम्पमें रखा गया। बार-बार कहा जाता कि मां कैम्पमें आवे और बच्चेको दूध पिला जावे। पुत्र-स्नेहसे विकल होकर मां कैम्प

जानके लिये निकल पड़ती पर लोग पुलिस और फौजियोंकी पाशविकताकी याद दिलाकर उसे रोक लेते। फिर जब लड़केकी जानपर आ बनी तब वह लौटा दिया गया। पुलिस दल तो इतना मदान्ध होगया कि शक होते ही गोली दाग देता। इसी मदान्धतामें उसने अठगाँवाके विरंचो मण्डलको सियाराम बाबूके धोखेमें मार डाला।

इन कैम्पोंकी कठोरता १९४५के जुलाई तक कायम रही। इसके बाद बाबू श्रीकृष्ण सिंहके (वर्तमान प्रधान मंत्री, बिहार सरकार) प्रयत्नसे कुछ जगहोंको छोड़कर बाकी कैम्प तोड़ दिये गये। पर पुलिसके रुखमें परिवर्तन नहीं हुआ। ९ जुलाई '४५ को घटना है। मौजमाबादमें श्रीशुकदेव चौधरीके यहां भोज था। कुटुम्ब अभ्यागत आये हुये थे। एकाएक पुलिस शामको पहुँची और फरार श्रीनागेश्वर सेनको जो बिलकुल निहत्था थे भागते जान उसने उनके सीनेमें दो गोलियां मारी। खैरियत हुई कि गोलियां दोनों ओर सीनेसे जरा हटकर लगीं और उनका प्राण बच गया। फिर पुलिसने श्रीशुकदेव चौधरी और उनके कुटुम्ब अभ्यागतोंको बड़ा तंग किया। और इस समय सरकार शिमला शैलपर देशके नेताओंसे समझौतेकी बात-चीत कर रही थी!

सियारामदलके सब पकड़े गये पर उसके स्तम्भ श्रीसियाराम सिंह, श्रीपार्थ ब्रह्मचारी, श्रीसूर्यनारायण झा, श्रीचन्द्रदेव शर्मा और श्रीअम्बिकासिंह व्यास सरकारकी सारी ताकतको अंगूठा दिखाते ही रहे और कांग्रेस मंत्रीमंडल द्वारा मुक्त हो जानेपर ही जनताके बीच प्रकट हुये।

पूर्णिया

पूर्णियाके सशस्त्र क्रान्तिकारी दलको कुछ लोगोंको सियारामदलसे ट्रेनिङ्ग मिली और कुछ हथियार भी मिले। उनने अपने साथियोंको घुड़सवारी और शूटिङ्ग सिखाई। इन क्रान्तिकारियोंने २७ अप्रैल १९४३ को मिलिटरीसे दो राइफल छीने और पोशाक भी फिर सब तरहसे लैस होकर ये नौजवान देहातोंमें निर्भीक होकर घूमने लगे।

सबसे पहले अव्वल दर्जेका डकैत अमीन मियां जो सरकारका भेदिया बन गया था, इनलोगोंके हाथ छुरेसे मारा गया। फिर मकदुम बक्स और दिलावर दफादार वगैरहकी हत्या हुई। फिर भवानीपुर राजकचहरी लूटी गई और खजुरीके एक साहुकारके यहां डाका पड़ा; सम्पत्ति लूट ली गई और एक बूढ़ा और एक नौजवान जानसे मार डाला गया। समेली, सलेमपुर आदि
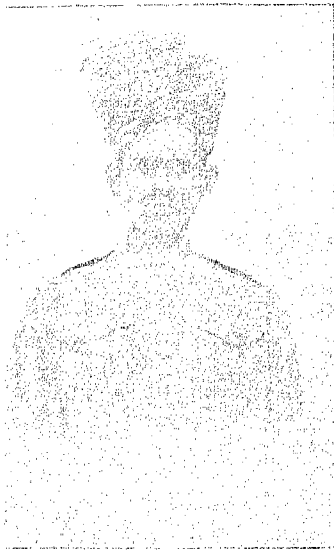
शहीद कैलाश पति सिंह,
शाहाबाद
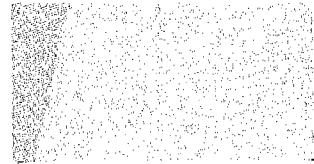
श्रीरामाधार सिंह, विक्रम (पटना)
क्रूरताके शिकार।
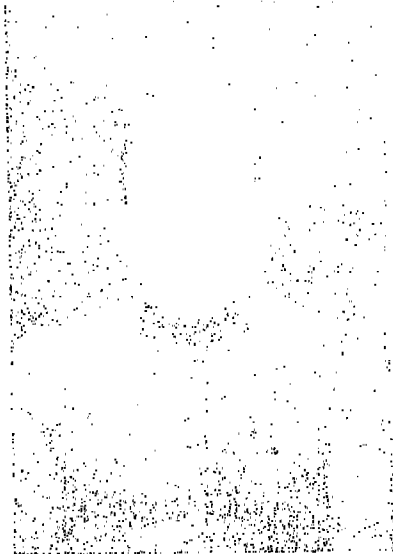
...के नाम से ब्रिटिश नौकर शाही थर्रातीथी।
श्रीपरशुराम सिंह, भागलपुर
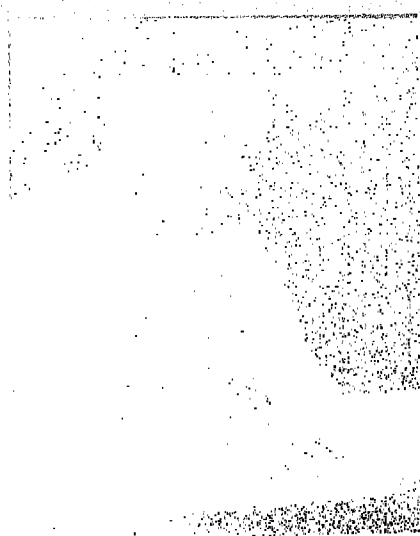
वीर सैनिक।
श्रीप्रफुल्लचन्द्र पट्टनायक, संथालपरगना

दूधपीते बच्चेको जेलकी हवा खिलायी गयी !

फक्कड़ नाना शर्मा, भागलपुरका शिशु अपनी माताकी गोदमें

जिन्हे फांसीकी सजा हुई थी !

श्रीलाला सिंह,
महनार (मुजफ्फरपुर)
दरभंगा जिला-जेलके सेलमें
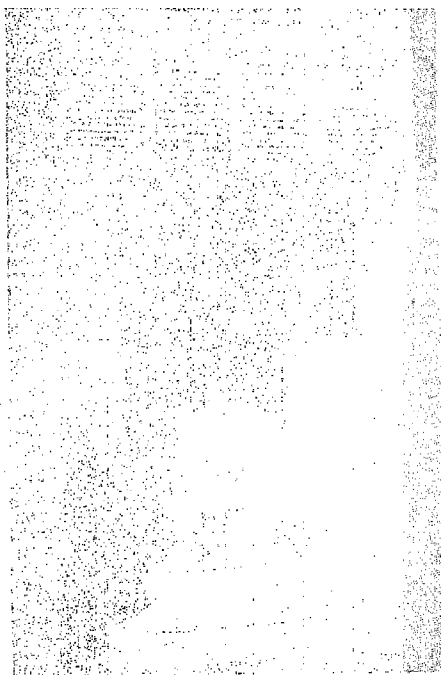
श्रीयमुना प्रसाद,
फुलपास (दरभंगा)
दरभंगा जिला-जेलके सेलमें
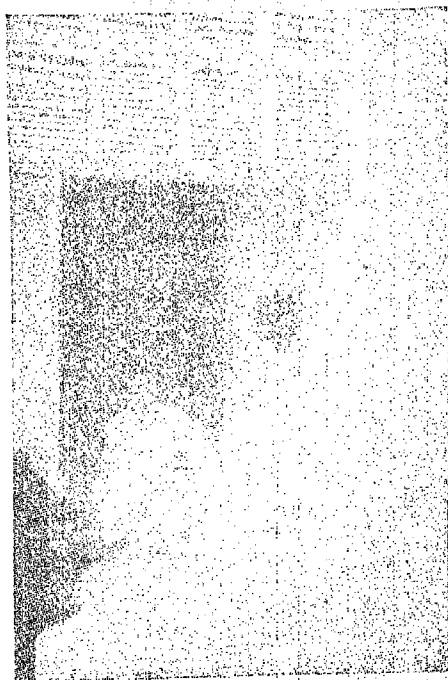
जिन्हें फांसीकी सजा हुई थी !

श्रीशारदानन्द झा,
सुमरुपुर (दरभंगा)
दरभंगा जिला-जेल के सेलमें

पूर्णिया

गांवोंके कितने लोगोंकी नाक काट ली गई। धर्मपुरमें तो कितने डाके पड़े और कितनी जानें गईं। तब श्रीबासुदेव सिंहकी आंख खुली और उनने नदल-बल इनलोगोंका साथ छोड़ दिया। बासुदेव बाबूके हटनेसे दल और उच्छृङ्खल हो गया।

अब इसके सदस्य सरकारी अफसरोंके भेषमें रातको निकलते, गांववालोंसे रुपये ऐंठते। जो नहीं देता सो पानीमें खड़ा रखा जाता, पीटा जाता और गर्म लोहेसे दाग दिया जाता। जो इनलोगोंकी आलोचना करता या किसी केसमें इनके खिलाफ गवाह बनता वह बड़ी बेरहमीसे इनके छुरेका शिकार बनता। इनलोगोंमेंसे दो भाई श्यामनारायण मल्लिक और हेमनारायण मल्लिक सरकारसे मिल गये। बहुतोंको पकड़वाया और फिर मई १९४५ में श्यामनारायणको धोखेमें हेमनारायणने मार डाला और हेमनारायणको जनताने। अन्तमें दलकी दुर्दशा होगई। कोई हथियार ले उड़ा, कोई धन जेवर और कोई किसीकी स्त्री ही।

संताल परगना

संताल परगनाने शस्त्र-साधना की दुमका सब-डिविजनके लाठी पहाड़ इलाकेमें। लाठी पहाड़के आस-पास संताल, खेतौरी, भूयां और डोम आदि ज्यादा तादादमें रहते हैं जिनकी सहानुभूति अपने शस्त्र-साधकोंसे रही। फौजके आजानेपर जब काफी दमन हुआ और अविचारपूर्वक गोलियां चलीं तब जनताका क्रोध उमड़ा; फारवर्ड ब्लाकके कार्यकर्त्ता आगे बढ़े और श्रीअलखी मांझीके कथनानुसार उनलोगोंने यह मनसूबा किया कि दो हजार सैनिक तैयार हों और दुमकापर हमला करके कचहरीमें आग लगा दें और गारद, खजाना, जेल वगैरहपर कब्जा कर लें।

लोग जुटने लगे और फरवरी १९४३ तक तीन सौ इकट्ठे होगये। सभी लाठी पहाड़की चोटीपर एक मैदानमें तीर-कमान और बन्दूक चलानेकी शिक्षा लेने लगे। अपने खर्चके लिये वे पहाड़ोंसे उतरते और आस-पासकी जनतासे चावल वगैरह मांग ले जाते। जब उनका काम बढ़ा तब पुलिसके भेदिये लोकनाथ मांझी और काली दरबेका ध्यान उस ओर गया और उनने अपने अफसरोंको खबर दी। १७ फरवरी '४३ को पुलिस लाठी पहाड़ पहुँची और जटाबास्कीको अपने साथियोंको होशियार करनेके लिये ऊपर चढ़ते देख उसने गोली मारी। जटा घायल होगये और कुछ देरके बाद शहीद। फिर पुलिस ऊपर चढ़ी थी कि उनपर ढेले और तीर बरसने लगे। उसने काफी गोलियां चलाई पर ढेले और तीरोंकी वर्षा बन्द न हुई। पुलिसके पैर उखड़ गये और वह भागी। फिर तो "गान्धीजीकी जय"

"वन्दे मातरम्" "जाने न पावे" का हर्षनाद करते हुये वे पुलिसपर टूट पड़े और दो एक बन्दूकें भी छीन लीं।

इस घटनाके बाद सरकार अपनी सारी दमन शक्ति लेकर उस इलाकेमें जम गई और लाठी-पहाड़-काण्डके नायक श्रीलाल हेम्ब्रम, पगान मरण्डी, अलखी मांझी, जेठा मांझी, दरबारी मड़ैया, भादो हेम्ब्रम आदिके पीछे पड़ी। पर लाल हेम्ब्रम और पगान मरण्डी कभी इसके हाथ नहीं लगे और फिर दलका संगठन करने लगे। उनके साथी फारवर्ड ब्लाकके सभी मेम्बरोंसे जो लाल कुरता पहनते और जिनकी संख्या ढाई हजारके लगभग थी एक-एक रुपयाका जजिया वसूला गया और उनके लाल कुरते छीन लिये गये। उन लोगोंने सभी कष्ट सहे पर श्रीलाल हेम्ब्रम और पगान मरण्डीका पता न लगने दिया। इन दोनोंने गान्धीजीके बयान देनेके बाद आत्म-समर्पण किया।

मुजफ्फरपुर जिलेमें आजाद दस्तेका संगठन हुआ हाजीपुरमें १९४३ के मार्च महीनेमें। दस्ताके संचालक थे श्रीअक्षयवट राय, विन्ध्यवासिनी सिंह, रामचन्द्र शर्मा और अमीर राय। इस दस्तेके कुछ लोगोंको ट्रेनिङ्ग मिली श्रीगोविन्दपुर सलरामें जो नेपालके सप्तरी इलाकेमें है और जिसका मुख्य स्थान हनुमान नगर है। इस दलने पहले हथियार इकट्ठा किया और बन्दूक पिस्तौलके अलावा एक टामीगन तकका संग्रह कर लिया। फिर इसने जुलाईमें बिदुपुर रेलवे स्टेशन और डाकघर और जनदाहा डाकघर लूटे और जलाये। सरकार चौकन्नी हो गयी और धड़पकड़ शुरू हुआ। शहीद विन्ध्यवासिनी बाबू दो बार गिरफ्तार हुए पर पुलिसको घायल करके साथियोंने उन्हें छुड़ा लिया। श्रीरामचन्द्र शर्मा तीन-तीनबार पकड़े गये.पर तीनोंबार सबको चकित करते हुए भाग निकले। बादको चकसेरके हितनारायण सिंहने श्रीअक्षयवट रायको पकड़वा दिया जिसलिये उसका घर जला दिया। फिर कुछ भेदियोंको पीटा गया।

आगे चलकर दलके कितने सीतामढ़ीके पंथपाकड़ और माधोडीह गांवमें रहने लगे। १९४४ की घटना है। श्रीअमीर राय, सीताराम राय और श्याम नारायणने पंथपाकड़के पास डाकका थैला लूटा और जनतासे खदेड़े जाकर माधोडीह भाग आये। वहांके कुछ लोगोंने इनको पकड़वा दिया। फिर इनपर काफी मार पड़ी। आजाद दस्तावाले इस मारको भूल न सके और अप्रिलमें श्रीअंबिकाप्रसाद वर्माके नेतृत्वमें एक रातको गये और माधोडीहके दो

पकड़वानेवालोंकी नाक काटली और एकका कान कतर लिया।

पीछे दस्तेकेप्राण श्रीविन्ध्यवासिनी सिंह जो १९४२ में देसरी हाइ स्कूलके मास्टर थे पकड़े गये और मई १९४५ में जेलमें ही शहीद हो गये।

दरभंगेमें भी आजाद दस्ता संगठित हुआ १९४३ के मार्चमें। इसके संचालक बनर झूला कैम्प, नेपालके सीखे हुये थे। १९४३ का समय हथियारके संग्रह और दस्ताके संगठनमें बीता। पर १९४४ से दस्ता अपनी कर्मठता दिखाने लगा। श्रीसूर्यनारायण सिंह आगये थे और गुलाली सोनार, देवनारायण गुड़मैता जो श्रीवशिष्ठ नारायणको लेकर दरभंगा जिला जेल फांद निकले थे और अन्यान्य युवकोंसे सहयोग ले रहे थे। १९४४ के मार्चसे स्टेशन जलाये जाने लगे। मोहिउद्दीन नगर, किसनपुर और झंझारपुर स्टेशन एक-एक करके जले। फिर चकमहेसी, डरसूर, पटोरी और रतिकर आदि स्थानोंसे बन्दूकें लूट ली गईं। डरसूरमें तो हजारों रुपयेके माल सामने थे पर महंथजीका कहना है कि उन्हें छुआ तक नहीं गया और ऐसा ही चकमहेसीके मुसलमान डाक्टरका भी बयान है।

दरभंगा

इधर ऐसे-ऐसे काम हो रहे थे और उधर आजाद सैनिकोंकी ट्रेनिङ्ग भी चल रही थी। कुछ सैनिकोंको जितना हो रहा था उतनेसे संतोष नहीं था। वे कुछ ठोस काम करना चाहते थे। सो ५ सितम्बर १९४४ को जब बाबू उदित नारायण झा दारोगा फरार श्रीरामलोचन सिंहका सामान जब्त करके अन्दामाके बाहर निकले ही थे कि शामको गोलीके शिकार बनाये गये।

जब उदित बाबूके मारे जानेकी खबर बाबू रामनारायण सिंह पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्टको मिली तब वे क्रोधान्ध हो गये। फलस्वरूप दूसरे दिन सबेरे चार ट्रकपर लदकर हथियारबन्द सिपाही आतंकित अन्दामामें पहुँचे। गांव तो रातभरमें प्रायः खाली हो गया था। वे ही रह गये थे जिनमें राजनीतिकी बू-बास न थी। फिर भी जो सामने आया सो पीटा जाने लगा। बाबू सरयू सिंहके सरसे लहूका फव्वारा फूट निकला, बाबू रामवृक्ष सिंहके हाथमें संगीन भोंक दिये गये और एक साधु बालकृष्ण दासको तो इतना पीटा गया कि कराह-कराहकर दो दिनोंके बाद वे मर गये। फिर तीन घरोंकी बूढ़ी स्त्रियोंको घसीटकर बाहर निकाल दिया गया और उन घरोंमें आग लगा दीगई और उनकी दीवारें पस्त कर दी गईं। सारा अन्दामा दो महीने तक ५० पुलिसका अखाड़ा बना रहा। स्त्रियोंकी इज्जतपर

भी कई हमले हुये; और जब दो मासके बाद गांववाले आये तब देखा कि किसीके घरमें सुई जैसी चीज भी नहीं रह गई है।

इस दमनके परिणाम-स्वरूप आजाद-दल भी तितर-बितर हो गया और श्रीसूर्यनारायण सिंह और गुड़गेता आदि पकड़ लिये गये।

पटनाके आजाद-दस्तेकी कहानी केवल एक बलिदानकी कहानी है—शहीद अनिरुद्ध कुमार सिन्हाकी। शहीद अनिरुद्ध कुमार पहले जब पिस्तौल वगैरहकी पटना बात सुनते तब उसे फजूल कहकर टाल देते। पर गान्वके अन्तमें श्रीयुगलकिशोरप्रसाद सिन्हाके कथनानुसार उनका सम्पर्क कुछ समाज-वादियोंसे हुआ; बादको वे नेपाल गये जहां जयप्रकाश बाबूका ऐसा प्रभाव पड़ा कि सशस्त्र-क्रान्तिवादी होकर लौटे। पर नेपाल जाते-आते जो कठिनाई झेलनी पड़ी उससे उनका सुकुमार शरीर ढीला पड़ गया और उसपर स्टूडेन्टस कौंसिलका गुरुतर भार। वे शय्याशायी होकर अस्पताल पहुँचे और वहां भी जयप्रकाश बाबू आजाद-दस्ता और स्टूडेन्टस कौंसिलकी चिन्ता करते-करते १९४३के अन्तमें शहीद होगये।

बिहारके सशस्त्र-क्रान्तिकारियोंकी कार्रवाइयोंका जिनने आजाद-दस्तेके प्लेट-फार्मसे भी काम किया यही निचोड़ है। जयप्रकाश बाबूका आजाद-दस्ता जन-क्रान्तिके लक्ष्यको सामने रखकर संगठित हुआ था पर कोई भी दल अपनी कार्रवाइयोंसे जन-क्रान्तिकी भावनाको भी पुष्ट न कर सका। इसके कई कारण थे; (१) उस समय जब कि जयप्रकाश बाबूने बिहारको आजाद-दस्तेका प्रोग्राम दिया बिहार दमनकी प्रतिक्रियासे पीड़ित था। आन्दोलनकी उठती भावना अत्यन्त मन्द पड़ गयी थी। (२) निहत्थोंको सशस्त्र-क्रान्तिकारी बनाना था और ऐसी जनताके बीच जिसके परदादे तकने हथियार नहीं उठाया था; (३) फिर भी इन निहत्थोंमें जो मिलता उसीको हाथमें लेकर उठनेका जोश पैदा हो जाता अगर ब्रिटिश सरकार लगातार हारती जाती; पर हुआ यह कि इधर अगस्त आन्दोलन दबा और उधर अंगरेज मोरचा-पर-मोरचा जीतते भी गये और (४) जिन लोगोंने सशस्त्र-क्रान्तिकारियोंका जामा पहना था उनमें अधिकांश फरार थे और पुलिस या मिलिटरीको अपनेसे दूर रखनेके लिये उनने हथियार उठाया था। इसलिये जयप्रकाश बाबूकी विचारधारा पाकर भी वे सब क्रान्तिकारी नहीं बन सके। पर उन्हें आतंकवादी भी नहीं कहा जा सकता। उनमेंसे किसीने किसी

जुल्मी अफसरको नहीं मारा जिसे सुनकर दमन-पीड़ित जनता सन्तोषकी सांस लेवे। उनमेंसे अधिकांश तो पुलिससे ज्यादा जनताके आतंकके कारण बने।

सभी क्रान्तिकारियोमें दो ही ऐसे थे जिनको जन-क्रान्तिकी रीति-नीतिका ज्ञान हो सकता था, बाबू सियाराम सिंह और बाबू सूर्यनारायण सिंह। पर दोनोंमें विवाद ही चलता रहा और वह इतना कटु होगया कि श्रीअरुणा आसफअली बीचमें पड़ीं; परेशान होगईं पर दोनोंको मिला न सकीं। पर किसी व्यक्तिका कोई दोष न था। दोष था परिस्थितिका जिसको सशस्त्र-क्रान्तिके सबसे बड़े साधक श्रीसुभासचन्द्र बोसने समझा और इसीसे निहत्थोंके बीच उसका प्रचार न करके उनने सामयिक हरबे-हथियारसे लैस सैनिकोंके बीचमें उसका प्रचार किया जिसके लिये उनने देश छोड़ा, संकट झेले और सबोंको अचंभित करते हुए बर्माके मोरचे पर अपने आजाद हिन्द फौजके बीच पहुँचे। आज उनकी लगायी आग फौजमें धधक रही है। और उनने ही बर्मा छोड़ते हुये कैप्टेन शाहनवाज वगैरहसे कहा कि हिन्दुस्तान जाकर हरबे-हथियारको भूल जाना; गान्धीजीकी बात सुनना और उनके आदेशपर चलना।

सत्याग्रह समिति

कलकत्तेसे समझौतेकी बात लेकर श्रीअन्नदाप्रसाद चौधरी और श्रीसुचेता कृपलानी बम्बई पहुँचे। वहां श्री आर० दिवाकर मिले जिनने उन दोनोंकी बात पसन्द की। श्रीदिवाकर अब तक संयुक्त मोरचेके पक्षमें थे और श्रीपटवर्धन और लोहियाके नजदीक थे। उनका प्रान्त कर्णाटक अगस्त आन्दोलनमें जो जाग्रत हुआ सो अबतक मैदानमें डटा था और सरकारको परेशानकर रहा था। उनने अपने सहकारियोंसे विचार करके तय किया था कि वर्तमान परिस्थितिमें हमें तोड़-फोड़के प्रोग्रामको छोड़ देना चाहिए। तीनोंकी राय हुई कि श्रीअच्युत पटवर्धनसे मिला जाय। मिलनेकी कोशिश की गई पर मुलाकात न हो सकी।

अब तीनों और-और लोगोंसे सलाह लेने लगे जिनमें मद्रासके श्री जी० रामचन्द्रन प्रमुख थे। सबोंने कहा कि पटवर्धन दलकी ओरसे जो कहा जा रहा है और किया जा रहा उसको देखते हुए मानना कठिन है कि सर्वश्री पटवर्धन, लोहिया और अरुणा अपनी नीति बदलेंगे। फिर परिस्थिति बदल गई है, आक्रमणका नहीं बल्कि संगठनका मौका आ गया है; इसलिये अपनी-अपनी विचारधाराको आगे रखकर लंबे अरसेके लिये प्रोग्राम बनाना पड़ेगा। हमारी विचारधारा अहिंसाकी है; हमें अपना प्लाटफॉर्म अलग रखना होगा और चूंकि गान्धीजीकी राय, जैसा सुना गया है, नहीं है कि हम कांग्रेसके नामपर अभी काम करें हमें अपने प्लॉट फार्मका दूसरा नाम देना होगा। बस, इसी विचारधाराने २ नवम्बरको बम्बईमें सत्याग्रह समितिकी सृष्टि की। एक तार पाकर लेखक बम्बई गया और बिहारके प्रतिनिधिकी हैसियतसे सत्याग्रह समितिमें शामिल हो गया।

देशभरके अहिंसामार्गी कार्यकर्त्ताओंके बीच सत्याग्रह समिति तुरत लोकप्रिय बन गई। इण्डियन नेशनल कांग्रेसके सेन्ट्रल डायरेक्टरेटके तीन तो इसमें शामिल हुए ही; साथ ही मदरास, बिहार, महाराष्ट्र, संयुक्त प्रान्त और गुजरातके प्रतिनिधि भी आये और अपने-अपने प्रान्तमें समितिकी जड़ मजबूत करनेकी जवाबदेही ली। नन-वायलेन्ट रिवोल्यूशन (Non-Violent Revolution) नामकी एक साप्ताहिक पत्र निकाला गया। जिसकी जवाबदेही श्री जी० रामचन्द्रन और श्री आर० दिवाकरको सौंपी गयी।

पर सत्याग्रह समितिके आलोचक भी थे; बम्बईमें स्वामी आनन्द और बिहारमें श्रीलक्ष्मी नारायण, तात्कालीन मंत्री बिहार चर्खा संघ। स्वामी आनन्द श्रीनरहरि परीखके आदर्शके कायल थे। श्रीनरहरि परीखने सरकारकी कड़ी आलोचना करते हुये एक पुस्तिका लिखी थी जिसमें सत्याग्रहकी मिमांसा की थी। उस पुस्तिकाको उनने खुलेआम बांटा था जिसके फलस्वरूप वह जेलमें डाल दिये गये थे। श्रीपरीखका कहना था कि सत्याग्रहको संगठनकी आवश्यकता नहीं है और न उसको प्रदर्शन वा प्रचारकी जरूरत है। जिसे सत्याग्रह करना है खुलेआम अपनी बातें कहता हुआ सत्याग्रह करेगा और जेल जायगा। उसकी देखा-देखी और भी आगे बढ़ेंगे और जेल यात्री बनेंगे। हो सकता है जेल जानेका तांता टूट भी जाये। पर उसकी परवाह नहीं करनी चाहिये। सत्याग्रह ठहर-ठहरकर और छिटफुट होते-होते ही व्यापक बन जायगा और

मंजिले मकसूदपर पहुँच जायगा। यदि हम संगठन करेंगे तब गुप्त रहना पड़ेगा और गुप्त कामको व्यवस्थित ढंगसे करना कठिन है और वह व्यापक तो हो नहीं सकता। फिर प्रचार कीजियगा तब अखबार परचे वगैरह निकालने पड़ेंगे और गोपनीयता और बढ़ेगी। समय तथा सम्पत्तिका अपव्यय होगा जिससे जनताकी दृष्टिमें सत्याग्रहकी मर्यादा घट जायगी।

स्वामी आनन्दसे लेखककी काफी बातें हुई और अनेक बार। उसने कहा कि साधारण परिस्थितिमें या अत्यन्त जाग्रत समाजमें श्रीपरीखके विचारानुसार सत्याग्रह होगा; पर जहांकी जनतामें सत्याग्रहकी भावना विकसित नहीं हुई है और एकाएक जो ऐसे संकटमें पड़ गया है जिसके टालनेके लिये तत्काल चेष्टा होनी चाहिये उसके बीच श्रीपरीखका सत्याग्रह चल नहीं सकता। परीखजीके अनुसार कांग्रेस चले तो देशको बढ़ा नहीं सके। १९११, '३२ और '४२ के आन्दोलनने जनताकी शिथिलताको भारी धक्के दिये हैं और उन सभी अवसरोंपर संगठन तथा प्रचारकी जरूरत मालूम पड़ी है। परीखजी व्यक्तिगत दृष्टिसे सोच रहे हैं; सामाजिक दृष्टिसे नहीं। सामाजिक दृष्टिसे सोचनेपर मानना पड़ेगा कि या तो कार्यकर्त्तामें ऐसा व्यक्तित्व हो कि उसके जेल जानेसे ही सारे समाजमें हलचल मचता रहे या ऐसे व्यक्तित्वके अभावमें वह संगठन करे और इतने कार्यकर्त्ता जुटा लेवे कि जेल जानेका क्रम न टूटे और हलचल बना रहे। असह्य अत्याचारका इसी तरह सामना किया जा सकता है। एक सचाईपर और गौर करना है। बिहार, मिदनापुर, महाराष्ट्र और कर्णाटकमें जोर जुल्म हो रहा है और सारे भारतवर्षमें न हम सचाई बोल सकते हैं, न लिख सकते हैं। ऐसी परिस्थितिमें सरकारसे अपने आदर्शके अनुसार ही सही न लड़ करके कार्यकर्त्ताओंकी आलोचना करना और सत्याग्रहके आदर्शको सामने रख कर उनको सहयोग न देना कायरता समझी जायगी। फिर स्वामी आनन्दने स्वीकार किया कि अगर वे बिहारमें होते तो लड़ते हुए पाये जाते; यहां वे आन्दोलनसे अलग इसलिये हैं कि गुजरात और महाराष्ट्रकी ऐसी परिस्थिति है कि वे कार्यकर्त्ताओंको संगठित नहीं कर सकते। उनने माना कि जो सत्य तथा अहिंसाके नामपर आन्दोलनमें शामिल नहीं हैं वे अपना चाम बचा रहे हैं। बादको सुना कि उनने सत्याग्रह समितिको रुपये दिये और अपने सहयोगका वचन भी दिया।

यद्यपि बिहारमें सिद्धान्तके नामपर सत्याग्रह समितिको आलोचना होती रही

तथापि उसकी जड़ मजबूत होती गयी। ऐसे कार्यकर्त्ताओंकी कमी न थी जो मानते थे कि जबतक हमारे नेता जेलमें हैं हमें लड़ाई बन्द न करना चाहिये। उनमें जो सशस्त्र-क्रान्तिवादी थे उनका संगठन था और उनकी विचारधारा नौजवानोंको अपनी ओर खींच रही थी। अहिंसा मार्गी ही राजनीतिक अनाथ हो रहे थे। सत्याग्रह समितिने उनको प्लॉटफार्म दिया; उनको बल मिला और वे तनकर चलने लगे। स्टूडेन्ट्स फेडरेशन पुनर्जाग्रत हुआ और श्रीअम्बिका सिंह, श्रीबलराम भगत और राणा शिवलाख छात्रोंका सत्याग्रह समितिके दृष्टिकोणसे संगठन करने लगे। प्रो० भोलाप्रसाद सिंह ऑफिस इञ्चार्ज बने। वे अहिंसात्मक-संगठनके अभावमें राजनीतिक मैदानसे अलगसे हो गये थे। दीघाके बाबू फतहनारायण सिंह भी घर बैठे थे। तनमनसे सत्याग्रह समितिको अपनी सेवा दी और हिसाब-किताब रखनेका गुरुतर भार उठा लिया। श्रीहरिनाथ मिश्र और श्रीयुगलकिशोर प्रसाद सिंहने जिला जिलामें सत्याग्रह समितिकी शाखा स्थापित करनेकी जवाब-देही ली। शाहाबाद, दरभङ्गा, चम्पारण और सारन समितिके ही कार्यक्षेत्र बन गये। पूर्णियाको तो बड़ा लाभ पहुँचा। श्रीवासुदेव सिंह संगठनके अभावमें इण्डियन नेशनल कांग्रेसके साथ थे और कच्चा पक्का निगलना पड़ता था। सत्याग्रह समितिके संगठित होते ही आपने उधर इस्तीफा दिया और इधर सत्याग्रह समितिके डायरेक्टरेटमें शामिल हुये। संताल परगनाने भी समितिको ही माना और मुंगेरसे भी काफी सहयोग मिलने लगा। कमठ जिलाओंमें अगर समिति नहीं जम सकी तो भागलपुर और गयामें। अगर समितिको कुछ समय मिलता तो गयामें ा जड़ जमा लेता। वहां श्रीहरिनाथ मिश्र संगठनका काम कर रहे थे और कामया.ी मिल रही थी।

सत्याग्रह समितिका ऑफिस इस मानेमें तो जरूर गुप्त था कि उसने साइनबोर्ड नहीं लटकाया था और न मकान मालिकको अपना परिचय दे रखा था। उसे इसकी भी चिन्ता थी कि पुलिसको इसका पता न लग जाये। फिर भी वह आफिस इतना खुला रहता था कि अपरिचित कार्यकर्त्ता भी वहां पहुँचते रहते और सत्याग्रह समितिके संचालक वा उनके सहायकोंसे प्रोग्रामके संबन्धमें बातचीत करते और पूरी पूरी खबर ले जाते। संचालक आफिसमें ही खाता पीता और आफिसमें ही सो जाता, सबके साथ, जिनमें आफिसके आदेशवाहकोंका अलावा परिचित अपरिचित स्वयंसेवक भी होते। फिर भी संचालक गुप्त था हालांकि कहीं आने-

जाने और किसीको कोई प्रोग्राम देनेमें उसने रात दिनका कभी कोई ख्याल नहीं किया। उसने जिलाकी बैठकोंमें आत्म-समर्पणकी निन्दा की पर कहा कि पुलिसको देखकर भागना तो कदापि उचित नहीं है। हमें काम करते रहना है; कामकरते हुये पकड़ा जायें। छिपना और इतना कि काम ठीक तरहसे न हो सके उतना ही बड़ा पाप है जितना बड़ा जेल चला जाना ताकि कामकी जवाबदेहीसे कोई बचा रहे। दोनों छिपना ही है; पहला फूसमें छिपना है दूसरा महलमें · अन्तर इतना ही है।

बौभी सत्याग्रह समिति, बिहार शाखाके संचालकको सत्याग्रहके नामसे भय होता था। उसने ऑल इण्डिया सत्याग्रह समितिके सामने सुझाव रखा कि हमें अपने संगठनका कोई दूसरा नाम रखना चाहिये और सत्याग्रहका नाम नहीं लेना चाहिये। मुमकिन है कि गान्धीजीको यह पसन्द नहीं हो जैसे उनको हमारे संगठनके लिये ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीका नाम पसन्द नहीं आया। आखिर हम छिपते तो जरूर हैं। हमारा आदेश-वाहक छिपकर आता जाता है और हमारे पत्रादि छिपे छिपे हमारे ऑफिसोंमें पहुँचते हैं। श्रीसुचेता कृपलानी बोलीं कि स्वामी आनन्दने कहा है कि हम इस नामको रख सकते हैं और वे गान्धीजीकी विचारधाराकी जानकारी रखते हैं; इसलिये घबड़ानेकी जरूरत नहीं है। और श्री जी० रामचन्द्रने वायकम सत्याग्रहकी याद दिलायी। त्रावणकोर रियासतके वायकम गांवमें हरिजनोंको शिवालय होकर जानेवाली सड़कपर चलनेकी सुविधा दिलानेके लिये यह सत्याग्रह हुआ था। इस सत्याग्रहको चलानेके लिये संगठन करना पड़ा था; छिपे छिपे लोगोंसे धन लिया गया था। छिपे छिपे पहले पहल कार्यकर्त्ता जुटे थे और छिपे छिपे परचे लिखे जाते थे। सत्याग्रहके दरमियान ही जब गान्धीजी वायकम पधारे तब श्री जी० रामचन्द्रने उनके आगे वास्तविकता रखी। गान्धीजीने कहा—"परचे छिपकर लिखे जा सकते हैं लेकिन उनपर प्रकाशकका नाम देना होगा और उन्हें खुलेआम बाँटना होगा; चंदा चुपचाप लिया जा सकता है और उनका हिसाब-किताब छिपाकर सुरक्षित रखा जा सकता है। स्वयंसेवक चुपचाप बटोरे जा सकते हैं पर उनका काम खुलेआम ही होना चाहिये।

इस तरह सत्याग्रहकी तैयारी छिपे-छिपे की जा सकती है। उस तैयारीको मैं छिप छिपाव नहीं बल्कि पाक-साफ मानता हूँ।" यहाँ श्रीरामचन्द्रन जरा गंभीर हो गये और बोले—*गान्धीजीके शब्द अब भी मेरे कानोंमें गूंज रहे हैं;*

उस तयारीको मैं छिप-छिपाव नहीं बल्कि पाकसाफ मानता हूँ—Gandhiji's words are still ringing in my ears. He said, such secret preparations are not secret but scared.

श्रीधोत्रेजीने भी एक कहानी सुनाई, बारडोली सत्याग्रहके अवसरकी। सरदार पटेल खूब रातको बारडोली जाते और किसानोंसे सब कुछ सुन समझ अगला पैंतरा बतला आते। दिनमें वे न उधर जाते, न पुलिस और किसानोंके घात-प्रतिघातके बीच पड़ते। उनका यह गुप्त कार्य गान्धीजीको मालूम हुआ। उनने सरदारसे पूछा—"तुम क्यों ऐसा करते हो?" सरदार बोले—"आपने गोपनीयताको रोका है, सहज-बुद्धिके उपयोगको तो नहीं।" गान्धीजी चुप हो गये; मतलब यह कि सरदारके आचरणको आदर्श नहीं माना पर उन जैसोंके लिये त्याज्य भी नहीं समझा।

इस तरह श्री जी० रामचन्द्रन और श्रीधोत्रेजीने संचालककी शंकाका समाधान कर दिया और उसने नाम बदलनेपर जोर देना छोड़ दिया।

बिहार सत्याग्रह समितिने १९४३ की तीसरी सितम्बरको राजेन्द्र जयन्ती मनायी। प्रान्त भरमें उत्साह दीख पड़ा, पटनेमें कई जगहसे कई जलूस निकले और लगभग ५० गिरफ्तारियां हुईं। १९४४ में इसने स्वतंत्रता दिवस मनाया। कई दिन पहलेसे सरकार संगीन ताने अपने घोड़ोंकी टापों और लॉरियोंकी आवाजसे आतंक फैलानेकी कोशिश कर रही थी। फिर भी हर शहरमें दिनदहाड़े खुली सड़कपर सीना तानकर स्वतंत्रता दिवसके मनानेवाले निकले झंडा फहराते हुये, नारा लगाते हुये और लगभग ढाई सौ गिरफ्तारियां हुईं। इस दिन एक घटना घटी महनार बाजारमें। स्वतंत्रता दिवस मनानेके लिये निकले हुये श्रीसुरेन्द्र सिंहको पुलिसने पकड़ लिया और उनके मुखपर कालिख-चूना पोता, उनके गलेसे लपनी लटकाई और उन्हें सरे बाजार घुमाया। श्रीलक्ष्मी नारायण तात्कालीन मंत्री चर्खा संघने संचालकका ध्यान उस ओर आकृष्ट किया और कहा कि क्यों इस तरह अपमान सहा जाय? क्यों न वैसे गांवमें ही स्वतंत्रता दिवस मनाया जाय जहां सारा काम बेरोक-टोक हो? क्योंकि सहज-कर्म ही सत्यकर्म है। संचालकका उनसे घोर मतभेद था। सहज-कर्म सत्य-कर्म आज तक नहीं हुआ और तबतक न होगा जबतक अहिंसाकी नींवपर समाजका पुनर्संगठन न हो जाये। और सत्याग्रह तो वहां होना ही चाहिये जहां सचाईका

गला घोंटता अधिकारी वर्ग अपनी अकड़में खड़ा है। सत्याग्रह सतत संघर्ष है प्रतिपक्षीके सहयोगको अपनानेके लिये। अपने अहिंसाबलके आगे अत्याचारकी नगण्यता स्पष्ट करनेके लिये उसे प्रतिपक्षीके सामने आना ही पड़ेगा। संचालकने लक्ष्मीबाबूके सामने ही तय किया कि अगर श्रीसुरेन्द्रने चुप रहकर या सिर्फ शाब्दिक विरोध करके अपना अपमान होने दिया होगा तब महनार बाजार विहारके सत्याग्रहका अखाड़ा बन जायगा और हम सभी वहां जाकर अपना मुंह रंगवायेंगे। उसने वहांके कार्यकर्त्ताओंको बुलाया और वस्तु स्थिति जाननी चाही। चर्खासंघ खादी भण्डारके मैनेजर श्रीचन्द्रीप नारायण वर्माने कहा कि श्रीसुरेन्द्रसिंहके प्रदर्शनमें मेरी दिलचस्पी रही है और मैंने शुरूसे आखिर तक उसे देखा है। पुलिसने जो किया सो पाशविक बलका प्रयोग करके। तौभी सुरेन्द्र नारे लगा रहे थे जिनको सैकड़ों कण्ठ दुहरा रहे थे। बाजारमें फिर जीवन आ गया है। उनका समर्थन अनेक स्थानोंमें अनेक कार्यकर्त्ताओं द्वारा हुआ। कार्यकर्त्तावर्ग मानता था कि आजादीकी लड़ाईमें ऐसे मोरचे भी आ जाते हैं जहां आततायियोंके हाथ मुंह ही रंगा नहीं जाता, शरीरकी और-और दुर्गति भी होती है। ऐसे मोरचेपर डटकर अपना मुंह रंगवानेसे जो नहीं डरते वही अपने कौमके मुंहकी लाली रखनेमें समर्थ होते हैं, और उसी कौमकी बहनें एक दिन अपने चरित्रबलपर अभिमान करती दीखती हैं जिनको उन बहनोंका बल मिला होता है जिनने वैसे मोरचेपर डटकर सब तरहके खतरे उठाये।

१९४४ के अप्रैल तक विहारके पुराने कार्यकर्त्ता और कांग्रेसके पदाधिकारी जेलके बाहर आ गये पर बाबू श्रीकृष्ण सिंह, वर्तमान प्रधान मंत्री विहार सरकार, बाबू सिद्देश्वर प्रसाद और बाबू शार्ङ्गधर सिंहको छोड़ किसीसे प्रोत्साहनके शब्द न मिलते थे। श्रीकृष्णबाबूसे तो संचालक मिला करता था और बराबर उनकी राय लिया करता था। इधर पुराने-पुराने कार्यकर्त्ता भी कहने लगे थे सत्याग्रह समिति स्थापित करके आन्दोलनको घसीटे चलना महात्मा गान्धी और देशरत्न राजेन्द्रप्रसादके मतके प्रतिकूल जाना है। ऐसी-बातें भी कही जा रही थीं कि राजेन्द्रबाबू चाहते हैं कि हम सरकारका विरोध बन्दकर देवें, मोकद्दमा लड़कर छूटनेकी कोशिश करें और रचनात्मक काममें लग जावें। इन्हीं अफवाहोंके बीच संचालक श्रीहरिनाथ मिश्र और युगल बाबूके साथ गिरफ्तार कर लिया गया और वहीं पहुँचा दिया गया जहाँ

बाँकीपुर जेलमें श्रीराजेन्द्र बाबू नजरबन्द थे। उनका विचार जाननेका मौका संचालकको मिला। मालूम हुआ कि राजेन्द्र बाबू नहीं समझते कि सरकारी हमलेके अन्तमें १९४२ में शुरू की गई हमारी लड़ाई खत्म हो गई। वे अगर जेलसे अभी निकलें तो उनका असल काम होगा यह देखना कि कितने आदमी उनकी बात सुनते हैं। यदि दस साथी मिल गये तब उनको लेकर नहीं तो अकेला ही वे सत्याग्रहीका फर्ज अदा करने निकल पड़ेंगे। उनका कहना था कि जो रचनात्मक कार्यक्रममें लग जाना चाहते हैं उनमें शौकसे लग जायं; उनकी इच्छा है; पर हरगिज ऐसा न समझें कि हमारी लड़ाई खतम हो गयी या जनता अब लड़नेको तैयार नहीं है। सत्याग्रह समितिकी स्थापनाको राजेन्द्र बाबूने पसन्द किया। श्रीनरहरि परीखकी विचारधाराको उनने युक्ति संगत माना पर व्यवहारिक नहीं; बोले कि इसमें कोई शक नहीं कि जब समाज सत्याग्रहके सिद्धान्तपर संगठित हो जायगा तब किसी अत्याचारका प्रतिकार करनेके लिये उसे न परचेकी जरूरत होगी, न प्रचारकोंकी, न दफ्तरकी और न धनकी। ये सब तो संगठनके साधन हैं; संगठित समाजको इनकी जरूरत क्या? पर जबतक समाजका वैसा संगठन न हो जाय तबतक इन साधनोंका उपयोग करना ही पड़ेगा; नहीं करना समाजमें सत्याग्रहके पौधेको नहीं पनपने देना है।

संचालकने अपनी जानकारीके मुताबिक राजेन्द्र बाबूके विचारका खूब प्रचार कर दिया। कार्यकर्त्ता खूब उत्साहित हुये और दो एक बड़े बड़ेके विरोधकी परवाह न करके उनने राष्ट्रीय सप्ताह मनाया; ६ अप्रैल और १३ अप्रैलको प्रदर्शन किये और प्रान्त भरमें काफी तादादमें गिरफ्तार हुये।

अकस्मात् मई मासमें गान्धीजीको जेलसे छुटकारा मिला। उनने सभी कार्यकर्त्ताओंको प्रकट हो जानेके लिये कहा और सत्याग्रह बन्द कर दिया। फिर सत्याग्रह समितिकी जरूरत नहीं रही। अब सत्याग्रह समितिके कार्यकर्त्ता चाहने लगे कि सत्याग्रह समितिकी विहार शाखाको ससम्मान तथा विधिपूर्वक समेट लिया जाय। कुछ लोगोंको इतना भी पसन्द न था। पर उसी समय आचार्य बदरीनाथ वर्मा, वर्तमान शिक्षा मंत्री, विहार सरकार जेलसे छूटकर आये और उनके सभापतित्वमें उनसे तथा अन्य सत्याग्रहियोंसे भूरि भूरि प्रशंसा पाकर सत्याग्रह समिति अगस्त आन्दोलनके इतिहासकी अमिट चीज बन गई। उसका जो स्टैण्ड था कि सत्याग्रहके आदर्शका माननेवाला सरकारके जुल्मसे टक्कर लिये

'४२ के बंदी : '४६ के शासक !

माननीय श्री अनुग्रह नारायण सिंह
(अर्थ एवं खाद्य मंत्री)
(बिहार)

माननीय श्री श्रीकृष्ण सिंह
(प्रधान मंत्री)
(बिहार)

बगैर बैठ नहीं सकता। उनका समर्थन उनको गान्धीजीके उस आदेशमें मिला जिसे उनने मानभूम जिला कांग्रेस कमिटीके सभापति श्री अतुलचन्द्र घोषको फरवरी १९४५ में दिया। १९४५ का स्वतंत्रता दिवस मनाते हुये अतुल बाबूने अपने घर, कांग्रेस खादी भण्डार और अन्यान्य स्थानोंपर राष्ट्रीय झंडे फहराये। उनके देखा-देखी कुछ मुफस्सिल कार्यकर्त्ताओंने भी। पुलिसने जबरदस्ती झंडे ले लिये और मुफस्सिल कार्यकर्त्ताओंको गिरफ्तार कर लिया। अतुल बाबूने गांधीजीको लिखा और राय मांगी। गान्धीजीने जवाब दिया कि अगर आपको और आपके साथियोंको झंडेका खयाल है और उसके लिये आप लोग तकलीफ बरदाश्त करनेके लिये तैयार हैं तब आप लोग झंडा फहराइयें ही। सरकारकी रोक हरगिज न मानिये। फिर तो अतुल बाबूने सत्याग्रह करनेका निश्चय कर लिया। बिहार सरकारके चीफ सेक्रेटरीको खबर दी गई और श्रीमती लावण्यप्रभा घोषने ६ अप्रैल १९४५ से झंडा सत्याग्रह शुरू कर दिया। फिर तो कार्यकर्त्ताओंका दल एक एक करके सरकारको सूचना देकर सत्याग्रह करनेके लिये आगे आने लगा और १२ जून १९४५ तक १७ कार्यकर्त्ता जिनमें ५ महिलायें थीं गिरफ्तार हुए। १४ जूनको सरकारने झंडेपरसे रोक हटा ली और बन्दियोंको छोड़ दिया। फिर मानभूम झंडा सत्याग्रह सफल होकर समाप्त हो गया।

मानभूम हमेशा सत्याग्रह समितिके आदेशके अधीन रहा। हाँ! उसका सम्पर्क था श्रीअन्नदाप्रसाद चौधरीसे जो सत्याग्रह समितिके डायरेक्टरेटके प्रधान थे।

अन्तिम निवेदन

ज्यों-ज्यों अगस्त-आन्दोलनका अवसान होने लगा त्यों-त्यों चन्द सवाल जोर पकड़ने लगे। क्या अगस्त आन्दोलन कांग्रेसका आन्दोलन था? क्या इसका प्रोग्राम गान्धीजीका या कांग्रेसका दिया हुआ था? क्या इससे देशकी अहिंसा-शक्तिको धक्का न लगा और इससे क्या देशका विकास एक लंबे अरसेके लिये रुक नहीं गया? आन्दोलन कबका समाप्त होगया पर उसको लेकर जो विवाद उठ खड़ा हुआ उसका अन्त नहीं हुआ है।

८ अगस्तकी रातको ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीने बड़े-से-बड़े पामानेपर सत्याग्रह छेड़नेका निश्चय किया। आन्दोलन कब छेड़ा जाय? कैसे छेड़ा जाय? इसको तय करनेका भार गान्धीजीको मिला। गान्धीजीने एलान किया कि वे बड़े लाट साहबको पत्र लिखेंगे कि मुझको मिलनेकी सुविधा दीजिये और उनसे मिलकर हिन्दुस्तानकी मांगके सम्बन्धमें बात-चीत करेंगे। उचित समझौता होगया तो ठीक; नहीं तो आन्दोलन होगा ही। फिर उनने देशवासियोंसे अपील की कि देशके प्रति अपना कर्त्तव्य-पालन करें और जरूरत हुई तो मरनेके लिये तैयार रहें और अभीसे मानलें कि वे अजाद हैं और आजाद आदमी जैसा अहिंसाको मानते हुये बातें करें और काम करें। सरकारने ऑल इण्डिया कांग्रेस कमिटीकी बातें सुनी; अगस्त प्रस्ताव पढ़ लिया। गान्धीजीका इरादा भी जान लिया; और उसने गान्धीजीको बुलाकर शब्दों द्वारा नहीं पर बिना बुलाये ठोस कार्रवाई करके बतला दिया कि उसे कांग्रेसके साथ समझौता करना नहीं है। फिर तो अगस्त प्रस्ताव और गान्धीजीके एलानके मुताबिक आन्दोलनका छिड़ना अनिवार्य्य होगया और आन्दोलन छिड़ा। फिर इसको कांग्रेसका आन्दोलन क्यों न माना जाय? डाक्टर प्रफुल्लचन्द्र घोषने ठीक ही कहा है कि अगस्त आन्दोलन तो अगस्त-प्रस्तावका अनिवार्य्य निष्कर्ष (necessary corollary) है। हां आन्दोलन कब और कैसे छिड़े? इसे जनता जान नहीं सकी क्योंकि अचानक गिरफ्तार करके सरकारने इस सम्बन्धमें कुछ कहनेका मौका गान्धीजीको नहीं दिया। अगर इसीसे जनता मान लेती कि गान्धीजीने आन्दोलन छेड़नेका आदेश नहीं दिया और व्यापक आन्दोलन न करके बैठ रहती तो वह फ्रान्स देशके एक जल-सेनापतिके मूर्ख लड़के कासाबियनकासे भी ज्यादा बेवकूफ मानी जाती। जहाजके किसी स्थानको सुरक्षित समझकर बापने कासाबियनकासे कहा—वहीं खड़े रहना, बिना मेरा आदेश पाये नहीं टलना। फिर बाप मारा गया और उस स्थानमें भी आग लग गई। सब भागे पर कासाबियनका अचल रहा और सहज-बुद्धिसे काम न लेनेकी वजहसे वहीं जल मरा। भविष्यका इतिहास अभिमानपूर्वक लिखेगा कि हिन्दुस्तानकी जनताने सहज-बुद्धिसे काम लिया और जल नहीं मरी। और सच पूछिये तो जनताको लड़ाई छेड़नेका आदेश मिला था। गिरफ्तार होनेके लिये जाते हुये गान्धीजीने श्रीप्यारेलालको आदेश दिया था कि कार्यकर्त्ताओंको समझा देना कि जो आजादीका अहिंसक योद्धा है वह कागज या कपड़ेका "करेंगे या

मरेंगे" लिखा हुआ बिल्ला अपने वक्षमें साट लेगा, जिससे सत्याग्रह करता हुआ अगर वह मारा गया तब उस चिन्हसे उन सबोंके बीच पहचाना जा सकेगा जिनका अहिंसा रास्ता नहीं है। दूसरे दिन जब आल इण्डिया कांग्रेस-कमिटीके सदस्यगण श्रीप्यारेलालसे मिले तब गान्धीजीका उक्त अन्तिम सन्देश देते हुये उनने कहा कि गान्धीजी दो बातोंको जीते-जी बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे-- एक आन्दोलन छेड़नेकी कायरता दिखलाना और दो पागल बन जाना और हिंसा करने लगना। वैसी परिस्थितिमें आन्दोलन छेड़नेके लिये गान्धीजी और क्या कह सकते थे? उनके आदेशको देशकी जननी 'बा' ने सुना और सत्याग्रह करनेको निकल पड़ीं, देशकी जनताने भी सुना और सत्याग्रह करनेको निकल पड़ी। इन सब बातोंपर गौर करते हुये कोई वजह नहीं मालूम होती कि कहा जाय अगस्त आन्दोलनको कांग्रेस वा गान्धीजीने नहीं छेड़ा हां! सरकारने गान्धीजीको नहीं बुलाया, अपनी बातें नहीं सुनायी उनको कांग्रेसके सामने अपना आखरी फैसला रखनेका मौका नहीं दिया और न कांग्रेसको दोबारा सरकारके प्रतिकूल प्रस्ताव पास करनेका अवसर लेने दिया। अगर इसीसे अगस्त आन्दोलन कांग्रेसका आन्दोलन नहीं हो सका तब फिर अगस्त आन्दोलन जैसा आन्दोलन छेड़ना कांग्रेसके लिये कदापि संभव न हो सकेगा। कभी साम्राज्यवादी सरकार कांग्रेसको ऐसा मौका नहीं देगी जिससे वह अपनी आखरी लड़ाई बाजाब्ता छेड़ सके और उसे इस ढंगसे चला सके कि लोकमत उसके अनुकूल हो जावे।

अब रही प्रोग्रामकी बात। सो अब साफ हो गया है कि अगस्त आन्दोलनका प्रोग्राम गान्धीजीका दिया हुआ नहीं था। उनने नारा (Slogan) दिया, जाते-जाते वे सन्देश (parting message) भी देते गये और ज्यादासे ज्यादा इतना ही कहा जा सकता है कि उनकी ओरसे श्रीप्यारेलालने श्रीखुरशेद बेन वगैरहको एक कागज दिया जिसमें बारह आदेश थे। पर अगस्त आन्दोलनका नाम लेते ही तोड़-फोड़ जैसे दृश्य आंखोंमें नाचने लगते हैं उनका कोई आधार उक्त नारे, सन्देश वा कागजमें खोजे नहीं मिलता है। आन्दोलन छिड़नेके छठे दिन ही गान्धीजीने बड़े लाटको एक पत्र लिखा था। पत्र स्पष्ट कर देता है कि गान्धीजी तोड़ फोड़ नहीं चाहते थे। यदि उस पत्रको सरकार प्रकाशित करवा देती और उसका व्यापक प्रचार कर देती तब बहुतोंकी आखें खुल जातीं। पर एमरी साहबको कांग्रेसके तोड़ फोड़का प्रोग्राम ब्रोडकास्ट करनेकी जरूरत

महसूस हुई क्योंकि नेताओंको गिरफ्तार करना था और गान्धीजीके विचारको ब्रोडकास्ट करनेकी जरूरत नहीं मालूम पड़ी क्योंकि उन्हें गिरफ्तार ही रखना था।

तब सवाल उठता है कि तोड़ फोड़का प्रोग्राम आया कहांसे ? आत्म-कथामें डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद लिखते हैं—"× × × गान्धीजीने कहा कि लोहा-लकड़ी काटने-तोड़नेमें हिंसा अहिंसाकी बात नहीं उठती है, हम तो रोज साधारण रीतिसे लोहा-लकड़ी काटते तोड़ते रहते हैं; पर रेलकी पटरी उखाड़ लेना अथवा तार काट देना दूसरी बात है। किस उद्देश्यसे यह काम किया जाता है, किस तरहसे किया जाता है और इसका फल क्या होता है, इन बातोंपर इसका हिंसात्मक और अहिंसात्मक होना निर्भर है; यदि इससे हत्या हो अथवा बेकसूर लोगोंपर विपत्ति आवे तो यह हिंसात्मक होगा, पर हम ऐसी परिस्थितिका अनुमान कर सकते हैं जब यह अहिंसात्मक भी हो सकता है।

"हमने उनके कहनेका आशय यह समझा कि इसे अहिंसात्मक होना बहुत करके इसपर निर्भर होगा कि इसके कारण किसीकी जानपर खतरा न हो और जो कोई भी ऐसा काम करे वह उसकी जवाबदेही अपने ऊपर साफ-साफ और सीधे लेले ताकि दूसरोंको, जिनका इससे कोई सरोकार न रहा हो, इसका फल भुगतना न पड़े।"

गान्धीजीके आशयको जैसा राजेन्द्र बाबूने समझा वैसा ही श्रीकाका कालेलकर और श्रीकिशोरलाल मशरूवालाने समझा और तीनों बिहारमें तोड़ फोड़के प्रचारके कारण बने। गान्धीजीको देशके वातावरणका खयाल करके और तोड़ फोड़को लेकर उनने जो चर्चा की थी उसको याद करके मान लेना चाहिये था कि अगर मैं साफ और जोरदार शब्दोंमें तोड़ फोड़की मनाही नहीं कर जाता हूँ तब तोड़ फोड़ होगा ही। वे नारे और सन्देश दे गये पर तोड़ फोड़की मनाही करनेसे चूक गये। उनकी चूकपर तोड़ फोड़की जवाबदेही लदेगी ही। पर बिहारकी जनताको गान्धीजीकी चूकका सहारा नहीं लेना है। उसे तोड़ फोड़का प्रोग्राम मिला सीधे राजेन्द्र बाबूसे, प्रान्तीय कांग्रेस कमिटीसे और राजेन्द्र बाबूके सम्पर्कमें आनेवाले कार्यकर्त्ताओंसे। और उसने जो तोड़ फोड़ किया उसके लिये दुखी होनेका कोई कारण उसे नहीं दीखता। रेल, पुल और सड़कको नष्ट करनेकी प्रान्तव्यापी चेष्टा हुई और अनगिनत स्थानोंमें सफलता मिली; फिर भी कहीं कोई नहीं मरा। जनताने इस संबन्धमें जो किया, दिनदहाड़े, अधिकारियोंकी

दो बेजोड़ कुर्बानियाँ !

शहीद किशोर प्रव (जगन्नाथ कुण्डू),
कटिहार (पूर्णिया)
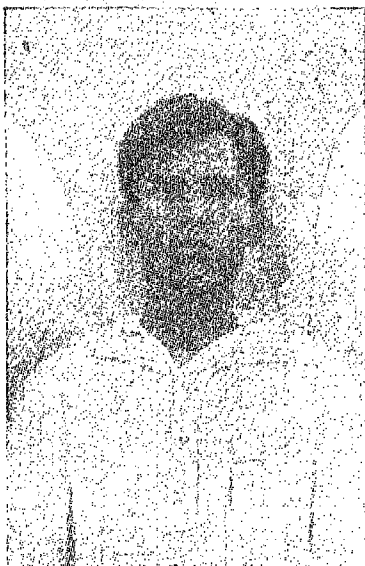
शहीद प्रभुनारायण सिंह,
माइर (भागलपुर)
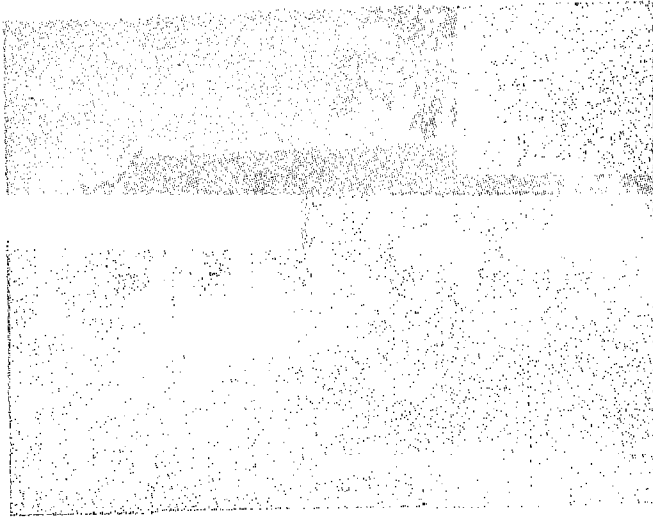
सदाक़त आश्रम

शान्तिकाल निवासस्थान ।

पटना कैम्पजेल

युद्धकाल निवास स्थान ।

नजरके सामने किया। पर जब राजेन्द्र बाबू कहते हैं कि जबतक अधिकारी वर्ग हमारी संख्या और हिम्मतके आगे कमजोर और विमूढ़-सा बना रहा हम खुलेआम तोड़ फोड़ करते रहे और जब वह फौजको पीठपर बुलाकर मजबूत हो गया हम भाग खड़े हुये—यह सत्याग्रह नहीं हुआ; तब चुप रह जाना पड़ता है। सचमुच वह सत्याग्रह नहीं था। पर जो था सो सत्याग्रहकी दिशामें ही था। उसके पहले जनताने नेतृत्व विहीन होते हुये भी इतनी बड़ी तादादमें कांग्रेस-प्रोग्रामके प्रति इतनी निर्भयता, तन्मयता और श्रद्धाका परिचय नहीं दिया था। एक बात और। तोड़ फोड़ करके तोड़ फोड़की जगहपर डटे रहनेका प्रोग्राम भी तो न था। तोड़ फोड़ तो था अगस्त-क्रान्तिकी एक मंजिल जैसा। जनता वहां पहुँची और उसे पारकर गई। अगर डटनेका प्रोग्राम होता तब राजेन्द्र बाबूको उतना निराश होनेका मौका बिहार हरगिज नहीं देता।

अगस्त-आन्दोलनमें जनताकी ओरसे हिंसा भी हुई है। किसी किसी हिंसामें तो कल्पनातीत निर्दयता दिखलायी गयी है। बिहारको उसका अनुताप है। पर जिस मात्रामें उसने अपनी अहिंसा-शक्तिका परिचय दिया है वह बराबर अहिंसा-मार्गियोंके अभिमान तथा उत्साहका कारण बना रहेगा। आन्दोलन शुरू होता है ९ अगस्तसे और उसी दिनसे पुलिसकी लाठियां जनताके खूनसे लाल होने लगती हैं और ११ अगस्तसे तो गोली भी चलने लगती है। पर सब कुछ बरदाश्त करती हुई जनता आन्दोलनके मैदानमें आगे बढ़ती ही नजर आती है। अगर जनता उसी दिनसे सरकारकी हिंसाका पासंग भी दिखलाना शुरू करती तब कितने जिलेके चौकीदारसे कलक्टर तक लापता हो गये होते। फिर जब लंबे अरसेकी गुलामीसे सतायी हुई जनता दमनकी पीड़ा बरदाश्त करनेमें असमर्थ होकर अपने ढंगसे उत्तेजित होती है और एक-आध अंगरेज या किसी अमलेको घेर लेती है उस मौकेपर भी हम देखते हैं, कोई कार्यकर्त्ता पहुंच जाता है और गान्धीजीकी या राजेन्द्र बाबूकी दुहाई देकर जनताको शान्त करके उस अंगरेज या अमलेको बचा लेता है। ऐसा भी हुआ है कि पुलिसने गोलियां चलायी हैं, जनता घायल हुई है और उसके आदमी मरे भी हैं पर जब गोली खतम होगयी है और जनताने पुलिसको घेर लिया है तब चटपट पुलिसने आन्दोलनका नारा लगाना शुरू कर दिया है और कांग्रेसकी अधीनता कबूल करली है। फिर जनताने उसे गांधी टोपी पहनाकर उसके हाथमें झंडा देकर उससे गान्धीजीकी जय बोलवा

कर उसको छोड़ दिया है। पुलिसने जनतापर तरह तरहके अत्याचार किये हैं, उसका धन लूटा है, उनकी इज्जत लूटी है और जनताने उनकी व्यक्तिगत सम्पत्तिको छुआतक नहीं है, कितनी जगह उसकी हिफाजत की है। उनके परिवारको इज्जतके साथ रखा है, यथा स्थान पहुँचाया है और पहुँचानेमें मदद की है।

जहां-जहां जनताने खून किया है वहां-वहांकी परिस्थितिका विश्लेषण बतलाता है कि कोई-न-कोई ऐसी दुर्घटना हुई थी जिसने जनताको बेहद उभाड़ रखा था। वह उच्छृङ्खल हो रही थी और कोई पढ़ा-लिखा पुराना कांग्रेस-कार्यकर्त्ता मौकेपर मौजूद न था। आन्दोलन इतना व्यापक हुआ था कि ऐसे-ऐसे लोगोंकी भी बड़ी तादाद इसमें शामिल होगयी थी जिनमें राजनीतिक दृष्टिकोणका सर्वथा अभाव था। अगर प्रान्तमें खूब मजबूत संगठन होता तो ऐसे-ऐसे लोग नियंत्रणमें रखे जा सकते थे। पर आन्दोलनके अनुकूल संगठन नहीं था इसलिये ऐसे-ऐसे लोगोंमें जब जैसी उत्तेजना आयी उन्होंने तब तैसा काम किया। इनमें कुछ पेशेवर लुटेरे थे जिनने डब्बों और मालगोदामोंके सामानकी लूट शुरू की और कितने ऐसे थे जिनको पुलिससे पुराना बैर था जिसका बदला लेनेके लिये अगस्त आन्दोलनके जैसा अपूर्व सुअवसर उनको मिला। फिर पुलिसके भाड़ेके टट्टू भी काफी तादादमें कार्यकर्त्ताओंकी जमातमें घुस गये थे जो जनताको खतरनाक रास्तेपर पैर देनेके लिये बहकाते रहते थे। स्वयं लेखकका एक मनोरंजक अनुभव है। एक थे शीरफाकत खां, विद्यार्थी मिथिला कालिज दरभंगा। आप लेखकसे तकरीबन रोज मिलते और कहते कि आपके पास चुने-चुने साठ जवान हैं जो रातके दस बजेसे तीन बजेतकके ही काम खूबीके साथ कर सकते हैं। एक महीना दौड़नेके बाद भी जब लेखकने रातका काम उनको नहीं दिया तब वह अपने जवानोंके साथ दिनका ही काम करनेको राजी होगये और लेखकको एक जगह उन जवानोंसे मिलनेको बुलाया। लेखक वहां पहुँचा, अच्छे-अच्छे जवानोंसे मिला जिनने उसको साथ ले लिया और थाना पहुँचाकर हाजतमें बन्द करवा दिया।

जनताकी हिंसाका अन्दाज लगाते समय परिस्थितिकी उक्त जटिलताओंपर ध्यान देना अनिवार्य्य है। अब कहां तक कार्यकर्त्ताओंने हिंसाको अपनाया जाननेके लिये जन-व्यवस्था वा जनताराजका इतिहास देखिये। वहां कार्यकर्त्ता शेर जैसे हो रहे थे। उनके सामने दोस्त थे और दुश्मन भी। उनने जन-व्यवस्था करते हुये दोनोंकी सुख-सुविधाका समान विचार किया। उनके सामने पूंजीपति थे,

दलाल थे और ऐसे लोग भी थे जिनके बारेमें उनको पूरा पता था कि वे कार्य-कर्त्ताओंके विरोधी रहे हैं और आगे भी रहेंगे पर उनने किसीके स्वार्थपर आंच नहीं आने दी। लूटपाटको तो बन्द करनेमें एक जगह घोर निन्दनीय कड़ाईसे काम लिया। यदि उनमें लूट या बदलेकी भावना रहती तब जन-व्यवस्था या जनता-राजका इतिहास कुछ और तरहका होता। हां, जहांतक सशस्त्र-क्रान्तिकारियोंका संबन्ध है मानना पड़ेगा कि उनने हिंसा की है, पर उनकी हिंसा उस चूहे जैसी हुई है जिसने जानपर खेलकर बिल्लीकी मूंछके एक-दो बाल कुतर दिये हैं और मुंहपर एक-दो जगह खरोंच भी लिया है।

इसलिये यह मानना कि देशकी अहिंसात्मक प्रगतिको अगस्त-आन्दोलनसे धक्का लगा है और उसका विकास रुक गया है, निराधार है। सत्यमें जो बल है, अहिंसामें जो आकर्षण है उसका परिचय अबकी बिहारने जैसा दिया वैसा कभी पहले वह न दे सका था। व्यक्तिगत-सत्याग्रहके आन्दोलनसे अगस्त आन्दोलनकी तुलना कीजिये। व्यक्तिगत सत्याग्रहमें बिहार उनको ही शामिल करता था जो सत्याग्रह कैम्पसे निकले हुये होते, जिनको राजेन्द्र बाबूकी सिफारिश मिली होती और जिनको गान्धीजीका आदेश मिला होता। वे सरेआम ब्रिटिश साम्राज्यके खिलाफ नारा लगाते और उमीद रखते कि पुलिस उनको गिरफ्तार कर लेगी। गिरफ्तार न करके पुलिसने बहुतोंको निराश कर दिया। फिर तो जहां-तहां उसके पास सिफारिश पहुँचानी पड़ी कि अमुकको गिरफ्तार करनेकी कृपा करो, अमुकको गिरफ्तार करनेकी कृपा करो। और जो सब गिरफ्तार न हुए वे समाजके लिये एक समस्या होगये। समाज उनके सत्याग्रहसे प्रभान्वित न हो सका और सरकार तो और भी नहीं। पर अगस्त आन्दोलनका सत्याग्रह वैसा न था। उसने ब्रिटिश साम्राज्यवादको अपना लोहा माननेके लिये मजबूर किया। उसने जनताको इस बार दिखला दिया, किस तरह सत्यके लिये अहिंसापूर्वक सत्याग्रही अपनेको मिटा देता है। हां! गान्धीजीके सत्याग्रहकी कसौटीपर अगस्त-आन्दोलनके सत्याग्रहको कसें तब उसमें काफी खामियां नजर आयेंगी। पर कसौटीपर तो सोना खरा उतरता है समाज नहीं। समाजकी प्रगतिका अर्थ तो होता है उसके दुर्गुणोंका जरा दबना और सद्गुणोंका जरा विकसित होना। सो अगस्त आन्दोलनमें सुविधा ढूढ़ने और चाम बचानेकी प्रवृत्तिको बिहारने दबाया और निहत्था गोलीका सामना करनेके बलको बढ़ाया। यह ऐसी प्रगति है जो आगे सत्याग्रहका और विकसित रूप संसारके आगे रख सकेगी। अगर बिहारमें अगस्त-आन्दोलनके अनुकूल संगठन होता तब यह प्रगति कहीं अधिक होती।

पर बिहारमें अगस्त आन्दोलनके विफल होनेका कारण संगठनका अभाव नहीं है। प्रोग्रामका अभाव भी नहीं है। प्रोग्राम तो था झंडा फहरानेसे लेकर जनता-राज कायम करने तकका। जहां शक्ति थी जनता-राज कायम हुआ। पर सारे बिहारमें जनता-राज स्थापित करनेकी ताकत पैदा करना बिहारके लिये

असंभव था। उसके लिये आवश्यक था सारे हिन्दुस्तानका उठ खड़ा होना। जितना बिहारकी जनताने किया उसका आधा भी हिन्दुस्तानकी अधिकांश जनता एक साथ कर दिखाती तब अगस्त आन्दोलनका इतिहास कुछ और होता। एक प्रान्तका अकेला आजाद होकर अंगरेजी सरकारकी ताकतके आगे सर उठाय रखना नामुमकिन था। उसे तो हिन्दुस्तानके पिछड़े हुए हिस्सोंने पछाड़ दिया। हां! कुछ और बातें भी थीं जो अंगरेजोंके अनुकूल पड़ती थीं; यानी उस मौकेपर हिन्दुस्तानमें बेहिसाब गोरे आगये थे; अमरीका तकके धन जनका साधन हिन्दुस्तानकी आजादीकी लड़ाईको कुचलनेके लिये अंगरेजोंको उपलब्ध था और उनने उसका उपयोग भी किया। फिर बिहारकी अगस्त-क्रान्ति क्यों न विफल होती? बिहारका संगठन उसको विफल होनेसे रोक नहीं सकता था। पर हां! आन्दोलनके सिलसिलेमें इसके कार्यकर्त्ताओंसे जो गलतियां हुईं उनसे कार्यकर्त्ताओंको बचा सकता था।

अगस्त आन्दोलन छिड़नेके पहलेसे-मई माससे ही राजेन्द्र बाबू बिहारका दौरा कर रहे थे। जहां जाते वे देशके लिये सरकी मांग करते। कहते कि दो तरहके मरनेवाले होते हैं—घुल घुलकर और सीना तानकर; इस बार हमें सीना तानकर मरनेवालोंकी भी बड़ी जरूरत पड़ेगी। राजेन्द्र बाबूने बिहारमें नया जीवन ला दिया और बिहार नयी संकल्प शक्ति लेकर नये आन्दोलनकी प्रतीक्षा करने लगा। पर राजेन्द्र बाबू बिहारको ऐसा संगठन न दे सके जिसके सूत्रमें बंधकर बिहारके कार्यकर्त्ता अगस्तके संकट कालमें एक साथ उठ खड़े होते और आन्दोलनके नेतृत्वका भार अकेला विद्यार्थी वर्गके अनभ्यस्त कंधोंपर न पड़ने देते। जब तब राजेन्द्रबाबू इस कमीको इतना महसूस करते कि कहते—मैंने अपनी जिन्दगी बेकार खोयी; कांग्रेसको मजबूत रखनेके लिये दोके झगड़ोंके बीच पड़ता रहा और समय खोता रहा; अगर गांवमें आश्रम खोलकर मैं बस जाता जैसा कि महात्माजीने कहा था तब सारे बिहारके कार्यकर्त्ताओंको राह दिखाता हुआ उनकी कठिनाइयां समझता और दूर करता हुआ मैं बिहारका सुन्दर संगठन कर लेता।

आज बिहारकी वह महान विभूति सारे देशके लिए सुन्दर संगठन तैयार करनेमें लगी है—बिहारको इसका सुख है। पर बिहारके गांवके कार्यकर्त्ताओंको जिन्हें ज्वालामुखीमें कूदना है एक सूत्रमें संगठित करनेके लिये कोई विभूति आगे बढ़ नहीं रही है—बिहारको इसका दुख है।

परिशिष्ट

भारत छोड़ो

(अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी द्वारा ८ अगस्त १९४२ को पास किया हुआ प्रस्ताव)

आल इन्डिया कांग्रेस कमिटीने वर्किंग कमिटीकी १४ जुलाई १९४२ की तजबीजपर जो उसके पास गौर करनेके लिये भेजी गई थी, और उसके बादके वाकयातपर अच्छी तरह गौर किया। लड़ाईके हालातमें जो तबदीलियाँ हुई हैं उनपर, ब्रिटिश हुकूमतके जिम्मेदार नुमायन्दोंके बयानातपर और उस तजबीजपर हिन्दुस्तानमें और गैर मुल्कोंमें जो रायें जाहिर की गयी हैं और जो समालोचनायें की गयी हैं उनपर भी उसने बखूबी गौर कर लिया है। कमिटी उस तजबीजको पसन्द करती है और उसकी ताईद करती है। उसकी रायमें बादके वाकयातने इस बातको और भी साफ कर दिया है कि वह तजबीज कितनी मुनासिब है और हिन्दुस्तानके लिए व 'यूनाइटेड नेशन्स' के मकसदकी कामयाबीके लिये हिन्दुस्तानसे ब्रिटिश हुकूमतका फौरन उठ जाना कितना जरूरी है। उस हुकूमतके जारी रहनेसे हिन्दुस्तानकी कमजोरी और गिरावट बढ़ती जाती है और वह अपनी हिफाजत करनेमें और दुनियाँकी आजादीके मकसदको पूरा करनेमें रोज-ब-रोज ज्यादा असमर्थ बनता जाता है।

कमिटीको रूसी और चीनी मोर्चोंकी बिगड़ती हुई हालतको देखकर बहुत दुख और परेशानी हुई है और रूसी तथा चीनी जनताने अपनी आजादीकी हिफाजतके लिए जिस वीरताका परिचय दिया है उसके लिये वह उसे बधाई देती है और उसकी कद्रदानी करती है। खतरा बढ़ता जाता है और इसलिये उन सब लोगोंके लिए, जो आजादीकी कोशिश कर रहे हैं और जो उन कौमोंके साथ हमदर्दी रखते हैं जो आज दूसरोंके हमलेकी शिकार बनी हैं, यह अब लाजिमी हो गया है कि वह मित्रराष्ट्रोंकी तरफसे जो पालिसी अबतक बर्ती गई है जो कि

बार-बार नाकाम रही और जिसके नतीजे बहुत ही खतरनाक निकले, उसकी बुनियादोंकी अच्छी तरहसे जांच करें। अगर कामयाबीकी सूरत पैदा करनी है तो यह काम ऐसे तरीकों और पालिसियोंका बर्तने और ऐसे मकसदोंपर कायम रहनेसे हासिल नहीं हो सकते क्योंकि हमारे पुराने तजरबेने इस बातको साफ जाहिर कर दिया है कि ऐसे मकसद और पालिसियां ही इस नाकामयाबीके लिये जिम्मेदार हैं। यह पालिसी आजादीकी बिनापर नहीं बनी है बल्कि गुलाम कौमों और नो आबादियोंपर हुकूमत कायम रखनेकी गरजसे और साम्राज्यशाहीके सिलसिले और तरीकोंको जारी रखनेकी गरजसे बनाई गई है। साम्राज्य, अब हुकूमत करनेवाली ताकतको मजबूत करनेके बजाय और कमजोर करता है और आज उसके लिये एक बोझ और अभिशाप बन गया है। मौजूदा जमानेकी साम्राज्यशाहीकी सबसे मशहूर मिसाल हिन्दुस्तान है और इसलिए वह सबसे अहम सवाल बन गया है क्योंकि इंगलैंड और 'यूनाइटेड नेशन्स' की ईमानदारीकी कसौटी हिन्दुस्तानकी आजादी है और इसी तरीकेपर एशिया और अफ्रिकाकी कौमोंमें उम्मीद और उत्साह पैदा किया जा सकता है। ब्रिटिश हुकूमतका खतम होना इस तरह एक फौरी जबरदस्त सवाल बन गया है जिसपर युद्धका भविष्य और आजादी और लोकतंत्रकी कामयाबी निर्भर करती है। आजाद हिन्दुस्तान आजादीकी जंगमें और नाजीज्म, फैसिज्म और साम्राज्यशाहीके हमलोंका मुकाबला करनेमें अपने तमाम साधनोंका इस्तेमाल करेगा और इस तरह कामयाबीको पोख्ता कर देगा। इससे महज जंगका नक्शा ही नहीं बदलेगा बल्कि दुनियांकी जितनी गुलाम और मजलूम कौमें हैं वह सब 'यूनाइटेड नेशन्स' की तरफदार हो जायेंगी और ये 'यूनाइटेड नेशन्स' हिन्दुस्तानके साथ दुनियांका नैतिक और अध्यात्मिक नेतृत्व करेंगे। गुलाम हिन्दुस्तान ब्रिटिश साम्राज्यशाहीका प्रतीक बना रहेगा और साम्राज्यशाहीका यह धब्बा तमाम 'यूनाइटेड नेशन्स' के भविष्यपर बुरा असर डालेगा।

इसलिये आजकी संकटपूर्ण अवस्थामें यह आवश्यक है कि हिन्दुस्तान आजाद हो और ब्रिटिश हुकूमतका खात्मा हो। आइन्दाके लिये किये गये किसी किस्मके वादों या गारन्टीसे मौजूदा हालतमें फर्क नहीं पड़ सकता और इस खतरेका भी मुकाबिला नहीं कर सकते। इनसे जनताके दिल और दिमागपर वह असर नहीं डाला जा सकता और उनकी मनोवृत्तिमें वह तबदीली नहीं पैदा की जा सकती

जिसकी कि आज जरूरत है। सिर्फ आजादीका जज्बा ही करोड़ों लोगोंमें उत्साह और जोश भर सकता है और उनको सक्रिय बना सकता है और इसी तरह लड़ाईकी सकल भी फौरन बदली जा सकती है।

इसलिए अ० भा० कां० क० हिन्दुस्तानसे ब्रिटिश हुकूमतके हट जानेकी अपनी मांगको बहुत जोरके साथ दोहराती है। हिन्दुस्तानकी आजादीके एलान हो जानेपर एक आरजी हुकूमत बनाई जायगी और आजाद हिन्दुस्तान 'यूनाइटेड नेशन्स' का साथी हो जायेगा और आजादीकी लड़ाईकी मुश्तरका जद्दोजहदकी कठिन मुसीबतों और आजमाइशोंमें उनका शरीक बन जायेगा। आरजी हुकूमत मुल्ककी खास-खास पार्टियों और गिरोहोंके सहयोगसे ही बन, सकती है। इस तरह यह एक मिली-जुली हुकूमत होगी जो हिन्दुस्तानकी जनताके तमाम खास-खास हल्कोंकी नुमायंदगी करेगी। उसका पहिला और खास काम हिन्दुस्तानकी हिफाजत करना और अपनी सारी सशस्त्र और अहिंसक ताकतोंसे हमलेका मुकाबला करना होगा और दोस्त कौमोंके साथ खेतों, कारखानों और दूसरी जगहोंमें काम करनेवाले लोगोंकी भलाई और तरक्कीके लिये कोशिश करना होगा क्योंकि खसूसियतके साथ इन्हींके हाथमें सारा अख्तियार और सारी ताकत होगी। आरजी हुकूमत 'कान्स्टीट्यूयेन्ट असेम्बली' के लिए एक स्कीम तैयार करेगी और यह असेम्बली हिन्दुस्तानकी हुकूमतका एक ऐसा आईन बनायेगी जो जनताके सब हल्कोंको कबूल और मंजूर होगा। कांग्रेसकी रायके मुताबिक हिन्दुस्तानका आईन संघकी शकलका होना चाहिये जिसमें शामिल होनेवाले हर मुल्कको ज्यादा-से-ज्यादा खुद मुख्तारी हासिल होगी और जिनको बकीया अधिकार भी हासिल होंगे। हिन्दुस्तान और दोस्त कौमोंके बीच भविष्यमें क्या रिश्ता होगा इसका फैसला इन सब आजाद मुल्कोंके नुमाइन्दे आपसमें सलाह-मशविरे करके समझौतेसे करेंगे और ऐसा करनेमें एक दूसरेका फायदा और हमलेके रोकनेमें एक दूसरेसे सहयोगका मद्देनजर होना चाहिये। आजादी हिन्दुस्तानमें कामयाबीके साथ हमला रोकनेकी काबलियत पैदा करेगी और उसी हालतमें इस काममें हिन्दुस्तानकी हुकूमतके पीछे जनताका मजबूत इरादा और उसकी पूरी ताकत लग सकेगी।

हिन्दुस्तानकी आजादी एशियाकी उन तमाम कौमोंकी आजादीका प्रतीक और आरंभक हो जायेगी जो आज विदेशी हुकूमतके मातहत है। बर्मा, मलाया,

हिन्द-चीन, डच इन्डीज, ईराक और इरान भी अपनी मुकम्मिल आजादी हासिल करेंगे। यह बात साफ तौरसे समझ लेना चाहिये कि इनमेंसे ऐसे मुल्क जो आज जापानियोंके कब्जेमें हैं लड़ाईके बाद फिर किसी दूसरी औपनिवेशिक ताकतके मातहत या कब्जेमें नहीं रखे जायेंगे।

इसमें कोई शक नहीं कि ए० आइ० सी० सी० का मुख्य काम तो इस खतरेके वक्त हिन्दुस्तानकी आजादी हासिल करना और उसकी हिफाजत करना है तो भी कैमिटी अपनी इस रायको जाहिर करना चाहती है कि दुनियाँकी भावी शान्ति, रक्षा और बाकायदा तरक्कीके लिये यह निहायत जरूरी है कि आजाद कौमोंका एक विश्वसंघ बने। किसी दूसरे ढंगसे आजकी दुनियांके सवाल हल नहीं किये जा सकते। यह 'विश्वसंघ' अपने परिवारके मेम्बरोंकी आजादीकी रक्षा करेगा; एक कौमके जरिये दूसरी कौमपर जो हमला होता है या शोषण चलता है उसे यह संघ रोकेगा; अकलीयतोंकी हिफाजत करेगा, पिछड़े हुए दुनियांके हिस्सों और लोगोंकी तरक्की करेगा और सबकी भलाईके कामके लिये दुनियांके साधनोंको इकट्ठा करके उनको इस्तेमाल करेगा। ऐसे विश्वसंघके कायम हो जानेपर सब मुल्कोंमें निःशस्त्रीकरण मुमकिन हो सकेगा, हर मुल्कको फौज, समुद्री सेना और हवाई सेना रखनेकी जरूरत बाकी न रह जायेगी और विश्वसंघकी रक्षा सेना संसारमें शांति कायम रखेगी और हमलोंको रोकेगी।

आजाद हिन्दुस्तान खुशीके साथ विश्वसंघमें शामिल होगा और अन्तर्राष्ट्रीय सवालोंके हल करनेमें बराबरीकी हैसियतसे दूसरी कौमोंके साथ सहयोग करेगा।

ऐसा विश्वसंघ उन सब कौमोंके लिए खुला रहेगा जो उसके बुनियादी उसूलोंसे सहमत होंगे। लड़ाईके लिहाजसे यह विश्वसंघ शुरूमें लाजिमी तौरपर 'युनाइटेड नेशन्स' का बनेगा। ऐसा कदम अगर आज उठाया जाये तो उसका लड़ाईपर धुरी मुल्कोंकी जनतापर और आनेवाली सुलहपर जबरदस्त असर पड़ेगा।

लेकिन कमिटी अफसोसके साथ महसूस करती है कि बावजूद लड़ाईके दर्दनाक और हिम्मतको पस्त करनेवाले सबकोंके और उन खतरोंके जो दुनियांके सरपर तलवारकी तरह लटक रहे हैं, ये मुल्क अभी विश्वसङ्घ बनानेके लिए हर लाजमी कदमके उठानेके लिए तैयार नहीं हैं। ब्रिटिश हुकूमतका रुख और विदेशी अखबारोंकी बहकी हुई आलोचना भी इस बातको साफ करती है कि हिन्दुस्तानकी

आजादीकी जाहिरा मांगकी भी मुखालिफतकी जाती है, हालांकि यह मांग खास तौरपर मौजूदा खतरेका मुकाबला करने, हिन्दुस्तानको अपनी रक्षा करनेके काबिल बनाने और चीन और रूसकी जरूरतके वक्त मदद करनेके लिए पेश किये गये हैं। कमिटीको इसकी फिक्र है कि चीन या रूसके हिफाजतके काममें किसी तरहकी रुकावट नहीं क्योंकि इनकी आजादी [illegible] है और उसकी हिफाजत होनी चाहिये। कमिटीको इसकी भी फिक्र है कि 'युनाइटेड नेशन्स' की रक्षा करनेकी काबलीयत खतरेमें न पड़ने पाये। लेकिन हिन्दुस्तानका और इन कौमोंका खतरा बढ़ता जाता है और इस मौकेपर हिन्दुस्तानके खामोश रहनेसे और विदेशी हुकूमतके मातहत बने रहनेसे हिन्दुस्तानकी महज गिरावट ही नहीं हो जाती है और हमलेको रोकने और अपनी हिफाजत करनेकी काबलीयत ही नहीं घटती जाती है बल्कि यह उस बढ़े हुए खतरेका कोई जवाब ही नहीं है और न इस तरह 'युनाइटेड नेशन्स' को जनताकी कोई सेवा ही हो सकती है। बल्कि कमेटीने इंगलैंड और 'युनाइटेड नेशन्स' से पुरजोर अपील की है उसका कोई इत्मीनानके काबिल जवाब नहीं मिला है और विदेशमें कई जगह जो आलोचनाएँ हुई हैं उनमें हिन्दुस्तान और दुनियांके बारेमें उनकी जहालत ही जाहिर होती है और कभी-कभी हिन्दुस्तानकी आजादीकी मुखालिफत भी पायी जाती है। ये बातें हुकूमत करने और अपनी नस्लको दूसरोंसे बड़ा समझनेकी मनोवृत्ति ही जाहिर करती हैं जिसे एक ऐसी स्वाभिमानी कौम नहीं बरदाश्त कर सकती जिसको अपनी ताकत और अपने मकसदके वाजिब होनेका एहसास है।

इस आखिरी लमहेमें ए० आइ० सी० सी० दुनियांको आजादीके फायदेके लिए इंगलैंड और संयुक्त-राष्ट्रोंसे इस अपीलको एक बार फिर दोहराती है। लेकिन कमिटी महसूस करती है कि उसके लिए यह मुनासिब न होगा कि वह मुल्कको एक ऐसी साम्राज्यशाही हुकूमतके खिलाफ अपने इरादेका पूरा करानेकी जद्दोजेहदसे रोके जो उसपर छायी हुई है और उसका अपने और मानव-जातिके फायदेके लिये काम करनेसे रोकती है। कमिटीका इसलिये यह फैसला है कि वह हिन्दुस्तानकी आजादीके पैदायशी हककी हिफाजत करनेके लिए बड़े पैमानेपर अहिंसात्मक ढंगसे सामूहिक लड़ाई शुरू करनेकी इजाजत देती ताकि मुल्क अपनी उन तमाम अहिंसक ताकतका उपयोग कर सके जिसे उसने शान्तिमय आन्दोलनके पिछले बाईस सालोंमें इकट्ठा किया है। ऐसी जद्दोजहद गांधाजीकी रहनुमाईमें ही हो सकती

है और कमिटी इनसे प्रार्थना करती है कि वह नेतृत्व लें और मुल्कको बतावें कि उसे क्या कदम उठाने हैं।

कमिटी हिन्दुस्तानके लोगोंसे अपील करती है कि वे हिम्मत और धीरजके साथ उन तमाम खतरों और मुसीबतोंका सामना करें जो निश्चय ही उनके हिस्सोंमें पड़ेगी और गांधीजीकी रहनुमाईमें एक साथ मिलकर काम करें और अनुशासनमें रहनेवाले आजादीके सिपाहियोंकी तरह उनकी हिदायतोंका पालन करें। उन्हें याद रखना चाहिये कि अहिंसा इस आन्दोलनका आधार है। ऐसा वक्त आ सकता है जब हिदायतोंका देना नामुमकिन हो जाय, या हिदायतें जनता तक न पहुँच सकें और कोई कांग्रेस कमेटी काम न कर सके। जब हालत ऐसी हो जाय तब हर मर्द और औरतको जो इस आन्दोलनमें हिस्सा ले रहा है यह लाजिम हो जाता है कि वह अपनी हिदायत खुद करे, और जो आम हिदायतें दी जा चुकी है उनके मुताबिक अमल करे। हर हिन्दुस्तानी जो आजादी चाहता है और उसके लिए कोशिश करता है वह खुद अपना रहनुमा बन जायेगा और उसकी आत्मा ही उसे उस कठिन रास्तेपर आगे बढ़नेको मजबूर करेगी जहाँ कोई आरामगाह नहीं है और जो अन्तमें हिन्दुस्तानको आजादी और मुक्तिकी आखिरी मंजिल तक पहुँचाता है।

आखिरी बात यह है कि हालांकि ए० आई० सी० सी० ने आजाद हिन्दुस्तानके भावी विधानके बारेमें अपनी जाती राय जाहिर कर दी है तो भी वह इस बातको सबपर बिलकुल साफ कर देना चाहती कि सामूहिक लड़ाई शुरू करके उसका इरादा कांग्रेसके लिये ताकत हासिल करनेका नहीं है। जब कभी ताकत हासिल होगी वह हिन्दुस्तानकी तमाम जनताकी मिल्कियत होगी।

नक्शेमें देखिये—

जिलाका नाम	नक्शेमें नम्बर	थाना या स्थानका नाम	जिलाका नाम	नक्शेमें नम्बर	थाना या स्थानका नाम
चम्पारण	१	गोविन्दगंज	मुजफ्फरपुर	२४	कटरा
,,	२	घोड़ासाहन	,,	२५	पारू
,,	३	बेतिया	,,	२६	साहबगंज
,,	४	आदापुर	,,	२७	सोनबरसा
सारन	५	दिघवाड़ा	,,	२८	वैरगनिया
,,	६	परसा	,,	२९	शिवहर
,,	७	मशरक	,,	३०	बेलसंड
,,	८	मढ़ौड़ा	,,	३१	पुपरी
,,	९	गरखा	दरभंगा	३२	मधुबनी
,,	१०	एकमा	,,	३३	बेनीपट्टी
,,	११	सीसवना	,,	३४	सिंघिया
,,	१२	महाराजगंज	,,	३५	बहेड़ा
,,	१३	सिवान	,,	३६	झंझारपुर
,,	१४	ठेपहा	,,	३७	मधेपुर
,,	१५	दाउदपुर	,,	३८	फुलपरास
,,	१६	सोनपुर	,,	३९	लौकही
मुजफ्फरपुर	१७	महनार	,,	४०	जयनगर
,,	१८	लालगंज	,,	४१	खजौली
,,	१९	विदुपुर	,,	४२	लहेरिया सराय
,,	२०	पातेपुर	,,	४३	जाले
,,	२१	राघोपुर	,,	४४	दलसिंग सराय
,,	२२	मीनापुर	,,	४५	समस्तीपुर
,,	२३	सकरा	,,	१२५	बिरौल

जिलाका नाम	नकशेमें नम्बर	थाना या स्थानका नाम	जिलाका नाम	नकशेमें नम्बर	थाना या स्थानका नाम
भागलपुर	४६	मधेपुरा	पूर्णिया	७३	रानीगंज
,,	४७	मुरलीगंज	,,	७४	धमदाहा
,,	४८	किसनगंज	,,	७५	पूर्णिया
,,	४९	बनगांव	,,	७६	कुम्हरी
,,	५०	सोनबरसा	शाहाबाद	७७	आरा
,,	५१	सुपौल	,,	७८	संदेश
,,	५२	[illegible]	,,	७९	बड़हारा
,,	५३	त्रिवेणीगंज	,,	८०	पीरो
,,	५४	प्रतापगंज	,,	८१	सहार
,,	५५	भीमनगर	,,	८२	बक्सर
,,	५६	बाँका	,,	८३	राजपुर
,,	५७	अमरपुर	,,	८४	डुमराँव
,,	५८	रजौन	,,	८५	सासाराम
,,	५९	कटोरिया	,,	८६	चेनारी
,,	६०	बेलहर	,,	८७	भभुआ
,,	६१	धुरैया	,,	८८	दुर्गावती
,,	६२	पीरपैंती	पटना	८९	पटना
,,	६३	सुलतानगंज	,,	९०	पटना सिटी
,,	६४	बिहपुर	,,	९१	बिक्रम
,,	६५	गोपालपुर	,,	९२	नौबतपुर
,,	६६	नाथनगर	,,	९३	फतुहा
,,	६७	भागलपुर	,,	९४	बख्तियारपुर
पूर्णिया	६८	रुपौली	,,	९५	मोकामा
,,	६९	आजमनगर	,,	९६	चण्डी
,,	७०	कदवा	,,	९७	हिलसा
,,	७१	कटिहार	,,	९८	बिहार शरीफ
,,	७२	मनमनसी	मुंगेर	९९	सूरजगढ़ा

जिलाका नाम	नक्शेमें नम्बर	थाना या स्थानका नाम	जिलाका नाम	नक्शेमें नम्बर	थाना या स्थानका नाम
मुंगेर	१००	लक्खीसराय	संथाल परगना	[illegible]	[illegible]का
,,	१०१	तारापुर	,,	१२९	सिलिंगी
,,	१०२	बरहिया	,,	१३०	अमरापारा
,,	१०३	सैघड़ा	,,	१३१	बोकराबाँध
,,	१०४	बरियारपुर	,,	१३२	चाँदवा
,,	१०५	खगड़िया	,,	१३३	राकशी
,,	१०६	गोगरी	हजारीबाग	११८	हजारीबाग
,,	१०७	चौथम	,,	११९	कोडरमा
गया	१०८	गया सदर	,,	१२०	डोमचाँच
,,	१०९	इमामगंज	मानभूमि	१२१	पटमदा
,,	११०	कुरथा	,,	१२२	मान बाजार
,,	१११	अरवल	सिंहभूमि	१२३	जुग सलाई
,,	११२	कुटुम्बा	,,	१२४	गोलमुड़ी
,,	११३	गोह	,,	१२६	साकची
संथाल परगना	११४	सराँवाँ		१२७	चिस्टोपुर
,,	११५	सारठ	,,		
,,	११६	देवघर	पलामू	१२८	लेस्लीगंज

विवरण	समूचे बिहार प्रान्तमें	चम्पारन	छपरा	मुजफ्फरपुर	दरभंगा
जेल जानेवालोंकी संख्या	२२८६१	१३४८	६४६	१६७८	४००० *
साजायफ्ता ...	४३५६	६६३	८१६	८६१	...
नजरबन्द ...	२१४	१७	३६	३५	...
जिन्हें फाँसीकी सजा हुई थी ...	२६		...	२	४
फाँसी लटक गये ...	७	...	...	२	...
छूट गये ...	१६	...	...	...	४
शहीदोंकी संख्या ...	५६२	१५	१६	४३	४०
थानोंकी संख्या ...	३६५	२०	२७	२४	२३
जिन थानोंपर हमले हुए	२१६	१०	२७	२३	२१
जिन थानोंपर जनता ने अधिकार किया ...	८०	२	८	१४	१०
जिन स्थानोंपर गोलियाँ चलीं और मृत्यु हुई ...	८४	१	७	८	१०
सामुहिक जुर्माना वसूल हुआ ...	४२ लाख रु०	...	...	२६७२२४।≡)।	...

नोट :—*लगभग तादाद है। सजाकी अधिकतम लम्बाई २१ वर्ष तक गई है। १४

मुंगेर	पूर्णिया	शाहाबाद	पटना	गया	संथाल परगना	पलामू	राँची	हजारीबाग	सिंहभूम	मानभूम
३००० ❀	१६७०	२५०० ❀	४००० ❀	८३५	६०० ❀	२००	२२७	७००	२०० ❀	५८२
...	...	...	...	७८६	...	...	२०३	२००	...	३६४
...	...	...	...	४६	...	...	२४	१०	...	२५
२	२	...	१३	...	...	...	...	...	...	...
२	...	...	...	...	...	...	...	...		...
...	२	...	१३	...	...	...	...	...	...	...
२८ ❀	५२	५० ❀	४१	५	१२	१	...	४	...	२
२२	०	३०	२४	३५	१८	२०	३०	३२	१३	२१
१०	२४	२८	१६	१४	१०	१	६	३	४	४
३	३	८	...	३	७	१	...	...	४	२
	८	६	६	३	३		३३	...	...	२
१८९००८)	६६५७००)	...	...	२६३६००)	...	...	...	७५०००)	...	...

२१ वर्ष तक सजा देना असाधारण बात न थी। १२१ आई०पी०सी० दफा बहुतसे व्यक्तियोंपर चले हैं।

हमारी दो महान् योजनायें—

'पुस्तकालय'

हिन्दी भाषामें पुस्तकालय-विज्ञानपर कोई पुस्तक नहीं है। यह लज्जाकी बात है। पुस्तकालय-प्रेमियों और विशेष कर ग्रामीण पुस्तकालयोंके पुस्तकाध्यक्षोंके लिए तो बड़ी कठिनाईका प्रश्न रहा है। गाँवमें पुस्तकालय और वाचनालय कैसे चलाया जाय, यह अंधकारमय प्रश्न है। अंग्रेजी भाषामें इस विषयपर काफी अच्छी पुस्तकें हैं, परन्तु हमें तो अपने ग्राम और अपनी हिन्दी राष्ट्र भाषाको समृद्ध करना है। वही हमारे लिए उपयोग और गौरवकी वस्तु होगी।

अतः उसी उद्देश्यसे प्रेरित होकर 'पुस्तकालय' नामक एक अपूर्व ग्रन्थ बिहार प्रान्तीय लाइब्रेरी एशोसियेशनकी अध्यक्षतामें तैयार करनेकी हमारी योजना है। हिन्दुस्तानके प्रमुख विद्वानों, पुस्तकालय विषयके अधिकारी लेखकों और प्रसिद्ध पुस्तकाध्यक्षोंसे निम्नलिखित विषयोंपर रचनायें लेकर एक अनुपम संग्रह तैयार हो रहा है। उस पुस्तकके साथ ही बिहारके समस्त पुस्तकालयोंकी एक डाइरेक्टरी (परिचय-पुस्तक) भी तैयार होगी। यह डाइरेक्टरी बड़े कामकी चीज होगी। इससे प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओंको तो मदद मिलेगी ही परन्तु साथ ही पुस्तकालयोंको भी बड़ा लाभ होगा। उनका आपसमें सहयोग बढ़ेगा। प्रत्येक पुस्तकालयको चाहिये कि शीघ्र ही अपना पता भे .कर डाइरेक्टरी फार्म मुफ्त मंगवा लें, भर लें और वापिस लौटा दें।

विषय-सूची :—

१ पुरातन कालमें पुस्तकालय। २ वर्त्तमान युगमें पुस्तकालय। ३ पुस्तकालय-आन्दोलनका संक्षिप्त इतिहास। ४ संसारके सर्वश्रेष्ट पुस्तकालय। ५ पुस्तकालय और हिन्दुस्तानमें पुस्तकालय-आन्दोलन। ६ पुस्तकालयकी उपयोगिता और महत्ता। ७ पुस्तकालयकी विभिन्न सेवायें। ८ पुस्तकालय-संचालन। ९ जनता पुस्तकालयकी आर्थिक समस्या। १० दूसरे देशमें पुस्तकालय। ११ वाचनालय। १२ अध्ययनकी आदत कैसे डालनी चाहिये।

पूरी पुस्तक करीब ४०० पृष्ठोंमें रॉयल अठपेजी साईजमें आयेगी। प्रसिद्ध पुस्तकालयों और पुस्तकाध्यक्षोंके फोटो भी रहेंगे। पक्की जिल्द, सुन्दर छपाई। दो खण्डोंमें। मूल्य—८) रु० मात्र।

जीवन [illegible] माला

सम्पादक— श्री रामवृक्ष बेनीपुरी

हिन्दी साहित्यमें अच्छी और मौलिक जीवनियोंका अभाव है। किसी भी राष्ट्र या देशके नवयुवकोंपर उनके नेताओं और सपूतोंकी जीवन-धाराका सबसे बड़ा प्रभाव पड़ता है। इसलिए जीवन-साहित्य-मालाके नामसे अपने देशके महा-पुरुषोंका संक्षिप्त जीवन-परिचय देनेकी हमारी योजना है। सर्व प्रथम निम्नलिखित आठ भागोंमें यह पुस्तक-माला क्रमशः प्रकाशित होगी; पुनः हम विदेशी महापुरुषोंका भी जीवन-परिचय प्रस्तुत करेंगे।

१ *हमारे नेता I (स्वर्गीय)*

२ *हमारे नेता II (प्रथम श्रेणीके)*

३ *हमारे नेता III (द्वितीय श्रेणीके)*

४ *हमारी नेत्री (आधुनिक भारतीय महिलायें)*

५ *हमारे साहित्याकार I (हिन्दी साहित्य)*

६ *हमारे साहित्यकार II (अन्य भारतीय भाषायें)*

७ *हमारे कलाकार (चित्रकार, मूर्तिकार, संगीतकार, नृत्यकार इत्यादि)*

८ *हमारे सुधारक, वैज्ञानिक और विचारक*

इस जीवन-साहित्य-मालाकी अपनी विशेषता होगी। हिन्दुस्तान भरके प्रमुख जीवनी-लेखकों और विद्वानों द्वारा रचनायें लिखायी जा रही हैं। प्रत्येक महा-पुरुषके ६″×४″ साईजमें रायल इंग्लिश आर्ट पेपरपर उनके हस्ताक्षरके साथ फोटो रहेंगे। साथ ही उनके जीवनपर विशद अध्ययनके लिये हम पूर्व पीठिका भी बना रहे हैं। उस महापुरुष द्वारा या उस महापुरुषके ऊपर जितने भी साहित्य प्रकाशमें आ चुके हैं, उनकी एक क्रमबद्ध सूची प्रस्तुतकी जायगी। प्रत्येक पुस्तक लगभग १५० पेजकी डिमाइ साईजमें होगी। कागज ३४ पौ० से २८ पौ० तक। पक्की जिल्द, आकर्षक गेट-अप। हिन्दी साहित्यमें अपने ढंगकी पहली सिरीज। मूल्य प्रत्येक भाग—३।=)। ८ भाग एक साथ लेनेपर २०) रुपयेमें। जो सज्जन इस मालाके स्थायी ग्राहक बनना चाहते हैं, वे अपना नाम कृपया रजिष्टर्ड करा लें।

प्रकाशक :—

'पुस्तक-जगत'

नया कदमकुआँ, पटना।